Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीधा सादा रास्ता

Sida Sada Rasta.

रांगेय राघव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीधा सादा रास्ता

Sida Sada Rasta.

रांगेय राघव

Rangay Radv.

Cat no. 25519

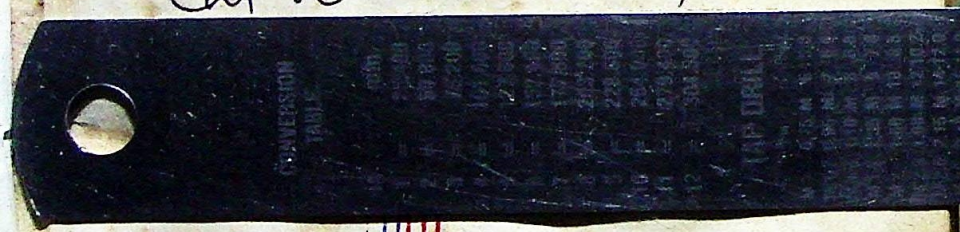

किताब महल
इलाहाबाद बंबई
Kitab Mhal
Bombay

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रथम संस्करण, १९५१

1951
H 83
R17S
Acc : no : 17494
Rs 6-8-0

प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद।
मुद्रक—ए० डब्ल्यू० आर० प्रेस, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टेढ़े मेढ़े रास्ते
पर
भटकने और भटकाने
वालों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिचय देने के लिये मैंने डा० राम विलास शर्मा की आलोचना को पुस्तक में जोड़ दिया है। उन्होंने अच्छी ही लिखी है।

मैं वर्मा जी तथा शर्मा जी दोनों को धन्यवाद देता हूँ। वर्मा जी ने एक भूमि देखी। शर्मा जी ने उनके वर्णन को ग़लत कहा। जो मैंने जाकर देखा, वह उपस्थित है।

—रांगेय राघव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रस्तावना

"टेढ़े मेढ़े रास्ते"

डॉ० रामविलास शर्मा

बाम्बे टाकीज के भूतपूर्व कथाकार और हिन्दी "नेशनल हेराल्ड" (यानी "नवजीवन") के मौजूदा सम्पादक श्री भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास "टेढ़े मेढ़े रास्ते" लीडर प्रेस से छपकर निकला है। जिस प्रेस पर कभी उदारपंथियों का कब्जा था और अब जो बिड़ला-मोनोपली की लपेट में आ चुका है, * उपन्यास को समझने के लिए इन सब बातों को याद रखना जरूरी है। आप बहुत जगह लोगों को अपने अन्तर्द्वन्द्व से परेशान पागलों का-सा अभिनय करते पायेंगे, या मुँह पर नकाब डाले पिस्तौल ताने देखेंगे। आप खामखाह हैरत में पड़ जायेंगे, अगर आप यह याद न रखेंगे कि श्री भगवतीचरण वर्मा बाम्बे टाकीज के असफल कथाकार रह चुके हैं। मुमकिन है, आपने वर्मा जी की "बॉय एक पेग ग्रौर" वाली कहानियाँ पढ़ी हों। "तीनों वर्ष" के ह्विस्की के दौर याद हों या किसी ताल्लुकेदार को समर्पित की हुई उनकी किताब देखी हो, तो इस नये उपन्यास में उन्हें, अहिंसा और नैतिकता का उप-

* मैं इससे सहमत नहीं हूँ। वर्मा जी का उपन्यास पहले वाले मालिकों के समय में छपा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देश-पर-उपदेश झाड़ते देखकर शायद फिर आप कुछ परेशानी में पड़ जायँ—परेशानी में इसलिए कि ऐसा आकस्मिक हृदय परिवर्तन स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता, तो इस परेशानी से बचने के लिए आप उनका "नवजीवन" सम्पादक होना न भूलें क्योंकि अपनी अहिंसात्मक पत्रकार कला की मश्क उन्हें टेढ़े मेढ़े रास्तों से होकर पूरी करनी पड़ती है। आप की नजरों से यह भी छिपा न रहेगा कि वर्मा जी ने टेढ़े मेढ़े रास्तों का टेढ़ा-मेढ़ापन ही नहीं दिखाया बल्कि सीधे रास्तों को भी टेढ़ा कर दिया है। यह कमाल दिन पर दिन आप को उन पुस्तकों में निखरता हुआ दिखाई देगा जो बिड़ला-मोनोपली की कृपा से साहित्य जगत् में प्रकट होंगी।

कई पाठकों ने यह उपन्यास पढ़ने पर मुझसे सवाल किया कि वर्माजी आखिर किस रास्ते को सही समझते हैं; उनकी राय से किस राह पर चलकर आदमी मंज़िले मक़सूद तक पहुँच सकता है। हर पाठक को चाहिए भी कि उपन्यास खत्म करने पर वह अपने से यह पूछे कि लेखक किस रास्ते पर चलने का इशारा करता है। अगर उसको अपने सवाल का साफ़-साफ़ जवाब न मिले तो उसे वर्मा जी को उनकी सफलता पर बधाई देनी चाहिए। पर उनका ध्येय सही रास्ता दिखाना नहीं है बल्कि पाठक को टेढ़े मेढ़े रास्तों में भटकाना है और इस तरह भटकाना है, इस होशियारी से और उसके बिना जाने हुए कि उसे रास्ते पर चलने से ही नफ़रत हो जाय, वह अपने मक़सद तक पहुँचने की तरफ़ से निराश हो जाय। यानी लेखक का उद्देश्य जीवन के प्रति विश्वास डिगाना है; सामाजिक परिवर्तन में आस्था का खंडन करना है; जनवादी क्रान्ति और वर्गहीन समाज की रचना की तरफ़ से मन फेर कर आदमी को दुश्मन के सामने लाचार और अथाहिज बना देना है।

संवत् २००३ विक्रमी में इस तरह के उपन्यास की रचना क्यों की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जा रही है, इसका भेद भी साफ़ है। आज हिन्दुस्तान की जानता पूंजीवादी व्यवस्था से आजिज़ आकर, जनवादी क्रान्ति की तैयारी कर रही है, वह अपने लड़ाकू वर्ग संगठन बना रही है जिससे कि वह अपने दुश्मनों से एकजुट हो कर लड़ सके। पूँजीवादी समाज के ठेकेदारों का सिंहासन डोल रहा है। इसलिए "कला" और "संस्कृति" के चौकीदार—लेखक —जो कल तक दारू और व्यभिचार की कहानियाँ लिखते थे— अचानक विनोबा भावे बनकर "क्रान्ति नहीं, समाजवाद नहीं, शुद्ध भारतीयता, शुद्ध अहिंसा" के नारे लगाने शुरू कर देते हैं। पूँजीवादी प्रेस किस तरह की विचार-स्वाधीनता का हामी है, वह किस तरह की कला और संस्कृति का रक्षक है, यह "टेढ़े मेढ़े रास्ते" से जाहिर है। यह एक गुलाम-प्रेस की गुलाम-रचना है, जो हमारे स्वाधीनता-आन्दोलन की तामाम परम्पराओं पर कीचड़ उछालती है।

इस उपन्यास में नैतिक साधनों को लेकर, अहिंसा को लेकर, अहंमान्यता और पाशविकता से ऊपर उठने को लेकर, बड़ी लम्बी-चौड़ी बातें कही गई हैं। अगर वह सब उपदेश एक जगह इकट्ठा करके छाप दिया जाय तो पता लगाना मुश्किल हो जायगा कि उसे खुद वर्मा जी ने लिखा है या गांधी जी की रचनाओं से नकल कर लिया है।

लेकिन इतना द्वेष, भेद, ईर्ष्या और अहंकार आपको हिन्दी की किसी दूसरी रचना में न मिलेगा। इसमें अहिंसावादी लेखक हर जगह गंदे-से-गंदा कीचड़ उछालता दिखाई देता है; वह अपने प्रतिस्पर्धियों को नीचा दिखाने के लिए हर मुमकिन तरीके से उनके ख़िलाफ़ नफ़रत उभारने की कोशिश करता है। उनका ख़ाका खींचते हुए उनके पिचके गाल और कीचड़ बहाती हुई आँखों का ज़िक्र करके उनकी "आत्मिक कुरूपता" (पृ० २४६) की बात करने में नहीं हिचकिचाता। निस्सन्देह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने खुद अपने को आत्मिक रूप का ऐसा अवतार मान लिया है कि उसे किसी वर्ग, किसी दल, किसी विचारधारा पर कीचड़ उछालने में आगा-पीछा नहीं होता। कीनापरस्ती की यह मिसाल बेजोड़ है।

दो आदमियों पर कीचड़ जरूर नहीं उछाला गया। ये हैं पं० रामनाथ तिवारी बड़ी रियासत के छोटे ताल्लुकेदार और पं० मार्कण्डेय मिश्र जो लेखक की तरफ से अहिंसा की वकालत करते हैं। इन पर कीचड़ क्यों नहीं उछाला गया, यह आगे स्पष्ट हो जायगा।

* * *

कहानी बहुत सीधी है। एक राजा के तीन लड़के थे। एक कांग्रेसी हो गया; दूसरा कम्युनिस्ट और तीसरा क्रान्तिकारी (आतंकवादी)। कांग्रेसी ने आखिर कांग्रेसी छोड़ दी क्योंकि वह नगर कांग्रेस का सभापति न चुना गया। क्रान्तिकारी ने मुखबिरी के लिए राज़ी होकर फिर विचार बदले और अपनी प्रेमिका के हाथ से ज़हर लेकर खा लिया। कम्युनिस्ट, पुलिस के पीछे पड़ने पर, हिन्दुस्तान छोड़ कर बाहर चला गया। तीनों के बाप राजा साहब अपने राजत्व में और भी महान् होकर पर्दा गिरने के वक्त अकेले स्टेज पर खड़े रहे।

इन तीनों पात्रों के सहारे श्री भगवतीचरण वर्मा ने, राष्ट्रीय आन्दोलन पर जो विचार प्रकट किए हैं और लगे हाथ हिन्दी लेखकों को भी जो लपेट लिया है, उस पर कुछ विस्तार से विचार करना जरूरी है।

पहले कांग्रेस और राष्ट्रीय आन्दोलन को लीजिए। वर्मा जी सन् ३० के आन्दोलन का चित्रण कर रहे हैं। उस आन्दोलन के दृश्य अभी हजारों पाठकों को याद होंगे। प्रेमचन्द की कोई मामूली कहानी उठा लीजिए। उसमें आप जनता के उत्साह और संघर्ष की जैसी सच्ची

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तस्वीर पायेंगे, वैसी इस मोटे पोथे में कहीं आपको न मिलेगी। बावजूद भारतीयता का राग अलापने में श्री भगवतीचरण वर्मा को उस आन्दोलन के नेता सब स्वार्थी और जनता रुपयों के बल खरीदी हुई भेड़-बकरी जैसी ही नज़र आई है। सरकार का मुकाबला करने के लिए आदमी नहीं मिलते, इसलिए दयानाथ इस नतीजे पर पहुँचता है कि "देश अभी स्वतंत्र होने के लिए तैयार नहीं है।" दयानाथ के मुँह से यह बात कहला कर लेखक ने दिखा दिया है कि हिन्दुस्तान की जनता की तरफ उसका रवैया अंग्रेज साम्राज्यवादियों से कितना मिलता-जुलता है। और इस दलील को वहाँ बैठा हुआ कोई भी कांग्रेसी नहीं काटता। उल्टा मार्कण्डेय—जो अहिंसा का सबसे बड़ा उपदेशक है—यह सुझाव पेश करता है कि लोगों को "जेल जाने के काम पर नौकर" रखा जाय (पृ० २४)। (मानों जेल जाने वाली जनता भी किसी ईमानफरोश उपन्यासकार की तरह खरीदी जा सकती है!) मार्कण्डेय इतिहास की दुहाई देकर कहता है कि सारी दुनिया में ऐसा ही होता है, "और इसलिए अगर कांग्रेस मजबूरी की हालत में तनख्वाह देकर लड़ने के लिए सिपाही रखती है तो इसमें हर्ज ही क्या है?" (पृ० २५)। यह प्रस्ताव बहुमत से पास भी हो जाता है।

जिन सैकड़ों देश प्रेमियों ने लाठियों के वार सहे, जिन पर पुलिस ने घोड़े दौड़ाए, जिन्होंने जेल में अनेक यातनाएँ सहीं, उनके त्याग और बलिदान पर श्री भगवतीचरण वर्मा की यह टिप्पणी है! उनका दिमागी दिवालियापन, उनका नैतिक खोखलापन इसी से जाहिर है। जो अपनी जुझारू जनता पर इस तरह कीचड़ उछाल सकता है, उसके लिए कोई भी झूठ, कोई भी कुकृत्य, कोई भी साहित्यिक फ़रेब त्याज्य नहीं हो सकता।

आजादी के आन्दोलन पर श्री भगवतीचरण वर्मा ने एक बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं कई बार थूका है, जिससे आप यह भूल न जायँ की वह मिस मेयो की मानसिक सन्तान हैं। पृ० ३०८ देखिए। रामभरोसे कह रहा है—"गिरफ्तार होने के लिए आदमियों की कमी नहीं है, हजार दो हजार जितने आदमी चाहें, गिरफ्तार होने के लिए तैयार हैं।" दयानाथ ताज्जुब करता है कि इतने आदमी कहाँ से मिल गए और लाला रामकिशोर जवाब देते हैं—"इसमें ताज्जुब की क्या बात है? हिन्दुस्तान में गरीबों और बेकारों की कमी नहीं, उनको रुपये दो और स्वयंसेवक बनाओ।"

बात स्वयंसेवकों की ही नहीं है। लेखक की दृष्टि में "जनता" एक घृणित वस्तु का नाम है, जिससे सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्तियों को दूर रहना चाहिए। यह एक ऐसा मसला है, जिस पर उपन्यास के सभी पात्र एकमत हैं। देखिए पहले तीनों सन्तानों के पिता पं० रामनाथ-तिवारी क्या कहते हैं—"और जनता? यह अपढ़, मूर्ख और कंगाल जनता? किसी के भी बरग़लाने में यह जनता आ सकती है। इसके माने यह हैं कि जो जितना ही मक्कार, चालाक और बेईमान होगा, वही इनका प्रतिनिधि बन सकेगा। और इनका प्रतिनिधि बनकर शासन कर सकेगा!" (पृ०५२)

बिल्कुल यही तर्क उपन्यास के आदर्श, अहिंसावादी पात्र मार्कण्डेय से भी सुन लीजिए। कहता है—"तुम्हारा यह बहुमत वास्तव में अल्प-मत है, क्योंकि यह बहुमत केवल साधन है, कर्ता नहीं है। कर्ता कुछ थोड़े से इने-गिने लोग हैं जिन्हें 'नेता' कहा जाता है, बहुमत इन्हीं थोड़े से नेताओं के इशारे पर भेड़-बकरियों की तरह चलता है।" (पृ० ३५०)

इस तरह बहुमत की मजाक उड़ाने का उद्देश्य क्या है? इसका एक ही उद्देश्य हो सकता है कि जनता को भेड़-बकरी की संज्ञा देकर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
अल्पमत में आस्था पैदा की जाय। यही फासिज्म की विचारधारा का स्रोत भी है।

कांग्रेसी दयानाथ कहता है—"मैं वास्तव में अनुभव करता हूँ कि अधिकांश मनुष्य ऐसे नहीं हैं, जिनके साथ मैं बराबरी से मिल सकूँ। उनमें बेईमानी है, उनमें बेवकूफी है, उनमें संस्कृति, शिष्टता और सभ्यता का अभाव है!" (पृ० ४६१)

एक बार आगे भी वह कहता है—"मैंने यह नहीं सोचा था कि इन पशुओं के साथ काम करने के लिए स्वयम् पशु बन जाना पड़ेगा।" (पृ० ५१६)

और पात्रों के मुँह से भी हिन्दुस्तान की जनता को मूर्ख, भेड़-बकरी, कीड़े वगैरह कहलाया गया है, लेकिन किसी को भ्रम न रह जाय इसलिए, लेखक ने खुद भी कलकत्ते के मजदूरों के बारे में अपनी राय जाहिर कर दी है। मजदूर मशीनें चलाते हैं—"भावनाहीन, चेतना-हीन।" काम से लौटने पर ताड़ी शराब पीकर वे अपने बीबी बच्चों को पीटते हैं या एक कोने में पड़कर सो जाते हैं। (पृ० ६१)। उनमें कहीं भी मानवीय चेतना, आजादी से जीवन बिताने की आकांक्षा, संगठन करने और लड़ने की क्षमता श्री भगवतीचरण को नहीं दिखाई देती। यहाँ तो जड़ता का ही दूसरा नाम जनता है। उसके आजाद होने की कहीं भी संभावना नहीं दिखाई गई। बल्कि मनोविज्ञान से यह पेशबन्दी भी कर दी गई है कि अगर यह "भावनाहीन, चेतना-हीन" समुदाय कभी क्रान्ति कर भी बैठे तो उससे शोषण का अन्त न होगा।

अहिंसावादी मार्कण्डेय क्रान्ति के ख़िलाफ़ यह अनमोल तर्क पेश करता है—"इन बूर्जुआ लोगों को मिटाने के बाद मिटाने वाले लोग शोषक बन जायँगे और मिटने वाले उत्पीड़ित बन जायँगे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
मनोविज्ञान तो यह कहता है। आखिर उत्पीड़न है क्या ? सबल का निर्बल से बेजा फ़ायदा उठाने की कोशिश करना ! मारने वाला सबल है। मारा जाने वाला निर्बल है।" (पृ० ३५०)

कैसी सुघर दलील है ! निर्बल पूँजीपतियों की रक्षा करने के लिए कैसी तीव्र संवेदना है ! जब तक क्रान्ति नहीं होती, तब तक तो जनता भेड़-बकरी है ही ! उसे हम छक कर गाली देंगे। जब क्रान्ति से वह पूँजीवादी आस्था व्यवस्था को उलट देगी, तब हम उसे शोषक कहेंगे और मनोविज्ञान से सिद्ध कर देंगे कि इसका फल भूतपूर्व शोषितों के लिए अच्छा न होगा। आखिर समाज में शोषकों और शोषितों के अलावा और कोई तीसरा तो हो नहीं सकता ! यह मनोविज्ञान की किसी भी पोथी में नहीं लिखा है कि मानव-समाज शोषणहीन भी हो सकता है। इसलिए यह हाय-हत्या क्यों ? सभी रास्ते टेढ़े-मेढ़े हैं। फिर बरगद की छाँह में चुपचाप बैठकर क्यों न सुस्ताया जाय !

देश के नौजवानों और विद्यार्थियों पर श्री भगवती चरण को इससे ज्यादा आस्था नहीं है। इन्हीं के बीच में आतंकवाद पनपा था। लेकिन देखिए आतंकवादी नेता ही देश के तरुणों को क्या समझते हैं। क्रान्तिकारिणी प्रतिभा कहती है—"हमारे देश के नवयुवक नपुंसक और कायर हैं; न उनमें साहस है और न उनमें स्वाभिमान है !" (पृ० ७२)

स्वयं क्रान्तिकारी नेताओं का मनोबल टूटा हुआ है, उनकी गिनती हत्यारों और डाकुओं के साथ की गई है। पं० रामनाथ कहते हैं कि उनमें "चरित्र का अभाव" है क्योंकि "क्रान्तिकारी युद्ध नहीं करता—वह हत्या करता—है !" (पृष्ट २२०) बिलकुल वही दलील जो अंग्रेज साम्राज्यवादी दिया करते थे और जिसे बाबू भगवतीचरण ने ज्यों का त्यों उतार लिया है। क्रान्तिकारिणी वीणा इस बात का जवाब नहीं देती, उलटा पं० रामनाथ से पूछती है "ठीक क्या है ?"

—८—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

दूसरा आतंकवादी नेता प्रभाकर उफ़ मनमोहन अपने जीवन को कृत्रिम बताता है। वह कहता है कि "मेरी आत्मा सङ्कुचित हो गई है। और रही वीरता...वहाँ भी···" (पृ० २७५) यानी लेखक ने खुद आतंकवादियों से वही बातें कहलाई हैं, जिन्हें पं० रामनाथ तिवारी—सामन्तवाद के प्रतिनिधि—कह चुके हैं। आगे चलकर मनमोहन कहता है कि हम छिपकर काम करते हैं, यह इसलिए कि डरते हैं। डरना कायरता है। और भी—"हमारी जिन्दगी सच्ची नहीं, सीधी नहीं। हमारा अस्तित्व एक भयानक झूठ है।" वह समझता है कि आतंकवादी कार्यों से मनुष्यता का पतन होता है। (पृ० २७६–७)।

आजाद और भगतसिंह की परंपरा की यह तस्वीर इस टुटपुँजिए उपन्यासकार ने दी है, उसने क्रान्तिकारियों को चोर, डाकू, कायर और मनुष्यता से गिरा हुआ दिखाया है। जिसके दिल का शीशा धुँधला हो, उस पर सूरज की तस्वीर भी कैसे साफ़ आएगी ?

श्री भगवती चरण ने क्रान्तिकारियों के मुँह से ऐसी बातें बारंबार कहलाई हैं, जिससे आपको विश्वास हो जाय कि उनके बारे में अंग्रेज़ों की कही हुई बातें बिल्कुल सच हैं।

मनमोहन कहता है—"मैं भाग रहा हूँ ! कायर की भाँति।" (पृ० २९३)।

—"मेरा अस्तित्व एक भयानक झूठ है।" (पृ० २९३) मनमोहन की आत्मा जितनी गिरी हुई दिखाई गई है; उतनी ही कुरूप उसकी आकृति भी हो जाती है। उपन्यासकार अपने शब्दों में लिखता है—"और उन्होंने देखा कि उस मुस्कराहट से मनमोहन का चेहरा एकाएक बहुत भयानक रूप से विकृत हो गया है, मनमोहन की उस महाकुरूप मुसकराहट से झगड़ू सिहर उठे।" (पृ० ३३५]

और भी—"उस समय रामसिंह ने देखा कि उनके सामने मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
नहीं खड़ा है, एक महाकुरूप दानव खड़ा है। मनमोहन मुसकरा रहा था और उसके हाथ में पिस्तौल थी।" (पृ० ३७३)

इस कुरूपता से पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट श्यामनाथ या ताल्लुकेदार रामनाथ की सुरूप मुस्कराहट की तुलना कीजिए तो आपको मालूम हो जायगा कि किसे देखकर स्वामिभक्त लेखक का रोम-रोम सिहर उठता है।

जब मनमोहन मरने लगता है तब आप जानते हैं, वह अपने साथी प्रभानाथ से क्या प्रतिज्ञा कराता है ? वह कहता है—"तुम मुझे वचन दो कि तुम इस क्रान्ति के मार्ग से हट जाओगे—मुझे वचन दो !" और प्रभा उसे तुरंत वचन भी दे देता है ! (पृष्ठ ३६०)

इसी तरह मजदूर-आन्दोलन पर भी कसकर कीचड़ उछाला गया है। तमाम क्रान्ति-विरोधी अच्छी तरह जानते हैं कि संगठित मजदूर-वर्ग ही क्रान्ति की सही अगवाई कर सकता है। इसलिए मजदूर संगठन-कर्ताओं पर औरों से ज्यादा कीचड़ उछाला गया है। उनकी राजनीति पर सीधा हमला न करके उनके चरित्र को कलंकित करके मजदूर आन्दोलन के प्रति अविश्वास पैदा करने की कोशिश की गई है। उपन्यास में एक भी ऐसा पात्र नहीं है जो कि मजदूरों में काम भी करता हो और जिसकी तरफ लेखक की सहानुभूति भी हो। इसका रहस्य यही है कि सन् ३० में राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस बनी न थी, वरना उसके किसी कार्यकर्ता को जरूर आदर्श रूप में चित्रित किया जाता। ब्रह्मदत्त रुपये खा जाता है और इतना असंस्कृत है कि कांग्रेसी दयानाथ उससे बात तक नहीं कर सकता। उमानाथ पुलिस को घूस देता है; चन्दे का रुपया खा जाना नैतिक ठहराता है। विदेश से रुपया लेना भी न्यायपूर्ण ठहराता है। वह अपनी स्त्री को छोड़ देता है और विदेश से एक दूसरी पत्नी—और वह भी बर्लिन कम्युनिस्ट पार्टी की सेक्रेटरी—ले आता है। यह जर्मन नारी इतनी सभ्य है कि चाँदी के सिगरेट केस के पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मॉरीसन का मुँह नोंच लेती है ! मॉरीसन एक पड़ोसी की बिल्ली बन्द करके रुपया ठगता है।

यह सब अलिफलैला इसीलिए कि मजदूर संगठन से लोगों का विश्वास उठ जाय और वे इसे लफंगों और उठाईगीरों का काम समझने लगें। उमानाथ के मुँह से बहुत अजीबो गरीब बातें कहलाई गई हैं। वह मजदूर आन्दोलन की बढ़ती के लिए यह जरूरी नहीं समझता कि हिन्दुस्तान आजाद भी हो ! यही नहीं, जब तक आजादी की लड़ाई चलती है, तब तक वह इस पक्ष में भी है कि मजदूर हड़तालें न करें ! गोया इस हड़ताल विरोधी नीति से खुश होकर ही अंग्रेज सरकार ने मेरठ षड्यंत्र का प्रसिद्ध मुकदमा चलाया था ! मजदूरों को चुप बैठाने के साथ-साथ वह किसानों को भी उसी हालत में चुपचाप रहते देखना चाहता है। (पृष्ठ २६७)

मानना पड़ेगा कि झूठ का यह अंबार खड़ा करके लेखक ने शासकवर्ग की सच्ची नमकहलाली की है।

श्री भगवतीचरण वर्मा को अपनी समझ से हिन्दी में उचित सम्मान नहीं मिला। कुछ दिन पहले तक अपनी किताबों की भूमिका में लिख दिया करते थे कि मैं भी पाँच सवारों में हूँ या संसार के बड़े से बड़े उपन्यासों से इसकी तुलना कर लीजिए। यह निराशा और कुढ़न इस उपन्यास में कोढ़ की तरह फूट पड़ी है। एक जगह आपने खुलासा लिख मारा है कि "हिन्दी के साहित्यकारों में इस तरह की बदतमीजी की बातचीत हो जाना बड़ी साधारण-सी बात थी"। (पृष्ठ० २४०)

इस तरह खुद अपनी तमीज में उन्होंने सुर्खाब का पर खोंस लिया है।

रामेश्वर के मुँह से कहलाया है—"ये सब के सब घमंडी, बदतमीज और बेवकूफ हैं"। (पृष्ठ २४४)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनका चित्रण भी इस इरादे से किया गया है कि पाठक के मन में यही भावना पैदा हो।

उमानाथ से कहलाया गया है 'हिन्दी साहित्यिकों का' जमाव पागलों का जमाव है जिसमें हरेक आदमी अपनी कहता है, बेमतलब और असंगत कहता है, बिना सोचे समझे कहता है और गलत कहता है।... आज तक हमारे देश में सत्-साहित्य का सृजन नहीं हुआ, हो भी नहीं सकता था।" (पृ० २७१)

इन खीझ का सबब इसी उपन्यास में आप को मिल जायगा। आखिर हिन्दी संसार में सभी आदमी घमंडी, बदतमीज और बेवकूफ हों, ऐसा तो हो नहीं सकता। कम से कम एक आदमी—नाम लेने भर को तो—तमीजदार, अक्लमन्द और नम्र होना चाहिए। वह है जरूर लेकिन अफसोस, हिन्दी संसार ने उसे न कवि माना, न उपन्यासकार। उसका नाम कुछ भी रक्खा जाय, आप पहचानने में गलती न करेंगे।

मुलाकात कीजिए—"श्री देवीप्रसाद नाटे से आदमी थे, एकहरे बदन के। इनकी गणना हिन्दी के सफल कवियों तथा उपन्यासकारों में होती थी। पर हिंन्दी के आलोचक न इन्हें कवि मानने को तैयार थे और न उपन्यासकार।" (पृ० २३८)

अब अगर श्री देवीप्रसाद को अपनी सफलता घोषित करने के लिए समूचे हिन्दी साहित्य पर कीचड़ उछालना पड़ा तो क्या आश्चर्य?

"टेढ़े मेढ़े रास्ते" में हिन्दी साहित्यकारों की ऐसी ही टेढ़ी मेढ़ी तस्वीरें भरी हैं। जैसे लेखक को आजाद और भगतसिंह की परम्परा में चोर, डाकू और कायर ही दिखाई देते हैं, वैसे ही उसे प्रेमचन्द और प्रसाद की परम्परा में सब घमंडी, मूर्ख और बदतमीज ही दिखाई पड़ते हैं। जिन्दगी की तस्वीरें इतनी टेढ़ी मेढ़ी होकर, इतनी भद्दी और बेडौल होकर लेखक के सामने क्यों आती हैं? इसलिए कि अब नजर ही ऐसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बन गई है कि साफ-सुथरा और सुडौल कुछ दिखाई ही नहीं देता। इस किताब में कुरूपता, कायरता, निराशा, अन्धकार वगैरह का इतनी बार जिक्र आता है कि वे लेखक के दिमाग पर साफ छाई हुई दिखाई देती हैं। किसी एक पात्र की कायरता और निराशा समझ में आ सकती है, लेकिन यहाँ तो सभी एक ही दिमाग की झलक लिए आते हैं। कुछ मिसालें देखिए।

—"उस बात में रक्त को ज़मा देने वाली भयानकता के साथ उससे अधिक ठंढा और कुरूप सत्य था।" (पृ० ७४)

—"मनमोहन की उस महाकुरूप मुस्कुराहट से झगड़ सिहर उठे।" (पृ० ३३५)

—"उनके सामने मनुष्य नहीं खड़ा है, एक महाकुरूप दानव खड़ा है।" (पृ० ३७३)

—"और ब्रह्मदत्त हँसता रहा, मानो वह अपनी इस व्यंगात्मक और कुरूप हँसी से अपने दिल पर लगी हुई चोट की मरहम पट्टी करने का प्रयत्न कर रहा हो।" (पृ० ४३४)

—"दयानाथ! तुममें अहंमन्यता है कठोर और कुरूप।" (पृ० ४६०)

—"नरोत्तम का यह खुल कर मिलना, हँस कर बात करना—यह सब उसके अन्दर वाली किसी भयानक कुरूपता को छिपाने के लिए आवरण भर हैं।" (पृ० ४६८)

—"और एकाएक विश्वम्भरदयाल हँस पड़ा। बड़ी कुरूप और भयानक हँसी थी वह और वह बड़ी देर तक हँसता रहा।" (पृ० ५१०)

—"एक भयानक कुरूपता उसके सामने बैठी हुई थी।" (पृ० २४८)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी तरह तमाम पात्रों के भावों में निराशा, संशय और उदासी की प्रधानता है।

—प्रभानाथ के लिए : "एक भयानक सूनापन, उसके कमरे में व्याप्त था और कमरे का वह भयानक सन्नाटा मानों बरबस उसके प्राणों में भरा जा रहा था।" (पृ० ६६)

—"और दयानाथ के चारों ओर उदासी का अथाह सागर लहरा रहा था। उसके अन्तर वाली गहरी कालिमा आकाश को घेरती हुई बढ़ रही थी।" (पृ०४२०)

—फिर दयानाथ के लिए, "उसकी आत्मा में एक प्रकार की भयानक शिथिलता भर गई थी।" (पृ०४५५)

—उमानाथ के लिए : "उस कमरे का अंधकार उसकी आत्मा में समाया जा रहा था। घबराकर उमानाथ ने बिजली का स्विच दबा दिया।" (पृ० ४६८)

[प्रभानाथ के कमरे के सूनेपन से तुलना कर लीजिए !]

—"और अब उसकी शक्तियाँ क्षीण होने लगी थीं, प्रभानाथ के चारों ओर निराशा थी।" (पृ० ५३१)

—प० रामनाथ तिवारी,—उमा, प्रभा और दया तीनों के पिता—के लिए : "जीवन के प्रति एक प्रकार की भयानक उदासीनता को वे अनुभव कर रहे थे—इतनी थकावट उनके प्राणों में भर गई थी कि वे चिर-विश्राम की कामना करने लगे थे।" (पृ० ५३६)

इसी तरह श्री भगवतीचरण वर्मा की दृष्टि में पशुता भी मानवता का अनिवार्य और प्रधान अंग है।

—प्रभानाथ कहता है, "न मैं देवता हूँ, न मनुष्य ! मैं केवल पशु हूँ"! (पृ० ६२)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—उमानाथ कहता है :"हम हिन्दुस्तानियों में पशुता पूरी तरह भरी हुई है। इसी पशुता से प्रेरित होकर हम सब यह कर डालते हैं।"

(पृ० १७३)

—सुपरिंटेंडेंट पुलिस भी यही कहता है "ये स्त्री-पुरुष—ये सब के सब पशु हैं—और पशुओं में कोई भेदभाव नहीं होता।" (पृ० २११)

—पं० रामनाथ तिवारी कहते हैं : "विषमता ही प्रकृति का नियम है। हम सब एक प्रकार की पाशविकता लिए हुए हैं, हम सबों में दूसरे को उत्पीड़ित करने की दबी हुई मनोवृत्ति है"। (पृ० २२१)

—अहिंसा का उपदेशक मार्कण्डेय कहता है : "हम सब में पशुता है, वही पशुता जिसे हम हिंसा कहते हैं।" (पृ० ४५३)

इस पशुवाद को जान-बूझ कर एक महान् मनोवैज्ञानिक सत्य के रूप में पेश किया गया है। उसका उपयोग किसी मनोवैज्ञानिक उद्देश्य के लिए नहीं, बल्कि विशुद्ध राजनीतिक उद्देश्य के लिए किया गया है। वह उद्देश्य यह है कि मजदूर और किसान अपने संगठन से पूँजीवादी व्यवस्था को न बदलें। जब पूँजीपति और मजदूर दोनों में ही पशु वर्तमान है, तब पूँजीवाद को खत्म करने से मनुष्यता का विकास कैसे होगा? समाज के तमाम लोगों की पाशविकता जहाँ की तहाँ रह जायगी। उल्टे मजदूर हिंसक और उत्पीड़क बन जायँगे! इसलिए ज़रूरत है कि पूँजीवाद से लड़ना छोड़कर हर आदमी अपने 'पशु' से लड़े; पूँजीपति भी लड़े और मजदूर भी लड़े और दोनों का पशु-विरोधी संयुक्त मोर्चा बन जाय! [मॉरल रिआर्मामेंन्ट नामक पच्छिमी आन्दोलन का यही नारा भी है] इसीलिए जब मार्कण्डेय इस फिलासफी पर स्पीच झाड़ता है तो "ऐसा मालूम होता था कि उसके पिता की आत्मा अपनी समस्त साधना और बलिदान के साथ उस पर आ गई थी।" (पृ० ४२२)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिता के बदले यदि सेठ घनश्यामदास बिड़ला की आत्मा उस पर आ जाती तो स्पीच में ज्यादा फर्क न पड़ता !

एक दूसरी जगह मार्कण्डेय अपनी बात को और भी साफ कर देता है। 'आजादी की लड़ाई चलते वक्त किसानों और मज़दूरों को जमींदारों और पूँजीपतियों से न लड़ना चाहिए। यही नहीं आजादी मिलने के बाद भी उन्हें संघर्ष न करके प्रेम और सदिच्छा से ही जीवन बिताना चाहिए। वह कहता है "इस समय जब हमें विदेशी सरकार से लड़ना है, आपस में इस तरह का कलह द्वेष हमें शोभा नहीं देता। और इसी समय क्यों ? मैं तो कहता हूँ कि हर समय, हर काल सदिच्छा और सद्भावना से हमें काम लेना चाहिए।"(पृ० ३४६)

पं० रामनाथ तिवारी की फिलासफी से कि समाज में अनादि विषमता है, यह चिरकालीन सदिच्छा का व्यवहार खूब मेल खाता है। समाज कभी नहीं बदल सकता, क्योंकि पशुता अमर है। इसलिए वर्ग-संघर्ष को वर्गहीन समाज के निर्माण द्वारा खत्म करने के बदले-सदिच्छा और वर्ग-सहयोग की राह पर चलते रहो। पूँजीवाद के समर्थन का इससे अच्छा तरीका और क्या हो सकता है ?

दरअसल पं० रामनाथ तिवारी और मार्कण्डेय एक ही आदमी के दिल और दिमाग हैं। पं० रामनाथ तिवारी पशुवाद के बावजूद अहिंसा के सिद्धान्त की श्रेष्ठता स्वीकार करते हैं। कहते हैं—"सब कुछ देखते हुए भी, मैं कभी-कभी सोचने लगता हूँ कि अगर अहिंसा का सिद्धान्त संभव हो सकता तो वह मानवता के लिए अवश्य हितकर होता।" (पृ० २६१)। मार्कण्डेय उसे संभव मानता है, लेकिन उसके लिए असाधारण साधना की माँग करता है, जिससे उसकी और तिवारीजी की बात में ज्यादा फासला नहीं रह जाता।

पं० रामनाथ तिवारी का चरित्र देखने लायक है। वे उस तमाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कुरूपता और कायरता के बक्स हैं, जो लेखक को सारी दुनिया में छाई हुई जान पड़ती है। वे उसके आराध्य देव की तरह हैं, जिन्हें देखते उसकी आँखें नहीं थकतीं। जिस तरह दयानाथ की बीवी अपने पति को "गौरवर्ण का एक वीर, हिमालय की भाँति अचल, मेघमाला की भाँति गंभीर" (पृ० १२६) देखती है, उसी तरह श्री भगवतीचरण वर्मा ताल्लुकेदार रामनाथ को, "छाती फुलाए हुए और अपना मस्तक ऊँचा किये हुए" "एक पाषाण मूर्ति की भाँति" (पृ० ३००) देखते हैं!

मजाल है, यहाँ कुरूपता और पाशविकता की झलक भी आपको मिल जाय!

मिल भी कैसे सकती है! आखिर पं० रामनाथ तिवारी उस वर्ग के प्रतिनिधि हैं जो समाज में सबसे निकम्मा है, जिसके खत्म हुए बिना समाज की प्रगति एक कदम भी असंभव है, लेकिन जिस वर्ग से श्री भगवतीचरण वर्मा का आध्यात्मिक संबंध जुड़ा हुआ है, उनकी नजर भविष्य की ओर नहीं है, ढलते हुए अतीत की ओर है, उस सामन्तवाद की ओर, जो अपने आखिरी साँसें गिन रहा है। उसी से उनके व्यक्तित्व का तार-तार बँधा हुआ है। वह खानदान की शान, वह रुतबा, वह शासन का रोब-दाब—इनकी याद आते ही उनकी हृदय-वीणा के तार झंकृत हो उठते हैं! उनकी लेखनी यदि किसी का चित्र आँकते हुए पुलकित हो उठती है, तो ताल्लुकेदार पं रामनाथ-तिवारी का। लेख की कल्पना जितना ही उनका ध्यान करती है, उनकी मूर्ति उतनी ही भव्य और विशाल होती जाती है। पृ० ३ पर पाठक को बताया जाता है कि "प० रामनाथ तिवारी अवध के एक छोटे-से ताल्लुकेदार थे।" लेकिन पृ० ४६ तक पहुँचते-पहुँचते—"एक बहुत बड़ी रियासत का भार उनके कंधों पर लदा था और वे अकेले थे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी तरह पृ० ३ पर उपन्यासकार उनका परिचय देते हुए कहता है—"तिवारी जी सभ्य तथा सुसंस्कृत पुरुष थे, उन्हें सभ्य तथा पढ़े-लिखे लोगों का ही साथ पसन्द था। ग्रामीण जीवन में विद्वानों के संसर्ग का अभाव था। इस अभाव को उन्होंने उन्नाव आकर दूर किया था।" लेकिन हिन्दुस्तान तो ठहरा पशुओं का देश; उसमें पढ़े-लिखे सभ्य आदमी कहाँ? इसलिये लेखक ने जोड़ दिया है कि उन्नाव में जिन विद्वानों का वे सत्संग करते थे, वे "कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर आदि पढ़े-लिखे अफसर' थे।

तिवारी जी तो पशुवाद के महान् आचार्य हैं। पशुवाद और पढ़ना-लिखना कुछ विरोधी क्रियाएँ हैं। इसलिए लेखक ने पं० रामनाथ-तिवारी से कहीं पढ़ने लिखने की चर्चा नहीं कराई। बल्कि आगे चल-कर प्रभानाथ को यह उपदेश दिलाया है कि "यह विद्वत्ता, ये सिद्धांत! ये सब की सब धोखे की चीजें हैं।...ये सारे सिद्धान्त—यह सारी बुद्धि! यही हमारे विनाश के कारण हैं।" (पृ० ३८)

पशुवाद के आचार्य के लिए यह जरूरी था कि वह तर्क और बुद्धि से ऊपर उठ जाय वर्ना उसकी भव्यता के बेरंग हो जाने का खतरा था। यह बात नहीं है कि तिवारी जी के अपने सिद्धान्त न हों! हैं, लेकिन उनका बुद्धि से कोई सम्बन्ध नहीं है। कहते हैं—"जीवन का नियम क्या है? समर्थ की असमर्थ पर विजय! अनादि काल से समर्थ असमर्थ पर शासन करता आया है और अनन्त काल तक शासन करता रहेगा! इसको तुम रोक कब सकते हो?" (पृ० १४४) अपने सामर्थ्य-भर यह मनुष्य (या पशु) किसानों पर अत्याचार करता है; उसे उचित और न्यायपूर्ण ठहराता है। क्रोध में वीणा पर भी हाथ उठाने में वह नहीं झिझकता। फिर भी उसके चरित्रबल की महिमा गाते लेखक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं अघाता। यही नहीं, दूसरों से बराबर उनको सार्टिफिकेट भी दिलवाता जाता है, जिससे भव्यता में कमी न पड़ने पाए।

पृष्ठ ३ पर पहले परिचय में उनकी सभ्यता और संस्कृति की तारीफ की जाती है। पृ० ४२ पर फिर लेखक कहता है "तिवारी जी शिक्षित व्यक्ति थे, और शिक्षित से कहीं अधिक सुसंस्कृत।" इसी तरह पृ० १३१ पर—"वे ताल्लुकेदार थे, शिक्षित थे और चरित्रवान थे!" अगर ताल्लुकेदारों को बाबू भगवतीचरण चरित्रवान होने का सार्टिफिकेट न दें तो बात पर विश्वास कौन करे?

आतंकवादी मनमोहन उनके लिए कहता है—"काश! कि हरेक आदमी ऐसा बन सकता!" (पृ० ३००)। आतंकवादी बेटा प्रभानाथ उनके चरणों पर गिर पड़ता है और कहता है—"आपने मुझे उचित रास्ता दिखला दिया।" (पृ० ५०२) लोग उनकी गाली सुनते हैं फिर भी उनके पैर छूते जाते हैं! "न जाने क्यों, रामनाथ की गाली सुनने पर भी वीणा ने अनायास ही झुक नर रामनाथ के चरण की धूल अपने मस्तक पर लगा ली।" (पृ० ५०३) जब वह पूजा घर में बैठे होते हैं तो वीणा "अपना मस्तक देहली पर रखकर" प्रणाम करती है! (पृ० ५२०)

यह सब घिनौना व्यापार इसलिए की अवध के महापतित ताल्लुकेदारों के प्रति पाठक में सहानुभूति पैदा की जाय। उपन्यास में कोई भी ऐसा पात्र श्री भगवतीचरण वर्मा को नहीं मिलता जिसके चरणों में वह अपनी श्रद्धा उड़ेल सकें। मजदूर आन्दोलन के संगठनकर्ताओं को उन्होंने जितना ओछा करके दिखाया है, उतना ही भव्य और महान् इन राजा साहब को दिखाया है। इससे जाहिर है कि सामन्तवाद की गुलामी उनकी नस-नस में भरी है। यह कला का व्यभिचार है। समाज की प्रगति को रोक कर पुरानी व्यवस्था को दीर्घजीवी बनाने का प्रयत्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। अहिंसा पर लंबे-लंबे व्याख्यान और जनता के आन्दोलन पर धूल फेंकना इसीलिए है कि पुराने समाज का टूटता हुआ ढाँचा किसी तरह जुड़ा रह जाय।

कौन नहीं जानता कि अवध की उर्वर धरती पर ताल्लुकेदारी व्यवस्था कोढ़ की तरह उसे विकृत किए हुए है। अंग्रेजों के पाले-पोसे हुए गदर के ये गद्दार आज भी जनता की छाती पर मूंग दल रहे हैं। कौन सा कुकर्म, कौन सा व्यभिचार, कौन सा पाप इनके नाम के साथ नहीं जुड़ा हुआ है। फिर विद्वत्ता, संस्कृत और ताल्लुकेदार! इनकी अपार मूर्खता की कहानियाँ, आप किसी भी शहर, किसी भी गाँव में सुन सकते हैं। लेकिन इस तमाम पाशविकता की झलक भी आपको "टेढ़े मेढ़े रास्ते" में न मिलेगी। उसे जान बूझकर छिपाया गया है, जिससे जनता का क्रोध इस वर्ग के खिलाफ न उभरे। उसके बदले एक पशु-प्रदर्शन का निर्माण कर डाला गया है, जिससे लोग भूलभुलैया में पड़ कर वर्ग-संघर्ष की सचाई को बिल्कुल भूल जायँ।

रामनाथ का पशुवाद और मार्कण्डेय का अहिंसावाद एक ही दर्शन के दो पहलू हैं। रामनाथ अहिंसावाद की श्रेष्ठता स्वीकार करते हैं और उसकी श्रेष्ठता इसी में है कि वह इतना कठिन है। मार्कण्डेय पशुवाद को मानते हैं और चूँकि पशुवाद इतना प्रबल है, इसीलिए अहिंसावादी व्यक्ति की असाधारण साधना व्यर्थ हो जाती है! लेकिन मार्कण्डेय अच्छी तरह जानता है कि अहिंसा की तमाम दलीलें दिल को खुश करने को हैं, उनसे होना-हवाना कुछ नहीं है। उमानाथ के मुँह से मार्कण्डेय को "सिनिक" कहलाया गया है। (पृ० ११२)

जो दरअसल सही है। अहिंसा पर व्याख्यान देते समय पिता की आत्मा के आने के बावजूद वह है ऐसा "सिनिक" जो मानव समाज में किसी परिवर्तन की आशा नहीं करता। उमानाथ के सामने वह यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दलील देता है कि क्रान्ति के बाद मजदूर वर्ग उत्पीड़क हो जायगा ! यानी यह विधाता का लेख है कि जैसे पूँजीपतियों ने अपनी हुकूमत में समाज को गुलामी और शोषण के बन्धनों से जकड़ रक्खा है, वैसे ही मजदूर वर्ग भी नये समाज में गुलामी और शोषण को कायम रक्खेगा। इस बात का सबूत देने के लिए वह सोवियत संघ पर वही झूठे आरोप लगाता है जिन्हें बीस साल से दुनिया के तमाम पूँजीवाद अखबार लगाते आए हैं। मार्कण्डेय के कम्युनिस्ट विरोध और सोवियत संघ पर झूठे आरोपों का मतलब साफ है—यह साबित कर देना कि मजदूर वर्ग पूँजीपतियों की ही तरह निकम्मा है और वह आज से ज्यादा अच्छी व्यवस्था नहीं बना सकता !

"सिनिक" होने का मतलब है, अपनी निराशा को दार्शनिक रूप देकर उसमें रस लेना। अगर कोई आदमी नई विचारधारा लेकर आता है तो "सिनिक" उस पर सोच विचार करने के बदले पहले से ही "कुछ न होगा" मान कर उधर से मुँह फेर लेता है। देखिए किस सफाई से मार्कण्डेय "कुछ न होगा" की फिलासफी आपके गले उतारना चाहता है। कहता है—"तुम्हें यह स्मरण रखना पड़ेगा कि दुनियाँ में तुम्हारी ही भाँति हर एक आदमी का अपना निजी विश्वास है, अपनी निजी भावना है।" (पूँजीपति की भी है, ताल्लुकेदार की भी है, मजदूर की और किसान की भी है। और सब एक ही धरातल पर हैं !) "और यही तुम्हरा निजी विश्वास और निजी भावना दूसरों की नजर में पागलपन है क्योंकि दूसरों के विश्वास और दूसरों की भावनाएँ बिल्कुल दूसरे हैं। और इसलिए तुम्हारी बात ही बेकार हो जाती है, क्योंकि जिस अधिकार को तुम माँग रहे हो, वही अधिकार तुम्हें दूसरों को भी देना पड़ेगा।" (पृ० ५६)

नतीजा यह निकला कि मजदूर को कोई हक नहीं है, जो कहे कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूँजीपति की विचारधारा यानी मुनाफा कमाने का अधिकार गलत है। अगर मजदूर अपनी भावना को सही मानता है तो वह पूँजीपति को भी वही अधिकार दे जिससे वह अपनी भावना पर अड़ा रहे। कैसा सुन्दर मानववाद है, जहाँ मजदूर और पूँजीपति एक घाट पानी पीते हैं; जहाँ दोनों वर्ग-भेद को कायम रखते हुए मनुष्यता की खोज में तल्लीन हैं! इसीलिए जब मार्कण्डेय आँख, नाक, कान सब पर विचित्र आभा, प्रकाश और ज्योति लिए हुए सारे समाज के व्यक्तियों को अहिंसावादी बनाने पर व्याख्यान देता है, तब भी उसके 'सिनिक'-पन में कमी नहीं होती, क्योंकि वह जानता है कि उसके सिद्धान्त का वर्ग-भेद और वर्ग शोषण को मिटाने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

पं० रामनाथ तिवारी कहते हैं—"कार्लमार्क्स ने लिखा और लेनिन ने किया, परिणाम? रूस में भयानक रक्तपात और यहाँ गाँधी ने एक मत बतलाया और परिणाम? जेल गिरफ्तारियाँ! पर वास्तव में क्या होना चाहिए, जिससे सब सुखी हो सकें, जो सबों की उलझनों का हल हो? कोई नहीं बतला सका! आखिर होगा क्या?" (पृ० २२०)

कितने पते की बातें कहीं हैं तिवारी जी ने! और इन पर बाबू भगवतीचरण की अपने ही शब्दों में यह टिप्पणी है :—

'वीणा गौर से तिवारी जी की बातों को सुन रही थी। उसे यह खयाल न था कि देहात में रहने वाला आदमी इतना सोच सकता है, इतना समझ सकता है! और तिवारी जी के तर्क? उनमें गंभीरता थी, उनमें ईमानदारी थी, उनमें सार था।" (पृष्ठ २२०)

इसका मतलब साफ है। जो आदमी सिनिक है, जो सामाजिक परिवर्तन में विश्वास खो चुका है वही गंभीर है, वही ईमानदार है, उसी की बातों में सार है! मार्कण्डेय और रामनाथ दोनों ही सिनिक हैं, पश्चाद के आचार्य जो सामाजिक उलटफेर में विश्वास नहीं करते, बल्कि

17494

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रान्ति विरोधी होने के नाते अपने सिनिक दर्शन से उस विचारधारा का डटकर विरोध करते हैं। वर्गशोषण मिट सकता है—इस बात में लोगों का विश्वास न रहे—यही टेढ़े मेढ़े रास्ते का उद्देश्य है।

यह उपन्यास साबित करता है कि कला, विज्ञान, दर्शन, संस्कृति आदि वर्गों से परे नहीं हैं, वरन् वे वर्गों के विकास और पतन के साथ बँधे हुए हैं। "टेढ़े मेढ़े रास्ते" का "कुछ न हो होगा" वाला दर्शन एक जड़ और पतित शासकवर्ग का दर्शन है, जो आगे बढ़ने की तमाम आशाएँ खो बैठा है और जो किसी तरह अपनी पुरानी सम्पत्ति को बनाए रखना चाहता है। लेकिन शोषित वर्ग जो सम्पत्तिहीन है, जो शोषणहीन समाज बनाना चाहता है, जिसमें आगे बढ़ने और समाज को बदलने की आकांक्षा और सामर्थ्य है, वह वर्ग, "कुछ न होगा" वाले दर्शन को मानकर सिर्फ अपनी गुलामी के बन्धनों को मजबूत बना सकता है। शासक वर्ग यही चाहता भी है। इसलिए शोषित वर्ग का दर्शन होता है—"समाज बदल सकता है और हम उसे बदलेंगे!" मार्क्सवाद इस परिवर्तन का रास्ता दिखलाता है। वह बतलाता है किस तरह संगठित मजदूर वर्ग के नेतृत्व में तमाम शोषित जनता पूँजीवादी वर्ग और उसके सामन्ती सहायकों को खत्म करके एक समाजवादी व्यवस्था कायम कर सकती है। मार्क्स का दर्शन इसी से पैदा हुआ है कि वह सामाजिक परिवर्तन में विश्वास करता है। उपन्यासकार नहीं चाहता है कि वह दर्शन शोषित जनता के हाथों पहुँच जाय। इसीलिए उसने यह भारी-भरकम उपन्यास लिखा है। और इस तरह की कोशिशें अभी और होंगी हालाँकि वे विफल होंगी।

× × ×

इस उपन्यास में कुछ दिलचस्प बातें और हैं। मुसोलिनी किसी जमाने में कम्युनिस्ट था! (पृ० २०७)। प्रगतिशील लेखक संघ की नींव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न् ३०. में पड़ी थी ! झगड़ू और उनका .बेटा मार्कण्डेय आपस में तें करते हैं तो बाप अवधी बोलता है और बेटा खड़ी बोली ! शुरू में झगड़ू और रामनाथ की शत्रुता बताई गई है (पृ० १७–१८) लेकिन आगे चल कर कहीं भी उसका चिन्ह आपको ढूँढ़े न मिलेगा।

सुन्दर अवधी का नमूना "रहे रहन" के प्रयोग में देखिए—"अब ही हम तुम्हरे विषय माँ श्यामू से बतियात रहे रहन ?" (पृ० १६०)।

स्वाभाविक वाक्य-रचना देखिए—"अब मैं महालक्ष्मी के मेरे प्रति प्रेम की विवेचना करता हूँ।" (पृ० २०२)। स्त्री पति से कह रही है—"अपना दुर्भाग्य मुझे वहन करना होगा।" (पृ० २०८)। "अब क्या करोगे ? किससे बोलोगे ? किसपर शासन करोगे ? सब गए—हमेशा के लिए गए !" (पृ० ५४५)

—इस तरह के फिल्मी वाक्य और "रामनाथ का स्वर तेज़ होता गया" के स्टेज-डायरेक्शन बाम्बे टाकीज़ की याद दिलाने के लिए कई जगह मिलेंगे।

—"ज़िला का सदर होने के कारण" (पृ० ३)

—"ताल्लुका का उत्तराधिकारी होने के कारण" (पृ० ३१)

—"पर आप इस ताल्लुका के स्वामी रहकर" (पृ० ३२)

—"टोड़ी बच्चा के अर्थ क्या होते हैं" (पृ० ५०) इन टुकड़ों में वर्माजी ने अपना आकारान्त-प्रेम प्रकट किया है। जिले का सदर, ताल्लुके का उत्तराधिकारी शायद गलत हिन्दी होगी !

प्रभानाथ से फर्स्ट डिवीजन एम्० ए० पास कराया लेकिन कम्पिटीटिव की जगह उससे "कम्पटीशन इक्जामिनेशन" कहलवा गए (पृ० ३८)

"अभी" और "फिलहाल" एक साथ आपने न देखे होंगे। "पर अभी फिलहाल विरोध की गुंजाइश नहीं है।" (पृ० १०१)

इसी तरह "दृष्टि कोण देखा" जाता है (पृ० ७४ और ७५) और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोग किसी चीज "का" नहीं, किसी चीज "पर" अवलोकन करते हैं ! (पृ० १५१)।

सभ्यगण वैसे ही बहुवचन है लेकिन और गौरव देने के लिए "सभ्यों" न लिखकर "सभ्यगणों" लिखा गया है ! (पृ० १३५)।

पिस्तौल पुल्लिंग है या स्त्रीलिंग ?

—"अच्छे पिस्तौल ही देखे थे।"

—"उसके पास तीन पिस्तौलें थीं।" (पृ० ६६)

—जाहिर है कि वर्मा जी उलझन में हैं।

—"आप की हठ पूरी हुई।" (पृ० २१६)

लेकिन बोलने वाली लड़की बंगाली है।

—"उसकी चेतना और कर्मण्यता एकाएक जाग उठे" (पृ० ४६२) हालाँकि चेतना और कर्मण्यता दोनों स्त्रीवाचक हैं फिर भी "उठे" !

जब शिक्षा और विद्वत्ता के आदर्श पं० रामनाथ तिवारी हों तो भाषा में ऐसी भूलें क्षम्य समझी जानी चाहिए।

उपन्यास का मूल्य सात रुपया है। वर्माजी का धैर्य सराहनीय है जो उन्होंने इतना मोटा पोथा लिख डाला; उन पाठकों का धैर्य और भी सराहनीय है जो उसे आखीर तक पढ़ गये होंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

प्रथम खंड

पहला परिच्छेद

१

बालक कुछ भी नहीं समझा। आवेश के कुछ क्षण व्यतीत हो गये। बच्चा हाथों में मचलने लगा क्योंकि उस समय रामनाथ की मुखाकृति अत्यंत करुण और गंभीर थी। आज तक उसने बाबा का ऐसा रूप नहीं देखा था। आज उस कठोर मुख पर यह दयनीयता सचमुच एक ऐसी वस्तु थी जिसे बालक के लिये समझ लेना एक असंभव बात थी।

चारों ओर घर में सन्नाटा छा रहा था। श्यामनाथ सो रहे थे। राजेश्वरी और बच्चों के चले जाने पर महालक्ष्मी को और भी सूना-सूना सा लगने लगा। पति चला गया, देवर, जेठ, चले गये, अब घर में कोई भी नहीं रहा। वह सीधी-सादी स्त्री थी। बंगला, या कोठी उसके मस्तिष्क में केवल घर के रूप में समाते थे। उसकी इच्छा हुई थी कि वह उमानाथ से कहे, मैं भी चलूंगी, तुम्हारे साथ चलूँगी, पर न जाने क्यों वह नहीं कह सकी। और जब वह इसी चिंता में अकेली बैठी थी वह एकाएक चौंक उठी। दूर कहीं शहनाई बजने की आवाज़ आ रही थी। इसके साथ ही नगाड़े और ताशे बजने का स्वर आया, फिर शहनाई किसी गत पर झूमी, झूम कर उसके कानों के पास झनझनाने लगी। आजकल तो कहीं ब्याह का भी समय नहीं था। फिर यह असमय देवों को कौन जगा रहा है?

उस आवाज को सुन कर अवधेश रामनाथ की गोदी से उतर कर द्वार की ओर छोटे-छोटे पैर रख कर भाग चला। बाजे की आवाज़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी और वह उसे सुन कर कैसे चुप रह सकता था। पंडित रामनाथ ने देखा और उनके मुँह से एक ठंडी आह निकली। कैसा भाग रहा है, जैसे आज तक कभी शहनाई की आवाज़ नहीं सुनी। सड़क पर पलते हुए नंगे गँवार बच्चों सा। यदि कोई देखे तो क्या कहे कि इस घर के बच्चों को ठीक से शिक्षा तक नहीं मिली। और फिर उन्होंने मन ही मन अपने को सांत्वना दी। जैसे मा-बाप वैसा बच्चा किंतु यह भाव एक ऐसा बम था जो उल्टा उन्हीं के बनाये स्वप्नों पर गिरा। उनके अपने पुत्र ऐसे क्यों हुए? दया, उमा, प्रभा, तीनों! एक नहीं तीनों···और तीनों···बस यही शब्द बार-बार भीतर ही भीतर चिल्लाने लगा।

और फिर एक एक करके सबके मुख उनकी आँखों के सामने चलने लगे। प्रभानाथ! कितना नम्र था वह, कितना शांत लगता था। और विधाता ने उसका अंत कितना भीषण लिखा था। विष खाकर मृत्यु। और वह भी एक स्त्री के हाथ से? स्त्री, जो उसकी कोई न थी!

किसलिये? देश के लिये? नहीं इसलिये कि यदि मरता नहीं तो अनेक व्यक्तियों के नाम बता देता। अनेक आदमी पकड़े जाते समस्त षडयन्त्र नष्ट हो जाता। किंतु इस भयानक अपमान को उसने अस्वीकार कर दिया। व्यक्ति की मर्य्यादा तब अपने पूर्णत्व को प्राप्त कर गई जब उसने अपना समष्टि के लिये बलिदान दे दिया। अब प्रभा, प्रभा नहीं रहा। अब वीणा का प्रेम फिर एक उज्जवल गरिमा से चमकने लगा। वह गई। उसने उसे विष दिया जिसे वह सबसे अधिक प्यार करती थी। जिसको लेकर वह अपनी दुनिया बसा सकती थी। सुख से रह सकती थी। किन्तु मुखबिर! मुखबिर से संसार घृणा करता है। तब प्रश्न हुआ। क्या प्रभा ने अपनी कायरता का अंत करने के लिये मृत्यु पथ चुना, या एक ध्येय के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदर्श, एक सत्य की रक्षा के लिये अपने आप तक को निर्भय हो कर मिटा दिया। क्या मिला उसे ? यश ? कौन जानता है उसे ? हाँ वह प्रसिद्ध होता, सबकी ज़ुबान पर उसका नाम होता। काश वह बता देता, सिर इसलिये झुका देता कि वह कंधों पर बना रहे।

मुखबिर ! शब्द बड़ा होने लगा। रामनाथ के हृदय के अंधकार में वह ऐसे बढ़ने लगा जैसे सिनेमा के पर्दे पर कभी-कभी अक्षर बढ़ते हुये दिखाये जाते हैं, जैसे पानी में पत्थर का टुकड़ा फेंक देने से भंवर पड़ते चले जाते हैं, एक के बाद एक, गोल, गोलाई का विस्तार, जल के समस्त स्तर पर झनझनाता प्रसार बढ़ता चला जाता है··· कहाँ···घर···कोठी···बँगला, गौरव, जमींदारी, वैभव, परम्परा, अधिकार,···कुल···कुल···की मर्य्यादा···!!!

रामनाथ को लगा वे कुछ भूल गये हैं। एक सींक के चारों ओर कोई बहुत तेजी से डोरा लपेटता चला जा रहा था। हठात् किसी ने सींक को बाहर खींचने का प्रयत्न किया। वह अंदर ही टूट गई, डोरा बुरी तरह उलझ गया। और फिर उंगलियों ने जितना ही उस डोरे को सुलझाने का प्रयत्न किया, वह उतना ही उलझता गया।

रात अब ग्यारह से उधर के घंटे फलाँग रही थी। उन्नाव की नीरवता कभी-कभी कुत्ते भोंक कर तोड़ देते थे। रामनाथ के दिमाग़ में दो ही बातें चक्कर लगाने लगीं, कुल···गौरव···मुखबिर···अंत...

वे उठ खड़े हुये। उन्हें याद आया। महालक्ष्मी खाने को बुलाने आई थीं। उन्होंने अवधेश को गोदी में लिया था। वे खड़े हुए थे। पर न जाने कब वह चली गई, वे बैठ गये, अब वे फिर अकेले थे। बरामदे में अवधेश का स्वर सुनाई दिया। अभी तक खेल रहा था। बाजे की आवाज़ आ रही है। दिन में खूब सोया है। उसे अभी से नींद कहाँ ? रामदीन कह रहा है; भला बताओ यह भी कोई बात है.....।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इससे आगे कुछ स्पष्ट नहीं। महाराज बाहर मैदान में हँस पड़ा है। रामनाथ ने आँखें उठाकर चारों ओर देखा। उनकी वेदना उन्हें एक कमरे से दूसरे कमरे में ठेल चली। प्रभानाथ का अंतिम समय का वह नीला चेहरा आँखों के सामने आगया। मुखबिर !! फिर उनके मुख से यह शब्द फूट निकला। तू मुखबिर होता ? कुल का गौरव खंड-खंड हो जाता। हठात् वे चौंक उठे। जिस कमरे में वे खड़े थे वह उनके कुल गौरव का प्रतीक था। जमीन पर काफी मोटा कालीन बिछा था जो उनको यौवन में पसंद आ गया था। तब संग उठने बैठने वाले लोगों ने कहा था—सरकार, शोभा है। यह पठान इसे काश्मीर से लाया है। उन्होंने खरीद लिया। दीवारों पर पुराने तैलचित्र टँगे थे। छत से पुराने झाड़फानूस लटक रहे थे।

रामनाथ को उस कमरे में घुसते ही एक शांति सी मिली। उस हवा में एक पुरानापन था। मध्यकालीन वातावरण। रामनाथ ने सिर उठाकर देखा। बीच में पिता का बड़ा तैलचित्र था। सिर पर रेशम की पगड़ी। ऊपर से नीचे तक पुराने ज़माने का भव्य लिबास। गले में मोतियों की माला। उसकी बाईं तरफ़ रामनाथ के बाबा की तस्वीर थी। दाईं ओर रामनाथ का अपना चित्र था। उनका यह चित्र तब मुसव्विरों ने तैयार किया था जब रामनाथ को गद्दी मिली थी। इस गद्दी के सामने गाँव वाले, —रियाया आकर नज़र पेश करती थी। सामने की दीवार पर रामनाथ के चाचा का चित्र था। सबके चेहरे चमकते हुए। उज्ज्वल। सुंदर। देखकर लगता था कि यह कुल, यह वंश कितना प्राचीन था कितना महान् !

किंतु प्राचीन शब्द का ध्यान आते ही रामनाथ का मस्तिष्क कुछ और सोचने लगा।

चित्र में उनका मुख उन्हें उनके यौवन की याद दिलाने लगा। वे बीते हुए दिन जो आज सुपने की तरह भाग गये हैं और भोर होने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के पहले ही वे अँधेरे में जाग कर करवटें बदल रहे हैं। उनका विचार था कि वे आराम से सोते रहेंगे। मृत्यु ही उनके लिये उस प्रभात के समान होगी जिसमें उनके सब दुखों का अंत होगा। दुख क्या है? संसार में जीवित रहना ही दुख है। यहाँ कष्ट पाना नरक को इसी पृथ्वी पर भोग लेना है। दुख से मुक्ति कब होगी? जब भगवान से मिलन होगा। इस देह को छोड़ कर दूसरी देह में उन्हें प्रवेश करना होगा। आज के उनके ये वस्त्र पीछे छूट जायेंगे। कल यदि उन्हें रामदीन के चोले में रहना पड़ा……।

'नहीं नहीं,' रामनाथ अपने आप बुड़बुड़ा उठे। उन्होंने आज तक कोई पाप नहीं किया था।

२

और धीरे-धीरे उन्हें अपना समस्त अतीत स्मरण होने लगा। बहुत दिन पहले। जब शायद दुनिया बहुत बड़ी लगती थी उन्होंने बानापुर छोड़ा था। उस बार की अभी तक याद है। गोद में कंधों पर सोते हुए समय की तो याद नहीं रही। बाल्यकाल में कोई कमी नहीं थी। उन दिनों जीवन कितना कठोर था। पंडितजी सब तरह का सम्मान करके भी कोई कसर नहीं करते थे। पिता की आज्ञा थी कि पढ़ाते समय गुरु गुरु, है, शिष्य शिष्य है। कोई रियायत नहीं होती थी। जाँघों पर कभी-कभी नोंच-नोंच कर गुरुजी नील डाल देते थे। सुबह अंधेरे उठना, नहाना—ठंडे पानी से नहाना। उफ़! तब कितना कठिन लगता था। पर वह सब ठीक था। उसी से मनुष्य बनते थे। रामनाथ ने घोख-घोख किताबें फेंक दीं। कसरत कराने वाला उस्ताद उनसे प्रसन्न था ही। क्या था जो उन्होंने नहीं सीखा। जब वे सुबह डेढ़ सेर दूध में पाव भर मलाई और आध पाव रबड़ी पीने लगे उन्होंने यात्रा की। देखकर आँखों में लोच आती थी। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यौवन की लुनाई थी। लोग पच्चीस का बताते थे, थे तब केवल उन्नीस ही के। स्त्रियाँ उन्हें देखती थीं। रीझ जाती थीं कि बेटा हो तो ऐसा हो। और रामनाथ का नाम अवध के ही नहीं आगरा तक के रईसों जमींदारों में आदर के साथ लिया जाने लगा था।

रामनाथ उस समय भी एक मात्र नक्षत्र थे। वे कभी अपनी इच्छा से तवायफों की महफिल तक में नहीं बैठे। दयानंद का आंदोलन उस समय जोरों पर था, पर उन्होंने सनातन धर्म से आँखें नहीं हटाईं। विधवा विवाह के विरुद्ध रहे। दुनिया जिसे आगे बढ़ना कहती थी वे उसे सदैव पतन कहते थे। चंद उचक्कों की कुछ नाम कमा लेने की साध समझते थे, क्योंकि उनके पास और क्या था? यदि वे अच्छे घरों में पैदा होते तो काहे को न्याय और अन्याय की दुहाई देते फिरते? धनी और शक्तिशाली के विरुद्ध कभी अन्याय नहीं होता। गरीब के साथ अन्याय हो सकता है, क्योंकि उसके पास अपनी रक्षा करने के साधन नहीं हैं। यदि संसार में अन्याय हो ही नहीं तो फिर न्याय सत्ता की क्या आवश्यकता है? न्याय उनका है जो समर्थ हैं। किंतु उनके साथ क्या न्याय हुआ है? किस अपराध के कारण घर में माया, कहने में नारी देकर भी परमात्मा ने उनको पुत्र नहीं दिया? क्योंकि ब्रिटिश गवर्नमेंट उनसे अधिक समर्थ थी, क्योंकि साम्राज्य का खंभा होने पर भी उनका मूल्य नगण्य था, उन्होंने अपने को बचाने के लिये एक स्वामी स्वीकार कर लिया था।

फिर विवाह हुआ। वह दिन भी अभी तक याद है। उस दिन हृदय में एक अद्भुत स्पंदन हुआ था। पिता ने ही सब खोज बीन की थी। वह बारात ऐसी निकली थी कि सात गाँवों ने बारात में जाने के लिये फेंटे रंगे थे। वह गौरव था। और जब चाचा का देहांत हुआ और पिता भी उनके एक वर्ष बाद ही मर गये, तब ब्राह्मणों ने दक्षिणा पाकर जो आशीर्वाद दिया था, यदि वह सब सच था तो उसी पुण्य के बल पर सात पीढ़ियाँ आकाश के नक्षत्रों क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाँति जगमगा सकती थीं। कितने भिखमंगों का पेट भरा था उस दिन! माल इतना बन गया था कि जब फेंका गया तब भिखमंगे बटोर बटोर कर असीस देते हुए ले चले।

यौवन में उन्हें गद्दी मिली थी। अखंड अधिकार मिले थे। उस दिन के बाद घर के सब पुराने-पुराने लोग धीरे-धीरे चले गये। वे कभी नहीं टिकते। जब एक जाने लगता है तो जैसे दूसरे को इशारा कर जाता है कि आजा आ, पीछे ही चला आ।

गृहस्वामिनी ने अपने अल्प वयस में ही सब कुछ सँभाल लिया। वे घर की ओर से निश्चिंत हो गये। अब केवल बाहर ही बाहर का प्रभुत्व हो गया। घर छोड़ दिया कि मालकिन ने, पतिव्रता ने, दासी ने सब पर स्वामित्व जमा लिया। पुरुष की पुरातन लिप्सा पूर्ण हुई, जब उसका अपना गौरव ही दूसरे का भी गौरव बन गया।

उन दिनों अंगरेज आते थे, वे भी रामनाथ की उपेक्षा करने में असमर्थ रहते थे। कितने ही ताल्लुकेदारों की, साहब को देखकर घिग्घी बँध जाती थी। अंगरेज प्रसन्न होकर उनसे कहते थे, वेल मिस्टर रामनाथ! आप जैसा बफ़ादार आदमी मिलने से हमको बड़ा खुशी हुआ। आपको कोई तकलीफ तो नहीं है?

'नहीं हुजूर अंगरेजी हुकूमत में,' रामनाथ उत्तर देते, 'शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।'

अंगरेज प्रसन्न हो जाते। अक्सर अंगरेज उन्हें बताते कि वे उनकी दी हुई सहायता के प्रति कितने आभारी थे। उन्होंने डाबसन कलक्टर के सामने साफ़-साफ कह दिया था कि ब्रिटिश सरकार का स्वार्थ भारत में जमीन्दारों के साथ बँध गया है। रामनाथ ने कभी दब कर बात नहीं की। किंतु उनकी अकड़, उनका स्वाभिमान, उनकी बराबरी, उनका गौरव सब अंगरेजों ने अटूट स्वामिभक्ति और वफ़ादारी के रूप में लिया। लिया, क्योंकि वे विजयी थे। जमींदारों को उन्होंने बनाया था। शक्ति रहते यहाँ के जमींदारों ने अपनी निरं-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुशता को स्थापित रखने का प्रयत्न किया, किंतु जब उनके लिये यह असंभव हो गया तब उन्हें सिर झुकाना पड़ा। सबल के सामने सिर न झुकाना तो व्यर्थ की मूर्खता और उद्दंडता है, जिसे कोई भी बुद्धिमान आदमी नहीं कर सकता, क्योंकि निर्बल उसमें नष्ट हो जाता है, खो जाता है।

वे दिन भी चले गये ; अंगरेजों से पहले लोग डरते थे। जिधर से अंगरेज निकल जाता था उधर लोग काँप उठते थे। अब क्यों नहीं काँपते ? यह क्या है जिसे दयानाथ, उमानाथ, प्रभानाथ सबने घृणा की दृष्टि से देखा ? परंपरा से जो होता चला आ रहा था वह इसी पीढ़ी के लिये अखरने लगा ? राज बदलते थे, समाज बदलते थे, कायदे कानून बदलते थे, पर क्या यही सब नहीं होता था जो आज हो रहा है ? क्या तब धनी दरिद्र नहीं थे ? क्या तब सुखी दुखी नहीं थे ? क्या तब मालिक और नौकर नहीं थे ? क्या तब उच्चवर्ग का निम्नवर्ग पर शासन नहीं चलता था ? क्या तब भी सबल ही की तलवार सबको नहीं झुका देती थी ?

दया के जन्म के समय का चित्र फिर याद आया। सुननेवालों ने आसीस दी थी। घर में उजाला आया था, वह आया था जिसके कारण सोना मिट्टी नहीं हो पाया, वह आया था जिसके कारण पितरों को सहारा मिल गया, वह आया था, जिसके कारण रामनाथ को एक बहाना मिल गया था कि जो करना है इसके सहारे वह हो सकेगा। उनकी इच्छाओं का स्रोत अब एक समतल पा गया। जवानी का गिरता हुआ निर्झर अब फैलने लगा। दया ने जब आँखें खोलीं, अन्नप्राशन हुआ, मुँडन, विद्यारंभ, हमेशा वही खर्च हुआ जिससे लोगों की आँखें फटी रह गईं। मूर्ख थे वे ताल्लुकेदार जिन्हों ने कर्ज़ा ले-लेकर ऐश किये, अपने को बरबाद किया। जब वे रामनाथ की ओर देखते तो चकित रह जाते। इस व्यक्ति को इतनी बुद्धि किसने दी ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रशंसा, इस सम्मान के सहारे ही रामनाथ ने जीवन व्यतीत किया है। वह आज तक इसीका अभिमान करते रहे हैं। उन्होंने कभी ऐश नहीं किये। जो किया है वह धर्मानुसार, या फिर वह जो ओहदे और सम्मान के लिये। उनके बराबर, ब्याह-शादी में आसपास का कोई खर्च नहीं करता, जन्म मरण, यहाँ तक कि जो भी धर्म कहता है, तीज त्यौहार, सब पर दान दिये हैं, नज़र ली हैं। पर अपनी रियाया से। गरीब हो, दलित हो, अपने भाग्य से। कहीं से दो। जो हमारा है वह देना ही होगा। जो तुम्हारा है वह तुम लो। सीधा हिसाब है। हम तुमसे अधिक लेते हैं, हमारा खर्च ज्यादा है, हम सबल हैं। सरकार जो लगान हमसे लेती है, हम देते हैं। एक आध बार हमने उसे तुम पर माफ़ भी किया, पर कब तक? तुम इसीलिये बने हो कि हम तुमसे लें। भगवान ने हमें दिया है। सरकार ने तभी हमारे लिये कानून बनाये हैं।

रामनाथ अपने विचारों में खो चले। तार टूट गया। विचार अब दूसरी तरफ़ चले। और जब उमानाथ पैदा हुआ उन्होंने क्या नहीं किया? इसी दिन के लिये?

रामनाथ ने सिर हिलाया। हिन्दुस्तान में बिरादरी का झगड़ा क्यों है? क्यों हिंदुस्तानी बाहर से लौटने वालों को अपने भीतर मिलाने से हिचकिचाते थे? वे जानते थे कि बाहर से आया आदमी कभी अपने रीति-रिवाज़ में नहीं बैठ सकता। उस दिन उन्होंने बिरादरी की उपेक्षा की थी जब उमानाथ विलायत से लौट कर आया था। उस दिन उन्होंने उन लोगों को दकियानूस, रूढ़िवादी, पुराणपंथी कहा था! किस लिये? क्योंकि वे भूल गये थे। पुत्र के प्रेम ने आँखों पर पर्दा डाल दिया था। क्यों न उसी दिन उनकी आँखें खुल गई थीं। सनातन धर्म का चिरंतन स्वरूप कहाँ है? इन्हीं गाँव वाले ब्राह्मणों में, भंगी चमारों में, जो अपने भाग्य का लेखा-जोखा समझ कर सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ झेल लेते हैं। इन अंगरेज़ों ने हमारे धर्म को आकर तोड़ा है - भंगी को सिर चढ़ा कर। क्यों उमा को वहीं भेजा था उन्होंने ? क्योंकि उन्होंने अपने विश्वासों को स्वयं कुल्हाड़ा मार कर काट देने का प्रयत्न किया। उन्हें दकियानूस कहा जो समाज की व्यवस्था के लिये अपनी जान दे देने को सदैव तत्पर रहते हैं। उन्होंने ठीक किया कि समय रहते वे चेत उठे और उन्होंने निर्मोही होकर उसे रुपया देने से अस्वीकार कर दिया।

और प्रभानाथ ! कितना प्यारा था वह। किंतु कितना मूर्ख। एक स्त्री उसे धकेल चली और वह सब कुछ हारा हुआ सा बह चला। अकेला, कुछ लोगों को साथ लेकर सर्वशक्तिमान ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेने उठ खड़ा हुआ था। किसलिये ? क्योंकि उसके पास कोई ध्येय नहीं था। वह सिर्फ़ हत्या किया करता था। जो सामने आकर नहीं लड़ता वह कायर होता है।

रामनाथ को इससे ही संतोष नहीं हुआ। क्या वह सिर झुका कर निरीह बना रहता तो उसमें कुछ अधिक गौरव रहता ? नहीं।

किसने कहा, 'नहीं'। रामनाथ चौंक उठे। वे यह क्या सोच रहे थे ?

वे थक कर गद्देदार कुर्सी पर बैठ गये। उनकी कुहनियाँ सामने रखी मेज़ पर टिक गईं। गाल हथेली पर रखे वे छत की ओर देखने लगे। कमरे की भव्य आलमारियाँ किताबों से भरी हुई थीं। प्रकाश में सब ऐसा लग रहा था जैसे यह सब बह रहा है, बह रहा है, बह जायेगा.....

वह दिन कितना अशुभ था जब उन्होंने सुना कि दयानाथ कांग्रेस में काम करने लगा है। वह अकेला नहीं था। उसके साथ अनेक वैसे ही मूर्ख थे जो सब कुछ खोकर भी कुछ नहीं पाना चाहते थे। पर दयानाथ उस ओर क्यों गया ? यह तो उनका काम था जिनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पास कुछ भी नहीं था। उसे किसी चीज़ की कमी थी! बँगला, कोठी, मोटर, रुपया...सब था...और फिर वह कुल का कर्त्ता होता। गौरव! परंतु उसने इस सबको तुच्छ समझा। उस सबको तुच्छ समझा जिसे स्वयं रामनाथ बहुत बड़ी चीज़ समझते थे। क्या रामनाथ किसी हीन वस्तु को ही जीवन का आदर्श बनाये बैठे हैं? क्या उनकी महत्त्वाकांक्षा इतनी निरीह है कि उनका लड़का उस दिन उसे निस्संकोच ठोकर मार गया?

वे उस सबको भूल जाना चाहते थे, जैसे वह सब जो कुछ हुआ उनके जीवन में नहीं हुआ था। वे आज भी वही हैं जो थे, और वे वही बने रहना पसंद करेंगे। उनके नियम साधारण नहीं हैं जो आसानी से बदल जायें। और यदि कपूत लड़के उनकी राह में आये हैं तो उन्हें ठुकरा देना भी कठिन नहीं हैं। उमानाथ की स्त्री महालक्ष्मी अभी घर में ही है। उसका पुत्र अवधेश भी है। रामनाथ के पास अपना नाती है। वह उसे ही उस गद्दी पर बिठा देंगे।

किंतु भूलना क्या सरल था? क्या पुत्रों को वे भूल सकेंगे? अवधेश उनके स्वप्नों को पूरा कर सकेगा?

वे उद्विग्न से उठ खड़े हुए और फिर कमरे में चक्कर लगाने लगे। इस समय उनके कंधे झुके हुए थे। वह व्यक्ति जो अभिमान के कारण आकाश देखकर चलता था, आज पृथ्वी पर पड़े लात खाने वाले पत्थर से टकरा कर ठोकर खा गया था। पत्थर जड़ निर्जीव था, किंतु वह ठोस था जिसमें ध्वंस की शक्ति थी। वह जो एक पर एक धर दिया जाता है तो उससे इमारत बनती है, इमारत जिसमें रह कर दूसरे सुख उठाते हैं। वे सिहर उठे। न जाने क्या था जो हृदय कचोट रहा था। क्या वे कहीं कोई ग़लती कर गये हैं जो लगता है कि उनके पाँवों के नीचे से ज़मीन खिसक रही है?

३

चाचा के चित्र पर आँखें ठिठक गईं। तब कोई क्यों नहीं बोलता था। तब क्या लोगों के मुँह में ज़ुबान नहीं थी? क्या तब लोगों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह कुटिल चातुर्य्य नहीं आ गया था ? सचमुच नहीं आया था। सरकार ने गलती की। इन टुटपुँजियों को पढ़ा कर दुश्मन बना लिया। अगर पढ़ाना था तो लालच देते। इन्हें ख़रीद लेते।

चाचा दबंग आदमी थे। योग साधन में अपनी दिन रात की लगन से उनकी देह स्वच्छ बनी रहती। अखंड ब्रह्मचारी थे। आँखों में ऐसी चमक थी कि जिसकी तरफ़ देखते वह आँखें नहीं मिला पाता। महफ़िलों में बैठते। तवायफ़ों से अक्सर मिलते, पर मजाल थी कि उनका हृदय कभी भी विचलित होता, कभी भी उसमें विकार दिखाई देता। दिन रात साधु सेवा में लगे रहते। अपना पराया, यह मोह तो उनमें था ही नहीं। और एक बार उन्हीं साधु प्रकृति चाचा चंद्रनाथ के पास गाँव का एक आदमी अपने लड़के को लाया। झुक कर कहा "सरकार, इसे नौकर रख लीजिये। मिडिल पास करा दिया है। आप ही की रियाया है।"

चाचा ने सुना। दयालु आदमी थे। मंजूर कर लिया। पर लड़का भूला हुआ था। वह चाचा को एक दिन जवाब दे उठा। उन्हें क्रोध हो आया। डाँटा। पर उसकी बुद्धि विपरीत हो रही थी।

इतना पिटवाया, इतना पिटवाया कि खाल उधड़ गई। लड़के के चीख की पुकार से ददुआ भी काँप उठे। पर लड़का जब तक बचाया गया, वह मर चुका था। १८६० ई० का समय था।

लड़के का बाप ददुआ के पास आकर रोने लगा। ददुआ ने उसे पचास रुपये दिये। पर गाँव वालों ने उसे भड़का दिया मुकद्दमा दायर हुआ। उन दिनों वे ठाठ थे कि लखनऊ से उन्नाव तक कलक्टर साहब की स्पेशल ट्रेन आई थी। उसी दिन तबादिला होकर तशरीफ़ लाये थे। उनके कानों में रिपोर्ट पहुँची। कलक्टर का वह दबदबा था कि लोग खड़े खड़े काँपते थे। उनकी रगों में लहू दौड़ना बन्द कर देता था। उन्होंने भीतर से कहलवा दिया। चंद्रनाथ सरकार के खास आदमी हैं। ग़रीब की हिम्मत टूट गई। क्या करे दावा करके उन पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई जुर्म नहीं सुना जा सकता। ग़रीब सिर धुन कर रह गया। जशन हुआ। कलक्टर साहब आये। क्या हुआ ? गरीब ने क्या कर लिया ? अब कानूनों की गिरफ़्त बढ़ गई है। अब सब बड़े छोटे बराबर बनने लगे हैं। तब 'रख और रखा' का सिद्धांत चलता था। चाचा का उठा हुआ हाथ कभी उनकी मर्जी के बिना नहीं रुका।

गौरव अखंड बना रहा। उसके बाद गाँवों में दूर-दूर तक नाम फैल गया। ताल्लुकेदारों में जीवन आ गया। उन्हें लगा वे सरकार के विश्वासपात्र थे। उन्हें इतना दबे रहने की आवश्यकता नहीं थी। अंगरेज़ उनके सच्चे हितैषी थे।

किसलिये हुआ यह सब ? क्योंकि उस समय अमर नाथ जीवित थे। अमरनाथ का दूर-दूर तक के इलाके में प्रभाव था। आज उन्हें मरे हुए लगभग चालीस वर्ष हुए। उस समय वे लगभग ६० वर्ष के थे। कितना रोबीला था उनका चेहरा। देखकर डर सा लगता था जैसे कोई महाराजा थे। उन्हें किसी ने कभी चिंता करते ही नहीं देखा। नियमित रूप से पूजा-पाठ में लगे रहते थे।

अमरनाथ के पिता विलासनाथ लखनऊ की बेगम हज़रतमहल के ख़ास नौकरों में थे। उन्होंने उन्हें कुछ जमीन भी दे रखी थी जिससे उनका घर खर्च चला करता था।

विलासनाथ के पिता निर्भयनाथ, उनके पिता अजयनाथ, उनके पिता रमानाथ, उनके पिता आदिनाथ और.....आदिनाथ से पहले काशीनाथ.....न जाने कब से वे एक दूसरे राजा के यहाँ रहते आये थे। कभी जागीर बढ़ती थी, कभी कम हो जाती थी। परन्तु पुरुष परंपरा से वे राजकीय कार्य्यों में लगे रहे। बुद्धिमानी से अपने को सब तरह के संकटों के बीच में भी आगे बढ़ाते रहे।

विलासनाथ पर बेगम की कृपा थी। उन्हें महल की भीतरी ड्योढ़ी तक जाने का अधिकार मिला हुआ था। जब कोई ख़ास काम रहता तो उन्हें भी कभी-कभी सौंप दिया जाता। निर्भयनाथ मुग़लों के सेवक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। लखनऊ आकर उन्होंने लखनऊ के नवाब की नौकरी स्वीकार कर ली। उन्हीं के कारण उनकी संतान को भी स्थिति बनाने में सहायता मिल गई। उनके परिचय से विलासनाथ आगे बढ़े और उन्होंने अमरनाथ को भी वफ़ादारी के लिये पेश किया।

१८५७ की भीषण आग में विद्रोही लखनऊ धधक रहा था। सारे उत्तरी भारत में विद्रोही सेनाएँ उठ खड़ी हुई थी। अंगरेज़ों के पाँव उखड़ चले थे। ऐसा लगता था जैसे अब उनके पांवों का आखिरी निशान भी खून से धो दिया जायगा। उस वक्त सारा देश पत्ते की तरह कांप रहा था। विद्रोही-विद्रोही हनुमान पकड़ा गया था। राजा बालकृष्णसिंह मर गये, विद्रोही सेना में अव्यवस्था घुस रही थी। आलम-बाग़ में पड़े हुए कैम्पबेल की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे, क्या न करे। उसकी सेना शहर के बाहर पड़ी थी। भीतर तीस हज़ार हिंदुस्तानी सिपाही और ५० हज़ार सशस्त्र स्वयंसेवक जमा थे। उसकी हिम्मत पस्त हो रही थी। हमला करने की सोचता था पर चालीस हज़ार गोरी काली फौज भी जैसे उसे कम मालूम देती थी। क्या वह विद्रोहियों को दबा सकेगा? यही सोच उसके हृदय को खाये जा रहा था।

विलासनाथ हजरत महल के समीप रहते। उसकी ख़ास योजनाओं से परिचित हो चुके थे। पर उन्हें भी कोई राह नहीं दीख रही थी।

उस समय विलासनाथ का युवक पुत्र अमरनाथ कैम्पबेल के सामने जा खड़ा हुआ। सिपाहियों ने उसे घेर लिया। कैम्पबेल ने पूछा—तुम कौन हो?

अमरनाथ ने झुक कर कहा: हुजूर! अगर मुझको इनाम मिले तो आपको फ़तह हासिल होने की तर्कीब मैं बता सकता हूँ। इसी से हाज़िर हूँ।

आलमबाग़ में अंगरेजी सेना अब अपने को असुरक्षित समझने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमरनाथ ने कहा: हुजूर ! आपने बहुत कोशिश की। लेकिन वायदा किया जाये तो मैं.....

'डरो नहीं', उस समय ऊटरम ने कहा—'तुमको सात पीढ़ी तक खाने को मिलेगा।'

'तो हुजूर उत्तर की तरफ से हमला कीजिये। मेरा बाप हज़रत महल का खास आदमी है। उसने बताया है कि उधर का मोहासरा कच्चा है.....

ऊटरम उछल पड़ा। पूरब और उत्तर से हमला शुरू हुआ। नौ दिन तक गली-गली, सड़क-सड़क, नदी, बाग, जंगल, में घमासान युद्ध होता रहा। औरतें सिपाहीवेश में मर्दों के साथ लड़ती रहीं। बच्चा-बच्चा लड़ रहा था। चारों ओर फिरंगी को नेस्तनाबूद कर दो, यही आवाज़ उठ रही थी। लेकिन अमरनाथ अडिग होकर भेदिये का काम कर रहा था। अंत में विद्रोही पीछे हटने लगे। उनकी तोपें ठंडी पड़ने लगीं। खून से भींगी हुई जमीन पर अंगरेज़ बढ़ने लगे। उधर गोमती लाल-लाल दिखाई देने लगी और देखते ही देखते लखनऊ का पतन हो गया।

जिस समय दिलखुशबाग, क़दमरसूल, शाहनजफ, बेगमकोठी इत्यादि मोरचों पर अंगरेजों ने कब्जा किया उस समय अमरनाथ कैम्पवेल के पास भागा-भागा जा पहुँचा और उसने कहा "सरकार बेगमहज़रतमहल, नवाब बिरजीसकदर और मौलवी अहमदशाह तीनों भाग रहे हैं।"

केम्पवेल ने प्रसन्न होकर अमरनाथ की पीठ ठोंकी। पर वे लोग भाग चुके थे। अमरनाथ का भविष्य निश्चित हो चुका था।

शहादतगंज की लड़ाई में भी अंगरेज जीत गये। मौलवी भाग गया था। शहर लुट रहा था। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। घरों में आग लगा दी गई। कितने ही घर गिरा दिये गये। आम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमियों को भेड़ बकरियों की तरह निर्दयता से कत्ल किया जा रहा था, उन्हें विद्रोह का फल दिया जा रहा था।

इन हत्याओं में इतनी क्रूर और आमानुषिक यातनाएँ दी गईं कि उनकी याद करके बहुत साल तक लखनऊ वाले थर्रा उठते थे।

शहर के निवासी बेगमों के दुर्भाग्य पर आठ-आठ आँसू रोते थे। जिस बेगम हज़रतमहल ने स्त्रियों का पक्षपात लिया, और इस तरह अंगरेजों और हिंदुस्तानियों का भेद भाव नहीं रखा अब उसके महल में भी लूट और कत्लेआम होने लगा। गोरों ने भीतर घुस-घुसकर स्त्रियों की हत्या की। सैकड़ों को कैद कर लिया। उनके गहने लूट लिये गये। उनको नंगा करके बेइज्जत किया गया और अंग-भंग करके मार डाला गया।

जब हवा पुकारती थी कि फिरंगी तू बेईमान और दगाबाज़ है, जब लहू कह रहा था कि मैं नहीं सूख सकूँगा, जब ज़मीन गरज रही थी कि मुझे इन नापाक कदमों से बचाओ, जब औरतों की अस्मत, बच्चों की दुधमुँही जिन्दगी देश का अपनापन कट-कट कर गिर रहे थे, जब फिरंगी का झंडा आस्मान में चढ़ रहा था और उसके वैभव को देख कर सूर्य्य भी आँखें छिपाने लगा था, ठीक उसी समय अमरनाथ को खिलअत प्रदान की गई और बानापुर का ताल्लुका उन्हें दिया गया और उन्होंने घुटने टेक कर कसम खाई कि जब तक अंगरेजी सरकार उन पर अपने रहम का हाथ रखे रहेगी, वे स्वप्न में भी उसके लिये अशुभचिंतन नहीं करेंगे। वे उन सबको दबा येंगे, उनका पता सरकार को देंगे जो उसके विरुद्ध सिर उठायेंगे, चाहे वे कोई भी हों...पराये हों, या अपने निजी ही हों.....और इस प्रकार पुरुषार्थ के कारण अमरनाथ के समय में वह परंपरा से चला आया गौरव अखंड हो गया...

सैकड़ों हज़ारों मनुष्य उनकी प्रजा बन गये। उनकी इच्छा ही उन भीड़ों की इच्छा बन गई। उनका धन उन सबका धन हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और अनेक झरनों ने आकर जिस स्थान को भरना प्रारंभ किया वह एक नदी बन गई। वह नदी जाकर ब्रिटिश साम्राज्य के महासागर में जल गिराने लगी और इस प्रकार चारों ओर जल ही जल दिखाई देने लगा। बहुत शीघ्र सब शत्रु नष्ट हो गये। चारों ओर शांति और सुव्यवस्था छा गई।

और रामनाथ को लगा वे भटक गये थे। वे उस सुखस्वप्न से दूर क्यों हट गये हैं; ग़दर में उनके पिता ने अंगरेजों की मदद किसलिये की थी? इसी जायदाद के लिये। इसी जायदाद के लिये पीढ़ी दर पीढ़ी उनके वंशजों का सम्मान होगा। अन्यथा उनमें और क्या गुण हो सकता है?

संपत्ति और शासन के लिये शक्ति की आवश्यकता है। शक्ति सदैव सबल से संधि करके मिलती है। निर्बल की ओर वही खड़ा होता है जिसकी आत्मा में संशय होता है। और तभी भगवान ने कहा है कि संशयात्मा का सर्वविनाश अवश्यंभावी है।

प्रभानाथ ने भूल की। वह मर गया। क्यों? क्योंकि रामनाथ स्वयं भूल गये थे। वे अपने किसी उपचेतन में मुखबिर को बुरा कहते थे। पर क्या मुखबिर सचमुच बुरा है? क्या सच कहना बुरा है? सबल के सामने झूठ कहना मूर्खता नहीं तो और है ही क्या? माना वह शहीद हो गया। पर उससे लाभ? उसकी इस मृत्यु में कौन सा था कुल का गौरव? उसकी मृत्यु से उस चित्र को एक धब्बा लगा है जिसे अभी तक पूर्वजों ने, उन्होंने निस्संकोच साफ़ रखा है। आज उसी अमरनाथ के नाती ने उसी के खिलाफ़ लड़ कर जान दी है, जिसकी एक रोज़ अमरनाथ ने अपनी मेहनत से जड़ें जमाई थीं।

वे किससे डर रहे थे? लोग क्या कहेंगे यह उनके दिमाग में सवाल उठा ही क्यों? लोग तो कहते ही रहते हैं। उनके पास कहने के सिवाय कुछ नहीं, और उनके कहने सुनने से कुछ बिगड़ता नहीं। फिर रामनाथ ने अपने पुत्र को आत्महत्या करने से क्यों नहीं रोका?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देश के लिये ? ऊँह ! वे डर गये थे। सचमुच डर गये थे। और वह भी जनमत से ?

जनमत से वीर अमरनाथ को भय नहीं हुआ। जब लखनऊ की औरतें सिपाहीवेश में सड़कों पर लड़ रही थीं, बच्चे-बच्चे में खून उबल रहा था, उस समय अमरनाथ ने अपनी बुद्धि को आवेश में नहीं खोया और पक्ष देखकर अपना हानि-लाभ सोच निकाला।

रामनाथ का सिर फटने लगा।

जनमत से डरना कायरता है। अमरनाथ मुखबिर नहीं थे, फिर उसी काम को करते हुए प्रभानाथ मुखबिर हो जाता ? अपने लाभ के लिये, अपने स्वार्थ के लिये जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करता, वह कभी नहीं बच सकता।

रामनाथ को सहारा मिला।

प्रभानाथ अपराधी था।

यदि प्रभानाथ ठीक नहीं था तो दयानाथ का अपमान उन्होंने क्यों किया ? वह भी उन विद्रोहियों में जा मिला था। उसने स्वयं अपनों की ही जड़ खोदने का प्रयत्न किया था। पर उससे क्या हुआ ? स्वयं उनके पिता ने भी तो यही किया था। पहले वे विद्रोहियों की ओर थे, जो उनके अपने थे। बाद में वे अंगरेज़ों की ओर आ गये थे। ज़मीन के लिये, वैभव और सुख के लिये, अधिकार के लिये। यही दयानाथ आज करना चाहता था। अंत में वह तो कुल के गौरव को अक्षुण्ण रखने के लिये लौट आया था ?

फिर रामनाथ ने उसे स्वीकार क्यों नहीं किया ?

रामनाथ को अनुभव हुआ यह उनकी दूसरी ग़लती थी। उन्हें दयानाथ को बुला लेना चाहिये था। पर उसका अपराध तो दूसरा ही था उसने उनका विरोध किया था। वह कभी ऐसा साहस सहन नहीं कर सकते जो उनके सामने सिर उठाने की स्पर्धा करता। और फिर उसकी पत्नी भी उसी अहंकार में रहती है। रोटी मैं देता हूँ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिकार मैं देता हूँ। मेरी आज्ञा में रहना होगा, अन्यथा नहीं; नहीं, नहीं.....

उमानाथ चला गया। उसका तर्क था। उसके पास इन सबसे अधिक बुद्धि थी। न वह अकेलेपन में विश्वास रखता था, न उसके पास कोई अन्य व्यक्ति अपना यश लिये खड़ा था जिसके सहारे वह नाम कमाने की चेष्टा करता। वह उनको अन्दर से पराजित करने आया था। पर वह नहीं झुके।

वह सबको मिटाना चाहता था। उनकी बात का उसने कोई उत्तर नहीं दिया, जैसे इस सब में उसकी रुचि नहीं थी। वह बहस में वक्त बरबाद करना नहीं चाहता था।

क्या ठीक था उसमें ? क्या ग़लत था ? सरकार से मांफी माँगने नहीं, वह हिन्दुस्तान से बाहर जाना चाहता था। उन्होंने गलती की। 'नहीं नहीं,' पुत्र की ममता पुकार उठी—'वह गलती नहीं थी।' तब उनके तर्क ने कहा : तुम जानते थे कि वह अंगरेज़ी सरकार का शत्रु था, अर्थात् तुम्हारा अपना शत्रु था। यदि तुम ऐसे ही सिद्धांत-वादी थे तो उसे पुलिस के हाथ में क्यों नहीं दे दिया ? तुम एक पुत्र को अपनी मर्य्यादा के लिये घर से निकाल सकते थे क्योंकि वहाँ जनमत बीच में आगया था। पर दूसरे से कुछ नहीं कह सके जो चोरी करने जा रहा था, क्योंकि वह एक गुप्त बात थी। वह समाज का सबसे भयानक शत्रु था। पर वह सबल नहीं था। फिर वह भयानक शत्रु था ही कहाँ ?

कुल की परंपरा उसमें भी थी। वह अपने को कम्युनिस्ट कहता था। चाहे कुछ भी कर रहा था, पर कर रहा था अपनी ही। वह संसार में अपने को आगे समझता था। जैसे हम सब मूर्ख थे। हम पर उसे ध्यान देने की जैसे आवश्यकता ही नहीं थी। अपना काम निकालने से मतलब। बुद्धिमान वह जो किसी भी तरह से अपना कार्य साध ले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन जिसका धन खाये उसी का नुकसान करना चाहे ?

पर क्या हुआ ? रामनाथ का हृदय धड़क उठा। बेगम हजरत महल का दिया हुआ गाँव आज पूरा ताल्लुका बनकर खड़ा था। थी किसी में हिम्मत कि ईंट भी छू दे। यदि अमरनाथ ने ठीक किया, तो उसकी संतान उमानाथ में यह भाव होना कोई कठिन काम नहीं। तब क्या अमरनाथ ने पाप किया ? उमानाथ तो अपराध करना चाहता है। पर वह कहता है, ददुआ यह आपके दृष्टिकोण से ऐसा लगता है। हज़रत महल के दृष्टिकोण से अमरनाथ ने क्या किया था ?

आज रामनाथ को लगा, जैसे संसार घूम रहा था। यह वे क्या सोच रहे थे ? क्या यह संपत्ति पाप है ? क्या देश इसी से उनके विरुद्ध खड़ा हो गया है ?

रामनाथ ने दोनों हाथों से सिर थाम लिया। उन्होंने देखा द्वार पर श्यामनाथ खड़े हँस रहे थे। वह सचमुच पागल हो गए थे। घर की उदासी में वह लुटा हुआ स्वरूप देख कर रामनाथ को लगा सब कुछ समाप्त हो गया है। उन्होंने देखा श्यामनाथ हवा से कुछ कह रहे थे। एक बार उन्होंने उन तैलचित्रों को देखा, फिर देखा श्यामनाथ की ओर, और वे काँप उठे.....।

दूसरा परिच्छेद

१

एक मास बीत गया। वे एक प्रकार से अकेले ही रहते थे श्यामनाथ की निगरानी का काम अवश्य था। घूमते-घूमते एकां में उनका मन घबरा गया। वे ऊब गये। फिर आकर ड्राइंग रूम हताश से बैठ गये। अवध में इतने ताल्लुकेदार हैं। उनके यहाँ स कुछ आराम से चलता है। भीतर कभी घुन नहीं लगती। उन लड़के हैं। उन्नाव से जाकर प्रायः सब ही लखनऊ में ऐश करते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पढ़ते हैं। अंग्रेजी तहजीब सीखते हैं, पर कितनी ? जितनी अपनी हिंदुस्तानियत को कायम रख सके। यह नहीं कि अपने काश्तकारों को ही सिर चढ़ाने लगे। यह सच है कि उनमें कुछ मूर्ख हैं। पर मूर्ख हैं क्योंकि धन इतना है कि कभी किसी की चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

और उनके घर के आँगन में जो तीन फूल खिले, तीनों में रूप था, खुशबू किसी में भी नहीं थी। वे समझते थे कि रामनाथ बूढ़ा है। वह अपनी मर्य्यादा में भूला हुआ है। क्यों छोड़ दें ? जिसे वे शाश्वत सत्य समझते रहे हैं उसे क्यों छोड़ दें। गांधी की बात और है। फिर रामनाथ सोचने लगे। यह बूढ़ा कौन है ? वे भी प्रायः उसी आयु के हैं। उस बूढ़े में ऐसा कौन सा जादू है ? है वह महान्! मन इसे अस्वीकार करना चाहता है पर कर नहीं पाता।

किसके लिये छोड़ दें ? पुत्र नहीं रहे। नाती को वे अपनी मर्ज़ी की शिक्षा देंगे। एक बार जो धोखा खाया है, उसे बार-बार दुहराने की आवश्यकता नहीं। पंडित, मौलवी लगा देंगे। अंगरेज़ी पढ़ाने को भी घर पर ही एक अंगरेज़ रख देंगे, जिससे अवधेश के बिगड़ने का ख़तरा तो नहीं रहेगा।

धर्म तो यह नहीं कहता कि रामनाथ एक ताल्लुका रखकर पाप कर रहे हैं। मनुष्य बहुधा अपने वर्त्तमान को ही सोचता है। क्यों न वह पीछे की ओर भी दृष्टि दौड़ा ले और देख ले कि किसी दीर्घ परम्परा की कड़ी है ?

उन्नाव में रहने पर उनमें एक बेचैनी बनी रहती। कभी किसी को उनकी मानसिक अव्यवस्था का पता नहीं चलता क्योंकि उनके सामने आकर बात करनेवाला अब कोई नही रहा था। परिवार का झिझोंच हटते ही उनका ध्यान पुरानी बातों की ओर खिंच गया।

उसी समय उनका ध्यान टूटा। बाहर एक मोटर आकर रुकी। दरवाज़ा खोलकर बंद करने की आवाज़ आई और फिर हल्की सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पगध्वनि सुनाई दी। रामनाथ ने कोई चिंता नहीं की। कमरे के द्वार पर लटका रेशमी पर्दा हिल उठा और किसी ने भीतर प्रवेश किया। रामनाथ पीठ उधर होने के कारण नहीं देख सके। उनकी गंभीरता को देखकर आगंतुक कुछ देर खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे सामने आ गया। रामदीन को देखकर रामनाथ चौंक उठे। उन्होंने उसकी ओर भौं उठा कर देखा।

रामदीन ने कहा: सरकार! नवाब साहब आये हैं।

'कौन?' रामनाथ ने अविचलित स्वर से पूछा। जैसे इस समय किसीका भी आना उन्हें पसन्द नहीं आया था।

रामदीन पुराना सेवक था। एक शब्द से ही सब कुछ समझ गया। उसने कहा, 'नवाब साहब खैरा।'

'ले आओ,' रामनाथ ने धीरे से उत्तर दिया। रामदीन चला गया। उसके जाने के बाद वे नवाब साहब खैरा के विषय में सोचने लगे और अचानक ही उनके होठों पर एक मुस्कराहट छा गई। संसार में कितने-कितने अद्भुत आदमी रहते हैं। कुछ ही देर में भीतर दो व्यक्तियों ने प्रवेश किया। दोनों के क़दम अंदाज़ से उठते थे, अंदाज़ से गिरते थे।

'सलोमालेकुम' सलामें आलेकुम' दोनों ने झुक कर कहा, जैसे दो लचीले पेड़ हवा के झोंके में झुक गये और उनके हाथ बार बार ऐसे हिलने लगे जैसे झुके हुए पेड़ की टहनी कभी आगे जाती थी कभी पीछे हटती थी, आगे जाती थी, पीछे हटती थी।

एक पतला दुबला व्यक्ति था। महीन मलमल का कुर्ता, उस सफेद सुन्दर चपकन। सामने और पतली दुपल्ली लखनवी टोपी कशीदा कढ़ा हुआ था। गोरे रंग पर नीली-नाली नसें मोटी-मोटी सी उफन आई थीं। पाँव की जूतियों पर जो काम था वह हल्के सुनहले तारों से इस कदर नायाब मालूम देता कि देखते ही बनता था। मिस्सी से काले पड़ गये मसूड़ों में बेतहाशा पान चबाने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाल पत चढ़ गई थी, वह उनकी एक अपनी विशेषता थी। मूँछें चढ़ी रहतीं। गालों पर गड्ढे से दिखाई देते जो वास्तव में आँखों के नीचे छाये कुंडल की छाया थी और माथे पर आड़ी तिरछी सलवटें देख कर लगता था कि इन्हें कभी जिन्दगी में शांति और संयम नहीं मिले। बाल पट्टे थे और काली चमक में कहीं-कहीं सफेद रेशम से वे बाल एक एक इंच गवाही देते थे कि इत्र की खुशबू से वे विभोर हो उठे हैं। यह थे नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर। लखनऊ की छतर मंज़िल क्लब में जब आपके क़हक़हे गूँजते थे तब चौक में खबर हो जाती थी कि शेर आया हुआ हैं। उस दिन चुनी हुई तवायफ़ें पलकों की सान पर कटीला सुरमा चढ़ातीं और आँखों में इंतज़ारी का हीरा चमकने लगता। उनकी तीन उँगलियों में कीमती पत्थर दूर से चमकते हुए दिखाई देते थे।

दूसरा गोल मटोल सा गोल सी आँखों का आदमी था। इसका नाम था मिरज़ावेग। आवाज़ निहायत पतली थी। ऐसा लगता था जैसे बच्चे के बड़े सिर पर किसी ने डिठौना लगा दिया हो। मूँछें हमेशा पाँच बज कर पैंतीस मिनट बजाती थीं। रेशमी चपकन पहनते थे। मोटी-मोटी उँगलियों पर अँगूठियाँ चढ़ाये थे और गाल, गले, सीना, पेट, पेड़ू, जाँघ, सब ही अपने अपने को अपनी गोलाइयों, मोटाइयों द्वारा व्यक्त कर रहे थे। रंग मुआ ज़री साँवला था पर नज़ाकत के यह हाल थे कि छरहरी कंकड़ियों को भी चाकू से छील-छील कर खाते थे। रोटियाँ बनवाते थे तो जैसे सफेद कागज़ और हँसते थे तो अपनी कुर्सी समेत। आपका ताल्लुकेदारों में बहुत मान था क्योंकि आपकी हर बात में अत्यन्त नम्रता थी।

इसी दूसरे व्यक्ति के विषय में प्रसिद्ध था कि एक बार वह कलक्टर से मिलने गया। चलते वक्त हाथ की घड़ी बंद निकली। अँगरेज़ वक्त का पाबंद होता है। इसलिये इज़ारबंद में टाइमपीस बाँध ली। इसके अलावा और कोई चारा ही नहीं था। अपनी अचकन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भीतर से 'टिकटिक' 'टिकटिक' सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द आया। जब कलक्टर से मिले और कुर्सी पर बैठे तभी अचानक घड़ी का अलार्म ज़ोर से बज उठा। कलक्टर परेशान हो गया। सब तरफ़ देखा घड़ी दिखाई नहीं दी। गौर से सुना तो लगा कि आपके बदन में से आवाज़ आ रही है। आप भौंचक खड़े थे। चाभी भरना, अलार्म बन्द करना नौकर का काम था। आपको कभी यही याद नहीं रहा कि कौन सी चाभी घंटों की होती है, कौन सी मिनटों की। अब बंद कैसे करते। यह भी नौकर का काम था। आखिर कलक्टर के चपरासी ने आकर घड़ी बंद की। इस सिलसिले में कलक्टर की नाराज़गी मिटाने के लिये सुबह-शाम चक्कर लगाने शुरू किये जो उस दिन बंद हुए जब साहब ने लात मार दी।

रामनाथ उन लोगों को देख कर उठ खड़े हुए। उन्होंने गर्व से मुस्कराते हुए कहा : आइये, आइये, घर में उजाला हुआ।

रामनाथ कभी अधिक तकल्लुफ़ नहीं करते थे। वे मुस्करा कर हाथ आगे बढ़ा कर खड़े रहे। अतिथियों के बैठते ही वे बैठे, और उन्होंने अत्यन्त नम्रता से कहा। 'इस क़दर तकलीफ़ की। कहलवा दिया होता।'

'तो सरकार आपसे कुछ तकल्लुफ़ है, 'पतले दुबले आदमी ने अपनी भरभराई आवाज़ में कहा—'आप हमारे बुज़ुर्ग हैं। अपना घर समझा, चले आये।

रामनाथ फिर मुस्कराये।

मोटे आदमी ने कहा। खता मुआफ़ हो सरकार। बच्चों की शादी है। इसी वक्त तकलीफ़ देने आये हैं।

'इसी वक्त ?' रामनाथ ने अचरज से पूछा।

'परसों ही तो सब तय हुआ है। सरकार! गुलशन मियाँ की शादी अचानक ही शबनम बीबी से तय हो गई। आपको तो चलना ही होगा। वर्ना सब ताल्लुकेदार और रईस हमारी इज्ज़त अफ़ज़ाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करें, और हुज़ूर का इकबाल कि आप न हों, माशाल्लाह ! सर पर पगड़ी हो और सरपेच न हो।' उसने ऐसे कहा जैसे यह असम्भव था।

रामनाथ इस समय मज़ाक नहीं चाहते थे। पर जिस व्यक्ति ने आकर धरना दिया था वह भी एक बहुत बड़ा ताल्लुकेदार था। पुराने खान्दानी रिश्ते थे। नवाबी ज़माने में बैठे महल में दोनों के पिता डट कर बटेर लड़ा रहे थे। मुसाहबों की भीड़ थी। 'शाबाश' 'शाबाश' 'बेटा, "शाहज़ादे' की आवाज़ों से बटेरों को बढ़ावा दिया जा रहा था। और सबके सब ऐसी तरंग में मस्त हो रहे थे कि महल गूँज रहा था। 'अबकी बार ज़रा खरोंच खा गया।' 'पर मर्द है, देखिये सीना फुला रहा है।' 'होशियार' दुश्मन का वक्त आ गया।' और उस सरगर्मी से दोनों बटेर भी पागल हो रहे थे।

बाँदी बरामदे में बैठी पतंग की डोर पर माँजा चढ़ा रही थी। पास बैठा मुँहलगा नवाब साहब का नौकर उससे हँसी दिल्लगी कर रहा था और वह तिनकती, मुस्कराती, कभी डोर पर माँजा चढ़ाती, कभी नौकर की हृदय रूपी पतंग काटने के लिये आँखों पर माँजा चढ़ाती। भीतर जनानखाने में शायद इस वक्त नाच हो रहा था क्योंकि छूम छुनन की आवाज़ पर बरबत की गूँज सुनाई दे रही थी।

नवाब वाजिदअली शाह ने आज्ञा दी थी कि सारे नवाब तैयार रहें। वक्त बुरा है। इसलिये तैयार रहना ज़रूरी है। वे स्वयं फौजी क़वायद करवाते थे। उन्होंने खबर भेजी थी कि हर जगह यही किया जाये। खैरा के नवाब सुन कर घबरा गये। कुछ कहने ही वाले थे कि मुसाहबों ने राय दी—हुज़ूर। आज रहने दीजिये। आज दिन ठीक नहीं है। फिर नाच होने लगे। दिन ठीक आये ही नहीं, बटेरों की लड़ाई खत्म ही नहीं हुई, पर अंगरेज आ गये। नवाब ने उनकी क़दमबोसी की और अपने बटेर की क़सम खाकर बफादारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिखाई कि उन्होंने वाजिदअली शाह का कहना पहले भी न माना था। अँगरेजों ने देखा और सोचा—ठीक है। नवाब खैरा ने बंदी नवाब के चरित्र पर दोषारोपण किया। बच गये। दो-चार तवायफ़ें पेश करके कहा कि यह नवाब वाजिदअली के यहाँ से छुड़ाई हुई कुलीन कन्या हैं। वफ़ादारी की सनद मिल गई। महल में फिर गाना भी बजाना होने लगा। ठाठ जम गये। उन्हीं के पुत्र को सामने देखकर रामनाथ ने पुरानी दोस्ती का लिहाज़ किया। उनके बाग़ों के आम बिला नागा उनके यहाँ हर बरसात में आते थे। रामनाथ के यहाँ से भी समय-समय पर जो भी कोठी में बनता, उनके यहाँ पहुँचाया जाता जिसे लेकर बेगम साहिबा प्रसन्न हो जातीं और खैरियत पूछ कर नौकरानी को हमेशा कुछ इनाम देकर खाया करतीं।

पतले-दुबले नवाब साहब ने लचक कर कहा, सरकार ! आप न सोचेंगे कि पहले नहीं कहा। वक्त पर चले आये ? बल्लाह बिल्लाह, अर्ज़ करता हूँ कि पलक झपकने की फ़ुर्सत नहीं मिली।'

'आखिर' रामनाथ ने कहा—'लड़का कैसा है ? कहाँ का है ? क्या करता है ? कुछ हमें भी तो बताइये !'

मोटे मिरजा ने अज़ीज़ को बोलते से रुकने का इशारा किया। और फिर अपनी महीन पतली आवाज़ में कहा। आपके कदमों का साया रहे। लड़का क्या है ? नवाब की मुहर की रौनक है। वहीं सरोवर के पास रहता है। पूरा औहदा है। ठाठ है। सरकार ! पानी तक का राजा है। लहरों पर चलता है। आह ! जवानी हो तो ऐसी हो। क्या करता है ? हम ही क्या करते हैं ? आपसे क्या कुछ छिपा रह सकता है ?' और मिरज़ा ने झुक कर रामनाथ के दोनों घुटनों को पकड़ कर अपनी कुर्सी पर झुककर कहा : आप न चलेंगे तो पान की गिलौरियों में रंग नहीं आयेगा, आज परवानों की क़सम सितारे को ज़मीन पर उतर कर शमआ बनना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब अज़ीज़ मुग्ध से भर्राई आवाज़ में कह उठे—'वाह ! खूब कहा। फिर कहिये।'

रामनाथ लाचार हो गये। उन्होंने कहा, 'तो फिर चलिये। खिदमत में हाज़िर हूँ।'

मिरज़ा ने हाथ ऊपर उठा कर दुआ माँगते हुए कहा, तेरी रहमत है परवर्दिगार। ऐसे ही सहारा देता चला चल। वर्ना हम किस लायक हैं। तेरी महर से हम खार भी गुलों के साथ बैठे हैं, लगा जैसे वह मुग्ध हो गया, पर शीघ्र ही चौंक उठा और एक दम मुड़कर उसने रामनाथ से काँपती आवाज़ में कहा—'वह ही, जरा ठाठ-बाट से सरकार ! फिर उसने आवाज़ दी—'कोई है ?'

एक नौकर ने प्रवेश किया। रामनाथ ने कहा। 'रामदीन से कह दे हम बाहर जा रहे हैं।'

रामदीन उसी समय भीतर आ गया। उसके हाथ में पान की चाँदी की स्वच्छ तश्तरी थी जिसमें बीड़े सजे हुए रखे थे। तिवारी जी ने पान पेश किये। निहायत अदब से दो बार सलाम करके नवाबों ने पान स्वीकार किये और शीघ्र ही जूते, मोज़े लेकर रामदीन हाज़िर हुआ।

कपड़े पहन कर रामनाथ तिवारी ने अपना चाँदी की मूंठ का डंडा अपने हाथ में लिया और कहा—'रामदीन ! कह देना शायद मुझे देर हो जाये। महाराज खाना रखे। और सब सो जायें। बेकार जागने की ज़रूरत नहीं है।'

रामदीन आज्ञा भीतर पहुँचाने चला गया। तिवारी जी कहीं खाते-पीते न थे। पक्का खाना उन्हें अरुचिक था। फल चखते थे। मोटर चल पड़ी।

जब मोटर चली गई महालक्ष्मी के पास अवधेश दौड़कर गया और कह उठा, ददुआ तो मोतर में गये हैं। देल में आयेंगे···छब छो जाना···

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२

ड्राइवर ने गाड़ी तेज़ कर दी। हवा दोनों तरफ़ से आकर टकराने लगी। नवाबसाहब, अजीज़ बहादुर खैरा और रामनाथ तिवारी पीछे बैठे थे और आगे ड्राइवर की बगल में काफ़ी 'पहले आप' 'पहले आप' कर लेने के बाद मोटे मिरज़ा बेग बैठे थे। जब गाड़ी रफ्तार में आ गई तब वे बातों के जोश में एक बार जो अपनी सीट पर घूमे तो घूमे के घूमे ही रह गये। अब उनका रुख पीछे की ओर था। काफी मोटे आदमी थे। गाड़ी शीघ्र ही शहर छोड़ कर खैरा की ओर चल पड़ी। रामनाथ खैरा रियासत से परिचित थे। उन्हें अनेक बार वहाँ जाना पड़ा था। एक बार जब खैरा के इन्हीं नवाब साहब से गवर्नर नाराज़ हो गया था, तब वे बहुत खुशामद करके रामनाथ को अंगरेजी बोलने के लिये अपने साथ ले गये थे। उस बार रामनाथ ने गवर्नर को प्रसन्न कर लिया। उसकी बीबी को वह जड़ाऊ कंठा दिया था कि मेम के होठ खुशी से काँप उठे थे। उसने तरफ़दारी की। गवर्नर को प्रसन्न होने के लिये विवश होना पड़ा। उस साल गर्मियों में नवाबसाहब मंसूरी न जाकर नैनीताल गये और गर्मियों भर उसकी बीबी के पास यह भेज, कभी वह भेज, और अंत में बाल डान्स में एक ऐंग्लो इन्डियन नाचनेवाली लड़की से एक रईसों की बीमारी लेकर लौटे और जब लखनऊ के डाक्टरों ने निहायत रुखाई से उसे गर्मी कहा तब इलाज करवा के जाड़ों में अपनी रियासत पहुँचे, जहाँ जाते ही उन्होंने पेरिस से मँगाये स्त्रियों के नग्नचित्रों को जला देना चाहा, पर उसी वक्त मिरज़ाबेग को परमात्मा ने भेज दिया। चित्र बच गये। महीने भर बाद फिर शराब और रंडी चलने लगी और कभी बंद नहीं हुई। उन पर इस वक्त कई लाख रुपया कर्ज़ था, चार गाँव बेच चुके थे, उनका महीने का खर्च कुछ इस प्रकार का था।

शराब—१५००) से २०००)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफ़सरों की नज़र—१०००)
नौकर, बाग़, इत्यादि—८००)
मोटर—५००)
कुत्ते, बटेर इत्यादि—७००)
खान पान, इत्यादि—३०००)

कुल—८०००)

पर वे अपनी ग़रीबी का रोना रोया करते थे। यह कैसे हो सकता था कि बस बंधी लकीर पर सब काल चलता रहे। कम से कम ३००० या ४००० रुपया हर महीने ऊपर से खर्च हो ही जाता था। इसीलिये कर्ज़ा लेना पड़ता था। घर में जेवर ज़रूर थे, सामान था। पर बेगम के सामने उन पर उनकी कुछ चलती न थी। बेगम की आँखों को उन्होंने कभी बिना तरेर के देखा ही नहीं। तीसरी बीबी में कुछ फ़ैयाज़ी थी ज़रूर, पर अव्वल बेगम गज़ब की औरत थी। वह इस बात को साबित कर चुकी थी कि पति को वश में रखने के लिये स्त्री में यौवन होना आवश्यक नहीं है। जहाँ तक अपने ऐश का सवाल था वह कभी कर्ज़ा ले मँगाने में नहीं हिचकिचाती थी। उसकी बला से कुछ हो। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर खुद लाखों इधर से उधर कर देते थे, पर बेगम नरगिस के रहते बेगम गुलनार का एक पैसा भी कहीं से मँगाना अपना अपमान समझते थे, किंतु बिल्कुल लाचार थे। उन्हें घुड़दौड़, थियेटर, नाच सबके लिए तंगी महसूस होती। उधर सूद बढ़ जाता था। झट एक गाँव बेच देते थे कुछ पैसा मिल जाता था। उससे कर्ज़ा बाद में चुकता था, जरूरियात पहले रफ़ा होती थी। अबकी बार डेढ़ लाख हाथ में आये। सुनते ही तीनों बेगम टूट पड़ीं और करीब साठ हजार रुपया ले गईं। मिरज़ाबेग एक नई मोटर ले आये। उन्होंने वादा किया कि अबकी बार मंसूरी में हैकमैन खरीद लेंगे और फिर सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रतें उनके इशारों पर उठेंगी, बैठेंगी, नाचेंगी, गायेंगी। अपनी पनी रिक्शा में घूमने वाले राजा महाराजा देखते रह जायेंगे। वाब साहब अजीज़ बहादुर जानते थे कि यह होना कठिन है पर अब इतनी छोटी सी रकम के पीछे ऐसे जिगरी यार से झगड़ा भी नहीं कर सकते थे। यारी है तभी निबाह है, वर्ना कौन किसकी चीज़ लेता है। उन्हीं दिनों एक जगह से बासठ बरस पुरानी स्कॉच हिवस्की मिली। फी बोतल सत्तर रुपये माँगता था। सोचा टाल जायें। पर उन दिनों रानी मनोरमा लखनऊ आई हुई थीं। उनके फ़ैशन यूरोप को मात करते थे। एक रात के लिये सात बोतलों का आर्डर दिया। नवाब साहब रानी मनोरमा को शराब पिला कर मस्त कर रहे थे, उधर यार लोग ७ की जगह आलमारी में १४३ शराब की बोतलें जमा करके दाम चुका रहे थे। इनमें से २२ पुरानी बोतलें थीं। बाकी शायद नई थीं। पर उन्हें क्या खबर थी? रानी मनोरमा जैसी सती पहले थीं, वैसी ही रातोंरात चली गईं। लोग उनकी धार्मिकता की चर्चा ही करते रह गये। पर नवाब साहब इसके बाद काफ़ी बेचैन रहने लगे। पड़ोस के राजा शौगढ़ की अमीरी अब अवध भर में फैलती जा रही थी। उन पर करीब १७ लाख रुपया कर्ज़ था। दुनिया में उनके ऐश की कहानी मशहूर थी। कहा जाता था कि स्त्रीधन लेने के लिये उन्होंने अपनी माँ को ज़हर देकर बहा दिया था जो असल में मरी नहीं। उन पर मुकद्दमा चला। आखिर माँ थी। चुप हो रहीं। तीन साल में दोनों तरफ़ से खूब रुपया फुँका। इस बीच उनकी बहिन का आना जाना बढ़ा। वह रसोइये से दोस्ती करके यहाँ से बटोर-बटोर कर अपनी सुसराल ले जाने लगी। आखिर राज़ पकड़ा गया और बहिन का कत्ल हो गया। इस मामले को दबाने में भी काफ़ी रुपया खर्च हुआ। फिर चचेरे भाई ने नालिश की, जिसका नतीज़ा हुआ कि सात गाँव रेहन हो गए और जब सब बाधाएँ मिट गईं तब विलासिता का नग्न नृत्य होने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगा और वे कर्ज़ों से लदते गये। उनके बोझ से उनकी रियाया ऐसे चरमराने लगी जैसे भैंसागाड़ी, पत्थरों के दाब में कराह उठती है। पर उन्होंने कभी चिंता नहीं की। जितने भी सार्वजनिक काम थे, विधवाश्रम, अनाथालय, यतीमखाना, सबको मुक्त हस्त दान देते रहे और इधर नवाब साहब से उनकी तनातनी बढ़ती जा रही थी। पर उनका यश नवाब साहब के हृदय में काँटे की तरह चुभता था। राजा साहब कमाल के आदमी थे। एक बार का लगाया बाग़ जब दस साल में फूल कर महक उठा, आपने एक अंगरेज इंजीनियर बुलवाया, और उसे उसको सुधारने की आज्ञा दी। अंगरेज इञ्जीनियर समझदार आदमी था। अपनी छः महीने की तनख़्वाह उसने पहले रखवाली और इम्पीरियल बैंक में जमा करवा दी। इसके बाद बँगला, खाना, नौकर, मोटर, सब मुफ़्त लेकर वहाँ काम शुरू करने लगा। जब छः महीने बीत गये तब तक आधा काम हो चुका था अर्थात् लगा लगाया बाग़ उजाड़ दिया गया था। अब फिर से एक नया बाग लगाने की सिफ़ारिश की गई। राजासाहब को यह विचार अब पुराना लगने लगा था। उन्होंने उसे लौटा कर पहले के नींबू, पपीते इत्यादि के स्थान पर अंगरेज़ी फूल लगवा दिये क्योंकि अङ्गरेज़ों के यहाँ डाली भिजवाते समय काफ़ी तकलीफ़ होती थी। इस प्रकार उनकी आमदनी का एक यह जरिया भी बंद हो गया था।

नवाब साहब ने अभी तक ऐसा क्या किया? पलासगाँव के राजा साहब के यहाँ जानवर पालने का शौक था। घोड़ा, हाथी, बकरी, कुत्ता, तीतर, बटेर, कबूतर, गाय, भैंस, पड़ा, बकरे, मोर, तोता, बतख, मुर्गी, सब पालते थे। उन्हें एक और शौक था। एक कमरे में बहुत से डिब्बे थे। किसी में धामन रखते, किसी में बिच्छू। पहाड़ी, जलचर, सब तरह के ये जहरीले जानवर भी रहते थे। अभी हाल ही में वे भी एक जेबरा खरीद लाये थे। सादा गोरखर था, पर जिसे देखो वही उसकी बात करता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज नवाब साहब प्रसन्न थे। उनके मुख पर विजय का गर्व था। आज वे साबित कर देंगे कि रईसी में उनकी बराबरी करना खेल नहीं है।

मिरजा बेग की महीन कतरनी चलती चली जा रही थी। शायद एक पतली पिघली आवाज़ के अतिरिक्त रामनाथ के सामने उसका और कोई मूल्य नहीं था। वे सुनते जाते थे और और कभी-कभी उनके होठों पर मुस्कराहट आ जाती थी। अज़ीज़ बहादुर ने सुना, इस समय वह कह रहा था तो सरकार! जब वह मरदूद नहीं माना, तो हमने कहा, अच्छा भाई अच्छा। हम बीमा करा लेंगे। अपना बीमा करा लें? बोला---सरकार! आप तो आप हैं ही, बेगम साहिबा का भी बीमा करवा लीजियेगा। मैंने कहा वजह? क्या तुम्हें हमारी नीयत में कुछ फ़र्क मालूम देता है। अजी सरकार। यह सुन कर क्या कहता है। कि कल खुदा न चाहे दुश्मनों पर कोई मुसीबत आये? लाहौलबिलाकूवत। लाहौलबिलाकूवत! सुनते ही मैंने तो कानों में उँगली डाल ली और कहाः म्याँ! तुम कौन जंगली हो। ऐसे आये हो जैसे फरिश्ते हो। अमाँ तुम सरकार का बुरा चाहने वाले कोई कांग्रेसी हो, जो चलो, मालिक लोग हैं, तो चंदा भी इसी तरह झूँठे मूंठ कह कर लेते चलो। तुम्हारा ज़रियायेमाश क्या है? तो सरकार कहता क्या है कि यही। बस आपकी दुआओं पर पलते हैं। अलहम्द उल्लिल्लाह! अल्म उल्लिल्लाह!! मैंने कहा दुआओं पर या तो तुम पल लो, या हम पल लें। चलो पहले कलक्टर साहब से इसी का फैंसला करवा लें। पर सरकार! बड़ा अड़ियल था आप तो जानते हैं बिल्कुल खच्चर था, खच्चर। खैर ग़रीब था हमने अपना तो नहीं अपने एक नौकर का बीमा करवा दिया।

रामनाथ तिवारी ठठा कर हँसे। उसी समय गाड़ी में झटका लगा और गाड़ी रुक गई। तीनों उतर पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३

तेज रोशनी में अनेक रेशमी वस्त्रों में सुसज्जित व्यक्ति बैठे थे। ये सभी ज़मीन्दार, ताल्लुकेदार, और रईस नहीं थे। इनमें से कुछ बहुत अमीर बनिये थे, और कुछ सरकारी अफ़सर भी थे। इन तीनों के पहुँचते ही समाज में एक हलचल सी होगई। बूढ़े नवाब परवेज उठे और उन्होंने हाथ बढ़ा कर कहा, आक्खा! क्या देख रहा हूँ। क्या यह सच है?

रामनाथ ने उनके हाथ पकड़ लिये और कहा, आप तो एकदम भूल गये।

'सुना आपने? राजा साहब'? बूढ़े नवाब ने अपनी भारी आवाज़ में कहा, 'यह हुजूर ने क्या फर्माया?'

'मैं तो ज़रा ऊँचा सुनता हूँ।' राजा साहब ने मूछों पर हाथ फेरते हुए कहा, इसके बाद वे सब बैठ गये।

नवाब परवेज़ को देखकर उनको हर कोई सक्का समझ सकता था। परमात्मा ने रूप ही ऐसा दिया था। पर आप काफ़ी पढ़ने के शौकीन कहे जाते थे। आपके पास एक विराट पुस्तकालय था जिसमें अंगरेज़ी की अनेक पुस्तकें थीं। एक आल्मारी में तो एन्साइक्लोपीडिया आफ़ रिलीजन, एन्साइक्लोपीडिया, ब्रिटैनिका एन्साइक्लोपीडिया आफ़ नेम्स इत्यादि ही थीं। भूगोल, इतिहास, राजनीति फ़ारसी, उर्दू, चित्र, तथा धर्म की आपके पास अनेक पुस्तकें थीं जिनकी लम्बाई दस इंच, मोटाई तीन या चार इंच तक थी। आपके उस पुस्तकालय में अनेक विद्वान् यूनिवर्सिटियों से पढ़ने आते थे जिनके रहने, खाने का खर्चा आप सहर्ष उठाते थे, जैसे इल्म फैलाने में कोई गिला न थी। जितने लोग फ़ायदा उठा सकें उठा लें। खुद इस उम्र पर भी—अब करीब अस्सी बरस तक तो पहुँच चुके थे, सेक्स पर किताबें पढ़ने के बहुत शौकीन थे। आपको उम्र का ध्यान नहीं रहता था, क्योंकि आप शायद अभी तक कुश्ते खा-खाकर अपने को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जवान समझते थे। सूँघकर बता सकते थे कि यह शहद असली है या नकली। यह कस्तूरी वास्तविक है कि बनाई हुई। शिकार, अंगरेज, नवाबी, यात्रा, इन विषयों पर आप किसी भी उम्र के लड़के से उसी लहजे और दिलचस्पी से बात कर सकते थे जितना स्त्री भेद या दवाइयों पर। अभी अभी दो साल पहले आपने सातवीं शादी की थी। आपके लड़कों की लड़कियाँ उस लड़की से शायद तीन साल उम्र में बड़ी थीं जिसका भाग्य आपने अपने पौरुष के सहारे खोल दिया था। उनको जीवितावस्था में देखकर ही भान होता था कि वे किसी इतिहास के पुराने चित्र हैं। लोगों को उनमें बड़ी दिलचस्पी थी और खास तौर पर उनकी ज़िंदादिली से सब बहुत आकृष्ट हो चुके थे।

दूसरे सज्जन जो राजासाहब थे, उनकी आयु लगभग साठ के थी, इस समय तन, मन और वचन से सठिया चुके थे। आपके हाथ में शराब का प्याला था और आप चुस्कियाँ ले-लेकर पी रहे थे। आप प्रायः उपस्थित सज्जनों और सभ्यों में सबसे बड़ी रियासत के मालिक थे।

आनरेरी मेजिस्ट्रेट रामनाथ तिवारी के विषय में बहुत से किस्से उड़ चुके थे। उनके सबसे बड़े पुत्र दयानाथ जेल हो आये, कांग्रेस के चुनाव में वे हार भले ही गये, पर नाम तो काफ़ी हो ही गया। दूसरा उमानाथ कम्युनिस्ट था, पर यह बात ज़ाहिर नहीं थी। यह लोगों को मालूम था कि वह कहीं चला गया है। तीसरा बेटा प्रभानाथ अभी कुछ दिन पहले ही क्रान्तिकारी होने के नाते पकड़ा जाकर ज़हर खाकर मर गया था। उसकी किसी बंगालिन लड़की से आशनाई भी थी, जिसने सी० आई० डी० के अफ़सर को गोली मार कर अपने भी गोली मार ली। और फिर इनके छोटे भाई श्यामनाथ जो पुलिस में अच्छे अफ़सर थे, कहा जाता है कि वे पागल हो गये हैं। उन्होंने नौकरी छोड़ दी है। दिन-रात उसी की याद में मग्न रहते हैं। उन्हें ग़म है कि वे विश्वम्भर दयाल नामक उस सी० आई० डी० अफ़सर को ख़ुद नहीं मार सके और उसे वीणा नाम की उसी बंगा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लन लड़की ने मार दिया। शायद उनको इतना ग़म नहीं होता अग वे उसकी हत्या करके अपना गुस्सा ठंडा कर सकते। बड़े अच्छे और मिलनसार आदमी थे। अब उनका दिमाग़ ठीक नहीं है। वैसे उन्होंने विश्वम्भर दयाल को काफी रिश्वत देने की कोशिश की थी, पर वह नहीं माना। प्रभानाथ से मुखबिरी का काम लेना चाहता था ताकि सरकार में उसका रुतबा बहुत बढ़ सके। उड़ती हुई अफ़वाह यह भी थी कि रामनाथ तिवारी खुद भी उसके मुखबिर बनने से नाराज़ से थे। पर इससे क्या ? वे स्वयं एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं और सरकार उन पर विश्वास रखती है। वे अपने बेटों को नहीं बचा सके, खैर, यह तो कोई भी नहीं कर सकता।

रामनाथ ने राजा साहब की ओर देखकर कहा, मुझे तो बिलकुल ऐन वक्त पर मालूम हुआ। इतनी खुशी का वक्त है और मुझे पहले से बताया तक नहीं गया। हमारे नवाब अज़ीज़ अब बूढ़ों को तो बिल्कुल ही भूल जाते हैं .....

राजा विश्वनाथ साहब हँसे, जैसे किसी ने उन्हें गुदगुदा दिया। बोले, अब हमारी पूछ कौन करता है तिवारी जी। एक वक्त था जब हम लोग ही दुनिया की उम्र का ठेका लिये बैठे थे।

बाहर बाजे बज रहे थे। नौकर सिगरेट पेश करते थे। धुँए के गुब्बार उठते हुए घूम रहे थे। कभी-कभी किसी की देह से टकरा कर वे फैल जाते, या सटे हुए लंबे-लंबे खिंच जाते। एक साहब बैठे-बैठे मुँह से छल्ले पर छल्ला उगलते जा रहे थे। एक छल्ला निकल कर बड़ा होता था, तभी उसमें दूसरा उगल देते और वह काँप कर जब तक पहले वाले की बराबरी पर पहुँचता, पहले वाला छल्ला तब तक फैल कर हवा में अदृश्य हो जाता।

डिप्टी कलक्टर महेश्वरदयाल बड़े ज़बर्दस्त रिश्वती थे। गोरा रंग था। सफ़ेद साफ़ा बाँधते जैसा मदनमोहन मालवीय पहनते। उसी ढङ्ग की अचकन, चूड़ीदार पाजामा, और गले में सूती दुपट्टा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाले रहते। उनकी मूँछें काली थीं। पढ़ते वक्त चश्मा लगा लेते थे। वे कहीं मेरठ की तरफ के रहने वाले थे। आजकल उन्नाव में थे। खैरा के नवाब से उनकी अच्छी जान-पहचान थी क्योंकि नवाब साहब न सिर्फ़ रिश्वत देते थे वरन् इधर-उधर से, भी दिलवाते थे। इस मामले में नवाब की ईमानदारी और रईसी थी कि बीच में खुद न खाते थे। अच्छे खान्दान के आदमी से इस तरह की उम्मीद कोई कर भी कैसे सकता था। डिप्टी साहब बड़े धार्मिक आदमी थे। वक्त के पाबंद थे और वैसे अपने को ईश्वर पर छोड़ चुके थे।

उनके समीप ही खिचड़ी मूँछों और दाढ़ी वाले उन्नाव के सिविल सर्जन थे। उनकी आँखों पर सुनहरी चश्मा लगा था। उनका नाम इब्राहीम खाँ था। फीस के मामले में किसी से रियायत नहीं करते थे। वे यूरोप घूम आये थे। विलायत की सड़कों के विषय में उनका इतना ज्ञान था जितना किसी को अपने शहर की गलियों से होता है। बात मीठी करते थे, सलीके से और कभी किसी ने उनकी बात का सार आज तक नहीं समझा।

नवाब परवेज़, राजा विश्वनाथ, महेश्वरदयाल डिप्टी कलक्टर, तथा इब्राहीम खाँ सिविल सर्जन के अतिरिक्त वहाँ दो व्यक्ति और थे जिनका कुछ अपना महत्व था। एक इंगलैंड से लौटे हुए बैरिस्टर थे—हरचन्द मनसुखानी, दूसरे कृपानिधान तवक्कले। हरचन्द मनसुखानी सिंधी थे। बंबई के रहने वाले थे। एक केस में लखनऊ आये थे। वहीं से नवाब अज़ीज़ बहादुर खैरा उन्हें बाद मिन्नत ज़बर्दस्ती के आज पाँच रोज़ हुए हफ़्ते भर के लिये ले आये थे। आपकी उस्तादी की कई कहानियाँ थीं। आप यूरोप से कानून और वकालत का वह दर्जा पास कर आये थे कि हर कातिल, हर ज़िनाकार, हर डाकू, साजिश और झूठ बोलकर जिंदा रहने वाले को आप बेदाग़ बचा सकते थे। सभ्य समाज में आपकी इसीलिये बहुत जल्द पहुँच होती थी। तारीफ़ यह थी कि एक बोतल के नशे के बिना गला तर न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता था। पिला दीजिये, फिर देखिये कौन टक्कर लेता है। आपकी लिखी अंगरेज़ी को देखकर अंगरेज़ खिल जाते थे। आप हिंदुस्तान आते वक्त इटली में पोप से मिलने गये थे। वहाँ किसी सहकारी कार्डिनल से मिल कर ही लौट आये।

दूसरे कृपानिधान तवक्कले, हिंदू और मुसलमानों के बीच की चीज़ थे। आप सलीस उर्दू बोलते थे और फ़ारसी के शेर ऐसे बोलते थे जैसे वह उनकी मातृ-भाषा थी। आप दुनिया के हर व्यापार और कारोबार को जानते थे। आपके पास एक अलिफ़लैला की तरह की कहानियों का संग्रह था। बग़दाद की जगह बंबई था। वहाँ आप समुद्रतीर पर ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में रहते थे। वहीं मैरीन ड्राइव से आप फ़ोर्ट जाते थे, ताजमहल होटल में भी आपका एक कमरा रिज़र्व था। यह सच था कि आप दोनों वक्त अच्छा खाते थे क्योंकि भूखे होते तो लगातार घंटों कभी भी नहीं चहक सकते। कोई बड़ा आदमी न था जिससे आपकी व्यक्तिगत जान-पहचान नहीं हो। सिनेमा अभिनेत्रियों से आपका परिचय था। जवाहरलाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू को आप मसूरी से जानते थे। बल्कि उनसे काफ़ी अच्छी मुलाकात थी। तब जवाहरलाल लड़का ही था। विलायत से लौट कर आया ही था। यहाँ तक कि उन्सठ साल के तवक्कले साहब गान विद्या में भी यहा रखते थे और सिर हिला कर दाद भी दे लेते थे। रईसों की महफ़िलों के उनमें सभी गुण पर्याप्त मात्रा में उपस्थित थे।

गुलशन मियाँ और शबनम बीबी के विषय में किसी को भी ज्ञात न था। शायद कोई रिश्तेदार हों। पर बारात कहाँ से आयेगी, यह किसी को भी ज्ञात न था। इसका कोई विशेष इन्तज़ाम भी नहीं था। भीतर कहीं औरतों की ढोलक बज रही थी। पर आज तक इन दो का नाम किसी ने भी नहीं सुना था।

इसी समय बाहर शहनाई का स्वर तीव्र हो गया। सब एक बार चैतन्य हो गए। अपनी आपसी बातें छोड़ कर उन्होंने अपना ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस ओर एकत्रित किया, जिसके लिये उन्हें निमन्त्रण मिला था।

४

नवाब परवेज़ ने चौंक कर कहा, कृपानिधान साहब ! मालूम देता है बारात आ गई ?

कृपानिधान तवक्कले ने सिर उठा कर देखा और मुस्करा कर कहा, मगर यह बारात आ कहाँ से रही है ? हमने तो कोई नई गाड़ी भी नहीं देखी। आखिर बात क्या है ?

महेश्वरदयाल डिप्टी कलक्टर ने सोच कर कहा, मिरज़ा साहब आयें तो कुछ पता चले।

राजा विश्वनाथ हँसे। उन्होंने कहा, नवाब अज़ीज बहादुर मामूली आदमी नहीं हैं। मुझे तो कोई राज़ लगता है।

'क्या मतलब ?' हरचन्द मनसुखानी ने भोलेपन से देखा। जैसे वे कुछ भी नहीं समझ पाये थे।

इस वार्त्तालाप में दो ही व्यक्ति मौन बने रहे। एक तो आनरेरी मजिस्ट्रेट पंडित रामनाथ तिवारी, दूसरे इब्राहीम खाँ। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। दोनों के मुख पर ऐसी कोई बात न थी जिसे भाव कह कर पढ़ लिया जाता। दोनों ही कठोर प्रकृति के आदमी थे। रामनाथ दया करना जानते थे, या परपंरा निभा लेते थे। उन्हें मिलनसारी में हृदय खोलकर रख देने की बिल्कुल आदत नहीं थी।

इब्राहीम खाँ उन आदमियों में थे जिन्हें सरलता से घुना कहा जा सकता है। उनकी आँखें कभी-कभी चमक उठती थीं। उस वक्त प्रगट होता था कि उनकी आँखों में एक भी लाल डोरा नहीं है जिसे मुरव्वत कहा जा सकता, या जिसमें संसार ममता के बंधनों की खोज करता है। वे इस समय सफ़ेद कड़ी स्टार्च वाली कमीज़ पहिने थे, जो उनके गहरे काले डिनरसूट के मुकाबले में और भी भव्य दिखाई देती थी। ऊपर एक काला क्रेवैट बाँध रखा था। उन्हें देखकर लगता था कि संभव हो सकता है वे इस देश के रहने वाले ही नहीं हैं। कोई भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समझ सकता था कि यह व्यक्ति रेल में खामोश सफ़र करता होगा, होटल में कभी किसी से मधुरता से बात नहीं करता होगा। इस समय इस गंभीरता से दोनों ने ही एक दूसरे को पहचानने का प्रयत्न किया किंतु वे एक दूसरे से असफल रहे।

रामनाथ सत्ता और स्वार्थ के उपलब्ध कगारे पर खड़े थे। इब्राहीम खाँ अपने इल्म के जरिये अपनी सीमाएँ तोड़ देने में लगा था। बाकी लोगों को चौकन्ना रहने की आदत की कोई जरूरत नहीं थी क्योंकि उनके साथ ऐसी कोई परेशानी नहीं थी। उन सब में उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। रामनाथ रईसी के ठाठ में बैठे थे। उन्हें यह सदैव भान होता था कि वे औरों से कुछ ऊँचे हैं। कुछ अंश तक उनकी ब्राह्मण जाति का दंभ भी उन्हें अपने को ऊँचा समझने को बाध्य करता था। इब्राहीम खाँ यहाँ उपस्थित समूह को मूर्ख समझता था। इन सब से पैसा गाँठ लेना ही उसे अपना कर्तव्य दिखाई देता था।

कृपानिधान ने कहा, 'इज़ाज़त हो तो मैं जरा तलाश करूँ। वक्त कितना हुआ बैरिस्टर साहब ?'

हरचन्द ने घड़ी देखकर कहा, करीब साढ़े नौ बज चला। हाँ आज का प्रोग्राम क्या है ? उसकी इस बात पर कृपानिधान मुस्कराये। बेवकूफ ! नौकर किस्म का आदमी ! यह भी कोई बम्बई है जहाँ वक्त की पाबन्दी है ? यहाँ भी क्या डर है कि निगाह चूके और मोटर के नीचे दब गये ? यहाँ दबाने वाले बैठे हैं और फिर प्रोग्राम ? यह तो गवर्नर के दरबार की चीजें हैं। सारा वक्त अपना है। कौन क्या करता है जो दूसरों की मर्ज़ी से किया जायेगा। सारा ज़हान खाना खाकर दिन में काम करता है। यहाँ तो रईस जब दुपहर को तान-कर शाम को उठते हैं, तो ऐसी गहरी नींद आती है कि उठने पर भी कभी-कभी दिमाग साफ नहीं होता। राजा विश्वनाथ के बारे में तो यह मशहूर था कि पीकर जो सुबह सोये तो शाम को आँखें खुलीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप समझे कि सवेरा हो गया। अब सोचते हैं तो उजाला होने के बजाय अँधेरा बढ़ता गया। बड़े परेशान रहे। समझे शायद बाहर बादल छा रहे हैं। मजाक तो तब रहा जब शाम बीत चली और आप बिस्तर से यह सोचते हुए उठे कि चाँद डूब गया है, पूरा अँधेरा छा गया है।

'प्रोग्राम ?' महेश्वरदयाल ने आँखें सिकोड़कर कहा, कैसा प्रोग्राम ? शादी में क्या प्रोग्राम ?

नवाब परवेज ने टोका—'बैरिस्टर साहब ! आप भी भूल गये कि यह हिन्दुस्तान है। यहाँ शादी तो रीत है रिवाज है।'

मनसुखानी अपनी गल्ती नहीं समझे। वे यह नहीं जानते कि यहाँ किस तौर से शादी होती है। उन्होंने कुछ संकोच करते हुए कहा, वही, वही मेरा मतलब है, नवाब साहब ! यहाँ शादी में क्या-क्या होता है ?

नवाब परवेज हँसे ? उन्होंने अपनी आदत के मुताबिक कहा, होता तो वही है जो मंजूरे खुदा होता है।

सब ठठाकर हँसे। रामनाथ और इब्राहीम केवल मुस्कराये।

'किरपानिधान साहेब,' नवाब परवेज़ का भारी स्वर उठा—'आप ही बताइये ? बैरिस्टर साहब यह भी नहीं जानते कि शादी में क्या होता है !'

कृपानिधान तबक्कले बातों के बल पर खाते थे। इस मौके पर तो वह कैसे भी पीछे नहीं हट सकते थे। कह उठे, डाक्टर साहब ! इस बारे में आपसे बढ़कर और कौन बता सकता है ?

डाक्टर के पैने दाँत उसके ऊपरी होठों के नीचे चमक उठे। उसने बहुत चतुराई से दोनों हाथ हिलाकर कहा, नवाब साहब के रहते, मेरी क्या मज़ाल कि मैं कुछ कह सकूँ ?

नवाब परवेज ने कहा, सुना आपने तिवारी जी। न हँसने देते हैं न रोने देते हैं। है गुनाह बेलज्ज़त ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिवारी जी को अखाड़े में उतरना ही पड़ा। उन्होंने कृत्रिम मुस्कुराहट से कहा, आयंदा जानकार तो न बनियेगा ?

मज़ाक हो न हो, सबको पसंद ज़रूर आया, क्योंकि जो आदमी कम बोलता है उसे लोग अधिकांश गरीब होने पर मूर्ख समझते हैं, पैसा होने पर भारी भरकम। यही हाल पंडित रामनाथ तिवारी का था।

आपस में इसी प्रकार के मज़ाक होते रहे। जिनमें से कुछ विषय इस प्रकार थे—नवाबी ज़माने के ठाठ अब कहाँ रहे ? पर एक बात है अंगरेज़ भी हुकूमत करना जानता है। अजी उससे किसकी चलती है ? जिसे चाहे दाब दे। काश्तकार बड़े सरकश हो गये हैं। सब गड़बड़ कांगरेस ने फैलाई है। इन लोगों को कोई काम ही नहीं। सिर पर लगा ली दो पैसे की टोपी और ये ढाई आने के आदमी बराबर बढ़ते ही जाते हैं। क्या बतायें। पहले जो रईसी की इज्जत थी वह अब नहीं रही। उधर सात कोस तक दिखाई देने वाली आतिश-बाज़ी शुरू हो गई थी जैसे आसमान में आग लग गई थी। रामलीला का रावण जल रहा था।

नवाब साहब परवेज़ ने इसी बीच में कुछ स्त्री, मदिरा इत्यादि का विषय छेड़ दिया, जिसके जवाब में रामनाथ ने धर्म का किस्सा छेड़ा, पर वह सब इस ओर बदल गया कि अफ़सरान से कैसे रिश्ते होने चाहिये, तदुपरांत आदमी कैसी मोटर खरीदे, और फिर फ़िजूल-खर्ची रोकने के उपाय। ऊँचे दर्जे के सभ्य लोग थे। वे रोटी, गरीबी, इत्यादि के विषय में क्या बातें करते। वे तो उन विषयों पर बात करते थे जो शाश्वत थे, जिसमें उनकी राय थी कि जिये तो शान से वर्ना कभी न जिये।

एक सबसे बड़ी बात जिस पर सब ज़ोर दे-देकर अपना हृदय उँडेल देते थे वह यह थी कि उनको खर्चा सोच कर करना चाहिये। क्योंकि पैसा हराम का तो आता नहीं है। उनके पास कौन से चंदे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आते हैं जिन्हें जमा करके वे अपना खर्चा चलायें। ऐसे छिछोरे काम वे कर भी नहीं सकते।

डा० इब्राहीम खाँ, अलग ही हरचन्द मन्सुखानी से बातें कर रहे थे। दोनों कुछ नये ढंग के लोग थे। वे दबी ज़बान में इस वैभव को देखकर व्यंग्य भी कर लेते, इसलिये नहीं कि ये सब ठीक नहीं हैं, वरन् इसलिये कि यह सब उनके पास नहीं था।

फिर परवेज़ साहब ने राजा विश्वनाथ और कृपानिधान तवक्कले को मसूरी की ऐयाशी की दास्तान सुनाई और फिर अंगरेज़ों से अपने संबंध सुनाये और अन्त में बेतकल्लुफ़ी से वह शेर भी सुनाये जिन्हें निहायत फ़ोश कहा जा सकता था। पर वे बूढ़े आदमी थे। शायद उनके लिये बातों का मूल्य रह गया था। बहुत से लोग झूठी-सच्ची कल्पनाएँ सुना कर अपनी हीनता को छिपाया करते हैं क्योंकि इतने पढ़े-लिखे नहीं होते कि भारी भरकम चीज़ों पर बहस कर सकें। उनकी पसंद नापसंद कार्य्यकारण शक्ति से नहीं, ऐसे होती है जैसे बिल्ली का बच्चा तो बिल्ली के ही पास जायेगा। और कुछ नहीं।

राजा साहब और तवक्कले साहब अब शराब की हल्की चुस्कियाँ ले-लेकर सुन रहे थे कि राजा साहब बोल उठे, जैसे पानी में उबाल आ गया, 'आप भी थोड़ी लीजिये नवाब साहब।' फिर धीरे से कहा—'आप भी क्या रामनाथ की तरह खालिस हैं? वह तो कम-बख्त बनिया है पूरा। अरे पंडित है। क्या जाने मज़ा किसे कहते हैं? पत्थर। सूखे पेड़ का ठूँठ।

नवाब साहब ने प्याला भर कर भीतर उँडेल लिया और ज़ब वे तीनों ठठा कर हँसे चारों ओर के लोगों ने उनकी ओर देखा।

तभी शोर मच उठा, बारात आ गई, बारात आ गई।

सबने चौंक कर देखा। आगे आगे मिरज़ावेग चले आते हैं। इस समय उनकी धज लाजवाब है। क्या बेशकीमती कपड़े पहने हैं। ऊपर से नीचे तक निगाहें फिसल रही हैं। पगड़ी, अचकन,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाजामा, सब रेशम के हैं। उनके कुछ आगे बेहतरीन विलायती गत पर बैंड बज रहा है, जिसकी स्फूर्ति भरने वाली मोहक आवाज़ अब वास्तव में विवाह का वातावरण भरे दे रही है। बैंडवाले काली वर्दी पहने हैं। कमर में रंगीन पट्टियाँ बँधी हैं। फूँक मारते-मारते उनमें से कई के गाल फूले हुए दिखाई दे रहे हैं। शायद वे थक गये हैं। और मिरज़ा बेग के सिर पर जो सरपेच दिखाई दे रहा है, वह जड़ाऊ है। उस पर तो निगाह ठहरना ही मुश्किल है। मखमल का शलीम-शाही जूता पहने हैं। और मोटे मिरज़ा का अन्दाज़ है कि लगता है कि कोई एक बहुत भारी पत्थर गाने की लय पर लुढ़का चला आ रहा है। उनके हाथ में हुक्के की नली है और पीछे-पीछे नौकर हुक्का लिये बढ़ रहा है। उसके साथ एक और नौकर है जिसके हाथ में पानदान है। उनके बगल में एक नौकर हाथ में गुल्दस्ता लिये है और चौथा उगलदान लिये चल रहा है।

और सबने देखा कि मिरज़ाबेग मुड़े। नौकर ने पानदान से निकाल कर पान का बीड़ा पेश किया। मिरज़ाबेग ने पान गाल में दबाया और आगे बढ़ने लगे।

५

करीब आने पर सबने देखा कि मिरज़ाबेग़ के पीछे अनेक गाँववाले हैं जिनके कपड़े साफ़ हैं। भीड़ पीछे बढ़ती ही नज़र आती थी। शायद आसपास के कई गाँव के लोग इकट्ठा हो गये थे। सब ही बराती थे। सब ही लड़के वाले थे। एक घोड़ा भी साथ था जिस पर छत्र लगा था। एक नौकर चँवर डुला रहा था। घोड़े पर रोशनी पड़ती थी तब उस पर चाँदी-सोने के गहने, कामदार झूल चमकती थी। घोड़ा क्या था किसी रियासत का राजा दिखाई देता था चलता था तो गर्दन फुलाकर। खा-पीकर ऐसा चाक, जैसा ठेका पाकर गर्दन फुलाये रखने वाला बदज़ात व्यापारी। हर क़दम पर उसके मिरजाबेग से भी ज्यादा नखरे थे। अब नगाड़ों की आवाज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हवा को फाड़ने लगी।

अगवानी करने नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा आगे बढ़े। कोई इस वक्त देख कर कहता कि वे जवान न थे। बालों पर गहरा खिज़ाब था। तौलिये से अभी चेहरा रगड़ कर साफ़ करके आये थे, तभी गालों पर रंग दमक रहा था। उनका गोरा शरीर उनकी काली पोशाक पर खिल उठा था। होठों पर पान की सुर्खी ऐसी लगती थी जैसे किसी कोमलांगी की थकी हुई एड़ी अब दर्द से फड़क रही थी। उनकी आँखों में विभोर आनन्द था। वे लड़की वाले थे। उन्होंने कहा हाज़रीन लड़का आगया। उसी पालकी में है।

सुनते ही लोगों का ध्यान उस पालकी की ओर आकर्षित हुआ जिसे कहार कंधों पर उठाये हुये थे। वे शायद थक गये थे क्योंकि उनके माथे पर हल्का सा पसीना चमक रहा था। लेकिन फिर भी वे प्रसन्न दिखाई देते थे।

भीतर स्त्रियों ने गीत शुरू कर दिये। ढोलक बजने लगी। समा बँध गया। मंगल वाद्यों का स्वर दिगंत को धुआँधार करता प्रतिध्वनित होने लगा। उधर मेहमानों के लिये किसी ने ग्रामोफोन बजा दिया जिस पर प्रसिद्ध गीत हो रहा था!

सैंया तेरी गोदी में···गेंदा बन जाऊँगी···

ऐ हो गेंदा बन·····

मिरजावेग बढ़कर नवाब अर्ज़ीज़ बहादुर से गले मिले। तोड़ा लुटाया गया। गाँववालों में हूह मच गई। जिसे देखो वही रुपयों और पैसों की ओर बेतहाशा टूट रहा था, जैसे इस हुल्लड़ में जान भी चली जाये तो क्या हर्ज है? इस समय कुछ तो हाथ लगना ही चाहिये।

इधर बाहर रस्म हो रही थी उधर नवाब अज़ीज़ भीतरी कमरे में लड़की का दहेज़ दिखा रहे थे। उनके पास उनके मुसाहब मख़मूर अहमद खड़े थे, जो इशारों पर बात करते थे और मुस्कराहट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को समझाने की कोशिश में लगे हुए थे। उन्होंने मेहमानों को झुककर सलाम किया। एक-एक को चुन-चुनकर किया ताकि कोई रह न जाये। साढ़े सात रुपया तनख्वाह पाते थे, पर इस समय उनका जूता भी साढ़े सात से ज्यादा का था। वज रहे थे क्योंकि पोल में घुसे हुये थे। उनके रिश्तेदारों ने उनके रुपये और अपने नाम से लखनऊ में कोठी बनवा ली थी। रईसों को बिगड़ते देर नहीं लगती। उस दिन जान बचाना भारी हो जाता है।

नवाब अज़ीज़ बहादुर ने नम्रता से कहा, यही कुछ थोड़ा बहुत हो सका। ज्यादा अल्लाह ने ही नहीं दिया।

अब मखमूर गिनाने लगे। पहले कपड़ों पर गये। बेहतरीन गोटा, कसीदा, मखमल, और किमखाब, रेशम, पशमीना, ऊनी, मलमल सब तरह के थान थे। कुछ सिले हुए थे। रंगबिरंगे। फिर बर्त्तनों पर नज़र गई। सोने, चाँदी, के नीचे तो बात ही न थी। एक बहुत सुन्दर पलंग था। पलंग क्या था शीश महल का टुकड़ा था। उस पर रेशम और मखमल के गद्दे थे। इत्रदान, पानदान, उगालदान, सभी प्रकार के दान थे। गहने कुछ चाँदी के, कुछ सोने के फिर मखमूर डिब्बे खोल-खोल कर जड़ाऊ सामान दिखाने लगे। इनके अलावा वह था जो दुल्हिन पहन रही थी। अपनी बेटी है। उसका क्या! सब उसी का है। अब लड़के का सामान था। उसको गिनना भी काफ़ी देर में समाप्त हुआ।

सब प्रभावित हुए। नवाब अज़ीज़ बहादुर बड़े पैसेवाले निकले। हज़ारों, लाखों का माल इकट्ठा कर दिया है। न हो तो नब्बे हज़ार से कम का नहीं। काफी देर बाद सब लोग बाहर निकले। सबके मुख पर प्रशंसा थी। यह तो तब हाल है जब नवाब का इनमें से अपना कोई नहीं। जाने कौन हैं यह दूल्हा दुल्हिन। अगर कहीं अपने होते तो नवाब ने तो पहाड़ों को घिसवा दिया होता। उड़ती खबर थी कि नवाब ने अपनी रियाया के लिये ही यह सब किया,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर नवाब को तो अपना रुतबा रखना था। अपनों के लिये तो सब करते हैं क्योंकि वे अपने होते हैं।

रामनाथ के मस्तिष्क में विचार आया। अपने अपने कहाँ होते हैं। उनका तो कोई भी अपना, उनके साथ अपना बनकर नहीं रहा। उनमें से कोई ऐसा न था जो अपने सिद्धान्तों की भी बलि दे देता? रामनाथ का मन भारी हो गया। उनकी इच्छा हुई लौट चलें। तभी उनकी दृष्टि दो आदमियों पर गई। एक मन्सुखानी पर जो इस वैभव को देखकर घबरा गया था। बौखला गया था। कभी वह बंदूकधारी रियासत के नौकरों को देखता, कभी चारों तरफ़। बम्बई वाले को विलायत से लौटने पर कुछ अज़ीब-अजीब सा लग रहा था। दूसरा इब्राहीम खाँ जो अब और भी कठोर दिखाई देता था, जैसे उसके हृदय की भस्म उड़ गई थी, अब उसकी तृष्णा का हाहाकार, लिप्सा के अंगारे दहक उठे थे। रामनाथ मुस्कराये। उन्होंने मन ही मन कहा, अतृप्ति का यह हाहाकार! मृगतृष्णा।

नवाब परवेज़ और राजा विश्वनाथ का मिरज़ावेग से मज़ाक हो रहा था। डिप्टी कलक्टर महेश्वरदयाल इस समय कुछ दब से गये थे। आखिर तनख्वाह मिलती थी। सरकार ने औहदा जरूर दे रखा था, पर वह इस समय अपना प्रभाव कहाँ दिखा पाता। कृपानिधान तब्बक्कले के लिये जैसे यह कोई नई बात नहीं थी। वह तो हमेशा से ऐसी ही चीजें देख-देखकर आदी हो चुका था।

नवाब अज़ीज़ ने बाकी इन्तज़ाम कर लिये। उधर हलवाई पूड़ियाँ उतारने लगे। घी की सुगंध ने हवा को भार दिया। गाँव वाले आगे की कार्रवाई छोड़कर पाँत बना-बनाकर बैठने लगे। हिन्दुओं ने ही खाना बनाया था। यहाँ तक कि गोश्त जो कई तरह का बना था वह भी उन्होंने बनाया था। सिर्फ मुर्गे मुसल्लम एक मुसलमान ने बनाया था क्योंकि आज तक उसकी टक्कर का कोई नहीं बना पाया। उसके हाथ में जादू बताया जाता था। किस्सा मशहूर था कि एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंगरेज अफसर ने रात के एक बजे शराब के नशे में चूर होकर उससे गोश्त के लिये ज़िद की। साहब को रात ही में गोश्त तो मिल गया, पर सुबह ढूंढ़ने पर भी अपना कुत्ता नहीं मिला।

काज़ी भी बुला लिया गया था। निकाह की रस्म की तैयारियाँ थीं। तभी एक ओर से अज़ीज़ बहादुर नवाब साहब खैरा हाथों पर रेशम और ज़री में लपेटे हुए कुछ चीज़ लिये बढ़े। इधर से मिरज़ा बेग भी हाथों पर कुछ ऐसी ही चीज़ लेकर बढ़े। बाहर तुरही बजने लगी वाद्य ध्वनि से खैरा काँपने लगा। काजी अपने काम में लग गया। दोनों व्यक्ति उसी भाँति फेरे डाल गये।

किसी की भी समझ में कुछ नहीं आया। दूल्हा कहाँ है? दुल्हिन कहाँ है? सब विस्मित थे। उस समय मियाँ मखमूर ने आकर सिर झुका कर कहा—'आज हमारी किस्मत फिर गई है। अब सूरज निकल आया है जो आप सब ने इस ग़रीब खाने को आकर रोशन किया है।' वह काफ़ी देर तक आगंतुकों की प्रशंसा करता रहा। दुल्हन के मुँह पर पर्दा था, और दूल्हे के मुँह पर फूल मालाएँ लटक रही थीं। गुलशन मियाँ का शबनम बीबी से निकाह हो चुका था।

नवाब परवेज़ नासमझ से कह उठे, यह खेल हो रहा है जी। हमारी समझ में तो कुछ भी नहीं आया।

अब बाहर काफ़ी शोर हो रहा था, क्योंकि खाना परोसा जा रहा था। शायद छत्तीसों व्यंजन बने थे, जिसे गाँव वाले सस्वर खा रहे थे। पाँत की पाँत लगी हुई थी। नवाब साहब अजीज बहादुर ने एक बार जाकर देखा और देखते ही उन्हें गर्व हुआ। उन्होंने मेहमानों को लौट कर बिठाया, और रामनाथ तिवारी के सामने फल रखवाये तथा औरों के खाने का प्रबन्ध किया। इसी समय सेहरा सुनाया जाने लगा और वाह वाह, मुकर्रर से हवा भी दाद देने लगी। पानी के राजा की इतनी प्रशंसा की गई कि बड़े-बड़े रईस भी उसके सामने छोटे पड़ गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब आखिर में राज खुला। कैरा के तालाब की मछली शबनम का, करीब के सरोवर के मछले गुलशन से आज ब्याह रचाया गया था। अफ़वाह बनकर सच्चाई देहातियों में फैल गई। उनके अचरज का भी ठिकाना नहीं रहा। राजा विश्वनाथ ने नई बोतल खोल दी। आनन्द का फव्वारा छूट निकला। चारों ओर मांगलिक ध्वनियाँ होने लगीं। क़हक़हों का बाजार गर्म हो गया। आज वह हुआ जो आज तक कभी नहीं हुआ था। आज अवध ने जो किया था, वह आज तक कोई भी नहीं कर पाया था। महीने भर से इसी के लिये बैंड, अभ्यास कर रहा था। सारा खर्चा नवाब उठाते थे।

अतिथि कभी हँसते थे, कभी मन ही मन झेंपते थे। रामनाथ भीतर ही भीतर कुढ़ रहे थे। वे कभी अज़ीज़ बहादुर को इतना फ़िज़ूल खर्च और बेवकूफ़ नहीं समझते थे। पर उन्होंने समाधान किया। इतना सब करने के लिये भी मनुष्य में सामर्थ्य चाहिये। जिसमें सामर्थ्य है, वह कुछ भी करे, उसे बुरा नहीं कहा जा सकता।

पर मेहमान तो दूल्हा-दुल्हिन देखने पर आमादा थे। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा दुल्हिन की पर्दानशीनी पर ज़ोर दे रहे थे कि वह खानदानी दुल्हिन है, पराये मर्दों के सामने कैसे आ सकती है। राजा विश्वनाथ समदर की तह से मोती बीन लाये थे। उनका कहना था कि हमारी तो वह बेटी है, हमारे सामने उसका क्या पर्दा? सब राजा साहब की इस बात को मान गये।

अंत में दूल्हा-दुल्हिन लाये गये। पानी से दूर दोनों मछलियाँ छटपटा रही थीं। उन्हें सबने देखा। नज़रें भी पेश कीं, इनाम भी, भेंट भी दी। तोहफ़ा भी भिजवाने का वायदा किया गया। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा बाग़-बाग़ हो रहे थे। इस समय वे इतने नम्र थे, गुरुता से इतने ज्यादा झुक गये थे कि रामनाथ ने मनुष्य का एक नया रूप देखा। इब्राहीम खाँ इस समय प्रसन्न लगता था। यह मज़ाक उसे भी बहुत ज्यादा पसंद आया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूल्हा-दुल्हिन भीतर भेज दिये गये। शायद अब उनका वक्त आ गया था। तमाम बदन में गहने, छेद-छेद कर पहनाये गये थे जिसकी पीड़ा उन मछलियों ने ही जानी होंगी। बाहर गाँव वालों की अब नौटंकी समाप्ति पर थी। खास रोशनी का इंतज़ाम करके एक नट भी कला दिखाने को तैनात किया गया था। बात यह थी कि मालिक वह जो रियाया को कुछ लुत्फ़ दे सके। बेचारे गरीब होते हैं। इन्हीं चीज़ों में मज़ा आ जाता है। वे पढ़े लिखे होते हैं।

इस प्रकार नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा की दयालुता, उनका प्रजा प्रेम, आज मुखर हो गया। सिगरेटों का धुँआ भी अब उड़ने लगा। लगभग दो घंटों में रईसों और सभ्यों ने भोजन समाप्त किया। इसके बाद वे सब आराम से बड़ी-बड़ी कुर्सियों पर पैर फैला कर बैठ गये। ग्रामोफ़ोन पर अब शायद शीरीं फरहाद का ड्रामा हो रहा था और फ़रहाद अब इश्क का मारा दम तोड़ने ही वाला था, कि श्रोताओं के हृदय पर एक नई चीज़ ने अधिकार कर लिया। भीतरी द्वार पर हलचल सी दिखाई दी। कुछ लोग इधर-उधर तेज़ तेज़ चलते दिखाई दिये। अचानक मिरज़ाबेग भीतर से भागे हुए-आये। आँखें फटी की फटी रह गईं। गोल आँखों की परिधि में पुतली बीच में दिखाई देने लगी और उनके चारों ओर की सफ़ेदी बहुत ही भयानक सी लगती थी। वे हाँफ रहे थे, काँप रहे थे। उनके माथे पर पसीना झलक आया था। सब लोगों ने उन्हें इस हालत में देखा और चौंक उठे। उधर रेकार्ड में फरहाद मर गया। किसी ने ध्यान नहीं दिया। नवाब परवेज़ ने घबरा कर पूछा, क्या हुआ? इतना घबरा क्यों रहे हो? कुछ कहो भी तो। क्या साँप सूँघ गया?

मिरज़ाबेग ने बोलने का प्रयत्न किया, किंतु मोटी गर्दन में से इस वक्त आवाज़ ही नहीं निकली।

राजा विश्वनाथ साहब इस परिस्थिति से ऊब गये। उन्होंने तपाक से कहा, म्याँ बोलते क्यों नहीं?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर मिरज़ाबेग इस डाँट को सुनकर और घबरा गये, उनकी घिग्घी बँध गई। आँखों से आँसू निकल आये।

भीतर से बदहवास मखमूर मियाँ दौड़े-दौड़े आये। उन्होंने आते ही नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर के पाँव पकड़ लिये।

'क्या हुआ ? क्या हुआ ?' नवाब साहब ने परेशान होकर पूछा। उनके माथे पर बल पड़ गये थे।

मखमूर ने हाथ उठाकर कहा, 'सरकार ! लुट गये। सब चला गया।' उसकी आवाज़ काँप रही थी।

'कौन चला गया ?' अब की बार डिप्टी साहब ने डपट कर पूछा। उनकी आँखों में रुआब था।

'हुज़ूर मालिक हैं,' उसने गिड़गिड़ा कर कहा, सब माल चला गया। सब चोरी चला गया...

और वह एकदम रो पड़ा। ज़मीन पर धप से बैठ कर उसने अपने सिर को पीट लिया। किसी को भी विश्वास नहीं हुआ। यह कैसे हो सकता था। असंभव था।

नवाब परवेज़ ठठाकर हँसे और बोले, अमें लुत्फ़ आ गया। चलो ज़रा हम भी तो देखें।

नवाब साहब अजीज़ बहादुर सकते की सी हालत में थे। वे जो सुन रहे थे वह उन्हें अत्यंत अप्रिय लग रहा था, स्वयं रामनाथ भी कुछ नहीं समझ पाये थे। मन्सुखानी का चेहरा तो सफ़ेद हो गया था।

सबने भीतर जाकर देखा। मखमूर ने सच कहा था। वाक़ई वह सारा कमरा इस समय खाली पड़ा था। वहाँ कोई सामान नहीं था। अभी-अभी कुछ देर पहले जैसे नुमायश की दूकान सजी धरी थी। इस वक्त कुछ भी नहीं था। सब खाली। देखने वाले समझे कि यह कोई नया मज़ाक है। आज दिन ही बहुत खूब रहा। जो दीखता है वही सब अजीब है। नवाब साहब अजीज़ बहादुर कैरा के आँखों में एक सूनापन सा था। यह वह क्या देख रहे हैं ? क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सचमुच इस कमरे में जिन्न आते हैं ? उनके विश्वासपात्र नौकर सब कामों में लगे हैं। सैकड़ों, हज़ारों आदमियों की भीड़ है। किस पर संदेह किया जाये ? किसको पकड़ा जाये ? उन्होंने आज ही आज एक लाख छप्पन हज़ार खर्च कर दिये हैं। गाँववाले खाकर चले जायेंगे, पर इस रोष का वे क्या करेंगे ? उन्होंने सोचा था कि गहना, माल, तो घर में रह जायेगा। यहाँ तो सब कुछ ज़मीन खा गई। पुलिस को बुलवा कर सबको घिरवा लें। किये कराये पर पानी फिरवा लें ? आखिर करें भी तो क्या ? यदि चुप रहते हैं तो कितना नुकसान होता है। पहले से लाखों रुपया खर्च हो चुका है। उन्हें लगा सारी दुनिया घूम रही थी। अब चेहरे साफ़ नहीं दिखते। सब छायाचित्र मात्र हैं। और तब कृपानिधान तवक्कले आगे झपटे। उन्होंने गिरते हुए नवाब साहब को संभाल लिया।

उधर पाँत की पाँत देहाती उठते जाते थे, बैठते जाते थे। वहाँ कोई गड़बड़ न थी। पर नवाब साहब अजीज़ बहादुर बेहोश पड़े थे, जैसे सारी धड़कनें बंद थीं। और मिर्ज़ाबेग़ पछाड़ खा-खाकर गिरता था, जैसे वह भी कुछ देर में ही सच्ची दोस्ती निभा देगा। पर उसने वक्त से काफ़ी लड़ाई की।

नवाब के मुख से निकलता था, हाय !

फिर नीरवता छा जाती थी, फिर ध्वनि आती थी, हाय !

उस समय तवक्कले और मन्सुखानी ने बड़ी मुश्किल से पतली आवाज़ में घिघियाते हुए मिर्ज़ाबेग को थामा। अभी तक चुप रहने वाला इब्राहीम खाँ आगे बढ़ आया और नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर की जाँच करने लगा। कुछ देर बाद उसने सिर उठाकर कहा, घबराने की कोई बात नहीं है। दावत होने दीजिये, वर्ना सब बरबाद हो जायेगा। अभी कुछ लोग बचे हैं.....

नवाब परवेज़ ने काट कर रोक दिया, अजी खाना वाना फिर होता रहेगा। पहले अज़ीज़ बहादुर होश में तो आ जायें.....

सिविल सर्जन मुस्करा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीसरा परिच्छेद

१

महफिल का रंग उजड़ गया। कहाँ आनन्द थे, कहाँ हृदय भारी हो गये। होश में आने पर भी नवाब साहब अजीज बहादुर कैरा का ध्यान सुस्थिर नहीं हुआ। नवाब साहब को एक फायदा अवश्य हुआ। बाकी बचे हुए लोगों ने उनके सामान का इतना ध्यान अवश्य रखा कि कुछ भी बरबाद नहीं होने पाया। वे सब खा-पीकर फिर से सेवा में आ जुटे। जब कोई नतीजा निकलता' नज़र नहीं आया सब अत्यन्त शोक मनाते हुए अपने-अपने घर चले गये। यहाँ तक कि नवाब के पास मिरज़ाबेग भी उस दिन नहीं रहे। बेगमों ने भीतर मुँह की उदासी छिपाने की असमर्थता में अल्लाह से दुआ माँगी। चोर का कहीं पता नहीं लगा। यह तक समझ में नहीं आ सका कि माल गया तो कहाँ गया ?

नवाब क्रोध से कभी दालान में इधर, कभी उधर, बफरे हुए शेर की तरह चक्कर लगाने लगे। इस वक्त उनके पास न बड़ी बेगम गुलनार थी, न छोटी बेगम नर्गिस। बस मँझली बेगम कुलसूम डटी हुई थीं। शक्ल से उनको देखकर दिल जमालो कहना चाहता था। जितनी तेज उनकी आँखें चलती थीं, उनसे तेज उनकी जबान चलती थी। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा का हृदय अपनी घबराहट को छिपा सकने में असमर्थ था।

उन्होंने अपने आदमियों को गाँवों में भेज दिया। यह लोग संडे मुस्टंडे पहलवान थे, जिनका काम इसी दिन के लिये चरना था। शक्ल से खूँखार लगते थे। सरवराकार ने उनको चारों ओर क्या-क्या करना था यह समझा दिया।

पहले तो गाँव वाले समझे यह भी कोई नई रईसी शान है कि नवाब साहब के आदमी डाँट-डपट करते फिरें। पर बहुत शीघ्र ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
यह रहस्य खुल गया जब डंडे उठने लगे। गाँव वाले चोर कहला रहे थे, जिस पर उन्हें आपत्ति थी। अच्छी मिठाई थी, जिसका नतीजा यह पिटाई है। हमें मालूम होता तो कभी भी खाने नहीं जाते। आखिर घर में से माल ले कौन गया ?

पर राम गोविंद चिल्ला रहा था, एक-एक का भेजा फाड़ दूँगा। बदमाश उचक्के साले। जिस पत्तल में खाते हो, उसी में छेद करते हो ? एक तो तुम्हें मुहताज समझकर तुम्हारे सामने दो टुकड़े डाले, और उसका नतीजा यह हुआ कि चलते वक्त चोरी से हाथ काले किये ?

गाँव वाले अभी तक साफ़ नहीं समझे थे। अब समझ में आने लगा। अच्छी ज़बर्दस्ती है।

एक बूढ़े आदमी ने बढ़ कर कहा। हो सकता है कुछ लोगों ने यह चोरी की हो। बड़े राजा महाराजाओं के यहाँ ही चोरी होती है। पर यह किस तरह तय किया गया कि चोरी इन्हीं लोगों ने की। कोई सबूत है ? वैसे आप मालिक हैं। सब कुछ आप का है। पर दण्ड देते हो तो कोई विचार तो होना चाहिये।

इस बूढ़े का गाँव में कुछ सम्मान था। गूलर नामक एक युवक लाठी टेकता हुआ बाहर आ गया। वह कई दिनों से मलेरिया में पड़ा हुआ था। उसका समस्त शरीर जर्जर हो चुका था। खाँसी भी आती थी। उसने भी बढ़ कर पूछा कि आखिर मामला क्या है ?

बूढ़े ने समझाया। मालिक ने खाने का न्यौता दिया था, हम चले गये। न जाते तब आफत थी। अब गये थे तो भुगतना पड़ रहा है।

गूलर बैठ गया। उसने कहा, मैंने पहले कहा था बड़े आदमी बेबात नहीं बुलाते। कहीं ऐसा न हो कि एक के दो चुकाने पड़ें। समझ लो। बखत रहते सोच लेना अच्छा होता है। आखिर वजह क्या है कि एकदम बुला बैठे। घर के नौकर-चाकर बरी रहे। चोरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की तो तुमने, जो बाहर ही बाहर लौट आये ? और भी कभी उन्होंने पूछा कि तुम क्या हो, कैसे हो ? भैया, कोई तरकीब चाहिये थी अब मौका निकाल लिया।

गूलर के उस जर्जर शब्द को सुनकर राम गोबिंद का पारा बहुत चढ़ गया। उसने अपने मातहतों को आज्ञा दी, जिसको सुन कर उनके लट्ठ उठे, पर उनसे भी पहले दस गाँव के जवानों के लट्ठ हवा में घूमते हुए दिखाई दिये। रामगोविंद भाग गया।

इस घटना से चारों ओर चिंता छा गई।

रामगोविंद जब दूसरी बार पहुँचा उसके साथ रियासत के तीन बंदूकधारी सिपाही थे। गाँव वालों ने देखा और खून का घूँट पीकर चुप रह गये। रामगोविंद जीत गया था। उसने चोर ढूँढ़ना शुरू कर दिया।

उसके अत्याचारों की गाथाएँ शीघ्र फैलने लगीं। कांग्रेस के कुछ कार्यकर्त्ताओं ने भी सुना और वे अपना कार्यक्रम निश्चित करने लगे।

नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा यह सब सुन चुके थे। मिरज़ा-बेग जैसे होश खो बैठे थे। बैठे-बैठे कभी सिर पीट लेते या ठंडी-ठंडी आहें भरते। उन्होंने पीर साहब की मनौती मनवा दी थी। यहाँ तक कि मंदिर में 'परसाद' तक बँटवाया था। इन दिनों पाँचों वक्त नमाज़ पढ़ते थे। किसी से बात करने की भी इच्छा न होती थी। कभी-कभी कह उठते थे, या अल्लाह ! ऐसा वक्त भी देखना था ?

इस चोरी के बाद उन्हें पहले बेगम गुलनार ने बुलवा भेजा, फिर बेगम कुलसूम ने, फिर बेगम नर्गिस ने। काफ़ी देर तक आपस में बातें होती रहीं। पर वे बातें क्या थीं यह कोई नहीं जानता था। मखमूर अहमद यदि नवाब साहब के ग़ुलाम थे, तो मिरज़ाबेग के कुत्ते थे। घर में जब नवाब साहब ने सख्ती की तो सबने बुरा माना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'आप तो यहीं सुलह निकालते हैं। हम आप का खाकर आपका नुक़सान करेंगे ? हमें किसी चीज़ की कमी है, जो माँगने से हमें नहीं मिल सकती ? बाहर वाले आये, पर आपने उनसे कुछ कहा तक नहीं। सरकार इसी मुरव्वत ने तो इन लोगों को सर पर चढ़ा रखा है।'

इसी परेशानी और खोजबीन में दो-चार दिन निकल गये। अपने सेवकों से जब काम नहीं चला, नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा को लाचार होकर पुलिस में रिपोर्ट करवानी पड़ी। पुलिस को मौका मिल गया। जाते ही दो गाँवों का घेरा डाल दिया। दारोग़ा चालाक आदमी था। उसने नवाब साहब के नौकरों से पूछा कि जिन पर शक हो, वे नाम बता दिये जायें। नौकरों ने अपनी पुरानी अदावतें निकालीं। दरोग़ा की बारहों घी में तैरने लगीं। वहीं पड़ाव डाल दिया। दो दिन में ही उसने पाँच हज़ार रुपये वसूल किये, चोरी के नहीं चोरी के झूठे इल्ज़ाम से बचा देने के।

किसानों में तीव्र विक्षोभ फैल गया था। शाम को ही गूलर की अर्थी निकल गई, उसके साथ एक बड़ी भीड़ थी। बदला लेने की इच्छा तेज़ हो रही थी। पर दारोग़ा ने परिस्थिति को दाब रखा था। उधर कांग्रेस वालों के चक्कर अधिक लग रहे थे। गाँव भर की दस्तखत से अफसरों के यहाँ अर्ज़ियाँ भेजी गईं। गवर्नर, कलक्टर कोई भी नहीं छोड़ा गया। यहाँ तक कि अखबारों में भी रिपोर्ट भेज दी गई। अखबार वालों ने तुरन्त छाप दिया। एक ने तो यह किया कि नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा की सारी ज़िंदगी छाप दी। और नीचे लिख दिया : अंगरेज़ों के फरज़न्द। इनको याद रखना।

कानपुर, लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, इलाहाबाद, तथा बनारस में रईसों तथा पढ़े-लिखों में हलचल सी हो गई। अब जिसे देखो उसी की ज़बान पर मछली मछले की शादी का ज़िक्र था। तारीफ़ की जगह बदनामी होने लगी। दावत और शादी में उपस्थित सज्जनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की एक सूची भी छपी थी। रियासत के सरबराकार बड़े सीधे-सादे लगते थे। नाम था माधो नरायन। मोटे ताज़े खाये-पिये आदमी थे। शकल से लगता था कि यह आदमी 'बड़े मठा दुधार' चुका है। इस समय वह घबराया सा आया। नवाब साहब ने उसको देखा तो ज़ोर से पुकार उठे, 'कहो माधो नरायन! क्या ख़बर है?'

माधो नरायन कुछ रुक गये थे ताकि बेगम पर्दे में हो जायें। अब वे क़रीब आ गये। उन्होंने सलाम किया और ख़ामोश खड़े रहे। नवाब साहब को इस मौन से भय हुआ। उन्होंने हुक्के की नली को मुँह से लगा कर माधो नरायन की ओर गौर से देखा जैसे वे कुछ पढ़ लेना चाहते थे। पर मोटी खाल थी। उसे पार करना कठिन काम था।

माधो नरायन ने झुककर कहा, जान बख्शी जाये।

नवाब साहब चिहुँक उठे। जान का अख्तियार तो अंगरेज़ बहादुर ने वालिद मरहूम के जमाने में ही अपने कानूनों से छीन लिया था। फिर भी यह कहने का एक तरीका था। माधो नरायन ने धीरे-धीरे कहा, 'सरकार! गजब हो गया। गूलर के मरने से गाँव वाले बौखला गये। उन्होंने कांग्रेस वालों से जिक्र किया। कांग्रेस वालों को डॉबसन साहब के खिलाफ़ प्रचार करने का मौका मिल गया। आज मुझे डॉबसन साहब का पेशकार मिला था। कहता था बड़ी नाजुक खबर दूँगा, कुछ इनाम मिलना चाहिये। हुजूर चालीस रुपये ऐंठ गया तब उसने बताया।' माधो नरायन रुककर सिर झुकाकर बोले, 'हुजूर जान बख्शी जाये।'

नवाब साहब ने ऊबकर जान बख्श दी। माधो नरायन ने कहा, हुजूर! बदइंतजामी का इल्जाम लगाया गया है। फिलहाल तो जाँच-पड़ताल होगी। और सुना है किसी ने यह भी रिपोर्ट दी है कि सरकार पागल हो गये हैं, तभी वे अजीब-अजीब काम करने लगे हैं। उनका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दिमाग खराब हो गया है। वे फ़िज़ूल खर्च हैं। और इस पर वे रियासत को भी नहीं संभाल सकते.....

नवाब साहब ने गरज कर कहा, माधो नरायन !

भीतर से एक पतली आवाज़ आई—'मुए की जबान खिंचवा दी जाये। हाय अल्लाह ! अब क्या होगा ?'

नवाब साहब चुप थे। माधो नरायन काँप कर झुक गया था। हाथ जोड़ कर कह रहा था, सरकार अन्नदाता, माई बाप हैं—जान बख्शी जाये.....

नवाब साहब ने कहा, और कुछ भी सुना है ?

'नहीं हुजूर,' बाकी सुनाने की माधो नरायन में अब हिम्मत ही नहीं रही थी। इशारा मिलते ही वह बाहर भाग चला।

इस नई खबर को सुनकर नवाब का दिल दहल उठा। यह वे क्या सुन रहे थे ? रियासत में जाँच होगी। डिप्टी कलक्टर माल की फेहरिस्त बनाने आयेगा। उनके सामने उनके नौकर-चाकरों से उन्हीं के बारे में जाँच-पड़ताल की जायगी। सवाल-जवाब होंगे ? लाहौल-बिलाकूवत। आज ये दिन देखने को बचा था। नवाब हैदर बहादुर कैरा, वालिद साहब मरहूम, खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, आज होते तो यह हालत होती। पर वे तो गुजर चुके थे। इस नालायक को छोड़ कर वे तो बहुत पहले चले गये। आखिर अब क्या किया जाये ? कौन सा ताल्लुकेदार, कौन सा रईस, अपनी रियाया से जवाब तलब करने का हक़दार नहीं होता। अब यह तो साहब बहादुर की ज्यादती है। क्या हो गया ऐसा ? चंद गाँव वालों को मारा-पीटा गया बस ? इसी के लिये इतनी बड़ी सज़ा ?

हाय हम तो बफ़ादार हैं। अब इस सनद को ओढ़ें कि बिछायें ? कमबख्त इस वक्त कोई सूझता ही नहीं।

और नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा को अचानक प्रकाश दिखाई दिया। कपड़े पहन कर सीधे रामनाथ के सामने पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी उदासी देखकर रामनाथ चिंता में पड़ गये । किस्सा सुना। कुछ देर सोचते रहे। फिर कहा, शायद कोर्ट आफ़ वार्ड्स में लेना चाहते हैं।

नवाब साहब के हृदय पर बिजली गिरी । चमक कर बोले, पण्डितजी ! गज़ब हो जायेगा। हम तो फ़र्जन्दे इंगलीशिया बनते थे। अब हम पर ही यह मार ?

पंडित रामनाथ ने धीर स्वर से फिर कहा, अपने गाँव वालों को बहुत पिटवाया था ?

'नहीं सरकार,' नवाब साहब ने कहा, बस एक आदमी को गुड़ का लेप करवा के पेड़ पर औंधा लटका दिया था। सोचा था चींटे काटेंगे तो बता देगा। पर मरदूद मर गया । भला कोई बात थी। उँगली तक बदन से नहीं लगाई किसी ने। पर वह बीमार था.. बस और कोई बात नहीं, फ़कत ज़रा सी बात थी । उसे तो सरकार मरना ही था...

वे खिसिया कर हँस दिये । पंडित रामनाथ ने अपना पथ निश्चित किया। उन्होंने धीरे से कहा, आपने कोई कांग्रेस वाला ही पिटवा दिया होता। वक्त ज़रा नाज़ुक है। सरकार हमारे मुकाबले में अपने को भला साबित करने की कोशिश कर रही है....., फिर रुककर कहा, 'हमारे बिना सरकार का काम नहीं चलेगा । कल चलिये। डिप्टी कमिश्नर के यहाँ चलेंगे।'

अज़ीज़ बहादुर ने ऐसे देखा जैसे जलवये तूर सामने आ गया था।

अजीज़ बहादुर के चले जाने पर पण्डित रामनाथ तिवारी अनेक रूप से चिंतित हो उठे। उन दिन ज़िलेदार आया। उसकी बात भी उन्होंने खास ध्यान से नहीं सुनी। इसी प्रकार सारी रात बीत गई।

सुबह सात बजे आनरेरी मैजिस्ट्रेट पण्डित रामनाथ तिवारी कपड़े पहनकर ज्यों ही तैयार हुए उन्होंने रामदीन से कहा, क्यों रामदीन। अभी कोई आया था ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'सरकार अभी तो नहीं', उसने हाथ बाँध कर कहा।

जिस समय पंडित रामनाथ बँगले के बाहर निकले सत्य नारायण ड्राइवर ने सलाम किया और मोटर का दरवाज़ा खोल दिया। रामनाथ क्षण भर को कुछ सोचते रहे। तभी सामने से एक गाड़ी आकर रुकी। उसमें से नवाब साहब अजीज़ बहादुर कैरा उतरे। लपक कर पास आये। वे अकेले थे। मिरज़ाबेग अब उनके साथ नहीं था।

रामनाथ ने पूछा, कहिये नवाब साहब! मेरी गाड़ी में आ जाइये?

'नहीं सरकार! अंगरेज़ का मुआमिला है। एक साथ चलने पर समझेगा कोई साज़िश है। अलग-अलग चलना ही ठीक होगा।'

सत्यनारायण की उपस्थिति में रामनाथ को यह बात कुछ अच्छी नहीं लगी। वे नवाब को लेकर भीतर ड्राइंग रूम में आ गये। बैठ कर कहा। तो क्या मैं आप ही के लिये नहीं चल रहा?

'हिम्मत तो सरकार इसी से बँधी हुई है। वैसे यह लोग खास अच्छे नहीं होते। अवध के कर्जदार हुकूमत कर रहे हैं। लाहौल-बिलाकूवत। महाजन हम हैं और हम ही दबे हुए हैं। ज़रा मौका देख कर काम करना चाहिये।'

नवाब अडिग थे। रामनाथ ने दूसरी बात छेड़ी।

'तो मिरजा साहब साथ नहीं आये?'

'वह तो सरकार,' नवाब अजीज़ बहादुर कैरा ने हँस कर कहा, 'जब से लखनऊ में कलक्टर की लात खा चुके हैं अंगरेज़ का मुँह तक नहीं देखते। बताइये भला। शरीफ़ आदमियों के साथ इस तरह का वहशी बर्त्ताव? पर सरकार अब कहे तो कौन? हम कहें भी नहीं तब तो यह हाल है। और कहीं कह दिया, खुदा न करे, काँग्रेसवालों की सी मार खाने लगें। लाहौलबिलाकूवत। हम भी रईस हैं, अमीरों में हैं। पर हम तो कभी-कभी पसीज जाते हैं। यह कमबख्त फिरंगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो ऐसी सफेद आँखें दिखा देते हैं कि तोबा, तोबा, बिल्कुल तोता-चश्म होते हैं, सरकार...साफ कह देंगे कि यह तो हुकूमत का मुआ-मिला है...।'

तिवारी जी को यह बात भी कुछ अच्छी नहीं लगी। उन्होंने अलबत्ता एक बार दरवाजे की तरफ़ जरूर देखा। पर वहाँ कोई नहीं था। होता भी कैसे ? नवाब कभी मुस्कराते थे, कभी गंभीर हो जाते थे और कभी भौं सिकोड़ कर कुछ सोचने लगते थे। जैसे वे एक भँवर में फँस गये थे। कभी नाव एक तरफ़ से उठ जाती थी कभी दूसरी तरफ़। कुछ देर इसी मौन में बीत गया। अंत में रामनाथ ने कहा, आप आज बागी तो नही हैं ?

'खुदा रहम कर ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ। आपने यह सवाल किस बिना पर किया ?'

नवाब के कान खड़े हो गये।

'आप जानते हैं।' रामनाथ ने कहा—'मैंने इसी डिप्टी कमिश्नर को एक बार दया के काँग्रेस में शामिल होने की सरकारी चिट्ठी पाने पर, खरी-खरी सुनाई थी। उस दिन मैंने कह दिया था कि ब्रिटिश सल्तनत की जड़ें इन्हीं ताल्लुकेदारों और जमीन्दारों ने मज़बूत की है। आपको यह हमेशा ख्याल रखना चाहिए।'

स्वर एक भाफ के समान था। नवाब साहब एक ढकने की तरह उछलने लगे। ज़मीन्दारी के भगौने पर ढँकने की तरह वह इंसान इस समय उस भाफ को दाबने में असमर्थ सा दिखाई दिया। भाफ़ में शक्ति है। वह ढँकने को उलट सकती है। इस लिये ढँकना अपने को बनाये रखने को कभी इधर से उचक कर कभी उधर से उचक कर भाफ़ को निकलने को रास्ता दे देता है। यह भाफ़ अंगरेजी जोश है। इसमें पड़ी दाल हिंदुस्तान के लाखों ग़रीब किसान हैं जो दूसरों के खाने योग्य बनाये जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब ने हाथ ऊपर उठा कर कहा—'अल्लाह पाक ! रसूले मदनी ! बारी ताला !' फिर मुड़ कर कहा, राजा साहब ! हमारी क्या हैसियत है ? जरी रगों में वही रुतबे का खून है, वर्ना किसी तहसीलदार से क्या अच्छे हैं। जब चाहे रखा, निकाल दिया। बड़े-बड़े राजा और नवाबों की हस्ती नहीं। दिल्ली दरबार का हुजूर को ख्याल होगा। उस दिन काश्मीर से लेकर धुर दक्खिन तक के राजा महाराजाओं ने सलाम करके चार कदम तक पीठ नहीं मोड़ी थी। और तो और हैदराबाद के आला हजरत निज़ाम तक हाथ बाँधे खड़े थे। सरकार, क्या चलती है। अंगरेज की तरफ़ तो खुदा है। ईसा मसीह ने जाने क्या कान फूँके हैं कि हमारे आपके पैग़म्बरों की उसने सुनना ही छोड़ दिया है। वर्ना, थी किसी को मजाल। आज हम इतने लाचार हो गये हैं। जादू है जादू। और जादू तो राजा साहब वह है जो सिर पर चढ़ कर बोले। नवाब साहब ने आँखें फाड़ कर अपनी बात पर जोर देने के लिये सिर हिलाया।

रामनाथ ने तीखी आवाज़ में कहा, इसके ये माने नहीं कि वे हमें चाहे जैसे खिला सकते हैं। डॉबसन किस सरकार का नौकर है ? वह जो हमारे बल पर खड़ी है। हम डरते हैं, अपनी इज्जत हमने खुद गँवाई है। वर्ना उसकी मजाल क्या थी ? यह सौदागर एक दिन घुटने टेक कर ज़मीन चूमते थे। अगर वे हमसे दुश्मनी करेंगे तो अपनी कब्र खुद खोद लेंगे।

वे आत्म-सम्मान को कड़ी चोट लगती देख कर तिलमिला उठे थे। इस समय उन्हें अपने स्वर्गीय पिता अमरनाथ की याद आ गई थी, जिन्होंने लखनऊ में कैम्पवैल और ऊटरम को विजय का पथ दिखाया था। यदि वे बाग़ियों से मिल जाते तो क्या अंगरेजों की फ़तह हो सकती थी ? लेकिन नवाब को यह गर्व नहीं था। उसके पिता को विवशता में झुकना पड़ा था। उसने चमक कर कहा, राजा साहब ! आप नाराज़ हो गये हैं। ठंडे दिमाग़ से जरा सोचिये तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम किसके बल पर खड़े हैं ? इसी सरकार के। मुआफ़ कीजिये। हमें तो सरकार ने वफ़ादार समझ कर यह जमीन दी है। हम तो सिर्फ उसके तन्ख्वाह पाने वाले लोग हैं। हरडरते नहीं हैं, मजबूर हैं। हमारे साथ रियाया है कहाँ ? जिनके साथ थी वे तो लड़कर मर गये। इज्जत गँवाई है इज्जत पाने के लिये। उनकी मजाल की न कहिये सरकार ? बड़ी अक्ल है उनमें ? पूरे ऊज़बिनौनक हैं। सारा समन्दर उनके टखनों तक पहुँचता है। एक से दूसरे को लड़ा देना तो उनके बायें हाथ का खेल है। मेरी जगह मिरजाबेग को बिठा देंगे। वह नहीं झुकेगा तो मखमूर तक को बिठा सकते हैं। हमारा क्या है ? कुछ खाने को चाहिये। परसों फ़र्जन्दे मुगलिया थे, कल फर्जन्दे नवाबी हुए, आज इनके सही। खुदा न करे, कल फिर किसी का बनना पड़े। उनकी कब्र खोदने वाले तो गदर में गुजर गये राजा साहब ! इन काँग्रेस वालों से उनका क्या बिगड़ेगा ? और हमारे पास है क्या ?

रामनाथ का हृदय सुन-सुन कर सँभलने लगा। नवाब ने आखिरी बात कहकर सारी मजबूरी उँडेल दी। हमसे औरों का फायदा ही क्या ? वे अपने फ़ायदे के लिये सब कुछ कर सकते हैं। हम करें तो ठीक है गर उनके फ़ायदे के लिये। वे आज मालिक हैं। मुझे तो कुछ भी नहीं सूझता। जब ताकत उनके पास है तो वे ही हमें नालायक या लायक साबित करने वाले हैं।

रामनाथ ने फिर एक बार द्वार की ओर देखा। कोई न था। तब गंभीर स्वर में कहा, रियाया न हमारे साथ है, न उसके साथ। फिर हम नहीं रहेंगे और वे रह लेंगे ?

नवाब साहब अजीज बहादुर कैरा ने श्रद्धा से देखा। पर यह कुछ क्षण की ही बात थी। बोल उठे, समन्दर बाँध रखा है उन्होंने। उनके पास फौज हैं, पुलिस हैं। अपढ़ रियाया हमें जितना चाहती है, उतना ही उन्हें भी। गांधी की बात समझ में आती है। ज़मींदार अगर मिल जायें तो सफेद काले के फर्क पर उन्हें निकाला जा सकता है...।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामनाथ ने तेज़ स्वर से कहा—'नवाब साहब ! आप तैश में हैं।'

'नहीं सरकार,' नवाब ने कहा, 'मैं तो उनका गुलाम हूँ। यह तो एक बात थी। अब सवाल है कि यह कैसे हो सकता है ? गांधी बाग़ी है। वह भूखों को उभाड़ रहा है। हम तो भूखे नहीं हैं ? फ़र्क़ एक है। अंगरेज़ तिजारत में बड़े माहिर हैं। वह तो हमें निकाल देता। सरकार ! उसकी हस्ती का अंदाज कीजिये। वह हमारे बिना भी पनप सकता है। पर उसे हमसे फायदा है। चन्द लोग मर्जी से उसकी खिदमत करने तैयार हो गये हैं। आओ भाई, इसमें उसका तो फायदा ही है। वह हमें हटा कर दूसरों को रख सकता है। उसे लगान से मतलब। बाकी चाहे कुछ करो। सरकार ! खता मुआफ़ हो। वह इसमें भी चाल खेल गया। हमें बीच में फँसा कर उसने रियाया और अपने बीच में एक दीवार खड़ी कर ली। वह तो हमारे हकों को हक़ नहीं समझता। उसकी राय में तो यह बफादारी की तनख्वाह है, रिश्वत है..... हम तो उसके मज़बूत किले के चारों तरफ की खाई हैं। दुश्मन इसमें कूद भी पड़े तब भी उसका एकदम कुछ नहीं बिगड़ता और सरकार इसमें तो कोई कूद पड़े अगर ऊपर की दीवाल से वह हमलावरों पर गोली न चलाता रहे, हमें बचाता न रहे।

नवाब थक गये थे। रामनाथ का अभिमान टुकड़े-टुकड़े हो रहा था। वह क्षण भर को चुप हो गये। उनकी समझ में नहीं आया कि यह आदमी जो इतना समझदार है, सब कुछ जानता है, इतने ऊट-पटाँग काम भी कर सकता था कि अभी कुछ दिन पहले भूला हुआ गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह की तरह मछले-मछलियों का ब्याह करा रहा था। आज इसके साथ इसका एक भी मुसाहिब नहीं है। जैसे मिठाई पर मक्खियाँ बैठी थीं। उनके पैरों में बीमारियों के, हैज़े के कीड़े थे। जब वह उड़ाई गईं तो उड़ गईं, पर ज़हर छोड़ गईं। खोमचे वाला खरीदने वाले के डर से उसे फेंक कर दूसरी मिठाई सजा लेना चाहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। ज़हर की मिठाई से आदमी मरता है। वह मिठाई तो बेचना चाहता है, पर ऐसी नहीं कि एकदम मार दे। एक बार ही मार देने से बार-बार पैसे कैसे मिल सकेंगे।

रामनाथ चिंता में पड़ गये। अंगरेज़ी हुकूमत के बारे में वे सोचने लगे। एक बार कांग्रेसी पुत्र दयानाथ ने कहा था, ये हमारे दुर्भाग्य का विषय है कि हम कुछ सुखों के लिये कठपुतले बने हुए हैं। उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया था। क्या यह असत्य है? लेकिन विधाता ने कुछ ऐसा कर दिया है कि अंगरेज़ों और ज़मींदारों का स्वार्थ कुछ ऐसा उलझ गया है, कि एक का नुकसान दूसरे का नुकसान है। यह भी सत्य है। पर इस परस्परावलंबन में भी अंगरेज़ का हाथ ऊपर है। नीति अंगरेज़ ही निर्धारित करता है। वे सिहर उठे। इतना भयानक धक्का उन्हें कभी नहीं लगा था। यदि वे रियाया को भड़कावें तो क्या वह भड़क सकेगी? क्या लोग यही नहीं पूछेंगे कि उनकी जगह तुम गद्दी लेना चाहते हो? इससे फ़ायदा? देश का माल देश में ही तो रहेगा। हम जनता से यह कह सकते हैं। पर उस देश में रहने वाले माल से लोगों को क्या फ़ायदा जो उनके किसी काम नहीं आ सके!!

रामनाथ को याद आया। वे उन्नाव क्यों रहते थे? क्योंकि उनसे गाँववालों, काश्तकारों, किसानों की ग़रीबी देखी नहीं जाती थी। पर दूर हट जाने से क्या सत्य बदल गया। क्या उन लोगों के पेट भरने लगे? अपनी दयालुता के कारण उन्होंने अपने खर्चे बढ़ाकर उन्हीं गरीबों पर और भी बोझा बढ़ा दिया। पर वे अकेले क्या कर सकते थे? वे कितने निरीह थे। इस विचार के आते ही उनका सिर झुक गया। उन्हें लगा कि जिन बुनियादों पर वे खड़े थे, वे खुदगर्ज़ी और फ़रेब के सिवाय कुछ नहीं थीं। पर वे थे, क्योंकि वे समर्थ थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
सामर्थ्य पर उनका दिमाग़ ज्याहाँ गया उनकी दृष्टि सामने बैठे नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा पर पड़ी जो उन्हें इस समय ऐसे घूर रहा था जैसे अब वह जो कुछ सुनेगा उसी में उसकी मुक्ति निहित होगी। वह उसी सामर्थ्य का नमूना था, जिसकी उनको आशा थी, अभिमान था, विश्वास था। क्या वह सचमुच कुछ नहीं है ?

रामनाथ का स्वाभिमान, शराफ़त सब खुलने लगे। उन्हें लगा वह सब ग़लत था। उनका स्वाभिमान अपनों को चूसकर अँगरेज़ों को सिर झुका देना था। शराफ़त अपनों से लूटी हुई इज्ज़त का बहलाव था, उनकी उस रकम का नाज़ायज़ फ़ायदा था, जो अँगरेज़ की संगीन के बल पर वसूल की गई थी। उनका सिर भन्ना उठा।

इतने थोड़े से आदमी निरंकुश शासन क्यों कर रहे हैं ? क्योंकि उन्हें ऐसे मूर्ख मिल गये हैं जो देश के बजाय अपना स्वार्थ देखते हैं। एक दिन उन्होंने डाबसन से कहा था कि अँगरेज यहाँ हिन्दू-मुसलमान, अछूत-वर्णाश्रम, किसान-जमींदार झगड़े मचाकर गृह कलह करवा के ज़िन्दे हैं। हिन्दुस्तानी व्यवसाय को न अँगरेज पनपने देते हैं, न बढ़ने देते हैं। लूट मचवा दी है उन्होंने। गुलाम हिन्दुस्तान अपनी गरीबी से लड़ने में भूला हुआ है। फिर भी अंगरेज़ इस सबको 'गोरों का बोझ' कहते हैं। वे हमें सभ्य बना रहे हैं ? आर्थिक गुलामी राजनैतिक गुलामी से कहीं बदतर है। डाबसन ने कहा था कि हिन्दुस्तान को ग़रीब बनाने में जमींदारों का बहुत बड़ा हाथ है।

उस दिन यह सब सिर्फ़ बात थी। तब डाबसन ऑक्सफ़ोर्ड से कुछ ही साल पहले नया नया सा आया था। वह स्वेज के पूर्व के लोगों से ठीक व्यवहार करना नहीं सीख पाया था। आज रामनाथ ने सोचा यह सब ठीक था। ज़मींदार न रहे तो किसान सरकार को सिर्फ़ लगान देगा। बीच की 'लूट' उसी के पास रहेगी। वह पैसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखेगा तो मनमानी कीमत पर बेचे हुये सामान नहीं खरीदेगा। वह कंगाल नहीं होगा। इसीसे अंगरेज़ यहाँ के ज़मींदारों को रखते हैं ताकि यहाँ का कच्चा माल ले जा सकें। वर्ना यहाँ के उद्योग धन्धे बढ़ जायेंगे। इसीलिये तो यह व्यापारी आज काँग्रेस के साथ हैं। और गृहकलह क्या निराधार है? क्या अँगरेज सब कुछ ज्यों का त्यों नहीं बनाये हैं? अंगरेज़ सातों जात का मेल है। वह सभ्य है, सबके ऊपर ब्राह्मण भी है, क्षत्रिय भी। उससे सब नीचे हैं, दबते हैं। बनियों और कायस्थों को उसने व्यापार और कलम से दबा रखा है। वह सत्य बताता है, पर उसे करने नहीं देता। यदि जमींदार हट जायें तो बनिये व्यापारी की बन आयेगी। पर जमींदार हट जायें?

और रामनाथ के सामने से जायदाद, वैभव, कुल, सबके सब गुज़रने लगे। उन्होंने उठते हुये कहा, नवाब साहब मैं डाबसन साहब से मिलने जाता हूँ। उन्हें समझाऊँगा कि वे आपको अकेला न छोड़ दें।

अजीज़ बहादुर ने कृतज्ञता से देखा। उसे विश्वास नहीं हुआ। उसने डरते हुए कहाः राजासाहब! मौत तक हर दाना खाते वक्त उसे आपका समझूँगा। लेकिन आपका दामन कहीं किसी काँटे में फँस न जाये?

'मेरा?' रामनाथ ने गर्व से मुड़कर कहाः 'मैंने इसी सरकार के लिये अपने तीनों बेटों को छोड़ दिया है।'

'पर सरकार मैंने तो मुल्क, इज्ज़त, अपनापन, सब इन्हीं के लिये दे दिया है, फिर भी कुछ नहीं सुनते।' नवाब ने उठते हुये कहा।

रामनाथ चुप हो गये। उन्होंने मात्र एक बार उसे देखा और फिर द्वार की ओर देखते हुए कहाः आज वह रियाया का भला चाहने वाला हो गया और हम उसके दुश्मन करार दिये गये हैं।'

'सरकार लाठी उसकी है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'लेकिन इस भैंस को उसी ने दूध पीने के लिये दूसरों के खेतों को चर जाने के लिये छोड़ा है। दूध वह तभी दे सकेगी जब उसे आज़ादी से चरने दिया जाये।' नवाब न सिर झुका लिया। वह अब निरुत्तर हो गया था।

२

मोटर चल पड़ी। पण्डित रामनाथ तिवारी का हृदय विक्षुब्ध था।

डाबसन ने उनसे ड्राइङ्गरूम में मुलाकात की। तिवारी जी को बहुत दिन बाद देखा था। उनके बारे में इधर काफी कुछ सुना था। उसे उनकी अटूट स्वामिभक्ति का परिचय मिल चुका था। इस समय उसने उनकी ओर भरी नज़र से देखा जिससे उसके होंठ मुड़ गये कुछ नीचे की ओर।

तिवारीजी बात शुरू करना चाहते थे। आखिर उन्होंने कहा: मैं आज इसलिये हाज़िर हुआ था कि आपके कुछ खास बातों पर राय लूँ।

डाबसन ने सिगरेट उनको पेश की। उनके क्षमा माँगने पर उसने एक सिगरेट सुलगा ली और धुँआ छोड़ कर कहा: फ़र्माइये।

यह उत्तर भी कुछ अच्छा नहीं था। तब डाबसन ने ही कहा: मैंने आपकी सेवाओं के बारे में गवर्नमेन्ट आफ़ इंडिया को लिख दिय है। आजकल जो आप सरकार को मदद दे रहे हैं वह काफ़ी अच्छी रही है और आशा की जाती है कि आयंदा भी आप सरकार की इसी तरह मदद करते रहेंगे।

तिवारीजी कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने कहा: सरकार जो ज़मींदारों की मदद कर रही है उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। वर्ना काफ़ी गड़बड़ हो जाती।

डाबसन ने उन्हें आँखों में तोल लिया। तो गोया आप बराबरी की हैसियत से बातें करते हैं। पर वह चतुर आदमी था। उसने कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा नहीं। तिवारीजी कहते रहे। मैंने आपका वह पत्र देखा था जिस में आपने अमन सभाओं को बनाने की योजना बनाई है। निहायत ज़रूरी और उम्दा चीज़ है, तुरन्त काम में लाई जानी चाहिये।

'आप सरकार को अपनी राय लिख दीजिये। इससे भी आपकी सेवाओं को अच्छा माना जायेगा। सरकार अगर आपकी राय को ठीक समझेगी तो उस पर अपना निर्णय देगी।' डाबसन ने दूसरा कश खींचा और धुँआ मुँह फेर कर छोड़ दिया।

तिवारीजी ने बात बदल कर कहा—'मेरा मतलब था कि हम ज़मींदारों का एक बोर्ड सरकार बना दे और वे गाँवों में काँग्रेस के आंदोलन को कुचलने में सहायता दे।'

डाबसन चौंक उठा। उसने गंभीरता से झुक कर पूछा: कितने ज़मींदार वाकई चीज़ों को समझते हैं? कितने होंगे, मेरा मतलब है, जो इस लायक होंगे कि सरकार उन पर ज़िम्मेदारी छोड़ दे?

'जी नहीं,' रामनाथ ने कहा—'सरकार को उन पर नज़र रखनी चाहिये।'

'वह ठीक है।' डाबसन ने स्वीकार किया। 'वे अपने इल्के के थाने से इस मामले में मदद ले सकते हैं।'

तिवारीजी इस मामले को ऊँचे दरजे से शुरू कर रहे थे। डाबसन इसको नीचे से ही शुरू कर रहा था। तिवारीजी ने कहा: मैंने सुना है सरकार ज़मींदारों के खिलाफ़ कड़ी पड़ रही है।

'आपसे किसने कहा?'

'उड़ती हुई खबर है कि नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा पर सख्ती की जा रही है?' तिवारीजी ने दृढ़ता से कहा।

'बिल्कुल ग़लत,' डाबसन ने उसी अविचलित स्वर से कहा—'आप भी शायद उस शादी में शामिल हुए थे?'

तिवारीजी ने सिर हिला कर कहा, 'जी हाँ। लेकिन मुझे यह राज़ बिल्कुल आखिर में मालूम हुआ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'और अगर,' डाबसन ने आँख गड़ा कर कहा:...'पहले से मालूम होता तब क्या आप नहीं जाते ?'

तिवारीजी ने कहा, 'नहीं.....'

डाबसन मुस्कराया। पर वह मुस्कराहट जाती रही। तिवारीजी रुके नहीं थे। वे कहते रहे, 'मुझे अगर मालूम होता तब भी मैं जरूर जाता।'

डाबसन संभवतः इस साहस के लिये उद्यत न था। उसने आँखें संकुचित करके पूछा: तो आपका ख्याल है वह सब ठीक हुआ ? उसमें कोई बुराई नहीं थी।'

'यह तो मैंने नहीं कहा। पर जिस नज़र से इसे देखा गया है वह ज़रूर किसी दूसरी नज़र का देखना है। पहले हम लोगों को दूसरी ही नज़र से देखा जाता था।'

'आप जानते हैं उन्होंने एक आदमी को जान से मरवा दिया है ? ब्रिटिश न्याय में यह नहीं हो सकता।' डाबसन समझे उन्होंने तिवारीजी को पराजित कर दिया।

'अपने अपने अधिकार और न्याय की रक्षा के लिये सब कुछ किया जाता है।' तिवारीजी ने धीर शब्दों में उत्तर दिया। डाबसन इस उत्तर से कुछ सकपका गया। उसके मन में भी चोर था। पर उसने उसे छिपा कर कहा...'देखिये न वह तो उनसे कुछ माँगने भी नहीं गया था।'

तिवारीजी कुछ ठिठके। फिर उन्होंने हिम्मत करके एक बारगी कह ही दिया, जी, हाँ, वह उनसे वह माँगने गया था जो आपसे यह दो आने की टोपी लगाने वाले काँग्रेसी माँगते हैं।

डाबसन की मुखाकृति कठोर हो गई। उसने तीव्र स्वर में कहा: वह क़ानून की मुखालफत है। न्याय में अविश्वास है। एक व्यक्ति का विषय है, दूसरा साम्राज्य, स्वामिभक्ति, शांति और न्याय का।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामनाथ तड़प उठे। उन्होंने कहना चाहा पर न जाने क्यों यह नहीं कह सके कि कानून सबल का है, न्याय समर्थ का है, उसे चाहे जैसे बदला जा सकता था। सचमुच कानून वाले अँगरेज़ थे। बाकी सब उनको अमल में लाने के लिए थे। ज़मींदार कुछ ज्यादा तनख्वाह देकर रख लिये गये थे। यहाँ तो यही साबित हो रहा था।

उन्होंने बात पलट कर कहा, यह जो कुछ है आपका ही दिया हुआ है। आपको अख्तियार है। आप चाहे सब कुछ वापिस ले लें। पर किस लिये? आज नवाब साहब के एक अचानक अपराध पर आप इतना बड़ा कदम उठाना चाहते हैं। ज़रा उनका रूतबा और शान देखिये.....

डाबसन ने फिर काटाः सरकार इन चीज़ों की इज्ज़त करती है, पर उसकी एक सीमा है। यह उनकी आपसी चीज़ें हैं। सरकार उनको मदद दे सकती है, पर रियाया पर इस कदर ज्यादतियाँ नहीं देख सकती। अँग्रेज़ों ने इसीलिये हिंदुस्तान को जीता, इसीलिये इसका बोझा उठाया कि इस जनता पर इतने निरंकुश अत्याचार नहीं होने देंगे। यह पुराना ज़माना नहीं है।

तिवारी जी ने टोक कर कहाः आपकी यह बातें सुनकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। एक ज़माना था कि सरकार ज़मींदारों को अपना कहती थी। उनके तो दो खून माफ़ थे।

'यह खून माफ़ की परम्परा हिंदुस्तानी ही थी। हो सकता है अँगरेज़ों ने शुरू में यहाँ की पिछड़ी हालत देखकर उस वक्त कुछ दिन के लिये ठहर जाना मंजूर कर लिया हो। लेकिन आज का आंदोलन यदि देहात में फैल गया है तो इन्हीं बुनियादी कमज़ोरियों के कारण। इस आंदोलन की जड़ में क्या है? वह असंतोष जो आप लोगों की फ़िज़ूलखर्ची के कारण लोगों में पैदा हुआ है। वर्ना ये कुछ पढ़े लिखे लोग क्या कर सकते थे?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'इसका अर्थ हुआ सरकार ज़मींदारी खत्म करना चाहती है क्यों कि ज़मीदारी के अलावा बाकी सब ठीक है ? लेकिन यह आन्दोलन तो हम लोगों के खिलाफ़ नहीं है ? पड़ता हो यह बात दूसरी है।'

'नहीं है, इसी से मैंने कहा, यह ग़लत है।'

तिवारी जी चौंके। 'मैं समझा नहीं।' उन्होंने कहा—'क्या आपका मतलब है कि यह हमारे खिलाफ होना चाहिये ?'

'नहीं, नहीं' डाबसन ने हँस कर कहा, 'आप ठीक नहीं समझ रहे हैं। मेरे कहने का मतलब है कि जो आदमी लायक नहीं है उसे बनाये रखना ठीक नहीं होता। एक आदमी का खून बहुत बड़ी चीज़ होती है।'

तिवारी जी समझ गये। इस तरह कोई काम नहीं निकलेगा। लिहाज़ा फिर कहा: 'नवाब साहब का खान्दान पुराना खान्दान है। अगर आपकी इज्ज़त में उनकी इज्ज़त है तो उनकी इज्ज़त भी आप की ही इज्जत है।'

"मैं जानता हूँ तिवारी जी। यह बात मैं जानता हूँ। लेकिन आप सोचकर देखिये कि आपका आदमी अगर गाँव वालों पर बेजा ज्यादती करे, तो क्या आप उसे रखना पसन्द करेंगे।"

तिवारी जी को सहारा मिल गया। उन्होंने कहा—"मेरे मैनेजर रामसिंह ने एक बार मेरी इज्जत के लिये गाँव में झगड़ा खड़ा कर लिया था। उसमें एक परमेश्वर नाम का आदमी मारा गया था। उस दिन मैंने गाँव वालों से कह दिया था मैं दया कर सकता हूँ अपने अधिकार नहीं खो सकता। कानू हम समर्थ और सबल अपने फ़ायदे के लिये बनाते हैं। जाओ, डिप्टीकलक्टर, अफसर सब के पास जाओ। जिसके पास वक्त हो आकर मुझसे लड़ ले। कोई भी नहीं आया।"

डाबसन ने पूछा—'फिर क्या हुआ ? मैनेजर का क्या हुआ ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मारा गया।' उनके मुख से हठात् निकल गया। डाबसन ने हँस कर कहा—'यह बार-बार नहीं होना चाहिये।'

'लेकिन अगर मैं मुजरिम था, तो सरकार को मुझे सज़ा देनी चाहिये थी। यदि मुझे सरकार ने इस योग्य समझा कि मुझे अछूता रखा जाये तो कोई कारण नहीं दिखाई देता कि नवाब साहब पर जाँच बिठाई जाये।'

डाबसन क्षण भर सोचता रहा। फिर हठात् ही उसने कहा: वह कोई बात नहीं। आपने कभी मछली और मछले का एक लाख छप्पन हज़ार रुपया खर्च करके विवाह कराया है?

'जी नहीं' तिवारीजी ने कहा। 'हम ब्राह्मण हैं और सादा जिंदगी बिताने वालों में हैं। पर उनके यहाँ यह ज़रूरी नहीं है। वे नवाब हैं और आपको शायद यह याद नहीं रहा कि हिन्दुस्तान के नवाबों की एक ज़माने में कैसी ज़बरदस्त शान थी। वे जो चाहे करते थे। यह तो उनका एक खेल था। यह भी उनकी सामर्थ्य में था तभी तो वे इसे पूरा कर सके।'

डाबसन मुस्कराया। उसने सिर हिला कर कहा: आप शायद जानते नहीं वे भारी क़र्ज़ों में लदे हैं।

'लेकिन हुजूर' रामनाथ ने कहा—'यह तो रईसी की एक निशानी है। इतिहास कहता है कि कर्जा लेकर समर्थ नहीं चुकाते।'

डाबसन इस व्यंग को समझा। पर यह व्यंग बनकर आई बात इसी बात को प्रमाणित करती थी कि कहने वाला साफ-साफ कहने की हिम्मत नहीं करता। शायद वह समर्थ होता तो आज क़र्ज़ा वसूल कर चुका होता।

'नहीं,' डाबसन ने अपनी हथेली खोलकर कहा—'लेकिन अगर सामर्थ्य न होने पर ऐसी फ़िजूल खर्ची की जाये तो वह बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामनाथ इस तर्क का उत्तर देना चाहते थे। वे यह नहीं समझ सके कि आखिर डाबसन का इशारा किस सामर्थ्य की ओर था।

'जब तक जायदाद है तब तक तो उन्हें कोई चिंता नहीं। वे खरीद फरोख्त कर सकते हैं। जायदाद के मालिक हैं। क्या इसमें भी कोई सरकारी अड़चन है?' रामनाथ आवेश में कहने लगे 'अगर उन्हें कर्ज़ मिलता है तो यही सब से बड़ा सबूत है। उन्हें कोई कर्ज़ा क्यों देता है? क्योंकि उनके पास कुछ ऐसा है जिसके रहते महाजन को कोई डर नहीं। जब यह शक्ति मनुष्य के पास है तब कोई कारण नहीं कि वह सामर्थ्य भर अपनी इच्छा पूरी नहीं करें। नवाब साहब अजीज़ बहादुर कैरा को मैं इनके वालिद मरहूम नवाब साहब हैदर बहादुर कैरा के जमाने से जानता हूँ, और उनकी वफादारी में किसी ने भी शक नहीं किया।' रामनाथ ने इन शब्दों पर विशेष ज़ोर दिया। इस समय उन्होंने डाबसन की आँखों में निर्भय होकर आँखें गड़ा दी थीं। वे बोलते जा रहे थे: हुजूर को याद होगा कि उनके पास ग़दर की सनद है। उसके बाद उन्होंने बलवाइयों को ढूँढ़वा-ढूँढ़वाकर पकड़वाया था। करीब तैंतालीस साल पहिले जब इटावे के कलक्टर ह्यूम साहब ने रियाया की खुशी नाराज़ी की जाँच-पड़ताल करवाई थी, जब हज़ारों जासूसों ने मुल्क को छान दिया था उस वक्त भी उन्होंने क़ाबिले तारीफ़ काम किया था। उससे कुछ साल पहिले जब मलका विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी बनी थीं, उस समय जो गवर्नर का दर्बार हुआ था उसमें भी जब स्वर्गीय राजा साहब अमरनाथ, रईस बानापुर शामिल होने गये थे तब, उनके पास ही मरहूम नवाब साहब हैदर बहादुर कैरा की कुर्सी लगी थी और गवार्नर साहब ने खुद उनकी तारीफ़ की थी। इसी सरकार के लिए इसी हुकूमत के लिए हमारे पुरुखों ने कुर्बानियाँ की हैं, उसी तख्त और ताज के लिये, जिस पर हमने अपना कोहेनूर न्यौछावर किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, हमने क़सम खाई है कि पीढ़ी दर पीढ़ी फरज़न्द बने रहेंगे। मेरा लड़का एक भी नहीं रहा। आपकी ज़बान पढ़ाकर मैंने उन्हें तबाह कर दिया। आज वे सब मुझे छोड़ गये हैं। पर मैं नहीं झुका हूँ। हम अच्छे हैं जो हिंदुस्तानी हैं। हम अपने रिवाज नहीं छोड़ सकते। दुनियाँ जैसे चलती आई है, चलती जायेगी। मैं एक दिन मिट जाऊँगा, पर मैं यह नहीं मान सकता कि वक्त के साथ धर्म बदलता है।' वे आवेश में थे। कुछ देर उनके होंठ फड़कते रहे। फिर एक मौन छा गया।

डाबसन ने अपनी मेज की दराज़ खोली। कुछ देर तक वह उसमें कुछ ढूँढ़ता रहा। फिर उसने एक फाइल निकाली। उसमें से उसने एक पत्र निकाला। उस पत्र को बढ़ाते हुए उसने कहा: ज़रा इस पत्र को पढ़िये। मैं आपको अपना अकर समझकर पढ़ने को देता हूँ। मैं जानता हूँ अपको नवाब साहब से हमदर्दी है, आप सरकार के फायदे के लिये जमीदारों की रक्षा करना चाहते हैं, आपके उनके पुराने खानदानी ताल्लुक हैं। लेकिन इस खत को पढ़कर आप मुझे बतायें। क्या यह जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह ठीक नहीं है? आदमी मर जाता है, तब उसकी कीमत चुकाई जा सकती है। पर किस हालत में। जिस वक्त पुलिस पहुँच चुकी थी, उसके बाद नवाब साहब ने अपने आदमियों से क्यों एक खून करवाया? शायद उनका ख्याल था कि पुलिस को रिश्वत देकर यह मामला दबाया जा सकता था। हो सकता है। लेकिन कांग्रेस वाले इस बात का बहुत प्रचार कर रहे हैं। अखबारों में रिपोर्ट निकल चुकी है। सरकार इस मामले पर गौर करती है, इसलिये नहीं कि कांग्रेस का खतरा है, बल्कि इसलिए कि सरकार अपने उन वायदों को पूरा करना चाहती है, जिनको उसने बार-बार दुहराया है। किसलिये हैं यह कोर्ट, कचहरी, हाईकोर्ट, प्रिवी काउंसिल? इसलिये नहीं कि जायदाद वाले आपस में झगड़ा करें। नहीं, हमने यह जिम्मेदारी ली है कि हम यहाँ हर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमी के जान माल की हिफाज़त करें। लेकिन मैं इस सब पर ध्यान नहीं देता। महरबानी करके यह खत पढ़ जाइये। उसने जोर देकर अंतिम वाक्य कहा, और कुर्सी से पीठ टेक ली।

रामनाथ अब तक पत्र हाथ में लिये बैठे थे। अब उन्होंने उसे खोलकर पढ़ा। जो कुछ उन्होंने देखा, उस पर उन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ। यह वह क्या देख रहे थे। उन्होंने एक बार डाबसन की ओर देखा। वह कठोर दिखाई देता था। जैसे वह स्वयं इस पत्र का प्रभाव उनपर देखना चाहता था। रामनाथ ने फिर उस पत्र को पढ़ा।

बेगम गुलनार, बेगम कुलसूम, बेगम नर्गिस, की दरख्वास्त थी। साथ में मिर्ज़ाबेग और मखमूर अहमद के भी दस्तखत थे। सरकार से कहा गया था कि नवाब का दिमाग़ खराब हो गया है। इसी से उन्होंने उल्टे और अजीब-अजीब काम शुरू कर दिये हैं। बदइन्तज़ामी यहाँ तक बढ़ गई है कि उनके घर से ही सारा माल चोरी हो गया। हम कुछ न कर सके क्योंकि हमें गुलामों से भी बदतर सलूक नसीब होता है। नवाब साहब लाखों कर्ज़ ले चुके हैं और लेने की हविस रखते हैं। बेतरतीबी से गाँव पर गाँव बेचते चले जा रहे हैं। लोग बाग़ एक के दस वसूल कर लेते हैं, उन्हें कुछ भी पता नहीं चलता। अभी उन्होंने एक मछली, मछले की शादी कराई है। सुना गया है कि अब वे इस फ़िक्र में हैं कि बरगद की बेलें लें। इसी बीच उन्होंने फ़िज़ूल ही एक कत्ल करवा दिया है, जिसमें उनका कोई कुसूर नहीं है, सिर्फ़ यह कि उन्होंने नौकरों पर से निगाह हटा ली और इस तरह अपनी बदइन्तिज़ामी की दूसरी मिसाल पेश की। इन बातों को देखते हुए यह ज़रूरी है कि नवाब साहब के दिमाग़ की जाँच कराई जाये। रियासत की देख रेख का सरकार इन्तज़ाम करे। और साथ ही हमारी हिफ़ाज़त का ख्याल रख कर इस दरख्वास्त का ज़िक्र बिल्कुल न किया जाये। जाँच करवाने पर सचाई कभी छुप नहीं सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और नीचे प्राँचों के हस्ताक्षर थे।

रामनाथ पूरा पत्र पढ़ गये। दो बार पढ़ा और फिर डाबसन की ओर देखा जिसने पत्र उनसे लेने को हाथ बढ़ाया। पत्र उन्होंने दे दिया। कुछ देर तक दोनों मौन रहे। डाबसन ने पत्र रख कर दराज़ बंद करके कहा: आपकी अब क्या राय है, राजा साहब ?

रामनाथ ने बुझे हुए स्वर में उत्तर दिया: क्या यह सब ठीक हो सकता है ? इसमें कोई षडयन्त्र नहीं है ?

'तीनों बेगमें और खास दोस्तों की राय है। फिर इसकी जाँच करवानी ही होगी। इस झूठ बोलने की ज़रूरत ?'

'जायदाद का लालच।' रामनाथ ने कहा और ज़बान पीछे खिंच गई।

वे लाचार होकर उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा : मुआफ़ कीजिये मैंने आप का काफ़ी वक्त ज़ाया किया।

डाबसन ने खड़े होकर कहा : मैं समझता हूँ आयंदा आप दूसरों के मामले में दखल नहीं देंगे। और चूंकि आप मेरे दोस्त भी हैं, मैं यह ठीक समझता हूँ, कि आप इस खत का नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा से भी ज़िक्र नहीं करेंगे, क्योंकि इससे बेगमों को डराया धमकाया जायेगा। अगर यह खत जाहिर होता है तो वह या तो मुझसे होगा, या फिर आप से। नवाब को इसकी जानकारी नहीं है। मैं समझता हूँ आप मेरी बात से सहमत हैं।

राजा साहब चुप हो रहे। डाबसन के होठों पर एक कुटिल मुस्कराहट थिरक रही थी।

रामनाथ जब बँगले से निकले वे थके हुए थे। एक बार वे इसी व्यक्ति से मिल कर लौटे थे तब लगा था कि उससे अकड़ आये हैं। इस बार वह गर्व भी चूर-चूर हो गया। उस वक्त यह चाहता था कि रामनाथ दयानाथ को बढ़ने न दें। अलग कर दें। तभी वह तरह दे गया था। इस वक्त उसका हाथ ऊँचा था, इसलिये उसे तनिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी चिंता न थी। उसने खान्दान, इज़्ज़त, रुतबा सबको ताक पर धर दिया। कल जब उसका काम पड़ेगा, तब वह फिर इन्हीं चीजों की ढोल बजा-बजा कर कान बहरे कर देगा।

सचमुच वह समर्थ था। वे तो उसके सामने कुछ भी नहीं थे। उसके फ़ायदे के लिये इस वक्त कानून लचक गया था, ताकि उसका कोई अनिष्ट न हो।

वे थके हुए से ही जाकर मोटर में बैठ गये। सत्यनारायण ने अपनी मोटी आवाज़ में पूछा : सरकार!

'हाँ, हाँ, बँगले चलो।'

'जो हुक्म सरकार,' कह कर सत्यनारायण ने गाड़ी बढ़ा दी। पर रामनाथ को चैन नहीं आया। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा की बातें याद आ रही थीं। वह आदमी ठीक कहता था। अँगरेज़ों को हमने उन पर मेहरबानी करके, स्वीकार नहीं किया है। किया है क्योंकि और कोई चारा नहीं था।

रामनाथ इस कठोर सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। अगर यह ठीक है तो दयानाथ ठीक था। उमानाथ ठीक था। प्रभानाथ ठीक था। वे उन तीनों की बात जानते थे, पर मानते न थे। वे अपने को अँगरेज़ों की बराबरी पर मानते थे। वे समझते थे कि बस जनता—निर्बल को लूटने के लिवे—सबल पक्ष ने—मिल कर एक गुट्ट बना लिया है। यह सत्य था। वे उसी के सहारे जिये थे। पर यह भी इसमें एक सत्य था कि इस गुट्ट में भी एक अधिक सबल था। वह सबल था, क्योंकि उसकी मर्ज़ी ही कानून थी।

अपने से अधिक सशक्त के प्रति उनमें आज पहली बार कचोट हुई। हीनता का अनुभव हुआ। जैसे-जैसे मोटर बँगले के समीप आती जा रही थी, उनका आत्मसम्मान छोटा, और बँगला बड़ा होता जाता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब वे गाड़ी से उतरे उनकी चाल में वही गंभीरता थी। अब जिस जगह वे खड़े थे, वहाँ वे राजा थे। यहाँ इस समय कोई ऐसा न था जो उनके सामने हाथ बाँधे नहीं खड़ा रहता।

३

नवाब अज़ीज़ बहादुर की हालत खराब हो रही थी। उन्होंने निश्चय किया कि वे कुछ करके रहेंगे। उन्होंने एकदम पंडित रामनाथ तिवारी के बँगले का रुख लिया। लेकिन अबकी बार रामनाथ मिले तो उन पर एक अजीब सी बेरुखी थी। आँखों में हमदर्दी का निशान था।

'क्या हुआ राजासाहब ?' अज़ीज बहादुर ने पूछा, 'आपकी भी कुछ नहीं चली ?'

रामनाथ के मन में आया उस पत्र के विषय में बातें करें, पर रुक गये। एक ओर डिप्टी कमिश्नर के विश्वासपात्र होने का गौरव था, दूसरी ओर मित्र का भविष्य था। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किसका पक्ष लें। अज़ीज बहादुर का पक्ष लेना ठीक था। वह तबाह हुआ जा रहा है। तभी दूसरा विचार आया और अंतर्द्वंद्व के परिणाम स्वरूप वही हुआ जो होना आवश्यक था। डिप्टी कमिश्नर की आज्ञा पुराने मित्र की मित्रता और खान्दानों की इज्ज़त से ज्यादा भारी बैठी। अज़ीज़ बहादुर के इस प्रश्न ने उन्हें यद्यपि भीतर ही भीतर चिढ़ा दिया। अपनी असमर्थता दूसरों के प्रति कभी-कभी विद्वेष बन जाती है, और तब और भी अधिक जब दूसरा अपने साथ औरों को भी डुबा देने का प्रयत्न करता दिखाई दे। अब तर्क दूसरी ओर चला। जो इतना मूर्ख है, कायर है, वह यदि नष्ट नहीं होगा तो होगा ही क्या ?

रामनाथ के मौन से अज़ीज़ बहादुर ऊब गये। वे उठ खड़े हुए।

जब वे घर पहुँचे माधोनरायन हाज़िर हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्या है ?' नवाब साहब ने बेरुखी से पूछा। उन्हें जैसे आस-पास के लोगों से घृणा हो गई थी।

माधोनरायन ने अदब से कहा: 'सरकार खबर मिली है कि डाक्टर इब्राहीमखाँ साहब आपकी जाँच करेंगे।'

'मेरी जाँच करेंगे ?' नवाब ने चौंक कर पूछा। वह जैसे आस्मान से गिर पड़े। उन्हें अपने ही कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

माधोनरायन चुप खड़ा रहा। उसका मौन मानों उसकी बात को फिर दुहरा गया।

'वजह ?' नवाब साहब ने सिर उठा कर कहा।

'हुजूर जान बख्शी जाये।' माधोनरायन ने अपने मोटे तने से बदन को झुका कर कहा।

'जल्दी कहो,' नवाब साहब गरज उठे। उन्हें इस व्यर्थ की बात से नफ़रत हो रही थी।

माधोनरायन ने धीमे स्वर से कहा : इल्ज़ाम लगाया गया है कि सरकार का दिमाग़ खराब हो गया है.....

'मेरा दिमाग ?' नवाब साहब ने संदेह से पूछा। संभव है वह डर कर कुछ गलत कह गया है। पर वह दृढ़ था। खबर भीतर पहुँची। बेगमों ने रोना शुरू कर दिया। मिरजाबेग फिर पछाड़ खाने लगे। मखमूर अहमद कोने में उदास मुँह खड़ा था। उधर काँग्रेस के स्वयंसेवक गाँव-गाँव में प्रचार कर रहे थे कि नवाब सरकारी पिट्ठू हैं। उनकी गैरहाज़िरी में उनके नाम की 'टोड़ी बच्चा' हो रही थी। इस चक्कर में तिरंगा झंडा गाँव में पहुँच गया। अफ़सरान के कानों में खबर पहुँची कि अगर नवाबसाहब के अत्याचारों पर सरकार ध्यान नहीं देगी तो गाँव वाले लगानबंदी का आंदोलन करेंगे।

नवाब सिर पकड़ कर बैठे गये। उनको चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा नजर आ रहा था। जो अत्याचार वे करते आये थे उस पर उनका आज भी ध्यान नहीं गया। हाँ अलबत्ता नवाब वाजिदअलीशाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आत्मा उन्हें हँसती हुई दिखाई दी। फिरंगी का भरोसा करोगे ? बेवकूफ ! तुम समझे थे तुम अपनों की जड़ काट कर ऐश कर सकोगे ?

नवाब ने दीवार पकड़कर सहारा लिया। वहीं खानदान की पुरानी तलवार लटक रही थी। उन्होंने उसको हाथ में लिया। समझ में नहीं आया कि उसका क्या मूल्य था। क्या वे आत्महत्या कर लें ? पर किसलिये ? जिंदगी सबसे बड़ी चीज है। उससे बढ़कर किसी में भी शक्ति नहीं। कुल-गौरव की रक्षक, मर्यादा की पालक, वह पुरानी शोषक-सर्पिणी फिर दीवार पर टँगकर उन्हें घूरने लगी।

अंत में उन्होंने इब्राहीम खाँ से मिलना तय किया। वे उसके बँगले की ओर चले।

डाक्टर इब्राहीम खाँ तपाक से न मिला। ऐसे मिला जैसे शायद आपको कहीं देखा जरूर है। नवाब साहब की इच्छा हुई कि कहें। पर यह कहना क्या सरल था कि वे पागल हो गये हैं। इब्राहीम खाँ ने सिगरेट पेश की। नवाब साहब को उसकी दृष्टि में एक पैशाचिक आनन्द दिखाई दिया। वे सिहर उठे। उन्होंने आखिर हिम्मत करके कहा : मैंने सुना है आप मेरी जाँच कीजियेगा ?

'जी हाँ', डाक्टर ने उपेक्षा से कहा—'मुझे गवर्नमेंट ने लिखा है। रिपोर्ट तो भेजना ही होगी।'

'तो क्या आपका ख्याल है कि मैं पागल हूँ ?' नवाब साहब ने चौंककर कहा।

डाक्टर ने उन्हें बहुत हमदर्दी से देखा और धीमे से कहा : आप घबराते क्यों हैं ? मैं कभी ग़लत रिपोर्ट नहीं दूँगा। मुझे क्या आप से दुश्मनी है ? मुआयने में सब खुद ज़ाहिर हो जायेगा।'

नवाब साहब को अब अफ़सोस हुआ कि तलवार घर ही छोड़ आये। इन्हीं लोगों के लिये तो वह बनाई गई थी। जब से उसका इस्तेमाल बन्द कर दिया, तभी से यह गड़बड़ शुरू हो गई। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
चकित होकर पूछा—आपने क्या सुआयना करेंगे ? आपको कुछ शक है ? क्या आप वैसे ही नहीं लिख सकते कि मैं आपसे बहुत दिन से मिलता जुलता हूँ, आप मुझसे अच्छी वक़्फ़ियत रखते हैं। जो मुझे पागल कहते हैं, वे खुद पागल ही नहीं, बदमाश और ज़लील भी हैं ?

'आप तो ख़ामख्वाह डरते हैं। भला सुआयने में क्या हर्ज है ? कहीं मैं तो लिख दूँ और सरकार ने दूसरा डाक्टर भेजा और उसने कोई दूसरी रिपोर्ट पेश की तो, आफ़त न हो जायेगी···

इससे पहले कि डाक्टर इब्राहीमखाँ बात खत्म करते, नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ने मेज़ पर रखा भारी पैंदे वाला पीतल का फूलदान खींच कर उनके मुँह पर मारा। डाक्टर का सिर फट गया। खून गिरने लगा। वह चिल्ला रहा था: बचाओ, बचाओ···इस पागल ने मुझे मार डाला, बचाओ···

बाहर से चपरासी और नौकर भाग कर आये। नवाब साहब को पकड़ने की तो हिम्मत नहीं हुई, पर उन्होंने डाक्टर को सँभाल लिया। नवाब क्रोध से चिला उठे : खून कर दूँगा ज़लील ! मुझको पागल कहता है। नमक हराम ! उस दिन तू वहाँ नहीं था ? तू नहीं खा आया था ? तू नहीं हँसा था ? मौज करने को तुम, और सिर कटाने को मैं ? एक-एक बात समझ रहा हूँ। एक पैसा रिश्वत नहीं दूँगा। समझा···

डाक्टर दूसरे कमरे में भाग कर भीतर से दरवाज़ा बंद करके बैठ रहा। नवाब चले आये। शाम तक उन्नाव में अफ़सरान तथा मध्यम वर्ग में खबर फैल गई कि नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा जिन्होंने मछली का मछली से एक लाख छप्पन हज़ार रुपया खर्च करके ब्याह किया, पागल हो गये हैं, और मारपीट करते हैं। नवाब-साहब सुनते और उनका क्रोध बढ़ता ही जाता। वे राजा साहब विश्वनाथ के पास गये। उन्होंने कहलवा दिया लखनऊ गये हैं। नवाब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परवेज़ ने हमदर्दी दिखाई पर अँगरेज के सामने मजबूरी दिखाई। इस समय उन्हें अचानक खयाल आया। तवक्कले के पास पहुँचे। तवक्कले बैठे हुए शराब की चुस्कियाँ ले रहे थे। आधे नशे में थे। नवाब साहब को देखा तपाक से मिले। नवाब साहब का दिल बाग़ बाग़ हो गया। यह आदमी है जो उसी तौर तरीके से मिला है जैसे पहले मिलता था।

नवाब साहब ने चाहा कि क़िस्सा शुरू करें, पर कृपानिधान तवक्कले बोल उठाः वाह नवाब साहब! मैं तो कहता हूँ जब तक गला न तर हो ले तब तक बोलियेगा नहीं। आवाज़ में लोच पैदा नहीं होगी। बड़ी तेज़ है। वाह !!

नवाब साहब लाचार हो गये। एक पेग पिया। फिर 'जरा और' में दूसरा पिया। फिर 'अभी क्या हुआ है' में तीसरा लिया। अब कसम खाली कि चौथा न पियेंगे, पर कृपानिधान ने कहाः आपको मेरे सिर की कसम 'बस इसके बाद एक और।'

नवाब जब उस हल्के नाश्ते से उठे तो उनके पाँव कुछ लड़ खड़ा रहे थे। इस नशे में और कुछ नहीं सूझा। एक कोने में बैठ कर रोने लगे। जब कृपानिधान ने डेढ़ घंटे समझाया और वे चुप न हुए तो उसने परेशान होकर डाक्टर इब्राहीमखाँ को बुलाया। पर कब वह आने वाला था। उसने कहलवा दिया कि उस पागल को घर से निकाल दीजिये। वर्ना सरकारी गुस्सा आप पर भी उतरेगा।

विश्वास का नौकर था। उसने ज्यों का त्यों आ सुनाया। तवक्कले को चिंता हो गई। खुद भी नशे में था। करीब जा बैठा और ज़ोर से बोलाः नवाब साहब!

अर्ज़ीज़ बहादुर को रोने में मज़ा आ रहा था। रोते रहे। पर तवक्कले ने पुकाराः नवाब साहब! डाक्टर नहीं आया।

'डाक्टर नहीं आया?' नवाब साहब ने चौंक कर पूछाः 'अरे कैसा डाक्टर?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'बुलवाया जो था।' तवक्कले ने फिर कहा।

'किसलिये?' नवाब साहब ने अबोध बन कर पूछा।

'आपके लिये।' सुनना था कि 'लाहौल बिलाकूवत' कहते हुए नवाब साहब उछल कर खड़े हो गये और चिल्ला उठे: साज़िश! तुम लोगों ने मिल कर फ़रेब रचा है। तुम सबकी आँखें मेरी रियासत पर लगी हुई हैं। लेकिन जब तक मैं हूँ तब तक कुछ भी नहीं करने दूँगा। समझे रखना। जिस पत्तल में खाते हो उसी में छेद करते हो? बदज़ात।

वे क्रोध से हाँफ रहे थे। कृपानिधान तवक्कले एक कोने में डरा हुआ सा बैठ गया था सिमट कर, जैसे मोटा बंदर भींगने पर बुद्धू सा बैठ जाता है। नवाब साहब उसी तैश में लड़खड़ाते हुए अपनी कोठी चल दिये। बाहर ड्राइवर ने उन्हें मोटर में बिठाया और भीतरी फाटक पर इत्तला कराके उतार दिया।

उस रात दो एक खिदमतगार हंटरों से पिटे। बेगमों के साथ बाँदियों ने चिल्ला-चिल्ला कर आस्मान सिर पर उठा लिया। कैरा से चल कर यह खबर भी दूर-दूर फैलने लगी।

होश में आने पर कल की सब बातें नवाब साहब को एक दुखदाई सुपने सी मालूम देने लगीं। इतना याद था कि कृपानिधान से कुछ झगड़ा जरूर हुआ था। उन्होंने कहा: अल्लाह पाक! दिल्लगी ऐसी बेढ़ा बन जायेगी यह किसे मालूम था। आज मैं पागल हूँ और यह सब जो मेरे साथी बने हुए थे इनमें से सब ठीक हैं?

डिप्टीकलक्टर महेश्वरदयाल का ध्यान आया और उतर गया। वह क्या कर सकता है? डिप्टी कमिश्नर के सामने उसकी क्या चलेगी। डिप्टी कमिश्नर और फिर वह भी अँगरेज़। तलाश करवाया कि बैरिस्टर हरचन्द मनसुखानी हैं या नहीं! हों तो ज़रा तकलीफ़ करें। घंटे भर में उत्तर आया, तार आया है। सख्त ज़रूरी काम से बंबई जा रहे हैं। लखनऊ से गाड़ी पकड़ेंगे। लिहाज़ा घंटा भर रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया है। इस वक्त अगर इंतज़ाम नहीं करेंगे तो हज़ारों का केस हाथ से निकल जायेगा। इस वक्त माफ़ी चाहते हैं। खुदा ने चाहा तो फिर कभी मुलाक़ात होगी।

नवाबसाहब ने सोचा। कोई हर्ज नहीं। मखमूर अहमद को मोटर में भेजा कि जाकर तुरंत बुला लाओ। कहना खर्चा हम देंगे। अगर पूछें तो मामला भी बता देना।

पौन घँटे के बाद मखमूर ने उत्तर लाकर दिया। कहा कि—डर की कोई बात नहीं है। बैरिस्टर को वादा करके जरूर पूरा करना चाहिये। इसलिये इस वक्त मजबूरी है। वैसे यह केस चल सकता है। कुछ पैसा गाँववालों को अपनी तरफ़ तोड़ने में, कुछ पुलिस को अपनी ओर करने में, कुछ हज़ार डाक्टर रिपोर्ट लेने में खर्च करने से केस अपनी ओर तय हो सकता है। शायद वक्त ज्यादा लग जाये। अगर मेरी ज़रूरत हो तो मुझे अपना ही समझें। इत्तला देकर बुलवालें। और नवाब साहब ने जो मेहरबानियां की हैं, उन्हें कैसे भुलाया जा सकता है।

सारा परिवार उदास पड़ा है। बेगम गुलनार की आँखों से झड़ी लगी है। कुलसूम और नर्गिस तो गले मिल मिल कर रो रही हैं और मिर्ज़ाबेग हैं कि फूट फूट कर तड़पते हुए रो रहे हैं। और बेगमें एक दूसरे को समझा रही हैं कि 'बहिन ! कोई बात नहीं।' पागल हो गये हैं तो क्या ? आगरे में इलाज होजायेगा। अपनी तरफ़ से जो करना है करेंगे, आगे, खुदा की मर्ज़ी।

नवाब साहब ने एकान्त में जाकर तकिये में मुँह छिपा लिया। इस वक्त रुपया उधार भी नहीं मिल सकता था। न वे गाँव बेच सकते थे। कोर्ट आफ़ वार्डस की खबर ही ऐसी थी। लाचार होकर वे अपने घुटनों पर बैठ गये और उन्होंने अत्यंत एकाग्र होकर, वेदना से व्याकुल होकर नमाज़ पढ़ी। जिस वक्त वे नीचे झुके, कमरे में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेगमें, मिरजावेग, मख़मूर अहमद और सब बाँदियां, नौकर चीखते चिल्लाते घुस आये और उन्हें उठाने लगे। बेगमें चिल्ला-चिल्ला कर रो रही थीं: आह अल्ला! बेहोश हो गये हैं: मुईज़री पानी तो लाना...'

नवाब उछल कर दूर खड़े हो गये। पास में ही हुक्के की नली रखी थी जिस पर चाँदी के तार चढ़े हुए थे। एक झटके से उखाड़ कर सबको मारना शुरू किया। बेगमें चिल्लाने लगीं। जो चिल्लाया। वही पिटा। सदाव्रत हो गया। मार खा-खा कर सब भाग चले।

क्रोध से नवाबसाहब बुरी तरह काँप रहे थे। उनकी आखें लाल हो गईं। नथुने फड़कने लगे। साँस तेज़ चलने लगी। ऐसा लगता था अब ख़ून के आँसू निकल पड़ेंगे। उन्होंने हुक्के की नली को फेंक दिया और वे बाहर की ओर चले। पर किसी ने जाते वक्त चुप चाप दरवाज़ा बंद कर दिया था। उन्होंने देखा ऊपर एक बड़ा सा रोशनदान था, और कोई राह नहीं थी। अत्यत क्रुद्ध होकर वह दरवाज़ा पीटने लगे... 'खोल दो' 'खोल दो' 'एक-एक का क़त्ल कर दूँगा,' 'ख़ून पी लूँगा' इत्यादि आवाज़ें गूंजने लगीं।

जब कोई लाभ नहीं हुआ तब उन्होंने पलंग खड़ा किया और रोशनदान में लटक कर कुछ देर उचके, और इसके बाद बाहर कूद गये। बरामदे की छत पर आ गये थे। यहाँ से वे भीतर न जाकर घर के बाहर निकल गये। इस समय वे बेहद थके हुए थे।

४

जो कुछ भी हो पण्डित रामनाथ का हृदय कचोट उठा। अजीज़ बहादुर उनके सामने बैठे थे। जो कुछ उन्होंने कहा वे चुपचाप सुनते रहे। अज़ीज़ बहादुर ने अंत में कहा: जब कोई तरकीब नज़र नहीं आई तब मैं पलंग खड़ा करके उसके सहारे चढ़ कर रोशनदान से भाग आया हूँ।

'तो वह पलंग आप वैसा ही छोड़ आये होंगे?' रामनाथ ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जी हाँ, मैं लौटकर उसे विछा कैसे सकता था!' आश्चर्य्य से नवाब साहब ने कहा जैसे उन्हें डर था कि कहीं राजा साहब भी उन्हें पागल नहीं समझ रहे हों। उन्होंने ग़ौर से राजा साहब को देखा। नहीं, वहाँ ऐसा कोई चिन्ह नहीं था। उस क्षण उन्हें लगा जैसे तिवारी जी की भव्य आक्रांत पर कोई काली छाया डोल गई। एक क्षण बस एक क्षण के लिये। तिवारी जी उस गृह षडयन्त्र को समझ गये थे। उन्होंने कहा: यह तो ठीक है कि आप पलंग बिछा नहीं सकते थे, पर आप ने यह भी सोचा कि वे लोग इस बात से क्या क्या उड़ायेंगे?'

'जो नहीं! यही कहेंगे कि चोरों की तरह भाग गया।' नवाब ने सीधे तरीके से उत्तर दिया।

'नहीं नवाब साहब,' रामनाथ ने कहा, 'ख़तामुआफ़ हो, वे आप को वही कहेंगे जो आप को वे कह चुके हैं। आप ने कभी सोचा?'

नवाब भौंचक देखते रहे।

रामनाथ ने हठात् उनके मुख की ओर देख कर कहा: 'आपने शायद आज नाश्ता भी नहीं किया? शाम होने आई।' नवाब चुप रहे। उन्होंने झुक कर कहा: मुझे तो फ़ुर्सत ही नहीं मिली।

राजा साहब ने आवाज़ दी। रामदीन हाज़िर हुआ। आज्ञा पाकर वह चला गया। उसके जाने पर उन्होंने स्नेह से कहा: आप धीरज धरिये।

नवाब साहब ने सिर हिला कर स्वीकार किया: जी हाँ। जल्दी से तो काम बिगड़ जायेगा।

रामदीन एक चाँदी की तश्तरी में मिठाइयाँ, एक में कुछ नमकीन और फल ले आया और मेज़ पास खींच कर, पानी का गिलास भर कर पास रख गया और चाय लाने चला गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हाँ आप ने सोचा कि आप के इस काम का लोग क्या क्या मतलब लगायेंगे ?' रामनाथ ने अपनी पहली बात को फिर से जारी किया। और कुछ नहीं नवाब साहब ! बात दर असल यह है कि आप का नाम सिर्फ़ अज़ीज़ नहीं है। आप नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा है। कैरा ही नहीं, बनारस, इलाहाबाद, रायबरेली, लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, दिल्ली, अलीगढ़, भोपाल, मंसूरी, देहरादून और नैनीताल तक में गवर्नर, कमिश्नर, डिप्टीकलक्टर, मुंसिफ़, जज, तहसीलदार, बड़े बड़े सिविल सर्जनडाक्टर, आइ. पी, डी. एस. पी, वकील, बैरिस्टर, अखबार वाले, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, वगैरा जितने भी ऊँचे दर्जे के लोग हैं, ताल्लुकेदार, ज़मींदार, राजा, नवाब, करीब-करीब इनमें से अधिकांश आपको जानते हैं। अब आप सोचिये। जब महफ़िलों में इसकी चर्चा होगी तो लोग क्या समझेंगे ?

नवाब का सर झुक गया। उसने आज़िज़ी से कहा : 'तो मैं क्या करता ? बदमाशों ने मुझे बंद कर दिया था !'

'आप घर के मालिक थे। आपकी एक डाँट से सब काम हो सकता था।' रामनाथ ने ज़ोर देकर कहा।

'तो मुझे रुआब से काम लेना चाहिये था ? यह तो गलती हो गई।' अचानक जैसे कुछ नई बात सूझ गई। नवाब साहब उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोल उठेः हो गया, हो गया।'

'क्या हो गया ?' रामनाथ ने चौंक कर पूछा।

'सब मामला तय हो गया।' नवाब साहब ने हथेली पर मुट्ठी मार कर कहा।

'कैसे हो गया ?' रामनाथ ने उसी उदासीनता से पूछा। उनकी भ्रूकुंचित हो गई।

'बस अब मुझे इजाज़त दीजिये। आप ने मुझे जिला दिया।' नवाब ने ऊपर देखकर कहा। वह कुछ खोया हुआ सा लगता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पहले बता तो दीजिये।' रामनाथ ने हाथ पकड़ कर कहा—'आप पहले तशरीफ़ तो रखिये।'

नवाब साहब बैठ गये। फिर अत्यंत उल्लसित स्वर में कह उठेः ठीक है, ठीक है। मैंने मुरव्वत और रियायत से काम लिया। रियासत के लिये आदमी को चालबाज़ होना चाहिये। मैं बहुत सीधा बन कर रहा। बस अब जाकर तीनों बेगमों की खाल हंटरों से मार मार कर उड़ा दूँगा और उस मिर्ज़ाबेग और मखमूर का खून कर दूँगा...' नवाब ने किचकिचा कर दाँत पीस लिये।

रामनाथ ने नवाब साहब के मानसिक विकार को पहँचाना। उनकी आँखों की उदासी और भी गहरी हो गई। उन्होंने अत्यंत सहानुभूति से कहा, मेरी अर्ज़ है, आप पहले कुछ खा लीजिये। फिर आराम कीजियेगा।

'आपका क्या ख्याल है' नवाब साहब ने फिर पूछा—'अगर मखमूर और मिरज़ा को बेत मारूँ और बेगमों को सात दिन के लिये भूखा रखूँ। बंद करके ताला डाल दूँगा। बात यह है कि आजकल कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जो आगे चलकर अपने ही खिलाफ़ पड़ जाये।'

बाद काफ़ी मिन्नत के नवाब साहब ने कुछ नाश्ता किया। चाय लौटा दी। पानी पी लिया। रामनाथ समझते थे कि इस वक्त इनसे ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिये जिससे इन्हें महसूस हो कि इन्हें पागल समझा जा रहा है। इस वक्त इनका मिजाज़ शक्की हो गया है। कुछ भी कहा जाये यह उसे अपने ही दृष्टिकोण से देखेंगे और उसका नतीजा अच्छा नहीं निकलेगा।

नाश्ते के अनंतर उन्होंने नवाब साहब के लिये सोने का प्रबन्ध कर दिया और बाहर चले गये। अभी उन्हें बाहर गये दस मिनट भी न हुए होंगे कि नवाब साहब उठ बैठे। उन्होंने सिगरेट जलाई। एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यक्ति भीतर घुस आया। वह श्यामनाथ थे। उन्होंने हाथ बढ़ा कर कहा, 'अक्खा ! पहँचाना मुझे ? नवाब साहब ?'

नवाबसाहब सुन चुके थे कि श्यामनाथ का दिमाग़ बिगड़ गया है। उन्होंने निहायत हमदर्दी से कहा, आइये आइये। आप हमारे छुटके राजा हैं। तशरीफ रखिये। आप मुझे पहँचान लेंगे और मैं ही आपको नहीं पहचानूँगा ?'

श्यामनाथ बैठे गये और बोल उठे: वह बात दूसरी है नवाब साहब। आपकी बात ही और है।

नवाब साहब का संदेह फिर जाग्रत हुआ। क्या यह कहीं मुझे पागल समझते हैं ? तब क्या मैं सचमुच पागल हूँ ? उन्होंने कहा—'ऐसा आपने क्यों कहा ?'

'मैं कहता हूँ ?' श्यामनाथ ने आश्चर्य से आँखें फाड़ कर कहा—'दुनिया कहती है।'

'दुनिया कहती है ? लाहौलबिलाकूवत !' नवाब साहब ने कहा—'सब यही कहते हैं ?'

'जी सरकार, बच्चे बच्चे की ज़बान पर यही बात है।' श्यामनाथ ने हाथ फैला कर कहा।'

नवाब साहब सुन रहे थे—'अँगरेज़ी हुकूमत में इंसान इंसान नहीं रहता।'

'वाह वाह' नवाबसाहब ने तपाक से कहा—मुकर्रर इरशाद। क्या कहा है आपने। कम कहा है सरकार, पर लाजवाब कहा है। इसी मुसीबत में तो मैं पड़ा हूँ। घर तक छोड़ देना पड़ा। आज लाचार हो गया हूँ। क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? कुछ समझ में नहीं आता। राजासाहब कहते हैं—आराम कर लीजिये। कौन करे आराम ? किसे आयेगी नींद। यहाँ फरिश्ते दिखाई दे रहे हैं। कयामत के सवाल जवाब यहीं खत्म हुए जा रहे हैं। तुमने यह क्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया। अच्छा किया भी तो यों क्यों किया। अरे मेरे अज़ीज़! तूने किया तो क्या किया!'

श्यामनाथ ने सिर हिला कर कहा, 'कुछ नहीं किया। नहीं किया तभी तो यह हाल है। मैं कहता हूँ नवाबसाहब। जिसने किया वह तो कर चुका। अब वह वापिस नहीं लौट सकता। आपका क्या खयाल है?'

'दुरुस्त है छुटके राजा। बिल्कुल बजा है।' नवाब साहब ने कहा: पर सवाल है किया क्या जाये? अब तो न अँगरेज़ सुनता है, न हिन्दुस्तानी। चारों तरफ तबाही छा रही है। हम तो कहीं के न रहे।'

'क्यो नहीं रहे नवाब साहब?' श्यामनाथ की आँखो में एक अजीब सी चमक दिखाई दी। उन्होंने कहा—'आपका मामला पेचीदा है?'

'बहौ ssssत!' नवाब ने ऐसे कहा जैसे एक शब्द में ही अपनी मुसीबत इकट्ठा कर देंगे।

'बहुत ठीक' श्यामनाथ ने सिर हिला कर कहा: आप मेरे साथ चलिये। आप अंगरेज़ के दुश्मन हैं'!

'दिल में तो हो गया हूँ। ज़ाहिरा नहीं। डर लगता है।'

'तब काम चल जायेगा। भैया इस मामले में कुछ भी नहीं कर सकेंगे। चलिये मेरे साथ। अभी चलिये।' वे उठ कर खड़े हो गये।

'कहाँ चलियेगा?' नवाबसाहब ने अचकचा कर पूछा।

'दया के पास चलिये। कानपुर में वकालत करता है। वह कांग्रेस में है। उससे कहेंगे। प्रभा न सही दया और उमा तो अभी हैं।' वे बाहर चले गये। कुछ देर में लौट कर आकर कहा: गाड़ी हैनहीं। भैय्या गये हैं। एक काम हो सकता है। आप पैदल चल सकते हैं?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब साहब ने चौंक कर कहा—'पैदल ! इतनी दूर !'

'अजी सरकार,' श्यामनाथ हँसे, एक डग में एक मील पार होता है। बस ग्यारह कदम समझिये।'

'पर कांग्रेसी के यहाँ जाने से तो काम बिगड़ जायेगा ? नवाब साहब ने ऐतराज़ किया।

'ठीक है,' श्यामनाथ ने कहा—'यहाँ रह कर सब काम बन रहा है। लोग ठीक कहते हैं नवाबसाहब ! मैंने भी देख लिया। लोग ठीक कहते हैं।'

'क्या कहते हैं ? लोग क्या कहते हैं ?' नवाब ने उठते हुए पूछा।

'वही कहते हैं जो कहना ठीक है। अब मैं आपसे क्या कहूँ ? आप खुद समझदार हैं।'

श्यामनाथ ने चाहे किसी लिये कहा हो, पर उस अधेड़ लम्बे चौड़े आदमी से यह बात सुन कर नवाब साहब को फिर खुटका हुआ, हो न हो वही बात कह रहे हैं।

बोलेः चलिये। आज मैं भी दिखा दूँगा। मैं डरता नहीं हूँ। चलिये। दोनों धीरे धीरे बाहर निकल गये।

रात को जब रामनाथ लौट कर आये उन्होंने पूछा—'श्यामू कहाँ है ? नवाब साहब को खाना खिलाया ?'

रामदीन ने कहा—'सरकार ! मुझे तो ऐसा कोई काम नहीं मिला। दोनों ही कहीं टहलने गये हैं।'

रामनाथ ने सुनकर खाना नहीं खाया। प्रतीक्षा करने लगे। ग्यारह बज गये। महालक्ष्मी ने दरवाजे की आड़ में आकर कहाः चाचा जी अभी तक नहीं लौटे।

रामनाथ चौंक उठे। पूछाः अभी तक नहीं आया !

'जी नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कहाँ गये हैं ?'

'मालूम नहीं।'

'कुछ कह गया है ?'

'जी नहीं।'

'अकेले गये हैं ?' अबकी बार उनके वाक्य में परिवर्तन हो गया।

'जी नहीं, नवाब साहब के साथ गये हैं !'

'उफ़।' रामनाथ ने घबरा कर कहा—'दो दो पागल !' और उनके मुँह से कुछ भी नहीं निकला। कहाँ जायें ? क्या करें ? किससे कहें ? जब कुछ नहीं सूझा तो मोटर लेकर सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ पुलिस के पास गये।

थोड़ी ही देर बाद चारों ओर खोज होने लगी। स्टेशनों को हुलिया बयान करके तार दे दिये गये। उन्नाव में उसी वक्त डोंड़ी पीट दी गई। जब वे घर लौटे थके से पलंग पर गिर गये। महालक्ष्मी आशंकित बैठी थी। आकर पूछाः कोई खबर लगी ?

'कोई नहीं।'

वह उस संक्षिप्त उत्तर को सुनकर काँप उठी। उसने दबे स्वर से कहाः फिर ?

'कल तक कुछ नतीजा निकल आयेगा। अवधेश सो गया ?'

'जी हाँ।'

'जाओ, तुम भी सो जाओ।'

महालक्ष्मी चली गईं। पर रात भर जागती रही। रामनाथ भी सो नहीं सके।

५

अब आकाश से अंधकार उतर कर तह पर तह जमता जा रहा था, सड़क पर नवाब साहब अजीज़ बहादुर कैरा और पण्डित श्यामनाथ, चले जा रहे थे। नवाब साहब अपनी हल्की जूतियाँ पहने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
थे। श्यामनाथ के पाँव में घर पर पहनने के स्लीपर। वे निकर और कमीज पहने थे। नवाब डोरिये का कुर्त्ता, जालीदार बनियान और ढीला पायजामा। दोनों ही गोरे रंग के आदमी थे। ऊँचे और लंबे थे। वे अच्छे खाये पिये घरों के लोग थे, यह उनको देख कर ही ज्ञात होता था।

श्यामनाथ अपने उद्वेग में कहने लगेः नवाब साहब! लोग कहते हैं मेरा सिर फिर गया है। आपने भी सुना होगा?

नवाब साहब चक्कर में पड़ गये। अपने बारे में भी उन्हें यही कुछ सुनना पड़ रहा था। फौरन कह उठेः कहने वालों की न पूछिये छुटके राजा! उनके पास और कोई काम ही नहीं होता।

श्यामनाथ प्रसन्न हो गये। बोले : बात अगर ठीक सुनी है तो आज। आप जैसा दाना आदमी नहीं मिला मुझे। देखिये! अगर आदमी ठीक कहने लगता है तो लोग उसे गलत समझते हैं। आप मेरा मतलब समझ रहे हैं न?

नवाब साहब को अपनी समझ के प्रति यह दया का, सहानुभूति का भाव अच्छा नहीं लगा। उन्होंने उपेक्षा से कहाः क्यों नहीं! लेकिन आप कह क्या रहे हैं?

'यही तो' श्यामनाथ कह उठे—'यही तो मैं सोच रहा था। पर आपने ढूँढ़ ही निकाला। क्या आला ख्याल है।' फिर स्वर बदल कर ठंडी साँस लेकर कहा : आप सुनेंगे? मेरी दुख भरी कहानी सुनेंगे? आपके पास है इतना वक्त नहीं नवाब साहब! मेरे ग़म मेरे ही बने रहें। आप क्यों उनको मुझसे बाँटें? आपका जी दुखेगा।

बात श्यामनाथ ने वह कही कि नवाब साहब के पास इस वक्त अगर एक लाख रुपया होता तो बख्श देते। कह उठे : तो फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप किस लिये हमारे साथ इस दर की ख़ाक छानते हैं ? नहीं छुटके राजा ! सुनाना ही होगा।

श्यामनाथ कहने लगेः जानते हैं प्रभानाथ को मैंने अपना ही लड़का माना था। क़सम खाकर कह सकता हूँ वह उसका ज़हर से नीला पड़ा हुआ चेहरा मुझे अभी तक नहीं भूलता। मैं क्या करूँ ? ऊपर देख रहा हूँ। लगता है इस वक्त नीला आस्मान···ठीक उसी का सा जैसे ज़हर खाकर सो गया है, अब यह कभी भी उठेगा नहीं। इसमें अब कभी चाँद नहीं आयेगा। नवाब साहब ! बच्चा था वह। उसके हाथ पाँव छोटे छोटे बड़े मुलायम थे। लोग कहते हैं नहीं वह बड़ा हो गया था। जवान था। सब झूठ कहते हैं। मैं सोच भी नहीं पाता कि वह बड़ा हो गया था। लेकिन ज़हर उसने खाया क्यों ? क्योंकि अँगरेजी हुकूमत उसके खिलाफ़ पड़ गई थी। नवाब साहब ! उसे किस चीज़ की कमी थी ? खाना, कपड़ा, बँगला, मोटर सब था, उसके पास सब कुछ था। पर उसका दिल नहीं माना। मुझे ताज्जुब होता है कि जिस सबको हम चुपचाप मान लेते हैं कि यह तो ऐसा ही था, है और रहेगा, उसको वह नहीं मान सका। उसने छोटी सी जान लेकर बग़ावत की। वह तो मारा ही जाता, क्योंकि उसका दुश्मन बहुत बड़ा था। और बड़ा वह क्यों है ? क्योंकि हम रुपया और तनख्वाह पाकर अपना ईमान बेच कर कुत्तों की तरह उसकी हिफाजत किये जाते हैं। उसने इस जीवन को स्वीकार नहीं किया। वीणा गई। उसने उसे ज़हर दिया। अपने हाथ से अपने पति रूप पुरुष को उसने विष दे दिया ! धन्य हो बेटी ! तुम्हारा हाथ नहीं काँपा ? और उसने अपने प्राणों का मोह छोड़कर उसे सबसे बड़ा सत्य मान कर अपने गले के नीचे उतार लिया। जब तक आदमी जिंदा रहता है तभी तक सब कुछ है नवाब साहब। पर वे लोग क्यों जिंदगी से नफरत करने लगे थे ? देश के लिये ! हम भी तो जवान थे। हमारे अंदर क्यों वह भावना नहीं थी। अब भी इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

सबको हम अजीब अजीब सा क्यों समझते हैं ? क्या है यह देश ? जिसके लिये हज़ारों नौजवान, वे जिनकी रगों में गर्म लहू दौड़ता है, वे जिनके सीनों में दिल तड़पता है, जिनके अरमानों में नई दुनिया खेलती है, अपने सिर हाथों पर लिये डोलते हैं। नवाबसाहब ? कितने माँ बाप आज न रो रहे होंगे ? याद है आपको। भीड़ोंसे सड़कें भर जाती थीं और लगता था कि गंगा टूट पड़ी है। नंगे हाथ, नंगे पाँव, और पुलिस निर्दयता से लाठी चलाती थी, बच्चों का कत्ल करती थी, औरतों की छातियों पर घोड़े टाप रख कर कुचल देते थे, उनकी आँखों के सामने उनके बच्चे उनके भाई, उनके पति, उनके पिता गोलियाँ खाकर जान देते थे। पर वे काँग्रेस को नहीं छोड़ते थे। किसलिये ? एक नई दुनिया बनाने के लिये, जहाँ वे वह सब कर सकेंगे जो आज नहीं कर सकते। वह नई दुनिया क्या है, यह मैं नहीं जानता। पर इतना जानता हूँ कि जब औरतों की सुहाग की चूड़ियाँ टूट जाती थीं, तब वह अपने दुधमुँहे, लाड़लों को हँसते हुए भेज देती थीं ! और यह क्रान्तिकारी ! आप समझते हैं प्रभा मर गया ?' नहीं, नहीं नवाब साहब, श्यामनाथ ने हँसकर कहा—'वह कभी नहीं मर सकता। माना उसका नाम आज सब लोग नहीं जानते। इससे क्या ? शहीद का नाम नहीं, काम होता है। समुद्र बनाने को न जाने कितनी लहरों कितनी नदियों को उसमें खो जाना पड़ता है। मैं कहना चाहता हूँ, पर कह नहीं सकता। वह उनमें क्या था कि लहू बिजली बन गया था। वह उनमें क्या था जो कफ़न को हँस कर जवानों की टोली ओढ़ लेती थी। कल इन्हीं खेतों में से हुँकार उठ रही रही थी। कल यह जीवन जाग रहा था। कल एक हलचल थी। लोग मर रहे थे, पर उन्होंने जिंदगी की कीमत जान ली थी।'

वे चुप हो गये। हवा अब कुछ तेज हो चली थी। गहरे आसमान में एकाध तारा दिखाई देने लगा था। सुई की नोंक सा, टिम टिमाता। उन्नाव से कानपुर की सड़क के दोनों ओर उतने खेत नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जितने पूर्व की ओर बढ़ जाने पर मिलते हैं। कहीं कहीं धान के खेत मिलते हैं जिन्हें असाढ़ में बोकर कातिक में काट दिया जाता है। आबादी भी रास्ते में बहुत ही कम है। अधिक गाँव भी नहीं।

श्यामनाथ फिर कहने लगे: वह देश क्या है, जिसके लिये यह लोग पागल हो उठे हैं। मर मिटने को तैयार हैं। दया काँग्रेस में है। उमा अपने को कम्युनिस्ट कहता है। प्रभा आतंकवादी था। नवाब साहब! मैं कुछ खास नहीं पढ़ा। वे लोग बहुत सी नई नई बातें कह जाते हैं। पर मैं इतना समझ गया हूँ कि हम जिसे इज्ज़त, खान्दान, रुतबा, घर कहते हैं, यह सब एक मन बहलाव है। किसी बड़ी सचाई को न मानने के लिये बहाना है। फरेब है ताकि कुछ भी बदल न पाये।

नवाब साहब चुपचाप सुन रहे थे। इस दृष्टिकोण से जीवन न उन्होंने कभी देखा था, न सोचा था। आज उनके सामने से एक पर्दा हटा। उन्होंने बरबस ही कहा: छुटके राजा! मुझे ताज्जुब होता है कि आप इतने समझदार हैं, फिर भी लोग आपको पागल कहते हैं।'

'मैं बुरा नहीं मानता,' श्यामनाथ ने कहा—'मैं उन्हें नासमझ सोचता हूँ। वे सचाई नहीं चाहते। उनकी बातोंपर ध्यान न दीजिये। आपको भी अब वे पागल कहने लगे हैं। आप बुरा मानते हैं? माना भाई, आप पागल हैं, पर दुनिया को क्या?'

'हाँ दुनियाँ को क्या?' नवाब साहब ने कहा, 'पर छुटके राजा! मैं दर असल पागल नहीं हूँ। वे लोग कहते हैं।'

'कहने दीजिये। जो आप हैं वह तो बने ही रहेंगे।'

यह तो संदेहात्मक बात रही। नवाब साहब ने साफ़ किया: क्यों छुटके राजा? आप भी मुझे पागल समझते हैं?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैं ?' श्यामनाथ हँसे। बोले 'आप तो बस। इससे पूछिये, उससे पूछिये। क्यों इतनी कड़ी मेहनत करते हैं। दिल से, अपने दिल से पूछिये, पूछिये कि आप पागल हैं या नहीं ?'

'लेकिन.....'

'फिर वही लेकिन,' श्यामनाथ ने कहा : आपने कभी पूछा ? आज ज़रा मेरे सामने पूछ कर तो देखिये।'

'पूछता हूँ' नवाब साहब ने कहा—'पूछता तो हूँ।'

'अब कहिये' श्यामनाथ ने पूछा : 'क्या कहता है ? आप पागल हैं ?

'जी नहीं' नवाब साहब ने धीमे से कहा : 'कुछ धड़कन सी होती है। मेरा तो अभी तक यही ख्याल है कि मैं पागल नहीं हूँ। आप जैसे अक्लमंद आदमी भी यही कहते हैं।' पर हठात् नवाब साहब के मुँह से निकल गया : 'दुनिया तो आप ही को पागल बताती है !'

श्यामनाथ ठठाकर हँसे। कहा : बस हो गया। मुआफ़ कीजिये नवाब साहब ! इज़ाज़त हो तो कहूँ। आपको थोड़ी सी पहुँच चुकी है। कुछ असर तो लगता है।

'नहीं, नवाब साहब ने कहा : आपका ख्याल है। वैसे मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आपको क़सम है आप अपने दिल से, मेरे बारे में जो आपको ग़लत ख्याल समा गया है, उसे एकदम बाहर कर दीजिये।

श्यामनाथ चुप हो गये। वे फिर कुछ सोचने लगे। नवाब साहब ने भी कुछ नहीं कहा। कुछ दूर चलने पर श्यामनाथ ने फिर कहना शुरू किया—मुझे लगता है मैं बहुत दिन से एक सपना देख रहा था। पैदा हुआ था, तब से ऐश और हुकूमत में पला। नौकरी की तो ऊँची ही की। जहाँ जाता था लोग सलाम करते थे। मैंने कभी अपने जीवन में किसी कमी को महसूस नहीं किया। दुनिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे लिये बहुत अच्छी थी। एक दिन प्रभा आया। उसने खबर दी, भैया ने दया को रियासत से निकाल दिया है ; क्योंकि वह कांग्रेसी हो गया था। उसके बाद वह नहीं आया। उसकी वह रामेश्वरी भी नहीं आई। भैया भी कुछ न कर सके। दौलत उन्हें नहीं रिझा सकी। क्यों ? मैं नहीं जानता। वह जेल गया। मैं वहाँ भी मनाने गया। पर व्यर्थ। वह नहीं माना। उसके बाद उमा मिला। वह बहुत सी नई-नई बातें कहता था। मैं उन्हें समझ नहीं पाया था। पर उसमें कुछ नयापन जरूर था। लोग जेल जाते थे, मरते थे, कटते थे, हम उनके दुश्मनों की मदद करते थे। पर झगड़ू मिश्र कभी अपने बेटे मार्कण्डेय से इस बात पर नाराज नहीं हुए कि वह जेल जाता था। क्यों ? क्योंकि शायद वे राजा न थे। गरीब आदमी थे। और वे भैया की जान बचाने में गुज़र गये। अपने ही लोगों की लाठियाँ खाकर चले गये। उन्हें क्या स्वार्थ था ? क्योंकि वे भैया को चाहते थे। क्योंकि वे अहिंसा मानते थे। नवाब साहब ! यह अहिंसा है क्या चीज़ ?

नवाब साहब ने गंभीरता से कहा : कुछ भी न हो। पर यह है कुछ ज़रूर। हम हथियारों की बात करते थे। लोग साथ नहीं आये। पर यह अहिंसा ! हिम्मत देखिये। लोग जानते हैं कि पिटेंगे। पर फिर भी आगे बढ़ते थे। यह क्या है ? मैं खुद नहीं समझता।

'क्या गांधी जादूगर है !' श्यामनाथ ने कहा : अंग्रेज़ भी उससे डरते हैं। क्या वजह है कि वह विलायत बुलाया गया है। बादशाह भी उससे हाथ मिलाता है। और वह है कि उसी खोर को पहने रहेगा। सल्तनत की सारी शान और हुकूमत, ताक़त, सब छोटी चीज़ें हो गईं। अपने मन की खायेगा। अंग्रेज़ों की भीड़ें उसे देख कर टूटती हैं। बड़े-बड़े राजा महाराजा जिन अंग्रेज़ों के सामने थर-थर काँपते थे वे ही अंग्रेज़ उसके निहत्थे टूटे-फूटे शरीर को देख कर भी महसूस करते हैं कि वह एक बहुत बड़ा सत्य है, जिसे झूठ और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

फौज से कुचला नहीं जा सकता। उसमें ऐसा है क्या ? गाँव वाले गँवार हैं, पर गांधी बाबा के लिये मर जायेंगे। वैसे लाठी चला कर खून करेंगे, लड़ेंगे, पर अगर गांधी अहिंसा कहता है तो वे भी हाथ नहीं उठायेंगे। किसने उनको यह समझा दिया है कि हाथ उठाने वाला बात का कमजोर है। अगर तुम्हारी बात सच है तो डरो नहीं। यह डरो नहीं 'किसने कहा ? बिना रेलों तारों के खबर उड़ती है। किताबों से लोग नहीं समझते। पर गांधी कहता है लोग समझ लेते हैं। नवाब साहब ! क्या दुनिया में ऐसा आदमी हो सकता है ? हार होती है, जीत होती है। पर हार-जीत में मानापमान न हो, ऐसी लड़ाई आज तक नहीं देखी। वह कहता है दुश्मन से नफ़रत न करो, उसके पाप से करो। अपने पाप से करो जो डर के मारे उसे बढ़ावा देता है। सच ! मैं नहीं समझता यह सब क्या है ?

दोनों चुप हो गये। नवाब साहब ने कहा : कितना चले आये होंगे।

'एक चौथाई।' श्यामनाथ ने कहा : 'आप धीरे चलते हैं। मैं जब डाकुओं को पकड़ने जाता था, काफ़ी भाग लेता था। अब वह उम्र नहीं रही।'

नवाब साहब ने कहा : 'लेकिन चलते-चलते काफ़ी देर हो गई। मैं तो समझा था कि बहुत दूर निकल आये होंगे, जहाँ से लौटना कठिन है।

'लौटना तो यहाँ से भी कठिन है।' श्यामनाथ ने कहा : इतना ही लौटते वक्त चलना पड़ेगा।'

नवाब साहब के मुँह से निकला : 'लाहौलबिलाकूबत ! बद् तमीज़ !'

'क्या हुआ ?' श्यामनाथ चौंके। 'मैं ? मुझसे फर्माया आपने ?'

'अजी सरकार' नवाब साहब झुक कर कुछ करने लगे, आपसे ऐसी बेअदबी ? ज़री काँटा लग गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ देर कोशिश की, पर वह नहीं निकला। तब श्यामनाथ ने कहा : आइये राह किनारे बैठ लें। वहीं निकालियेगा।

नवाब साहब ने चौंक कर कहा : 'वहाँ ज़मीन पर ? नीचे बैठियेगा ?'

'नहीं तो क्या अब वह क़ालीन बिछाया जायेगा ?' श्यामनाथ हँसे।

नवाब साहब लाचार हो गये। काँटा बहुत चुभ रहा था। उन्होंने कहा : और ये गाँव वाले नंगे पाँव चलने के इतने शौकीन होते हैं कि जूता होगा भी तो उसे अपने डंडे पर टाँग लेंगे। अपने पाँव नहीं, उन्हें यह डर होता है कि कहीं जूती न खराब हो जाये।

'काम करते करते आदत पड़ जाती है। छोटा मोटा काँटा तो उनके पैरों से दब कर टूट जाता है।' श्यामनाथ ने बैठते हुए कहा। नवाब साहब रूमाल बिछा कर बैठ गये।

'लेकिन' काँटे के स्थान पर हाथ फेरते हुए कहा : 'अँधेरे में निकलेगा कैसे ?'

'लाइये मैं निकाल दूँ।' श्यामनाथ ने आगे बढ़ कर कहा।

'कमाल कर दिया। छुटके राजा !' नवाब साहब ने कहा : आप इस नाचीज़ के पाँव छुएँगे ? अल्लाह मुझे गुनहगार न बना।'

'लाइये भी नवाब साहब।' श्यामनाथ ने झपट कर पाँव पकड़ लिया।

'लाहौलबिलाकूवत।' नवाब ने घबरा कर कहा : अरे मेरे अज़ीज़! तुझे क्या क्या देखना है अभी ? हाय ! नवाब साहब हैदर बहादुर कैरा, वालिद साहब मरहूम, खुदा उनको जन्नत बख्शे, आपने क्यों ये सदमें उठाये होंगे। आप तो महलात से नीचे न उतरे। मखमल पर चले। बाँदियों के हाथों ने आपके तलवों को सहलाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कभी बटेरों की जंग देखी, कभी हरमसरा से कनकौए उड़ाये। और एक हम हैं। नाख़लफ़ ! बदक़िस्मत। दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। ओ परवरदिगार ! क्यों नहीं यह ज़मीन फट जाती...

श्यामनाथ ने पाँव पर हाथ फेर कर दबा कर कहा : यहीं है !

'उफ़ !' नवाब चिल्ला उठे, 'धीरे छुटके राजा, धीरे कमबख़्त तीर बन गया है। तीर ! ज़रा धीरे दबाइये।'

श्यामनाथ ने कहा : लेकिन नवाब साहब ! याद कीजिये। आपके ख़ान्दान में कैसे कैसे बहादुर गुज़रे हैं। नवाब साहब सफ़दर बहादुर ने नवाब नजफ़शाह के ज़माने में जाटों को दबाया था। याद है ? उनके बेटे नवाब क़दिर बहादुर ने गंगा किनारे दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये थे। आप उन्हीं के ख़ान्दान में हैं। आप उसी रियासत के लिये चल रहे हैं।

अब उँगलियाँ उस काँटे की ठौर को दबा रही थीं। नवाब साहब ने चिढ़ कर कहा : तोर के दहाने पर बँधवा कर उड़वा दीजिये ऐसी रियासत को। ऐसी भी क्या हुकूमत जिसमें जान चली जाये, लेने के देने पड़ जायें !

श्यामनाथ ने और जोर से दबा कर कहा : राम तो पिता के कहने से जंगल-जंगल मारे-मारे फिरे।'

'हाय अल्ला' नवाब ने चिल्ला कर कहा : आप तो पुलिस वाले हैं। फोड़ों में नश्तर लगवाने से न डरें। मुआ मैं तो दूसरों का फोड़ा दबते देखता हूँ तो मिचली होने लगती है। छोड़ दीजिये। यह काँटा भी घुसा रहे। इस इलाज से तो बीमार ही ठीक हूँ।'

'अच्छा ठहरिये' श्यामनाथ उठे। ढूँढ़ कर एक बड़ा काँटा निकाल लाये, और बोले : इस काँटे से उसे निकाल दूँगा।

'और जो कहीं यह भी चुभा रह गया ?'

'अजी काँटे से काँटा निकालने की पुरानी रीत है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पर यह भी भीतर टूट गया तो ?'

'तो !' श्यामनाथ ने कहा : उजाले में तो मैं निकाल दूँगा।

'पर उजाला यहाँ है कहाँ ?'

'कुछ दूर पर मगरवारा गाँव है। वहाँ तक तो चलना ही पड़ेगा।'

'मैं तो एक क़दम भी नहीं चल सकता।'

'तो फिर भगवान् मालिक है।'

'लाहौलविलाकूवत !' नवाब ने चौंक कर कहा : अजब परेशानी है। यहाँ रात भर क्या कीजियेगा ?'

'सो रहेंगे।'

'कहाँ ?'

'यहीं खेत में।'

'खेत में !' नवाब साहब चौंके, 'खेत में भी आदमी सो सकता है, नामुमकिन।'

'तब तो मुझे आप से ज्यादा तजुर्बा है नवाब साहब,' श्यामनाथ ने आँखें चुंदी करके कहा। 'आप मेरे साथ चलिये। सुनिये सुनिये।'

'कोई गा रहा है।' नवाब साहब ने कहा। कोई दूर खेत में गा रहा था। शायद उसे नींद नहीं आई थी। नवाब साहब हँसे। कहा : अजीब गाना है। लखनऊ की गानेवालियाँ सुनें तो शरमा जायें। एक बार मैं ग्वालियर गया था। वाह ! वैसे गवैये कहाँ मिलेंगे ? आज भी जो गीत रजवाड़े जानते हैं वह अंग्रेज़ी राज क्या जाने ?'

परन्तु श्यामनाथ कुछ अलग निकले। उन्होंने कहा : उस गाने में तो लुत्फ़ ही नहीं आता। हम तो समझते ही नहीं। गीत वह जो दिल से निकले। यह क्या गाने की बजाय हिज्जे रटने लगे। गीत न हुआ लुगद की रटाई हो गई। 'खालिकबारीसिरजनहार,' 'खालिकबारीसिर जनहार' यह भी कोई गाना है। 'नवाब साहब, ज़रा ग़ौर से सुनिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह कह कर श्यामनाथ वहीं लेट गये।

'अरे आप तो लेट गये!' नवाब ने घबरा कर कहा।

'आप भी लेट जाइये।' श्यामनाथ ने धीरे से कहा।

'क्या फ़र्माया आपने? मैं भी लेट जाऊँ! यहाँ आदमी लेटते हैं!'

'क्यों अब वह गा रहा है, वहीं लेटा होगा! वह भी तो आदमी है!'

'वह आदमी है!' नवाब साहब ने खीझ कर कहा: 'हम और वह एक हैं!'

श्यामनाथ ने कुछ नहीं कहा। इसी समय सड़क पर गर्द उड़ाती एक बड़ी पुलिस की गाड़ी बहुत तेजी से निकल गई। नवाब ने कहा: इसे रोकिये इसे रोकिये···

पर इससे पहले कि उसे रोकते वह काफ़ी आगे निकल गई। अब नवाब साहब निराश हो गये।

श्यामनाथ ने कहा: आप न चलते हैं, न ठहरते हैं। कुछ भी हो। आप मेरे कन्धों पर बैठ जाइये। आप को मगरवारा तक तो चलना ही पड़ेगा।

नवाब मजबूर थे। कहा: तो आपके कंधे का सहारा लेकर चला चलूँगा। लगा अब वे रो देंगे। 'यह गुनाह तो मैं नहीं कर सकता छुटके राजा कि आपके कंधे पर चढ़ कर चलूँ। और कोई होता तो बात और थी।'

'तो फिर ऐसे ही सही।' श्यामनाथ उठ खड़े हुए। नवाब साहब उनका हाथ पकड़ कर उठे, तभी काँटा चुभा और अपना वह पैर उठा कर कराह उठे: इस रियासत से तो झोपड़ी ही देता, मेरे परवर्दिगार।

श्यामनाथ ने कहा: मेरा कंधा पकड़ लीजिये।

दोनों फिर चले।

—१०१—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६

कुत्ते भोंकने लगे। आज उनके गाँव में आधीरात के लगभग दो नये आदमी पहुँचे थे।

नवाब साहब ने कहा : छुटके राजा साहब ! ये कमबख्त सोते नहीं ! हमारे कुत्ते तो रात को ठाठ से गद्दों पर सोते हैं।

श्यामनाथ ने कहा : बस अब आ पहुँचे।

अँधेरे में एक रोशनी सी होती थी, फिर बुझ जाती थी। पास जाने पर देखा एक चारपाई पर एक बूढ़ा बैठा था और उसके पैताने एक और व्यक्ति था। एक तरफ़ काँटों की आड़ लगा दी गई थी। सब लिपी हुई ठौर थी। सिर पर एक पीपल का पेड़ था और झोंपड़े के भीतर कोई रो रहा था। जब बूढ़ा चिलम में कस कर दम खींचता था एक झल्ल सी उठती थी जो चिलम मुँह से हटाते ही बुझ जाती थी।

इनकी पगचाप सुन कर बूढ़े ने खाँस कर कहा : कौन है वहाँ ?

श्यामनाथ ने कहा : दो मुसाफ़िर हैं।

यह कहते हुए दोनों सामने जा खड़े हुए।

बूढ़े ने कहा : कौन लोग हो ?

'ब्राह्मण !'

बूढ़ा तुरंत उठ गया। उसके साथ ही वह व्यक्ति भी उठ कर नीचे बैठ गया। दोनों को देख कर वे समझ गये कि कोई बड़े आदमी हैं। नवाब साहब धड़ाम से खाट पर बैठ गये और बोले : अब ज़रा रोशनी तो मँगवाइये।

बूढ़ा अब बोला : बाबूजी ! कहाँ से आ रहे हैं ?

श्यामनाथ ने उत्तर दिया, 'भाई उन्नाव से चले थे। कानपुर जाना है। इनके पाँव में काँटा लग गया है। चला नहीं जाता।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

बूढ़ा हँसा। कहा : काहे की आदत होगी। सरकार कोई राजा हैं, कि अफ्सर ?

नवाब साहब ने शीघ्रता से कहा : अरे भाई डाक्टर हैं डाक्टर। उन्हें अपना असली परिचय इस अवस्था में देना ठीक नहीं लगा। यह उनके अभिमान के विरुद्ध था। कल यही गाँववाला सब जगह खबर फैला देगा।

गाँव वाला बैठ गया। उसने कहा : अरी तो बिटिया क्या रोती ही रहेगी। जरा दिया तो ला दे।

रोना कम हो गया। कुछ ही देर में एक लड़की—सत्तरह-अठारह बरस की—हाथ में एक टिमटिमाता दिया ले कर आ गई। दिये की लौ काँप रही थी। उसकी हिलती रोशनी में श्यामनाथ ने देखा वह रो कर आई थी।

दूसरे व्यक्ति ने दिया ले लिया। लड़की खड़ी रही। श्यामनाथ काँटा निकालने लगे। नवाब साहब की ऊह, आह, बढ़ गई पर काँटा नहीं निकला। तब बूढ़ा भीतर गया और एक सूआ निकाल लाया। श्यामनाथ ने नवाब साहब को पकड़ लिया। बूढ़े ने काँटा खींच निकाला। नाखून के बराबर भीतर टूट गया था। पर सूए से जो हाथ चारों तरफ मारे गये थे उसकी पीड़ा से नवाब साहब काँप रहे थे। कह उठे : पानी ! पानी !

लड़की एक गिलास में पानी ले आई। नवाब साहब ने श्यामनाथ की ओर देखा। श्यामनाथ ने कहा : हम भी पियेंगे। ताज़ा खिंचा हुआ है ?

'संझा का ही है बाबूजी,' बूढ़े ने कहा : क्यों रहीमा ?

'हाँ दादा,' रहीमा ने भी कहा।

'लाओ ! ओक से पिला दो।'

श्यामनाथ तो पी गये पर नवाब साहब ने दोनों हाथ लगा कर ओक बनाई और पी कर लेट गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बूढ़े ने कहा : बाबूजी ! अब कम्पू जायेंगे ?

'हाँ भाई' श्यामनाथ ने कहा : जाना तो ज़रूरी है।

कुछ देर सन्नाटा छाया रहा । बूढ़े ने चिलम बढ़ाई : बाबूजी ! पियोगे ?

'नहीं भाई।' श्यामनाथ ने कहा—'आदत नहीं है।'

बूढ़े ने नवाब साहब की ओर बढ़ा कर कहा : बाबूजी आप तो पियो।

'नहीं भाई, मैं भी नहीं पीता।'

लड़की दिया लेकर भीतर चली गई। भीतर जाकर उसने दिया बुझा दिया। कुछ देर बाद फिर रोने की हल्की आवाज आने लगी।

नवाब साहब चौंके। बोले : कोई औरत रो रही है ?

'जी हाँ' दूसरे व्यक्ति ने कहा : 'दादा की नातिनी है। रोज आधी रात के वक्त रो उठती है।'

'क्यों ?'

'यों हुजूर कि' उसने कहा—ब्याह के बाद गई ही थी कि गांधी महात्मा के आदमी उसके गाँव पहुँचे। इसका आदमी जवान था ही, सो वह गया। पुलिस की लाठियाँ खा कर मर गया। वहाँ कोई न था। यहाँ ले आये बाबा। पर आधीरात को रो उठती है। उसका जी क्या अब मान सकता है ?' उसके स्वर की निराशा छलक आई।

श्यामनाथ ने कहा : लड़के के कोई न था ?

'था क्यों नहीं हुजूर,' रहीमा ने कहा, 'एक था चाचा। बड़े प्यार से पाला था उसने। वह तो बाबू, सुनते ही पछाड़ खाकर मर गया। एक दिन भी नहीं जिया। उसकी मुहब्बत सच्ची थी।'

उसने गदगद होकर भावना से व्याकुल अवस्था में सिर हिलाया। श्यामनाथ सुन कर काँप उठे। उन्हें लगा वे हँस पड़ेंगे और सचमुच वे हँस पड़े। गाँव वाले चौंक उठे। उस समय उन्हें वह हँसी अत्यंत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भयानक लगी जो उस सूने गरीब झोंपड़े से टकराई और लिपी जमीन पर झूम कर काँटों में उलझती, पीपल के पत्तों को तारों की हल्की रोशनी में कुछ कुछ खड़खड़ाती, उनके हृदयों में उतर गई और तभी भीतर से हृदय हिला देने वाला करुण चीत्कार सुनाई दिया।

नवाब साहब ने झुककर रहीमा के कान में धीरे से कहा : बुरा न मानना। इनका भतीजा भी इसी कांग्रेस के आंदोलन में मारा गया है, तब से पागल हो गये हैं।'

रहीमा ने बूढ़े से कहा। दोनों ने एक अपनापन अनुभव किया। लड़की की दर्दनाक आवाज कानों में गूँज रही थी। श्यामनाथ पागल से उठे और झोंपड़ी में घुस गये। उन्होंने लड़की से कहा, बेटी!

लड़की जैसे चौंक उठी। उसने कहा : कौन? बाबा?

'हाँ, बाहर आओ।'

लड़की को साथ लेकर श्यामनाथ बाहर आगये। बूढ़ा कहने लगा : बाबूजी। इसकी बात जाने दें। आप लोग बड़े आदमी हैं। हम तो सदमे उठाने के लिये ही हैं, इसे भी उठा लेंगे। हमारा तो भगवान् है क्यों रहीमा!'

'हाँ दादा! एक वही है! और कौन है!' रहीमा ने कहा।

लड़की पथराई सी खड़ी रही। श्यामनाथ अपने विचारों में खो गये।

'चलियेगा नहीं?' नवाब साहब ने कहा। 'आप तो जम गये।'

'हैं?' श्यामनाथ जागे। उन्होंने सूखे मुँह से कहा, 'जिन्होंने इतने घरों को उजाड़ा है, वे भी उजड़ कर रहेंगे।'

'मालिक बात कही है!' बूढ़े ने कहा:, 'छाती ठंडी हो गई। हमारी बिटिया रात आधी नित ही रो उठती है। डाक्टर साहब! इसका कोई इलाज नहीं?'

'है,' श्यामनाथ ने हँस कर कहा, 'इसके सामने अगर वह रोये जिसने इसे रुलाया है, तब इसका भार हट जायेगा?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'सो कैसे होगा बाबू ?' रहीमा ने पूछा। वह निस्संदेह कुछ डर गया था। लड़की भीतर चली गई।

'गाँधी बाबा को मालूम है कि इतने आदमी मर गये हैं ?'

'उन्हें क्या खबर बाबू ? वे क्या कहने आये थे ? वे तो खुद मरने चले, तो जिसकी रगों में ईमान का खून था, वह भी चला। बाबू बड़ा रसीला जवान था।' बूढ़े ने कहा, बिटिया का क्या होगा ? मैं तो बस दो-चार दिन का और हूँ ? फिर ?' उसने आकाश की ओर देखा, वहाँ जहाँ निराशा की परतों की घनी चादर में से मृगतृष्णा जैसी आशा हँसा करती है। बूढ़ा कहता रहा, 'राजा साहब शौगढ़ने बेदखली करा दी। खाना भी छीन लिया।' फिर वह एकदम बोला : 'क्यों मालिक ? गांधी महात्मा विलायत बुलाये गये हैं ?'

'हाँ।' श्यामनाथ ने कहा।

'और वे खोर ओढ़ कर भी बादशाह से मिलेंगे ?' उसके स्वर में गर्व था। फिर वह कहने लगा, 'मालिक ! राजा साहब के लोग कहते हैं कि वे तो महात्मा हैं। हम कहते हैं महात्मा थे तो अंग्रेजों ने पहले क्यों नहीं मानी ? अब ये करोड़ों नौजवान मर गये तब वे बुलाये गये ? क्यों बाबू ? गरीब आदमी के खून में भी जोर होता है ?' फिर उसने एक गंभीर और अटूट विश्वास से पुकार कर कहा: बिटिया ! अब के जब गांधी महात्मा का काम फिर से चलेगा, तब मैं तुझे ले चलूगाँ। तेरे सुहाग को भूला नहीं हूँ। बूढ़ा हूँ तो क्या ? फिर लगान बंदी ही होगी। एक एक मर मिटेगा। एक एक की जान चली जायेगी। घर जल जायेंगे। गोलियों की बौछार होगी। पर पीछे नहीं हटेंगी भीड़ें ? हम तुझसे लाखों गरीब होंगे, जिन्हें खाना नहीं मिलता। हमारा देस है, अपना राज होगा। उसने रुक कर पूछा : 'क्यों बाबू ? अब गांधी महात्मा की लड़ाई कब होगी ? ये गोरे कब तक चले जायेंगे ? हमें खाना कब मिलेगा ? बिटिया रोना किस दिन बंद करेगी ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

श्यामनाथ ने कठोर स्वर में कहा : जेल में कैदियों को कब तक भयानक तकलीफें दी जायेंगी ? प्रभा कब तक जेल में मरेगा ? वीणा कब तक विश्वम्भरदयाल के गोली मारेगी ? और हठात मुड़ कर कहा : जब तक नौजवान लड़कियाँ अपने प्राणों से प्यारे नौजवान पतियों को देश के लिये इज्जत से मरना सिखायेंगी, हँस हँस कर नौजवान अपने को कुर्बान करते रहेंगे... उनकी आवाज रुँध गई। आँखों में पानी भर आया। उन्होंने रुक कर कहा : जब तक अन्यायी और अत्याचारी का नाश नहीं होगा।

बूढ़ा सरक आया। उसने कहा : बाबू ! यह पुलिस, फौज, जमीदार, यह सब भी तो देस के हैं। फिर क्यों देश के दुश्मन बन गये हैं ?

रहीमा ने कहा, अरे वे पिट्ठू हैं। गरीबों से छीन कर खाते हैं। जो दूसरों का पेट काट कर मौज उड़ायेगा, वह और क्या करेगा ? वे अपने नहीं हैं। अपना तो वह है जो संग जिये, संग मरे।

नवाब साहब उठ खड़े हुए। दो कदम चले और 'हाय' कह कर बैठ गये। भीतर लड़की का रोना बंद हो चुका था।

बूढ़े ने कहा : डाक्टर साहब ! कुछ इलाज नहीं बताया ?

श्यामनाथ ने एक दस रुपये का नोट बढ़ा कर कहा : कल कानपुर ले जाना।

बूढ़ा फटी आँखों से देखने लगा।

'हाँ, हाँ, ठीक है।' श्यामनाथ ने कहा, 'वह मेरी बेटी है। तुम रोक कर ठीक नहीं कर रहे हो।'

'रखिये मालिक,' बूढ़े ने गदगद स्वर से कहा, 'हम तो रोज भूखे मरते हैं। आपका हिया बड़ा कोमल है।'

पर श्यामनाथ नहीं माने। नोट दे दिया। उठ कर कहा : आइये ! फिर वही तरीका पकड़ें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बे हँसे। रहीमा ने काट कर कहा : सरकार इक्का दिला दूँ ?

'कहाँ होगा इस वक्त ?' नवाब साहब ने चमक कर पूछा।

'अभी लाया।' कह कर वह भाग चला। धुन्ना था। फ़ौरन उसने शरीफा को जा जगाया। शरीफा पहले तो बड़बड़ाया पर फिर ज्यादा किराया मिलने की सुनकर अपने मरियल घोड़े को जोतने लगा, कुछ ही देर में इक्का आगया। घोड़े के गले में बँधे घुँघरू घुँघुरघूँआ घुँघुरघूँआ ध्वनि करते बज रहे थे।

दोनों बैठ गये।

बूढ़े और रहीमा ने कहा : राम राम बाबू जी।

इक्का चल पड़ा।

नवाब साहब के होश तो दो-चार दचके खाकर ही ठिकाने लग चले। इस पर शरीफ़ा ने गाना शुरू किया : समिधन तेरी घोड़ी चने के खेत में।

'ओ हो होऽऽऽऽ' की ध्वनि कहीं-कहीं से गूँजती हुई आ रही थी। वह खेतों की रखवाली करने की आवाज़ थी। श्यामनाथ किसी गंभीर चिन्ता में थे। नवाब साहब ने पूछा : म्याँ ! तुम्हारा नाम क्या है ?

'हुजूर, गुलाम को शरीफ़ अहमद कहते हैं।' इक्के वाले ने कहा।

श्यामनाथ ने हठात् कहा : आपने सुना ? उसने कहा था कि ये अपने लोग अपने क्यों नहीं बनते ? सुना था आपने ? ये राजा लोग अँग्रेजों की मदद क्यों करते हैं ?

पर नवाब साहब के कुछ कहने के पहले इक्के वाला कह उठा : सरकार ! खता मुआफ़ हो। अगर वे अपने हो जायें तो फिर वे भी राजा और नवाब न रह कर शरीफ़ अहमद हो जायें।

श्यामनाथ चौंके। बोले, 'क्या मतलब ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'यही सरकार मेरा मतलब था' शरीफा ने इक्के के घोड़े से कुछ किटकिट करके कहा—और कहने लगा—'मेरी उम्र सरकार अब सत्तावन-अट्ठावन की होगी। बचपन से सुनता आरहा हूँ। अब तो नहीं कहता। लाचार अंधी, बहरी और अपाहिज हो गई हैं, पर मेरी वह दादी आज से १५ बीस साल तक पहले तो सब याद रखती थी। ग़दर में थी करीब सत्तरह-अठारह बरस की! उसे सब याद था। बेचारी नवाबी में पली थी। जब फिरंगियों ने गद्दारों की मदद से लखनऊ जीत लिया और झूँठन—आजकल के राजा और नवाबों—इन कुत्तों के बुज़र्गों को बाँट दी, तब वह बेचारी दर-दर की ठोकर खाने लगी। आख़िर एक ग़रीब ने सहारा दिया। सरकार दिल तो ग़रीब के होता है। वैसे हमें अब भी सालाना चवन्नी मिलती है। मेरे पास अचकन है सरकार! उसी दिन दरबार के लिये पहनता हूँ। फिरंगी से सूद तो लेता रहूँगा। कैसे भूल जाऊँ कि एक दिन वह मसाले का खरीदार था और हम मालिक थे। अपना मुल्क है अपना देश है।'

इतना कठोर सत्य, इतने करीब से गाली !!! पर अब कुछ कहते हैं तो राज़ खुल जाता है।

इक्के वाला कहता रहा : पर सरकार! आप यकीन नहीं करेंगे। मेरी दादी को जाने कैसे यह समझ में आ गया कि यह लड़ाई फिरंगी के खिलाफ़ थी। उस दिन वह बहुत खुश थी। बहुत खुश थी। उसने मुझसे कहा : वह अचकन पहन ले और इनके साथ जा जो फिरंगी से लड़ने जाते हैं। तू नवाब पीछे है, पहले इनका है। अगर तू लालच और फ़रेब में पड़ा हुआ है तो जैसा फिरंगी वैसा तू। जा और नव्वाब की रूह को कैदखाने से छुड़ा। पर सरकार! मेरी तो हिम्मत नहीं पड़ी। लड़ना तो बड़ा कठिन होता है। उसके लिये बड़ी हिम्मत चाहिये। पर कुछ ऐसे भी कमीने होते हैं जो अपने आप तो होते हैं कायर और जान देने के डर से, लड़ने वालों की खिल्ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उड़ा कर उनकी हिम्मत तोड़ना चाहते हैं। क्यों सरकार ? मैंने ठीक अर्ज किया ?

किसी ने उत्तर नहीं दिया। इक्के वाले ने फिर कहा : क्यों हुजूर। इस तरह आज़ादी मिल जायेगी ? मुझे यह यकीन नहीं होता। दादी कहती थीं कि बादशाह बहादुरशाह का आखिरी एलान था कि सौदागर फिरंगी का कभी भी भरोसा न करो। फिर ये पढ़े लिखे लोग इस गलती को क्यों दुहरा रहे हैं ?

'अमाँ, छोड़ो भी', नवाब साहब ने कहा—'इक्का भी अजीब सवारी है। दो-चार घंटे बैठ ले तो जोड़ ही ढीलें हो जायें !'

इक्के वाला हँसा। उसने व्यंग्य से कहा : हाँ मालिक ! गरीब की भी ज़रूरत पड़ ही जाती है। हमने तो सरकार नवाबी को अकड़ ही छोड़ दी। लखनऊ में हैं। पुराने लोग। रस्सी जल गई है, पर ऐंठ नहीं जाती।' वह हँसा। 'अब तो हमने देखा ग़रीबी ही गरीबी है। छोड़िये सरकार। आपको तकलीफ़ हुई। पर हमारे तो सामने रोटी का सवाल था। हम तो समझे थे कि मुल्क जीत जायेगा तो फिर हम लोगों को पेट भर खाने को मिला करेगा। पीढ़ियाँ हो गईं यों ही। सारा गाँव एक वक्त ही खाता है सरकार ! आपको शायद यकीन नहीं होगा। आप लोग तो शहरों के रहने वाले हैं।

नवाब साहब ने कहा : तुम्हारा घोड़ा बड़ा कमज़ोर है। ज़रा हाँके चलो।

'सरकार,' इक्के वाले ने फिर कहा, 'घास नहीं मिलती। वैसे औरों को आपने नहीं देखा ! यह तो फिर देहात ही ठहरा। सिपाही भी पकड़ लेता है। एक आफत है ! अभी कम्पू से आया था दीवान जी को बिठा कर। सात आने दिये बस। जरा नींद लगी ही थी कि रहीम ने जगाकर फिर जुतवा दिया। अब जरा थक गया है।' और फिर उसने घोड़े से किट-किट ध्वनि की और घोड़ा जोर लगाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर पूछा : 'कहाँ उतरेंगे सरकार ?'

'सिविल लाइन्स चलना ।'

'कहाँ सरकार ? वह शराब की अँगरेजी दूकान है उधर ?'

'हाँ हाँ उधर ही से, वह तिराहे की बड़ी दूकान है न ?'

'समझ गया सरकार, अब आप आराम से सो जाइये । मैं पहुँचा दूगा । किनके यहाँ जायेंगे ?'

'वहाँ दयानाथ जी रहते हैं ।'

'अरे सरकार ! उन्हें कौन नहीं जानता ? बानापुर के राजा के बेटे हैं । सारी रियासत छोड़कर कांग्रेस में भरती हो गये । सारा खान्दान परवाना है उनका । एक भाई ने तो पुलिस की दी तकलीफें न सहकर जान दे दी जेल ही में । अब तो उनके चचा साहब ने भी नौकरी छोड़ दी सुनते हैं ?'

'नहीं अभी नहीं, छोड़ी' श्यामनाथ ने कहा ।

'तो छोड़ देनी चाहिये सरकार । आखिर तो भतीजा था ।' उसने कहा : 'पर सुनते हैं राजा साहब सरकार के बहुत हिमायती हैं । उन्होंने लड़के को निकाल दिया ।' फिर कुछ चुप रहकर उसने कहा : पर सरकार, दयानाथ जी इधर कुछ दिन से किसी सभा में नहीं जाते । मुझे हुजूर दो ही शौक हैं । एक सभा में जाने का, दूसरा बटेर मारने का ।

'बटेर मारने का ?' नवाब साहब ने चौंककर पूछा ।

'जी हाँ सरकार !' उसने कहा—'न बटेर होतीं, न नवाब बटेर लड़ाते, न जान जाती । इसी से मैं बटेरों का दुश्मन हो गया हूँ ।'

श्यामनाथ हँस पड़े । कहा : पुरानी मसल है—कुम्हार जब ठाकुर से पिटता है तो गधे के कान मोड़ता है ।

गंगा का पुल पार हो रहा था ।

जब बँगले पर पहुँचे, श्यामनाथ ने कहा : क्या दे दें ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो मर्जी हो मालिक।

इक्केवाले के जाने पर करीब साढ़े तीन बजे दयानाथ का द्वार खटखटाया गया। सब सो रहे थे। पन्द्रह मिनट में द्वार खुला।

दयानाथ ने देखा कि चाचा जी और नवाब साहब कैरा खड़े हैं। आश्चर्य के मारे उसका मुख खुला का खुला रह गया।

चौथा परिच्छेद

१

दयानाथ जवानी के ढलाव की ओर पहुँचा हुआ आदमी था। पंडित रामनाथ का सबसे बड़ा पुत्र, फिर मशहूर वकील, तिस पर कांग्रेस में काम करने का यश, सबके कारण वह कानपुर में काफी विख्यात था। इधर कुछ दिन से उसने सबसे मिलना जुलना छोड़ दिया था। प्रातः उठता तो मुवक्किल घेर लेते, उनसे तरह-तरह से मगज़पच्ची करता। उसके बाद खाना खाकर जो कचहरी जाता तो लौटते तक शाम हो जाती। आता और चाय पीकर कुछ देर पत्नी राजेश्वरी से इधर-उधर की बातों में वक्त काट देता। तब तक बच्चे खेलकर लौट आते। फिर आठ साढ़े आठ बज जाते। खाना खाकर घूमने जाता तो लौटते वक्त तक बच्चे सो जाते। वह पढ़ता या फिर राजेश्वरी से बातचीत किया करता। इसके अतिरिक्त कोई विशेष जीवन नहीं था। सारा देश थका हुआ था। दयानाथ पर भी उसी का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता था। दिमाग़ को इस सबके बावजूद भी कोई चैन नहीं था।

बातें चल पड़तीं। पलंग पर लेटा हुआ दयानाथ इठात् 'चाँद' नामक पत्रिका को सीने पर रख लेता और कह उठता : 'राजे !'

पत्नी अपने नयन उठाकर देखती।

'यह कहानी पढ़ी।' वह कहता जाता—'कितनी करुण है। पति पत्नी को लेकर अलग हो गया। वह अपनी जान सब प्रकार से उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
प्रसन्न रखने का प्रयत्न करती थी। वह थी बहुत नेक थी। उसे बहुत चाहती थी। घर शांतिपूर्ण था, किंतु कहीं कुछ था जो दोनों को कचोटता था।'

राजेश्वरी विषण्णवदना देखती और उसके बड़े-बड़े नयन पति के मुख को एकटक देखने लगते। वह कुछ नहीं कहती। दोनों चुपचाप एक दूसरे को देखा करते। रात के नीरव अंधकार में जब दूर आकाश में तारे ही तारे दिखाई देते, और कुछ नहीं कमरे की रोशनी में उन्हें इसी प्रकार एक दूसरे की ओर देखते हुए कितने ही क्षण बीत जाते। राजेश और ब्रजेश उस समय गहरी नींद में होते।

अंत में राजेश्वरी की पलकें झुक जातीं। दया की दृष्टि भी इस समय तक शून्य सी देखतीं और ऐसी हो जातीं जैसे वे आँखें कुछ उस चीज को पकड़ लेना चाहती हैं जो सामने है ही नहीं।

दयानाथ का धीमा स्वर कहता : मैं जानता हूँ मैंने तुम्हें उतना सुख नहीं दिया जितना देना चाहिये था। तुम एक उच्चकुल की लड़की हो। तुम्हारे पिता ने जब तुम्हारा हाथ मुझे दिया था तब क्या उन्होंने यही सोचा था कि जा, ले जाकर मेरी लड़की को सब तरह की तकलीफें देना ?

राजेश्वरी धीरे से सिर हिलाती और कह उठती : उच्च कुल उच्चकुल के पास ही गया था सही, पर क्या हम तुम कुछ नहीं है ? मैं तुम्हें जानती हूँ। तुम वहाँ थे, मैं वहाँ थी। यहाँ हो, यहाँ हूँ। कहीं और जाना पड़ेगा, तो वहाँ भी साथ चलेंगे। कुछ से नहीं वकील साहब, मेरा विवाह आपसे हुआ था। समझे आप ?

वह हँस देती। उस समय वह उसे ऐसे बहलाने का प्रयत्न करती जैसे कभी-कभी राजेश और ब्रजेश को बहलाना पड़ता था। वह सोचती। क्या अजीब आदमी हैं। बेबात ही मन में घुना करते हैं। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खीझ कर कहती : क्या तकलीफ़ दी जा रही है मुझे। खाना बना लेती हूँ। बच्चों का और आपका काम देख लेती हूँ। बस और क्या है? स्त्री क्या इतने छोटे घर का भी काम नहीं कर सकती? आप कहेंगे दस नौकर नहीं हैं। दस न सही दो हैं। दस होते तो रोज कुछ चोरी करते। करते नहीं? क्यों? रहा यह कि गहनों का ढेर नहीं है। तो महाशय, मैं दकियानूस तो हूँ नहीं।

'हाँ भई, चाँद पढ़ती हो' दयानाथ मुस्करा कर व्यंग्य करता। उसकी आत्मा को यह सुन कर एक प्रगल्भ आनंद होता कि उसके कारण राजेश्वरी किसी दुख का अनुभव नहीं करती। वह सुखी है। दयानाथ ने उसके लिये काँटे नहीं बोये। वह अब भी उसे जीवन की समस्त सुविधाएँ देने में प्राणपण से लगा हुआ है।

पत्नी चाँद का नाम सुन कर आँखें चढ़ा कर कहती : जैसे इसके अलावा और कुछ मैं नहीं पढ़ती!

जीवन के इस क्षेत्र का आनंद अधिक व्यापक नहीं था। वह जो एक बेतहाशा दौड़ थी उसकी समस्त रेखाएँ धीरे-धीरे लौट आई थीं। संकुचित हो गई थीं। जो तमाम संसार का क्षेत्र था, वह अब भी था, पर अब दयानाथ को उसमें सिर खपाने की ज़रूरत नहीं रही है। वह है, पत्नी है, बच्चे हैं। बस यही एक छोटा सा परिवार है। न यहाँ पिता आते हैं, न चाचा, न भाई, न देवरानी, कोई नहीं। उन सबने उसे छोड़ दिया है। बस घरमें जो एक दो नौकर हैं, परिवार के बाहर इन्हीं से संबन्ध है। बाकी मुवक्किल हैं। उनसे कोई अपनाव विशेष नहीं है। पैसा पैसे को खींचता है। इससे अधिक कुछ नहीं।

सब झंझट ही थे जो उसे इतनी हलचल में डाले हुए थे। आवश्यकता से अधिक होने वाले उन संबंधों ने उसके हृदय में एक उद्वेग पैदा कर दिया था। अब वह सब नहीं रहे। वह ऐसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहता है जैसे देश में बहुत ज्यादा लोग रहते हैं। राजनीति है, तो उस पर बहस कर ली। उसका जो प्रभाव सब पर पड़ा वह हम पर भी पड़ गया। इसके अतिरिक्त स्वयं और कुटुम्ब ! बाकी सब मृगतृष्णा है।

दयानाथ एक दिन देश के लिये जान देने वाला प्राणी, आज देश के स्वतन्त्रता संग्राम को अपने दायरे से बाहर कर चुका था। राजेश्वरी तब प्रसन्न थी कि पति संग्राम में भाग लेते थे, आज सुखी थी कि वे नहीं लेते। पति करे वही ठीक है। सब देश का भला करते थे, वह भी अच्छा ही था। राजेश्वरी ने कभी कुछ कहा ? और आज दयानाथ के हृदय ने उचाट खाई थी। राजेश्वरी को अब पहले से भी अधिक समय मिल जाता था। वह अपने पति के अधिक निकट रहती थी, ज्यादा समय उसके संग बिता पाती थी। उसके नारीत्व की तुष्टि दोनों ओर थी। हृदय प्रसार में भी सुखी था, संकोच में भी, क्योंकि उसका दायरा घर था, और जो कुछ था पति था। इसी पति को उसने अपने ससुर के घर चल कर लौट कर क्षमा माँग लेने को कहा था। परन्तु दयानाथ नहीं माना। जब उसने घर छोड़ा तो यह भी छोड़ आई। फिर न उसने ससुर की कोई बात मानी, न चचिया ससुर की। और कौन था जो पाँव में बेड़ी बनता ? कोई नहीं। अब वह जहाँ थी, वहाँ वह पूर्ण स्वामिनी थी। घर की मालकिन थी। यहाँ उसके अधिकारों में दखल देने वाला कोई न था। यहाँ मर्य्यादा की वह जटिल रूढ़ि भी नहीं थी। सब कुछ पहले से कितना अधिक सरल हो गया था।

किंतु दयानाथ को कुछ सूना-सूना सा लगता था। कभी-कभी उसे लगता जैसे वृद्ध पिता अकेले घूम रहे हैं। उनकी मुट्ठियाँ बँधी हुई हैं, किंतु मुख पर कठोरता अभी तक जाग्रत है। वे कभी झुकने को तैयार नहीं होंगे। किंतु क्या उसके हृदय में सचमुच कोई स्नेह शेष नहीं है ! क्या वे अपनी मर्य्यादा के दंभ में इतने रूढ़ हो चुके हैं ! क्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं वे सत्य को देख पाते ? क्या वे इस गलित समाज, इस पाशविकता को देख कर भी समझ नहीं पाते ? और फिर वह वृद्धकाया आँखों में घूमती।

दया के हृदय में पिता की याद घुमड़ती । सब कुछ था, पर वे फिर भी पिता थे । पुराने विचारों के आदमी हैं । अब क्या वे बदलेंगे ? उन्हें वैसे ही चलने दिया जाये तो कोई हर्ज है ? लेकिन वे कहीं भी समझौता नहीं करना चाहते । वे चाहते हैं कि वे सबके ऊपर रहें, सबको दबा कर रखें ।

दयानाथ को यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं आता । वह इसे असह्य समझता । किंतु फिर सोचता । वे वैसा करने के अधिकारी हैं । वे तो सचमुच नहीं झुके । दयानाथ ही कांग्रेस का चुनाव हार कर उनके समीप गया । किसलिये ? उसी जायदाद के लिये जिसे वह पाशविकता की जड़ कह कर एक दिन ठुकरा कर चला आया था । क्यों उसमें हराम का खाने की ममता बची रह गई । एक चुनाव की हार और सिद्धांत बह गये ? इसका अर्थ हुआ कि वे सब सिद्धांत झूठी, हृदय को बहलाने वाली, बातें थी, जैसे बालू की भीत । एक हल्की सी ठोकर ने सबको नीचे गिरा दिया ।

क्या दयानाथ सेवा के लिये आया था ? नहीं, वह यश की भूख थी । वह नहीं मिला, तो दयानाथ उसी कीचड़ में गिरने को लौट गया । पिता ने घुसने नहीं दिया । क्यों ? इसलिये नहीं कि उन्हें दयानाथ के सिद्धांत से प्रेम था; बल्कि इसलिये कि जो एक दिन उनसे अकड़ गया था, चला आया था, जब लौट कर गया तब उसने सिद्ध कर दिया कि वह एक कच्चा आदमी था । वह उस जायदाद को सँभालने की योग्यता नहीं रखता था ।

क्यों ? प्रश्न होता क्यों ?

क्योंकि उसे सँभालने के लिये एक कठोर हृदय की आवश्यकता थी । वहाँ एक जड़ हृदय की आवश्यकता थी । वही आदमी वहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
रह सकता था जो अपने अधिकार सचमुच न्याय्य समझे, अन्यथा वह गाड़ी ज्यादा दूर चलने वाली नहीं होती।

उस समय उसे ब्रह्मदत्त की याद आती। घृणा से मुँह के कोने मुड़ जाते। क्या था वह ? कम्युनिस्ट !! ढोंगी ! भूखा। चोर ! बदमाश ! हरदत्त तगादगीर का पुत्र ! कितनी ईर्ष्या थी उसमें ! कितना विद्वेष था। ऐसा कि दूसरों को खाते देखे तो उसके मुँह से कौर निकाल ले जाये।

ब्रह्मदत्त को यह गालियाँ दे चुकने पर भी उसकी आत्मा को पूर्ण परितृप्ति नहीं होती। ब्रह्मदत्त जीत गया था। वह विजयी था। उसने जिधर चाहा, उधर ही चुनाव मुड़वा दिया। दयानाथ जानता था कि उसकी घृणा को कोई निष्पक्ष नहीं कह सकता क्योंकि मन में बहुत कड़ुआपन था।

मन अकेले बैठने पर घुमड़ता। पहले भाई, परिवार सब पास थे, अब वे सब अलग हो गये थे। पहले उनका ध्यान भी नहीं आता था, अब उनकी याद आती थी। पहले वे सब पास रह कर भी दूर दूर से थे, अब वे दूर रह कर भी पास आ गये थे। यह एक अद्भुत सी अनुभूति थी।

जीवन एक परंपरा थी, जिसके पर कतर दिये गये थे। अब मन उड़ता था, पर दूर नहीं। उड़ता था, गिर जाता था। बच्चे ही परिवार का आनन्द थे। राजेश्वरी दयानाथ के लिये एक शक्ति भरे थी। दयानाथ उस आत्मसमर्पण से अपना एक बहुत बड़ा रिक्त रहते थे। राजेश्वरी के मुख पर अब ढलती आयु रेखाएँ छोड़ने लगी थी; पर जो देह बहुत आराम से पल चुकी थी, वह क्या सहज अपनी रूपराशि को छोड़ देती। इतना काम और खाना, दोनों ही पहले भी थे, अब भी हैं। क्या फ़र्क पड़ गया।

कभी जब दयानाथ सो जाता तब राजेश्वरी उसके पाँव दाबते दाबते खाट के पैताने ही सिर रखे सो जाती। इसमें उसे एक सुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलता। दयानाथ इस भारतीय आदर्श को यद्यपि अच्छा नहीं मानता था, फिर भी वह समझता था कि इसका विरोध करने से राजेश्वरी बुरा मानेगी, क्योंकि इसे ही वह अपने लिये सर्वश्रेष्ठ समझती है। इसे ही वह अपना अधिकार और आनन्द समझती है।

और गाड़ी इसी प्रकार चलती रहती।

२

इस समय चाचा श्यामनाथ को देखकर वह चौंक उठा। धूल से लिसरे हुए। एक हाफ़पैंट और कमीज पहिने श्यामनाथ मुस्करा रहे थे। उनके सिर के सफ़ेद काले बाल उनकी वृद्धावस्था के परिचायक होकर आज पहिली बार दयानाथ की आँखों में चुभे। यह व्यक्ति जो इतना स्फूर्ति भरा था, आज कितना कमज़ोर दिखाई देता था।

श्यामनाथ ने कहा : 'दया ! तुमने पहँचाना नहीं ?'

दयानाथ को होश सा हो आया। उसने लपककर उनके पाँव छुए। श्यामनाथ ने मुस्करा कर हाथ उठाकर कहा—आपको पहँचाना ?

अब दयानाथ ने देखा और उसके मुँह से निकला : अक्खा आप हैं ?

तब तक नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ने उसे खींचकर सीने से लगा लिया और कहा : अच्छे तो हो बख़ुरदार ?

दयानाथ ने कहा : आपकी दुआ है। तशरीफ़ रखिये नवाब साहब। जैसे चाचा जी, वैसे आप।

'हाँ, भाई, हमें भी यही यकीन था' कहकर नवाब साहब सोफ़ा पर बैठ गये। श्यामनाथ खड़े ही थे। नबाब ने कहा : बैठिये भी छुटके राजा। अब तो आही पहुँचे।

'जी हाँ,' श्यामनाथ ने सिर हिलाकर कहा : अब तो आही पहुँचे।' और वे बैठ गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

राजेश्वरी आकर द्वार के पीछे ही खड़ी हो गई थी। नवाब साहब को देखकर रुक गई थी। उसे भी अत्यंत कौतूहल हुआ था कि इस असमय कौन आगया। कोई होगा खास आदमी ही, और किसी खास काम से ही आया होगा, वर्ना क्या कोई रात को इस तरह आकर बेतकल्लुफ़ी से द्वार खटखटा देता ? पर दया और राजेश्वरी के हृदय में इस समय एक भय समा गया था। उनके हृदय में भयानक आशंका भर गई थी। क्या पिता जी ? क्या वे बहुत बीमार हैं ? आखिर इस तरह इस वक्त आने का कारण ? दयानाथ को लगा उसका दिल बहुत ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

'बैठ जाओ दया बैठ जाओ' श्यामनाथ ने कहा।

'हाँ, हाँ, भाई' नवाब साहब ने कहा : हमसे क्या तकल्लुफ़ ?

दयानाथ पूछना चाहता था कि वह खास बात क्या थी जो उन्हें इस समय यहाँ खींच कर लाई थी। पर पूछे तो कैसे ? अगर वे खुद कह दें तो बात दूसरी थी। इस तरह उनके बुरा मानने का खतरा था।

लेकिन नवाब साहब बहुत थक गये थे। उन्होंने एक जँभाई लेकर कहा : लुटके राजा ! अब काम की बातें तो सुबह होंगी। आपका क्या खयाल है ?'

'मैंने कहा था न ?' श्यामनाथ ने कहा : 'आप थक जायेंगे।' देखिये अब आप सचमुच थक गये। वे हँसकर खड़े हो गये।

दयानाथ भी उठ खड़ा हुआ। उसका आश्चर्य अभी तक कम नहीं हुआ था। उसने कहा : 'तो आप लोग आराम ही कीजिये।'

'हाँ, हाँ; और क्या ?' कहकर नवाब साहब ने सोफ़ा पर ही पाँव फैला दिये और आँखें मींच लीं।

दयानाथ ने उन्हें जगाना चाहा पर श्यामनाथ ने रोककर कहा : सोने दो इन्हें यहीं। ज़रा स्प्रिङ्ग पर चैन मिलेगा और मैं, मैं...ठीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है।' कहकर तख्त पर जा लेटे और बिना दया की ओर देखे बोले : दया ज़रा बत्ती तो बुझा देना।

दया कुछ देर देखता रहा। फिर उसने चुपचाप बत्ती बुझा दी। और भीतर चला गया। द्वार के पीछे खड़ी राजेश्वरी सामने आ गई। उसने धीरे से पूछा : चाचा जी हैं ?

'हाँ ?'

'इस वक्त कैसे ?' उसके स्वर की आशंका दयानाथ से छिप नहीं सकी।

'नहीं वह बात नहीं है।' दयानाथ ने स्वयं ही कहा। राजेश्वरी समझ गई। दोनों ने प्रकट नहीं किया कि वह बात थी क्या ? पिता की मृत्यु ही एक भय था।

'तो फिर ?' राजेश्वरी ने पूछा।

'कुछ नहीं बताया।' दयानाथ ने अपने पलंग पर बैठकर उत्तर दिया। राजेश्वरी अपने पलंग पर बैठ गई। उसने पूछा : दूसरे कौन हैं ?'

'अज़ीज़ बहादुर नवाब साहब कैरा।'

'इस हालत में ?'

'कुछ समझ में नहीं आता।'

'अब क्या सो गये हैं ?'

'हाँ।'

'इस वक्त ? अब तो भोर हो चली।'

'रात भर के जागे थे। बहुत थके हुए।'

राजेश्वरी चुपचाप पति के मुख की ओर देखने लगी। दयानाथ अपने विचारों में डूब गया था। जब कभी परिवार में गंभीर समस्या आखड़ी होती है, तब स्त्री अधिकांश में अपने पति के मुख की ओर देखने लगती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ देर बाद एकाएक दयानाथ ने सिर उठा कर कहा: ओ हो! एक बात तो हम भूल ही गये थे।

'वह क्या ?'

'चाचा जी को तो सुनते हैं, कुछ हो गया है। दिमाग़ पर कुछ असर...जब से प्रभा.....' वह बात नहीं कर सका।

राजेश्वरी की आँखों में पानी छलक आया। उसने साड़ी के किनारे से आँखों को पोंछ लिया। वह कितना सरल बालक सा देवर था।

कमरे में बच्चे सो रहे थे। घड़ी की टिक टिक सुनाई दे रही थी। जाते हुए समय की हृदय पर आघात करने वाली चुभीली पगध्वनि, जो इस नीरवता में ऐसे चली जा रही थी जैसे कोई दुमड़ै बढ़ती चली जाती है, कभी दायें लपेटा खाती, कभी बायें लपेटा खाती।

दोनों लेट कर आँख बन्द किये चुपचाप अपने अपने पलंग पर पड़े रहे। अभी उजाला फैलने में कुछ देर थी। लेकिन सो कोई भी नहीं पाया। नींद अब लौट कर नहीं आ सकी। दुश्चिंताओं ने घेर लिया था। बगल के कमरे से नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा की नाक बजती हुई सुनाई दे रही थी। गहरे खर्राटे, यानी गहरी नींद, अर्थात् गहरी थकान.....

दयानाथ अपनी दुश्चिंताओं में पड़ा था। क्या फिर से जीवन का एक नया अध्याय खुलना चाहता है ? क्या ददुआ ने इन्हें मुझे वापिस लेने भेजा है ? खत्म हो गई सारी अकड़ ? दयानाथ जायेगा ? कभी नहीं। जब आफ़त पड़ी है तब मुझे बुलवाया है।

और दयानाथ को अपने पिता की वह कठोर सूरत याद आने लगी जो घर से दूसरी बार निकाले जाते वक्त उसने देखी थी। वह उसे देख सकपका गया था। आज उसको बदला लेने का सुयोग मिला है। दयानाथ नितांत मूर्ख समझ लिया गया है। जब चाहे निकाल दिया, जब चाहे बुला लिया। लेकिन यदि पिता सचमुच बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीमार हैं तो भी वह नहीं जाएगा ? क्या ऐसा करना ठीक है ? फिर घर की देखभाल कौन कर सकेगा ?

राजेश्वरी कहेगी। चलो। घर लौट चलें। जिनसे तुम्हारा द्वेष था, वे तो चले गये। अब क्या किसी का भी मुँह नहीं देखना चाहते। यह तो बड़ी ज्यादती है। आखिर औरतें हैं, छोटे बच्चे हैं। इस समय उमानाथ होता तो सब काम चल जाता। मगर वह बेवकूफ़ जाने कहाँ जा छिपा है। उस पर तो कम्युनिस्ट होने का भूत सवार था। वह भला कहाँ मिलेगा ?

दयानाथ ने करवट बदली। बाहर भोर का कोई प्रेमी पंछी चहक उठा। दयानाथ फिर सोचने लगा : चाचा श्यामनाथ की हालत कितनी खराब हो गई है। क्या यही वह व्यक्ति है जिसके दृढ़ शरीर को देखकर लोग डर जाते थे।

आज वे भी पागल हैं। पिता वृद्ध हैं। उनका अभिमान टूट गया है। प्रभा मर चुका है, उमा गायब है, दयानाथ अलग हो गया है। यही होता है घर ? घर का सबसे बड़ा लड़का होने के नाते उसकी यही ज़िम्मेदारी थी ?

दयानाथ का मन उदास हो गया। उसे चारों ओर दुख ही दुख प्रतीत होने लगा। इतनी करुणा, इतनी विवशता, कहीं भी अंत नहीं लगता। कौन झुके ? कौन अपना अभिमान छोड़े।

पर अब तो चाचा आये हैं। फिर क्या बात है। अगर वे कहेंगे तो वह घर लौट जायेगा, ज़रूर लौट जायेगा.....

दयानाथ उठ बैठा।

३

दस बज चले। दयानाथ ने कहा: तो आखिर रात में ही चल पड़ने की ऐसी क्या परेशानी थी ?

चाचा श्यामनाथ सारा किस्सा सुना चुके थे। बीच-बीच में जो चीज़ साफ़ नहीं थी उसे नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा समझा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
देते थे। नौ बजे से पहले ही ये सब लोग ड्राइंग रूम में इकट्ठे हो गये थे। रविवार का दिन था। दोनों बच्चे बाहर बरामदे में खेल रहे थे। राजेश्वरी ने चाय भेज दी थी। अभी-अभी चाय समाप्त हो गई थी। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा इस समय तक एक पैकेट सिगरेट का पूरा खत्म करके दूसरा पैकेट खोल कर पहली सिगरेट से नई सिगरेट जला रहे थे। उनका दिल जल रहा था। धूँआ छोड़ते थे तो लगता था यह इनके भीतर से ही निकल रहा है। तमाम कमरे में धूँआ झूल रहा था। अजीब कहानी थी। अख़बार में अज़ीज़ बहादुर के बारे में पढ़ा दयानाथ ने भी था, किंतु सिवाय इसके कि हँस के उसने राजेश्वरी को सारा किस्सा सुना दिया था और साथ ही यह भी कहा था कि ददुआ का भी नाम जलसा हाज़रीन में निकला है, उसने उस पर और कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था। लेकिन अब वही मज़ाक इतना भयानक हो उठेगा यह उसने जो कभी सोचा भी नहीं था, उस कारण वह एक पशोपेश में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। अतः उसने हठात् पूछा कि फिर इतनी शीघ्रता क्या थी?

नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा उसके इस प्रश्न से अत्यंत क्लेश की अवस्था को प्राप्त हुए' किंतु उससे भी अधिक क्लेशमय भविष्य को देखते हुए उन्होंने कहाः बेटा! और कुछ समझ में ही नहीं आया। अब तुम ही बताओ क्या करना चाहिये?

श्यामनाथ गंभीर बैठे थे। उन्होंने ऊपर की ओर देखते हुए कहाः इस सवाल के कई हल हैं। पहला तो यह कि अँगरेज़ के पैर पर अपनी टोपी रख दी जाये।

नवाब साहब क्रुद्ध नहीं हुए। उन्होंने कहाः वह तो खुद राजा साहब बात कर आये हैं। वह बेकार है।

'तो बेकार है तो दूसरी तरकीब भी है। उस अँगरेज़ का क़त्ल कर दीजिये।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब साहब ने तैश में आकर कहाः छुटके राजा आप पागल हो गये हैं।

'अजी पागल तो आप हैं। यों कहिये आपमें हिम्मत नहीं है।' श्यामनाथ ने सीधे बैठ कर कहा।

'देखा आपने!' नवाब साहब ने आजिज़ी से दयानाथ की ओर देख कर कहाः देखा? क्या हालत हो गई है? कल रात मैं साथ न होता तो ये यहाँ तक पहुँचते!'

श्यामनाथ हँसे। बोलेः दया! नवाब साहब की बातों का बुरा न मानना, इनका दिमाग़ आजकल परेशानियों की वजह से कुछ...

नवाब साहब ने चौंक कर कहाः बस-बस छुटके राजा। आप मुझे पागल न कहियेगा...

श्यामनाथ ठठा कर हँसे। दयानाथ विस्मय से दोनों को देखता रहा। एक उजड़ी हुई दुनिया। एक बियावान का सा खामोश वीराना। क्या यही लोग इस समाज के कर्त्ताधर्ता हैं। क्या ये लोग अपने को स्वतंत्र कहते हैं। क्या इन लोगों को गुलाम नहीं कहा जायेगा? यह तो अपनी मजबूरियों की खातिर बुरे से बुरा काम भी कर सकते हैं। एक भयानक हत्या करके भी यह इंसान अपने को बेकुसूर और अच्छा साबित करने की कोशिश कर रहा है। क्या इसे फाँसी नहीं मिलनी चाहिये? किसलिये चाहिये इसे जायदाद। इसलिये कि हराम की रोटी इसके मुँह लग गई है।

दयानाथ आवेश में सिहर उठा। उसने कहाः ठीक है मैं समझ गया।

'क्या समझ गये?'

प्रश्न नवाब साहब और श्यामनाथ दोनों ने ही एक स्वर से किया।

'निकल आई?' नवाब साहब ने उछल कर पूछा।

'कौन निकल आई!'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कौन नहीं, क्या पूछिये, क्या निकल आई । मैंने कहा कोई तरकीब निकल आई ?'

दयानाथ ने सिर हिला कर कहा: कोई नहीं ।

'कोई नहीं !' नवाब साहब ने हताश होकर कहा ।

'अभी तुमने कोशिश भी नहीं की ?' श्यामनाथ ने कहा—'और एलान कर दिया । यार यह भी कोई बात हुई । नवाब साहब । यह हैं कांग्रेस के नेता । अँगरेजों की जगह अगर इनके हाथ में ताक़त आ गई तो यह क्या कुछ कम जुल्म ढायेंगे ?

दयानाथ सोच में पड़ गया था । नवाब साहब उसकी ओर ग़ौर से देख रहे थे । उन्होंने उससे आँखें मिलते ही सिर हिला कर इशारा किया जैसे हाँ हाँ, बोलो, बोलो···किन्तु दयानाथ की आकृति पर कोई भाव नहीं बदला, उसकी दृष्टि शून्य में जाकर अटक गई । लेकिन वह जानता था दोनों पागल हैं अतः इनको कुछ काम करके तो दिखाना ; पड़ेगा ही अतः उसने कहा: 'तो फिर कोशिश करके देख ली जाये ।'

'वाह वाह' श्यामनाथ ने कहा: 'कांग्रेस में ले जाओ यह केस । वहीं लड़े इसे तो ठीक रहेगा ।'

'कांग्रेस !' दयानाथ ने कहा: मैंने तो छोड़ दी ।'

'छोड़ दी !' नवाब साहब ने कहा: लाहौलबिलाकूवत । इस मौके पर वह भी नहीं । हई अल्लाह ! भई वह तो तुम्हें फिर से ज्वॉइन करनी पड़ेगी ।

'लेकिन...' पर दयानाथ को उन्होंने बोलने नहीं दिया । कहते गये: 'छुटके राजा ! कांग्रेस कोई सरकारी नौकरी है । म्याँ जब जी चाहा शामिल हो गये । जब जी चाहा तब छोड़ दी । कांग्रेस तो हम भी चाहते हैं, पर भाई, वह हमसे, जेल नहीं जाया जा सकता । छुटके राजा, इसमें हमारी बेइज्जती है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानाथ किसी तरह पीछा छुड़ाना चाहता था। उठ खड़ा हुआ, उसने कहाः तो फिर आप लोग अब नहा धोकर खाना वाना खाइये फिर चलेंगे...

नवाब साहब ने अचकचा कर कहाः उसके बाद जरा एक झपकी...

'ले लीजिये, ले लीजिये।' दयानाथ ने हँस कर कहा। 'फिर तो...

'यहीं न बुलवालो दया!' श्यामनाथ ने कहाः एक पार्टी दे दो। क्यों नवाब साहब!'

'जी हाँ दुरूस्त है।' नवाब साहब ने हाँ में हाँ मिलाई।

'मेरी राय में, दयानाथ ने कहाः वहीं चलना ठीक हैं। क्यों नवाब साहब!'

'जी हाँ, यह भी दुरुस्त है।' उन्होंने सिर हिला कर कहा।

श्यामनाथ चौंके। बोलेः यह कैसे हो सकता है! या तो वह गलत है, या मैं गलत हूँ। दोनों सही कैसे हो सकते हैं?

दयानाथ ने चलते हुए कहाः चाचा जी का कहा ही होगा।

उसके कमरे से निकलने पर चाचा जी ने नवाब साहब से कहाः मैंने कहा था न कि हीरा आदमी है।

नवाब साहब गदगद से देख रहे थे। उन्होंने कुछ रुककर पूछाः तो अब क्या होगा।

आप चुपचाप बैठे रहिये। मैं सब काम सँभाल लूँगा।

नवाब साहब नई सिगरेट सुलगाने लगे।

भीतर जाते ही राजेश्वरी ने कहाः 'अब क्या करोगे?

'क्या करूँ? मैं इसमें क्या कर सकता हूँ।'

'हाँ जब ददुआ के किये ही कुछ नहीं हुआ तो तुम कर भी क्या सकते हो!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानाथ को यह बात अच्छी नहीं लगी। इस बात से स्पष्ट प्रकट था कि राजेश्वरी के भीतर उन्हीं अधिकारों के प्रति एक भीतर तक बसा हुआ मोह था, जो छिना हुआ ही था, मिटा नहीं था। उसकी तुलना में दयानाथ हल्का था, फीका था, बहुत छोटा था। उसने राजेश्वरी की ओर देखा। वह उसी की ओर घूर रही थी। उसने फिर कहा: रात को मैं क्या सोच रही थी?

'रात को?' दयानाथ ने कहा और वह स्वयं लज्जित हो गया। दोनों ने एक दूसरे की कमज़ोरी पहचान ली। दयानाथ के सारे सपने चूर्ण हो गये। क्या सोच रहा था वह और यह एक कैसी ऊटपटाँग बात थी जिसको उसने नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा से सुना था। उसकी सारी दुनिया जो रात के अंतिम पहर में एकदम उठ खड़ी हुई थी, वह फिर लड़खड़ा कर बैठ गई, क्योंकि पाँव रखने तक को नीचे कहीं धरती नहीं थी।

उसने कहा, 'ददुआ का दाब अँग्रेज नहीं मान सकते।'

'तुम्हारा मान लेंगे?'

'मानेंगे तो नहीं। पर ध्यान ज्यादा देंगे।'

यह एक मन बहलाव की सी बात लगी। राजेश्वरी ने स्नेह से पति की ओर देखा और सिर झुका लिया। कहा: तो आज कांग्रेस वालों को इसलिये इकट्ठा करोगे?

यही तो मैं भी सोच रहा हूँ। कैसे जाऊँ। एकदम इतने दिन बाद, और वह भी इस काम के लिये? कौन लेगा इसमें दिलचस्पी! सारे अख़बार और खुद कांग्रेस के अख़बार भी इसकी खूब बुराई कर चुके हैं। सोचता हूँ न जाऊँ। पर जाना तो पड़ेगा ही। एक बार सबको यहाँ ला ना होगा और जब तक वे बहस करके ना नहीं कर देंगे, ये दोनों पागल मेरी गर्दन नहीं छोड़ने के।

राजेश्वरी ने टेक कर कहा: 'आपके चाचाजी हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हाँ आँ' दयानाथ ने कहा, 'पर इसमें मैं क्या कर सकता हूँ ? जो हो, तुम राजेश, ब्रजेश को बुलाकर सब इंतजाम कर लेना और नौकरों से कह कर उनको स्नान भोजन करवा देना। ज़रा सहूलियत से।'

'जानती हूँ।' राजेश्वरी ने हँस कर कहा, 'यह आप मुझे क्या बता रहे हैं ? असर आ गया क्या ?'

दयानाथ भी हँस पड़ा। मन हल्का हो गया, किंतु आशंका नहीं गई। जिन लोगों से वह मिलने जा रहा था, वे क्या सोचेंगे ? एक एक करके उनकी शक्लें उसे याद आईं। याद आया वह दिन जब वह नमक सत्याग्रह में डिक्टेटर था। उसके पीछे कानपुर की असंख्य जनता टूट पड़ती थी। उस दिन और इस दिन में कितना अंतर आ गया था। ऐसा क्यों हुआ ?

यह विचार आते ही वह मन ही मन फूत्कार उठा।

उसने गंभीरता से कहा, 'अच्छा मैं चलता हूँ। मुझे लौटने में देर भी हो सकती है।'

राजेश्वरी उसके इस आकस्मिक भाव परिवर्तन को नहीं समझ सकी। पर उसने कुछ कहा नहीं। दयानाथ कमरे से निकलकर जब नवाब साहब के कमरे के द्वार के पास पहुँचा उसने सुना : क्यों छुटके राजा। बड़े कुँवर की अफ़सरों में राव रस्म है ?

'ज़रूर होगी' श्यामनाथ ने कहा, 'भाई कांग्रेस के लोग न मिलें सही, पर वह तो राजा साहब का बेटा है।'

दयानाथ को यह असह्य हो गया। इच्छा हुई भीतर जाकर कहे : मुझे कोई मतलब नहीं। मैं किसी का बेटा-वेटा नहीं हूँ। जो कुछ हूँ अपने आप से हूँ। सरकारी अफ़सर सरकार के गुलाम हैं। मेरा उनसे कोई रसूक नहीं। आप चाहे कुछ भी करें। तभी नवाब साहब ने कहा : काश, मुझे फिर मौका मिल जाये। वर्ना, मैं, छुटके राजा, मैं उस हरामज़ादे मिरज़ावेग का, मैं कत्ल कर दूँगा। मज़ाक नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करता सरकार। कुछ भी हो जब मैं मिरज़ावेग को देखता हूँ तब मुझे ख्याल आ जाता है कि मैं नवाब साहब सफ़दर बहादुर कैरा के खानदान में पैदा हुआ हूँ.....

'रहम नवाब साहब, रहम' श्यामनाथ ने कहा, उस नाचीज़ की हैसियत ही क्या है ? वह तो बेगम साहिबा.....

'लाहौलबिलाकूवत..' नवाब साहब ने कहा : 'उनको तो मैं ज़िंदा जलवा दूँगा.....'

दयानाथ हट गया।

४

सबसे पहिले दयानाथ को मार्कण्डेय का ध्यान आया। वह सबमें अधिक सहिष्णु था। नितांत गांधीवादी। जो बात-बात पर अहिंसा की दुहाई देता था। मार्कण्डेय का नाम जब याद आया तब दयानाथ को अनेक बातें याद हो आईं। आज वह अपने चाचा के काम से मार्कण्डेय के पास जा रहा है। एक दिन इसी मार्कण्डेय के पिता झगड़ू मिश्र ने दयानाथ के पिता रामनाथ की जान बचाने के लिये अपने आपको बलि दे दिया था, उस दिन के गाँववालों के लट्ठ खाकर इस संसार से चल बसे थे। मार्कण्डेय ने फिर भी दयानाथ से घृणा नहीं की थी। उस समय ब्रह्मदत्त होता तो वह पचीस गालियाँ देता। कहता, 'जाओ-जाओ यहाँ बड़ी सहानुभूति दिखाने आये हो, तुम्हारे क़ातिल बाप ने अगर गाँव वालों पर इतने अत्याचार नहीं किये होते तो काहे को यह हालत होती। तुम लोग दूसरों का खून चूस-चूस कर मोटे हो गये हो। यह कानून, यह न्याय सब तुमने अपने को समर्थ बनाये रखने के लिये, गरीबों का गला घोंटने के लिये बनाये हैं। अब उसी की स्थापना में झगड़ू मिश्र अपने को मरकर मिटा गये हैं।' लेकिन मार्कण्डेय ने क्या कहा ? उसने यह कभी नहीं कहा कि ज़मींदार का अत्याचार उसका अधिकार नहीं है। उसकी सहायता के लिये जो पुलिस और फौज हैं वह असल में हिंसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को स्थापित रखने वाला तरीका है। उसके विरुद्ध गाँव वाले भड़कते हैं, अपनी रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं, बंदूक के खिलाफ़ लाठी उठाते हैं तो वह हिंसा कहलाती है। क्यों कहता है मार्कण्डेय ऐसा ? इसलिये कि एक हिंसा न्याय बन चुकी है, या फिर इसलिये कि वह एक समर्थ की हिंसा है। जो समर्थ है, उसे उसी के तरीके से नहीं मारा जा सकता। तो इसका तो अर्थ हुआ कि समर्थ मारता चला जाये, तुम पिटते चले जाओ, इसी में कभी न कभी समर्थ का हृदय परिवर्त्तन होकर रहेगा और तुम्हारी हालत सुधर जायेगी। पर क्या इसमें अपनी हीनता को ही स्वीकार नहीं कर लिया जाता ? तभी तो ददुआ भी कहते हैं कि अहिंसा का सिद्धांत बहुत ऊँचा है। अगर आदमी उस तक पहुँच जाये तो कितना अच्छा हो। पर वह क्या अपने आप हो जायगा ? एक बार भी तो वे उस पक्ष से नहीं सोचते जिसे गांधी चाहते हैं कि अपनी संपत्ति दूसरों को दे दें अपने को मात्र उसका ट्रस्टी समझें। समझ में नहीं आता। जब तक उनसे यह सब छीन नहीं लिया जायेगा तब तक वे इसे आखिर छोड़ेंगे भी क्यों ?

दयानाथ का मन संतुष्ट नहीं हुआ। लेकिन मार्कण्डेय क्यों अहिंसा कहता है ? क्या वह भी ऐसा ही है। नहीं वह भला है, सच्चा है। जो कहता है उसमें विश्वास करता है। बानापुर गाँव की चार पाई की साझेदारी भी उसने छोड़ दी है जिस पर माँझ गाँव के झगड़ू मिश्र इतना गर्व करते थे। वह कुछ न सही, पर कुछ तो था ही। दयानाथ की यह परेशानी उसे और आगे खींच ले चली। आखिर मार्कण्डेय की बात को ददुआ क्यों मानते हैं ? ददुआ कोई त्याग नहीं करते। उनकी सारी अकड़ और रुआब ही उनकी शराफ़त के मापदण्ड हैं। वे अँग्रेज़ों की गुलामी से कुछ भी कचोट नहीं खाते उल्टे कुल मर्यादा, खान्दान की शान, और ज़मींदारी गाँव में ही अपने को भुलाये रखते हैं, मस्त रहते हैं। अपने अधिकार त्यागना तो दूर, उनकी रक्षा के लिये वे कैसी भी हिंसा को अनुचित नहीं समझते। अपने स्वामित्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के लिये वे किसी के भी समानाधिकार स्वीकार नहीं कर सकते। अगर कहीं उनके स्वार्थ अटकते हैं तो वे काम निकालने के सभी तरीके अपनाते हैं। अफ़सरों के यहाँ जाकर हाज़िरी देने को वे नियम कहते हैं। अजीब चीज़ है। पर उनमें ब्राह्मणों का सा त्यागी दंभ है।

दयानाथ इस सूझ पर चौंक उठा। यह क्या विरोधी चीज़ें हैं। त्याग और दंभ एक साथ कैसे? सच है, उन्होंने, अपने दो बेटों को तो घर से निकाल दिया। एक को मौत के मुँह में जाते देख कर भी कहा कि सिर न झुकाना, इसलिये कि तीनों ने उनके सामने सिर नहीं झुकाया। तीनों ही उनसे काम निकालना चाहते थे, उन्हें साध्यम समझते थे। उनके स्वामित्व को अपने पूर्ण समर्पण के साथ स्वीकार नहीं करते थे। प्रभा के समय वे जनमत से डर गये थे। और अपने अधिकारों को अक्षुण्ण रखने के लिये उस सत्ताधारी के लिये आवश्यक था कि वह आडंबर जीवित रखे, जैसे सब के सिर झुकवा कर प्रसन्न होने वाला ब्राह्मण दोनों हाथों से अपने वस्त्र तक उतार कर नंगा हो जाता था। यानी मेरे अधिकारों को मत छुओ, भले ही मैं सब कुछ त्याग दूँगा। मैं दाता हूँ, क्योंकि मैं दयालु हूँ। पर इसका यह अर्थ नहीं कि तुम इसके अधिकारी हो जाते हो। मेरी दया और करुणा पर पलते रहो।

दयानाथ ने पूछा, हे ब्राह्मण! जब तू सबको व्यर्थ कहता है, सबका त्याग करता है तो फिर जब तुझसे वह सब छीना जाता है तो लड़ता क्यों है? जब तू एक वस्तु को हीन समझता है तो फिर उसका तेरे लिये इतना अधिक महत्त्व क्यों है?

मार्कण्डेय का यह सारा त्याग वास्तव में सबको प्रसन्न रखने की तरकीब है। गरीब से कहो कि तुम दुखी हो, पर सहन शक्ति बहुत बड़ी चीज़ है। अमीर से कहो—भाई तुम आदमी भले हो, पर अपनी व्यवस्था से मजबूर हो, क्योंकि जनता बहुत अधिक अशिक्षित है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बकरी और शेर जब एक घाट पर पानी पीते हैं तो शेर बकरी नहीं बनता, बकरी शेर नहीं हो जाती। ददुआ समझते हैं कि शेर है,' गोश्त खाना तो उनकी प्रकृति है, उसके बिना वे मर जायेंगे। लिहाज़ा बकरी क्योंकि घास खाती है वही उसका भोजन है। मार्कण्डेय समझता है कि जैसे बकरी गोश्त नहीं खाती, संभवतः एक दिन शेर भी गोश्त खाना छोड़ देगा।

दया हँसा। शायद वह समझता है कि एक दिन शेर भी घास खाना शुरू कर देगा। असंभव, असंभव। जिस जगह दूध देने वाली बकरी रहती है, मनुष्य ने उस जगह की सुरक्षा के लिये पहला नियम बनाया है कि वहाँ कोई शेर नहीं रह सकता। उस शेर को सदा के लिये बीहड़वन में भगा दिया जायेगा, जहाँ से वह लौट कर फिर आबादी में नहीं आ सके।

दयानाथ को ददुआ के विरुद्ध इस प्रकार सोचने में एक प्रकार की सांत्वना मिल रही थी। वह उस व्यक्ति की पोल जानना चाहता था जो सदैव संसार के सामने ढोल की तरह बजता था। इस प्रकार के एकांत चिंतन में वह बहुत निर्मम और निष्पक्ष हो जाने से बहुत संतुष्ट होता। जो जायदाद उसने त्याग की छोटी समझ कर, जिसके सामने फिर लौट कर गया उसे बड़ी समझ कर, वहाँ फिर निकाला गया, वह व्यापार भूल जाना क्या इतना सहज था? गांधी का आंदोलन हुआ, समाप्त हो गया। फिर कभी चलेगा, फिर दबेगा, या जीतेगा। लेकिन उसके व्यक्ति को क्या मिलेगा? कुछ नहीं। सब जागीरदार, ज़मींदार ऐश करते हैं। दयानाथ पर से आज वह कुलीनता की मुहर धीरे-धीरे हट चली है। जीवन के अनेक क्षणों में जब राजेश्वरी की बातों में यह विचार झलका है कि पिता के अधिकार छोड़ कर दयानाथ ने अच्छा नहीं किया, अच्छा नहीं तो अपने बच्चों के भविष्य में उसे अवश्य सोचना चाहिये था, दयानाथ आसानी से उस बात को पचा नहीं पाया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
आज वह मार्कण्डेय के घर जा रहा है जो पिता की मृत्यु के बाद से कानपुर में ही जम कर वकालत कर रहा है। कभी-कभी नातेदारी में गाँव भले ही चला जाये। स्वयं दयानाथ को वहाँ गये कितने दिन हो गये। बस आखिरी बार गया था जब प्रभा की मृत्यु हुई थी।

दयानाथ जब मार्कण्डेय के घर पहुँचा उसने देखा वहाँ मार्कण्डेय के अतिरिक्त कुछ लोग और भी थे। श्यामनारायण, लाला राम किशोर, वासुदेव, मौलाना हामिदअली, डाक्टर हीरालाल, रामकृष्ण, मुंशी इकबाल शंकर, सभी थे। दयानाथ इनमें से किसे नहीं जानता? सब उसके साथ कांग्रेस कमेटी के अन्दर थे।

श्यामनारायण जो पहले दयानाथ का आश्रित था इस समय कुछ कह रहा था। चार मिलों के मालिक लाला राम किशोर, रहस्य बन कर प्रसिद्ध होने वाले वासुदेव, अत्यन्त दया दानशील तथा राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस कमिटी कानपुर के एक मात्र मुसलमान सदस्य मौलाना हामिदअली, बड़ी जायदाद इकट्ठा कर लेने वाले डाक्टर हीरालाल, सर्वप्रिय तथा कानपुर के प्रमुख साप्ताहिक पत्र—आलाप के संपादक रामकृष्ण, मौका परस्त मुंशी इकबाल शंकर, सभी दयानाथ को देख कर चौंक उठे।

'अक्खा ! ईद ! ईद,' मौलाना हामिदअली ने फिकरा कसा। लाला रामकिशोर व्यापारी थे। हामिदअली वाला बात करने का लहज़ा वैश्यकुलभूषण होने के कारण उनकी कुल परंपरा और संस्कृति में ही नहीं लिखा था। इस समय उन्होंने अपना चौड़ा मुँह बिल्कुल पूरी तरह फाड़ दिया, जिसमें उनके अनगढ़ दाँत ऐसे दिखाई दिये जैसे खुले मिल के फाटक के पीछे सिपाही बंदूकों की चमकती नलियाँ उठाये खड़े हों।

डाक्टर हीरालाल ने उठ कर आश्चर्य प्रकट किया तथा वासुदेव ने अपने को अधिक रहस्यमय दिखा कर मुन्शी इकबाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शंकर ने कहा : आखिर इन गरीबों को भी कृशन जी की याद हो तो आई। भाई, हमें भी सुदामा समझा करो। रामकृष्ण जी का कवित्व उनकी आकृति पर उमड़ पड़ा। उन्होंने दयानाथ का स्वागत उस गर्व से किया जो जीते हुए पुराने जुआरियों के चेहरे पर पहली बार जुआ हार कर सकुचाते नये पंछी को फिर से आते देख कर खेल उठता है। केवल मार्कण्डेय शांत बैठा था। उसने सरलता से हाथ जोड़ने का उत्तर देकर कहा : आओ आओ। तुम तो भाई हम लोगों को भूल ही गये थे। आखिर वजह ?

'वकालत से ही फुर्सत नहीं मिलती,' मौलाना हामिदअली ने लच्छा कसा।

दयानाथ बैठ गया। डाक्टर हीरालाल, खूबसूरत से आदमी, देश-भक्त, पर अँग्रेजी तौर तरीके में घर के भीतर रँगे हुए, मुस्कराये। उस मुस्कराहट का कुछ भी अर्थ हो सकता था।

बाद तकल्लुफात के दयानाथ ने मार्कण्डेय से कहा : 'मुझे तुमसे कुछ खास बातें करनी थी,' फिर सोच कर कहा, 'तुमसे ही क्यों ! सभी से करनी थीं। यहाँ तो सभी हैं,' फिर उसकी दृष्टि एक एक कर सब पर घूम गई। मार्कण्डेय तो विस्मय की दृष्टि से देख कर चुप ही रहा पर मौलाना हामिदअली समझ गये और; कह उठे : बरहम-दत्त जी नहीं हैं बस; वर्ना सब हो जाते।

उस वाक्य के छोटेपन ने भी बड़ा असर किया। पूरा व्यंग्य ठहरा। न केवल दयानाथ चौंका; वरन् श्यामनारायण भी चौंक उठा जैसे मौलाना हामिदअली की बात एक ठंडे पानी को काटती धारा थी, जिसे उपस्थित सज्जनों की कमीज़ें और कुर्त्ते पीछे से हटा कर गर्दन के पास से उस पानी को डाल दिया गया था और अब उसी के कारण सब की रीढ़ काँप उठी थी।

डाक्टर हीरालाल ने उन्हें घूर कर देखा और फिर उत्सुकता से पूछा : हाँ दयानाथ जी ! तो फिर कहिये न ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्यामनारायण की बात अधूरी ही रह गई थी। असल में सब लोगों को उसी में दिलचस्पी आ रही थी। अब वे यह नई बात भी सुनना चाहते थे, पर पुरानी बात को छोड़कर नहीं।

मार्कण्डेय परिस्थिति को समझ गया। उसने कहा : इतने दिन बाद दयानाथ जी आये हैं। हम उनकी बात जल्दी सुन लेंगे तो जल्दी ही वे चले जायेंगे। और जो बात यहाँ हो रही है, उसमें जितनी ज्यादा राय और अच्छी राय दयानाथ जी दे सकेंगे, उतनी मुझमें योग्यता कहाँ। लिहाज़ा मैं दयानाथ जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे पहले हमारी बातें सुन लें फिर अपनी कहें।

'इसमें जो बेअदबी होती है उसके लिये हम लोग माफ़ी चाहते हैं,' मुंशी इकबाल शंकर ने कहा।

लाला रामकिशोर का फिर मुँह खुल गया, जैसे कीड़ा देख कर छिपकली के होंठ दूर ही से काँपने लगते हैं। उनके मुँह पर एक मूर्खता की छाया थी; परंतु वह व्यक्ति बहुत ही चतुर और संयत था और जानता था कि कहाँ पाँव रखें, कहाँ नहीं। उसका जीवन एक हाथी का जीवन था, जो बहुत खाते हैं, और चलते हैं तो हर जगह क़दम-क़दम की टोह लेते हुए।

दयानाथ को लाचार होकर स्वीकार करना पड़ा।

'तो दयानाथ जी,' आलाप संपादक रामकृष्ण जी ने कहा, 'जो बातें हो चुकी हैं, उन्हें मैं आपके सम्मुख दुहरा जाऊँ ताकि फिर आपको सब बात साफ़ हो जाये। बात यह है कि विदेशियों से हम अपनी आर्थिक कठिनाइयों के कारण बाँधे गये हैं। आज श्री श्यामनारायण, लाला रामकिशोर जी से परामर्श करके इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि भारत के उद्योग धंधों को शीघ्रता से भारतीय हाथों में लाने के लिये, तथा भारतीय पूँजी को विदेशों में जाने से रोकने के लिए एक योजना बनाई जाये। हम लोग उसी पर बातें कर रहे थे। लाला रामकिशोर ने कम्पनी खोलने का इरादा किया है। तो उसके लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाइरेक्टर्स की आवश्यकता है। देश के लोग देश के सामान का सम्मान करना शुरू करें यही उनकी इच्छा है। आप तो जानते ही हैं कि हमारे आंदोलन से लंका शायर की मिलों को कैसा ज़बर्दस्त धाटा हुआ है।

दयानाथ ने सुना और उसने फिर उपस्थित सज्जनों में हर एक के ऊपर अपनी दृष्टि फिराई।

५

श्यामनारायण ने अपने गले को साफ़ किया। सिर की सफ़ेद गाँधी टोपी को पीछे की ओर खिसकाते हुए वह कुर्सी पर झुक गया और बोला, 'हमें एक लिमिटेड कम्पनी खोलनी होगी। यह कम्पनी भारत प्रेम कम्पनी के नाम से प्रसिद्ध होगी। इसका सब कुछ स्वदेशी माल होगा।'

स्वदेशी कहने में उसने काफ़ी ज़ोर दिया जैसे वह एक देशभक्ति की मिसाल थी, जिसका उसे काफ़ी गर्व था।

'मतलब आपका कॉटिज इन्डस्ट्रीज़ से है?' दयानाथ ने अविचलित स्वर से पूछा, जैसे उसे इन बातों से कोई अधिक आशा नहीं थी।

'जी नहीं!' डाक्टर हीरालाल ने संक्षिप्त शब्दों में विरोध किया। उनकी दाईं भौं ज़रा ऊपर की ओर खिंच गई।

'तब फिर मैशीनरी तो आपको विदेशों से ही मँगानी पड़ेगी?' दयानाथ ने कुहनी घुटनों पर टेक ली और मुँह को हाथों पर रख कर डाक्टर की ओर घूर कर पूछा।

'जी हाँ मँगा लेंगे। जो अपने देश में नहीं है उसे तो मँगाना ही चाहिये।' लाला रामकिशोर ने मेज़ पर हाथ पटक कर कहा, 'इसमें क्या दोष है?'

'दुरुस्त है, गांधी जी भी मोटरों में चढ़ते हैं। वैसे वे तो सभी मशीनों के खिलाफ़ हैं।' मुंशी इकबाल शंकर मोती ढूँढ़ लाये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात जमती हुई थी। उनकी सचाई इसी में प्रकट थी कि गांधी जी के विरोधाभास को उन्होंने ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया था। तनिक भी ननुनच नहीं की थी।

'तब ख़याल है कि वैसे तो व्यापार करना कठिन नहीं पर देश की खातिर जो चीज़ होती है उसमें और ही बात है?' श्यामनारायण ने फिर कहना शुरू किया।

'जी हाँ,' डाक्टर हीरालाल ने सिर हिलाया।

'मैं कहूँ' श्यामनारायण ने कहा, 'भारत प्रेम कम्पनी देश में अलग-अलग स्थानों पर स्टोर्स खोलेगी, जिसमें सब स्वदेशी माल मिलेगा। आप जानते हैं हमने, हमारी जनता ने विदेशी माल को किस तरह निर्विरोध होकर धू धू करती आग को समर्पित कर दिया। सड़कों पर, घरों में सरेआम हमने ब्रिटिश साम्राज्य को, उसके कपड़ों से तन ढकना इंकार करके, दिखा दिया कि हम उसके वैभव को जला कर खाक कर देना चाहते हैं। इंगलैंड उस आग को नहीं सह सका। देश के लोग देश के लिये पागल हो रहे हैं। जिनके पास बुद्धि और धन है यदि वे इस समय देश की सेवा में नहीं लग जाते तो यह उनकी तटस्थता नहीं, उनकी एक निहित निर्बलता है, जिसके कारण कहा जाता है कि भारतीय पूँजी बहुत लजीली है, वह आगे नहीं बढ़ती।'

'बहुत ठीक' आलाप संपादक रामकृष्णजी तड़प उठे। वे श्यामनारायण की भावुकता में बह गये थे।

हमें सबसे पहले अपने नफ़े नुकसान को छोड़ देना चाहिये। हम कौन हैं? हम उस भारत की संतान हैं जिसका कहीं सानी मिलना कठिन था। जो कुछ हो देश के लिये हो। क्यों मौलाना?

मौलाना अभी तक चुप थे, पर अब उन्होंने काँपती आवाज़ में कहा: क़सम खाकर कहता हूँ। देश को रोज़ी की ज़रूरत है। ज़मीदारी पर पड़े-पड़े सैकड़ों हजारों किसान घर-घर में तड़प रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्हें दोनों वक्त खाने को मयस्सर नहीं होता। अरे साहब मैं खुद जमींदार हूँ। मैं जानता हूँ बेचारों की कितनी खराब हालत है। आप कम से कम उन लोगों को दो वक्त खाना तो दे सकेंगे। कुछ तो भला करेंगे ही।

कुछ देर बात का असर रहा। फिर श्यामनारायण जैसे अपने कर्त्तव्य के प्रति चैतन्य हो गये, उन्होंने सबकी ओर देखा और कहा : कम्पनी के लिये पैसे की जरूरत है। यह पैसा हमें देश के लोगों से लेना होगा। शेयर्स बेचने का सवाल है। इसके लिये हमें देश के किसी बड़े नेता का आशीर्वाद लेना होगा, या फिर उनमें से ही कोई हमारी कम्पनी का डायरेक्टर बनाया जाये? आपकी क्या राय है?

यह बात गम्भीर थी; पर डाक्टर हीरालाल ने कहा, 'मुश्किल है। उन लोगों को इतनी फुर्सत ही कहाँ मिलती है। वैसे डाइरेक्टर को काम तो कुछ नहीं है।'

'बहुत ठीक। हमें जनता के विश्वास की सबसे पहले जरूरत है। शेयर लेने वालों को हम कुछ ज्यादा तो नहीं दे सकेंगे, क्योंकि अभी शुरू में तो हमें रिजर्व बनाने की जरूरत पड़ेगी'। श्यामनारायण ने फिर कहा। उसने यह बात कह कर अपना लहजा तनिक भावुकता से रंग दिया। दोनों हाथ उठा कर कहा : लोग जो चाहें कहें। मैं उसकी परवाह नहीं करता। पर क्या आप मेरी बात नहीं मानते? बड़े-बड़े पूँजीपति, सेठ, रईस, दूकानदार, मिलमालिक, आप कहें इसमें से कितने हैं जो नहीं चाहते कि मुल्क आजाद हो। मैं तो कहूँगा बहुत से सरकारी अफ़सर हमसे हमदर्दी रखते हैं?

दयानाथ ने बीच में टोका : श्यामनारायण जी! आपने जो कहा है वह तो ठीक है, पर हमें एक काम करना पड़ेगा। मजदूरों को ज्यादा तनख्वाह देनी पड़ेगी, वर्ना हममें और अन्य पूँजीपतियों में भेद क्या रहेगा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके प्रश्न को सुन कर सब चौंक उठे। उन्होंने चारों ओर एक दूसरे की ओर दृष्टिपात किया।

'यह नहीं हो सकता' लाला रामकिशोर कह उठे—'इसका मतलब है लाभ में कमी पड़ेगी। लाभ में कमी पड़ेगी तो आप शेयर-होल्डर्स को देंगे क्या? यदि उन्हें कम मिलेगा तो वे लाजमी दूसरी जगह रुपया लगायेंगे। भाई कुछ भी हो, मजदूर क्या देश के लिये कुछ दिन त्याग नहीं कर सकते?' लाला रामकिशोर का गंभीर मुख कुछ खुल गया: अधिक दिन नहीं। जिस दिन देश आज़ाद होगा उस दिन सबको सब कुछ मिल जायेगा। विदेशी लुटेरा नहीं रहेगा फिर। फिर यह बीच के टांड़ी भी मिटा दिये जायेंगे। भाई मजदूर मेरे। अरे भूखे मरते हो। यहाँ तुम्हारी चोंच भरने का प्रबन्ध किया जाता है, यहाँ तुम्हारी जिन्दगी के लिये एक रास्ता निकाला जा रहा है।

श्यामनारायण ने स्वर पकड़ कर कहा: यह सिर्फ़ विदेशी से सामना करने के लिये। देश की उन्नति के लिये।

'देखिये हम हाथ की खादी के खिलाफ नहीं जाना चाहते।' वासुदेव ने कहा। वह इस समय और भी अधिक रहस्यमय लग रहा था; क्योंकि यद्यपि वह गंभीर था, फिर भी लगता था कि उसके होंठ के कोनों पर मुस्कराहट काँप रही है।

'वह तो जरूरत ही नहीं पड़ती। आपके पास एक ठोस रकम रहती है, जिसके कारण आज जगह-जगह हाथ फैलाने की बजाय एक जगह से ही अपनी आजादी की लड़ाई चला सकते हैं।' मुंशी इक-बाल शंकर ने राय दी।

'इसका यह मतलब नहीं' लाला रामकिशोर ने कहा, 'कि अब जनता से चंदा नहीं लिया जायेगा। कांग्रेस तो देश की संस्था है, उसमें बड़ा भी है, छोटा भी है।'

'तो फिर एक काम किया जाये। जिस दिन आप प्रारम्भ करें उससे पहले ही गांधी, जवाहर और तिरंगे झंडे के कार्ड तस्वीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छपवा कर शहर में बिकवाना शुरू कीजिये।' मुंशी इकबाल शंकर ने चुटकी बजाकर कहा : यों काम शुरू होता है ! यों

इस नई बात को देखने पर, जो ऊपर से हल्की लगती थी, पर भीतर से ठोस थी, सबने ठीक समझा और श्याम नारायण ने इस बात को लिख लिया।

अब आगे बात काफ़ी देर तक चलती रही। कौन क्या बनेगा यह निश्चय हुआ। किससे प्रारंभ में कितना रुपया लिया जायेगा। व्यापार की भीतरी ऊँच-नीच, शेयर लेने वालों को कितना प्रतिशत दिया जायेगा, इत्यादि पर विवाद हो चला। परिणाम-स्वरूप दयानाथ भी डाइरेक्टर्स में आगया; यद्यपि उसने प्रारंभ में काफ़ी विरोध किया। यह विरोध लाला रामकिशोर की देशभक्ति के सामने अधिक नहीं टिका। उनके तर्क उसे अकाट्य लगते थे और सब लोग उनका बार-बार समर्थन करते थे। दयानाथ मान गया।

किंतु मार्कण्डेय ने मना कर दिया। कहा : मेरी आपसे पूर्ण सहानुभूति है और दिन रात ईश्वर से मंगल कामना किया करूँगा।

'कारण ?' रामकृष्ण जी ने कहा, 'मेरी बात होती तो मैं मना कर सकता था। भाई एक हिंदी के साप्ताहिक का संपादक हूँ। मेरे पास रुपया नहीं है, पर आप तो वकील हैं।'

'न, वह तो ठीक है' मार्कण्डेय ने कहा : 'पर मुझमें असल में व्यापार की इस दिशा में कोई योग्यता नहीं है। क्यों दयानाथ जी ?'

'बात तो ठीक है,' दयानाथ ने कहा।

मुंशी इकबाल शंकर चौकन्ने थे। अब वे बोले, 'तो हो गया महाशे जी सब ? अब ज़रा दयानाथ जी को तकलीफ़ दिया चाहता हूँ।' मुड़ कर कहा, 'अच्छा, तो फिर अब आप फ़र्मायें, किस बात को लेकर परेशान हैं ?'

दयानाथ सँभल कर बैठ गया। रात को चाचा तथा नवाब साहब का आना, सुबह उनका सारा किस्सा सुनाना, पिता जी का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाबसन से मिलना, कुछ न होना, वह एक एक कर सब कहने लगा। सब बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

जब दयानाथ ने सब कह सुनाया तो मार्कण्डेय ने पूछा, 'और चोरी का माल कहाँ गया?'

'बेगमें खा गईं। मिरज़ाबेग खा गया।' दयानाथ ने कहा: इतनी सी बात है।

सब ठठा कर हँसे।

कुछ देर में जब सब शांत हुए तो मुंशी इकबाल शंकर ने कहा: भाई, रईसों के तो यही चोंचले हैं। आखिर उन्हें कोई काम भी तो चाहिये। अब सब ही तो मौलाना नहीं होते।

मौलाना ने नम्रता से सिर झुका लिया।

'तो एक काम किया जाये,' मुंशी जी ने फिर कहा, 'मुकद्दमा दायर करवा दीजिये। कुछ रुपया खर्च होगा, हो सकता है जज अपनी तरफ़ तोड़ लिया जाये।'

'लेकिन मामला अँग्रेज़ का है,' वासुदेव ने याद दिलाई। 'जज मान जायेगा?'

'हाँ, यह तो मुश्किल है' मुंशी इकबाल शंकर ने कुछ चिंता में पड़ते हुए कहा, 'लेकिन जनाब रुपये का जोर आप शायद अभी समझे नहीं हैं?'

'नहीं कांग्रेस इन मामलों में पड़ कर बदनाम हो जायेगी,' मार्कण्डेय ने टोक कर कहा, 'यह एक व्यक्तिगत मामला है। इससे देश को क्या लेना देना? नवाब साहब कोई हमारी कांग्रेस में तो थे नहीं?'

मुंशी इकबाल शंकर इस प्रकार अदूरदर्शी और फिसलने वाले साबित नहीं होना चाहते थे। उन्होंने फिर अपनी बात को दूसरी तरह से पेश किया: लेकिन अँग्रेज़ का सामना तो है?

मार्कण्डेय और दयानाथ क्या उपस्थित सज्जनों में सिवाय मौलाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हामिदअली और रामकिशोर जी के सब ही चौंक उठे। मार्कण्डेय ने पूछा : उससे क्या हुआ ? उनसे क्या नवाब साहब देशभक्त साबित हो जाते हैं ? उन्होंने एक आदमी का खून कराया है। आप कहेंगे कि १८५७ से पहले देशी राजे भी जनता पर अत्याचार करते थे। फिर हम उनकी तारीफ़ क्यों करते हैं ? पर हम उनकी तारीफ़ करते हैं जो सब कुछ होते हुए भी अँग्रेज़ों के सामने लड़ कर मर गये। उन्होंने आखिर तक सिर नहीं झुकाया। लेकिन अज़ीज़ बहादुर का साथ देने से गाँव वाले विरुद्ध हो जायेंगे। आज भी उनका लक्ष्य क्या है ? जमींदारी वापिस मिल जाना। फिर भी वे क्या देश के लिये कुछ करेंगे ? यह तो ठीक नहीं होगा कि हम उनसे पहले से तय करेंगे कि आप देश को क्या देंगे ?

'क्या देंगे ?' रामकृष्ण ने कहा—'दो बोतल शराब, तीन सेर कबाब और क्या ? लाला रामकिशोर जी ! आप का क्या विचार है ?'

लाला रामकिशोर ने हँस कर कहा : अजी छोड़िये भी। आप कांग्रेस को आखिर समझ क्या रहे हैं ?

मुंशी इकबाल शंकर हँसे। बोले : भाई अब तो तुम मज़ाक पर भी रोक लगाने लगे हो।

दयानाथ ने मुस्करा कर कहा, 'वह तो सब ठीक है। मैं सब जानता हूँ। लेकिन मैं क्या करूँ ?' दयानाथ ठठा कर हँसा—'उनको समझायेगा कौन ? चाचाजी के ऊपर तो प्रभा की मौत से ऐसा सदमा पहुँचा है कि मेरी तो न करने की हिम्मत नहीं होती।' प्रभा का विषय दुखद है। उसका उल्लेख होते ही सब गंभीर हो गये। दयानाथ ने फिर कहा, 'सच अब आपको आना ही पड़ेगा। यह मेरी आप लोगों से प्रार्थना है। मानना न मानना आपके हाथ है।'

'आ तो जायेंगे। उसमें हमारा क्या दर्ज है ?' वासुदेव ने कहा। 'आ जायेंगे। अच्छा फिर वहाँ आकर करेंगे क्या ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानाथ मुस्कराया । उसने कहा: कुछ नहीं । चाय पीनी पड़ेगी । नमकीन और मिठाई का भोग लगाना पड़ेगा । अपने वक्त ज़ाया करना पड़ेगा और चाचाजी तथा नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा से खूब दिमाग़ लड़ाना पड़ेगा, दांव पेच करने होंगे । कानून की किताबों की दुहाई देनी पड़ेगी । फलाने जज से पहले कैसे अच्छे ताल्लुक थे, अब कैसे टूट गये यह बताना पड़ेगा, मतलब यह कि जिस काम में कुछ नहीं किया जा सकता, उसके बारे में वह दिलचस्पी दिखानी होगी कि सब कुछ हो सकता है ।

'और नतीजा कुछ नहीं होगा,' रामकृष्ण ने कहा । 'कहिये तो अखबार में रिपोर्ट छाप दूँ ?'

'नहीं जी,' मार्कण्डेय ने टोका । 'दयानाथ फँस गये ?'

तो क्या किया जाये ? आखिर पागलों से पाला पड़ा है भला बताइये। कांग्रेस मदद करेगी तो पैदल चल दिये । कांग्रेस क्या है, किस में उसे दिलचस्पी है, क्यों है, यह सब सोच विचार तो ताक पर धर दिया । और अब पीछा नहीं छोड़ते । चाचाजी हैं, वर्ना मैं क्यों परेशान होता ? नवाब साहब मेरे पास अकेले थोड़े ही आवे !

सब हँस दिये ।

'अच्छा साहब शाम को चार बजे से पांच के बीच में आइयेगा । भारतीय समय दिये जा रहा हूँ । आपका क्या खयाल है । ब्रह्मदत्तजी को भी बुलवा लिया जाये । वे इतनी बार शोपक कहेंगे कि अज़ीज़ बहादुर अपना केस ही छोड़ देंगे ।' सब फिर ठठा कर हँसे ।

जब दयानाथ घर पहुँचा राजेश्वरी बैठी कपड़े पर कुछ रेशमी तागे से काढ़ रही थी । पति की पगचाप पहँचान कर उसने सिर उठाया और कहा : बड़ी देर लगी ?

'अरे वहाँ जाकर दूसरी ही उलझन में फँस गया ।' दयानाथ ने हँस कर कहा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्या हुआ ?' राजेश्वरी को कौतूहल हुआ। फिर पति को बातों में जुटने के इरादे को भाँप कर कहा, 'पहले नहा कर खाना खाने लगें, तब पास बैठ कर सुनूँगी।

दयानाथ ने कहा : अच्छी बात है। तुम्हारी ही सही।

६

नवाब साहब अजीज़ बहादुर कैरा ने खाना खा कर एक बार हाथों को उठा कर एक अँगड़ाई ली और फिर चारपाई पर लेट गये। चाचा श्यामनाथ आराम से सोफ़ा पर पाँव फैलाये पड़े थे। अब वे उठ खड़े हुए। बोले : तो फिर ज़रा मैं···

'हाँ, हाँ,' नवाब साहब ने कहा—'ज़रूर, ज़रूर।'

श्यामनाथ भीतर पहुँचे। इस समय वे पहली बार रसोई की ओर गये। राजेश्वरी ने माथा ढँक कर पाँव छुए। श्यामनाथ की आँखें चमक उठीं। उन्होंने आशीर्वाद दिया, 'सदा सुहागिन रहो बहू। सौभाग्यवती हो।' इससे अधिक स्त्री के सुख की उन्होंने कोई विशेष कल्पना नहीं की थी, वरना इस समय वे वह सब कह देने में तनिक नहीं हिचकिचाते।

'आपकी तनदुरुस्ती खराब हो गई थी,' राजेश्वरी ने धीरे से कहा।

'हाँ बेटी, हो गई थी। अब ठीक हूँ। पर वह बात अब कहाँ रही ? घर उजड़ गया। तबाह हो गया। अब क्या है ? अब जीना ही कितने दिन है ? थोड़े दोनों की रौनक है। फिर हम भी खेल-खाल कर चले जायेंगे।'

राजेश्वरी को विस्मय हुआ और दुख भी, कहा : हम क्या कोई पराये थोड़े हैं ? घर तो अब भी घर ही है। कुछ लोग वहाँ न रहे यहाँ रहे, तो क्या मन में भी बाधा खड़ी हो जाती है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्यामनाथ को कुछ आश्चर्य्य हुआ। एक दिन यही स्त्री इतना गर्व करती थी कि इसने रामनाथ और श्यामनाथ दोनों से घर चलने की बात पर साफ़ इंकार कर दिया था, क्योंकि दयानाथ घर से अलग हो चुका था। आज वही स्त्री इतनी आत्मीयता दिखा रही थी।

उन्होंने कहा : हम सब भाग्य के हाथ में खिलौने हैं बहू। दया के बारे में किसी को क्या मालूम था कि एक दिन वह भी सबको छोड़ देगा।

'उन्होंने किसे छोड़ दिया चाचाजी। ददुआ ने उन्हें निकाल दिया।'

'ददुआ ने निकाल दिया, पर उनको तुम लोग नहीं जानते कि मैं नहीं जानता। उनकी सदा से यही आदत रही है। जो बात सोच लेते हैं फिर उसी पर अड़े रहते हैं।'

राजेश्वरी चुप रही। श्यामनाथ कहते गये : समय बदल गया है। दया छोड़ गया, पर मैं नहीं छोड़ सका। ददुआ का स्नेह मुझ पर सदा से रहा है। इस समय वह भी नहीं रोक सका। बूढ़ा हो गया हूँ। मैं अब शांति चाहता हूँ, मुझे मान अपमान नहीं चाहिये। दया नहीं आया, पर मैं आया हूँ।

राजेश्वरी की आँखों में आँसू आ गये। श्यामनाथ कहते रहे : प्रभा चला गया। चला जाने दो। अब वह लौट कर नहीं आ सकता। उमा चला गया। उसे भी दर्द नहीं आया। मैं कहता हूँ बहू, क्या यह सारी नई पीढ़ी हृदयहीन पैदा हुई है ? हम लोग घर के रिश्तों के लिये जीना ही अपना सब कुछ समझते थे। ये लोग अकल, अकल की रट लगाये फिरते हैं। मैं नहीं जानता, दया, उमा, प्रभा सब अलग-अलग रास्तों पर चलते हैं, पर हमसे सब अलग क्यों हैं ?

इसी समय राजेश ब्रजेश ने उन्हें घेर लिया और खेलते हुये उनसे चिपक गये। श्यामनाथ अपनी बात कहना भूल गये। वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्हीं से बातें करने लगे। राजेश्वरी ने याद दिलाया : आप नहा लेते तो मैं भोजन.....

'ओह हाँ, ठीक,' श्यामनाथ ने कहा और वे गुसलखाने की ओर चल पड़े। राजेश्वरी ने जल्दी से ब्रजेश के हाथ एक तौलिया भिजवाया, नया, धुला हुआ। वह दौड़ गया। तब वह वहीं बैठ गई और उसकी आँखों में अनेक चित्र काँपने लगे, जो पहिले तो भीतर ही भीतर रहे, पर बाद में पानी बन कर आँखों में उतर आये।

श्यामनाथ नहा धो कर, पूजा करके, खाना खा पीकर जाकर लेट गये। जब बीस-पच्चीस मिनट बीत गये तब दयानाथ ने प्रवेश किया। राजेश्वरी उसके मुख पर प्रसन्नता का चिन्ह देख कर समझ नहीं सकी। जब वह नहाकर खाने बैठा तो उसने थाली परोस कर कहा : किससे मिले थे ?

दयानाथ ने सब कह सुनाया। राजेश्वरी चुपचाप सुनती रही। जिसे पति ठीक समझता है, उसे ही वह भी ठीक समझती है।

'बात यह है' दया ने कहा, 'हम सरकारी अफ़सरों के पास तो जा नहीं सकते। फिर क्या कर सकते हैं ?'

राजेश्वरी स्वयं एक बड़े ज़मींदार की बेटी थी और बिहार के ज़मींदार की बेटी थी। बिहार में ज़मींदार संयुक्तप्रांत से भी अधिक निरंकुश थे। उसके पिता भी अक्सर काश्तकारों को पिटवा दिया करते थे। इसलिये उसकी समझ में बात में वहाँ कोई करुणा की आवश्यकता नहीं उपजी जहाँ अज़ीज़ बहादुर ने खून करवा दिया था। उसकी समझ में यह आसानी से आता था कि अज़ीज़ बहादुर का वंश सम्मान ख़तरे में है और बहुत जल्दी वह पैरों पर लोट जाना चाहता है।

दया पढ़े-लिखे आदमी होने के नाते संसार की और भी गतिविधि से परिचित थे। उनके सामने जनता का बुरा भला भी किसी सीमा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तक आ जाता था। पत्नी का नहीं समझना कुछ हानिकारक नहीं था क्योंकि पति का सोचना ही उसके लिए सब कुछ था।

उसने कुछ नहीं कहा। फिर अपने आप जैसे बड़बड़ा उठी : चाचा जी की हालत देखी ? एकदम बूढ़े हो गये हैं।

दया ने कहा 'हूँ' और खाता रहा।

'महालक्ष्मी अकेली सारा घर सँभाल रही है।'

'घर में अब है ही कौन ? ददुआ, चाचा जी और उमा का अवधेश।'

'लाला जी का ही क्यों ? अपना नहीं कह सकते ?'

'अरे बाबा ! मुझे सिखा रही हो ? मेरा तो खास भतीजा है।'

दोनों ने आत्मीयता से एक दूसरे को देखा। पत्नी ने प्रेम जताया: थोड़ी दाल दूँ।

'नहीं, बस,' दया ने कहा, 'जरा पानी दे दो।'

७

साँझ झुकने लगी। बाहर लॉन पर ही पार्टी का प्रबंध किया गया था। एक बड़े सोफ़े पर श्यामनाथ और नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा तशरीफ़ रखे हुए थे। सामने जो बेंत की कुर्सियाँ थीं उन पर दयानाथ, लाला रामकिशोर, वासुदेव, संपादक रामकृष्णजी, मार्कण्डेय, मुंशी इकबाल नारायण, डाक्टर हीरालाल, श्यामनारायण तथा मौलाना हामिद अली बैठे थे। दो-दो के सामने एक-एक छोटी मेज़ थी। सोफ़ा पड़ा हुआ था। उस पर प्रायः एक दूसरे से बैठने की ज़िद की गई। जब कोई नहीं बैठा तब उम्र के हिसाब से बिठाया गया।

डाक्टर हीरालाल ने कहा : मामला सब सुना जा चुका है। बहुत पेचीदी बात है। क्यों श्यामनारायण जी।

'उफ़ !' श्यामनारायण ने कहा : मैं सच कहता हूँ मेरा तो दुनियादारी को जानने का सारा घमंड ही चूर-चूर हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब साहब उछल पड़े । उन्होंने कहा : अंग्रेज़ ? वह मुझे लूटना चाहता है ? लूट ले कमबख्त । मगर एक वक्त आयेगा कि हमें लूटने वाले ज़ालिम तुझे भी कभी न कभी कोई न कोई ज़रूर लूट लेगा, क्योंकि ख़ुदा सबको देखता है । वह सब पर एक सी नज़र रखता है । आदमी कितना भी यहाँ चहक ले, मगर वहाँ उसकी बोलती ज़रूर बंद हो जाती है, ज़रूर बंद हो जाती है ।

बात में एक निराशा थी, खिसियाए हुए आदमी का क्रोध था । एक मृत संस्कृति की अंतिम गूँज थी । उसका किसी पर भी प्रभाव नहीं पड़ा । नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा उठ कर आवेश में टहलने लगे । हठात् उन्होंने मुड़ कर कहा : आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं ?

सब इस सीधे प्रश्न से चौंक उठे । दयानाथ की योजना असफल हो गई थी । उसका इरादा था खूब बहसें की जायेंगी और फिर असमर्थता प्रकट की जायेगी, मगर वह तब जब पार्टी समाप्त होगी । यहाँ रंग में भंग हो गया । शुरू ही उल्टा हुआ ।

नवाब साहब की नज़र जिस पर पड़ती थी वही सिर झुका लेता था, लेकिन उन्होंने जब मार्कण्डेय से आँखें मिलाईं तो वह बोलने को विवश हो गया : हमने बहुत कुछ सोचा, लेकिन हल समझ में नहीं आता ।

'समझ में नहीं आता ? नवाब साहब ने तीखे स्वर से पूछा । उनकी तीखी आवाज़ में एक अधिकार की भावना थी जिसने सबको चौंका दिया । किसी ने भी उत्तर नहीं दिया । मार्कण्डेय मुस्करा उठा । नवाब साहब उसे मुस्कराते देख कर सहसा मुड़ कर कह उठे : छुटके राजा, आप सचमुच पागल हो गये हैं । यहाँ आपने मुझे कहाँ इन दुकानदारों और वकीलों में लाकर बिठा दिया है ।

उपस्थित जन-समुदाय की आँखें फट गईं, उन्होंने दयानाथ की ओर देखा कि तुम जान बूझ कर हमारा अपमान करवाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमें यहाँ बुला कर लाये हो ? दयानाथ को काटो तो लहू नहीं। आज तक वह ऐसी परिस्थिति में नहीं पड़ा था। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा के सामने किसी का भी कुल ऊँचा नहीं था। दयानाथ ने सबकी ओर ऐसे देखा जैसे मुझे माफ़ करो। यह तो पागल हैं। इनका सिर फिर गया है। उसका बुरा न मानना।

आज तक दयानाथ ब्रह्मदत्त की बातें सुनता रहा था जो कम्युनिस्ट आदर्शों को लिये इन्हीं लोगों को शोषक, पूँजीपति कह कर गाली देता था। उससे यही लोग प्रसन्न होते थे, क्योंकि उसमें इनकी सामर्थ्य प्रकट होती थी, इनके मन को एक संतोष होता था। आज वह बात नहीं थी, मामला बिल्कुल उल्टा हो गया था। एक आदमी उन्हें आज ओछा और नीच क़रार दे रहा था।

नवाब साहब की बात सुन कर श्यामनाथ सतर्क हो गये उन्होंने कहा : नवाब साहब ! मेरे आपके पुराने ताल्लुक हैं। पर सोचिये आप बहुत से शरीफ़ और इज्ज़तदार आदमियों की बेइज्ज़ती कर रहे हैं।

नवाब साहब ने चौंक कर कहा : बेइज़्ज़ती कर रहा हूँ ? लाहौल-विलाकूवत ! मैं बेअदबी कर रहा हूँ, मुझे यकीन नहीं होता छुटके राजा। आपका दिमाग़ ठीक नहीं है। ग़म ने आपको पागल कर दिया है।

'तो,' श्यामनाथ ने कहा, 'इन्हीं से न पूछ देखिये जिनका खास सवाल है।'

'दुरुस्त है।' नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ने मुड़ कर कहा : क्यों साहिबान ! मुझसे कुछ बेअदबी हुई ? कुछ मैंने आपकी शान के खिलाफ़ कह दिया ?

एक परेशानी थी, अब दूसरी आ खड़ी हुई। अगर कहते हैं तो आफ़त, नहीं कहते तो आफ़त। मुन्शी इकबाल शंकर समझ गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने कहा : अजी तोबा कीजिये नवाब साहब। आप दया साहब के चाचा जी के दोस्त, हमारे बुजुर्ग ही हैं। आपने क्या तो कहा, हमने क्यों तो सुना। लिल्लाह, हमारा ध्यान नहीं गया। आप फ़र्मायें हम सुनें, तोबा-तोबा !' मुन्शी जी के स्वर में अद्भुत स्फूर्ति थी। सब उनके इस आकस्मिक परिवर्त्तन को देख रहे थे। वे कहे जा रहे थे : दिल दुखता है न नवाब साहब, ऐसे, ऐसे, उन्होंने हाथ से दिल धुक-धुक करने का इशारा किया, 'बस, वहीं जड़ है इंसान की रूहानी तकलीफ़ों की। और फिर आप ! फ़र्जन्दे इन्गलीशिया, पुराने नवाबों के मुसाहबे आला, नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ! आप ! वाह ! वाह ! तशरीफ़ रखिये नवाब साहब। आप कमज़ोर हो गये हैं। उफ़ ! इस अँगरेज़ी राज में आमके पेड़ों में भी कमबख्त निबौलियाँ लगने लगी हैं···

नवाब साहब आकर्षित से आकर बैठ गये। वे एक टक मुन्शी इकबाल शंकर को देख रहे थे। मुन्शी जी कहते चले जा रहे थे : आपके साथ सख्त ज्यादती हुई है। हुई है ?

नवाब साहब चुप रहे।

'बताइये। दिल की बात कहिये। नवाब साहब दिल में काँटा बन कर क्या चुभता है ? बेमुख्वती या फिर राज़। राज़ न रखिये। हाँ, उगल दीजिये उसे। परेशानियाँ बाँट लीजिये। आप को सख्त सदमा पहुँचा है। पहुँचा है न ?'

'जी हाँ,' नवाब साहब ने अचकचा कर कहा।

'बस, अब न बोलिये नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा, अब न बोलिये। इससे आपकी तकलीफ़ बढ़ जायेगी। आपको आराम की सख्त ज़रूरत है।

'मुझको।'

'जी हाँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'आराम की···'

'जी हाँ···'

'ज़रूरत है ?'

'है, बहुत है।'

'उफ़। मुझे···'

'आराम की सख्त ज़रूरत है।' मुन्शी जी ने वाक्य पूरा किया।

'क्यों ? क्या मैं···' स्वर रुक गया। फिर उन्होंने हठात् ही कहा: जी नहीं, आपका ख़याल ग़लत है। ऐसा नहीं हो सकता।'

'मगर आप मेरी भी तो सुनिये ?' मुन्शी जी ने आज़िजी से कहा। 'ज़रा मेरी अर्ज़ भी तो···'

'जी नहीं, जी नहीं, मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहता। आप मुझे, आप मुझे···नहीं, नहीं। क्यों साहिबान,' नवाब साहब ने उपस्थित लोगों की ओर मुँह करके कहा : आपकी यही राय है जो आप फ़र्मा रहे हैं ?

सबने सिर हिलाया। मानो उन्होंने हाँ में हाँ मिलाई।

नवाब सहाब ऐसे उठ खड़े हुए जैसे किसी ने उनको जलती दियासलाई छुलादी। उसके लिये बैठा रहना असह्य हो गया था। वे ज़ोर ज़ोर से कहने लगे : यह झूँठ है। कांग्रेस भी अँगरेज़ों से मिल गई है। यह मेरे खिलाफ़ साज़िश है। छुटके राजा यह सब लोग सरकार के आदमी हैं। यह सब उस फिरंगी डाबसन के दोस्त हैं। यह मुझे पागल कहते हैं। या तो ये सब भी आपकी ही तरह पागल हैं, या फिर, या फिर···मैं···मैं···मैं पागल···नामुमकिन···कहाँ से पागल हूँ। आपको पहचानता हूँ, राजा रामनाथ को पहचानता हूँ, यह दयानाथ हैं, यह लालारामकिशोर हैं, अभी मुझसे मुंशी इकबाल शंकर बातें कर रहे थे। मैं खूब समझ रहा हूँ। आप सब मुझे पागल कह रहे हैं। इतना सब समझ रहा हूँ। और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर मैं पागल हूँ ? ईंट मैं नहीं मारता, काटता मैं नहीं। नहीं साहब,' नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ने मुड़ कर कहा : सच कहिये मैं पागल हूँ। या छुटके राजा पागल हैं ?

'पागल तो नवाब साहब आप ही हैं,' श्यामनाथ ने कहा— 'पर उससे क्या हुआ ?'

'उससे कुछ हुआ ही नहीं ?' नवाब साहब ने चौंक कर कहा। 'क्यों साहब बताइये' उन्होंने फिर उपस्थित लोगों से कहा : मैं इल्तिजा करता हूँ बताइये···

कोई कुछ नहीं बोला। उनकी आँखें एक-एक कर सब पर डोल गईं। जिसे देखते थे वही सिर झुका लेता था, जैसे परेशान था, मजबूर था, लाचार था...जैसे वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे, क्या न करे ?

पार्टी बेकार हो चुकी थी। राजेश्वरी झाड़ी के पीछे खड़ी सब देख सुन रही थी। उसका हृदय भीतर ही भीतर आशंका से काँप रहा था। दयानाथ का चेहरा सफ़ेद हो गया था। उस भावहीन मुख पर उदासी और लाज मिल गये थे। बाकी लोग घबराये हुए थे। मुंशी इक़बाल शंकर भी अब साहस खो चले थे। चाय ठंडी हो चुकी थी। खाने के नमकीन मिठाई भी अछूते से ही रखे थे और नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा की आँखें कुछ फट गई थीं। उनकी पुतली के चारों ओर भयानक सी सफ़ेदी दिखाई दे रही थी। जैसे मरता हुआ, डूबता हुआ आदमी आखिरी तिनके का सहारा लेना चाहता था। उसके लिये एक एक क्षण अब मूल्यवान् था। संध्या के उतरते झुटपटे पर वह आँखें आदमियों को देख कर और ज्यादा फटी हुई निरवधि शून्य आकाश में अटक गईं जैसे वहाँ आवेश में कुछ खोज रही थीं।

सब ने विस्मय से देखा नवाब साहब ठठा कर हँसे और हँसते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुए बीच बीच में चिल्ला उठते थे : नहीं...दुनियाँ पागल है...मैं... मैं पागल...नहीं हूँ, नहीं हूँ...

उस भयानक अट्टहास में वह आर्त्तनाद था जो पुरानी इमारत के गिरने पर निस्तब्धता में गूँज उठता है, अब एक एक ईंट गिरती है, जिन पर स्नेह होता है, प्रेम होता है..., एक वह दुनिया गिर रही थी, जिसके भीतर भूत पैदा हो गये थे, पर इन्सान अपनी कायरता के कारण उसे छोड़ना नहीं चाहता था, उसमें चिपके रहना चाहता था...यद्यपि वह जर्जर हो चुका था, उसका गिरना अवश्यं-भावी था...आवश्यक था...

नवाब साहब का अट्टहास और भीषण हो उठा।

सब एकदम अपनी अपनी कुर्सी छोड़ कर उठ खड़े हुए, केवल श्यामनाथ इस समय सिर झुकाये कुछ सोच रहे थे। उन्हें जैसे मालूम ही नहीं था कि नवाब साहब हँस रहे थे...

८

नवाब साहब बेहोश होकर गिर पड़े। मौलाना हामिदअली ने उन्हें सँभाल लिया।

'लिटा दीजिये, लिटा दीजिये,' कवि संपादक रामकृष्ण ने कहा।

'सोफ़ा पर, सोफ़ा पर,' वासुदेव ने सुझाया।

'चाचाजी।' दयानाथ ने पुकारा—'चाचाजी।'

श्यामनाथ चौंक उठे। कहा, 'क्या है?'

'नवाब साहब बेहोश हो गये हैं।' वासुदेव ने शीघ्रता से कहा। दयानाथ देखता रहा।

'बेहोश हो गये हैं?' श्यामनाथ ने अत्यंत विस्मय से पूछा, 'कब? क्यों? अरे! यह तो सचमुच बेहोश हैं!'

'जी हाँ। ज़रा आप इधर बैठ जायें तो यहाँ लिटा दें इन्हें।' दयानाथ ने नम्र याचना की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ज़रूर, ज़रूर' कह कर श्यामनाथ उठ खड़े हुए।

'ले आइये, ले आइये' लाला रामकिशोर ने कहा। मौलाना तथा मुंशी जी और दयानाथ उन्हें इधर ही ले आये।

नवाब साहब को लिटा कर वे लोग हवा करने लगे। डाक्टर हीरालाल अब काम में लगे। राजेश्वरी भीतर ही भीतर छटपटा रही थी। वह पर्दा नहीं करती थी। कांग्रेस के आंदोलन में भाग भी ले चुकी थी। एक बार पुलिस जिन औरतों को लौरियों में भर कर ले गई थी उनमें राजेश्वरी भी थी। बहुत दूर ले जा कर पुलिस ने छोड़ दिया था। वहाँ से वह काफ़ी रास्ते पैदल ही आई थी। पति को जेल, जुलूस, समिति, सभा में देखने जाती थी; तब भी मुँह खोले ही घूमती थी। वैसे चाचाजी का उसने लिहाज़ किया था। पर दो बच्चों की माँ थी। जीवन का काफ़ी संकोच जा चुका था। इस समय वह भीतर से गुलाबजल ले आई। प्रायः सब ही कांग्रेसी होने के नाते राजेश्वरी को जानते थे। उन्होंने नमस्ते किया।

डाक्टर हीरालाल ने सिर उठा कर कहा : कोई बात नहीं। दिमाग़ को सदमा पहुँचा है। अभी होश में आजायेंगे। पर आगे क्या होगा मैं उसके बारे में कुछ नहीं कह सकता।

श्यामनाथ ने कहा : पागल होने का खतरा है ?

डा० हीरालाल ने केवल उनकी ओर देखा। कहा कुछ नहीं। कुछ देर तक गुलाबजल छिड़का गया।

डा० हीरालाल ने उठ कर कहा : अच्छा इन्हें आराम करने दीजिये। यहाँ कौन रहेगा ?

श्यामनाथ कुर्सी पर बैठ गये। बोले : जी मैं हूँ तो।

'और कोई भी रहना चाहिये।'

'क्यों आप क्या मुझे पागल समझते हैं।'

'जी नहीं, कहीं आप सो गये।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैं ? कुर्सी पर सो जाऊँगा ? अब तो सिर्फ़ मैं रहूँगा। और किसी की रहने की ज़रूरत नहीं। जाओ बहू। भीतर जाओ। दया तुम अपने दोस्तों को पहुँचा आओ।'

दयानाथ जब बँगले के फाटक पर पहुँचा तो शर्म से उसका सिर झुका हुआ था। उसने दबी ज़बान से कहा : मैं आप लोगों से माफ़ी चाहता हूँ। यह सब गड़बड़ मेरी ही वजह से आपको झेलनी पड़ी। मैं आशा करता हूँ आप क़तई बुरा न मानेंगे।

'आप भी कैसी बातें करते हैं दयानाथ जी ?' रामकृष्ण ने कहा : उन्होंने दयानाथ की कठिनाई को समझ लिया था। सब ने दयानाथ को सांत्वना दी। जो हँसते हुये आये थे, आये थे कि और हँसेंगे, इस समय कुछ परेशान और झेंपे हुए थे।

जब वे सब चले गये दयानाथ भीतर चला गया। राजेश्वरी सहमी सी खड़ी थी।

उसने कहा : यह क्या हुआ ?

दयानाथ ने चकित होकर कहा : देख तो चुकी हो। बेहोश हो गये।

'इतना छेड़ा ही क्यों ?'

'हमने छेड़ा था ?'

नहीं तो। जब जानते थे कि पागल हैं तो तरह देनी चाहिये थी। मुन्शी जी तो सितार लेकर बैठ गये कि हर तार से गीत निकाल दूँगा।

दयानाथ मुस्कराया।

'अब क्या होगा ?' राजेश्वरी ने फिर पूछा।

'ठीक हो जायेंगे।'

'फिर ?'

'मेरे खयाल से अभी कुछ दिन रहेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ऐसा क्यों सोचते हैं ?'

'जायेंगे भी कहाँ ? जगह ही कहाँ है !'

दयानाथ की इस बात से राजेश्वरी को कुछ तसल्ली हुई। दयानाथ ने कहा : मुझे ज़रा दवा लाना है जा कर। नौकर कहाँ गये हैं ?

'बुलाऊँ ?'

'नहीं। उनको घर पर रहने को कहो। दवा लेकर लौटते हुए कुछ और भी काम है, वह भी करता आऊँगा। घबराओगी तो नहीं ?'

'जल्दी आ जाना।'

'अभी गया, अभी आया।' कह कर दयानाथ चले गये।

राजेश्वरी अकेली रह गई। नौकर चिलम तमाकू में लगे अपने क्वार्टर्स में बैठे थे। बच्चे खेल कर नहीं लौटे थे। वह जाकर बरामदे में खड़ी हो गई। उसने देखा नवाब साहब होश में आ गये हैं। सोफ़ा पर अधलेटे से बैठे हैं और चाचा जी सामने बैठे कुछ बातें कर रहे हैं। उसे चैन आया। कुछ देर तक वह देखती रही। नवाब इस बीच में ठठा कर हँसे। उनकी उस हँसी को सुनकर वह थर्रा गई क्योंकि अभी कुछ देर पहले वह ऐसे ही हँसे थे। जब उसे कुछ ख़ास बात दिखाई नहीं दी तो वह अन्दर आकर खाना बनाने में लग गई।

अँधेरा होने पर सब जगहे बत्तियाँ जलने लगीं। जब दयानाथ भीतर घुसा वह घबराया हुआ था। उसने कहा : वे लोग कहाँ गये ?

'कौन लोग ?' राजेश्वरी ने चौंक कर पूछा।

'चाचाजी और नवाब साहब ?'

'बाहर बैठे हैं।'

'नहीं हैं ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ड्राइंगरूम में होंगे।'

'नहीं घर में भी नहीं हैं।'

'तो शायद कहीं घूमने न निकल गये हों?' राजेश्वरी ने आशंका से कहा।

'मुझे भी ऐसा ही लगता है।' कहकर दयानाथ ने हृदय का बोझ हटाने का प्रयत्न किया।

आधी रात बीत चली; किंतु दोनों ही नहीं लौटे। दयानाथ और राजेश्वरी की चिंता बहुत बढ़ गई। पुलिस को रिपोर्ट दीगई। हुलिया बताने पर कोतवाली के दरोगा ने कहा: ऐसे ही दो आदमी उन्नाव से भागे थे। राजा रामनाथ के भाई सुपरिन्टेन्डेंट साहब श्यामनाथ जी और नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा। आपकी तारीफ़।

'मैं दयानाथ हूँ। वकालत करता हूँ। श्यामनाथ जी मेरे चचा हैं।'

'अक्खा,' दरोगा ने हँसकर कहा: तब तो आप हमारे गुरु भाई हुए। हम इन्हीं एस० पी० साहब के मातहत थे। बड़े नेक और अच्छे आदमी थे। ख्वामख्वाह तो किसी को पकड़ने ही नहीं देते थे। रिश्वत के सख्त खिलाफ थे। मगर उनके तो भाई राजा हैं, खुद बड़ी तनख्वाह पाते हैं, हम यह सब कैसे कर सकते हैं? न करें भूखे मरें। मैं तो साहब एक पाई रिश्वत लेना कैसा होता है, हरामखोरी से नफ़रत करने वाला इसे इंसानियत के खिलाफ समझता था। मगर अब क्या किया जाये? हुक्म आ गया है, घोड़ा खरीदो। कहाँ से खरीदें...

दरोगा का भी लंबा किस्सा था।

दयानाथ जब घर पहुँचे तब सन्नाटा था। बच्चे सो गये थे। राजेश्वरी बाट जोह रही थी।

'कुछ हुआ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'रिपोर्ट लिखा दी।'

'फिर ? गिरफ्तार हो जायेंगे ?'

'मैं कैसे कहूँ ?'

'ददुआ सुनेंगे तो क्या कहेंगे।'

'कहा करें ?' दयानाथ ने काटकर कहा—यह एक मजबूरी है और कुछ नहीं। यही नहीं, बल्कि···

रात अब गहरी हो चली थी, ठंडक सी कोने-कोने में व्याप्त होने लगी थी। दयानाथ कमरे में टहल रहा था। राजेश्वरी बैठी शायद फूल काढ़ रही थी। किंतु अतिथियों का पता नहीं लगा था। दयानाथ सोने चले गये।

५ परिच्छेद

१

मल्लाहों की पुकार से जहाँ की लहरें विक्षुब्ध हो जाती हैं जहाँ का पानी मटमैला सा दिखाई देता है, जहाँ कहीं अँग्रेज़ों के स्त्री पुरुषों के जोड़ों भरे स्टीमर, कहीं पतले दुबले बंगालियों से भरी नावें, एक नहीं अनेक प्रकार की चुहल और उदासी लिये बहती रहती हैं जहां धूंए की रेखाएँ उठ-उठ कर शून्य में लय हो जाती हैं, जहाँ दूर-दूर तक जल प्रसार-दिखाई देता है, वही हुगली नदी है। उसके किनारे एक विराट् नगर है। दूर-दूर तक महानगर का गौरव अक्षुण्ण फैला हुआ है। जैसे रोम साम्राज्य में ग़ुलामों से भरा रोम, जैसे दासों से भरा पाटलिपुत्र, जैसे गलीज़ और भूखे नंगों से भरा लंदन संसार के इतिहास में विख्यात हैं, वैसे ही कभी कलकत्ता भी था; किन्तु अब वह गोरे, चीनी, देशी, तथा अन्य देशीय व्यापारियों का अड्डा बन गया है। इसी जगह सबसे पहले सत्ता और स्वार्थ के मतवालों ने अँग्रेज़ों से मिल कर अपने देश से ग़द्दारी की थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाल खोल कर गलमुच्छों वाले अँग्रेज जहाँ छोटे जहाज़ लाते थे, अब भाफ के जहाज़ वहाँ चिकने गालों वाले गोरों को भर लाते हैं मगर इन चार पीढ़ियों में भी इन गोरों का लुटेरापन मिटा नहीं है और वे भारतवासियों को ठोकर ही मारते रहे हैं।

यहाँ सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है—धन। धन जिसके होने से मनुष्य रक्त शोषक है, उसके सामने लाखों आदमी हड्डी के ढाँचे बने घूमते हैं, स्त्रियाँ नंगी होकर नाचती हैं, शराब के टूटे प्यालों का ढेर लगा रहता है, मनुष्य मनुष्य को कौड़ी के भी मोल नहीं खरीदता। धन जिसके न होने से मनुष्य निर्बल है। वह वैभव एक पिशाच है जिसमें गुलाम बनने की अभिलाषा नहीं, यह सबको गुलाम बना लेना चाहता है, जैसे मनुष्य नहीं, यह एक भेड़ों की हेड़ है और कुछ नहीं। इस वैभव में लोग इतने पिस गये हैं कि न उन्हें बात करने का समय है, न एक दूसरे से सहानुभूति जताने का। वे मशीन की तरह चलते हैं।

और यह धनोपार्जन की अभिलाषा उस मुट्ठी भर उच्च वर्ग में निरंतर बढ़ती ही जाती है जैसे सुरसा का मुख बढ़ता ही चला गया था। आज इसके मुख में एक छोटा सा हनुमान घुस गया है। चोरी, डकैती, झूठ, दगाबाज़ी, हत्या, यही इस वैभव के अनेक रूप हैं जो यदि सबल के द्वारा होते हैं तो व्यापार, राजनीति, बुद्धि चातुर्य्य, और न्याय कहलाते हैं, यदि गरीब द्वारा होते हैं तो पहले दिये नामों से ही लोगों को डराया जाता है। यहाँ मजबूर होकर मनुष्य शरीर बेचता है, आत्मा और चेतना बेचता है, क्योंकि जिसके पास धन है वह मनुष्य नहीं रहा है। उसका शरीर तक बेडोल हो चुका है। धन ही यहाँ सब कुछ होना चाहता है।

रात को लोग फुटपाथों पर मरते हैं, गंदी गलियों में औरतें बच्चे जनती हैं, बीमारियाँ हवा पर उड़ती हैं, एक-एक पल में भीषण ईर्ष्या के धूंए से आकाश घुटता है, और लुटेरे हर टूटते दम पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नृत्य करते हैं, जन समाज को भुलाये रखने के लिये धर्म का आडंबर खड़ा करते हैं। मनुष्य पशु की भाँति रहने के लिये विवश कर दिया गया है।

इस विराट नगर में वह हनुमान अब धीरे-धीरे बड़ा होने लगा है। मशीनों के नीचे काम करने वाले प्रतिपल अपनी शक्ति की प्रचंड हुंकार सुन रहे हैं। मिलबिला कीड़ा इंसान बनना चाहता है। उसकी भुजाओं से चलने वाली मशीनें जब सामान उगलती हैं तब सुरसा उसे निगल जाना चाहती है और मज़दूर हनुमान सा उसके बीच में अड़ना चाहता है। अभी वह उतना बड़ा नहीं कि उसका मुँह फाड़ दे, पर वह मुड़ता नहीं, टूटता नहीं, सुरसा उसे चबा जाने में असमर्थ है, वह एक-एक खून का, इन धनिकों द्वारा किये गये ठंडे खून का, माँ बहिनों की अस्मत का, अपने निरक्षर अंधकार में पड़े बच्चों के सूने भविष्य का एक दिन जो भयानक बदला लेने वाला है, इसलिये यह धनिक उसे और भी भीषण वेग से कुचल देना चाहते हैं, लेकिन असमर्थ हैं, क्योंकि इनके बिना दुनिया चल सकती है, उसके बिना एक दिन भी नहीं चल सकती।

यह हृदयहीन वैभव एक नरक से भी भीषण यातना है। यहाँ क्लर्क और बाबू अपनी मध्यवर्गीय संकुचित भीरुता लेकर आज भी धनिकों के हाथ में खिलौना बने मज़दूर, कुली और मेहनत करने वाले के सामने ढाल बन कर खड़े हैं। रंगीन सपनों में रहने वाले ये प्राणी उस विशाल दानव की पूँछ के काँटे बने इसी धरती पर खिसला करते हैं, अपने जैसे ही गरीबों के छिदा करते हैं, पर एक क्षण भी उस रक्त पीने वाले दानव से अलग नहीं होते।

धनी मनुष्य एक निरवधि हाहाकार के दाह से सदैव अतृप्त रहता है। कभी वह रेस कोर्स में शराब पीकर जूआ खेलता है, कभी वह बाज़ारों में वेश्याओं को नचाता है, कभी थियेटर पर धर्म के नाटक, सिनेमा में नैतिकता और समन्यवाद का प्रचार करके, उन अभिनेत्रियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से विलास करता है, और उसका जीवन एक भयानक कलुष है, जिसको वह बहुत से आदमियों के गेरुआ वस्त्रों में छिपा लेना चाहता है। इसने अनाथालय खोल कर यह दिखाया है कि इसके बनाये समाज में बच्चे अनाथ होते रहेंगे। इसने भीख और दान दे दे कर जताया है कि इसकी शान को क़ायम रखने के लिये समाज में कँगले और भिखमंगे आवश्यक हैं। इसने स्त्री के बंधन खड़े करके यह आवश्यक कर दिया है स्त्री सदैव लुटती रहे। इसने मनुष्य को मनुष्य नहीं समझा। विधवाओं के आश्रम बना कर इसने व्यभिचार के अड्डे बनाये हैं। इसने न्याय के लिये कचहरियाँ खोल कर दिन दहाड़े लूट, दग़ा, फ़रेब और रिश्वत का बाज़ार गर्म किया है, इसने अपनी रक्षा के लिये हिंसा करने वाली पुलिस और फौज बनाई है।

यहाँ पहला शोषक है अँग्रेज़—सर्वेसर्वा। फिर उसके साम्राज्य के स्तंभ, ज़मींदार, पूँजी-पति, पुलिस, फौज। यह लोग मिल कर दोनों हाथों से जन समाज का गला घोंट रहे हैं। इनके बाज़ार जब रात को जगमगाते हैं, तब बस्तियों में अँधेरा स्याही की तरह गीला हो जाता है। जब इनकी स्त्रियाँ होठों पर ललाई लगा कर अपने रस को वासना से रँगती हैं, तब गरीबों के घरों में बच्चों को अपनी माँ की छाती में दूध तक नहीं मिलता।

लगता है जैसे मनुष्यों की भीड़ को, मुट्ठी भर, सिर्फ़ मुट्ठी भर राक्षस, कोड़े मार-मार कर चिल्ला-चिल्ला कर चला रहे हैं और जैसे-जैसे उन मनुष्यों के रक्त की बूँदें धरती पर गिरती हैं, पृथ्वी काँपती है, इतिहास थर्रा उठता है, क्योंकि जो नया मनुष्य जन्म ले रहा है, वह इस भयानक व्यवस्था का भीषण शत्रु है, क्योंकि वह मनुष्य है जो मनुष्य को मनुष्य समझने में ही अपनी मनुष्यता का चरमोत्कर्ष समझता है। वह पाप को कभी नहीं सह सकेगा। वह इन विराट मशीनों को अपना दास बना लेगा जिनमें जकड़ा हुआ आज उसका शरीर कड़कड़ा कर टूट रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस दिन हनुमान सुरसा को सदा के लिये मिटा देगा और सोने की लंका को आग लगाकर भस्म कर देगा, वह लंका जिसमें सीता को बंदनी बनाकर रखा गया है, अपहरण ही जहाँ वैभव हो गया है।

२

रंगीन तितलियों जैसी स्त्रियों से दमकती गर्वीली चौरंगी में प्रिंसेज़ होटल के एक कमरे में मिरज़ाबेग़ एक झूलती कुर्सी में आराम से लेटे थे। उसके पास इस समय बेगम कुलसूम थीं। वे घर पर गुलनार और नरगिस बेगमों को छोड़ आये थे। मखमूर वहीं था। अज़ीज़ बहादुर कैरा के चले जाने के बाद आसानी से सब काम सुलझ गया। तीनों बेगमों को पहले से बना रखा था। मखमूर नर्गिस बेगम का कृपापात्र बन गया था और उतना अधिक बन गया जितने स्वयं मिर्ज़ाबेग़ बनने के लिये बेगम कुलसूम के तलवे चाट रहे थे। उन्होंने काफ़ी दिमाग लड़ाया। आख़िर कुछ भी समझ में नहीं आया। तब वे भीतर पहुँचे और बेगमों से परेशानी बयान की: अब नवाब तो भाग गये। काम कौन सँभालेगा? मैं क्या करूँ?

क्यों? गुलनार ने कहा: तुम ही क्यों नहीं सँभालते!

'मैं इस रियासत का कौन होता हूँ?'

'हईअल्ला!' बड़ी बेगम ने कहा: मालिक के पुराने हमदर्द हो।

'वो तो ठीक है, मगर क़ानून तो ऐसी इजाज़त नहीं देता!' मोटे मिरज़ा बेग ने अपना एतराज़ पेश किया।

तब गुलनार ने आँखों में आँसू भर कर कहा: किये कराये पर पानी फिर गया? इसीलिये उन्हें पागल बनाया था? तब तो बड़ी बढ़-बढ़ कर बातें बनाते थे, अब तुम्हारी वह अक्ल कहाँ गई?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिरजाबेग़ सिर नीचा करके सोचने लगे। फिर उन्होंने सिर उठा कर कहा : मुझे कौन बचायेगा ?

'तुम्हें मारने वाला है कौन ?' कुलसूम ने पूछा।

'नवाब साहब।'

'वह अब पागल हो गये। वे कहाँ ? तुम आगे की बात करो मिरज़ा बेग', नर्गिस बेगम ने टोका।

'मालिक तो वे ही हैं बेगम साहिबा। आपके या मेरे कह देने भर से तो काम चल नहीं जायेगा, आखिर हर बात को खड़ा करने के लिये कुछ सहारा भी तो चाहिये ? अगर कोई औलाद होती तो उसके सहारे अर्ज़ी दी जाती कि बेगमें उस बच्चे की परवरिश कर रही हैं। सरकार मदद दे। कोर्ट आफ़ वार्ड्स की कोई जरूरत नहीं। मगर यहाँ औलाद की बजाय माँ-बाप हैं। हम खुद अभी औलाद हैं। लेकिन अब चूँकि औलाद नहीं, लिहाज़ा सरकार कोर्ट आफ़ वार्ड्स में सारी जायदाद ले लेगी और फिर यह जायदाद तबाह हो जायेगी। हमारी जगह कोई और खाने लगेगा और निहायत बेरहमी से खायेगा, क्योंकि माले मुफ़्त···' मिरजाबेग ने हाथ उठा कर नचाया, 'फिर' ? हम, और आप, सबकी तनख्वाहें बँध जायेंगी और पहले नवाब साहब थे अब बहुतों की कोर्निश करनी पड़ेगी।

'वाह मिरज़ा साहब,' गुलनार ने हाथ नचा कर कहा : इसी पर बड़ी डींगे हाँकते थे कि यह कर दूँगा, वह कर दूँगा। मियाँ, ज़री चेहरा तो देख लेते अपना। न इधर का रखा, न उधर का। तुम्हारा क्या हुआ ? हमारी तो यह और वह दोनों दुनिया बिगड़ गई।

बेगम रोने लगी। कुलसूम शून्य दृष्टि से देख रही थी। बड़ी बेगम का रोना देख नर्गिस की आँखों में भी डर समा गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब मखमूर साहब भीतर आये तो सबके चेहरों पर स्याही थी। मोटे मिरज़ावेग बीच में बैठे हैं। गुलनार बेगम रो रही हैं। कुलसूम और नर्गिस दोनों सिर झुकाये उदास बैठी हैं। मखमूर की कुछ भी समझ में नहीं आया। वह कुछ देर चुपचाप देखता रहा, फिर धीरे-धीरे आकर नीचे बैठ गया। नर्गिस बेगम ने देखा तो फौरन कह उठीं : आ गये मखमूर मियाँ! लो जो होना था सो तो हो चुका।

'माफ़ी चाहता हूँ हुजूर। ताबेदार बिल्कुल नहीं समझा कि क्या होना चाहिये था, जो नहीं हो सका।' उसका स्वर नितांत निश्चिंत था। उसके हृदय में न शंका दिखती थी, न वेदना। सबने उसे आश्चर्य से देखा।

मखमूर ने कहा : इजाज़त हो। जान बख्शी जाये।

'बख्श दी भाई, बख्श दी,' मिरजावेग ने चिढ़कर कहा, 'अब कुछ कहोगे भी?'

'तो हुजूर उधर छोटे नगले में एक पीर साहब आये हुए हैं। आपका इजाज़त हो तो मैं उन्हें बुलवाऊँ। वे शायद कुछ मदद कर सकें। हाँ, बड़े पहुँचे हुए आदमी हैं। खुदा का उन पर साया है अल्लाह वाले हैं।'

'यह तो ठीक है', गुलनार बेगम ने कहा, 'मगर वे क्या कर सकते हैं?'

'हुजूर जान बख्शी जाय।'

'मखमूर मियाँ!' नर्गिस ने चिढ़कर डाँटा, 'होश की दवा करो। तुम्हारी दिल्लगी इस वक्त बिल्कुल नहीं सुहाती।'

मखमूर मियाँ लचके और अंदाज से बोले : तो सरकार! वह वह करिश्मे उनके हाथों में हैं, चाहें तो कलक्टर को अंधा करवा दूँ, चाहें तो सारी हुकूमत दिलवा दूँ, और चाहें तो एक पुड़िया में चाँद से बच्चे का दीदार करा दूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेगमें बच्चे का नाम सुन कर जरा झेंपीं। मिरजाबेग ने मुड़कर कहा : क्या कहा ? ऐसा हो सकता है ?

गुलनार बेगम ने चिल्लाकर कहा : सब झलजलूल बात है। यह सब रुपया खाने की बात है। तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो हमसे सीधे ही जो माँग लो।

'लाहौलविलाकूवत।' मखमूर ने कहा, 'आप भी मुझ पर कैसे शक करती हैं। चमड़ी उधड़ जायगी मगर जब तक आपका इशारा नहीं होगा, लहू तक नहीं निकलेगा। हाँ ! बेगम साहिबा !'

'मरे तुम्हारा पीर,' नर्गिस ने कहा : हमें नहीं चाहिये कोई मुआ। अब यहाँ बच्चा कहाँ से आयेगा ?

'आयेगा।' मिरजासाहब ने भारी और संजीदा आवाज में कहा : आना ही होगा। वर्ना सारी जायदाद कोर्ट हो जायेगी और सब तबाह हो जायेगा।

उसके दृढ़ निश्चय को सुनकर सब स्त्रियाँ चौंक उठीं। मखमूर मियाँ को दोनों लचके लगे और वे मुँह फाड़े अवाक् देखते रहे। मिरजाबेग ने कहा : कह दूँ ?

'इसमें भी कोई पूछने की बात है ?' गुलनार बेगम ने पूछा।

मिरजाबेग अब स्वामी के दर्प से बात करने लगे। उन्होंने कहा : मखमूर मियाँ ! और वह जहेज क्या हुआ ?

'वह सब माल भीतर रखा है।' कुलसूम ने उत्तर दिया।

'ठीक है,' मिरजाबेग कहने लगे—'नवाब पागल हो गए। मगर यह न समझिये वे चुप होंगे। अगर उन्होंने घर की तलाशी करवा दी और माल बरामद हो गया तो ?'

'हई अल्ला !' तीनों बेगमें एक साथ कह उठीं। उनके चेहरे फक पड़ गये। मखमूर तो रोने लगे, सत्वर। उस समय वह रोने की भद्दी आवाज उन सबके हृदय को दहला गई। उन्हें लगा वे सब गिरफ्तार हो रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जी हाँ। घबराने की कोई बात नहीं है,' मिरजाबेग ने फिर कहा, 'लेकिन उन्हें मालूम ही क्यों होगा ?' और वह ठठाकर खिलखिल करके हँसे। उनकी मोटी स्थूल काया एक बार मखमूर की ओर झुकी और जब वे सीधे हुये तो उनसे संतुलन नहीं हुआ। वे बेगम कुलसूम पर झोंका खा गये। सबके चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई देने लगी।

मिरजाबेग ने फिर कहा : वाह-मियाँ मखमूर। तुम्हारा जिगर तो ज़रा कमज़ोर है। म्याँ इतनी-इतनी सी बातों से अगर घबराओगे तो आखिर नाव पार कैसे लगेगी ?

'मैं शर्मिन्दा हूँ, मैं शर्मिन्दा हूँ।' मखमूर ने उनके घुटने पकड़ कर कहा : अब जरा तरकीब बताइये।

'पहले कसम खाइये, कुरआनशरीफ की, जो मैं कहूँ वह बस हम पाँचों के भीतर ही रह जायगा।'

'मंजूर-मंजूर,' सबने कसम खाई।

'अब दूसरी कसम खाइये कि जो मैं कहूँ वही किया जायेगा।' सबने एक दूसरे की ओर देखा।

'हाँ, हाँ घबराने की बात नहीं। मैं कोई परेशानी की बात नहीं कहूँगा। निहायत आसान सी बात है।'

'कहिये भी,' नर्गिस ने कहा।

'पहिले कसम खा लीजिये।' मिरजाबेग अडिग रहे।

'अच्छी बात है।' सबने कह कर दबी जबान में कसम खाई।

'अब कहिये,' नर्गिस ने कहा, 'आप भी बड़े हठीले हैं।'

मिरज़ाबेग इस बात को सुनकर ऐसे बाग़ बाग़ हो गये, जैसे कोई कोयल थे, जिससे किसी सुन्दरी ने हठीले कह दिया हो। सबकी उत्सुक आँखें उन्हें चुराने लगीं। उन्होंने कहा : मैं कलकत्ते जाता हूँ। वह समान वहीं ले जाऊँगा। वहीं बेचूँगा।

'अकेले ही ?' कुलसूम ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अकेले नहीं बेगम। आप मेरे साथ चलेंगी। गुलनार बेगम यहाँ घर सँभालेंगी।' और टेढ़ी नज़र से मखमूर को देख कर कहा—नर्गिस बेगम और मखमूर मियाँ बाहर नज़र रखेंगे। और मैं और कुलसूम बेगम कलकत्ते में सामान बेच कर आयेंगे। और अभी एक बात और है।

'वह क्या ?' सबने उत्सुकता से फिर पूछा।

'वह यह कि आप मशहूर कर दें कि कुलसूम बेगम के ज़रिये ही नवाब साहब का खान्दान चलने वाला है।'

'मिर्ज़ा साहब !' कुलसूम ने चीख कर कहा, 'आप पागल हो गये हैं।'

'मैं पागल नहीं हूँ बेगम। आप औरत हैं, ख़ता मुआफ हैं। जो काम आप कर सकती हैं, वही मैं अर्ज़ करता हूँ। यह मेरे बाँये हाथ का खेल है। मैं चार बल्कि ६ महीने का हमल है, यह बड़े से बड़े डाक्टर से साबित करवा सकता हूँ। फिर बच्चा अपने पास आ गया और काम बन गया।'

'बच्चा ! कैसा बच्चा !!' नर्गिस ने पूछा।

'कलकत्ता ! कलकत्ता ! बेगम ! कलकत्ता। वहाँ से लाना होगा एक अच्छा सा खूबसूरत सा बच्चा। यहाँ खबर उड़ा दो जायगी कि मिरज़ाबेग बेगम का इलाज करवाने कलकत्ता गये।'

मिरजाबेग की बात ने असर किया। पहले तो सब चौंके। खामोश बैठे रहे। कुलसूम बेगम का चेहरा लाल हो गया; लेकिन बात ठोस थी। निहायत आसान थी। ज़म गई।

आज मिरज़ाबेग ने कुलसूम की ओर देखा और हँस कर कहा : बेगम ! सारा सामान बेच दिया। लो यह रकम तुम्हारे हवाले कर दूँ। लेकिन एक बात है और भी तो लोग हैं। सभी में रकम बँटे तो ठीक होगा।

उसके होठों पर एक कुटिल मुस्कराहट थी।

बेगम ने पूछा : कितने में बिका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अस्सी हज़ार नकद हैं।' मिरज़ावेग ने पाँव फैला दिये। बेगम के कानों में आवाज़ गूँज उठी।

३

उसी समय द्वार पर एक स्त्री दिखाई दी। उसके साथ एक नव-युवक था। अज़ीज़ बहादुर के यहाँ देखा हुआ व्यक्ति एकदम मिरज़ा-बेग को कुछ परिचित सा दिखाई दिया। उन्होंने कहा: आइये आइये, तशरीफ लाइये।

दोनों भीतर आ गये। बेगम साहिबा वैसे तो पर्दा करतीं पर यहाँ उस ढंग का पर्दा करके वे अपनी असलियत को खोलना नहीं चाहती थीं। लिहाज़ा वैसे ही बैठी रहीं। उनके बैठने पर मिरज़ावेग ने कहा आपको शायद मैंने कहीं देखा है।

उस युवक ने कहा: ऐसा ही मुझे भी लगता है।

'वही तो। लेकिन कुछ बता सकते हैं कहाँ? आप राजा साहब रामनाथ जी को जानते हैं वही जो बानापुर के ताल्लुकेदार हैं?' मिरज़ावेग ने कुछ याद करते हुए कहा।

'जी हाँ। मैं उन्हें जानता हूँ।' युवक ने जैसे टालते हुए उत्तर दिया। 'आपको शायद मैंने नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर क़ैरा के यहाँ.....'

'तावेदार को मिरज़ाबेग कहते हैं।'

युवक ने उछल कर कहा: और आपने मुझे नहीं पहचाना! मैं हूँ उमानाथ!

'उमानाथ!' मिरज़ावेग ने चौंक कर पूछा: अमा तुम तो खो गये थे!

'तो अभी मैं मिला ही कहाँ हूँ?'

'फिर भी आखिर? यहाँ कहाँ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'लंबा किस्सा है, वक्त आने दीजिये, सुना दूँगा। आप? आप भारतीय फ़िल्म कम्पनी में हिरोइन हैं मिस नीरा। मगर हज़रत यहाँ क्यों हैं? और आपके साथ, वे अदबी माफ़ हो.....'

उमानाथ ने बेगम साहिबा कुलसूम की ओर देखा जो एक सुन्दर स्त्री थी। बेगम ने सिर झुका लिया। मिरज़ाबेग ने कहा : वक्त आने दीजिये। में भी बता दूँगा, और वे जोर से हँस दिये। उमानाथ इस समय बेहतरीन सूट पहने था। उसके गोरे रंग को जैसे मेहनत ने अब कई रोज से छोड़ ही दिया है। सिर्फ़ आँखों के नीचे कुछ काले निशान हो गये हैं। उसने टेढ़ी निगाह से बेगम को देखते हुए कहा : इधर से गुज़रते हुए निगाह पड़ी तो लगा था जैसे मैंने आप को कहीं देखा है। पर अरसा गुज़र चुका था। बताइये न? पहले कालेज के हास्टेलों में रहना, फिर चला गया विलायत, लौटा तो दम मारने की फ़ुर्सत नहीं मिली। अब ज़रा आज़ाद हुआ हूँ। लंबा किस्सा है। छोड़िये। तो मिस नीरा ने कहा : चल कर पूछ ही लिया जाय। चले आये। आपलोगों ने बुरा तो नहीं माना होगा?

'बुरा?' मिरज़ा बेग ने कहा : परदेस में? और बुरा? वह फिर ठठा कर हँसे। वाह। भाई उमानाथ। वाह! जी न चाहा, सैर सपाटे के लिये कलकत्ता आ गये।

'जी हाँ' उमानाथ ने बेगम की ओर उड़ती नज़र से देख कर कहा : वह तो मैं देख ही रहा हूँ।

मिरज़ाबेग हँसे। बेगम मन ही मन क्रुद्ध थीं। मिरज़ाबेग ने भी वार काटा। उसी नजर से मिस नीरा को देख कर पूछा : और आप क्या रोजगार या बिजारत या···

एकाएक मिस नीरा उठ खड़ी हुई। उमानाथ भी उठ पड़ा।

उसने कहा : माफ़ कीजियेगा। बगल के कमरे में ही हम लोग हैं। जरूरत पड़े तो भूल न जाइयेगा। गुलाम हाजिर है। उसने फिर बेगम को देखा और फिर उस कूल्हे मटका कर चलने वाली औरत के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीछे निकल गया जिसके पिछवाड़े पर मिरजाबेग अपनी आँखों को फिसला रहे थे। जब वे चले गये बेगम ने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया और तेज आवाज़ में पूछा : क्या देख रहे हैं मिरजा साहब ?

मिरजा अडिग रहे। कहा : देख नहीं रहा था। बदला ले रहा था। वह बदतमीज आप को घूर रहा था, मैंने इसी से उसकी उस तवायफ़ को घूरा।

बेगम भन्ना उठीं। कहा : और यही वह मेरे बारे में सोच रहे होंगे।

'लाहौलविलाकूवत बेगम। यह आप क्या बक रही हैं ?'

'बक रही हूँ ? क्या यही मेरी तारीफ़ का तरीका था ? आपके कहने से क्या ज़ाहिर हुआ होगा ?'

'ओह हो ! तो गोया यह ज़ाहिर हो जाना चाहिये था कि आप दरअसल हैं कौन ?'

बेगम निरुत्तर हो गईं। यह वह नहीं चाहती थी। उसने धीरे से कहा : मगर यह भी तो ठीक न था।

'तो बेगम आपने पर्दा क्यों नहीं किया ? मैं उस हालत में आप को अपनी बीबी ही कह सकता था। पर मेरी बीबी बेपर्दा तो हो नहीं सकती थी ! बताइये ?'

बेगम बहुत कच्ची पड़ी। उसने पलंग पर लेटकर कहा : अब यह परदेश है। जो हो वही थोड़ा।

'परदेश है तो क्या ?' मिरजाबेग कह उठे : आपने तो अभी कलकत्ता भी नहीं देखा। बेगम एक बात कहूँ ?

'कहिये।'

'आपने जिन्दगी नहीं देखी।'

'कभी आपने अँग्रेजी नाच गाने देखे हैं ? आज़ादी से मोटर में घूमी हैं, सिनेमा देखा है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'नहीं।' उस स्वर में एक कमज़ोरी थी। एक लालच था जैसे वह सब नहीं किया, हाय, वह सब नहीं किया। छब्बीस वर्षीय सुंदरी एक अधेड़ की पत्नी थी और वह भी उस अधेड़ की जिसका शरीर और यौवन बहुत पहले ही शराब और ऐयाशी ने चर लिये थे। अब वह एक जलन भर थी जिसने यौवन के इस छलछलाते प्याले को खाली करने की ऐंठन महसूस की।

'बेगम।' मोटे मिरजा उठे और पलंग के पैताने बैठ गये। बोले—यह मौके बार-बार नहीं आते। जब गुलनार बेगम आई थी तब नवाब नौजवान थे और वह तब अकेली थीं। नर्गिस बेगम दूसरी हैं थीं, नहीं मैं नहीं कहूँगा।

'क्यों नहीं कहोगे?'

'बात यह है बेगम! मुझे बहुत सूना-सूना सा लग रहा है। कलकत्ते में मैं एक बार गला तक तर नहीं कर सका।'

क्यों? 'तुम्हारे डर से।'

बेगम मुस्कराई।

'तो पी लूँ सरकार?' मिरज़ा ने उठ कर कहा।

'मेरी बला से।'

'उम्रदराज़ रखे ख़ुदा आप को। उम्र हो आपकी हजार बरस, और हर बरस में दिन हों पचास हजार···'

बस-बस।' बेगम ने कहा। वह चाहती थी, मिर्जा पिये और नशे में उगल दे, आज नर्गिस का भेद। और बेगम चाहती थी कि वे रुपये जो इसकी जेब में हैं···काश यह नशे में हो और उनमें से काफ़ी रुपये वह अलग उड़ा ले···

मिरज़ा पीने लगा। बेगम ने कहा: कलकत्ते में बहुत ऐश हैं मिरजा साहेब?

'बेइन्तहा। उफ! इतने इतने! बेगम दिल में आग धधक उठती है। आग। हूक सी लगी रहती है। एक बात कहूँ?

CC-0. In Public Domain. Funding by JKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कहिये।'

'बुरा मान जायेंगी।'

'कहिये भी।'

'ज़ान बख्शी जाये।'

बेगम ऊबने लगी। उसने कहा : तो कसम ही लीजियेगा ?

'बेगम' मिरज़ाबेग ने कहा : आपने पी है, पर लुत्फ़ नहीं लिया। आज ज़रा पीकर देखिये।

बेगम सुन रही थी। मिरज़ाबेग कह रहा था : अस्सी हज़ार हैं बेगम। चार दिन में तीस हज़ार ख़र्च करेंगे। वह ऐश कि याद रह जाये। मगर ज़रा चख कर तो देखिये। उसने प्याला भरा और घुटनों के बल सामने बैठ गया। बेगम ने देखा मुस्कराई और फिर प्याला ले लिया।

बेगम आप आज़ाद हैं। गुलनार नहीं। नर्गिस नहीं। मिरजा ने झूम कर उठते हुए कहा : उन्हें तो फ़ुर्सत मिली।

बेगम ने प्याले में से धीरे से चुस्की ली और कहा : तो हुआ क्या ? क्या किया उन्होंने ?

'कुछ नहीं किया बेगम। वह तो मख़मूर की ही किस्मत थी। अल्लाह जानता है मख़मूर चुगद है। पर नर्गिस बेगम को वही अच्छा लगता है। उसी पर रहम हैं, करम हैं··· हमें कोई सहारा नहीं। कोई किनारा नहीं। मैं तो कभी-कभी सोचता हूँ कि मेरा क्या होगा ? मेरे साथ कौन है ?'

पहला प्याला ख़त्म हो चुका था। बेगम ने प्याला छोटी मेज़ पर रख दिया। उसके शरीर में लहर झनझनाने लगी थी। बड़ा वेग था। इस आज़ादी ने उसके पैरो को ज़मीन से उठा दिया था। वह अब उड़ रही थी। उसने कहा : मैं हूँ मिरज़ा साहब। मैं हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिरज़ा ने फिर से प्याला भर कर बढ़ाया : बेगम एक और !

'नहीं, अब नहीं।'

'आपको मेरे सर की कसम।'

बेगम ने दूसरा प्याला भी पी लिया। और वे खड़ी हुईं।

'मिरज़ाबेग।'

'बेगम।'

'एक गाड़ी तो लाओ। चलो ज़रा सैर कर लें?'

मिरजाबेग का मन भीतर ही भीतर आनन्द से काँप उठा।

टैक्सी में सारी बड़ी-बड़ी सड़कें घूम लीं—बस कहीं नाम दीखते थे—और कुछ नहीं। विराट् अट्टालिकाएँ, विराट् जन समाज, महान् श्रम, महान् यातना···कुछ नहीं। बेगम झूम रही थी। आज सुख था। आज उसका स्त्रीत्व सफल था। वह पागल हो रही थी। उसने कहा : मिरज़ाबेग, कमरे पर।

टैक्सी प्रिंसेज़ होटेल पर रुकी। बेगम लड़खड़ाते पाँवों से पलंग पर गिर गई।

मिरज़ाबेग उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखें जल रही थीं।

शाम को वह बहुत खुश था। बेगम एक ओर लजीली सी बैठी थी। मिरज़ा कह रहा था : कल रेसकोर्स पर चलेंगे बेगम। आज से दस साल पहले इसी कलकत्ते में नवाब अजीज़ बहादुर ने मुझे अपना साला बना दिया था। मैं क्या देख रहा था। और आज वे मेरे साले बन गये हैं! नहीं। नहीं। यह कैसे हो सकता है? तुम उनकी बीवी हो बहिन नहीं।

बेगम लेट गई। उसे नींद आ रही थी। उसने मिरज़ा से कहा : मिरज़ा प्यास लग रही है।

'पियो बेगम। यह आग पियो। इससे धूँआ नहीं निकलता, लपट निकलती है···' वह हँस रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेगम फिर शराब का प्याला पी रही थी। मिरज़ा उसके बालों से खेलता हुआ कोई गज़ल गा रहा था।

कलकत्ते का वैभव अब धधक उठा था। रात का अँधेरा चारों ओर छा गया था। दोनों सो गये।

जब रात गहरी हो गई बेगम दबे पाँव उठी। उसने चुपचाप मिरज़ा की जेब से सब रुपये निकाले। कुछ नोट हज़ार हज़ार के अलग रख लिये। बाकी गड्डी तह करके रख दी। फिर उसने अपने ढीले रेशमी लँहगे जैसे पाज़ामे के इज़ार बंद की पोल में उन नोटों को घुसा दिया और आकर अपने पलंग पर लेट रही। मिरज़ा गहरी नींद में था। वह फिर उठी। चुपचाप दरवाज़ा खोल कर बाहर गई। देखा बगल का कमरा खुला था। मिस नीरा और उमानाथ शराब की चुस्कियाँ ले रहे हैं। उस सिनेमावाली की पोशाक में से उसकी अधनंगी देह दिखाई दे रही थी। उमानाथ की सिगरेट का धूँआ, उस अभिनेत्री की सिगरेट के धूँऐ से मिलकर झूलने लगा।

बेगम चुपचाप देखती रही। उसे लगा वे आदर्श थे। दोनों स्वस्थ, दोनों लुभावने, दोनों युवक। इस विचार से वह एकदम बहुत व्याकुल हो गई। कमरे में घुस कर उसने द्वार बंद कर लिया और पलंग पर लेट कर रोने लगी।

अचानक मिरजा बेग चौंक उठे। कहा : बेगम ! रोती हो ? फिर जैसे वह समझ गया था, उसने समझाया : मौज करना सीखो बेगम। मौज। दुनिया मौज चाहती है। नर्गिस को देखो। तुम अभी जवान हो। पैसा है, उम्र है। हुस्न है, औहदा है। तुम्हें क्या चाहिये ? तुम भी किन दकियानूसी पचड़ों में पड़ी हो। बेगम, जो खा पी लिया, वही अपना है। जब घर चलेंगे तब वही रोना है। यहाँ क्यों बेकार रिसती हो। तुम भोली हो बेगम। जो रहम तुमने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
मुझ पर इतने दिन बाद पहली बार आज किया है, न जाने कब बेगम गुलनार और बेगम नर्गिस कर चुकी थीं। पर वह सिलसिला टूट गया। तुम तो नहीं तोड़ दोगी तोता चश्म ?

'नहीं।' बेगम कुलसूम ने कहा।

हवा कमरे में घुसी आ रही थी, खिड़की की राह।

'नवाब ने मछली का ब्याह कराया था बेगम, लेकिन कभी दिल पर हमदर्दी से हाथ नहीं रखा···'

बात अधूरी रह गई। बेगम ऊँघने लगी थी। मिरजा धीरे-धीरे बेगम के पलंग की ओर बढ़ रहा था; क्योंकि रात अब ठंढी हो चली थी।

छठा परिच्छेद

१

नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा और श्यामनाथ जब घूमते-घूमते काफ़ी दूर निकल आये तो नवाब सड़क के किनारे बैठ गये। थक श्यामनाथ भी गये थे। पास बैठते हुए उन्होंने कहा : चलिये, अब लौटना चाहिये। दया इंतज़ार कर रहा होगा।

'करने दीजिये,' नवाब ने कहा : अब तो मैं लौट कर वहाँ नहीं जाना चाहता।'

श्यामनाथ चौंके। कहा : क्यों ?

'वह दुनिया अब नहीं रही छुटके राजा। आप मेरे दोस्त हैं ? उन्होंने अचानक पूछा।

'हाँ, हाँ, क्यों ?'

'कैसे दोस्त हैं ? असली या नकली।'

'क्यों आप मुझे नकली समझते हैं ?'

'मैं तो आप को असली समझता हूँ छुटके राजा। ऐसा, जो ज़िंदगी में साथ भी न दे, मगर मौत के वक्त कस कर पल्ला पकड़ ले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब कौन है मेरे साथ ? अफ़सर, राजा, नवाब, कांग्रेस, बीवी, नौकर साथ के ऐयाश, कोई नहीं। केवल आप हैं। बस आप। छोड़ेंगे तो नहीं ?'

उस स्वर में एक करुण याचना थी। श्यामनाथ का हृदय झन-झना उठा। उन्होंने कहा : वक्त बतायेगा।

अज़ीज़ बहादुर ने झुक कर उनके पाँव पकड़ लिये और रोने लगे। 'नहीं छुटके राजा। आप का दिल समन्दर की तरह है। आप सचमुच बड़े हैं। मुझसे बड़े हैं। ऊँचे, इतने ऊँचे कि मैं आपके टखने भी नहीं छू सकता। और यह दुनिया वाले मुझे और आप को पागल कहते हैं ?'

'बकने दीजिये,' श्यामनाथ ने बेफिक्री से कहा, जैसे वह सारी दुनिया को चुनौती दे रहे थे।

'अब मैं' नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ने कहा : अपने को नवाब नहीं कहूँगा। आपको भी छुटके राजा नहीं कहूँगा।'

'आप मुझसे श्यामनाथ कहिये।'

'और आप सिर्फ़ अजीज।'

अँधेरा हो गया था। नवाब कहने लगे : श्यामनाथ जी। यहाँ कितना करार है। यह उतरता हुआ अँधेरा मेरे दिल में चैन पहुँचा रहा है। पर्त, उस पर फिर पर्त .....सुनसान.....बहुत अच्छा है यह सब। श्यामनाथ जी अब कहाँ चलियेगा ?

'दया के घर।'

'नहीं, अब वहाँ नहीं।'

'तो फिर।'

'जहाँ किस्मत ले जाए। आपका और मेरा यहाँ है ही क्या ?'

'कुछ नहीं।'

'तो फिर चलिये।'

'लेकिन इस सब के लिये पैसे की ज़रूरत है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ठहरिये' नवाब साहब उठ खड़े हुए। उन्होंने मुड़ कर कहा : ज़रा माफ़ फ़र्माइये।

नवाब ने पजामा नीचे सरकाया। और नाभी पर बँधी हुई कोई चीज़ खोल डाली। फिर पजामा ऊपर सरकाकर वह चीज़ श्यामनाथ की गोद में फेंक दी।

'देखिये। यह भी काफ़ी नहीं है ?'

श्यामनाथ ने देखा। सोने की चार लड़ की करधनी थी।

'इसी दिन की खातिर मैं इस सोने को सबकी निगाह से छिपाये रखता था श्यामनाथ जी,' नवाब ने बैठते हुए कहा। 'आज इसे बेच दिया जाये। और उसके बाद.....'

नवाब ने अपनी तीनों उँगलियाँ दिखाईं जिस पर बड़े-बड़े हीरों वाली अंगूठियाँ थीं। फिर कमर से एक खंजर निकाल कर दिखाया। उसकी मूँठ पर पन्ने, नीलम और पुखराज जड़े थे।

'एक एक हीरा !' नवाब साहब ने कहा—'देखिये यह दो हीरे सूरत में खरीदे थे। यह वालिद साहब मरहूम ने देहली में खरीदा था। उनके वालिद साहब ने यह बड़ा वाला हीरा उन दिनों आगरे में खरीदा था। शाहनजफ़ की बेगम ने यह चौथा हीरा उन्हें खुश होकर दिया था, और यह देखिये.....'

नवाब ने कुर्ते के भीतर से हाथ डाल कर कुछ निकाल कर कहा : यह कटार और यह मोतियों की माला। कहा जाता है कि सोमनाथ के मन्दिर की लूट के बाद गज़नी पहुँची हुई यही माला और कटार एक ईरानी सौदागर के हाथ हिंदुस्तान लौट कर मुगलों के दरबार में नज़र की गई। जहाँगीर ने इन्हें नूरजहाँ के हाथों में पेश किया। बाद इसके जाटों ने देहली लूटी, और तब यह बेशकीमती माला और कटार चन्द दिनों के लिये सूरजमल ले गया। उस वक्त तख्ते देहली की इज्ज़त के लिये शाहनजफ़ ने हमला किया। वहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब साहब सफ़दर बहादुर के नौजवान साहबज़ादे, हमारे हुज़ूर दादा-जान नवाब साहब क़ादिर बहादुर की आँखें इस पर गड़ गईं। जवाहरसिंह उस वक्त अलग था। जाट दबा दिये गये। हुज़ूर दादाजान नवाब साहब कादिर बहादुर ने मोती की माला और कटार लेकर जाटों को माफ़ी दिला दी। जब रानी किशोरी आँचल पसार कर आईं तो नवाब नजफ़शाह ने तोड़े लुटाये। जब जवाहर सिंह ने आगे चलकर देहली और आगरा फतह करके गंगा में तलवार धोयी, तब उसने हुज़ूर दादाजान से माला और कटार वापिस माँगी। मगर एक मेव के हाथों सवा लाख के हुक्के के पीछे वह धोखे से मारा गया, और हिम्मत बहादुर गोसाईं ने जाटों को चौदह महीने के लिये दबा दिया। उसने हुज़ूर दादाजान से सुलह की और तब से हुज़ूर दादाजान, हुज़ूर वालिद मरहूम, के ज़माने से यह इसी खान्दान में चली आ रही है। श्यामनाथ जी, अगर वक्त आया तो मैं इन्हें भी बेच डालूँगा। उनका गला रुँध गया। उन्होंने फिर उस माला और कटार को ऐसे देखा जैसे वह उनकी सबसे प्यारी चीज़ें थीं। उनका दिल इस वक्त टुकड़े-टुकड़े होरहा था। वे कहते रहे—यह सूरतके हीरे, कोई पुर्तगाली सौदागर लाया था। शौहरत थी कि कोई यूरुप का सौदागर जब चीन से लौटा था तो अपने साथ लाया था। चलिये श्यामनाथ जी, मेरा गला खुश्क हो रहा है।

दोनों उठ कर लौट चले। नवाब बाज़ार में एक बड़े जौहरी के यहाँ घुसे और एक अंगूठी पेश करके कहा : कीमत अँकवाना चाहता हूँ।

जौहरी कोई गोरा-सा खत्री था। उन्हें जानता था। बड़े अदब से उठ खड़ा हुआ। कहा : अक्खा! ज़हे किस्मत। तशरीफ़ रखिये। आपकी तारीफ़?

बानापुर के ताल्लुकेदार, रईस, राजासाहब रामनाथ, आनरेरी मैजिस्ट्रेट के छोटे भाई पंडित श्यामनाथ तिवारी, कल तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
सुपरिण्टेंडेंट पुलिस थे, क्यों उन्होंने नौकरी छोड़ दी। तफरीह के लिये नौकरी की थी। कहीं चलती है ? वे हँसे।

'अजी सरकार,' जौहरी ने कहा : आप लोग अगर यह काम करेंगे तो दुनिया में क्या तो खान्दान की इज्ज़त, क्या शान। तफ़रीह की बात और है.....

सूरत वाली अंगूठियों में से एक बिकी। नवाब साहब ने दस हजार से शुरू करके जौहरी के सात हज़ार पर तोड़ किया। नवाब जैसे-जैसे तारीफ़ करते थे जौहरी दब कर कहता था : सरकार रात है। वाह, इसके हम क्या दाम लगायेंगे। यह तो रईसों की चीजें हैं···वाह··· क्या चमक है। रात को दिन बना रहा है...

सात हज़ार लेकर नवाब साहब दूकान से उतरे। सीधे दोनों स्टेशन जाकर कैल्नर में पहुँचे। नवाब ने कुछ पी। श्यामनाथ ने सिर्फ़ चाय ली।

एकाएक नवाब ने कहा : श्यामनाथ जी चलिये।

दौड़ कर टिकिट लिया। पैसिंजर ट्रेन थी। एक ही सेकेंड क्लास का डिब्बा था। उसमें चढ़ गये। डिब्बे में कोई नहीं था। मालूम किया, चलने ही वाली है। यह वह गाड़ी थी जो कानपुर से दलमऊ होकर रायबरेली पहुँचती थी; जिसकी चाल पर अनेक कविताएँ लिखी जा चुकी हैं। रास्ते में अत्यंत सुन्दर दृश्य थे। सघन हरियाली दूर से ही पन्नों और नीलम जैसी चमकती थी। रात को ही उन्नाव निकल गया। दिन में उन्होंने देखा, काले-काले किसान और देहाती, उनकी औरतें—धोती पहनने वाली, सादी और मैली, जैसे सारी ज़मीन जल गई थी, जिसके धूएँ से यह अधपेट खाये गाँव वाले झुलस गये थे, उनके चेहरों पर बेबसी थी। दुख था। भिखमंगे गाड़ी रुकते ही गाते थे। बच्चे कला दिखाते थे। छोटे-छोटे ज़मींदार, अपना सफेद चुन्नट वाला अंगरखा पहने, पट्टेदार बालों पर खिजाब लगाये, पान चबाते, हाथों में हुक्के लिये तीसरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दर्जे में ही शान से घुस आते थे। पके फलों की डालियाँ रेल में लदवाते थे। राह में न चाय मिलती थी, न कुछ खाने को साफ़ चीज़ थी। वह हड्डियों जैसे कुल्लड़ों में लड्डू थे। नवाब साहब ने भी एक कुल्लड़ खरीदा। 'आप भी लीजियेगा एक कुल्लड़ ?'

श्यामनाथ ने मना कर दिया।

धान की लहलहाती फ़सलें अभी शुरू नहीं हुई थीं। पानी ज़रूर भर गया था, जिनमें कहीं-कहीं झुके हुए मर्द और औरत बो रहे थे। दूर बहुत से मज़दूर कोई सड़क कूट रहे थे, कुछ पेड़ों की घनी छाया में बैठे सुस्ता रहे थे। छोटे-छोटे स्टेशनों पर प्लेट फ़ारम के पास ही कहीं ऊँची मस्जिद या ऊँचा मंदिर दिखाई देता। एक के बाद एक गंज गुज़रता जा रहा था। लगता था पैदल यात्रा हो रही है।

रायबरेली स्टेशन की छोटी सी इमारत पर साँझ की छाया लोटने लगी थी। जब गाड़ी रुकी दोनों उतर कर सीधे वेटिंगरूम में चले गये। पंडित श्यामनाथ ने आरामकुर्सी पर पाँव फैला दिये। उन्हें इस समय भूख लग रही थी। नवाब साहब के पेट में चूहे दौड़ रहे थे। इस अच्छी रेल में सफ़र करने का अच्छा नतीजा मिल चुका था। दोनों ने पहले तो पानी मँगवा कर हाथ मुँह धोये और फिर पंडित श्यामनाथ पूरियाँ ख़रीद लाये। इन दिनों यद्यपि स्टेशन की पूरियों में घर का स्वाद नहीं था, फिर भी वासलेट घी, या वनस्पति घी का प्रचलन नहीं था। भूख इतनी तेज़ थी कि दोनों ने पेट भर कर पूरियाँ खाईं। कपड़े कुछ मैले हो गये थे। वास्तव में थे वे अब भी साफ़, परन्तु अब पहले जैसे भकाभक सफेद नहीं थे। खा पीकर अपने-अपने हाथों से ही अपनी-अपनी पत्तलें बाहर फेंक दीं और दोनों विचार करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized By eGangotri and Sarayu Trust

'अब कहाँ चलोगे ?' श्यामनाथ ने पूछा। 'कहीं टिकना चाहिये...'

'जहाँ अपना कोई न हो, हमें कोई न जानता हो। श्यामनाथ जी, मैं दुनिया से अपना मुँह छिपा लेना चाहता हूँ। हम और आप दो आदमी हैं। हमें सादगी से रहने के लिये एक हज़ार रुपया महीना काफ़ी है। करीब पाँच हज़ार की करधनी बिक जायेगी। वह सोना मैंने इसीलिये छिपा रखा था। पाँच हज़ार। इस वक्त जेब में है करीब सात हज़ार। बारह हज़ार। साल भर तो यों गुज़र गया।'

'वाह अजीज़ साहब। हज़ार रुपया महीना क्या कीजियेगा' श्यामनाथ ने टोक कर कहा : मैं तो भइया के पास लौट जाऊँगा।

'भइया के पास ?' अज़ीज़ बहादुर ने उदास होकर कहा : तो देख ली आपकी भी दोस्ती।'

श्यामनाथ यह नहीं सुनना चाहते थे। उन्होंने कहा : अच्छी बात है, मैं नहीं जाऊँगा।

'नहीं आप चले जाइये। आपके आराम में कमी पड़ जायेगी।'

'अज़ीज़ बहादुर !' श्यामनाथ ने तीखी आवाज़ में कहा, 'आप एक दोस्त की बेइज़्ज़ती नहीं कर सकते।'

अजीज़ बहादुर मुस्कराये। कहा : मैं तो देख रहा था ! खरे उतरे। आदमी यार सोने के हो। हाँ, तो फिर सात सौ रुपया महीना रखूँ ? फिर तीन अँगूठियाँ हैं, मोतियों की माला है, बहुत है !'

श्यामनाथ ने कुछ नहीं कहा। अजीज़ बहादुर कहते रहे : कलकत्ता बहुत बड़ा शहर है। वहाँ हमें कोई परेशानी नहीं होगी। मेरे दो एक मुलाकाती हैं। प्रिंसेज़ होटेल का मैनेजर मेरा तावेदार ही समझिये। एक बार एक मेम उसने मेरी खिदमत में पेश की थी जिसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने कमरे में भी नहीं घुसने दिया। तबसे वह मुझे बड़ी भारी फ़क़ीर समझता है···

अजीज़ बहादुर हँसे। 'अब वह सब भी छोड़ दूँगा लेकिन एक चीज़ है। कम से कम दो पेग मुझे रोज़ाना चाहियें ? पंडित जी। उनके बिना मैं ज़िंदा नहीं रह सकता।'

'बस दो,' श्यामनाथ ने कहा—'जिस दिन तीन हुए उसी दिन मैं छोड़ कर चला जाऊँगा।'

'लाहौलबिलाकूवत' अजीज़ बहादुर ने कहा : तीन ? आप देखिये सवा दो नहीं होंगे। और' नवाब ने झुक कर कहा : दुनियाँ मुझे पागल समझती है ?

बात का व्यंग्य समझ कर श्यामनाथ ने कहा : मेरे बारे में भी यही अफ़वाह है। बस बदमाशों की हाँ में हाँ मिलाये जाओ···

दोनों ठठाकर हँसे। उस हँसी से वेटिंग-रूम में पड़े हुए लाला लोग चौंक उठे।

इसी समय स्टेशन पर जोर का शोर होने लगा। इधर से उधर भागते हुए लोगों ने प्रकट कर दिया कि रेल आ गई है।

२

कमरे के एकांत में पड़ा-पड़ा उमानाथ अपने अतीत को दुहरा रहा था। हाथ की सिगरेट जल चुकी थी। वह पंडित रामनाथ तिवारी का दूसरा पुत्र, दयानाथ का छोटा और प्रभानाथ का बड़ा भाई था। कितना अद्भुत था वह सारा अतीत जो बीत चुका था।

पढ़ लिख कर उमानाथ अपनी पत्नी महालक्ष्मी की गोद में अपने छोटे बालक अवधेश को छोड़ कर विलायत गया था। वहाँ से लौटा तो एक जर्मन स्त्री हिल्डा क्रैमर को लेकर जो हफ़्ते भर कलकत्ते रही, फिर लौट कर विदेश चली गई। वहीं मॉरिसन नाम का अँगरेज़ मिला जो अपने को कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ का भारतीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
प्रतिनिधि कहता था। उससे हिल्डा कमरे में एक छोटे से सिगरेट केस के पीछे लड़ाई हुई। हिल्डा ने कम्युनिस्ट पार्टी, जर्मनी की सेक्रेटरी होकर भी उसे दे देने की बजाय उसका मुँह अपने बड़े-बड़े नाखूनों से नोंच लिया। उसने उसका हाथ मोड़ दिया। उमानाथ चुप रहा, वह नारी स्वतन्त्रता का हामी था, स्त्री पुरुष को बराबर समझता था। मॉरीसन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का उत्तरदायित्व उमानाथ को देकर जब जाने लगा, तो उसने एक मेम से उसकी बिल्लियाँ छिपाकर रकम वसूल की। उमानाथ ने उसे अपनी पत्नी ब्याहने की राय दी। कानपुर जाने पर उमानाथ ने दयानाथ और कांग्रेस का मज़ाक उड़ाया। ब्रह्मदत्त को, जिस दिन वह डिक्टेटर बन रहा था, उस दिन उमानाथ ने रोक दिया।

एक-एक करके उमानाथ को याद आने लगा। परिणाम यह हुआ कि पुलिस को टोह लग गई कि वह कम्युनिस्ट था। उसने रिश्वत देकर अपने को बचाया और विलायत जाने को पिता से रुपये माँगे। उन्होंने इंकार कर दिया। तब उसकी पत्नी महालक्ष्मी ने उसे अपने गहनों का डिब्बा दे दिया, जिसे लेकर वह कलकत्ते भाग आया।

इस पूरे समय उमानाथ अपने को कम्युनिस्ट समझता रहा। अपने को सर्वोच्च क्रान्तिकारी समझता था। लेकिन कलकत्ता आते ही उसके सुपने चूर-चूर हो गये।

उमानाथ को लगा वह बहुत अधिक बेचैन था। उसने मेज़ पर रखी बोतल उठा कर अपने गिलास में शराब डाली और गट गट करके पी गया।

'यह क्या कर रहे हो ?' देखा, द्वार पर नीरा खड़ी थी।

'एकदम ऐसी नीट। और इतनी ज्यादा ?' उसने पास बैठ कर कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैं नहीं जानता। मेरा भविष्य क्या है नीरा ? लेकिन जो कुछ गुजर चुका है, उसे मैं भूल जाना चाहता हूँ।' उसके स्वर में एक दुख था, एक कचोट थी। उसने उसके बालों पर हाथ फेर कर कहा—'मुझे बताओ। किसलिये तुम उमानाथ होकर भी बाहरवालों से हीरालाल कहकर अपना परिचय देते हो ? किसलिये तुम इतने उदास हो। तुम, मुझे निश्चय है, किसी अच्छे खानदान में पैदा हुए हो। मेरी तरह एक मात्र अभिनेत्री भी नहीं, जिसकी समाज में कोई जगह नहीं हो सकती, एक बाजारू औरत, जो अपने आपको पैसे के लिए बेचती रही है।'

उमानाथ ने उसकी गोद में मुँह छिपा लिया। दोनों चुप रहे। काफी देर बीत गई। तब उमानाथ ने अपना मुँह उठाया और कहा : तो सुनोगी मेरी कहानी ?

'सुनूँगी।' नीरा ने कहा—'मुझे वह कहानियाँ अच्छी लगती हैं जिसमें अपमान से व्याकुल होकर हृदय कराहता है, मुझे लगता है, मैं अकेली ही नहीं हूँ। इस संसार में बहुत से हैं जो दुखी हैं, जो अपने आपसे ऊब चुके हैं।'

उमानाथ ने उसके स्वर की वेदना में एक सहानुभूति पाई। इधर उसका विश्वास उठ चुका था। उसने कहा : जब मैं विलायत से लौटा था तब पश्चिमी सभ्यता की बाहरी चकमक ने मुझे डुबा दिया था। मैं समाज में एक क्रांति करना चाहता था। मैंने जर्मनी में मार्क्स नाम के आदमी की किताबें पढ़ी थीं। वहीं कुछ जवान लड़कों और लड़कियों से जान पँहिचान हुई। वे ऊँचे व्यापारियों के के घराने के तरुण थे। 'मजदूरों का राज' नारा लगाने वाले वे लोग रूस की बातें करते थे। मैं भी उनसे प्रभावित हो गया। जब मैं हिन्दुस्तान लौटा तो हिल्डा क्रेमर नामकी एक जर्मन स्त्री के साथ। मैंने उससे विवाह कर लिया था। आज मैं सोचता हूँ, उन थोड़े से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

जर्मन युवकों ने मुझे धोखा दिया था। वे सब नाम की खातिर कम्युनिस्ट हो गये थे। हिल्डा सेक्रेटरी बन गई थी। पर बाद में मुझे मालूम हुआ कि वे सब फासिस्ट बन गये हैं, सब अब मजदूरों पर गोलियाँ चलाने की टोह में लगे हैं। वे व्यापारियों के बेटे थे, वे लड़कियाँ धोखेबाज और नाम चाहने वाली थीं। उनको मैं कम्युनिस्ट समझता था। मैं जानता हूँ तुम मेरी बात पूरी तरह समझ नहीं सकोगी। पर सुनो नीरा। मुझे सुख मिलता है। मेरी पत्नी महालक्ष्मी एक सती और साध्वी स्त्री थी। पढ़ी-लिखी नहीं थी। जब कि मेरा फर्ज उसे पढ़ाकर अपने साथ तैयार करना चाहिये था मैंने एक अँग्रेज से उसकी शादी की बात की। अच्छा हुआ मैंने यह महालक्ष्मी से नहीं कहा। पर जब मैंने बताया कि दूसरी शादी कर चुका हूँ तब भी वह बिगड़ी नहीं। बेचारी मजबूर थी। अब मुझे मालूम हुआ, अँग्रेज हिंदुस्तान में कितनी चालों से रहते हैं। वह अँग्रेज जिसका नाम मॉरीसन था, बना हुआ कम्युनिस्ट था। उसी ने मुझे गिरफ्तार करवा देना चाहा। उफ़! कितनी भयानक भूल थी। मैं नहीं, नीरा, मैं उस कठिन पथ पर नहीं चल सकता। मजदूरों का राज होगा, होता रहेगा, पर तब तक मैं नहीं रहूँगा। मैं अपने सुखों को नहीं छोड़ सकता।

जब मैं कलकत्ते आया और विदेश भागना चाहता था मुझे एक दिन एक आदमी ने रोका। पूछा : आपका नाम प्रभानाथ है? मैंने कहा : नहीं। वह मुस्कराया। शायद समझा मैं झूठ कह रहा था। मैंने बताया, प्रभानाथ मर चुका था। मैं उसका भाई उमानाथ हूँ। कम्युनिस्ट हूँ। यह मैंने तब कहा जब उसने बताया कि पहिले एक क्रांतिकारी था। वह मुझे जिस घर में ले गया वह एक गली में था, अँधेरी सी थी वह गली। उस कमरे में तीन व्यक्ति थे। बातचीत में मालूम हुआ उनके नाम थे—अपूर्व गंगोली, अविनास घोष, हरिपद मलिक। वे सब कम्युनिस्ट हो चुके थे क्योंकि व्यक्तिगत क्रांति से वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऊब चुके थे। उन्होंने जान लिया था कि खाली बहादुरी ही काफ़ी नहीं है। उसके साथ-साथ समाज को भी जगाना चाहिये। उस समाज में मज़दूर वर्ग ही सबसे अधिक क्रांतिकारी हो सकता है। एक नई दुनिया जहाँ कोई किसी को लूट नहीं सकेगा।

उन लोगों की कठिन जिंदगी को देखकर मैं घबरा गया। मैंने देखा, नीरा, उस दिन लगा मैं मर जाऊँगा, मेरी आँखों के सामने से पर्दा फट गया—मैं कम्युनिस्ट नहीं था, मैं सिर्फ नाम का भूखा था। मैंने कभी यह नहीं समझा था कि गरीबों की यातना कितनी भयानक है।

लेकिन अब मैं उस सबको भूल जाना चाहता हूँ। नहीं मैं कम्युनिस्ट नहीं था, नहीं हूँ, और न हो सकूँगा। मैंने उस पथ को छोड़ दिया। और...और...

'और' नीरा ने पूछा।

'मैंने पुलिस को बता दिया कि मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ। मैं फिर रिश्वत देकर छूट गया।'

'तब फिर तुम अब हीरालाल बन कर क्यों रहते हो?'

'इसलिये कि अब जिस बाज़ारू ज़िंदगी की मुझे चाट पड़ गई है, उसको छोड़ कर मैं घर नहीं जाना चाहता। महालक्ष्मी सुन्दर है, अच्छी है, पर मुझे वह नहीं चाहिये, वह ठंडी है। मुझे लपट चाहिये, तुम जैसी...'

नीरा हँस दी।

'घुड़दौड़, जूआ, शराब, औरत, व्यापार, सट्टा, झूठ, फरेब, रईसी की शान, जो भी आजकल की सभ्यता है, मैं उसमें डूब गया हूँ। मुझे क्या चाहिये। कुछ नहीं। पैसा? बेशुमार। लेकिन मुझे एक चीज और चाहिये।'

नीरा ने आँखें उठा कर देखा।

'स्त्री का प्यार।' उमानाथ ने झुक कर कहा। 'ताकि मैं जलूँ तो मुझे लगे मैं सिर्फ़ पिघल रहा हूँ। मिट नहीं रहा हूँ। मरने दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीरा। किस्मत से आदमी को आदमी मिलता है। तुम कहाँ थीं? मैं कौन था? यहीं मिले, अचानक एक दिन और तुमने मुझे अपनी मेहरबानियों से ढँक दिया।'

नीरा ने कहा: जो मरें उन्हें मरने दो। अब यह बताओ तुमने उस थ्येटर कम्पनी के बारे में क्या सोचा। खोलोगे कि नहीं?

'उसके बारे में मैंने बात की है। सेठ रतनचंद तो तैयार है। मगर उसकी एक शर्त है।'

'मैं जानती हूँ।' नीरा ने मुस्करा कर कहा।

'तुम तैयार हो?'

'तुम्हारी क्या राय है?'

'इसमें मैं क्या कह सकता हूँ?'

'कितना रुपया दे देगा?'

'कम से कम एक लाख!'

'एक लाख!' नीरा ने उछल कर कहा: फिर हम तुम शहर-शहर में घूमते फिरेंगे। सारी दुनिया अपना घर होगी। किसी से भी अपनापन नहीं.....जाम...भरा जाम...कभी भी खाली नहीं होगा...' लगा उसके नेत्र जल उठेंगे। वह उठ खड़ी हुई।

'क्यों?' उमानाथ ने कहा। 'कहाँ?'

'अपने घर जाती हूँ?'

'रात को आओगी?'

'कोशिश करूँगी। हाँ यह पड़ोसी कौन है?'

'एक नवाब का मुसाहिब है।'

इसके साथ यह औरत कौन है?'

'मेरे साथ तुम कौन हो?'

नीरा ने आँखें तरेर कर कर देखा।

'अब रूठ गईं।' उमानाथ ने हँस कर कहा। नीरा भी हँस दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'उमानाथ.....' नीरा ने कहा, किंतु उमानाथ ने बीच में ही काट कर कहा—हीरालाल। मैं उस जीवन को भूल जाना चाहता हूँ, नीरा, जिसमें सम्मान की इच्छा थी। अब मैं वह सब नहीं चाहता न मेरे कोई है, न मैं किसी का हूँ।

वह उदास सा फिर झुक गया। जैसे मशीन उठती है, उसका हाथ अपने आप बोतल उठा कर गिलास में शराब उड़ेलने लगा। नीरा ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'छोड़ दो नीरा। इतनी निठुर न बनो।'

'नहीं, अब बहुत हुआ।'

'और थोड़ी सही। यह मुझे मंज़िल तक पहुँचा देगी।'

'मैं कहती हूँ अब रहने दो। अपने लिये न सही, मेरी ही खातिर मान लो।'

उमानाथ ने नीरा की ओर देखा और धीरे से कहा जैसे वह हवा से बात कर रहा था : मैं गिर चुका हूँ, बहुत तेज़ी से गिर रहा हूँ। राह में रुकावट न डालो। उससे मुझे ठोकर लगेगी। पर गिरना नहीं रुकेगा इसलिये मुझे सहूलियत से गिर जाने दो, वहाँ अँधेरे में जहाँ कोई नहीं जानता।

लेकिन नीरा ने उसका हाथ नहीं छोड़ा।

३

दिन ऐसे बीतता था जैसे रात और दिन का फ़र्क अब नहीं दिखाई देता। मिरज़ाबेग एक दिन एक आदमी को लाया। उसके साथ एक बच्चा था। बहुत छोटा बच्चा। शायद पन्द्रह दिन का। था अच्छा गोरा-गोरा बच्चा। बेगम ने देखा और उस सूखे आदमी से पूछा : इसकी माँ है ?

'जी हाँ रानी साहिबा, है।'

'और वह इसे हमें देने को तैयार है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जी हाँ, सरकार। बनो करे भी क्या ?'

'लेकिन उसका दिल दुखता होगा ?'

'आप बड़ी दयालु हैं ?' उस आदमी ने मुस्करा कर कहा, जैसे वह पराजित था।

'तो' कुलसूम ने कहा : वहाँ ले जाकर तो हम इसके ऊपर ध्यान दे सकेंगे, पर यहाँ से इसे ले कैसे जायेंगे ?

'उसका इंतज़ाम भी हो गया है,' मिरज़ाबेग ने कहा : इनकी बीबी इसके लिये तैयार है। वही चल कर पहुँचा आयेगी। वहाँ जाकर इन लोगों को लौटा देंगे।'

'क्यों जी ठीक है ?' बेगम ने पूछा।

'ठीक न होगा,' मिरज़ा ने कहा : इनका बच्चा एक नवाब बनेगा। यहाँ ये मियाँ जी क्या खिला कर पालेंगे उसे। वह आराम मिलेंगे उसे। बल्कि मैंने तो राय दी है कि महीने दो महीने बाद में ये लोग भी वहीं आ जायें। हम इन्हें मुलाज़िम रख लेंगे। क्यों बेगम ?

'मंज़ूर।' बेगम ने कहा, 'इसमें ये लोग भी पास ही रह कर देख सकेंगे। ठीक है। क्यों जी ठीक है ?'

उस आदमी ने सिर झुका कर कहा : आप मालिक हैं जो चाहे करें। मुझे क्या उज्र हो सकता है। जहाँ रोटी मिलेगी। मैं मेरी औरत वहीं आ जायेंगे।

'अच्छा तो तुम अब जाओ। जिस दिन हम जायेंगे उस दिन बुलवा लेंगे। हाँ, इस बच्चे की माँ से कहना तैयार रहे। ठीक है ?'

वह आदमी उठा। उसने झुक कर कहा : जी हाँ मालिक।

उसके चले जाने पर बेगम ने कहा : आप इसे कहाँ से ढूँढ़ लाये ?

'इसमें भी कोई मुश्किल है ? कलकत्ते में सैकड़ों भूखे हैं जो बच्चे देने में कभी नहीं हिचकिचाते। फिर मैं तो एक शादी वाले को लाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ । यहाँ तो सैकड़ों ऐसे पैदा होते हैं, जिनकी माँ नहीं जानती कि उनका बाप कौन है ?'

'सो क्यों ?'

'रईस ! रईसी ! वह क्यों भूल गईं आप ? यहाँ जो आता है वह एक औरत रोज़ बदलता है और जो औरतें आती हैं वह भी यही करती हैं ।'

बेगम का हृदय भारी हो गया ।

'तो इस तरह यहाँ बड़ा अंधेर होता है ।'

'अब बेगम ! हम और आप यह कहेंगे तो कैसे दुनिया चलेगी—' मिरज़ाबेग ने टोका, अरे समझिये, इसकी किस्मत जाग उठी ।

अप्रिय प्रसंग छिड़ गया था । मिरज़ाबेग उठ खड़े हुए ।

'अब कहाँ ?' बेगम ने पूछा ।

'ज़रा जाऊँ । काम तो सब हो ही गये । सैर को जी चाहता है । आप भी चलिये न ?'

'इस वक्त ?' बेगम ने कहा—'मैं तो ज़री नींद लेना चाहती थी । रात की खुमारी से सिर कुछ भारी हो रहा है ।'

लेकिन मिरज़ाबेग नहीं माने । बोले : तो मैं तो हो आऊँ । क्यों इजाज़त है ?

'कब तक लौटेंगे ?'

'आप कम से कम चार पाँच घंटे तो आराम फ़र्माएँगी ।'

'उससे ज्यादा देर न लगाइये ।'

'मेरी क्या मजाल,' मिरज़ा ने झुक कर कहा और फिर धीरे-धीरे झूमता हुआ कमरे से बाहर हो गया । बेगम उसको जाते हुए देखती रही । वह दबे पाँव उसके पीछे-पीछे चल कर पर्दे के पीछे खड़ी हो गई और उसने देखा—मिरज़ाबेग एक टैक्सी में बैठ कर चला गया । उसकी गाड़ी धीरे-धीरे आँखों से ओझल हो गई । और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बेगम ने बुड़बुड़ाया, 'हज़ार ऐयाशियाँ करें। समझते हैं मर्द हैं, लेकिन याद रखना मैं भी औरत हूँ। मैं भी यह काम जानती हूँ।

वह लौटी और उसने एक बारगी बोतल खोल कर प्याले में शराब डाली और जब शराब चमकी तो उसके गले से एक खुशी की गरगलाती सी आवाज़ निकली। बेगम ने एक प्याला पिया। दूसरा पिया और वह जब उठी तब उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे, धीरे-धीरे। आँखों में सुरूर छा रहा था। वह शीशे के सामने गई और उसने मुँह पर पाउडर लगा कर होठों पर लाल रंग की कूँची फेरी। फिर गालों पर हल्की ललाई लगाई, फिर बाँये गाल पर एक काला तिल बनाया और आँखों में सुरमे की सलाई फिराई। वस्त्रों को ठीक किया और लेवेन्डर की शीशी उठा कर ढेर सारी बूँदे अपने कपड़ों पर छिड़क लीं। उसके बाद वह हँसी। उस हास्य में एक उन्माद था, एक विभोर आनंद की छलना थी, जैसे बाँध तोड़ देने वाली नदी की ऊँची लहरों की हुम्मस गूँज रही थी। और अब वह प्रचंड धारा, लबलबाती बाढ़ किसी से टकरा कर बिखर जाना चाहती थी। बेगम ने ग़रारे पर हाथ फिरा कर देखा। ठीक है। अभी उसके इज़ारबंद में हज़ारों के नोट हैं। मिरज़ा इसे अभी तक नहीं जान सका है। उसकी गर्दन गर्व से उठ गई।

उसने कमरे के द्वार की ओर तेजी से क़दम बढ़ाया। लेकिन द्वार पर पहुँचते ही वह गति धीमी पड़ गई। बेगम कुछ देर सोचती रही फिर वह धीरे-धीरे लौट आई और कुर्सी पर धम से बैठ गई। उसकी स्फूर्ति मिट रही थी, उसकी हिम्मत जवाब दे रही थी।

'नहीं, नहीं, मैं नहीं···' उसके होठों ने बुड़बुड़ाया और हाथ ने फिर प्याला भरा। शराब गले में लकीर खींच कर उतर गई जैसे किसी ने भीतर मीठे चाकू से काट दिया कि सारा जिस्म भीतर एक ज़बान हो गया, रस लेने वाला। वह अपने आप हँसी और अबकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बार वह मस्ती से द्वार की ओर चल पड़ी, विभोर, नशे की गुलाबी में झूमती हुई।

४

दरवाज़ा बंद था। धीरे से थपथपाहट हुई। उमानाथ इस समय कोई तस्वीरों की विलायती पुस्तिका देख रहा था। उसने पूछा : कौन ?

कोई जवाब नहीं मिला। उसे लगा वह डर गया था। पुलिस ? लेकिन अब पुलिस क्यों ? जो भी हो अब तो खोलना ही पड़ेगा। उसने कहा : ठहरिये।

उठ कर गाऊन पहन लिया। रेशमी लंबा चीनी चोग़ा पहन कर उसने धीरे से द्वार खोला। और देख कर हठात् उसके मुँह से निकला : आप !

उसे विश्वास नहीं हुआ था, सामने बेगम कुलसूम को देख कर वह सकते की सी हालत में खड़ा रहा। बेगम ने भीतर घुस कर दरवाज़ा भेड़ दिया और कहा : डर गये ?

'आप !' उमानाथ को विश्वास नहीं हुआ।

'क्यों ?' जैसे बेगम के लिये यह कोई बात ही नहीं।

'मैं इसीलिये चौंक गया।' उमानाथ ने समझौता करते हुए कहा।

'मेरा वक्त नहीं कटता था। मैंने आपके काम में खलल डाला ?' बेगम ने पूछा। वह मुस्कराई।

'कतई नहीं। मेरी किस्मत खुली जो आप ने मुझे क़दम बोसी का मौका तो दिया।' उमानाथ ने निहायत अदब से जवाब दिया। एक बार उसकी ओर टेढ़ी नज़र से देख, फिर बेगम मुस्कराई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमानाथ अब नज़दीक हो चला था। वह सब कुछ समझने लगा था। उसने दो क़दम चल कर अत्यंत नम्रता से, अपनी कुर्सी की ओर हाथ उठा कर कहा, 'तशरीफ़ रखिये।'

बेगम उस गद्दादार कुर्सी पर बैठ गई। उसके बैठ जाने पर उमानाथ भी सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। फिर उसने घुटनों पर हाथ बाँध कर झुक कर पूछा, 'कलकत्ता कैसा लगा?'

'आप उमानाथ साहब! मुझसे पूछते हैं?' यह···

'जी मैं उमानाथ नहीं, हीरालाल हूँ' उमानाथ ने एकदम काट कर कहा। बेगम चौंक पड़ी।

'फिर उस रोज़···' उसने पूछा जैसे वह साथ ही साथ याद भी करती जा रही थी कि कहीं वह भूल तो नहीं गई। किंतु उमानाथ ने उसके संशय को मिटा दिया। 'जी हाँ, वैसे ही···' उसने कहा: मिरज़ा साहब ने कहा तो फिर मैंने सोचा क्या हर्ज़ है अगर वे मुझे उमानाथ ही समझते रहें।

दोनों मुस्कराये।

बेगम ने कहा: आप बड़े दिलचस्प आदमी हैं।

'ताबेदार किस लायक है।' उसने संकोच से उत्तर दिया।

'आप यहाँ अकेले ही ठहरे हुए हैं?' बेगम ने भौं उठा कर पूछा। जैसे वह कुछ और भी जानना चाहती थी।

'जी हाँ। मैं दुनिया में अकेला ही हूँ।' उस समय उमानाथ रहस्यमय लग रहा था।

'और आपके साथ वह थीं न, माफ़ कीजिये, मुझे पूछने का कोई हक़ तो नहीं है,' बेगम ने उस पर दृष्टि गड़ा कर दाँतों में जीभ काट ली।

लेकिन उमानाथ ने निहायत बेतकल्लुफ़ी से स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया: वह मेरी दोस्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जी हाँ, उस रोज़ रात को मैंने देखा था, आप और वह बैठे थे···शायद दरवाज़ा गलती से खुला रह गया था। मैं आई थी, पर आप लोग बातों में मशगूल थे!'

उमानाथ झेंपा। बेगम हँसी। उसकी हँसी में एक विभोर सी तरलता थी। उमानाथ जवाब देना चाहता था पर उसके पास शब्द नहीं थे। वह कुछ भी उत्तर नहीं दे पाया। बेगम गंभीर सी हो गई और एक अजीब मौजी ढंग से कहने लगी: उसमें क्या हुआ हीरालाल साहब। कलकत्ता है न? आप अकेले हैं। वे भी शायद अकेली ही हैं। आप लोग आज़ाद हैं। यह कहने के साथ उसके मुँह से एक सर्द आह निकली। उमानाथ इस प्रसंग को छोड़ना चाहता था, उसने टालने की खातिर कहा: मिरज़ा साहब आपके···

बेगम के मुख पर एक छाया डोल गई, उमानाथ रुक गया।

'जी हाँ, जी हाँ।' बेगम ने टालते हुए कहा, 'आपका वतन कहाँ है?'

'सारा जहान। जहाँ सोता हूँ वहीं बिस्तर लगा लेता हूँ। और कोई परेशानी नहीं। न घर है, न कोई हमारा हमदर्द। उम्र होटलों में कटी, मरे अस्पताल जाकर। और कुछ नहीं। लेकिन इसी को मेरा दिल कहता है, मैं सबसे अच्छा पाता हूँ। बेगम। आप लोग घर गिरस्ती के लोग हैं। मैं वह सब खो चुका हूँ।'

बेगम ने उसे अत्यंत प्रभावशाली पाया। उसने कहा: आप में एक बात बहुत बड़ी है। आप को किसी की फ़िक्र नहीं। आप आज़ाद हैं। हम लोगों में वह कहाँ? हम लोग बँधे हुए हैं। और बेगम ने जैसे अपनी बात का सारांश इकट्ठा करने के लिये क्षण भर कुछ सोचा और धीरे से कहा, 'सचचुच आप बड़े सुखी हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्री का वह समर्पण, जब वह गृहस्थी को बुरा कहती है, प्रकट करता है कि वह अपने बंधनों से कितनी ज्यादा ऊब चुकी है; परेशान हो चुकी है। अब उमानाथ की आँखों में धीरे-धीरे एक चमक जाग रही थी। वह चमक यौवन की पिपासा थी जो कामुक आदमियों में जागती है। तनिक सी सहानुभूति उसे जागृत करने में सफल हो जाती है। बेगम सुन्दरी थी यह अब उमानाथ की आँखों में उतर आया था। वह उसे घूर रहा था और बेगम उसकी ओर न देख कर उसे अधिक मौका दे रही थी। कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर जैसे उमानाथ जाग उठा।

वह उठ कर बोतल और दो गिलास निकाल लाया। लाकर सबको मेज़ पर रख दिया।

'मुझे' उसने गिलासों में उँड़ेलते हुए कहा—'ज़रा पसंद है।'

'उस रात भी मैंने यही देखा था।'

'लीजिये।' जैसे उमानाथ ने उसकी उस बात को नहीं सुना। उसका हाथ बढ़ गया जिसमें गिलास था। सोडा उफन आया था।

'माफ़ कीजिये।' बेगम ने कहा : बस अब नहीं।

सोडा शराब में मिल कर बैठ गया था। हाथ बढ़ा ही रहा। उमानाथ ने कहा, 'क्यों साहब? यह शौक तो लाज़मी है।' उसके स्वर में एक याचना थी। उसने कहा : आपको एतराज हो सकता है। पर उसमें क्या कोई बहुत बड़ी बात है आज तो मेरी खातीर ही सही। मैं इसे अपने ऊपर अहसान समझूँगा। 'लीजिये न?'

उसने हाथ का गिलास बेगम के अधबढ़े हाथ पर रख दिया। गिलास सँभालना पड़ा। बेगम ने मना नहीं किया। कहा : तो फिर···

'जी हाँ,' उमानाथ ने कहा : मिरजा साहब कब तक लौटेंगे।

बेगम ने एक घूंट पीकर कहा : शाम तक। दो तीन घंटे बाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहीं से गाने की आवाज़ आ रही थी। उस स्वर में एक करुण अतृप्ति थी, वह जो मन को ढँक लेती है और अनजाने ही सिर हिलने लगता है। बेगम के कपड़ों की लेवन्डर की बू अब धीरे-धीरे उमानाथ के दिमाग़ पर असर करने लगी थी।

दोनों एक दूसरे की ओर देखते रहे। हाहाकार करता कलकत्ते का विराट वैभव और नरक-यातना बहे चले जा रहे थे। दोनों को उससे कोई मतलब नहीं था। दोनों का पशुत्व जाग रहा था। वह समाज का बंध जो पशु को मनुष्य बना सकता था, अपने विकारों के कारण उसे धीरे-धीरे पशुता की ओर ठेल रहा था।

और बज रही थी नसों में खून की धड़कती रफ़्तार, जिसके लाल-लाल डोरे अब आँखों पर छलक आये थे और इन नीम नशीली आँखों में एक फुफकार थी, जो एक दूसरे को डस लेना चाहती थी, जैसे सारा संसार थम गया था और वे दो ही रह गये थे और कोई नहीं।

उमानाथ अपना गिलास फिर भरने लगा। इस बार उसने पहले से ज्यादा भरी और पीते हुए फिर उसकी ओर उसी उन्माद से देखने लगा। उन निगाहों का विष उस कच्ची स्त्री के हृदय के समस्त संस्कारों को मूर्छित कर देने के लिये काफी था।

'मैं जिधर देखती हूँ, उधर इंसान को तड़पता हुआ देखती हूँ। कोई गरीब है कोई अमीर है। न गरीब सुखी हैं, न अमीर। अमीर के दुख तो और भी ज्यादा हैं। उसने जो ऐश बनाये हैं वे सब उस को बाँधे हुए हैं। बेगम ने झूमते हुए कहा, 'सारी दुनिया परेशान है हीSSराSSलाSSल जीSSS। दिल जिसे पसंद करता है वह उसे नहीं मिलता। और हम औरतों की ज़िन्दगी। जैसे सोने की अँगूठी में कोई ज़बर्दस्ती ही हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलम··· जड़ देता है। कोई नहीं सोचता कि उस पत्थर की कीमत क्या है? कैसा है? जाने वह पत्थर अँगूठी की खूबसूरती को बढ़ायेगा भी या नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैं जानता हूँ बेगम' उमानाथ ने कहा—'दुनिया में इंसाफ़ नहीं है। हर इंसान परेशान है। मैंने इस पर बहुत सोचा है। लेकिन बड़े-बड़े सोचने वालों ने इसका हल नहीं पाया। बहुत से लोग कहते हैं कि दुनिया अच्छी हो सकती है। लेकिन मैं सब कुछ उस दिन के लिये क्यों छोड़ दूँ। वे लड़ें, वे काम करें जिनके पास नहीं हैं। हमें सब मिला है। क्यों न उसे भोग लें। कौन जाने हम एक बार पैदा होते हैं, या बार-बार यहाँ जनम लेते हैं।' वह रुक गया। बेगम तन्मय सुन रही थी। उमानाथ ने फिर कहा, 'और बेगम मैं इसीसे सब कुछ भूल जाना चाहता हूँ। बहुत दिनों तक मैं अपने को बहलाता रहा। दुनिया को धोखा देता रहा। लेकिन असलियत यह है कि हम जिस तबके में पैदा हुए हैं, उसकी जकड़ इतनी ज़बर्दस्त होती है कि मन बार-बार उसी तरफ लौटता है। होंगे वे जो छोड़ चुके होंगे। मैं तो सब कुछ पाना चाहता हूँ। जहन्नुम में जाये यह दुनिया। जवान हूँ तो जवानी को पाना मेरा फ़र्ज है। जो दुनिया रोकती है, वही अगर मेरा सुख है, तो उसी को ढूँढ़ता हूँ। अच्छे और बुरे की फ़िक्र नहीं करता। मैं उनमें नहीं हूँ कि दुनिया की ग़लती को अपना धरम मान कर ढोल बजा-बजा कर नाचूँ, लेकिन मन ही मन काठ की तरह धीरे-धीरे घुला करूँ। आप बताइये मिर्ज़ा आपके लायक हैं?'

बेगम इस प्रश्न को सुन कर चौंक उठी। वह इसके लिये तैयार नहीं थी। इस समय उसे अज़ीज बहादुर की याद आई। उसने चाहा वह असली बात कह दे। पर उसका मतलब था कि वह पापिनी थी' वेश्या थी। यह विचार उसे रोकने लगा। लेकिन यह बात भी उड़ गई क्योंकि उमानाथ कहता रहा : एक नई ज़िंदगी। एक नया सुख। अगर मन में किसी चीज़ को हम चाहते हैं और समाज उसे पाप कहता है तो हम उसे पाप क्यों मानें? अरे भाई समाज के सामने खुले तौर पर उसे करने से समाज शोर करता है तो छिपे तौर पर करो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसा करो कि अमन और आराम में कोई खलल न आये। बहुत से बेवकूफ़ समाज से टक्कर लेते हैं।

फिर झुक कर कहा: मैं एक थ्येटर खोल रहा हूँ। वह हम लोगों के सुख का तरीक़ा होगा। मैं सुन्दर जवान मर्द औरतों को इकट्ठा करूँगा। हिंदुस्तान में काफी बेवकूफ़ रहते हैं। वे डरते हैं। मैं उन्हें हिम्मत दूँगा।

बेगम अवाक् सुनती रही।

'चलिये हम लोग भाग चलें।' उमानाथ ने कहा—'उस मोटे आदमी को देखकर मुझे लगता है कि लंगूर के पहलू में हूर आ गया है। अच्छा, माना आप सारी ज़िंदगी उसके नाम पर काट देंगी, पर आपको क्या लुत्फ़ आयेगा?'

बेगम पागल सी सुन रही थी। उसके हृदय में वेग से धड़कन हो रही थी, जिसने उसे चंचल बना दिया था। उमानाथ ने इसे पहचाना। उसने झुक कर उसके गिलास में फिर शराब ढाली और उसका हाथ पकड़ कर कहा: मैं जानता हूँ आप में इतनी हिम्मत नहीं है। मुझे इसका अफ़सोस नहीं है। लेकिन रुपयों की कमी है वर्ना मैं आपको ज़िंदगी दिखा देता। और मुझे यक़ीन है मैं अपना काम करके ही छोड़ूँगा।

'कितना रुपया चाहिये?' बेगम ने पूछा, जैसे वह अपनी शक्ति खो रही थी। उमानाथ ने प्रकट किया कि वह बिल्कुल आतुर नहीं था। बेफ़िक्री से कहा: जो भी आप दे सकें। इसे अपना ही समझ कर आप सोचिये। हम आप जैसे ज़िंदगी से ऊबे हुए एक रास्ता खोज रहे हैं।

बेगम ने अपने लंबे कुर्ते के भीतर हाथ डाला और ग़रारे के इज़ारबंद को ढीला करके पाँच नोट निकाले। फिर कपड़े ठीक करके कहा: इस वक्त तो मेरे पास ज्यादा नहीं हैं। पाँच हज़ार कल दे दूँगी। इस वक्त ये पाँच हज़ार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके हाथ में पाँच नोट काँप रहे थे। वह हाथ धीरे-धीरे बढ़ रहा था। उमानाथ ने देखा बेगम की आँखें उसे आज निगल जाना चाहती थीं। उमानाथ ने धीरे से उस हाथ को पकड़ लिया और कहा : अभी रख लीजिये। मैं आपसे ले लूँगा।

'मैं इल्तिज़ा करती हूँ।' बेगम ने धीरे से कहा।

उमानाथ ने उन नोटों को मेज़ पर रख दिया। बेगम ने अपना हाथ नहीं हटाया।

उमानाथ ने कहा : मैं इस अहसान को ज़िंदगी में कभी भी नहीं चुका सकूँगा।

'मैं कुछ नहीं चाहती।' लेकिन उसने हाथ और कस लिया था।

उमानाथ ने कहा, 'तुम बहुत अच्छी हो बेगम।'

बेगम ने विभोर होकर कहा : हीरालाल! तुम आदमी नहीं हो, फरिश्ते हो, मैं पागल हो जाऊँगी। वह हाँफ रही थी।

एक उन्मत्त पिपासा, एक ऊष्ण निश्वास और फिर यौवन का हाहाकार करता महानद गरज उठा। शिराशिरा में सुलगन सी भरता हुआ, बार-बार पुकारने लगा, मैं प्यासा हूँ, मैं अतृप्त हूँ, और जैसे अँधेरी रात में अनेक-अनेक नक्षत्र टिमटिमाते हैं, और उनकी उलझी हुई किरनें अंधकार में भटकती हैं, जिस पृथ्वी पर वे गिरती हैं उसे वे नहीं जानतीं...वे दो, दो अदृश्य स्पन्दन जो अब भीतर उच्छृंखल हो उठे और कहने लगे : ठहरो नहीं, ठहरो नहीं.....

दो घंटे बीत चले थे। बेगम कह रही थी : हीरालाल! आज मैं बहुत खुश हूँ। सचमुच मैं बहुत खुश हूँ। ज़िंदगी इतनी खुशनुमा हो सकती है यह मैं कभी नहीं सोचती थी। घर की चहार दीवारी में बंद मुझे उन्होंने एक तोता बना रक्खा था। मेरा खाविंद एक ऐयाश था जो गल चुका था। और यह मिरजा मेरा नौकर है। लेकिन आप...

'आप नहीं बेगम, तुम कहिये...' उमानाथ ने काटा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेगम की आँखों में आनंद से पानी भर आया। उसने आँखें पोछकर कहा, 'काश मैं तुम्हारी बीबी होती, तो आज हम कितने सुखी होते। चलो कहीं भाग चलें !'

'और मैं क्या कह रहा था, अभी तक। तुम समझ ही नहीं रही थीं ! वाह' उमानाथ हँस रहा था।

हठात् बेगम उठ खड़ी हुई। उसे जैसे कुछ याद आ गया था। उसने अपना सिर ढँक लिया।

'क्यों ! क्यों ? आप जा रही हैं ?' उमानाथ ने चौंक कर पूछा। बेगम ने सिर हिला कर स्वीकार किया। इशारा था मिरजा आता होगा। उमानाथ ने उठ कर पूछा, 'कल फिर मुलाकात होगी।'

'जब तक रहूँगी, रोज होगी !' बेगम ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, 'मुझे कभी भूलोगे तो नहीं !'

उमानाथ चुप था। स्त्री को जानता था। विकृत वासनावाली स्त्री से ही उसे काम पड़ता था। और यह स्त्रियाँ वादा करने वाले पुरुष को झूठा समझती हैं, यह भी वह जानता था। उसे यह भी ज्ञात था कि बड़े-बड़े वादे उसकी खुशामद पसंदी को तृप्त करते हैं। उस वक्त चुप रह जाने से ही गंभीरता होती है।

बेगम ने हाथ छोड़ दिया और कहा : कल आऊँगी। दरवाजा बंद न करना।

दोनों मुस्कराये। बेगम चली गई। उमानाथ आ कर बिस्तर पर बैठ गया। उस समय वह गंभीर चिंता में डूब गया था। नोट मेज पर सो रहे थे।

५

सारी दुपहर उमानाथ का साथ भी बेगम की आग को न बुझा सका, क्योंकि दूसरे दिन फिर संध्या समय मिरजाबेग और बेगम कुलसूम आनन्द से बैठे हुए प्यालों में शराब ढाल रहे थे। उस समय अज़ीज़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहादुर और श्यामनाथ टैक्सी में बैठे प्रिंसेज होटेल की ओर चले आ रहे थे।

'मैं उन्हें जानता हूँ श्यामनाथ जी,' अज़ीज़ बहादुर ने आत्म-विश्वास से कहा। उसमें एक गौरव की भावना तो थी ही, किंतु इसके प्रतिपक्ष में जो व्यवहार बुद्धि कुशलता दिखलाने का प्रयत्न था वह भी उन्होंने शीघ्र ही प्रकट कर दिया, स्वयं कहा : होटल वाला मुझे बहुत मानता है!

'क्या बड़ी बात है? अज़ीज़ साहब। अपनी तरफ़ का हर आदमी यहीं उतरता है।' श्यामनाथ ने कहा। उनके स्वर में कोई व्यंग्य नहीं था, जैसे वे एक सत्यमात्र कह रहे थे।

'हर आदमी' से श्यामनाथ का अर्थ अपने वर्ग के आदमी से था। उन लोगों से नहीं जो सड़क पर पड़े रहते हैं, या खोलियों में गिरते हैं, या चालों में तड़पते हैं।

कलकत्ते की विराट् सड़कों पर सब प्रकार की गाड़ियाँ चल रही थीं। बड़ी-बड़ी पटरियों पर ढुलकने वाली ट्रामों से लेकर, मोटर, बस, लौरी, ठेले, विक्टोरिया और पैदल ही रिक्शा खींच कर आदमी रूपी जानवर भी वहाँ भाग रहे थे। ऐसा लगता था जैसे लाखों आदमी भागे चले जा रहे हैं। वे जो मोटरों में हैं तीर की तरह निकल जाते हैं बाकी सब परेशान, जैसे ज़िन्दगी उन्हें कुचले दे रही है, जैसे यह बड़ी-बड़ी इमारतें, यह वैभव, सबने उन्हें हरा दिया है, और उनकी साँस घुट रही है।

जब टैक्सी होटल में रुकी अज़ीज़ बहादुर ने उतर कर कहा : आइये।

श्यामनाथ उतर कर पास खड़े हो गये। अजीज़ बहादुर ने टैक्सी वाले को दाम दिये और वे दफ़्तर की ओर बढ़े। मैनेजर अज़ीज़ बहादुर को देख कर खड़ा हो गया। जिस आदमी से वह बातें कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था इस समय वह उसे बिल्कुल भूल गया। उसकी नज़र में एक बड़ी मछली आ फँसी थी, जिसमें काँटे भी बहुत कम थे।

'अबकी बार तो नवाब साहब' उसने कहा, 'बिल्कुल भुला ही दिया ?'

'अरे मैनेजर साहब ! आप को हम भुला दें। यह—मुलाकात कीजिये। मेरे महरबान राजा हाँ राजा साहब के छोटे भाई, रावसाहब श्यामनाथ, बानापुर, और आप तो हैं हमारे ख़ासुलख़ास जमशेद जी बाटली वाला।'

परिचय हुआ। फिर ठहरने की बातचीत हुई और मैनेजर ने अपनी गंजी चाँद पर हाथ फेर कर कहा : तो मैं नौकर भेजता हूँ।

नौकर आगे-आगे चलने लगा। उसके पीछे-पीछे श्यामनाथ थे और सबके पीछे अज़ीज़ बहादुर। इस वक्त श्यामनाथ को आराम करने की जल्दी थी और अजीज बहादुर मस्ती से धीरे-धीरे चल रहे थे। उन्हें अब जैसे कोई फ़िक्र नहीं। मंजिल आ गई। छूट गया वह सारा जंजाल, इतना विषाक्त वातावरण।

एकाएक अज़ीज़ बहादुर ठिठक गये। उन्होंने सुना कोई ठठा कर हँसा। उन्हें यह आवाज़ बहुत अधिक सुनी हुई सी मालूम दी। एक वह अट्टहास जिसे वे अक्सर सुना करते थे। वे ठिठक गये और सुनने लगे।

तभी नौकर ने कहा : आइये हुजूर।

'मैं आता हूँ। यहाँ मेरे एक दोस्त हैं। तुम चलो' फिर उन्होंने मुड़ कर कहा : पंडितजी आप चलिये। मैं अभी आता हूँ।

श्यामनाथ को जल्दी थी। उन्होंने इस विचार को ही ठीक समझा। अजीज बहादुर का क्या ? इनके तो यहाँ क़दम-क़दम पर दोस्त होंगे। कब तक इनके संग डोला जाये।

श्यामनाथ के जाने पर अजीज बहादुर फिर सुनने लगे।

भीतर से आवाजें आ रही थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'तो अब लौटने का इंतजाम करना चाहिये ।' स्वर पुरुष का था।

'नहीं मिरजा साहब, नहीं।' किसी स्त्री ने उत्तर दिया।

'क्या मतलब ?'

'यही कि अभी कुछ दिन और कलकत्ते ठहरा जाये ?'

'क्यों अब क्या कीजियेगा ?'

'अभी तक ही क्या किया था !'

'यों तो फिर कलकत्ता है । उम्र गुज़र जाये पर साँस लेने की फ़ुर्सत न मिले।'

'तो आप को कैरा कलकत्ते से ज्यादा पसंद है ?'

'यह तो न कहो बेगम। जो लुत्फ़ इन दिनों उठाया है, वह आप को नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर भी न दिखा सके होंगे।'

'मिरजा साहब। अब कहते शर्म आती है। वे तो बस-बस···अब कहा नहीं जाता।'

नवाब का हृदय झनझना उठा। लगा वे सह नहीं सकेंगे पर उन्होंने सुना। मिरजाबेग कह रहा था : मैं जानता हूँ कुलसूम बीबी, अगर यही बात न होती तो रियासत का एक वारिस तक न होता। उन्हें तो हसीन चेहरे देखने का शौक था।

'तो फिर शादियाँ करते ही क्यों थे ?'

'ताकि दुनिया शक न करे।'

दोनों हँसे । नवाब के माथे में सारा खून जैसे आकर इकट्ठा हो गया। आँखों में एक हल्की सी अँधेरी कुछ देर झलकती रही फिर उनको क्रोध चढ़ने लगा। उनकी मुट्ठियाँ तनने लगीं। आज वह ख्वाब पूरा होगा। बदमाशों की यहाँ रंगरेलियाँ हो रही हैं। और यह सूइर की बच्ची, मेरे लिये कहती है···कहती है··· और फिर उनके दिमाग में घूमने लगा कहती है···कहती है···

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हठात् उन्होंने अपने आप से कहा, धीरज धर। हिम्मत कर।

'कलकत्ता ठीक है बेगम' मिरजाबेग का स्वर सुनाई दिया—'मगर अपने लिये कैरा ही है।'

'पर मैं कुछ और सोचती थी।'

'क्या ?'

'आप कुछ और न समझें ?'

'आप कैसी बातें करती हैं। मुझमें आपमें अब राज़ रह कहाँ गया है ?'

'यह बगल के कमरे में वह सिनेमा वाली आती है न ?'

'जी हाँ।'

'वह एक थ्येटर खोल रही है। कहती थी आप दोनों भी उसमें शामिल हो जायें।'

'लाहौलबिलाकूवत ! बेगम !! यह क्या कह गईं आप ? कैरा को कौन सँभालेगा ? इस ऐयाशी में कुछ नहीं रखा। खान्दान की इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी। रईसी तो इसमें है कि ऐश पूरे हों पर पोशीदा तरीक़े से। हाँ, साँप भी मरे पर लाठी भी न टूटे। नाचियेगा, गाइयेगा, क्या कीजियेगा ? न भाई, यह नामंज़ूर। हाँ वैसे जो चाहे हो। अब कल वह शख्स अपने बच्चे को ले आयेगा। उसे भी तो आप ही का बच्चा क़रार दिया जाना है ? वह कैरा का वारिस है बेगम !'

'अच्छी बात है, पर आपके पास अब कितने रुपये हैं ?

'करीब पचास हज़ार।'

'बस ?'

'अभी तो और खर्च होंगे।'

'मैं कुछ साड़ियाँ लेना चाहती हूँ।'

'सब आपका ही है।'

'पर घर पर भी तो कुछ देना है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो मैं खुद खर्च करूँगा।'

'आपके पास कहाँ हैं ?'

'देखिये। अच्छा ज़री मुँह मोड़िये।'

नवाब ने पर्दा खिसका कर ज़रा झाँका। उन्होंने देखा कुलसूम ने ग़रारे इज़ारबंद को खोल कर उसमें से सात नोट हज़ार-हज़ार के निकाले और फिर ग़रारा बाँध लिया। फिर सिर उठाया। नवाब ने पर्दा छोड़ दिया उसका हाथ अचानक ही कमर में खुसे खंजर पर चला गया। वे क्रोध से काँप रहे थे।

'यह देखिये' बेगम ने कहा : 'सात हैं। हैं सात ?'

'ओह हो। भई यह कहाँ से ?'

'आप सो रहे थे तब निकाले थे।'

'वह क्यों ?'

'ताकि अगर सब खर्च हो जायें तो राह खर्च को। रख लीजिये। मैंने उस सिनेमा वाली से, पाँच हजार देने का वादा किया है।'

'यह तो बड़ी ग़लती कर दी आपने।'

'अब कह दिया तो कह ही दिया। लाइये पाँच हजार लौटा दीजिये।

'ले लीजियेगा। अभी कहाँ जाइयेगा ? ज़रा पास बैठे हैं। आप तो नाराज लगती हैं। इतनी दूर हैं !!

'बिजली गिरे उस पर जो आपसे नाराज हो। यह लीजिये अब तो दूर नहीं हूँ।'

'अरे मिरजा ! पालग होजा आज तो कमबख्त। चाँद गोद में आकर सिमट गया।'

और नवाब साहब ने एक सशब्द चुंबन सुना। वे अपने को और सँभाल सकने में असमर्थ हो गये। तीर की तरह कमरे में घुसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उनके हाथों का खंजर, इससे पहले कि दोनों प्रेमी सँभलें, मिरजाबेग़ के कलेजे में उतर गया। उन्होंने उसी पागलपन में दूसरा बार किया और उससे मिरज़ा के गले की साँस की नली कट गई।

बेगम फटी आँखों से देख रही थी। यह क्या हो रहा था और अब अचानक ही क्या हो गया। वह डर के मारे चिल्लाना चाहती थी, पर गला जैसे रूँध गया था···मौत···सामने मौत की तरह नवाब···जैसे अब···बेगम का दिल जैसे रुक जायेगा। यह वह क्या देख रही है? और बेगम के दिल पर बार-बार उसके अपने ही गुनाह जागरूक होकर दाँत गड़ाने लगे। उसको चारों ओर अंधेरा··· अँधेरा ही नज़र आया। वह छिटक कर पीछे हट गई।

नवाब साहब खंजर उठाये उसकी ओर बढ़ रहे थे। वह काँप रही थी। उठे हुए खंजर से एक-एक करके अब मिरजा के खून की बूंदें गिर रही थीं। बेगम देख रही थी। मौत आ रही थी। नितांत बर्बरता से सिर पर चढ़ी आ रही थी। कलकत्ते का आनंद इस समय उसके चेहरे से जा चुका था। वह धीरे-धीरे पीछे हट रही थी। उसके हाथ थरथरा रहे थे। द्वार बहुत दूर था और बीच में पलंग रखा था, भागना असंभव था।

लेकिन नवाब की आँखें और भी भयानक हो गई थीं। जैसे बेगम को इस हालत में देख कर उनमें खून उतर आया था। उनकी पुतलियों के चारों ओर की वह सफ़ेदी उनकी रुद्र चेष्टा में नितांत हृदयहीनता का परिचय दे रही थी। पीछे अब दीवार आ गई। उसका हटना बंद हो गया! बेगम शायद चिल्ला पड़ती। झपट-कर वेग से उनके हाथ ने घेरा डाला। उन्होंने बेगम की गर्दन पकड़ कर कहा : फ़ाहिशा। यही करना था तुझे? हरामजादी! रंडियों की तरह यहाँ होटलों में दूकान खोल कर बैठी है। यहां था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
तेरा फ़र्ज। मैं बुरा थी, मगर तेरे लिए क्या क्या किया था मैंने··· बोल, बोल···

बेगम ने याचना भरी दृष्टि से देखा और कुछ कहने की कोशिश की; लेकिन जैसे उसके होंठ सिर्फ काँपना जानते थे, गले में से आवाज़ नहीं निकल सकती थी। उसने घिघिया कर डरे हुए स्वर से कहा : अबकी माफ़ कर दो आका···आयंदा···

नवाब हँस दिये। उस हँसी में कितनी भयानकता थी कि बेगम की चेतना लुप्त होने लगी। नीचे झुके रहने पर उसने मिरजावेग की लाश को देखा। गला कटा हुआ। खून से लथ-पथ, वह मोटी देह, बोरे बाँध कर डाल दिये गये हों। अभी-अभी यही मिरजावेग···

बोलता था···हँसता था···

और अब यह मौत···मौत···अँधेरा···

कुलसूम बेगम उनके हाथों में मूर्छित हो गई थी। उन्होंने अत्यंत ठंडे हृदय से उसके सीने में कटार गहरी भोंक दी। खून का फव्वारा छूट निकला। नवाब के सारे कपड़े भींग गये। लाल-लाल हो गये। और नवाब ने आनंद से आक्रांत होकर एक भयानक अट्टहास किया।

लेकिन···लेकिन उसके बाद उनकी आँखों में भय समाने लगा। यह उन्होंने क्या किया! खून! और ज्यों ही उनकी नज़र कुलसूम के गोरे और खूबसूरत चेहरे पर पड़ी खंजर हाथ से छूट गया। कुलसूम! उनकी प्यारी कुलसूम!! नवाब को लगा सारी धरती घूम रही है। मन में सहसा ही विचार आया, 'भाग चलूँ।' उन्होंने बेगम को लिटा दिया। पर अपने कपड़ों पर नज़र गई। अंतिम आलिंगन ने उन्हें रंग दिया था।

अचानक उसी समय नौकर ने पर्दा हटाया। भीतर का दृश्य देख कर पहले तो वह कुछ समझा नहीं, पर खून देख कर उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोते की तरह, डरे और भद्दे स्वर में चिल्लाना शुरू किया :—'खून ! खून !' नवाब ने सुना, 'खून ! खून !'

वह डरावनी आवाज़ एक क्षण में तीर की तरह दनदनाई और फिर चकरघिन्नी बनी टुकड़े-टुकड़े बन कर घूमती हुई हर एक के कान में उतर गई। किसी ने सोचने की ज़रूरत नहीं समझी। नौकर अभी तक चिल्ला रहा था। सब उसी कमरे की ओर दौड़ चले। मैनेजर जमशेद जी बाटलीवाला उसी वक्त पाँव फैला कर आराम कुर्सी पर बैठा था। इस आवाज़ को सुन उसके छक्के छूट गये। वह एक-दम उठ कर उधर ही दौड़ पड़ा। बात की बात में कमेरा घिर गया। लोगों ने देखा कमरे में दो लाशें पड़ी हैं और सामने खून से भींगे अज़ीज़ बहादुर इस वक्त नवाब की तरह खड़े थे। मैनेजर ने पुलिस को फ़ोन कर दिया। बात की बात में पुलिस आ गई। कलकत्ते में देर ही क्या लगती है। दरोगा ने भीड़ को हटा दिया। पर श्याम-नाथ नहीं हटे।

नवाब अजीज़ बहादुर गिरफ़्तार हो गये। उन्होंने कोई भी विरोध नहीं किया। घबराये से श्यामनाथ ने निकट जाकर पूछा : क्यों नवाब साहब ! आप इसी के लिये मुझे अपने साथ लाये थे ? यह आपने किया क्या ? आप तो सचमुच पागल निकले। आपने मुझे कहीं का नहीं रखा।

तभी नवाब ने उत्तर दिया : भाग जाइये, भाग जाइये।

चौंक कर पुलिस इंसपेक्टर ने कहा, 'आप इनके साथी हैं ?'

'भाग जाइये !' वह इस 'भाग जाइये' को सुन कर चौंक उठा था।

निर्भय हो श्यामनाथ ने कहा : जी हाँ।

किंतु तभी नवाब साहब कह उठे : झूठ बोलते हो। मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं। खून मैंने किया है। आप ख्वामख्वाह हमदर्दी दिखा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नतीज़े में श्यामनाथ को भी गिरफ़्तार कर लिया गया।

बाहर एक मोटर रुकी। उसमें उमानाथ था। ज्योंही गाड़ी रुकी उसने जो पुलिस को देखा तो चुप-चाप गाड़ी आगे बढ़ा कर लौटा दी। उसका हृदय धुक-धुक करने लगा।

पुलिस मुजरिमों को पकड़ ले गई। जब वह कुछ देर बाद लौट कर आया तो पहले इधर-उधर देखा। पुलिस नहीं थी। तब उतरा और अपने कमरे की ओर चला। रास्ते में ही मैनेजर मिल गया और अब उमानाथ को देख कर मैनेजर फूट ही पड़ा : हीरालाल जी! ग़ज़ब हो गया।

कुछ कहिये भी, कि बस हो गया।

अब मैं क्या कहूँ, जो होना था सो तो हो ही गया और हुआ भी वह जो आज तक यहाँ कभी नहीं हुआ। आइये, जरा, परेशानी बाँट लीजिये, चलिये जरा दफ़्तर तक, देखिये न? आख़िर क्या बात हुई होगी।

दोनों दफ़्तर में जा पहुँचे। उमानाथ ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा : भाई जल्दी कहो, मुझे अभी एक जलसे में जाना है, मेरा इंतज़ार हो रहा होगा.....

'कहाँ हीरालालजी। आप बैठिये तो, मुझे आपसे बहुत ज़रूरी बातें करनी हैं।'

'फिर हो जायेंगी.....ऊपर वह बेगम साहिबा मेरी राह देख रही होंगी.....

'अब कहाँ हीरालाल जी। अब वह किसी की राह नहीं देखेंगी। वह तो ख़ुद अपनी राह लग गईं।

'क्या मतलब?'

वही तो कहता हूँ। आज शाम को मिरजाबेग़ और बेगम कुलसूम का किसी नवाब अजीज़ बहादुर ने खून कर दिया, उनके कमरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में ही और उनके साथ एक श्यामनाथ नाम का आदमी भी गिरफ़्तार हो गया वह भी कोई वहीं का आदमी है उसके साथ का।

उमानाथ ने सुना और सिर पकड़ कर वहीं कुर्सी पर बैठ गया। मैनेजर ने देखा और वह घबरा कर चिल्ला उठा—क्या उनमें से कोई आपका आदमी मारा गया ?

उसने धीरे से कहा : जी नहीं।

मैनेजर अवाक् देखता रहा।

सातवां परिच्छेद

१

उमानाथ ने जब कमरे में प्रवेश किया एकदम उसके पाँव ठिठक गये। उस समय कोई आदमी बहुत धीरे से हँसा और जब उमानाथ ने मुड़ कर देखा उसने दो और आदमियों को उस हल्के से उजाले में अपने बड़े-बड़े दाँत दिखाते हुए देखा। उसे विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा रहा है। क्या उसे कहीं भी चैन नहीं है ? यहाँ भी उसके पीछे गुप्तचर लगे हैं। क्या उसको लोगों ने पहँचान लिया है। श्यामनाथ ने खूनी का साथ दिया है। उसके पाँव पीछे की ओर हटे। वह डरा हुआ सा था। उसकी इस विकृत अवस्था को देख कर एक आदमी ने आगे बढ़ कर कहा : उमानाथ ! मिस्टर उमानाथ !

'जी नहीं, जी नहीं,' उमानाथ ने स्वर ठीक करके कहा : मैं उमानाथ नहीं हूँ, हीरालाल हूँ।

वे तीनों आदमी हँस दिये।

हठात् उमानाथ चौंक उठा। उसने सामने खड़े हुए मोटे और काले वाले आदमी के हाथ पकड़ कर कहा : कामरेड हौरिपद ! तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

हरिपद का यह बंगाली उच्चारण उसके मुख से अत्यन्त ही स्वाभाविक निकला। उसने मुड़ कर बाकी दोनों को देखा। लंबा, गठे बदन का साँवला सा अपूर्व गंगोली, दूसरा नाम बड़दा; तथा लंबा दुबला गोरा सा अविनाश घोष।

'उस पवित्र शब्द का उच्चारण न करो उमानाथ,' अविनाश घोष ने कुछ तीखे स्वर से कहा : वह मजदूरों, किसानों और मेहनतकशों का शब्द है, एक भाई चारे का शब्द है, उसका नारा है जिसके क़दम कभी भी नहीं लड़खड़ाते। तुम अभी इस योग्य नहीं हो।'

उमानाथ ने जैसे इस बात को सुना ही नहीं। उसने कहा : और आश्चर्य है कि उस पवित्र शब्द को सगर्वधारण करने वाले, जिनके क़दम कभी नहीं लड़खड़ाते, आज एक एक्ट्रेस के घर में घुसे बैठे हैं, तो क्या मैं समझूँ कि कदम आज भी लड़खड़ाये नहीं हैं ?

उमानाथ समझा अब वह विजयी था, किन्तु उसकी बात सुनकर के तीनों हल्की सी हँसी हँसे।

'समझा ! उमानाथ का विचार है.....' हरिपद मलिक ने अपने दबे स्वर से कहा। किन्तु अविनाश घोष जैसे बहुत जल्दी में था। 'नहीं हीरालाल का...' उसने एकदम काट कर कहा। वह उस एक शब्द में ही इस विराट् परिवर्त्तन को खोल देना चाहता था। किन्तु हरिपद मलिक पर प्रभाव नहीं पड़ा। वह अपने स्वर में ही कहता रहा : उमानाथ का विकास अब अपनी कुल परंपरा में पूर्ण हो चुका है। एक दिन शोषण के पाप से ऊब कर मज़दूर किसानों का भला करना चाहा था। विलायत में बहुत कुछ सीखा, सो जहाँ तक राजनीति का संबंध था, इसे भी एक खेल ही समझ कर सीख लिया। बहुत अच्छा था सब, जब तक विश्वविद्यालय में बहस भर करना था कि परमात्मा है या नहीं, मनुष्य का पुनर्जन्म होता है या नहीं, या फिर सेक्स संबंधी बातचीतें। पर भारत की धरा पर वह बातें कहाँ हैं ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहाँ तो काले और विकृत मनुष्य हैं, जो क्षण-क्षण अपनी यातनाओं से ग्रस्त हैं, उनसे कैसे निस्तार हो सकता है ? उमानाथ ने राह खोज निकाली है। जहाँ भी कोई काम हो वहीं से हट जाओ। वैसे जब अमीरों के बीच बैठे तब आप कम्युनिस्ट हैं।

तीनों फिर हँस दिये। उमानाथ आहत हो गया था। उसने कहा : तुम कहना क्या चाहते हो ?

'कुछ नहीं,' बड़दा ने कहा : कुछ नहीं उमानाथ ! बुरा क्यों मानते हो। तुम अकेले ही नहीं हो। ऐसे और भी कम्युनिस्ट यूरोप और यहाँ तक कि स्वयं रूस से सीख-सीख कर, दंभ लेकर आये हैं, पर यहाँ उन्होंने सिवाय जन आंदोलनों को बदनाम करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया। सारा संसार परिवार है, शोषण का अंत होना चाहिये, व्यक्तिगत सुखों की बलि, यह सब क्या सहज है ? और फिर उसके लिये तो और भी कठिन है, जो नितांत विलास और अत्याचारों की भीड़ में पला है, उसको अपने लिये सहज स्वाभाविक मानता है।

उमानाथ सामने की कुर्सी पर बैठ गया। वह सिर झुका कर कुछ सोचने लगा। कुछ देर शांति रही। फिर उसने सिर उठा कर कहा : मैं जान सकता हूँ आप लोग यहाँ क्यों आये हैं ?

'हम लोग,' बड़दा ने कहा—'यहाँ क्यों आये हैं यह जान कर आपको शांति के स्थान पर अशांति ही अधिक मिलेगी। लेकिन कह देने में तो कोई हानि नहीं है। इधर से जा रहे थे। पुलिस तो हमें अभी तक क्रांतिकारी, बम बनाने वाले, आतंकवादी ही समझती है। उसे क्या मालूम कि हमलोग अब कम्युनिस्ट हो गये हैं। आज कुछ सन्देह होने पर यहीं दरवाजा खटखटाया और भीतर चले आये।

'इसी मकान को क्यों खटखटाया ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'क्योंकि इस पर लिखा था न—आमंत्रण। इसी से। समाज से निकाले हुए लोगों में साहस अधिक होता है न? सोचा शायद यह गिरफ्तार नहीं करा देंगीं।'

'फिर नीरा ने नहीं कहा कुछ?'

'डर कर भीतर छिप गई हैं। कहती हैं—पुलिस आये तो इसी कमरे से भागना, या पकड़े जाना। मैं ऐसे बन जाती हूँ, जैसे सो रही थी, मुझे मालूम न था।'

'फिर नीचे का द्वार क्यों खोल दिया था?' उमानाथ मुस्कराया।

बड़दा ने कहा: वह नीचे गई थीं। कहा था बन्द नहीं रहना चाहिये।

उमानाथ निरुत्तर हो गया।

'उमानाथ!' अविनाश घोष ने कहा: आजकल क्या करते हो?

उमानाथ ने उसकी ओर शून्य दृष्टि से देखा। उसकी बेबसी में उसका हृदय अपने पाप से व्याकुल हो रहा था। वह एकदम उठ खड़ा हुआ। उसने कहा: और नीरा कहाँ है?

'उन्होंने कहा था कि तुम बाहर से मेरा कमरा बंद कर देना। सो वह देखो।' हरिपद मलिक ने उँगली उठा कर दिखाया। और उमानाथ की ओर देखा।

उमानाथ ने बढ़ कर द्वार खोला और भीतर जा कर उसे भेड़ लिया। नीरा डरी हुई सी बिस्तर पर उठ बैठी। उमानाथ उसके पास चारपाई पर जाकर बैठ गया। उसने नीरा के हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा: अच्छा तो तुम क्रांति करना चाहती हो?

'कौन मैं?' नीरा ने घबराये स्वर से कहा: अब यह लोग जाते क्यों नहीं?

'चले जायेंगे। तुम्हारा क्या बिगाड़ते हैं।'

'मुझे डर मालूम देता है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्यों ?'

'पुलिस आ गई तो !'

'गिरफ्तार करेगी। तुमको, और·····उनको।'

वह हँस दिया। नीरा का मन कुछ हल्का हुआ। उसने एक लम्बी साँस छोड़ी। द्वार पर हल्की सी दस्तक सुनाई दी। फिर एक स्वर सुनाई दिया। अब रात हो गई है। जो सहायता आज अनजाने ही आपने हमें दी है, वह कुछ व्यक्तियों को ही नहीं है। इतना कह देना आपका अपमान करना होगा। अब आज्ञा हो।

नीरा ने सुना। उसने भय से विकृत आँखों से उमानाथ की ओर देखा। उमानाथ ने फुसफुसा कर कहा : कहो, बार-बार यह कृपा शायद मैं नहीं कर सकूँगी।

नीरा ने कहा : आपने मुझे जो भय दिया है, उसे मैं बहुत दिन याद रखूँगी।

'हम जाते हैं।'

उसके बाद फिर हल्की सी पग-चाप सुनाई दी और कुछ समय बाद एक नीरवता छा गई। यह मकान कलकत्ते के हाहाकार के पीछे था। यह वह चरमराता स्वरूप था जो बाहर से दिखाई नहीं देता था। अब बिल्कुल सन्नाटा छा गया था। वे तीनों चले गये थे। रात का उतरता अंधकार खिड़की में से घुस रहा था, जैसे छन-छन कर, धीरे-धीरे, मूक, निस्वन,·····

नीरा ने देखा उमानाथ सिर झुकाये कुछ सोच रहा था। उसके गाल उसकी हथेलियों पर रखे थे और, दोनों कुहनियाँ घुटनों पर टिकी हुई थीं। वह देर तक उसे घूरती रही।

२

जब काफ़ी देर हो गई और उमानाथ ने सारा किस्सा सुना कर सिर उठाया उसने देखा नीरा शांत बैठी थी जैसे जो कुछ सुना वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब अब उसकी याद से उड़ चुका था। उस छाये हुए अंधकार ने अब धीरे-धीरे सब कुछ ग्रस लिया। उमानाथ कह रहा था : नहीं, मैं पहले प्रसिद्ध होना चाहता था, अब मैं नहीं होना चाहता। मनुष्य जब अपने विकारों से लड़ता है, जब एक सीधा-सादा रास्ता बनाने का प्रयत्न करता है तब उसके दुख उसे घेरने लगते हैं। मुझे यही समाज चाहिये जिसमें सब कुछ टेढ़ा-मेढ़ा है, सब रास्ते उलझे हुए हैं; इनमें अनंत वैषम्य है, पर मुझे यही चाहिये। नई दुनिया सबको मिटा देना चाहती है। नीरा ! तुम एक अभिनेत्री हो। मैं जानता हूँ तुम्हारा समाज में कोई आदर नहीं है। यदि है भी, वह सब तुम्हारे धन का। तुम्हारा रूप देख कर सब उसे खा जाना चाहते हैं, पर क्या तुम इस जीवन को अब कभी छोड़ देना भी चाहती हो ?

'नहीं,' नीरा ने कहा, 'पहले जो मेरे भीतर स्त्री की स्वाभाविक इच्छा थी कि मैं एक गृहलक्ष्मी बन कर रहूँ; मेरे बच्चे हों, मेरा पति हो, मेरा घर हो, वह सब अब नष्ट हो चुका है। लोहा पहले खरदरा था, पर लगातार जब उसे मैंने रेता है, तब वह चिकना हो गया है। मैं वह सब भूल गई हूँ।'

उमानाथ ने कहा : आज मुझे याद आ रहा है। एक-एक करके चित्र मेरी आँखों में घूम रहे हैं। मैं क्रान्ति के पथ पर चला था। लेकिन क्या वह पथ सरल है ? यूरोप में जब तक पिता रुपये भेजते रहे, जब तक चायबाज़ी होती रही, तब तक वह सब बहुत अच्छा था। विलायत में बैठ कर हिंदुस्तान की आज़ादी की चर्चा सचमुच बहुत अच्छी थी। लेकिन ! हिंदुस्तान में ? उफ़ ! कितनी कठिन है यहाँ जिंदगी। मैं तुमसे कुछ छिपाऊँगा नहीं। मैं तुमसे कुछ भी छिपा कर नहीं रख सकता। वहाँ एक लड़की मिली थी। शायद तुम्हें मैं बता चुका हूँ, एक व्यापारी की लड़की हिल्डा। बड़ा आनन्द आया था उससे मित्रता करके। पर वह एक दुःस्वप्न की भाँति चली गई। चला गया माँरीसन भी। वह झूठा और फ़रेबी था। नीरा ! यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीन आदमी जो आज यहाँ छिपे थे, यह सच्चे क्रांतिकारी हैं। मुझे उनसे भय होता है। यह लोग हमारी दुनिया को उलट देना चाहते हैं। अरे। कितनी भयानक मूर्खता थी। उस दिन मैं पिता जी से यही कह कर चला आया था। दुनिया बदलना चाहता था। क्या संबंध है मेरा उन किसान मज़दूरों से। एक छल, निरंतर छल...कुरूप और भयानक धोखा। मुझे लगता है मैं उदासी के सागर में डूब गया हूँ। निराशा और अंधकार ने मुझे ग्रस लिया है। लोग पारसाल देश के के लिये पागल हो रहे थे मुझे उस सबने आकर्षित नहीं किया। हमने आज तक मनुष्य का महात्व नहीं पहँचाना, और अब उसे पहँचानने का अर्थ है कि जो कुछ रहा-सहा सुख है वह भी हमसे छिन जाये। मैं उसे नहीं मान सकता। मुझे वह नहीं चाहिये। जेल वे जायें जिन्हें दुख हो। मुझे क्या है? बलिदान वे दें जिनके पास कुछ नहीं हो। नेता के पीछे वे चलें जिनके पास बुद्धि नहीं हो। जनता! मैं इस जनता से घृणा करता हूँ। यह लोग अपढ़ हैं, मूर्ख हैं, कंगाल हैं। इनको मूर्ख बना कर अपना काम साध लेना ही हम जैसे सुसभ्य और सुसंस्कृतों का काम है। हम कर्त्ता हैं। हमारा शासन है। नहीं नीरा! ददुआ ठीक कहते थे। यह अहिंसा कायरता है। समर्थ असमर्थ पर सदैव शासन करता है। उसकी पशुता और अत्याचार को बुरा कहने वाले जिंदा नहीं रह सकते। जनता! जैसे भेड़ बकरी। मैं उससे घृणा करता हूँ। मैंने गलती की है। भैया कहते थे कि अच्छे कुल का आदमी होने के कारण उनका मन निचले स्तर के आदमियों से नहीं मिल पाता था। वह ठीक था। गरीब पशु है। अमीर की पशुता उसकी सामर्थ्य है। संसार और समाज नियम से चल रहा है। इसे कोई नहीं पलट सकता। सब कुछ भयानक है, सब कुछ कुरूप है, यहाँ पुरुष पशु है, स्त्री पशु है, बालक पशु है। अँग्रेज़, ताल्लुकेदार पूँजीपति, अफ़सर, जनता, सब पशु हैं। सबकीप शुता हमारे समाज का नियम है। जो हमारे समाज को मिटा कर नया समाज बनाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
चाहेगा, वह हमारी शत्रु है, उस पर बल प्रयोग करना, अपनी पशुता दिखा कर उसे नैतिकता, अहिंसा की शिक्षा देना हमारा अधिकार है ...

उमानाथ अंधकार में उठ खड़ा हुआ। वह कहता रहा : क्रांति को रोकना ही अपना सबसे बड़ा धर्म है। नीरा ! हम क्यों दुखी हैं, क्योंकि हम जो कुछ करते हैं, उसकी एक दिमागी नींव नहीं डाल लेते। हम धर्म खो चुके हैं, अपना धर्म भूल गये हैं। मैं सोता हूँ तब बुरे-बुरे सुपने देखता हूँ जैसे कहीं भयानक सन्नाटा है और अचानक कहीं से डरावनी आवाज़ें आने लगती हैं। मैं वहाँ जाकर देखता हूँ तो भयानक और कुरूप पशुओं को चलते और उड़ते हुए देखता हूँ। हवा के झोकों पर आग की लपटें काँपती हैं। मेरे सामने असंख्य स्त्री पुरुष बँधे हुए, लोहे में जकड़े खड़े हैं, उनकी देह जल रही है। वे भयानक आर्त्तनाद कर रहे हैं। मौत हँस रही है। बीच-बीच में कोई कोड़े मार रहा है। सामने कोई अत्यन्त क्रूर पशु बैठा है जो मनुष्य का हृदय निकाल कर खाता है। फिर लगता है कोई मेरा गला घोंट रहा है। वह मनुष्य के हाथ नहीं होते। उन हाथों के नाखून कीलों की तरह मेरी गर्दन में घुस जाते हैं, और मेरी जुबान लटक जाती है। मैं मर कर भी अपने को देखता हूँ। मेरी लाश को कुत्ते फाड़ कर खाते हैं। और जब आँख खुलती है, मैं अपने आपको पसीने से तर बतर पाता हूँ। मेरा जीवन अब सचमुच उस मौत के बाद की अनुभूति है।

वह बिस्तर पर बैठ गया था। कुछ देर के लिये वह चुप हो गया था। पड़ोस में कहीं किसी परिवार के बच्चे सांध्य बेला में माँ के साथ गा-गा कर प्रार्थना कर रहे थे। उमानाथ उस स्वर को सुनता रहा, जैसे वह सब उसकी आत्मा को भर सकता था पर बहुत देर तक यह हालत नहीं रही। उसने प्रार्थना बंद हो जाने पर कहा : नीरा ! तुमसे दो बातें कह देना चाहता हूँ !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीरा ने कुछ नहीं कहा। अँधियारे में एक हल्की सी रेखा दिखती थी जो उसके आकार को बता रही थी, वर्ना उमानाथ की ही भाँति वह भी खो गई थी। दोनों एक दूसरे को अन्दाज़न ही अपने अपने करीब जानते थे। उसने आँखें उठाईं। सदा की भाँति आज भी वह उमानाथ के भावावेश के क्षणों में चुप हो गई थी। वह उसे एक सिड़ी समझती थी। सिड़ी भी वह जो आवेश में व्याकुल होकर जिंदगी के लिये पनाह माँगता है, दर-दर भीख माँगता हुआ चिल्लाता फिरता है। उसका जीवन स्वयं ही इतना विषम था कि वह कहीं भी रास्ता पाने में असमर्थ थी। अतः, जिस दिन उसने घर छोड़ा और अभिनेत्री का जीवन ले लिया उसी दिन से उसने अपने चिंतन को बंद कर दिया। उसका दृष्टिकोण स्पष्ट था। जिस स्त्री ने अपने पेट के लिये अपने शरीर को बेच दिया, वह अब कहीं से भी उठ नहीं सकती थी। और क्योंकि वह गिर चुकी थी, इसलिये अब उस पतन को ही प्यार करती थी। अपनी मजबूरियों को अच्छा समझती थी। पहले जिस पर पुरुष के सहवास में लाज और मर्य्यादा का प्रश्न था, वहाँ अब वह उससे शारीरिक सुख प्राप्त करना ही अपना कर्त्तव्य समझती थी। उसकी राय में उमानाथ में अभी तक अच्छे कुल की मर्य्यादा के बहुत से विकार बाकी थे, जिन्होंने उसकी आत्मा को बाँध रखा था।

उमानाथ कहने लगा : मेरी पत्नी है···

'मैं जानती हूँ,' नीरा ने कहा, 'तुम उसे हमारी नई नाटक मंडली में नहीं ले सकते ?'

इतना ठंडा और हृदयहीन प्रश्न था जिसको सुन कर उमानाथ काँप उठा। उसने नीरा को देखा। एक दिन स्वतंत्र प्रेम का हामी बन कर जो उमानाथ अँग्रेज़ मॉरीसन से कह रहा था कि मेरी पत्नी महालक्ष्मी से विवाह कर लो, इस समय उसका सिर झुक गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीरा हँसी। उसने कहा : यह डर, यह खतरा क्यों ? तुम मुझे नीच समझते हो ?

'नहीं' उमानाथ ने उत्तर दिया।

'तो फिर।'

'नहीं मैं समझता हूँ समाज ने तुम्हारे साथ अत्याचार किया है।'

'मेरा वह सब समझने का बचपन अब दूर हो चुका है। अभिनेत्री के छद्म में जो मैं वेश्या बन कर रहती हूँ, मुझे अपने इस स्वरूप से स्नेह हो गया है। मैं जानती हूँ मैं आकर्षक हूँ। जो मेरा काम था, वही मैं करती हूँ। घर गिरस्ती की स्त्रियों से मैं नफ़रत करती हूँ। सब मुझसे घृणा करते हैं। मैं जानती हूँ उन्हें ऐसा करने का अधिकार है। पर जिन्होंने मुझे ऐसा बनाया है क्या उनकी इसमें कुछ भी जिम्मेदारी नहीं है ? बताओ न ?'

'क्यों नहीं है ? उमानाथ ने स्वीकार किया।

'तब तुम अपनी पत्नी को इधर लाने से क्यों डरते हो ?'

उमानाथ उठ कर टहलने लगा। उसने कहा : बत्ती जला दो। तुम अँधेरे में मुझे डरा रही हो। मैं एक बार सब कुछ उजाले में देखना चाहता हूँ।'

'नहीं। वह उजाला नहीं है। वह छल है। वह धुँधला का है। उससे क्या होगा। हम अँधेरे के प्राणी हैं, हमें इसी में सबसे बड़ा सुख मिलता है। काले में हमारा कालापन हिल-मिल कर एक हो जाता है।

उमानाथ कातर हो गया। उसने कहा : तुम पागल हो गई हो नीरा ! पागल हो गई हो।

'मैं पागल हो गई हूँ ?' नीरा ने तीखे स्वर से पूछा, 'क्यों ?'

'क्या अब भी कहने की ज़रूरत है ? एक स्त्री जो आज तक पति को आराध्य समझती रही, जिसके कारण उसने अपने सब जेवर दे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिये, और जिसका हाथ खाली हो गया, तुम कहती हो, मैं उसे थ्येटर में काम करने ले आऊँ ? असंभव ! यह नहीं हो सकता।' उमानाथ के स्वर में अब भी एक कंपन था, जैसे वह यह सब कहते हुए अपने पुराने पापों को छिपाने का प्रयत्न कर रहा था । और वे पाप जो उसके लिये इस अवस्था में नीरा से छिपा जाना असंभव था। वह बिस्तर पर बैठ गया। उसने नीरा के दोनों हाथों को पकड़ कर कहा : अगर तुम्हारी बहिन होती तो क्या तुम उसे इसी राह पर ले चलने का प्रयत्न करतीं ?

'क्यों नहीं ? ज़रूर करती।' उत्तर देने में तनिक भी तो संकोच नहीं हुआ।

'और अगर तुम्हारे कोई लड़का होता तो ?'

स्त्री का हृदय झनझना उठा। भीतर की आग पर से किसी ने जैसे हवा से सब ढँकने वाली राख को उड़ा दिया । भीतर दहकता हुआ अंगारा था। वह कुछ नहीं बोली । कुछ देर वे फिर चुपचाप बैठे रहे।

'चाचा' उमानाथ ने कहा : गिरफ्तार हो गये हैं। एक तार तो ददुआ को दे ही दूँ।

'दे दो।'

'अपना नाम नहीं दूँगा। लिख दूँगा, यक़ीन न हो तो कलकत्ते के पुलिस दफ्तर में दरयाफ्त करके देख लें।'

'तो क्या वे दोनों ही मर गये ?'

'बिल्कुल। साँस की नलियाँ कट गईं । ज़िंदा रहने का कोई सवाल ही नहीं उठता।'

'फिर ?'

'फिर क्या ?'

'उनका सामान ? रुपया ?' उस समय उसकी आवाज़ में एक चंचलता थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'वह सब पुलिस के हाथ गया। अरे उस कमबख्त अज़ीज़ बहादुर के तन पर क्या कम रुपया रहा होगा। पर हाँ, मैं तुमसे दूसरी बात तो कह ही नहीं पाया।'

'क्या ?'

'बेगम ने मुझे पाँच हज़ार रुपये दिये थे।'

'क्यों ?' नीरा अविचलित रही।

'यह मुझे क्या मालूम ?' वह हँसा। फिर कहा : 'कहती थी कि बहुत दुखी थी। और मेरी ज़िंदगी उसे बहुत अच्छी लगी थी।

दोनों हँसे।

'तुमने अपनी ज़िंदगी का कुछ सुख बेचारी से बाँट नहीं लिया ?'

उमानाथ ने उत्तर नहीं दिया। नीरा ने फिर पूछा : अब ? अब क्या प्रोग्राम है ? बम्बई चलना चाहिये।

'क्यों ?'

कलकत्ते से मैं ऊब गई हूँ। वहाँ से नाटक का काम प्रारम्भ होगा। फिर हम लोग शहर-शहर घूमा करेंगे। गाँवों में भी।' हाँ तुम नाटक लिख लोगे ?'

'मैं ? मेरे एक नाटक की विलायत में तारीफ़ होने वाली थी, बच गई, क्योंकि वह छपा नहीं, वर्ना नाटक ? नाटक लिखना ? और हिन्दुस्तान में नाटकों की क्या कमी। जिसे देख लो वही दुखी है। दुख ही नाटक है। सब से पहले तो मैं तुम्हारा ही जीवन लिखूँगा। और फिर धार्मिक नाटक...'

'चल तो जायेंगे...'

'खूब !' दोनों हँसे।

'चलो खाना खालें,' नीरा ने कहा।

'तुम कहाँ खाती हो ?'

'यहीं। खुद बना लेती हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पर यहाँ पीने को क्या है ?'

'वह भी है।'

'तब ठीक है।'

नीरा ने उठ कर लालटेन जलाई और कमरे को प्रकाशित कर दिया। उसकी शैया की चादर की सफ़ेदी देख कर उमानाथ उस पर फैल गया और उसने सिगरेट जला कर एक लंबा कश खींच कर, ढेर सारा धुँआ छोड़ कर कहा : 'नीरा ?'

'क्या है ?'

'लो, यह सिगरेट पीती जाओ।'

'अभी खाना खा कर पियूँगी।'

नीरा दूसरे कमरे में चली गई। उमानाथ लालटेन की बत्ती को घूरता रहा। बाहर खिड़की में से आस्मान के तारे झलमलाने लगे थे। बहुत देर तक अँधेरे में रहने के कारण शुरू में उजाले ने जो आँखों को चौंधिया दिया था, अब वह चमक चली गई और उजाला स्निग्ध सा हो कर फैल गया था। बिस्तर की सिलवटों के पीछे छिपे अँधेरे को उसने घेर लिया था और लगता था जैसे वह अब उस सिलवट के ऊपर चढ़ कर दूसरी ओर उतर जाना चाहता है। उमानाथ अपने विचारों में खोया हुआ सा पड़ा था।

३

सुबह उठ कर उमानाथ ने चाय पी और वह ददुआ को तार देने को उठ खड़ा हुआ। नीरा नहा आई थी। और स्टूडियो जाने के लिये सिंगार कर रही थी। उसने मुड़ कर कहा : तो जा रहे हो ?

'हाँ।'

नीरा ने शीशे में देख कर होठों पर हल्का लाल रंग चढ़ाया। और मुड़ कर फिर कहा : तब क्या तय किया ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

यही कि होटल छोड़ कर आज से नहीं आ जाऊँगा।

नीरा ने पाउडर लगया। बिना मुड़े कहा, 'ठीक। पर महाशय पुलिस तो साथ नहीं आयेगी।'

'पुलिस क्यों आने लगी?'

नीरा हँस दी। जैसे यह सिर्फ़ एक मज़ाक था।

'ददुआ को तार दोगे?'

'हाँ।'

कुछ देर वह और खड़ा रहा।' फिर चला गया। नीरा भी सिंगार बनाव करके शीघ्र ही स्टूडियो चली गई। उमानाथ ने बड़े तार घर जाकर पहले तो सीधे उन्नाव को एक तार दिया : पण्डित श्यामनाथ अज़ीज़ बहादुर के साथ गिरफ़्तार हो गये। अज़ीज़ बहादुर ने प्रिंसेज़ होटल में मिरज़ाबेग और बेगम कुलसूम का खून कर दिया। आपका ही—अमरनाथ। और फिर तार को अर्जेन्ट करके उसने टैक्सी ली और होटल पहुँचा। मैनेजर देखते ही कह उठा : अक्खै! मियाँ। कहाँ रहे रात यार? पुलिस ने आफ़त कर दी। आपको पूछते थे।

'मुझे?

'हाँ, कि हीरा लाल कौन हैं? क्या करते हैं? मैंने कहा—

उमानाथ ने काट कर कहा : क्या कहा? अपने क्या कहा?

'मैंने कहा'—मैनेजर ने चाँद पर हाथ फेर कर कहा, 'हीरालाल जी रईस हैं। हाँ, भला प्रिंसेज़ होटल में कोई ग़रीब रह सकता है?' ग़ैर मुमकिन...मर गये सा' ब! जिन्हें मरना था, वे मर गये। मर जाने दीजिये। सैकड़ों आदमी भूखे ही मर जाते हैं। अब की बार दो भरे पेट ही सही।' मैनेजर के स्वर में एक परेशानी थी, 'पर साहब! मरे तो मरे, कमबख्त हमें परेशानी में डाल गये।'

'आपको?' उमानाथ ने कहा, 'क्यों?'

'क्यां? अब आपको बता दें। कहियेगा नहीं किसी से। दो अखबार वाले आये थे। सुबह से पाँच-पाँच सौ रुपये ले चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी तरह मन्ज़ूर किया है कि खबर नहीं छापेंगे। कमबख्तों को जाने मालूम कैसे हो जाता है ? बदनामी हो जाती साहब। और अभी तक पुलिस दो हज़ार ले चुकी है। और हालत देखिये। हीरालाल साहब ! मोटे मिरज़ा के पास बहुत, कई हज़ार निकला, और बेगम के पास भी। क्या समझे ? सब पुलिस ने ईमानदारी से बराबर कर दिया। अब अज़ीज़ बहादुर पर नज़र है। उस कमबख्त के पास भी काफी माल है।'

मैनेजर की बातों का आज जैसे कोई अंत ही नहीं था। वह अभी बहुत कुछ सुना सकता था। उमानाथ ने काट कर कहा : फिर आपने उनके घर वालों को ख़बर दी कि नहीं ?

मेरी बला से। पुलिस ने तार दिये हैं। एक बेगम और मिरज़ा के लिये, और एक वह श्यामनाथ है, कौन है राजा बाजा उसके लिये। अजीब बला है कि सब कमबख्त सब के रिश्तेदार आ-आ कर मेरे होटल में ही उतरेंगे जैसे सब का ख़ून मैंने ही किया है।

उमानाथ मुस्कराया। उसने कहा : तो इतनी मदद तो आपको देनी ही चाहिये।

'अजी हीरालाल साहब' मैनेजर ने कहा, 'कहना बड़ा आसान है।' फिर वह अँग्रेजी में बहक उठा : करना, कर दिखाना बहुत कठिन है। उफ़ ! आफ़त है। बहुत दिन पहले एक अँग्रेज़ कर्नल ने यहाँ किसी का ख़ून कर दिया था, शायद साल भर की बात है, सारा मामला सरकार और पुलिस ने दबा दिया। न्याय तो तब होता जब ख़बर बाहर जाती। एक अख़बार छापने वाला था, सरकार ने उससे देशद्रोह के नाम पर २५ हज़ार की ज़मानत माँग ली। वह हँसा, 'मगर यह तो सब हिन्दुस्तानी हैं, इनके लिये तो फ़ैसला होगा, और मैं अच्छी आफ़त में फँस गया हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमानाथ को तार देने की ग़लती महसूस हुई। यह हमदर्दी दिखलाना व्यर्थ चला गया। पुलिस तार दे चुकी है। उसने कहा : अच्छा मैनेजर साहब ! अब आपकी मेहरबानियों के लिये किस तरह शुक्रिया अदा करूँ ?

'क्यों साहब ?' मैनेजर ने हिन्दुस्तानी में चौंक कर कहा : 'क्यों ?'

'मैं आज इजाज़त चाहता हूँ।'

'अब किधर जाइयेगा ?'

'जिधर नाक उठे।'

'अच्छा साहब। बहुत अच्छा।' मैनेजर ने हँस कर कहा, 'भूलियेगा नहीं। भूलियेगा नहीं।' अब उसे जैसे उमानाथ में कोई दिलचस्पी नहीं थी। न जाने कितने आते हैं, कितने ऐसे ही चले जाते हैं। किसको अपना समझा जाये ? किससे प्रीत की जाये ? बड़े-बड़े रईस आते हैं, तवायफों जैसी औरतें आती हैं, सब ही बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, जिनका नतीज़ा सिर्फ व्यभिचार है, या झूठ है, एक बनावटी गंभीरता है, और कुछ नहीं...

उमानाथ ने अपना सामान इकट्ठा किया। दोनों सूटकेस और बिस्तर ठीक कर दिये और आकर अपना बिल चुका दिया। एक टैक्सी लेकर वह मैनेजर से हाथ मिला कर चला आया। इस समय उसका मन अत्यंत भारी था। कहाँ जा रहा है ! नीरा के पास ? क्या वह स्त्री विश्वास के योग्य है ? क्या उमानाथ को इस राह पर चलना चाहिये ? क्या यह सब ठीक हो रहा है ? वह क्यों न महालक्ष्मी के पास लौट चले ? वह उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी। उसका बालक अब पहले से बढ़ गया होगा। ऊँहू ! बच्चों का क्या ? दिन दूने रात चौगने बढ़ते हैं। पर दद्दुआ क्या घर में घुसने देंगे ? क्यों नहीं ? क्रान्ति तो अब उमानाथ ने छोड़ ही दी। पर दद्दुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में एक बर्बर हिंसा है, अहम्मन्यता है जो पशुता है, वह सबको गुलाम बना कर रखना चाहते हैं। क्या उमानाथ उस बंधन में सुखी रह सकेगा ?

नहीं, नहीं...यह कभी नहीं हो सकता...

टैक्सी रुक गई। आगे गली में अब नहीं जा सकती थी। उमानाथ उतर गया और पैसे चुकाने लगा।

४

नीरा स्टूडियो से लौटी तब उसकी पलकें भारी थीं। उमानाथ उस समय बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सिगरेट फूँक रहा था। नीरा को देख कर उठ बैठा।

'आ गये ?' नीरा ने पूछा।

'हाँ।' उमानाथ ने कहा और एक लम्बा कश छोड़ा। नीरा बैठ गई। उसने कहा : मेरा भी काम हो गया।

'क्या हुआ ?' उमानाथ को शंका हुई।

'जवाब मिल गया।'

'क्यों ?'

'उन्हें अब मेरी ज़रूरत नहीं।'

'क्यों ? क्या बात हो गई ?'

'एक नई एक्ट्रेस आगई है।'

'तुमसे अच्छा काम जानती है ?'

'अभी उसने काम नहीं किया।'

'फिर तुम्हें क्यों अलग कर दिया गया ?'

'क्योंकि वह मुझसे नई है। सत्तरह बरस की है।' नीरा हँसी। उस हँसी में एक भयानक विष था, जो उस जैसी स्त्री के लिए अत्यन्त स्वाभाविक था। उस हँसी में एक विपन्न ग्लानि थी, एक ईर्ष्या का कठोर दाह था। उमानाथ ने पहँचाना। पूछा, 'बहुत सुन्दर है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'उनके लिये हर नई युवती स्त्री अधिक सुन्दर है।' नीरा ने व्यंग्य से कहा।

'अगर वह काम नहीं जानती, तो फिर पार्ट कैसे करेगी?'

'तुम नहीं जानते। यह तो प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर के हाथ का खेल है।' वह कुछ क्षण चुप रही, फिर कहा: 'एक दिन मैं भी ऐसे ही ली गई थी, ऐसे ही निकाल दी गई।'

'तुम्हें इसका दुःख है?'

'बिल्कुल नहीं। मैं अपने भाग्य को जानती हूँ। तुम तैयार हो?'

'बिल्कुल। कब चलोगी?'

'कल।'

दोनों खामोश हो गये, जैसे अब वे यह आँकने का प्रयत्न कर रहे थे कि कौन किसको धोखा दे रहा है। पर किसी ने भी कुछ कहा नहीं। नीरा ने हाथ बढ़ा कर एक सिगरेट निकाल लिया और जला कर धुँआँ उड़ाते हुए कुछ सोचने लगी। नीरा थक गई थी। उसने उठ कर कपड़े बदले। हाथ मुँह धो कर चाय बनाने लगी। उमानाथ चुपचाप पड़ा रहा। मेज़ पर चाय रखकर नीरा ने प्याले में चाय ढाल कर कहा: लो पियो।

उमानाथ ने बैठ कर प्याला ले लिया।

नीरा ने कहा: बम्बई में किसी को जानते हो?

'किसी को नहीं।'

'तब फिर ठहरोगे कहाँ?'

'होटल में।'

'मगर काम कैसे शुरू होगा?'

'आज तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो?'

'क्योंकि अब सब काम सिर पर आ गया है। अभी तक सब एक सुपना था।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'डरती हो ?'

नीरा ने उसे घूरा। स्त्रीत्व जागने लगा।

'मेरे रहते डरती हो ?' उमानाथ ने फिर पूछा।

'नहीं। मैं तुम पर विश्वास करती हूँ।'

'यह तुम्हारी भूल है नीरा। विश्वास मत करो। किसी पर विश्वास मत करो। इस संसार में कोई किसी का नहीं है। सब अपना-अपना लाभ चाहते हैं। तुम तब तक मेरे साथ हो जब तक मैं तुम्हारे काम आ सकता हूँ। मैं तब तक तुम्हारे साथ हूँ जब तक तुम मेरे किसी काम आ सकती हो। जिस समाज में पैसा ही सब से बड़ी चीज़ है वहाँ मनुष्य को मनुष्य पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये। ऐसा करने वाला मेरी दृष्टि में नितांत मूर्ख है।

उमानाथ ने उसकी ओर देखा और फिर बाहर खिड़की के उस पार आस्मान देखते हुये कहने लगा : मनुष्य अपने मन के बंधनों के कारण दुखी है। उसे कभी स्नेह नहीं करना चाहिये। तुम ताज्जुब करोगी नीरा। लेकिन शरीर का सुख है, इसी से मैं स्त्री के प्रति आकर्षित हूँ, अन्यथा, मुझे स्त्री की तुच्छता से सदैव एक घृणा रही है। विश्वास !! नहीं, नहीं मैं तुम पर विश्वास नहीं करता।

'फिर तुम मेरे पास क्यों आये हो ?' नीरा की तीखी आवाज़ कमरे में गूँज उठी।

'यह मैं स्वयं नहीं जानता।' उमानाथ ने चाय पी कर प्याला धरते हुये कहा : पतंगा दीपक पर जलने क्यों आता है ?

'तब तुम समझते हो, मैं तुम्हें जला रही हूँ।' नीरा ने व्याकुल होकर पूछा।

'नहीं, नीरा, नहीं। दीपक के पास जाने वाला पतंगा कभी कुछ सोच कर नहीं जाता।' वह तो एक उजाला देख कर जाता है कि शायद यही मुझे सुख दे सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीरा हँसी । उसकी वह उन्मत्त हँसी उमानाथ के प्राणों को झकझोर उठी । स्त्री की चंचलता उच्छृंखल होकर बज उठी थी। मादक धमनियों की धड़कन अब सतर्क होकर उस दास प्रवृत्ति वाले पुरुष को कुचल देना चाहती थी जो अपनी ही वासना के सामने कुत्ते की तरह जीभ लटकाये हाँफ रहा था। नीरा ने सिगरेट सुलगाई। जब वह सिगरेट पीती थी तब उसमें एक बाज़ारूपन मुखर हो जाता था । उमानाथ उसे कई बार सिगरेट पीते देख चुका था। पर जब वह सिगरेट पीती थी, तभी उसे एक नयापन सा दिखाई देता था। उसके संस्कार में जमा हुआ था कि यूरोप की स्त्री कुछ भी करे, भारत की स्त्री कभी भली होने पर सिगरेट नहीं पीती। और जो पीती है, वह बहुत से बंधन लाँघ चुकी है। और इस ढंग से बंधन लाँघने वाला, दूसरे को फ़ोश और बदमाश समझता है, यह मनुष्य का पुराना स्वभाव है । अपनी आदत से मजबूर होकर अपने को न्याटय ठहरा लेने के बाद भी उसके उपचेतन में सदैव यह बना रह जाता है कि वह समाज के सामने पापी है। उसी पथ पर चलने वाले औरों को देखते समय उसे न केवल अपनी महानता प्रतीत होती है, पर उस दूसरे से घृणा करके एक संतोष भी होता है।

नीरा का वह रूप देख कर उमानथ भीतर ही भीतर काँप उठा, जैसे उसका हृदय एकदम स्तब्ध हो गया। पर उसने कहा कुछ भी नहीं। कुछ देर बाद नीरा ने पूछा : तुम्हारे पास कितना रुपया है ?

'क्यों ?' उमानाथ ने तीखी आवाज़ में पूछा। उसका स्वर रूखा था।

'कितना भी हो,' नीरा ने कहा—'काम चलाने लायक तो होगा ही। पर यदि तुम कहते हो कि मैं तुम पर विश्वास न करूँ, क्योंकि तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते, तो मैं एक बात साफ़-साफ़ कह देना चाहती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक साथ चोरी करने चल कर जैसे दो चोर एक दूसरे से भी डरते जाते हैं, उमानाथ ने पूछा : क्या ?

'मुझे दो हज़ार रुपये अलग से दे दो। वर्ना मैं औरत हूँ। तुम जाने मुझे कहाँ छोड़ जाओगे ! मेरा क्या होगा ?'

उमानाथ ज़ोर से हँस पड़ा। उसने कहा : बड़ी पागल हो नीरा तुम ! अरे मेरी ज़रा सी बात पर बुरा मान गईं ? तुम्हें छोड़ कर मैं जाऊँगा कहाँ ? और जब तुम्हारे पास कुछ है ही नहीं तो तुमसे मैं ले भी क्या जाऊँगा ? जैसे मैं तुम्हें यहाँ छोड़ कर चला जाऊँ, वैसे ही बंबई में छोड़ना होगा। और फिर उसने मुस्करा कर कहा : औरत तो हो, पर तुम क्या कोई मामूली औरत हो ? यह समाज अभी तुम्हें मरने नहीं देगा। क्योंकि तुम युवती हो, सुन्दरी हो, और पैसों वालों में से सभी साधू नहीं हो गये हैं।

५

किंतु नीरा कच्ची गोली से खेलने वाली नहीं थी। उमानाथ ने जितना ही रुपयों की बात को टालने का प्रयत्न किया वह उतनी ही उसको पकड़े रही और यद्यपि उमानाथ मन ही मन कुछ चिड़चिड़ाया, पर अंत में उसे दो हज़ार रुपये देने ही पड़े। नीरा ने उन्हें लेकर अपने वस्त्रों में छिपा लिया। इस समय उसकी आँखों में उमानाथ के प्रति स्नेह की भावना थी। उसे विश्वास हो चला था। उसने कहा : आदमी तुम दिल के अच्छे हो, पर अड़ियल हो। तकलीफ़ों ने तुम्हें अविश्वासी बना दिया है, वर्नाऔर कोई गड़बड़ नहीं।

उमानाथ उठ कर कपड़े बदलने लगा। जब वे दोनों बाहर निकले, एक खाली विक्टोरिया सड़क पर जाती हुई दिखाई दी। उमानाथ ने उसे आवाज़ देकर रोक लिया। गाड़ी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। कलकत्ते की रात अब जगमगाने लगी थी। उमानाथ सोचने लगा। आज अंतिम रात है। कल कलकत्ता छूट जायेगा। यह वैभव, यह हाहाकार,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह जगमग, यह अंधकार, यह तृष्णा, यह अतृप्ति, सब एक टेढ़ा मेढ़ा रास्ता, और उस पर भटकता हुआ मनुष्य···क्यों···उसे याद आया···एक दिन जब वह यूरोप में था···ऐसे ही···सोचा था उसने···मार्क्स के सिद्धांत, लेनिन ने क्रान्ति को सफल कर दिया, और परिणाम···मज़दूर किसानों का राज्य हो गया···वहाँ यह सब वैषम्य अब नहीं रहा। क्या सचमुच इसी पृथ्वी पर एक स्थान ऐसा है, जहाँ मनुष्य गुलाम नहीं हैं·····उमानाथ को याद आया···यूरोप में··· इँगलैंड में···वह क्या था···क्या हो गया वह भारत आकर···और वह क्या था···कहाँ जा रहा है···क्रान्ति···मज़दूर···किसान···ग़रीब, शोषित, गुलाम ··और उमानाथ का जीवन, मदिरा, स्त्री, विलास, व्यभिचार,···यह सब क्या है···

सड़कों पर मोटरें भाग रही हैं···

नीरा सिगरेट पी रही थी। कोचवान उन्हें देख कर उनकी वास्तविकता को समझ गया था कि बाबू आज एक तवायफ़ को ले चला है। उसने पूछा : बाबू सा'ब! कहाँ चलेंगे?

'चले चलो।' नीरा ने उत्तर दिया। कोचवान चुप हो गया और उमानाथ के मस्तिष्क में विचार दौड़ रहे हैं...रूस की दुनिया कैसे बदल गई? वहाँ अब रास्ते टेढ़े-मेढ़े क्यों नहीं रहे? क्या इन्हीं टेढ़े मेढ़े रास्तों पर भटकते रहना अच्छा है, या एक नया सीधा-सादा रास्ता बना लेना अच्छा है? बगल में एक स्त्री बैठी है। वह मुझ पर विश्वास नहीं करती, मैं उस पर विश्वास नहीं करता। कुत्तों की तरह एक दूसरे से सतर्क रहते हैं। पर वासना के आवेश में हम एक दूसरे को ढूँढ़ते हैं···संसार···भाग रहा है, एक दयनीय दौड़...वे उच्च अट्टालिकाएँ...महान् है उनकी शक्ति, पर ईंट-ईंट में किसी मनुष्य की आह है, किसी की वेदना है, कितने मनुष्य नंगे, भूखे, भिखारी कुली, मज़दूर, कितने बेबस बाबू, पिसे हुए, बेकार...और स्त्री... लुटी हुई, उजड़ी हुई...सब कुछ दमघोट···

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कोचवान !' उमानाथ ने तनिक जोर से कहा : रोक लो।

गाड़ी से उतर कर उमानाथ नीरा का हाथ पकड़ कर उसे सामने के होटल में ले गया। दोनों भीतर बैठ कर शराब पीते रहे। वहीं खाना खाया। जब वे बाहर लौटे, दोनों के पाँव लड़खड़ा रहे थे।

दूसरे दिन दोनों ही का सिर तनिक भारी था। सामान बाँधने लगे। काम बिल्कुल गुप्त रूप से हो रहा था। नीरा का कई जगह थोड़ा बहुत कर्ज़ा था, यहाँ तक कि मकानदार को ही चार महीने का किराया देना था। दुपहर हो गई। दोनों उतर कर साम के छोटे होटल में घुस गये। जब खाकर लौटे तो नीरा देख कर ठिठक गई। एक आदमी चुपचाप खड़ा था। इस समय नीरा को देख कर वह मुस्कराया। नीरा ने द्वार खोल कर भीतर जाते हुए कहा : क्या है जी ? क्यों आये हो ?

'बहिन ने याद किया है।' उस आदमी ने सिर झुका कर कहा। उमानाथ ने उसे ग़ौर से देखा। लगा जैसे पहले कहीं देखा था। पूछा : तुम्हें कहीं देखा है। कभी प्रिंसेज होटल में गये थे ?

'जी सरकार' गया था। वही तो बीबी जी से कहने आया था।

नीरा बैठ गई। उसकी भौं तन गई थी। उसने कहा : क्या है ? कहो। जल्दी कहो। हमें अभी ईडन गार्डन जाना है।

'सरकार, बहिन के बच्चा हुआ न था ? उसे एक मोटे से नवाब से साहब ने लेने का वादा किया था।'

'तुम्हारी बहिन के ?' उमानाथ ने पूछा।

'जी नहीं, बीबीजी मेरे घर जान पहँचान रखती हैं। उनके।'

'अच्छा।' उमानाथ ने से हिलाया।

'जल्दी कहो।' नीरा ने फिर तेज़ आवाज़ में कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'सरकार,' वह आदमी कहता रहा जैसे उसके मानापमान का कोई सवाल ही नहीं था' वे नवाब और उनकी बेगम को तो रात को किसीने, कौन जाने, किसने, कतल कर दिया। अब हम तो मुहताज़ हो गये। अब क्या होगा, समझ में नहीं आता। तब बहिन ने कहा : आपके पास जाऊँ।'

'क्यों तुम क्या करते हो?' नीरा ने पूछा, 'नौकरी क्या हुई?'

'सरकार, जवाब मिल गया। सब जगह छँटनी हो रही है। मुझे भी निकाल दिया गया।'

'लो,' नीरा ने एक रुपया निकाल कर ज़ोर से फेंक दिया जो ज़मीन पर झन्न से बज उठा। उस आदमी की आँखें चमक उठीं। उसने झुक कर रुपया उठा लिया और झुक कर लंबी-लंबी सलामें करता हुआ धीरे-धीरे चला गया।

उसके चले जाने पर उमानाथ ने मुस्करा कर कहा : यह तुम्हारे बहनोई साहब थे?

'छिः' नीरा ने आँखें तरेर कर कहा : तुम्हें हमेशा मज़ाक सूझता है?

'तो भई, थे कौन?'

'एक ग़रीब आदमी है। इसकी बीबी पहले वाले मकान में मेरी पड़ोसिन थी। जब तब कुछ काम कर देती थी, और मैं इसे कुछ न कुछ मदद कर दिया करती थी। पर एक बार मैं पड़ी बीमार। उसी बेचारी ने मेरी बहुत सेवा की। तब एक दिन मैंने उसे बहिन कह दिया था। यह निखट्टू भी खड़े सुन रहे थे। फ़ौरन गाल बजाने लगे कि बीबीजी तो देवता हैं, माँ हैं, वर्ना इस तरह कौन गरीबों को सिर चढ़ाता है। और तब से आप मुझे सदैव अपनी बीबी की बहिन मानते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहानी के पीछे एक विषाक्त विवशता थी जिसे उमानाथ भूल से भी दुहराना नहीं चाहता था। उसने कुछ नहीं कहा। फिर मुड़ कर बोला : दूर नहीं गया होगा। बुलाऊँ ?

'क्यों ?'

'ठहरो।' उमानाथ दौड़ कर बाहर गया। वह आदमी गली के पार के नुक्कड़ पर पहुँचा था। इस समय तीन आवाज़ों में ही रुक गया। लौट आया। नीरा चकित थी। वह उमानाथ को समझ नहीं पाई थी। उसने कहा : क्यों बुला लाये हो ?

उमानाथ ने उसे कोई उत्तर न दे कर उस आदमी से पूछा : तुम्हारा नाम क्या है ? कौन जात हो ?

सरकार हम कायस्थ हैं। हमारा नाम नवाबराय...

'ठीक है, ठीक है...नौकरी करोगे ?'

'क्यों नहीं करेंगे सरकार ? नहीं तो क्या हुकूमत करेंगे।'

'अच्छा जाओ बीबी, बच्चा, सामान, सब यहीं ले आओ। हाँ, कलकत्ते की कैद तो नहीं। पढ़े लिखे हो ?'

'सरकार, कैद तो ज़िंदगी की है। मामूली काम चला लेता हूँ। अँग्रेज़ी में दस्तखत करना जानता हूँ।'

'बीस रुपये, खाना। मंजूर ?' उमानाथ ने कहा।

'हाँ, सरकार। न कुछ सही, पेट तो भरेगा। सरकार, पच्चीस कर देते तो हमारा मन रह जाता।'

'सब काम करोगे ? बाज़ार जाना, सामान लाना, और इंतज़ामात ? झाड़ू नहीं, जूते नहीं, कपड़े नहीं धोने पड़ेंगे। क्यों ?'

आदमी जैसे खुशी से पागल हो जाने वाला था। इससे पहले कि वह कुछ कहता उमानाथ ने उसे कमरे के बाहर ऊँगली से दिखाते हुए कहा : चलो जाओ। एक घंटे में आ जाओ। जाओ जल्दी करो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब वह चला गया उसने नीरा से कहा : यह आदमी थ्येटर के काम में मदद दे सकेगा। इसकी बीवी तुम्हारी खिदमत में रहेगी और उसका बच्चा भी उसी के पास रहा आयेगा, इस तरह उसे बेचना तो नहीं पड़ेगा। ठीक ?' फिर जैसे उसे अचानक याद आया—'सेठ रतन चंद से जाकर मिलूँ ? एक लाख न देगा, पचास हज़ार देगा।'

'अभी नहीं' नीरा ने कहा—'बम्बई में काम चालू करने के बाद। वह तुम्हें नहीं देगा मुझे देगा और मैं उससे नफ़रत करती हूँ।'

वह उद्विग्न थी। जैसे-जैसे जाने की घड़ी निकट आती जाती थी उसका आवेश बढ़ता जा रहा था। नवाब राय उसकी स्त्री चंदा, और बालक अपने दो टीन के ट्रंक लेकर आ गये थे। एक बोरे में बाकी सब सामान बँधा हुआ था। एक बिस्तर था। उनके सामान को उमानाथ थोड़ी देर तक घूरता रहा। फिर कहा सब सामान आ गया ?

'हाँ मालिक।'

चंदा नीरा के पाँवों के पास बैठ गई थी। वह उसे अपना बच्चा दिखा रही थी। उस निर्बोध सरल सुन्दर शिशु को देख कर नीरा को चंदा के मातृत्व से ईर्ष्या हुई। पर वह एक क्षणिक अनुभूति थी। क्या होगा इस सुख का जो स्वयं एक भार है। इस सुख के पीछे इनको कितना अपमान सहना पड़ता है। पर क्या स्वयं नीरा को अपमान नहीं सहना पड़ता ? नीरा का तो स्त्रीत्व का अधिकार भी छीन लिया गया है। चंदा गरीब है, दलित है, सब कुछ है, पर वह अभी तक अपनी मर्य्यादा को जीवित रख सकी है। नीरा उसके सामने कहाँ ?

नीरा को यह विचार अच्छे नहीं लगे। वह उठ कर इधर-उधर कमरे में ही टहलने लगी। चंदा ! कल यह अपने बालक को भी बेच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देने के लिये विवश थी। फिर भी कितनी शक्ति है! भूखे रहेंगे, मरेंगे, पर अपना सम्मान बना कर जिसकी पूजा करते हैं, उस भावना को कभी नहीं मिटने देंगे। और नीरा में वही नहीं है। वह अपमानित है, पर उसकी जलन में एक तृप्ति है, यदि कोई उसको लूट रहा है, तो वह उस लुटेरे को अपना गुलाम बना लेती है। अपने खुलेपन की बेहूदगी से उसने बहुत से कच्चे दिलों को अपने सामने से डरा कर भगा दिया है।

नवाब राय बहुक्म गाड़ी ले आया। नवाब राय, चंदा और बच्चे को लेकर, सब सामान के साथ उमानाथ स्टेशन चल दिया। नीरा घर लौट आई।

मकानदार की माँ ने झाँक कर पूछा : बीबी! कौन जाते हैं?

'रिश्तेदार आये थे।'

दोनों अपने-अपने पक्ष में बुड़बुड़ाईं। नीरा ने कहा : डायन तैयार बैठी रहती है और बुढ़िया मुस्कराई कि अब तो तवायफ़ के भी संबंधी होने लगे।

कलकत्ते के विशाल स्टेशन के एक प्लेट फार्म से दूसरे पर जाते समय हठात् उमानाथ ठिठक गया। नवाब राय ने चौंक कर पूछा : सरकार क्या हुआ? किन्तु उमानाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह ग़ौर से देख रहा था। सामने, दूर, ददुआ ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट राजा रामनाथ तिवारी खड़े थे। कुली सामान उतार चुके थे। साथ में दो नौकर थे। और उमानाथ ने देखा, उसके पिता को बुढ़ापे ने घेर लिया था। वे झुके हुए से लगते थे। जब वे लोग आगे निकल गये तब उमानाथ, अपने साथियों के साथ आगे बढ़ चला।

उसी समय पीछे से सत्वर आकर नीरा ने कहा, 'गाड़ी आने में कितनी देर है?'

'आने ही वाली है।' उमानाथ ने उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

मकानदार को चेकमा देने के लिये नीचे रुक कर कुछ देर बाद एक टैक्सी में आ गई थी। प्लेटफ़ार्म पर ज़िंदगी की कशमकश लहरा रही थी।

६

प्रिंसेज़ होटल की रंगीनी में कोई कमी नहीं थी। रामनाथ उदास से एक कुर्सी पर बैठे थे। उनके माथे पर विषाद और चिंता की गहरी रेखाएँ खिंची हुई थीं। कोई भी उन्हें देख कर यह अनुमान नहीं कर सकता था कि इसी लम्बे से आदमी में इतनी अधिक अकड़ होगी। एक दिन जिन दो कमरों में उनका सबसे छोटा पुत्र प्रभानाथ आकर टिका था आज वे उन्हीं कमरों में थे। उनके नौकर उन्हीं के साथ थे। जीवन में घर छोड़ते वक्त उन्हें अबके यह महसूस हुआ था कि वे अकेले नहीं जा सकते। इसीसे रामदीन और सत्यनारायण ड्राइवर को उन्होंने साथ ले लिया था। क्या जाने, कलकत्ता एक बड़ा शहर है, कितनी दौड़-धूप करनी होगी। वे सब प्रयत्न करके भी अपने पुत्र प्रभानाथ को सरकार से नहीं छुड़ा सके थे। उसके बाद अज़ीज़ बहादुर का मामला आया। उसमें भी वे असफल हो चुके थे। उनके छोटे भाई को यह परिणाम देखना पड़ा था। आज वे दोनों साधारण मुज़रिमों की तरह गिरफ्तार कर लिये गये थे; अज़ीज़ बहादुर नवाब साहब कैरा और पुलिस सुपरेन्टेंडेंट श्यामनाथ। दोनों ही वे कुछ भी हल नहीं निकाल पाते थे। क्या होगा? क्या सरकार यह भी नहीं सुनेगी कि वे दोनों ही पागल थे?

पुलिस का तार मिलते ही वे चल पड़े थे। जिस समय उन्होंने तार पढ़ा वे एकदम बैठ गये थे। उनके चेहरे पर सफ़ेदी छा गई थी और लगता था बेहोश हो जायेंगे। अवधेश डर गया था। महालक्ष्मी चौंक कर कह उठी थी, ददुआ! ददुआ!! क्या हुआ ददुआ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ओह !' पण्डित रामनाथ ने चौंक कर कहा। वे प्रयत्न करके भी सुस्थिर नहीं हो पाते थे। उन्होंने धीरे से कहा : नवाब अजीज़ बहादुर ने कलकत्ते के प्रिंसेज़ होटल में मिरज़ाबेग और बेगम कुलसूम का खून कर दिया। उस समय श्यामनाथ भी उनके साथ थे। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया है। कहते-कहते जैसे शब्द कंठ में अटक गये। उन्होंने कहा : ओह !

और वे चुप हो गये। जैसे अब कुछ भी कहना असम्भव था। यह दिन भी देखना बाकी था ? जिस दिन से वे दोनों उन्नाव छोड़ कर गये थे पण्डित रामनाथ एक दिन भी चैन से नहीं सोये थे। अपने भाई के प्रति उनमें बहुत अधिक ममता थी। श्यामनाथ का दिमाग़ क्यों खराब हुआ ? प्रभानाथ की मृत्यु के कारण ही तो। और श्यामनाथ जैसा आज्ञाकारी भाई किसी के लिये भी एक गौरव का विषय था। ऐसा कि सिर उठाना उसने नहीं सीखा। बुद्धि के स्थान पर सदैव श्रद्धा से काम लेता रहा। और एक आकस्मिक घटना ने उसे इतना विचलित कर दिया ! वह कहाँ होंगे ? क्या कर रहे होंगे ! यह विचार जब रामनाथ जी को हो आते थे, उन्हें एक उद्वेग सा होने लगता था, जैसे किसी ने उनकी शांति छीन ली थी। वे जितना ही उसे फिर से प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं, उतनी ही वह उनसे दूर हटती जाती है। इसी पशोपेश में, सतनामी रघुबीर नामक काँग्रेसी कार्यकर्त्ता आँखों के सामने आ गया था। बराबर लगान दिया करता था। लेकिन इस बार नहीं दे सका था, क्योंकि जेल चला गया था। उसकी बहू और बच्चों ने सब तरह के प्रयत्न कर लिये थे, पर वे लगान नहीं अदा कर सके। पण्डित रामनाथ तिवारी का पुत्र दयानाथ उस दिन घर छोड़ कर चला गया था। उनके हृदय में काँग्रेस के विरुद्ध आग लग रही थी। उन्होंने रघुबीर को बेदखल करवा दिया था। अब वह उनके विरुद्ध कुछ न कुछ गाँव वालों को भड़काया ही करता था। सरकारकार, जिलेदार तथा नया मैनेजर सब परेशान थे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर रघुवीर को रामनाथ सदा अपने सामने एक बौना मात्र समझते थे। उन्हें अपने भाई की फिक्र थी।

पुलिस ने रिपोर्ट दी थी कि वे दयानाथ के घर गये थे। रामनाथ को अत्यन्त क्रोध हो आया था। इच्छा हुई थी कि एक बार चल कर ले आयें, पर फिर इरादा बदल गया। दूसरे दिन ही खबर आगई कि वे वहाँ से भी कहीं चले गये। कहाँ चले गये? पण्डित रामनाथ को इसका कोई उत्तर नहीं मिलता।

वे कमरे से लेकर मैदान तक घूम आते, पर कहीं भी समस्या नहीं सुलझती। उनके विषाद की छाया अब महालक्ष्मी के चेहरे पर भी दिखाई देती। क्या था? और अब देखते-देखते क्या हो गया?

पण्डित रामनाथ तिवारी अभी हाईकोर्ट के किसी बंगाली वकील से मशविरा लेकर आये थे। उन्हें श्यामनाथ तथा अज़ीज़ बहादुर से मुलाकात करने का मौका दे दिया गया था। दोनों ने उन्हें देख कर सिर झुका लिया था। उनके पूछने पर नवाबसाहब अज़ीज बहादुर कैरा ने मुस्करा कर कहा था: राजा साहब! खान्दान की नाक रह गई। वर्ना यह कुत्ते सब तबाह कर डालते।

पण्डित रामनाथ ने देखा दोनों की आँखों में एक अजीब सी चमक आ गई थी। वे उसे देख कर डर गये थे। वकील ने सारा केस सुन कर कहा था: नवाब का छूटना मुश्किल है। श्यामनाथ छूट सकते हैं। सुन कर उन्हें कुछ तसल्ली हुई थी। बंगाली वकील लाखों में खेलता था, उसकी जजों से कुछ मुलाकात भी थी। लेकिन केस चलने का मतलब अखबारों में खबर छप जाना था। लोग सुनेंगे और क्या कहेंगे। रामनाथ का कुल एक के बाद एक करके सब इस प्रकार कहाँ जा रहा था।

पण्डित रामनाथ ने सिर उठा कर देखा। सत्यनारायण द्वार के पास बैठा था। रामदीन बैठा जूतों पर पालिश कर रहा था। उनकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखें उन दोनों से हट गईं। वे फिर गहरी चिंता में डूब गये। आज उनका शरीर थक गया था। कलकत्ते के कोलाहल ने उन पर एक विचित्र थकान डाल दी थी। वे उन्नाव की नीरवता के आदी थे। जब उससे भी ऊब जाते थे तब बानापुर चले जाते थे। वहाँ और भी अधिक शांति रहती। साँझ हुई, ज़िंदगी थक गई। रात शुरू हुई कि आधीरात का सन्नाटा छा गया। बानापुर के पास का गाँव गूलर खेड़ा तो इसीलिये प्रसिद्ध था कि वहाँ के पैंतीस साल के ऊपर के लोग अफ़ीम खा-खा कर शाम के आठ बजे सो जाते थे और सुबह चार ही बजे से उठ कर दिन के काम शुरू कर देते थे। रात से विरोध नहीं किया जाता था।

अंत में वे उठे। उन्होंने निश्चय कर लिया। दो आदमियों की ज़मानत दिलवा कर दोनों को छुड़वाना था। मुचलके भी देने थे। पुलिस ने उनकी ज़िम्मेदारी पर यह करना स्वीकार कर लिया था। इस समय काश उनके घर का कोई उनके साथ होता। नौकर कैसा भी हो नौकर ही है। घर के आदमी की बात ही और है। दो-दो जवान लड़के हैं। एक भी काम का नहीं। उनका हृदय फिर उस सबको भुला देना चाहता था।

अज़ीज़ बहादुर सचमुच पागल हो गये। उन्हें पागल कह-कह कर लोगों ने अंत में पागल बना कर ही छोड़ा। पर क्यों? क्योंकि उनके पास ज़मीन थी, संपत्ति थी। उस संपत्ति पर सब पलते थे। किंतु अधिकार के लिये यह छीना झपटी! स्वार्थ के लिये? संपत्ति ही स्वार्थ की जड़ है। उसकी अति, उपस्थिति और अभाव, तीनों का ही क्रम न होने से इतनी उलझन है। मनुष्य अपनी समस्त मनुष्यता को भूल जाता है। और अचानक रामनाथ के दिमाग़ में बिजली की तरह चौंधिया गया। वे उससे सिहर उठे। ये वे क्या सोच रहे थे। संपत्ति का स्वार्थी नियंत्रण ही, जो दूसरों में अभाव की, सांसारिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कष्टों की सर्जना करता है, समस्त पशुता का प्रारंभ है। मनुष्य का मनुष्यत्व सदैव उसे पराजित करना चाहता है। इसीलिये है यह साधू संतों के त्याग की नैरंतर कामना। इसीलिये है यह उपेक्षा, यह विरक्ति। यह भी कुछ नहीं, वह भी कुछ नहीं। यदि यह सब कुछ नहीं, तो क्यों कुछ लोग यह सब बड़ी-बड़ी बातें कह कर भी अधिकार सुख नहीं छोड़ देते?

रामनाथ का हृदय विचलित हो उठा। दूर होगी महालक्ष्मी और समस्त संपत्ति का वारिस अवधेश। एक बालक। उसे कितनी ज़िम्मेदारी उठानी है, कल वह बानापुर की छोटी सी रियासत का राजा होगा। कल उसे देख कर सैकड़ों आदमी डर कर सिर झुकायेंगे। राजा रामनाथ का गौरव कुल परंपरा से पीढ़ी पर पीढ़ी समाज की छाती में कील बन गड़ा रहेगा।

इस विचार ने उन्हें शक्ति दी। वे उठे। उन्हें फिर पुलिस सुपरिन्टेंडेंट से जाकर मिलना था।

७

पंडित रामनाथ के चले जाने पर जब उमानाथ का तार पहुँचा उस समय घर में अँगरेज़ी पढ़ा लिखा कोई न था। नौकर को भेज कर पड़ोस के वकील साहब को बुलवाया गया। पर्दे के पीछे से महालक्ष्मी ने सुना। वही बात थी। उस पर कोई नया प्रभाव नहीं पड़ा।

'तो क्या राजा साहब इसी सिलसिले में कलकत्ते गये हैं?' मोटे बूढ़े वकील साहब ने पूछा।

'जी हाँ,' नौकर ने उत्तर दिया।

मामला इतना पेचीदा था कि वकील साहब कह उठे: भेजने वाले ने तार के नीचे अपना नाम क्यों नहीं लिखा? मेरे ख्याल से तो यह किसी की बदमाशी है। परसों ही की बात है,' वे कहने लगे—'एक आदमी आया और राजा विश्वनाथ साहब के यहाँ पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा साहब थे नहीं। बोला कि पास के एक गाँव में राजा साहब की मोटर से एक बुढ़िया कट गई है। दारोगा मामला ले बैठा है। आठ हज़ार रुपये राजा साहब की जेब में थे। दरोगा को दे दिये। अब दो हज़ार की कसर है। रानी साहिबा ने सोचा कि चलो बुढ़िया तो मर गई और दो हज़ार देकर पिंड क्यों न छुड़ाया जाय। दे दिये। कल राजा साहब आ पहुँचे और सुन कर बहुत नाराज़ हुए। मैंने कहा सरकार के दर पर झोपड़ा डाले खड़ा हूँ, क्यों न मुझसे कुछ काम लिया जाये? पर बड़े आदमी हैं। उनके लिये तो दो हज़ार कोई बात नहीं, पर गुंडों की तो इससे हिम्मत बढ़ती है।' उनका स्वर बदला: मुझे डर है कहीं किसी ने जाल नहीं बिछाया हो। इस तरीके से लफ़ंगे रुपया ऐंठ लेते हैं। मुमकिन है कल खुद तिवारी जी के नाम का तार आये कि इतने रुपये भिजवा दो। अब बताइये, कैसे जाना जा सकता है कि वह तार किसने दिया, क्यों दिया...'

वकील साहब देर तक अपनी दुनियादारी की जानकारी अपनी मोटी और घिरघिरी आवाज़ में बघारते रहे। उनका स्वर कुछ देर बाद अपने आप लरज़ा और डूब गया। महालक्ष्मी उनके चले जाने पर काफ़ी चिंतित हो गईं। बहुत बड़ी समस्या थी। वकील साहब ने इस घटना को झूँठ बताया था। खैर, इसमें तो शक की कोई गुंजायश ही नहीं थी, क्योंकि पुलिस ने भी यही तार दिया था। पर अब रुपया कैसे भेजा जायेगा। क्या पहँचान होगी? उसने हल ढूँढ़ निकाला। तुरंत रामनाथ को तार दिया कि अगर आप रुपया वगैरा मँगायें तो अपने तार में रामनाथ मंगल नाम दे दें। उससे गड़बड़ नहीं होगी, क्योंकि यहाँ इसी घटना के विषय में एक अनाम तार आया है। हो सके तो तलाश कीजिये वह कौन है जिसने यह तार भेजा है।

वकील साहब ने तार लिख दिया और स्त्री की बुद्धि से प्रसन्न हुए। खूब सोचा। काफ़ी चतुर है। इसी को उमानाथ छोड़ कर चला गया है। लेकिन उनके पास ज्यादा सोचने का वक्त नहीं था। दूसरों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख दुख को वे क़ानून के माध्यम से देखते थे। पर महालक्ष्मी अवधेश को खिला पिला कर जब दुपहर को लेटी तो उसके दिमाग़ में एक चंचलता जाग उठी। बराबर करवा चौथ को व्रत रखने वाली यह युवती आज तक नहीं समझ सकी कि उसमें क्या कमी थी जो उसके पति ने उसे त्याग दिया। जब उसका विवाह हुआ था वह अत्यंत सुख से आई थी। पति ने उसे अपना प्यार दिया था और उसी का परिणाम उसके सुहाग की विजय का चिन्ह अवधेश था। जिसके मुँख को देख-देख कर वह अपना जीवन व्यतीत कर रही थी। किन्तु उसके बाद प्रभानाथ कलकत्ते गया। वहाँ से उमानाथ को लाया तो महालक्ष्मी पति की उपेक्षा को एकाएक ही समझ नहीं सकी। और बाद में एक रात स्वयं उमानाथ ने ही बताया कि वह एक मेम से शादी कर चुका था। घर में और किसी को यह बात नहीं मालूम। स्वयं राजेश्वरी तक को नहीं। पर महालक्ष्मी कभी-कभी अपने आपको शीशे में देखती। निस्संदेह वह सुन्दर थी। एक बात ज़रूर थी कि पहली नज़र डालने पर गाल कुछ खिचे हुए से थे, पर जब वह बार-बार देखती, तो उसे सब ठीक लगता। गाल कोई बैठे हुए तो थे नहीं। और क्या औरतें बुरी नहीं होतीं। और तो कोई दोष नहीं। वह कभी खुल कर जबाब नहीं देती, कभी किसी से चिड़चिड़ा कर नहीं बोलती, यहाँ तक कि जो औरतों के दो मुख्य स्वभाव हैं—एक बक-बक करना, दूसरे घरेलू मामलों में पुरुषों से झींखना, वह तक उसमें नहीं। नौकरों से भी उसका व्यवहार कभी बुरा नहीं है। फिर ? उमानाथ ने उस दिन अपने दूसरे विवाह की बात करते हुए कहा था कि महालक्ष्मी मैं पापी हूँ। महालक्ष्मी ने कहा था कि मैं उस मेम की दासी बन कर ही रहूँगी। और एक दिन उमानाथ को पुलिस के डर से घर छोड़ कर जाना पड़ा। उसके कठोर पिता ने उसे सहायता नहीं दी। उस दिन महालक्ष्मी ने सुहाग का मोल चुकाया। अपनी दृष्टि में उसने महान् कार्य्य नहीं किया कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब गहने उसे दे दिये, जो यदि उपन्यास का पात्र होता तो लंपट कहलाता, महालक्ष्मी उसकी छाया से बचती। हाय नारी! कितना गलित और दयनीय है तेरा जीवन! तुझे उसकी उपासना करनी है, जिसके तू सुख का साधन-मात्र है। अच्छा होता तेरे पास न हृदय होता, न बुद्धि। फिर भी अपने को रिस-रिस कर मिटाने में भी तू अपनी महानता समझती है।

महालक्ष्मी सोचती। वह हिन्दी के अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ लेती थी। नये-नये विचारों को उनमें देखती। स्त्रियों के अखबारों में एम० एम० तथा बी० ए० पास स्त्रियों के फोटो निकलते, पुन विवाह करने वालों के दंपतिचित्र छपते। और फिर वह गा-गा कर विधवा की पुकार, या अबला की चीत्कार शीर्षक कविताएँ पढ़ती। वे उसके मन को छूने वाली रचनाएँ थीं। उसे यही लगता कि वह सब उसे ही देख कर लिखा गया था।

क्या वह राजेश्वरी से कम सुन्दर थी? यह भी भाग्य की ही बात होती है। क्या कारण है कि दयानाथ अपनी पत्नी के प्रति अनुरक्त है। लेकिन इसका कारण है। जब दयानाथ ने अपने पिता को छोड़ा तो वह भी सबको ठुकराकर उसी के पीछे चली गई। क्यों न महालक्ष्मी भी उमानाथ के साथ चली गई?

महालक्ष्मी ने सोचा। दयानाथ राजेश्वरी का ठौर ठिकाना लगा गये। उनके लिये कोई चिंता नहीं। किन्तु उमानाथ उसे कहाँ ले जाते? वह न पढ़ी न लिखी। विलायत जाकर उनकी हँसी उड़वाती। और वे तो दुनिया के गरीबों का भला करना चाहते हैं। पर वह क्या कर रहे हैं? पहले तो अपनी ब्याहता को ही छोड़ दिया। यह न्याय महालक्ष्मी की समझ में ही नहीं बैठता था। कहानियाँ पढ़ती थी। एक पत्रिका में बहिनों के पत्र छपते थे। उसमें औरतें संपादक से बिना अपना नाम दिये अपनी परेशानियों का हल पूछतीं थीं। क्या वह भी पूछे? किन्तु संपादक क्या बता सकेगा। पत्र भेजने का विचार भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकार भीतर ही भीतर घुटने लगा था, बल्कि मिट सा गया था। सारांश यह कि वह नहीं ले गये, उन्होंने पति का पहला कर्त्तव्य नहीं निबाहा। तो वह क्या करती ? हो सकता है कि वह स्वयं कायर है। पीछे चल पड़ती। देखें क्या करते ? पर अवधेश का तब क्या होता ? यहाँ घर कौन सँभालता ?

महालक्ष्मी की चिंता का कोई अंत दिखाई नहीं देता। और आज जब वह सोचती कि आखिर यह तार दिया किसने तो उसके मन की वीणा का तार—केवल एक तार, कुछ हिलता। सारे तार तो ढीले पड़ गये। आशा, और प्रिय लगने वाली आशा चाहती है कि अब खूँटी उमेठ कर ऐसा कस दे कि वह तार बजने लगे, पर नहीं हो सकता। जैसे अँधेरी रात में हवा की गूँज सुन-कर व्याकुल विरहिन समझी थी कि बहुत दूर, कहीं, बहुत दूर, उसके पिया उसे बुला रहे हैं···बहुत दूर···अंधकार में···महालक्ष्मी सोचती···क्या यह तार···उमानाथ ने···सच···उन्होंने ही तो नहीं दिया। वे भी तो कलकत्ते ही गये थे। क्या वे परदेस नहीं गये ? पर मन की दीपशिखा फिर बुझ जाती। यह वह क्या सोच रही है। मन जब सब कुछ खो चुकता है तब अपनी सुन्दर-सुन्दर कल्पनाओं में ही भूला रहना चाहता है, उसे अपने आपको धोखा देने में भी आनंद आता है।

और जब उसके दिमाग़ में घर की उजाड़ हालत आती, तब उसे चारों ओर विपन्नता, आशंका ही दिखाई देती···वह स्त्री··· अवधेश बालक···और ददुआ बूढ़े···और चारों ओर भूखे गीदड़··· वह काँप उठती।

८

तार वाला कैरा में वहाँ का डाकिया ही था। उस दिन उसकी आफ़त आ गई। वह तार लेकर कोठी खास पर पहुँचा तो माधोनरायन ने रोका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कहो कोई खत है ?'

'खत ?' डाकिया भुनभुनाया। 'एक पूरा तार है।'

'तार है ?' माधोनरायन ने आश्चर्य से कहा। दस्तखत करके दौड़ा-दौड़ा भीतर गया और चिल्लाया : बधाई है सरकार को। मुँह मीठा होना चाहिये सरकार। तावेदारों को इनाम मिलना चाहिये।

दो चार नौकर और इकट्ठे हो गये। सबको आशा थी कि अब कुछ न कुछ ज़रूर मिलेगा। बल्कि वे यह तक सोच रहे थे कि क्या माँगना चाहिये ? डाक्टर इब्राहीम खाँ ने बतलाया था कि बेगम कुल-सूम के कुछ होने वाला है। और इसीलिये मिरज़ाबेग उन्हें लेकर कल-कत्ते गये हैं। माधोनारायण की चीख पुकार सुनकर मखमूर मियाँ घबरा गये। बेगम नरगिस चौंक उठीं। दुपहर का वक्त था। सब खा पी कर आराम कर रहे थे। बेगम गुलनार सब कुछ जान कर भी चुप थीं। कहने का मौक़ा नहीं था। वे कुछ चाल सोच रही थीं कि किसी तरह इस राज़ का भंडाफोड़ करके नरगिस की इज़्ज़त धूल में मिला दी जाये। पर मजबूर थीं। खतरे का वक्त था, मिलकर काम करने का वक्त था। इस वक्त वे अपने कमरे से निकल आईं और पुकार कर कहा : अये मियाँ मखमूर ! कहाँ रह गये ? सुना नहीं ? तावेदार नीचे से पुकार रहे हैं।

मखमूर जल्दी-जल्दी नरगिस बेगम के कमरे से निकले। जल्दी में दरवाजे से टकरा गये।' मैं····· मैं···जगाने आया था···बेगम साहिबा को···इसीलिये···' मखमूर के मुँह से घबराहट में टूटे फूटे बोल निकले।

'अऐ' जाग जायेगीं बेगम भी। तुम जाकर देखो भी तो। क्या शोर है !'

नौकर बढ़े आ रहे थे और शोर कर रहे थे। बूढ़ी नौकरानी फ़ातिमा ने आँखें चुंदी करके देखा और कहा : अये मुए ! बधाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नरगिस बेगम अब तक निकल आई थीं। उनकी आँखें अलसा रही थीं।

गुलनार ने कहा, 'बेगम सो रही थीं?'

'मुओं ने सोने ही कहाँ दिया? गुल मचाने लगे।' नरगिस ने कहा। वह उनके व्यंग को समझ गई थीं। फिर भी उस पर ध्यान न देना ही उचित समझा।

'बधाई!' बुढ़िया फ़ातिमा ने कहा: बधाई कैसी? हो गया बेगम! अल्लाह देता है, तो छप्पर फाड़ कर देता है, चाहे घर में कुछ भी न हो, अब तो मैं अपनी चीज़ लेकर रहूँगी।

दोनों बेगमें एक दूसरी की ओर देख कर मुस्कराई। चाल सफल हो गई। किंतु फिर दोनों की आँखों में ईर्ष्या खेल उठी। इसका अर्थ हुआ कुलसूम का गौरव और मान अब बहुत बढ़ गया। पर इसके बिना कोई चारा भी न था।

'खुदा का शुक्र है,' गुलनार ने कहा।

नरगिस ने दोनों हाथ उठाकर कहा: 'परवरदिगार! तू सब जानता है। मदद करता है।'

नौकर जोश में भीतरी दरवाज़े तक आ गये थे। मखमूर उन्हें रोक रहा था।

'अम्माँ, क्या है? क्यों चिल्ला रहे हो?'

'सरकार' माधोनरायन ने कहा: तार आया है। मैं तो एक साफ़ा भी लूँगा।

रईस के नौकर माँगें पेश करने में कब पीछे रहते हैं। एक के बाद एक कह गया: अब के हुजूर धोती जोड़ा मिलना चाहिये।

मैं तो बस नया हुक्का लूँगा।

'सब आपका दिया है सरकार, कपड़ा फट गया है...'

'हो गया, हो गया,' मखमूर ने कहा—'तार तो दिखाओ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़ातिमा झाड़ू लेकर आगई। उसके अपने सगुन टोक रहे थे। वह बधाई वालों से मज़ाक करने उतरी। कहा : ऐ, मरदुओ! ऐसा क्या मालिक का अदब नहीं रहा। कब नहीं मिला जो लेंगे लेंगे...

'बस, बस, अब सब मिल गया,' नौकर पुकार उठे.....

मख़मूर ने तार खोला। मगर समस्या अटक गई। अँगरेज़ी में था।

बेगम गुलनार ने पर्दे के पीछे से कहा : पढ़ो मियाँ, रुके क्यों ?

'जी हाँ, बेगम साहिबा,' मख़मूर ने हकला कर कहा...'जी हाँ, पढ़ता हूँ.....'

नरगिस समझ गई। कहा : रामगोविंद को बुलाओ।

एक नौकर दौड़ कर गया। रामगोविंद ने सुना तो लपके चले आये। फौरन तार लेकर पढ़ा। लेकिन पढ़ता था। और रंग उड़ता जाता था। उसकी आँखें झुक गईं और माथे पर पसीना आ गया।

बेगम गुलनार ने चौंक कर पूछा : क्या हुआ ?

'क्या हुआ मैनेजर साहब,' मख़मूर ने डर कर पूछा। किंतु रामगोविंद ने क्षण भर कोई उत्तर नहीं दिया। वह उसी प्रकार सकते की सी हालत में खड़ा रहा जैसे वह खो गया था।

बेगम गुलनार ने अधीर होकर पूछा : पूछो मख़मूर मियाँ। क्या लिखा है।

'बोलते क्यों नहीं ?' फ़ातिमा ने झाड़ू कंधे पर रखकर बढ़कर प्रश्न किया।

रामगोविंद ने तार पर निगाह गड़ा दी। सब चुप हो गये। उसने तर्जुमा करके बताया : नवाब अज़ीज़ बहादुर ने प्रिंसेज होटल में बेगम कुलसूम और मिरज़ाबेग का क़त्ल कर दिया। गिरफ्तार हैं।

सुनने वालों के सीने पर घूँसा पड़ा। जैसे खड़े थे खड़े के खड़े रह गये। किसी की भी समझ में नहीं आया। माधोनरायन सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झुकाये अपराधी की भाँति खड़ा था। उसके चेहरे पर जैसे किसी ने स्याही फेर दी थी। बाक़ी के इनाम माँगने वाले...सब के चेहरों पर डर समा गया था। फ़ातिमा को कुछ भी नहीं सूझा तो उठाकर उनके झाड़ू मारकर चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी। उसकी वह करुण और कर्कश पुकार उस सन्नाटे को वीभत्स बनाने लगी, जिसको सुनकर घर में एक मातम-सा छा गया। रह-रह कर मोटे मिर्ज़ावेग और बेगम कुलसूम की शक्ल याद आती थी। मख़मूर दोनों बेगमों को सहारा देकर भीतर ले आया। तीनों चुप थे, जैसे किसी के भी पास अब बोलने को शब्द नहीं रहे थे।

काफ़ी देर बीत गई। मख़मूर ने कहा : बेगम ! एक बात कहूँ।
दोनों ने उसकी ओर देखा।

मख़मूर ने कहा : लाशों का डाक्टरी मुआयना हुआ होगा। जाहिर है कि बेगम हामला न थीं। यह अब हमें नहीं कहना चाहिये। डाक्टर इब्राहीम की रिपोर्ट बरबाद कर दीजियेगा।

'इनके पास है,' गुलनार ने नरगिस की ओर देखकर कहा।
नरगिस चुप रही। फिर पूछा : 'तार किसने दिया है ?'
'कलकत्ते के पुलिस दफ्तर से आया बताया था।'
'तुम कलकत्ते जाओगे ?'
'जैसा आपका हुक्म हो।'
'लेकिन फिर यहाँ कौन रहेगा ?' गुलनार ने टोका।
'यहाँ रामगोविंद है। माधोनरायन है।'

'वह ठीक नहीं है।' नरगिस ने कहा : 'हम आखिर औरतें हैं। घर में कोई आदमी अपना भी रहना चाहिये। क्यों बेगम ?'

बेगम ने स्वीकार किया : 'हाँ, वक्त, कितना उल्टा है। कुछ ठीक नहीं है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'एक काम करूँ' मख़मूर ने कहा, 'तार दे दूँ। ख़बर आ गई। मुक़द्दमा चलायेंगे। पुलिस चलायेगी। हम मदद देंगे। क़त्ल की वजह बतायेंगे। ठीक है बेगम ?'

गुलनार ने सिर हिलाकर स्वीकार किया। वह कुछ डरी हुई थी। नरगिस चुप थी। कुछ सोच रही थी। हठात् उसने कहा, 'फिर क्या होगा ?'

'फिर सज़ा होगी।'

'पर मरे हुए तो लौटेंगे नहीं ?'

मख़मूर ने निराश आँखों से देखा। बेगम फिर चुप हो गई। गुलनार ने पूछा, 'अब क्या होगा ?'

'कोरट होगा बेगम। अब तो कोरट होगा।'

'उसमें क्या होता है ?' नरगिस ने पूछा।

'सरकार एक मैनेजर रख देती है। वही सब देखभाल करता है। जब तक आप लोग हैं तब तक सरकार खर्च बाँध देगी। उसके बाद...

'उसके बाद ?' नरगिस ने कहा।

'सरकार रियासत को अपनी ही समझेगी। बिना वारिस के क्या हो सकता है।'

बेगमों के सिर झुक गये।

नरगिस ने पूछा, 'फिर वह मैनेजर हुकूमत करेगा ?'

'क़ायदे की बात है।'

'फिर ? खर्चे क्या होंगे ?'

'सब उसके जिम्मे।'

'हमको क्या मिलेगा ?'

'जो वे ठीक समझें। अब तो कर्ज भी चुकाया जायेगा न ?'

मख़मूर की बातों का सत्य दोनों का हृदय झकझोर गया। उन्होंने मख़मूर की ओर लाचारी से देखा। मख़मूर ने सिर झुका लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उदास कमरे में एक भारीपन था। मख़मूर बाहर चला गया। बेगम गुलनार अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट गईं। लेकिन नरगिस अभी तक बैठी थी। वह कुछ सोच रही थी। उसकी भवें तन गई थीं और वह कठोर लग रही थी।

६

रात हो गई थी। पण्डित रामनाथ तिवारी थक गये थे। वे पलंग पर लेटे थे। रामदीन उनके पाँव दबा रहा था। आज से नहीं, पीढ़ियों से रामनाथ के पूर्वज ऐसे ही लेटते आये हैं, और ऐसे ही रामदीन के पूर्वज उनके उन पाँवों को दबाते रहे हैं—जो पृथ्वी पर गिरते हैं तो शासक का गर्व भार लिये और जब उनमें वह अभिमान फटने लगता है तो ठोकर मार देते हैं।

उनका काम हो गया था। कलकत्ते के हृदयहीन वास में उन्होंने हाथ खोल कर रुपया खर्च किया था। जब वे नवाब अज़ीज़ बहादुर और श्यामनाथ से मिलने गये तो नवाब ने चुपके से उनके हाथ में अपनी मोतियों की माला को रख दिया और स्वयं ही उनकी मुट्ठी को बंद करने को दोनों हाथों से उसे थाम लिया।

रामनाथ ने पूछा : यह क्या है नवाब साहब ?

'राजा साहब,' नवाब ने काँपती आवाज़ में कहा : आप के अहसानों को ज़िंदगी भर नहीं भूल सकता। मैंने खून किया है, क्योंकि मेरा दिल जल रहा था। मेरी खान्दानी इज़्ज़त को डुबा कर यह बेगमें नौकरों की तवायफ़ें बन गईं थीं। मैं जानता हूँ इसके लिये मैं भी कुसूरवार हूँ। जो कुछ मैंने किया उसका मुझे कुछ भी गिला नहीं। परेशानी नहीं। मौत से मैं नहीं डरता। मेरे लिये मौत ही अब सबसे बड़ी इज़्ज़त है। लेकिन मुझे छुटके राजा का अफ़सोस है। वे ख़ामख्वाह गिरफ्तार हो गये हैं। उन्हें छुड़ाइये। मेरी वजह से हुए हैं इसलिये आज मैंने आपको अपने खान्दान की इज़्ज़त, वह शान और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शौकत की विरासत भी दे दी है। मेरे जिस्म के लहू का एक-एक क़तरा आपके और आपके भाई के लिये बहे, तो मरते वक्त भी मैं उफ़ नहीं करूँगा, राजा साहब। इसे क़ुबूल कीजिये।

'लेकिन,' रामनाथ ने कहा, 'इसकी ज़रूरत ही क्या है?'

'ज़रूरत?' नवाब साहब ने कहा : रुपये के लिये नहीं है। यह मैं भी जानता हूँ। पर कमबख्त पुलिस वालों के हाथ गर यह माला पड़ गई तो क्या बच सकेगी? या फिर उन दोज़ख के कीड़ों को मिलेगी जो इस वक्त क़ैरा में हैं। क्या करूँ। छुटके राजा, ज़रा पागल हैं, वर्ना मैंने तो उन्हें भाग जाने की सलाह दी थी।'

'यह सलाह आपने क़त्ल के बाद दी थी?' रामनाथ ने पूछा।

'जी हाँ,' नवाब ने कहा, 'मुझे क्या मालूम था मुझे अब यहीं इसी वक्त आगे चल कर क़त्ल करना पड़ेगा।'

'उस वक्त वहाँ और भी कोई था?'

'जी हाँ, वह मरदूद दारोग़ा था, पुलिस इन्सपेक्टर।' और नवाब ने फिर कहा : आप ही बताइये राजा साहब। मैंने साहब सलामत में कोई कसर की? बराबर इसी कुर्सी के अँग्रेज़ को डालियाँ भिजवाता रहा। मगर उसने आप तक तो टाल दिया! और यह कुत्ते, मुझे पागल कहते थे। मैंने कहा बहुत अच्छा, अगर तुम मुझे पागल कहते हो तो लो देखो, पागल क्या-क्या करता है। और मैंने कुछ कर दिखाया। नवाब के स्वर में एक जमा हुआ भीतरी आतंक था, जो अब उनके अंतस्थल में समा गया था। रामनाथ के मन में अनेक तर्क उठ रहे थे। वे कहना चाहते थे कि तुम सचमुच पागल हो और पागल को पागल कहने में कोई दोष नहीं। पर रामनाथ जानते थे कि उन्हें पागल किसने बना दिया। घृणा से उनका मन भीतर ही भीतर उबकाई खाने लगा। इतना अन्याय आँखों के सामने हो रहा था, पर कोई कुछ नहीं कह सकता क्योंकि सबूत नहीं है। जान पहँचान का बनिया आँख के सामने बेमुरव्वती से डंडी मारता है। आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानते हैं कि वह कम तोल रहा है, पर तकल्लुफ़ के मारे कुछ नहीं कह सकते, क्योंकि नज़र बचाये का खेल है, जो पहले मारे सो मीर।

राजा रामनाथ ने माला को रख लिया। उन्होंने कहा : अगर हो सका, परमात्मा ने चाहा, तो मैं आपको भी छुड़ा लूँगा।

'मैं चाहता तो नहीं,' नवाब ने काटा।

'वक्त सब घावों को भर देता है नवाब साहब,' रामनाथ ने गंभीरता से कहा, 'अभी ज़ख्म हरा है।'

'अब यह कभी नहीं भर सकेगा। अब मेरी प्यास बढ़ गई है। अगर मैं छोड़ा गया तो कैरा जाकर गुलनार, नरगिस और मख़मूर का भी खून कर दूँगा। जो मुझे बरबाद करके ऐश करना चाहते हैं मैं उन्हें मिटा दूँगा, जो मुझे मिटा कर खुद फलना-फूलना चाहते हैं, मैं उन्हें तबाह कर दूँगा,' नवाब की आकृति भीषण हो गई थी। रामनाथ ने देखा उनकी आँखों में सफ़ेदी चमकने लगी थी।

नवाब ने नम्र होकर कहा : मेरी खता मुआफ़ की जाये। जाने या अनजाने अगर मुझसे किसी किस्म की बेअदबी हुई तो आप उसको छोटे भाई की ग़लती समझ लें। उस पर नाराज़ होना आपको अच्छा नहीं मालूम देगा। नवाब की आवाज़ भर्रा गई।

रामनाथ लौट आये। कल ज़मानत पर दोनों छूट जायेंगे। तार उन्हें मिल गया था। महालक्ष्मी की शंका ने उन्हें भी कुछ चौकन्ना कर दिया था। उन्होंने कहा : रामदीन! यहाँ तो कोई अपना रिश्तेदार भी नहीं रहता?

'नहीं सरकार, यहाँ कहाँ?'

'तो फिर यह तार किसने दिया?'

'सरकार, यह तो समझ नहीं पड़ता।'

मूर्ख! राजा साहब ने मन ही मन कहा। उन्नाव में होते तो क्या कभी उससे कोई राय ली जाती? परदेस में तो अपने गाँव का धोबी भी यार होता है। अतः मानव स्वभाव की जो कमज़ोरी उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनजाने ही दिखाई उसके प्रति उन्हें शोक हुआ। 'होगा कोई,' सोच कर उन्होंने करवट बदल ली। दिमाग में तरह-तरह के चित्र आते थे, मिट जाते थे।

वे जिस भाई पर इतना स्नेह उँड़ेल रहे थे, उसका क्या परिणाम हुआ? क्या अब वह किसी भी योग्य रह गया है? रामनाथ को याद आया। वे सदैव सामर्थ्य की बात करते थे। क्या उनकी सामर्थ्य एक छल नहीं थी। एक झूठा आडंबर मात्र न थी। वे अपने को भूले हुए थे। जैसे-जैसे विषमता आगे आती गई, वैसे-वैसे ही परिस्थिति जटिल होती गई। वही मैं हूँ, वही गाँव है, वही अधिकार हैं, वही तुम हो···रामनाथ सोचते···फिर जो अभी तक होता आया है, वह अब क्यों नहीं हो। ऐसा क्या परिवर्तन आ गया है? और रामनाथ को कुछ चुभने लगा। मैं जो चाहता हूँ, मैं जिसे ठीक समझता हूँ, उसे अब और लोग ठीक नहीं समझते, मैं जिसे अपना उचित अधिकार समझता हूँ, उसे दूसरे अपना अभाव मानते हैं, मैं जिसे न्याय कहता हूँ, उसे अब मेरे स्वार्थ की रक्षा समझा जाता है···

जैसे-जैसे वे सोचते थे, उनके मुख पर घृणा मुखर होती जाती थी। वह इतनी अधिक हो गई कि रामदीन पाँव दबाते-दबाते चौंक गया और उनके मुख को घूरने लगा। कितनी घृणा थी, कितना पशुत्व था उसमें। नितांत हिंसक पशु की भयानक विकृति, मनुष्य जैसे पिशाच हो गया था। लगता था रामनाथ का हृदय एक संपत्ति है, गड़ा धन है, जिस पर अधिकार का अभिमानी सर्प अपना फन चौड़ा किये बैठ कर फुफकार रहा है। उस रूप को देख कर सदा दबे रहने वाले रामदीन को एक घृणा हुई। वह दबी हुई भावना उसके मन में सिमट कर रह गई। रामनाथ ने सोचते-सोचते आँखें मूँद लीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या है यह विद्रोह। क्यों एकदम सब तरफ से मनुष्य उठ रहा है। कल तक यह कीड़ा—यह निरीह···जनता···यह भेड़ बकरी···ये गंदे लोग···अपढ़, अशिक्षित, जूतों से दुरुस्त रहने वाले···कहाँ से आया इसमें इतना साहस·····क्या इनमें इतनी सचाई और मर्य्यादा सदैव भीतर निहित थी·····क्या इनमें कोई मनुष्यत्व शेष था···सब···सब के सब उठना चाहते हैं···समाज के इन उपस्थित नियमों को उच्छृंखलता से तोड़ देना चाहते हैं···

रामनाथ के सामने उपचेतन से एक रेखा निकली। वह रेखा फिर मोटी होने लगी, फिर वह बढ़ने लगी, फिर वह और फैलने लगी···तब लगा वह कठोर लौह था···वह जनता थी··· वह अपराजित, दुर्दम्य शाश्वत जीवन की चेतना थी, वह जो नहीं मिटती··· समाज की शक्ति वह जो विकारों को नष्ट कर सकती है···क्यों कि उसके कोई निहित स्वार्थ नहीं···जिनको बचाये रहने के लिये किसी झूठ की ज़रूरत हो···

'झूठ है, झूठ है,' रामनाथ ने मन ही मन कहा—'उनकी आत्मा हर्ष विषाद से अलग, मोह, अशान्ति विद्रोह से दूर·····एक निष्क्रिय अचेतनता उनको दाब रही थी···जागरण ही जिनकी विकृति का अनुदार प्रारंभ है, क्योंकि मृत पर जागी चेतना जैसे किसी प्राचीन जागरण का पिशाच मात्र है·····

रामनाथ को लगा सारा गाँव उमड़ रहा है, उनके महल की मीनारें काँप रही हैं···

धोखा है, धोखा है···रामनाथ धीरे से बुड़बुड़ा उठे···

उसी समय सत्यनारायण ने रामदीन से पूछा, 'सरकार सो गये क्या ?' उसकी हल्की आवाज़ सुन कर भी वे चौंक पड़े। पड़े-पड़े, आँखें मूँदे हुए ही पूछा : क्या है ?

'सरकार तार आया है।' उसने अदब से झुक कर कहा।

'तार ?' रामनाथ उठ बैठे—'देखूँ ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दस्तख़त कर के तार खोला। पढ़ा। महालक्ष्मी का तार था, 'गाँव में रघुबीर बग़ावत करवाना चाहता है। मैनेजर घबरा रहा है। महालक्ष्मी।'

'हिश !' उन्होंने पढ़ कर कहा, 'कोई खेल है। अभी मैं ज़िंदा हूँ।'

और उनकी व्यंग्य भरी हँसी कमरे में गूँज उठी। वे फिर लेट गये। रामदीन पाँव दबाता रहा। सत्यनारायण खड़ा था।

'सरकार सब खैरियत है ?' रामदीन ने पूछा।

'बहू घबरा गई है। कुछ नहीं। रघुबीर ने कुछ गड़बड़ की होगी। किसी नौकर ने आकर कहा होगा। लड़की ही तो है। उसे क्या मालूम दुनिया क्या है ? डर कर तार दे डाला।'

वे फिर हँसे।

'क्यों रामदीन ? रघुबीर कैसे आदमी है ?'

'सरकार, काँगरेस में जेल गया था। वैसे साधू संतों का बड़ा भगत है।'

'भगत नहीं, कोई चोर है। भगत है तो फिर खेत के पीछे क्यों जान देता है ?'

रामनाथ ने इस बात का उत्तर देने का साहस नहीं किया। वैसे उसके मन में कहने को बहुत कुछ था। रामनाथ ने फिर कहा, 'जेल में रहकर वे लोग समझते हैं कि अब लाट साहब हो गये हैं।' वे फिर मुस्कराये। उनके होठों से फिर शब्द निकले : अज़ीज बहादुर नहीं, यह रामनाथ है। पारसाल एक मरा था। शायद इस साल एक और मरना चाहता है ?

रामदीन ने देखा। वही घृणा रामनाथ के मुख पर लौट आई थी।

१०

रात हो गई थी। दोनों बेगमों ने आज खाना नहीं खाया था। ग़म के मारे चैन नहीं पड़ता था। बेगम गुलनार का आज कोई साथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
नहीं था। उन्होंने अफ़सोस किया। जैसे मिरज़ावेग से दो एक बार संबंध कर लिया था, क्यों नहीं मखमूर को भी वैसे ही आज़ादी दी, जिससे इस वक्त वह काम आता। अब यह बड़ा सा घर उन्हें काटे खा रहा है। उनको एक डर लग रहा है। नौकर अलग कानाफूसी कर रहे हैं। नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा का पुराना कोचवान पुआल पर अस्तनल में बैठा चिलम पीता हुआ, ढेर-ढेर धूंआ छोड़ता है और खाँस रहा है। उसकी आत्मा को आज शान्ति मिली है। वह नवाबसाहब के वालिद मरहूम के ज़माने से नौकर है और उसे वह ज़माना याद है जब नवाब साहब की माँ का पवित्र जीवन व्यतीत हो रहा था। नवाब मरहूम के एक नहीं अनेक रखैल थीं, तवायफ़ों का जमघट था, बल्कि गाँव की नई लड़कियों को भी घेर लिया जाता था। इसके अलावा उनके नौकर तब वह ठाठ करते थे कि ख़ुद इसी कोचवान ने अरहर के बढ़े हुए खेतों में अनेक औरतों की इज्ज़त लूटी है। पर यह कभी नहीं हुआ कि बेगम के चलन में कुछ खराबी आई हो। बेगम गुलनार के प्रति इस बरकतउल्ला की श्रद्धा थी जो आज फूट रही है। उसकी पोल और किसी पर प्रकट नहीं हुई थी। फ़ातिमा भी गुलनार की खास नौकरानी थी। बल्कि उसे बहुत चाहती थी। उसने धीरे से गुलनार के कमरे में प्रवेश किया। इधर उधर देखती हुई चौकन्नी सी आकर पास बैठ गई। फुस-फुसा कर कहा : बेगम! मेरे साथ जल्दी चलो।

गुलनार शंका से काँप उठी। कहा : आधी रात का वक्त है। अब कहाँ जायेगी?

केवल अस्तबल से बरकतउल्ला की खाँसी कभी-कभी सुनाई दे जाती थी। और बाहर सनसनाती हवा थी। चाँद पतला सा निकल आया था। तारों का ढेर बरस रहा था।

फ़ातिमा ने धीरे से ही कहा : छिप कर चलना होगा, पाँव दबाकर बेगम नरगिस के कमरे की तरफ़।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्यों ?'

'मखमूर मियाँ वहाँ आये हैं।'

'तुझे कैसे मालूम ?'

'मैंने अभी उन्हें कमरे में घुसते देखा है।'

'अभी भी वहाँ हैं ?'

'हाँ घूम कर दूर से देख आई हूँ। उन्होंने भीतर से दरवाज़ा बंद कर लिया है।'

गुलनार चुप हो गई।

'सोचती क्या हो ?' फ़ातिमा ने कहा : वक्त आ गया है। चलकर शोर मचा दो। नौकरों को इकट्ठा कर लो। मैंने बरकतउल्ला को समझा दिया है। शोर सुनते ही वह आ जायेगा।

गुलनार सुनती रही।

'फिर मखमूर को जूते मार कर निकलवा दिया जायेगा।' और फ़ातिमा का स्वर फुफकार उठा—'नरगिस बेगम की थू हो जायेगी।'

'फिर ? मैनेजर नहीं आयेगा ?'

'आयेगा क्यों नहीं ?'

'तनख्वाह तो उसे भी बँधेगी ?'

'बँध जाने दो। वह कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहेगी।'

बेगम फिर सोच में पड़ गई।

'मुझसे दुश्मनी बाँध लेगी।'

'बाँध लेने दो' फ़ातिमा ने कहा : वैसे नहीं बड़े तुम्हारे तलबे सहलायेगी। पुराने वक्त में तो सौतें ज़हर दे देती थीं। तुमसे कहूँगी तो बुक्का फाड़ कर रो उठोगी। हिम्मत की ज़रूरत है। इस वक्त बदनाम कर दिया तो समझ लो तुम राज करोगी। चलो उठो।

फ़ातिमा ने हाथ पकड़ लिया। लैंप बुझा दिया। दोनों दबे पाँव कमरे के पीछे वाली खिड़की के पास जा खड़ी हुईं। खिड़की पर पर्दा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। बेगम गुलनार ने साँस रोक कर झाँका। देखा बेगम नरगिस पड़ी पलंग पर तकिये का सहारा लगाये बैठी है और मखमूर उसके पाँव अपनी गोद में रख कर बातें करता जाता है, सिगरेट पीता जाता है। बातें धीरे-धीरे हो रही थीं। पर गुलनार कान लगा कर सुनने लगी।

बेगम नरगिस ने कहा : मैनेजर पर गुलनार डोरे डालेगी।

'तो तुम भी क्या किसी से कम हो ?' मखमूर ने हँस कर कहा।

'मैनेजर अफ़सर होता है ?'

'हाँ।'

'बेगमों से भी अफ़सरी करेगा ?'

'अजी उसकी मज़ाल।'

'मैं एक बात सोचती हूँ।'

'क्या ? बेगम ?'

नरगिस ने धीरे-धीरे पर भारी सी आवाज़ में कहा : यह सब बखेड़ा उस मोटे मिरज़ा ने शुरू कराया था।

मखमूर ने आँखें उठाईं। कहा : जी हाँ।

'और गुलनार ने ही उसकी पीठ पर हाथ रखा।'

'जी हाँ। पर आप भी तो मान गईं ? माना बेगम कुलसूम ने भी।'

'और तुमने क्यों माना ?' बेगम ने पूछा।

'मैंने तो आप की ताबेदारी करने की कसम खाई है। आप कहें आग में सिर दे दूँ।

'चलो रहने दो। एक बात जानते हो ?'

'क्या ?'

'बेगम गुलनार के कुछ ताल्लुक थे मिरज़ा से।' बेगम ने मुस्करा कर कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ख़ता मुआफ़ तो अर्ज़ करूँ। यहाँ कौन सुनने वाला है।'

'क्या ?' बेगम ने पूछा।

'आपके भी तो सुने गये हैं।'

'मख़मूर !' बेगम ने कहा, 'यह क्या बकते हो ?'

'मैं यहाँ का पुराना नौकर हूँ बेगम। मिरज़ा एक बार नशे में कहते भी थे कि कुलसूम बेगम रह गईं, बस।'

बेगम चुप रहीं।

'सच कहिये बेगम, इसीलिये वे कलकत्ते नहीं ले गये हैं उन्हें ?'

बेगम मुस्कराई।

'मैं जानता था,' मख़मूर की आवाज़ सुरीली हो गई। 'आपकी इसमें रज़ामन्दी थी।'

'सच कहूँ, किसी से कहोगे तो नहीं ?'

'ज़ुबान खींच लीजिये।'

'मिरज़ा ने कहा था कि वक्त पर दबी रहेगी। गुलनार को मालूम है। मिरज़ा कहते थे, उन्होंने उससे भी पूछ लिया था। वे भी इसे ठीक समझती थीं।'

मख़मूर के होठों पर मुस्कराहट फैल गई। सिगरेट फेंक कर अब वह तलवे दबाने लगा। गुलनार का कलेजा उछल रहा था। तभी नरगिस ने कहा : कुलसूम और मिरज़ा तो गये। जो आराम का सुपना था, वह तो मिट चुका।

मख़मूर का सिर हिला।

'अब यह गुलनार रह गई है। कभी-कभी तो मुझे ऐसे देखती है कि मैं समझ ही नहीं पाती कि यह चाहती क्या है ?'

गुलनार की साँस रुक गई। उसने फिर सुना। नरगिस कह उठी : डाक्टर इब्राहीम का परचा मेरे पास है। तुम्हारी राय है उसे बरबाद कर दूँ ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'और क्या कीजियेगा ?' मख़मूर ने पूछा।

'निरे चुग़द हो मियाँ,' नरगिस की आवाज़ में एक तीखापन आ गया : वह मेरे हाथ में है, वह तो मियाँ दुधारा है, दुधारा।

'दुधारा ?' मख़मूर ने आँखें सिकोड़ कर कहा : कैसा दुधारा ?

'न रहे बाँस न बजे बाँसुरी।'

'मैं समझा नहीं।'

'तुम बेवक़ूफ़ जो हो। समझोगे भी कैसे। सुनो।'

मख़मूर जैसे जाग उठा। बोला : फ़र्माइये।

बेगम ने कहा : डाक्टर इब्राहीम ने झूठी रिपोर्ट दी है। उधर कुलसूम की लाश की जाँच हुई होगी। ये लिखते हैं हामला है, वहाँ चूहे का बच्चा भी नहीं।

मख़मूर ने उत्सुकता से कहा, 'फिर ?'

'तुम्हें याद है डाक्टर इब्राहीम ने ही नवाब साहब के पागलपन की रिपोर्ट दी थी ?'

'जी हाँ।'

'वे तब आये थे ?'

'जी हाँ।'

'गुलनार ने उन्हें एक ख़त लिखा था, जिसको तुम लेकर गये थे। जिसमें बीस हजार रुपये रिश्वत का वादा किया गया था ?'

'जी हाँ, वह तो फाड़ दिया था न आपने ?'

'उस वक्त जो भूल थी वही अब कमाल हो गया। म्याँ वह ख़त मेरे पास है। उसके हाशिये में मिरजाबेग ने भी कुछ लिखा है।'

'मगर डाक्टर की रिपोर्ट में तो तीनों बेगमों की गवाही है।'

'होगा इससे क्या ? नवाब तो पागल थे ही। पर गुलनार की साज़िश तो झलक आई। डाक्टर इब्राहीम तो फँसा।'

'तो डाक्टर इब्राहीम के फँसने से आपको फ़ायदा ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'फ़ायदा ?' बेगम ने कहा, 'गुलनार पर मुकद्दमा चल सकता है। तुम एक काम करो।'

'क्या ?'

'कल उस साहब कलक्टर के यहाँ जाओ। दोनों कागज़ ले जाना और उसके सामने पेश कर देना। कहना कि नवाब के पागलपन से गुलनार बेगम यह नाज़ायज़ फ़ायदे उठाना चाहती थी।'

'वह न पूछेगा, तुम्हें यह कागज़ कैसे मिले ?'

'कहना मिरज़ाबेग के बक्स में रियासत के कागज़ात तलाश किये थे, वहीं मिले।'

'पर डाक्टर इब्राहीम वाला खत यहाँ क्यों रह गया ? उसके आखिर में तो लिखा है, फाड़ दीजिये।'

'चुगद ! अज़ीब आदमी हो, कह नहीं सकते, नकल है। शायद अभी कोई इन्हें और काम निकालना था तभी रख छोड़ी थी। कहो, कैसा रहा। साँप मरा, लाठी भी न टूटी, उधर नवाब फँसे, इधर कुलसूम और मिरज़ा गये, और जो गुलनार गई, तो भले ही मैनेजर हो या लाट सा'ब, हम तुम रह जायेंगे।' बेगम ने अपनी कुर्ती में हाथ डाला। दोनों खत निकालकर उसकी जेब में रख दिये, और फिर समस्या सुलझाने का गर्व उसकी उँगली के नचाने से एकदम प्रकट हो गया। आवेश में उसके होठ काँप रहे थे। मखमूर ने विस्मय से सुना और कहा : गुलनार बरबाद हो जायेगी···

'मुझे मतलब ? तुम्हें दर्द आ रहा है ?'

उसकी बात का व्यंग्य समझकर मखमूर हँसा और उसने उस पर झुक कर कहा : तुम्हें छोड़ कर !

११

इसी समय शोर होने लगा। दरवाज़े के बाहर से आवाज़ आने लगी : खोलो। बेगम ! खोलो। आज राम गोविंद इस कुत्ते के गोली मार देगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वार खुलने में देर हो रही थी। मख़मूर छिटक कर दूर हो गया था। उसकी आँखें डर से फट गई थीं। बेगम ने खड़े होकर अपने कपड़ों को अभी ठीक भी न किया था कि उसने देखा बेगम गुलनार दो नौकर और फ़ातिमा के साथ खिड़की के उधर खड़ी थीं। उनके मुख पर भयानक घृणा थी। उन्होंने फुफकार कर कहा : तवायफ़ !

द्वार छोड़ कर सब अब इधर ही आ गये थे। नौकर भीतर कुछ गये और द्वार खोल दिया। उसमें से खाँसते हुए बरकतउल्ला ने प्रवेश किया और फ़ातिमा ने नरगिस की तरफ़ दिखा कर कहा : देखो बड़े मियाँ ! क्या हो रहा है। आँखें न फूट गईं हमारी।

बरकतउल्ला ने हाथ ऊपर उठा कर कहा : अल्लाह ! यह दिन भी देखना था। उधर एक बेगम के खून की ख़बर आई है, मालिक पागल हो गया है और यहाँ यह अँधेर हो रहा है।

बेगम गुलनार ने कमरे में अब गंभीरता से प्रवेश किया। उन्होंने कुछ नहीं कहा। आकर एक कुर्सी पर बैठ गईं। नरगिस अब तक कुछ समझी नहीं थी। इस समय परिस्थिति समझ में आने पर वह इस बेइज्जती से एकदम घुटनों में मुँह छिपा कर बैठ गई। उसकी इच्छा हो रही थी कि ज़मीन फट जाये और वह उसमें समा जाये। लेकिन गुलनार की उस पर कड़ी नज़र थी। फ़ातिमा ने तड़प कर कहा : देखते क्या हो ? लगाओ जूते। सूअर का बच्चा···

मख़मूर डर के मारे थर-थर काँप रहा था। उसकी बोलती बंद थी। इशारे की देर थी कि दनादन जूते लगने लगे, ताज्जुब की बात थी कि हर नौकर इस वक्त जूते पहन कर आया था। इस क़दर बेमुरव्वती से पिटाई हुई कि मख़मूर बेहोश होकर गिर गये। उनके मुँह से ख़ून निकलने लगा। फ़ातिमा क़रीब आ गई। उसने कहा : अब रहने दो। बेचारे को क्या जान से ही मार दोगे ? सब कुसूर उसी का तो नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह नौकरों की भीड़ में घुस कर उस पर छाया करके बैठ गई और चुपचाप दोनों ख़त उसकी जेब से निकाल लिये। गुलनार ने उन्हें ले लिया। फातिमा ने कहा : अब इसे तो जाकर बाहर डाल दो। थोड़ा पानी मुँह पर डाल देना। समझे ?

नौकरों ने बेहोश मख़मूर को उठा कर बाहर की ओर क़दम उठाया।

फ़ातिमा ने कहा : बरकतमियाँ ! रामगोविंद जी। ठहरिये। बाकी सब चले जाओ।

जब सब चले गये गुलनार ने कहा : बरकत मियाँ ! तुमसे पर्दे की ज़रूरत नहीं। क्या अब भी यह घर रहने काबिल है।

'अल्लाह की मार ! बेगम साहिबा,' बूढ़े ने दोनों हाथों से सिर पीट लिया और बैठ गया। उसे खाँसी आ गई। उसकी आवाज़ से कमरा गूँजने लगा। रुक कर कहा : सरकार नहीं रहे। बड़ी बेगम ! अब कौन है इस घर का। आज जो रही सही इज्जत थी वह भी धूल में मिल गई। अब किसी को कैसे मुँह दिखाया जाये। नौकरों का क्या भरोसा। पड़ोस के राजासाहब की बहिन एक रसोइये के साथ लापता हो गई थीं, तब से हमने उनकी गर्दन को उठते हुए नहीं देखा। रईसों के यहाँ क्या नहीं होता ? ख़ून भी होते हैं, पर यह नहीं होता कि बेगम के कमरे में, खास कमरे में उनका नौकर इस तरह पकड़ा जाये। अब यह ख़बर सब जगह पहुँचेगी।

'हई अल्ला' फ़ातिमा ने कहा, 'तब क्या हो ? इन मुओं का मुँह न सीं दूँ ?'

'सीं दो' बरकत ने कहा : सीं सको सीं दो। इससे बढ़ कर और क्या बात है ! रईस कर्ज़ ले लेते हैं, ऐश में फूँकते हैं, मारते हैं, पीटते हैं, तरह-तरह के नशे करते हैं, बल्कि अपनी शान की चमक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बड़े-बड़े को अपने सामने कुछ नहीं समझते, ग़रीब हो जाते हैं, पर यह नहीं होता। इस जीने से तो मर जाना अच्छा है।

उसकी बात सुन कर गुलनार ने कहा : रामगोविंद ! तुम्हारी समझ में कोई तरकीब आई ?

रामगोविंद कनखियों से दोनों बेगमों को देखता जाता था। नरगिस को देख-देख कर उसका मन ललचा रहा था। मखमूर में ही क्या बात थी। यह औरत तो बड़ी फ़ाहिशा निकली। नवाब जाने किस तवायफ़ को पकड़ लाये थे। उसने कहा : नौकरों का मुँह तो चाँदी से भरना होगा।

'सुनती हो बेगम,' बरकत ने कहा : रुपया खर्च करना होगा। रुपये से इज्ज़त की क़ीमत चुकानी होगी। हाय···

उसके स्वर में वेदना थी।

गुलनार ने कहा : नरगिस बेगम! अब उठो। घुटनों में मुँह ढाँक लेने से क्या चेहरे की कालिख मिट जायेगी ? मुझे अफ़सोस है नौकरों की इतनी हिम्मत हो गई। फ़ातिमा ने मुझे कहा शायद बेगम का कमरा चोरों ने घेर लिया है। तभी मैं सामने से न आकर दूसरी तरफ़ से आई। यहाँ आकर जो देखा उससे तो मेरे होश ही उड़ गये। मुझे ताज्जुब होता है। यह काम तो कोई तवायफ़ की बेटी भी नहीं करती। खाविंद पागल हो गये हैं, अरे सौत कहर्ता हो, आख़िर अब तो अपनी थी, कल उसका ख़ून हुआ है, घर का पुराना और बफ़ादार नौकर मर गया है और तुम्हें मुँह काला करने की आज ही सूझी थी ? फ़ातिमा ! यह ख़बर नौकरों को किसने दी। उसमें इतनी जुर्रत कैसे हुई ?

फ़ातिमा ने कहा : यह तो बेगम ! बुला कर पूछने पर ही मालूम होगा।

'ज़रा बुलाओ तो रामगोविंद,' बेगम ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ठहरो। रामगोविंद ! पाँव पड़ता हूँ। बेगम ! ऐसा न कीजिये। ग़ज़ब हो जायेगा राज़ को ढँकिये। कीचड़ में पत्थर फेंकने से आप ही के कपड़े गंदे होंगे। उससे दुश्मनों को ही, सूराग़ मिलेगा। इस गुनाह को तो ढँकिये। रुपया बाँटिये।' बरकत की आवाज़ काँपने लगी।

'हमें तो ज़रूरत नहीं,' रामगोविंद ने कहा।

'तुम्हें नहीं, मुझे नहीं, फातिमा को नहीं,' बूढ़े बरकत ने कहा : मगर उनको तो दो ही, वर्ना हालत खराब हो जायेगी। अब कोरट होगी तो मैनेजर सब जान जायेगा। तबाह हो जायेंगे, तबाह।

'मगर मेरे पास रुपया है कहाँ ?' गुलनार ने कहा।

'बेगम नरगिस के पास हो तो दे दें। कैसे भी हो। कुछ तो करिये। मुझ से देखा भी नहीं जाता। आप लोग बड़े आदमी हैं। अगर हमारे घर ऐसा होता तो इस तरह की औरत के दो टुकड़े कर दिये जाते। माफ़ करो बेगम ! ताबेदार हूँ। बेअदबी हो गई। मगर आपे में नहीं हूँ।' वृद्ध उठ खड़ा हुआ। जब चला गया, तब गुलनार ने कहा : रामगोविंद ! तुम भी जाओ। नौकरों को दाबो।

रामगोविंद भी सिर झुका कर चला गया। गुलनार ने इशारा किया। फातिमा भी चली गई। तब एकांत में गुलनार ने कहा : बेगम ! अब सब चले गये हैं। अब तो मेरी तरफ़ देखो।

नरगिस ने आँखें उठाईं। उसका चेहरा सफेद था, जैसे सब .खून निचुड़ गया था। आँखें लाल थीं जैसे बहुत दिन से जाग रही थी। उसे देख कर एक मुर्दे का भ्रम होता था। उसने गुलनार की ओर स्थिर दृष्टि से देखा। गुलनार मुस्कराई। उस दृष्टि में एक विष था। उसने हँस कर कहा : कलक्टर के यहाँ क्या भेज रही थीं ? यह देखो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने कुर्ती में से निकाल कर दोनों कागज़ दिखाये। नरगिस ने देखा। पर चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। गुलनार हँसी और उठ खड़ी हुई। उसने एक शोख अँगड़ाई ली और जाकर अपने कमरे का दरवाज़ा भीतर से बंद करके पलंग पर पड़ रही। नरगिस उसी प्रकार बैठी रही। उसे लग रहा था, जैसे वह मर चुकी थी। उसमें तनिक भी शक्ति नहीं थी। वह क्या करना चाहती थी और क्या हो गया! जैसे-जैसे वह यह सोचती, उसका क्रोध उसे बार-बार उकसाने लगा।

रात का सन्नाटा फिर कस गया और झिल्ली सा अँधियारा अब ढलती रात के पर्दे को झकझोरने लगा। नरगिस बैठी रही, बैठी रही। वह कुछ सोचना चाहती है, पर सोच नहीं पाती। जैसे पथराई आँखों से सब कुछ ठंडा कर देना चाहती है। उसके दिमाग में एक ही बात चक्कर लगाने लगी। गुलनार जीत गई। मुझे उसने मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। अब मेरा ज़िंदा रहना बेकार है; लेकिन क्या वह रह लेगी? लेकिन क्या वह रह लेगी···क्या वह रह लेगी···जैसे-जैसे उसके भीतर यह विचार तेज़ी से चक्कर लगाता जाता था, उसकी धमनियों में रक्त की तीव्र गति होती थी, और ऐसा लगता था जैसे अब कनपटियाँ फट जायेंगी···

धीरे-धीरे सुबह हो गई। अर्जेंएट होने के कारण उन्नाव के डाकखाने से एक खास हरकारा भेजा गया था। अभी सब लोग जगे नहीं थे। हरकारे को देख कर बरकत पुकार उठे: ओ ललन! चल रे। देख तो क्या खबर आई है।

ललन आया। पूछा: क्या है?

'तार आया है।'

'तार?' ललन ने अचकचा कर कहा। वह तार से डर गया था। उसी गंभीरता से जाकर उसने रामगोविंद को जगाया। रामगोविंद घबराया सा उठा। बिना मुँह धोये ही बाहर आ गया। उसने तार लेकर भोर के पहले उजाले में पढ़ा और उसका हाथ काँप गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तार छूट कर नीचे गिर गया। हरकारा चुप था। उसने कहा : दस्त-खत कर दो।

उसके हाथों ने दस्तखत कर दिये। हरकारा चला गया। नौकर अब जागने लगे थे। ललन ने सबको जगा दिया। सब उसके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गये। सब खामोश थे। माधोनरायन ने डरते हुए पूछा : क्या ख़बर है ?

रामगोविंद ने धीमे से कहा : नवाब साहब ने हीरा चूस-चूस कर जान दे दी। हीरा ज़हर बुझा था। शायद उसमें ज़हर की डिब्बी थी। क़ातिल ज़हर था।

उसका सिर झुक गया। सब चुप रहे। बरकत का गला जैसे रुँध गया।

रामगोविंद ने कहा : ख़बर भिजवा दो।

'कौन जायगा लेकर ?' ललन ने पूछा।

'बेवकूफ़!' रामगोविंद ने झल्ला कर कहा : चलो मेरे साथ।

गुलनार बेगम ने अभी तक दरवाज़ा नहीं खोला था। दरवाज़ा खटखटाया गया, पर नहीं खुला। तब माधोनरायन को संदेह हुआ। उसने राय दी। सबसे पीछे की तरफ़ जाकर देखा। खिड़की खुली थी और बेगम गुलनार खून से लथ-पथ पड़ी थीं। उनका गला काट दिया गया था। गर्दन लटक रही थी। उस भयानक दृश्य को देख कर सबके रोंगटे खड़े हो गये। यह क्या है ? घर है या आफ़त ! अब ! किसी का भी साहस नहीं हुआ कि आगे बढ़ कर देखे। सीधे पुलिस को बुलवाना तय किया गया।

'और बेगम नरगिस कहाँ हैं ?' माधोनरायन ने कहा।

'चल कर देखा जाये।' रामगोविंद ने कहा।

उनका कमरा खाली पड़ा था। चारों ओर खोज होने लगी। कहीं भी नहीं थीं। सब घबराहट से काँप रहे थे। तभी ललन दौड़ा-दौड़ा आया। उसकी बोलती बंद थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्या हुआ ?' रामगोविंद ने पूछा।

उसने इशारा किया। सब उसके पीछे-पीछे गये। देखा कूएँ में रस्सी फँसी है और उसमें कोई लटक रहा है। बेगम नरगिस फाँसी लगा कर मर गई थी। उसकी लाश झूल रही थी। सब चुपचाप देख रहे थे। अब सब ऐसे हो गये थे जैसे वे न जाने कहाँ आ गये हैं। उनकी आँखें फट गई हैं।

'खबरदार,' रामगोविंद ने कहा, 'कोई कुछ न छुए। सब बाहर बैठो। माधोनरायन जी, चलिये पुलिस को इत्तला करें।'

दोनों पुलिस थाने की ओर चले। राह में उन्होंने देखा,' कल रात जहाँ वे घसीट कर मख़मूर को डाल गये थे, वहाँ वह अब नहीं था। शायद होश में आने पर भाग गया था।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरा खण्ड

पहला परिच्छेद

१

आस-पास के गाँवों में हूह मच गई। गाँव वाले बूढ़े कहते थे कि गूलर की आत्मा ने कमाल कर दिया; सारा सा सारा खत्ता खत्म हो गया। सरकारी नौकर आ घुसे, जैसे अब उन्हीं का अधिकार था। अब रोकने वाला था ही कौन ? महालक्ष्मी ने भी यह ख़बर सुनी। लखनऊ स्थानीय पत्रों को यह खबर मालूम हुई। कानपुर के प्रताप में बहुत संक्षिप्त रूप में छपी भी। पर उससे कोई विशेष हलचल नहीं हुई। पण्डित रामनाथ श्यामनाथ को पुलिस को काफ़ी रिश्वत देकर ले आये और महालक्ष्मी को उन्होंने उन पर कड़ी नज़र रखने का आदेश दिया। अवधेश उन्हें देख कर उनके पैरों से चिमट कर खेलता। बूढ़ी आत्मा को इसमें एक विशेष सुख मिलता। रामनाथ थक गये थे। जीवन के साथ ही साथ उसका उत्साह भी थक गया था। अब कोई नयापन नहीं रहा था! अवधेश के लिये अँग्रेज़ी, फ़ारसी, और संस्कृत, तीनों के अध्यापक लगाने का उनका विचार अभी कार्य्य-रूप में परिणत नहीं हुआ था, क्योंकि वह अभी छोटा था। श्याम-नाथ अब किसी से बात नहीं करते थे। पागल हो गये थे। अपने पोच मैनेजर को रामनाथ ने सब तरह से समझाया, पर वह बड़ा ही डर-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पोक था। पहला मैनेजर गोली से उड़ा दिया गया था, यह बात वह भूल ही नहीं पाता था। बीबी बच्चे वाला आदमी था और रामनाथ की संपत्ति की रक्षा से अपनी जान ज्यादा कीमती समझता था। अतः उसे निकालना ही पड़ा। सरबराकार पुराने थे, वे खुर्राट थे। पटवारी तहसीलदार, पुलिस, गाँव के महाजन, छोटे-बड़े बनिये, और स्कूल मास्टर तथा हर पेशा उनकी आँखों में अपनी-अपनी जगह था और कारिन्दगी का जोखिम उनके लिये अब एक मामूली बात थी। उधर कैरा में कोर्ट आफ वार्ड्स हुई और नया मैनेजर आया। वह एक नम्बर खाऊ था। उसकी एक पत्नी थी जिसको साँवला समझ कर उसने दो बच्चों के साथ छोड़ दिया था। एक नम्बर अकड़ू था। वैसे वृन्दावन तक जाता था और भक्ति से भगवान के चरणों पर सिर झुकाता था। इस भक्ति में एक न एक भक्तिन पकड़ लाता था। वह उसकी महाराजिन बन जाती थी और फिर उसे निकाल देता था। सब सामान की फेहरिस्त बनी और उसमें से एक चौथाई तो शुरू में ही वह अकेला ही खा गया। गाँव वाले परेशान थे। रामगोविंद का अपना कुछ नहीं था; परन्तु उसे यह सब नागवार था। वह अड़ंगे डालने लगा। लिहाज़ा उसे निकाल दिया गया। माधोनरायन दब्बू आदमी थे। यह ज्यादातर देखा गया है कि दुबला आदमी मोटे आदमी की तुलना में अधिक अकड़ू होता है। सीधा रामनाथ के पास गया। उनकी समस्या का भी हल हो गया और उन्होंने उसे अपना मैनेजर नियुक्त कर लिया। और खेद प्रकट किया कि कैरा में अब और हो भी क्या सकता था। जब मालिक ही नहीं रहा तब किसी को भी दर्द आये तो क्यों? अब तो जिसकी तबियत आयेगी वही मनमानी करेगा, माल उड़ायेगा।

उनके इस तर्क की वास्तविकता क्या थी ये वे स्वयं नहीं जानते थे। उपचेतन में यह एक हल्की झलक सी नाची थी कि नवाब साहब अज़ीज़ बहादुर कैरा ही कौन कम खर्च थे। उनकी सब बेगमें कौन कम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खर्च थीं। यहाँ तक कि लाखों का कर्जा चुकाना है। जिस जायदाद ने पहले आदमियों को अंधा और पागल बना दिया और वे उसी के पीछे इस बेहूदगी से मर गये, वही जायदाद अब कर्ज़ चुका कर, उन अंधों के पाप का प्रायश्चित करेगी। रामनाथ को यह विचार अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोचा—कुछ भी हो। अज़ीज़ बहादुर उसका स्वामी था। उसका सब कुछ अपना था। वह जो चाहता था, वही करता था। उसे उसका अधिकार था। अधिकार भी पूर्ण नहीं था। उसके बीच में कानून आ गया था। वे स्वयं कानून को शब्दजाल कहते थे। सामर्थ्यवान जब अपने अधिकारों का प्रयोग करता है, तब कमज़ोरों को बेवकूफ़ बनाने के लिये जो उसने बीच में कानून की झिलमिल खड़ी की है, उसे वह धोखे की टट्टी के रूप में इस्तेमाल करता है। यह एक भयानक विरोधाभास था। यदि कानून गरीब की पुकार है तो सामर्थ्यवान जो शासक है, वह उसे क्यों मानने लगा? नहीं मानेगा। यदि वह समर्थ की बनाई चीज़ है तो उसके अपने लाभ के लिये है। दोनों अवसरों पर रामनाथ स्वतंत्र नहीं हैं।

रामनाथ को यह मध्यवर्गीय व्यापारियों का जंजाल अच्छा नहीं लगता। वे जिस परंपरा में पले हैं उसमें कानून का प्रयोग तब आवश्यक है जब गरीब संपत्ति के मूल आधारों पर नैतिक प्रश्न करता है। तुम्हें क्या अधिकार है कि तुम शासन करो। हम तुम्हें बहुमत से उखाड़ फेंकेंगे। तब उसका उत्तर है पुलिस, फौज। इस हत्या और हिंसा को एक सुन्दर प्रश्रय चाहिये। वह है कानून। जैसे पैदा होने से लेकर मरने तक धरती का देवता, समाज का भूत ब्राह्मण नहीं छोड़ता, वैसे ही यह कानून भी है। पर कानून क्यों है? गरीब के सामने समर्थ को डर क्यों लगता है? गरीब और नीच की हमारी सत्ता, हमारे अधिकार पर प्रश्न करने का अधिकार ही क्या है? जंगल का राजा शेर कोई कानून नहीं जानता। वही क्यों नहीं हो। जब चाहें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिसको लूट लिया, खा लिया·····सामर्थ्यवान की विजय···निरंकुश शासन···अधिकार···अत्याचार···अधिकार·····

यह चाहते हैं रामनाथ! मनुष्य में पशुता है। उसको दबाना कायरता है। वही विजयिनी होने पर मानवता कहलाती है; क्योंकि निर्बल और कायर अपने से अधिक बली की खुशामद करके अपने-आप को जीवित रखते हैं। उनके सामने अपने को जीवित रखने का प्रश्न उठता है। अतः वे अपने से बली की दया की भीख माँगते हैं···घिनौने···कीड़े···लचर···उन्हें जीवित इसीलिये रहना है कि रामनाथ उन्हें अपने लाभ और शासन के लिये निचोड़ते रहें। और उनकी—बली की—हत्या की यह इच्छा ही सभ्यता है। अन्यथा जो कोई करुणा, अहिंसा आदि कहता है, वह कमज़ोर है।

रामनाथ के अनुसार कमज़ोर पिसने को ही है। यदि स्त्री शारीरिक शक्ति में कम है, तो क्यों न पुरुष उससे अपने सुख के लिये बलात्कार कर ले। सामर्थ्य की वास्तविकता, जो आज तक प्रकृति की भावना और सनातन नियम बनी चली आ रही थी, यों खुलने लगी। रामनाथ सोचते। उन्हें याद आता। वह सामंतवादी युग। वह ठाठ। वे ऐश्वर्य्य। जिसकी ज़बान हिली मुँह खुला, उसी के दाँतों में दबा कर उसकी जीभ काट दी गई, जो गिरी तो ऐसे तड़फड़ाती रही, जैसे छिपकिली की पूँछ। पर आज वह अधिकार कहाँ? आज उनमें अपनी मर्ज़ी के कानून बनाने की सामर्थ्य कहाँ है? कानून अँगरेज़ों ने बनाये हैं। उनके साथ लगे रहने में ही अपना स्वार्थ है। अतः यह कोई बुराई नहीं।

रामनाथ राष्ट्रीय जीवन में दुख भोगने वालों के लिये कहा करते थे—भोगें। इस प्रकार इनकी बुद्धि विपरीत हो गई है, और यह एक सर्वशक्तिमान साम्राज्य को चुनौती देकर मरना चाहते हैं, तो मरें। यह उस शासन के सामने क्या हैं? जिसके सामने रामनाथ एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भुनगा है, कुत्ते की तरह जो स्वयं घुटनों के पास जीभ लटकाये बैठा है.....

उफ़! यह तो अखबार वाले चिल्लाते हैं। यह वे क्या सोच रहे हैं!

ब्राह्मणत्व का गर्व, सामंतीय प्रथा की अकड़, दोनों ही उनमें शेष थे। पर अब अधिकार कम हो गये थे। जिधर से कम हुए, उधर सिर झुकाने में ही श्रेय था। जिधर बढ़ाये जा सकते थे, उधर बढ़ाना उनकी हिंसक प्रवृत्ति और पशुत्व की जलती तृष्णा थी। और यह अहिंसा! इसे वे चाहते थे। वहाँ जहाँ उनके अधिकार छुए जायें। उनके अत्याचार करते समय, वह हिंसा ही नियम बन जाती थी, तब धर्म उसकी सहायता करता था।

इस विचारधारा का कारण था रघुवीर। गाँव में यह एक नई आफ़त थी। रामनाथ झुँझला उठे। लेकिन एक जगह नहीं, सभी ज़मीदारों को आज यही दिक्कत उठानी पड़ रही थी। वे उठ खड़े हुए। उन्हें अमन-सभा की एक मीटिंग में जाना था। हिंदुस्तानियों ने जो आज़ादी माँग कर बदअमनी फैलाई थी, उसे अंगरेजों के भक्त अमन में बदल देने की कोशिश कर रहे थे। क्योंकि देश क्या है? देश कुछ नहीं है। जो देश पर शासन करे उसी का गुन गाओ। दुनिया में नये-नये शासन उठते हैं। एक गिरता है, दूसरा उठता है। जनता को एक न एक आकर दबा लेता है। वह तो घायल और गरीब रहती है। यह ज़मीन के मालिक, संपत्तिधारी, अपना शासक बदलते हैं। ज़मीन तो स्त्री है। जो शक्तिशाली है वही भोगे। कहावत भी है कि वीर ही भोगता है। तो यह संपत्तिशाली एक वेश्या के दलाल हैं!!

भयानक! उफ़! भयानक!

और यही संस्कृति और सभ्यता के खंभे हैं। इसमें भी क्या दोष है! सामंतवाद में संस्कृति सीखने राजा, नवाबों की औलाद तवायफ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
की ही शागिर्दी करती थी। लेकिन···लेकिन···अब नया ज़माना इस तवायफ़ को बार-बार बुड्ढी कह कर मज़ाक उड़ाता है? इससे कहता है यह मर जाने वाली है···

रामनाथ काँप उठे। वे बानापुर चल दिये।

२

साँझ हो गई थी। गाँव में अब अँधेरा लोटने लगा था। कच्ची गैलों पर कहीं-कहीं कुत्ते नज़र आते थे। छप्परों की छाया में मनुष्य अभी जाग रहे थे। घरों से धूँआ उठ रहा था। रोटी सिक रही थी। उधर पण्डित नीलकण्ठ अवस्थी की चौपाल पर इस समय बहस हो रही थी। भाँग पीकर बामन लोगों का भेजा इस समय घूमा हुआ था। विषय बहुत गंभीर था।

पंडित बैजनाथ बाजपेयी ने सोच विचार कर कहा: यह नहीं हो सकता। चाहे परलै हो जाये, पर यह नहीं हो सकता। क्यों अवस्थी जी?'

अवस्थी जी ने भी सिर हिलाया। उनके सिर के छोटे-छोटे बाल खिचड़ी हो चुके थे और दोनों आँखों के बाहरी तरफ़ कनपटियों तक रेखाएँ खिंच गई थीं, जैसे इसी कारण वे कुछ-कुछ चुँदे से नज़र आने लगे हैं। उन्होंने कहा: आज चमार ब्याह करेगा? करो। किसने मना किया। खग विहग पसू, सबके विवाह होते हैं, तुम भी करो। कौन रोकता है। पर सबकी अपनी अपनी मरजाद है। कल को पासी कहेगा संग बैठ के खायेंगे। कहो सुकुल जी खाओगे?

परमानंद सुकुल इतने बड़े सवाल के लिये तैयार नहीं थे। यद्यपि उन्हें मना करने का मौका नहीं मिला, पर उनका एकदम चौंक उठना ही काफ़ी था। वह जवाब नहीं दे पाये, क्योंकि गोवर्धन नाम का एक युवक इस समय बोलने लगा था। उसने गंभीरता से कहा:

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप लोग गाँव के बड़े हैं और समझदार हैं। मैं इस गाँव में नया आया हूँ।

सबने चौंक कर देखा। युवक सिर पर गाँधी टोपी लगाये था और खादी का कुर्ता तथा धोती पहने था। सारे वस्त्र भकाभक नहीं थे। उनका रंग वही था, जो प्रायः सबका था; अतः वह उन्हीं में से एक मालूम देता था। पर उसके चेहरे से यह ज़रूर मालूम देता था कि जेल जा चुका है, क्योंकि उस पर एक अजीब लापरवाही थी। निर्भयता थी और उसकी कटी छटी मूँछों ने उसे एक कट्टरता का आभास दे दिया था। वह पहले आर्य्यसमाज का प्रचारक था। उसमें बोलने की अच्छी शक्ति थी और इधर सत्याग्रह आन्दोलन में वह काँग्रेस में आ मिला था। पड़ोसी गाँव के एक स्कूल मास्टर का लड़का था, थोड़ा बहुत पढ़ा लिखा था। उसके हृदय में देश की गुलामी देख कर भयानक आग जला करती थी। वह गाँधीजी का अंधा भक्त नहीं था, परंतु महात्मा गाँधी को संसार का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति मानता था। आर्य्यसमाज का पुराना प्रचारक होने के कारण उसमें मूर्तिपूजा विरोधी भावना बहुत प्रमुख थी और वह हिन्दू समाज के पोलखातों से अत्यन्त घृणा करता था। इधर उसने अब आर्य्यसमाज एक और कारण से भी छोड़ दिया था। पुराने वकील और डाक्टर और खूसट खाऊ तो जनता के पैसे खाने लगे थे और अधेड़ मंत्री, विधवाश्रम की एक विधवा को महाराजिन बना कर पत्नी का काम निकाल रहे थे और नये उपदेशक जब रबड़ी और दूध के लिये झगड़ते थे, तो समिति के अन्य सदस्य घर पर मूर्ति रख कर गणेश पूजा करते थे और अंतर्जातीय विवाह से दूर से ही मुँह मोड़ लेते थे। स्वामी दयानंद के हिन्दू संगठन के विचार अब गाँधी में राष्ट्र संगठन के विचार हो गये थे और गोवर्धन अनजाने ही खिंचा चला आया था। वह गीता का भक्त था, पर इधर कुछ राजनीतिक किताबें भी पढ़ चुका था जिससे नई-नई बातें सोचा करता था। उनमें से एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई ब्राह्मणधर्म पर लिखी गई किताब थी। उससे उसके कई विश्वास हिल गये। वह उनमें से नहीं था जो अपनी विरोधी चीज़ों को सुनने से इंकार कर देता। अलावा मनुष्यत्व की भावना के, वह चीज़ को कुछ सीमा तक तर्क पर भी ले जाता था। उस पुस्तक में लिखा था कि आर्य भारत के रहने वाले नहीं थे। उन्होंने आकर यहाँ के मूल निवासियों को हराया।

उसने कहा : अपनी मरजाद किसकी नहीं है। तुम अँग्रेज़ से चिढ़ते हो कि धरती के देवता ब्राह्मण का उसने धर्म बिगाड़ दिया, पर यह नहीं सोचते कि उसने तुम्हें ठोकर मार कर दिखा दिया कि तुम स्वयं और जातियों पर कितना भयानक अत्याचार करते हो।

'क्या कहा ? क्या कहा ?' बामन लोग चौंक उठे। उनके नथुने फूल गये।

'मैं सच कहता हूँ मगर आप विश्वास नहीं करेंगे। यह सनातन धरम, यह सदा से चला आया धरम, सदा का नहीं है। सचाई यह है कि इसी बैसवाड़े में एक समय इन्हीं पासियों का राज था। यह बहुत पहले की बात है।'

'अच्छा !' नीलकण्ठ अवस्थी ने व्यंग्य से मुस्करा कर कहा। सब बहुत खुश हुए। उनकी नज़र में एक नया सिड़ी आ फँसा था। गोवर्धन कहता गया। फिर दो भाई आये। एक का नाम था दल, दूसरे का बल। दल ने डलमऊ बसाया, बल ने बसाई रायबरेली और तब से पासी नीच कह दिये गये।

सब ठठा कर हँस पड़े।

'काहे हो'—अलगू दीक्षित ने पूछा, 'आरिया समाजी हो ?'

गोवर्धन इस बात से नहीं चेता। वह चुप हो रहा। उसने कहा : आप कहाँ जा रहे हैं ? हमरा समाज कितना कमज़ोर हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम हिंदू-मुसलमान हैं, छूत-अछूत हैं, गाँधी महात्मा को तो आप महापुरुष मानते हैं ?'

नीलकण्ठ अवस्थी के अतिरिक्त सबने ज़ोर से हामी भरी। जनमत देख कर नीलकण्ठ ने भी सिर हिलाया। अवस्थी अमनसभा के मेम्बर थे। गाँव में कुछ महाजनी करते थे। पौरिहित्य अलावा था। वैसे वह गाँव में प्रसिद्ध आदमी थे। पहला कारण था कि सारा खान्दान नखसिख का अच्छा था। दूसरे एक राँड भौजाई घर से निकल गई थी। तीसरे भङ्ग इस कदर पीते थे कि उसके बाद फिर कुछ भी परवाह नहीं रहती थी। हाँ देखने को निश्चिंत लगते थे। चौथे स्वयं ज़रा तबियत के ढीले थे और कहा जाता था कि आपकी एक सबके की बीवी से कुछ मुलाकात थी और जब आप सक्के के यहाँ रहते थे, तब सक्का कभी भी बेमौके घर नहीं पहुँचता था; क्योंकि वह उस वक्त अवस्थिन की सेवा करता था। और वैसे इतने अधिक धार्मिक थे कि कोई कुछ नहीं कह सकता था। जवानी में नाथद्वारे में रहे थे और वहाँ से खूब पैसा रुपया कमा लाये थे। पुराण और महाभारत के हिंदी वृत्तांत सत्संग से ही खूब जमा करके दिमाग़ में रख लिये। ऊपर तक लबालब भरा दिमाग़ था। लिहाज़ा जैसे पुराना पानी सड़ जाता है, वैसे ही दिमाग़ भी नये पानी को गंदा समझता था। अपना लोटा माँज कर, नल माँज कर, रेल के पम्प से पानी भरते थे और संध्या वगहरा नित्य करते थे। रामनामी चादर ओढ़ते थे।

बाकी लोगों में परमानंद सुकुल और मुन्नू दुबे ज़मींदार रामनाथ से मन ही मन दुश्मनी रखते थे। इन्होंने एक बार परमेश्वर नामक जवान के भूख हड़ताल करके मर जाने पर आवाज़ उठाई थी। रामनाथ ने पकड़वा मँगाया था। झगड़ू मिसिर, अब वे नहीं रहे, उन्होंने छुड़वाया, पर ये नहीं माने। ज़मींदार पर हमला किया। वह बच गया। बाद में इन पर जुर्माना हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो' गोवर्धन ने कहा : वे कहते हैं छूआछूत छोड़ दो। तुम्हारा धरम सिर्फ़ खान-पान में क्यों रह गया है ? इस तरह तुम एक दूसरे से लड़ते हो, और गोरे इसका फ़ायदा उठाते हैं। उसके स्वर में एक आह्वान था। युवक मोहनलाल गौर से सुन रहा था।

अधेड़ विश्वंभर, जो अब तक चुप था कह उठा : भगवान ने भीलनी के झूठे बेर खाये थे, तो क्या हम भी खा सकते हैं ? महात्मा गांधी समर्थ हैं। उनको दोष नहीं लगता। वे तो सबसे ऊपर पहुँच चुके। भइया दुनियादारी की बात करो। बिरादरी है···

मगर गजपति अग्निहोत्री ने चिल्ला कर कहा : धरो अपने उपदेस। यहाँ नहीं चलेगा। सारे सुधारक इसी गाँव में आने को हैं। कोई आ जाये, मगर एक बिलांद इधर से उधर नहीं होगी। धरम पुरखों ने पाला है, हम भी पालेंगे। कैसे चला जायेगा चमार ? और घोड़े पर। गाँव की थू हो जायेगी। सारा गाँव बिरादरी में भ्रष्ट हो जायगा। कोई पानी छोड़ हुक्के से चिलम तक नहीं छूने देगा। आस-पास के लोग हँसेंगे। लौठा है चेतू, बंबई से कमा के, तो यहाँ आके हो गया, चित्त परसाद।

सब हँस दिये। भूदेवसिंह ठाकुर थे। उन्होंने अपनी मूँछों पर ताव देकर कहा : हम नहीं गोबरधनजी। गाम करै सो राम करै। बोलो भाइयो, चमार घोड़े पर ब्याह करने जायगा, तुम देखते रहोगे ? कल चमरिया सोने के गहने पहनेगी, परसों तुमसे वह बेटी माँगेगा, दोगे ?

आग में घी पड़ा। सब गरज उठे : नहीं, नहीं, ऐसा होगा तो लहू की नदियाँ बह जायेंगी।

नीलकण्ठ अवस्थी ने बीच बचाव की ध्वनि में कहा : झगड़ा करने से क्या फ़ायदा। भइया, जो होता आया है, सो तो तुम करोगे ही, पर जब वह बैठ घोड़े पै, तोड़ा लुटायेगा···

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो चमराने की ईंट से ईंट बज जायेगी, अवस्थी महाराज,' ठाकुर चिल्लाया, और एक गड़रिया पुकार उठा : अँधेर नहीं होगा।

जग्गी अहीर ने लाठी सँभाली और बोला : धना, जुलाहे, मल्लाहे, कोली, चमार, धोबी, भंगी अब छाती पै मूँग दलेंगे ?

'शांत हो भाई, शांत हो,' नीलकण्ठ अवस्थी ने कहा : सबको एक में मत जोड़ो। पूछो गाँव के कितने दूध एक ओर हैं !

'एक न हो' ठाकुर के हाथ में एक लट्ठ दिखाई दिया, 'यह हमारे साथ है।'

एक बूढ़ा धोबी आगे बढ़ कर बोला : महाराज। हम क्यों मिला लिये गये ? हमने तो कभी मरजाद तोड़ी नहीं। हम तो आप के चरन दास हैं।'

'लो सुनो,' अलगू दीक्षित ने कहा, 'गोरधन सुनो ! तुम सबको ही रोक लोगे ?'

गोवर्धन अभी तक चुप था। उसने कहा : मैं कुछ नहीं कहता। पर इतना अवस है कि जो आप कर रहे हैं सो लाठी के बल है। बात का जवाब लाठी नहीं होती।

'कब नहीं रही ?' मुन्नू दुबे ने पूछा—'कब नहीं रही ? जो यह न हो तो राह के कुत्ते भी शेर की तरह गुर्राया करें।'

गोवर्धन ने कहा : यह तो अन्याय है। इसका मतलब यह हुआ कि जिसकी लाठी है, उसकी भैंस है।

किसी ने कुछ नहीं कहा, परंतु ठाकुर भूदेव सिंह ने कहा : भइया तुम तीन अच्छर पढ़ गये हो, तभी किसी में एक पाई भी अकल नहीं समझते। पर चमार यहाँ से घोड़े पर नहीं जायेगा···

यह शब्द कहते हुए जैसे उसका स्वर आवेश से काँप उठा। उस समय युवक मोहन लाल ने आगे बढ़ कर कहा : ठाकुर का क्रोध ठीक है, पर ये पंडित बैठे हैं। जब तिवारी जी के मँझले लड़के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
विलायत से लौटे थे, तो पंचायत में उन्होंने शुद्धि नहीं कराई, प्रायश्चित्त कराने वाले पंडितों को कुत्ता कहा था, सारा गाम साच्छी है। तब तुम्हारी मरजाद कहाँ गई थी ?' मोहन लाल की चाल अच्छी रही। उसने ठाकुर को उठा कर बामनों को गिराया। बामन चक्कर में पड़ गये। वह कहता रहा : क्यों ठाकुर ? पंडित तब तिवारी जी से कैसे मिल-मिल के बैठ गये ? उनके पास हुँडा है, हुँडा। वे बड़े आदमी हैं ?

ठाकुर कम समझ थे। उनके यहाँ कम समझ होना कोई दोष नहीं माना जाता था। बोले : बड़े ने जब ढील दी तो छोटे ने भी सिर उकसाया।

जग्गी अहीर ने कहा : पर पंडित बिगाड़ें तो वे सुधारने की सामर्थ रखते हैं। क्यों ठाकुर ?

ठाकुर ने कहा: ठीक है। पंडित सब की सामर्थ रखते हैं।

बाजी फिर पलट गई। गाँव का जनमत एक ओर था। गोवर्धन चुप हो गया। वह रघुबीर के पास चला गया। खून खराबा निकट दिखाई देता था। चित्तप्रसाद नाम रख लेने वाले चेता से सब जलते थे। बंबई जाकर वह पैसा क्या कमा लाया आफत हो गई। अपनी-अपनी किस्मत है। बंबई गया, वहाँ अपने को उसने जाट कहा और दूकान खोली, फुटपाथ से फिर एक छोटी दूकान ले ली और अब आया तो रुपये का दाब देने लगा। गाँव की स्त्रियों को कौतूहल का विषय मिल गया। अब यही बात होने लगी। आपस की बातों में यह बहुत ज़ाहिर होता कि कई चमार नाम के बच्चे असल में ऊँच जातों के बच्चे हैं। तब धरम नहीं बिगड़ा ? और फिर उधर चमारों की भी अजीब हालत थी। चित्तप्रसाद अब काँग्रेसी हो गया था। बंबई में ही नमक सत्याग्रह में तीन बार एक-एक हफ्ते की जेल काट आया था। ऊपर से नीचे तक खद्दर पहनता था। उसके चेहरे पर चमारों की सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो चमराने की ईंट से ईंट बज जायेगी, अवस्थी महाराज,' ठाकुर चिल्लाया, और एक गड़रिया पुकार उठा : अँधेर नहीं होगा।

जग्गी अहीर ने लाठी सँभाली और बोला : धना, जुलाहे, मल्लाहे, कोली, चमार, धोबी, भंगी अब छाती पै मूँग दलेंगे ?

'शांत हो भाई, शांत हो,' नीलकण्ठ अवस्थी ने कहा : सबको एक में मत जोड़ो। पूछो गाँव के कितने दूध एक ओर हैं !

'एक न हो' ठाकुर के हाथ में एक लट्ठ दिखाई दिया, 'यह हमारे साथ है।'

एक बूढ़ा धोबी आगे बढ़ कर बोला : महाराज। हम क्यों मिला लिये गये ? हमने तो कभी मरजाद तोड़ी नहीं। हम तो आप के चरन दास हैं।'

'लो सुनो,' अलगू दीक्षित ने कहा, 'गोरधन सुनो ! तुम सबको ही रोक लोगे ?'

गोवर्धन अभी तक चुप था। उसने कहा : मैं कुछ नहीं कहता। पर इतना अवस है कि जो आप कर रहे हैं सो लाठी के बल है। बात का जवाब लाठी नहीं होती।

'कब नहीं रही ?' मुन्नू दुबे ने पूछा—'कब नहीं रही ? जो यह न हो तो राह के कुत्ते भी शेर की तरह गुर्राया करें।'

गोवर्धन ने कहा : यह तो अन्याय है। इसका मतलब यह हुआ कि जिसकी लाठी है, उसकी भैंस है।

किसी ने कुछ नहीं कहा, परंतु ठाकुर भूदेव सिंह ने कहा : भइया तुम तीन अच्छर पढ़ गये हो, तभी किसी में एक पाई भी अकल नहीं समझते। पर चमार यहाँ से घोड़े पर नहीं जायेगा···

यह शब्द कहते हुए जैसे उसका स्वर आवेश से काँप उठा। उस समय युवक मोहन लाल ने आगे बढ़ कर कहा : ठाकुर का क्रोध ठीक है, पर ये पंडित बैठे हैं। जब तिवारी जी के मँझले लड़के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

विलायत से लौटे थे, तो पंचायत में उन्होंने शुद्धि नहीं कराई, प्रायश्चित्त कराने वाले पंडितों को कुत्ता कहा था, सारा गाम साच्छी है। तब तुम्हारी मरजाद कहाँ गई थी ?' मोहन लाल की चाल अच्छी रही। उसने ठाकुर को उठा कर बामनों को गिराया। बामन चक्कर में पड़ गये। वह कहता रहा : क्यों ठाकुर ? पंडित तब तिवारी जी से कैसे मिल-मिल के बैठ गये ? उनके पास हुँडा है, हुँडा। वे बड़े आदमी हैं ?

ठाकुर कम समझ थे। उनके यहाँ कम समझ होना कोई दोष नहीं माना जाता था। बोले : बड़े ने जब ढील दी तो छोटे ने भी सिर उकसाया।

जग्गी अहीर ने कहा : पर पंडित बिगाड़ें तो वे सुधारने की सामर्थ रखते हैं। क्यों ठाकुर ?

ठाकुर ने कहा: ठीक है। पंडित सब की सामर्थ रखते हैं।

बाजी फिर पलट गई। गाँव का जनमत एक ओर था। गोवर्धन चुप हो गया। वह रघुबीर के पास चला गया। खून खराबा निकट दिखाई देता था। चित्तप्रसाद नाम रख लेने वाले चेता से सब जलते थे। बंबई जाकर वह पैसा क्या कमा लाया आफत हो गई। अपनी-अपनी किस्मत है। बंबई गया, वहाँ अपने को उसने जाट कहा और दूकान खोली, फुटपाथ से फिर एक छोटी दूकान ले ली और अब आया तो रुपये का दाब देने लगा। गाँव की स्त्रियों को कौतूहल का विषय मिल गया। अब यही बात होने लगी। आपस की बातों में यह बहुत ज़ाहिर होता कि कई चमार नाम के बच्चे असल में ऊँच जातों के बच्चे हैं। तब धरम नहीं बिगड़ा ? और फिर उधर चमारों की भी अजीब हालत थी। चित्तप्रसाद अब कॉंग्रेसी हो गया था। बंबई में ही नमक सत्याग्रह में तीन बार एक-एक हफ्ते की जेल काट आया था। ऊपर से नीचे तक खद्दर पहनता था। उसके चेहरे पर चमारों की सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दीनता नहीं थी। वह सब कुछ सुन रहा था। रघुबीर सत्यनामी से उसने बात की। रघुबीर उसकी ओर हो गया। वह बड़ा अड़ियल आदमी था। ठेठ महात्मा गाँधी का छोटा नमूना था। भुसी की रोटी खाता था। और ईंट का तकिया लगा कर सोता था। गाँव भर में उसका प्रभाव था। उसके त्याग और तपस्या से सब प्रभावित हुए थे। चमार समुदाय अपनी बिरादरी में एकमात्र उज्वल नक्षत्र चित्त प्रसाद को देख कर उसके पीछे हो लिया था। बहुत बहुत हिम्मत बाँधते थे, पर जब सुनते थे कि गाँव भर विरुद्ध है, बूढ़ी चमारियाँ कहती थीं, समझती थीं कि ऐसा तो कभी नहीं हुआ। यह तो भगवान की सौगंध आज तक नहीं देखा। चेता का मगज धन की गरमी से फिर गया है। हम तो कमीन हैं, कमीनों की तरह ही रह कर हमारी रक्षा होगी……

पर चेता का स्वर दूसरा था : गाँधी महात्मा कहते हैं कि सब बराबर हैं। यह सब झूठे बंधन हैं। तुम क्यों डरते हो ? डरते हो, विरोध नहीं करते, तभी तुमसे बेगार ली जाती है, तुमको पूरी मजूरी तक नहीं दी जाती, तुम्हें सिर नहीं उठाने दिया जाता……

और चमार जो मुख्यतया खेतिहर मजूर थे, सुनते, तो उन्हें एक ढाढस होता और उन्होंने देखा कि एक और व्यक्ति उनकी ओर आ मिला है…और वह है एक पढ़ा लिखा युवक…गोवर्धन……

फिर भी मन भीतर ही भीतर डरता था। परंतु चित्तप्रसाद शादी की तैयारी कर रहा था।

३

संवाद चारों ओर फैल गया। दूर दूर तक के गाँवों में एक सनसनी व्याप गई। जो आज तक नहीं हुआ, वह आज होने जा रहा है ? क्यों नहीं, कुछ लोग कहते, शहर में जब चमार का बेटा बामन के बेटे साथ एक बराबर बैठ कर पढ़ता है तब क्या किसी का बस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चलता है ? कोई है ऐसा ज्वान जो रोक ले ? अँग्रेज़ कौन है ? है उसकी कोई जात ? लेकिन उसके सामने सब हाथ बाँधे खड़े रहते हैं ! जैसे वह भगवान का अवतार हो !

पं० बैजनाथ बाजपेयी कहते : वह आपत्ति के समय की बात है। अँगरेज़ सदा नहीं रहेगा। राजा बदलते रहते हैं, धर्म नहीं बदलता। यह तो आपद्धर्म है, आपद्धर्म।

लेकिन इस आपद्धर्म में लोगों को अधिक विश्वास नहीं था। बहरहाल चित्त प्रसाद की हिम्मत नहीं टूटी। और उस दिन तो सच-मुच गाँव में अँधेर हो गया जब लोगों ने सुना कि चित्तप्रसाद की बेटी का ब्याह होके रहेगा, क्योंकि सारी तैयारियाँ हो चुकी हैं और बारात आ गई है। चारों ओर तहलका मच गया। पंडित बाजपेयी जब चंदन का टीका लगा कर घर से निकल रहे थे उनकी वृद्ध माता ने कहा : क्यों बैजू ! यह सत्य है ? अब चमार गाँव में घोड़े पर बैठ कर आयेगा ?

पंडित जी ने कहा : मैंने भी सुना है।

'तुम सुनते ही रह जाओगे ! पड़ोसिन 'गाँवबूआ' ने कहा और फिर कतरनी चलने लगी : परसों ही तो लौटी हूँ। कथा हुई थी। पंडित जी ने भागवत पढ़ कर सुनाई थी। कुछ अनहोना नहीं हो रहा है बहिनी, ठीक-ठीक यही सब तो लिखा है। ऊँच जात अपना धरम छोड़ देंगी। और नीची जात के लोग कंधे पर जनेऊ डाल कर घूमेंगे।' वह हँसी और वह बूढ़ी की हँसी घृणा से सरल थी, इतनी गंदी, जैसे चीकट हो।

'पुरिस धरम की रच्छा नहीं कर सके' उसने फिर कहा, अब तो स्त्रियाँ ही व्रत तीर्थ करके उनके और पाप धो दें बहिनी···

उसका स्वर उठता रहा। वह जीवन की एक अथक बहुत लंबी दौड़ थी, जिसका कहीं कोई अंत नहीं दीख पड़ता था। पंडित बैजनाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को उसकी बात तीर की तरह लगी। तो पुरखों ने जिस धर्म की प्राण देकर रक्षा की वह आज उसी के प्रति उदासीन थे। लेकिन सचाई यह है कि सारा समाज जिस धरम की ढोल पीट रहा है, वह धरम न बड़े में रहा है, न छोटे में। कौन है जिसका धरम अब अछूता है, सब ढकोसला है।

माँ ने फिर कहा : क्यों बेटा ? आज क्या नाक कट कर रहेगी ! गाँव में कोई मरद नहीं रहा ? तिवारी जी कुछ नहीं कहते ? वैसे तो बड़े राजा बने फिरते हैं। कल को चमार कहेंगे कि रोटी बेटी का व्यवहार करो, तब करोगे !

प्रहार सीधा हुआ। बोल उठे : मैं देखता हूँ। कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। बात उनके मन को छू गई थी। वस्तु की भयानकता अब समझ में आ गई थी। अतः पंडित बैजनाथ बाजपेयी सीधे नीलकंठ अवस्थी की चौपाल पर पहुँचे। वहाँ पहिले ही से जमघट था। साँझ के उतरे हुए अँधियारे पर उनका वह कोलाहल अब कुछ काँप रहा था, लगता था उसके पीछे कोई आशंका है।

पंडित बैजनाथ बाजपेयी को देख कर नीलकंठ अवस्थी ने कहा : आओ पंडित। कहो ! सारा गाँव तुम्हारी बात की बाट जोहता है।

'मेरी बात की !' बैजनाथ ने बैठ कर कहा, वे कुछ चौंक गये थे। उन्होंने रास्ते में ही गाँव के मास्टर को छिप कर जाते हुए देखा था। समझ गये। नीलकंठ चाल कर रहे हैं। सारी जिम्मेदारी वे बैजनाथ बाजपेयी पर डाल कर अलग हो जायेंगे और बाद में कोई चक्कर होगा तो आप साफ बच कर निकल जायेंगे। जैसे हमसे क्या मतलब ! हमने क्या किसी से कुछ कहा था ? उन्होंने मन ही मन अपने इष्टदेव हनुमान का स्मरण किया। रोज सुबह अँधेरे ही गाते थे— 'को नहिं जानत है जग में प्रभु संकट मोचन नाम तिहारो।' आज वह हनुमान भी काम नहीं आये। शरीर में शक्ति का स्फुरण नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले : मैं तो क्या कह सकता हूँ, पर गाँव की राय क्या है ? क्यों अवस्थी जी ? आप गाँव के पंचों में से हैं, जो कहें सो हो। क्यों ठाकुर सा'ब ?

ठाकुर भूदेव सिंह और जग्गी अहीर हाथों में लट्ठ लिये खड़े थे। उनके पीछे धोबी, कुम्हार, बामन, ठाकुर, अहीर, जुलाहे इत्यादि प्रायः सब ही जातियाँ थीं। भंगी, चमार, पासी आदि ही नहीं थे। उनके मुखों पर एक दृढ़ता थी, जैसे वे कुछ करके रहेंगे। पंडित बैजनाथ को याद आया कि कलियुग में जब ब्राह्मण धर्म के रास्ते पर डगमगायेंगे तब नीच जातियाँ ही उसके लिये जान देंगी। ठीक है। देने दो इन्हें ही जान। ब्राह्मण तो राय देते हैं। सिर्फ़ उनसे रायें ले लो। और यह जातियाँ ! सब इस तरह मिलकर एक होना चाहती हैं। पंडित बैजनाथ के हृदय में एक द्वन्द्व हुआ। यह नाई, बढ़ई सब अब ठाकुर, बामन हो चले हैं, जनेऊ पहनते हैं, पर अपने से नीचे को नहीं उठने देते। चलो आपस में लड़ कर नष्ट हो जाओ।

ठाकुर ने उत्तर नहीं दिया। जग्गी अहीर और भूदेव सिंह के लट्ठ एक साथ पत्थर पर गिरे। जैसे तर्क का यहीं अंत हो गया था। कोई चारा नहीं था। गोवर्धन दूर से देख कर लौट गया। समझाना व्यर्थ था। रघुवीर कह रहा था कि मुझे वहाँ चला जाने दो। मैं वहाँ जाकर सत्याग्रह करूँगा। अकेला क्या नहीं कर सकता ? मैं सबका दिल फेर दूँगा पर चित्त प्रसाद ने उसके पैर पकड़ लिये और कहा : आप चले जायेंगे तो यहाँ मेरा सहारा कौन रहेगा ? आप ही के कारण तो मेरी इतनी हिम्मत है ? रघुवीर की बुद्धि को भावना ने पराजित कर दिया—अब इस भीड़ में कोई ऐसा न था, जो तनिक भी विरोध करता। रामाधीन भी पीछे खड़े तमाशा देख रहे थे। मोहनलाल अपने घर ही बैठा था। गाँव के चिकिनियाँ बैठे बैठे गप्पें उड़ा रहे थे। उन की हार्दिक इच्छा थी कि मारपीट की जाये। पर नेता कौन बने ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीलकंठ अवस्थी सरकारी आदमी थे। इस समय उन्होंने देखा कि घिरे जाते हैं। बोले : मैं पंच हूँ, चार और पंच हैं। पर पंच क्या करेंगे ? आदमी का धरम अपना है, जो उसे नहीं रखेगा वही भुगतेगा। कौन किसी से क्या पाप पुन्न ले लेता है, कौन किसी को कुछ दे सकता है। जो करोगे सो भोगोगे। पुरखों ने जो नेम बना दिये हैं, वह तुम्हारे भले के लिये। जो गाँव ठीक समझै करै।

भीड़ में से आवाज उठी : राम करै सो राम करै।

तीन-चार बार यह नारा लगाया गया और गाँव वालों में एक जुनून सा छा गया। गाँव के गुन्डे रह-रह कर पुकारते थे। उधर बारात चढ़ रही थी। दूल्हा मौर बाँधे घोड़े पर सवार था और हाथ में तलवार थी।

'ओ चेता,' ठाकुर ने गरज कर कहा : खबरदार ! किसकी मजाल से यह बरात इधर से निकली !

चित्त प्रसाद निडर रहा। उसने कहा : घर जाकर पूछो कुँवर ! ठाकुर जगदेव सिंह से पूछो।

इस उत्तर से भूदेव सिंह घबरा गये। जगदेवसिंह स्वयं उनके पिता थे। सत्तावन साल के लंबी मूँछों वाले उजड़े खंडहरों में रहने-वाले ठाकुर थे जो बामन का सड़ा मुसा पूत देख कर भी खाट से उठ कर खड़े हो जाते थे और भाई को मूंछें नीची रखने का जिनका सदा का आदेश था। अफीम और शराब के इस कदर शौकीन थे और इसके लिये उनसे कुछ भी करवाया जा सकता था। काम कुछ नहीं करते थे। जो कुछ था वह बेड़नियों के पीछे फूँक चुके थे। पर गाँव में उनका लठ पुजता था। कहा जाता था कि वे रात को डकैती भी कर लेते हैं। पार साल एक बुढ़िया उधर पुल वाले खेत के पास थक कर बैठी थी, अपनी तकदीर को कोस रही थी। कोई उधर से गुज़रा और दुखिया को एक सोने का कड़ा दे गया। कहाँ तक सच था यह, तो नहीं मालूम। पर बुढ़िया का लालच बढ़ा। बोली कुछ अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

निसानी भी देते जाओ। तो झट से जेठ भर कर दाँतों से थोड़ी नाक काट दी। नाक तो बुढ़िया की कटी हुई मिलती है। तो वह डाकू कौन था? लोगों की राय थी कि ठाकुर जगदेवसिंह ही थे। बहरहाल इसी डाँट-डपट और रौबदाब में काम निकल रहा था। कोई विपत्ति में पड़ता था, फ़ौरन उससे शराब-अफ़ीम लेकर उसे अभय दे देते थे। उनकी अभय काफ़ी थी। उससे ही काम चल जाता था। इस मामले में वे शराब और अफ़ीम से ही प्रसन्न नहीं हुए थे। चित्त-प्रसाद ने उन्हें पन्द्रह सेर चून भी दिया था। जगदेवसिंह ने अभय दिया था। पहले तो उन्होंने सोचा भूदेवसिंह से कह दें। अपना ही पुत्र है, पर इधर गाँव के रंग ढंग देख कर वे चुप हो गये थे।

चित्तप्रसाद की चुनौती से एक बार सब चुप हो गये। भूदेवसिंह का चेहरा स्याह हो गया, जैसे किसी ने मुँह पर जूते मार दिये हों। इससे साफ़ प्रकट था कि उसके बाप ने रिश्वत खाई है। पर वह बाप से कुछ कहने की हिम्मत नहीं करता था। भूदेवसिंह ख़ुद शेर है, पर जगदेवसिंह इसी नाते एक शेर का बाप है। शेर का बाप इस वक्त अपनी टूटी टपरिया में एक थाली को काँसा कहता हुआ, पीनक में ऊँघ रहा था।

जग्गी अहीर ने कहा : झूठ है, बिल्कुल झूठ है। बाजे रोक दो, दूल्हा उतार दो। वर्ना···

रघुबीर ने पुकार कर पूछा : वर्ना क्या?

'वर्ना खून-खराबा हो जायगा?' किसी ने भीड़ में से चिल्ला कर कहा। और फिर भीड़ तेज़ी से झपटी। गाँव में चमार कम नहीं थे। शायद आधे ही होंगे। पर अब इस एकदम के हमले के लिये वे तैयार नहीं थे। और इस भीड़ में सब थे। पंडित नीलकण्ठ अवस्थी दूर ही से देख रहे थे। दूल्हा घोड़े से उतार कर धूल में गिरा दिया। घोड़े का साज-सामान सब छीन कर उड़ा दिया गया। दूल्हे का मौर छिन्न-भिन्न कर दिया। खूब हुड़दंग हो रहा था। चित्तप्रसाद घूँसों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
की मार से गिर गया था। रघुबीर सतनामी भिड़ा था, पर उस पर लड़कों ने इतनी धूल फेंकी कि उसका दम घुटने लगा। गाँव के धुरों की बन आई। जिसके जो हाथ पड़ा वही ले भागा, पर कुछ ऐसे थे जो लूटने के शौकीन नहीं थे। उन्होंने चमारों को सज़ा देना तय किया था। बड़े-बड़े तगड़े चमार, आश्चर्य का विषय था, पहले तो लड़े, पर जब जय बजरंग बली की कह कर हमला किया गया, तो पिटने लगे। अशिक्षित सदियों से कुचले हुए लोग एक रात में ही नहीं उठ सकते थे। उनका साहस छूटने लगा। रघुबीर और चित्त-प्रसाद के गिरते ही उनका साहस छूट गया। सबने उन्हें खूब मारा। कमज़ोर को मारते वक्त अत्याचारी को एक पाशविक आनंद आता है, क्योंकि उसे अपना अत्याचार कभी अत्याचार नहीं मालूम देता। वह उसे सनातन नियम समझता है।

इसी समय लोगों ने विस्मय से देखा कि कुछ चमरियाँ हाथ में अपनी खुर्पी ले-ले कर निकल आईं। उनको देख कर चमारों में फिर से साहस आ गया, पर बूढ़े और बूढ़ी चमरियाँ, अब डर से दुहाई देने लगी थीं। यह साहस कितनी देर रहता। लोग दुल्हिन के घर में घुस गये। चमरियों की खुर्पियों ने कमाल दिखाया। कई लोग घायल हुए। किसी गुंडे ने एक चमरिया पर कुठौर हाथ डाला तो उसने पलट कर खुर्पी मारी। गुंडे की एक उँगली कट कर लटक गई। पर भीड़ बढ़ रही थी। न कहीं पुलिस थी, न दरोग़ा, कोई नहीं। जैसे गाँव में सरकार की अमलदारी ही नहीं रही। थाने के मुन्शीजी, चौकीदार और पटवारी को लेकर तहसीलदार के यहाँ जा बैठे थे जैसे वे कुछ नहीं जानते। अभी बस्ताबरदार आया था उससे किसी ने जो कहा था, वह सब उसने बताया है। पर इस वक्त जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

भीड़ ने जब दुल्हिन का कोठा घेर लिया तब सब औरतें चीखने-चिल्लाने लगीं। उनके दिल में डर समा गया; किंतु उसी समय एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Gangotri and Sarayu Trust

युवक ने दुल्हिन की माँ का हाथ पकड़ लिया। वह गोवर्धन था। उसके सिर से खून निकल रहा था। उसने कहा : पीछे के घर में कुदा दो, खिसका दो।

चित्तप्रसाद की बहू ने डरते हुए पूछा : पर डौर पर चढ़ायेगा कौन ?

'मैं हूँ तो।'

बात की बात में गोवर्धन ने माँ-बेटी को डौर पर चढ़ाकर पीछे कुदा दिया। भीड़ जब भीतर आई वहाँ सिर्फ़ गोवर्धन था। क्रुद्ध भीड़ ने किसी को न पाकर गोवर्धन के सिर को ही निशाना बनाया। हाथ ऊपर आ गये, पर लाठियाँ और गिरीं और गोवर्धन गिर गया। उसके बाद भीड़ भागने लगी। सब कुछ छिन्न-भिन्न हो गया। केवल एक अरमान गुंडे पूरा नहीं कर सके। चमरियों ने जहाँ इज़्ज़त और आबरू का सवाल था, वहाँ तनिक भी सिर नहीं झुकाया, पर चमार पिटे, यह एक सत्य था। सारे बराती इधर-उधर भाग गये। जहाँ बाजे बज रहे थे, वहाँ अब साँय-साँय होने लगी। इस आकस्मिक परिवर्तन के लिये कोई तैयार नहीं था।

जब काफी देर हो गई और सब चले गये तब दुल्हिन खाट रख कर डौर पर चढ़ी और कूदी। आकर देखा, गोवर्धनको चेत तो हो गया था पर अभी कुछ झाँई-सी बाकी थी। लाकर पानी माथे पर डाला।

गोवर्धन ने कहा : पानी···पा·····नी·····

दुल्हिन पानी मुँह में डालने वाली ही थी कि अचानक उसके हाथ रुक गये। इतना भला है, मददगार है, पर क्या इसका धरम बिगाड़ना चाहिये ? क्या इसकी भलाई का यही बदला होगा ?

गोवर्धन ने फिर कहा : पानी···पा···नी·····

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लड़की ने पानी गले में डाल दिया और कहा : छमा देना महाराज ! आफत का बखत है, नहीं तो ऐसा नहीं करती।

गोवर्धन ने पानी पीकर आँखें मींच लीं। चमार अब रघुवीर और चित्तप्रसाद को उठा-उठा कर ला रहे थे। रघुवीर के मुँह में धूल ठूँस-ठूँस कर भर दी गई थी और चित्तप्रसाद घूँसों की मार से बेहोश हो गया था।

रात हो गई थी, गहरी और गहरी। इस साल की जगार पर देवों ने गाँव की यह पहली शादी देखी जो नहीं हुई। तारे आसमान में छिटक रहे थे। सब अपने-अपने घर चले गये थे। जैसे अब कुछ नहीं था, कहीं कुछ नहीं था। सब झगड़े बंद हो चुके थे।

नीलकंठ अवस्थी जब रात के तीन बजे ही उठे तो उन्होंने भगवान् का नाम लिया और पड़ोस की छत से झाँक कर देखा। सक्का सामने ही सो रहा था। आपने फिर भगवान् का नाम याद किया और उस दिन की धर्म विजय की प्रसन्नता में फिर नहीं सोये। उन्होंने निश्चय किया कि वे आज एक सौ आठ बार गायत्री का जप करेंगे और फिर वे सोचने लगे अब ऊँट किस करवट बैठेगा···किसको क्या करना चाहिये।

४

मारपीट करने वालों को तब होश हुआ जब न्याय और सत्य के लिये अब पुलिस ने चक्कर लगाना शुरू किया। अभी तक तो दरोगा जी चुप थे। वे स्वयं सनाढ्य ब्राह्मण थे। उन्होंने भी सोचा कि चमारों की ज़रा ठुकाई हो ले तो अच्छा ही है, बहुत सिर चढ़ गये हैं, और चेता क्यों कि अब काँग्रेसी भी था, उसके विरुद्ध उन्हें कुछ पहले से ही खुचड़ थी। दूसरे रघुवीर सतनामी उसका साथी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्योंकि रघुबीर खुले खजाने गाली देता था, सुना-सुना कर कहता था कि तुम रिश्वती हो, सरकार के गुलाम हो, गद्दार हो, रोटी के लिये ईमान बेचने वाले कुत्ते हो, और पिटवाये जाने पर भी न जूते उसे चुप कर पाते थे, न लाठी, वे करीब-करीब उससे हार चुके थे। ज़मीन खेत रामनाथ तिवारी कुड़क करवा चुके ही थे। अब उनके पास कुछ था नहीं। एक बार दफा १०९ अर्थात् ज़रिया-ए-माश नहीं पता चलता के मातहत उसे गिरफ्तार करने की भी सोची थी; पर फिर चुप रह गये थे क्योंकि गाँववाले ही उसको मदद देते थे। इस समय दोनों के प्रति गाँव विरुद्ध था। चुप रह कर उन्होंने गाँव वालों की वाहवाही लूटने की कोशिश की। लेकिन सुनार का बेटा माँ के गहने में से भी सोना चुरा लेता है। नहीं चुराता तो उस घोड़े की तरह दुबला होने लगता है जिसकी खाने की घास से ही यारी हो जाती है। उन्हें लगा वे दुबले हो जायेंगे। अतः अमले प्यादों का दौर शुरू हुआ। अब गाँव वाले घबरा उठे। पंडित नीलकण्ठ अवस्थी ने खेद प्रकट करते हुए कहा : यहाँ कमीनों की इतनी मजाल हो गई। दक्खिन में तो भंगी चमार सड़क पर आवाज़ देकर तब कहीं चलने पाते हैं। अजी इन खुशामदपसंद ठाकुरों ने बस जुहार सुनी और तरह दे गये। दक्खिन में ब्राह्मणों का राज है। धरम नहीं बिगड़ा अभी तक।

परंतु इस समय उनके इतिहास और भूगोल के ज्ञान में लोगों को कोई दिलचस्पी नहीं थी। सब अपने अपने को बचाये हुए थे। उधर दरोगा जी ने जाकर चित्तप्रसाद के द्वार पर डेरा डाला। चित्तप्रसाद के मन में आग जल रही थी। उसने एक एक का नाम लिखाया। दुहाई दी कि अँगरेज़ी हुकूमत में जब स्कूलों में चमार-बामन एक साथ बैठ कर पढ़ते हैं, रेलों में एक साथ सफ़र करते हैं, तो क्या कारण है कि चमार अपनी मनचाही रीत से ब्याह-शादी नहीं कर सकते। दरोगा ने सब कुछ लिख कर फिर उसकी ओर देखा। इस दृष्टि का अर्थ गाँव में सब जानते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तभी गोवर्धन ने कहा : आओ रघुबीर काका। आ गये ?

चित्तप्रसाद खिल उठा। आगे जाकर स्वागत किया और ले आया। भीतर से एक खाट और मँगाई। रघुबीर सतनामी तनिक अकड़कर बराबरी की हैसियत से बैठ गया। दरोगा जी का मन खट्टा हो गया था। उन्होंने कहा : और कुछ नहीं लिखाना है ? जानते हो बारात वाले क्या कह रहे हैं ?

'क्या कह रहे हैं ?' चित्तप्रसाद ने खड़े-खड़े पूछा।

'वे तो कहते हैं कि उनको यह बिल्कुल पसंद नहीं था। वे तो तुम्हारी ज़िद की वजह से ही पिटे हैं। चमार थे, चमारों की तरह रहते। ज़रा तुम्हारे पास पैसा ज्यादा हो गया तो इतना ग़ुरूर छा गया !' दरोगा जी ने अकड़ कर कहा।

चित्तप्रसाद का दिल भीतर ही भीतर क्रोध से काँप उठा। पर वह चुप ही रहा। रघुबीर सतनामी हँसा। उसका चेहरा और भी दृढ़ हो गया। दरोगा जी चेते। मुंशी ने कहा : ऐ ! क्यों हँसते हो ? देखते नहीं सरकार बैठे हैं।

'अरे देख रहा हूँ,' रघुबीर ने उसी स्वर में कहा, 'तुम्हें भी देख रहा हूँ और हुज़ूर को भी देख रहा हूँ। यह बात ठीक ही है। पर हम काँग्रेसी हैं। महात्मा गाँधी के बताये सिद्धांत मानते हैं। जब सब ही आदमी बराबर हैं तो क्या चमार क्या बामन ? आदमी अपने कर्म के अनुसार ऊँच-नीच होता है !'

'तो,' दरोग़ाजी ने गंभीरता से विद्रूतापूर्वक कहा, 'यह लोग नीच काम नहीं करते ?'

'नहीं,' रघुबीर सतनामी ने कड़क कर कहा, 'कोई भी काम गंदा नहीं है। लेकिन जो काम है उसको बुरे ढंग से करना ही उनको नीच बना देना है, जैसे सरकारी नौकरी में रिश्वत लेना ? क्यों सरकार ? रिश्वत लेना बुरा काम नहीं है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपस्थित लोग मुस्करा उठे। रघुबीर की काली सिकुड़ी खाल पर एक मुस्कराहट काँप उठी। दरोगा जी बुरे फँसे थे। इस समय उन्होंने तुरंत ही कहा : क्यों नहीं ? बहुत बुरा काम है।

गाँव वाले रघुबीर की इस हिम्मत पर कुर्बान थे। छोटा सा काम पड़ता था तो पहले दो रुपये धर कर सलाम करते थे, फिर कहीं दरोगा से बात कर पाते थे। दरोगा के इस उत्तर से उसके साथी अमलों का सिर झुक गया, जैसे दरोगा जी से कोई भूल हो गई थी। जब इधर से कुछ मिलने का डौल न हुआ तो वे उठ खड़े हुए और नीलकण्ठ अवस्थी की चौपाल पर जा बैठे। सारे लोग इकट्ठे हो गये। फौरन पान, इलायची, एक सिगरेट, शर्बत पेश किया गया।

बैजनाथ बाजपेयी ने एक सिपाही से पूछा : सरकार दूध पियेंगे ?

सिपाही ने घूर कर देखा और कहा : मैं ज़रा मीठा ज्यादा पीता हूँ।

बैजनाथ ने खीसें निपोर दीं और दूध का इंतज़ाम करने लगे। दरोग़ा जी ने उन नामों को पुकारा जिन पर अभियोग लगाया गया था। सुनते ही वे लोग काँप उठे। दरोग़ा जी ने देखा निशाना ठीक बैठा। बिना किसी को गिरफ्तार किये उठ खड़े हुए और चलते वक्त कहा : खबरदार ! जो गाँव से फ़रार होगा उसे चक्की पिसवा कर छोड़ूँगा।

उनके चले जाने पर गाँव वालों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ बँट गईं। दुपहर बीत गई, साँझ हो चली, लेकिन कोई राह नज़र नहीं आई। सिपाहियों से बातचीत भी की, मगर उनकी भौं टेढ़ी ही बनी रही। तब हार कर नीलकण्ठ अवस्थी ने कहा : वैद्य नहीं बन सका तो क्या, दवा तो मैं ही जानता हूँ। गजपति अग्निहोत्री जिनसे एक ज़मीन के पीछे पुरानी अदावत थी इस समय अवस्थी जी के साले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परमानन्द सुकुल के साथ आये थे। मन्नू दुबे तिवारी जी के पुराने शत्रु थे, उन्होंने इस मौके पर काफ़ी सोचा पर कुछ भी निश्चित नहीं कर सके। अगर तिवारी जी के दुश्मनों को अपनाया जाय तो चमार हैं और चमारों से उनसे कोई अदावत नहीं। हाँ परमानंद और गजपति की दोस्ती पर उन्हें मन ही मन ऐतराज़ था। वे चुप हो रहे? यहाँ तो चमारों का सवाल था।

रात हो चली थी। बानापुर की विशाल कोठी में इस समय लैंप जल गये थे। नीलकण्ठ अवस्थी ने इत्तला कराई। रामनाथ तिवारी अपनी लाइब्रेरी में बैठे थे। पढ़ नहीं रहे थे। जो कभी पढ़ा था, शायद उसको मन ही मन गुन रहे थे, क्योंकि वे किसी गंभीर चिंतन में लीन थे। उन्होंने नीलकण्ठ अवस्थी को वहीं बुलवा लिया। बाद प्रणाम का उत्तर देने के, रामनाथ ने उन्हें बैठने की आज्ञा दी। नीलकण्ठ अवस्थी नीचे बैठने लगे, पर तिवारी जी उनकी नम्रता से खुश हो गये, उन्होंने उन्हें कुर्सी पर ही बिठाया। बात के दौरान में नीलकण्ठ अवस्थी सारा किस्सा सुना गये। तिवारी जी ग़ौर से सुनते रहे। उन्हें सुन-सुन कर आश्चर्य हो रहा था। जब अवस्थी जी ने किस्सा खत्म किया तब अंत में कहा: जो है शो तिवारीजी। आपके मँझले कुँवर ने विलायत से लौट कर प्रायश्चित्त के समय हमें कुत्ता कहा था। तब झगड़ू मिसिर ने सब गाँव में यह बात फैला दी थी। शास्त्र का नियम बनाने वाले ब्राह्मणों का अपमान हुआ था। पर आप राजा हैं। राजा के अनुसार ही प्रजा चलती है। लोगों ने देखा। यह सब क्या है? बड़े कुँवर जेल में सबका छुआ खाते रहे। मँझले कुँवर ने खाद्य-अखाद्य खाया, काँग्रेस ने धरम तोड़ दिया। अब गाँव वाले आदमी को आदमी नहीं समझते।

रामनाथ तिवारी कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने कहा: अवस्थी जी आप घबरा गये हैं। यह तो बहुत मामूली बात है। जब चाहे दबा दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मामूली आपके लिये है,' अवस्थी ने कहा : आप बड़े आदमी हैं। आपके सामने तो सबको दबना पड़ता है, पर अब ब्राह्मण होने के नाते, कनौजिया होने के नाते, कुछ हमारा भी धर्म है। अब अगर दरोग़ा जी सजा करा देंगे तो चमारों की हिम्मत अठगुनी हो जायेगी और कल को ज़मींदार जब कहेंगे कि बेगार करो, तब वे कहेंगे, बला से, हम नहीं करते। बेगार लेनी है बामन से लो।

रामनाथ कुर्सी पर अकड़ कर बैठ गये थे। उन्होंने तेज़ आवाज़ में कहा : ब्राह्मण गिर गये हैं अवस्थी जी तभी यह हालत आ गई है। हम पहले जैसे व्रती आज सचमुच नहीं हैं। नहीं तो परशुराम ने अकेले ही क्षत्रियों का इक्कीस बार नाश कर दिया था···

'कसूर माफ़ हो,' तिवारी जी को काट कर नीलकण्ठ अवस्थी कह उठे : बाइसवीं बार एक छोटे से क्षत्रिय के बालक ने बना बनाया माजरा बिगाड़ दिया था। जो समय पर नहीं चेतते वे अंत में सब कुछ खो बैठते हैं। हमारा क्या है ? गरीब लोग हैं। पर यह चोट आप पर भी आयेगी।

'मुझ पर आयेगी तो मैं उसका जवाब देना भी जानता हूँ,' तिवारी जी ने उसी रूखे स्वर में कहा—'एक-एक चमार की हंटरों से खाल उड़वा दूँगा। मजाल है किसी की ! मेरे सामने कोई सिर नहीं उठा सकता।'

'सरकार को समर्थ जान कर ही गाँव के पंचों ने मुझे आपके द्वार पर भेजा है। आपको ब्राह्मणत्व की रक्षा करनी ही होगी।' नीलकण्ठ अवस्थी ने याचना के स्वर में कहा।

रामनाथ तिवारी उठ खड़े हुए। उनके साथ ही नीलकण्ठ अवस्थी भी उठ गये। रामनाथ कह रहे थे : यह गड़बड़ी क्यों हुई ? आज चमार उस तरह नहीं रहते। अवस्थी जी आज दस-दस पीढ़ियों से चमार हमारे सामने इसी तरह रहते आये हैं, और रहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
शित किया और इसके परिणाम-स्वरूप बानापुर के भीतर एक पादरी साहब दलितों को नजात दिलाने के पाक इरादे से दाखिल हुए। रामनाथ तिवारी के आदमियों से पहले ही दिन उनकी झगड़ हो गई, क्योंकि पादरी बूढ़ा था, शायद मलका विक्टोरिया के ज़माने को ही ताज़ा समझता था। उसको क्या याद था कि इसी धरती पर सन् १९२० से इतने आंदोलन फैल चुके थे, जिन्होंने सल्तनते वर्त्तानिया की जड़ें हिला दी थीं। उन्होंने फ़ौरन कानपुर के कलक्टर को खबर भिजवा दी। कलक्टर ने कुछ सिपाही और एक दरोगा को वहाँ उसकी रक्षा के लिये भेज दिया। गाँव में दूसरी हलचल हो गई। चमारों में दो दल हो गये। एक वे जो ऊँची जातियों से विरोध के विद्वेष में ईसाई बनने की इच्छा प्रकट करने लगे, पर वे कम थे, बहुत कम क्योंकि चित्तप्रसाद स्वयं इसके विरुद्ध था। रघुबीर सतनामी भी कहता था कि तुम खुशी से ईसाई हो जाओ, पर इससे तुम आज़ाद नहीं हो सकोगे। जो अब तुम ऊँची जातों के सामने हो, वही कल अँगरेज़ों के सामने हो जाओगे। और क्यों कि तुम अँगरेज़ों का पल्ला पकड़ोगे, तुम हिन्दुस्तान की गुलामी को कायम रखने में मदद करोगे।

उसके उपदेश का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। अधिकांश चमार भी रु थे। वे इसके लिये तैयार ही नहीं हुए थे कि ईसाई हो जायें।

रात हो गई थी। पंडित रामनाथ तिवारी आज चमारों को बुला कर समझा रहे थे। उनके सामने उनके ईसाई हो जाने से खतरा पैदा हो गया था। चित्तप्रसाद भी औरों के साथ जलसे में कुर्सी पर बैठा था। रघुबीर सतनामी बोलने को खड़ा हुआ। उसके भाषण में ऊपर की ही बातें कही गईं; परंतु सब लोग रामनाथ तिवारी की बात सुनने को उत्सुक थे। जब वे खड़े हुए सबकी आँखें उनकी ओर उठ गईं। सिर में पट्टी बाँधे हुए गोवर्धन ने देखा वे सहज ही कहने लगे: भाइयो! मैं आपके आपसी मामलों में दखलन्दाज़ी नहीं देना चाहता;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
पर आज एक ऐसी बात सामने आ गई है जिसकी वजह से मुझे कुछ कहना ठीक लगता है। आप लोग आज एक पादरी साहब को गाँव में देख रहे हैं। आपको याद होगा सारे देश में हिन्दू मुसलमानों के कितने भयानक दंगे हो चुके हैं। दक्खिन में मोप्ला जाति के दंगे के बाद यह दंगे सारे देश में फैल गये। हिंदुओं से इसके बदले में यहाँ आर्य्यसमाज के अंतर्गत शुद्धि आंदोलन भी चलाया। मैं कहता हूँ। ठीक है। सब ठीक है। पर क्या उससे हिन्दुस्तान में कुछ फ़र्क आया? नहीं। तब सवाल उठता है, आखिर क्यों नहीं? जब मैं यह सोचता हूँ तब मेरी आँखों के सामने भारतवर्ष के अनेक-अनेक अवतार, संत और महात्माओं की तस्वीर घूम जाती है। सबने अपने जीवन भर यही प्रयत्न किया कि मनुष्य की आत्मा शुद्ध हो। पर मनुष्य सुखी नहीं हुआ। क्योंकि हममें नैतिक बल नहीं है। क्योंकि हमारी आध्यात्मिक शक्ति समाप्त हो चुकी है। आज कोई चमार है, कोई भंगी है, वह कहता है कि मैं ब्राह्मण हूँ, मैं क्षत्रिय हूँ। पर क्या यह हो सकता है। मनुष्य जाति से तो कुछ नहीं। समाज चलाना है, चलाने के लिये ही यहाँ जन्म से ही मनुष्य की जाति ली जाती है। पर क्या यही सच है? यह सब जो हम देख रहे हैं, कुछ नहीं है। माया है, इस माया के जाल में फँसा हुआ मनुष्य अपने कर्मानुसार अनेक सुख-दुख भोगता है। आप मुझे राजा कहते हैं। ठीक है। क्या है यह? एक संबंधमात्र। कल आप कहें, राजा नहीं है, और मैं राजा नहीं हूँ। भाग्य की इस बात का निर्णय कौन करता है? अपना पाप-पुण्य। और कुछ नहीं। आज जो चित्तप्रसाद हैं, वह सब लोग तो नहीं हैं? क्यों? यह भाग्य है। अब कोई कहे कि चित्तप्रसाद से सब छीन लो, या चित्तप्रसाद जी को इस अवस्था में रहने का अधिकार नहीं है, तो उसे आप पागलपन ही कह सकेंगे। लेकिन……

रामनाथ के स्वर में एक तेज़ी आई। वे कहते गये: जाति बंधन वास्तव में सामाजिक नहीं हैं, उसका आधार मन है। इस मन में एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जड़ता है, पाशविकता है, इसे नष्ट कर देना ही हमारा कर्तव्य है। आप ईसाई हो जाइये, मुसलमान हो जाइये; परंतु यदि आप कुछ गाँव वालों की मूर्खता के कारण अपना वह धर्म छोड़ दें जो बीस-बीस पीढ़ी से होता चला आ रहा है, तो क्या उसे बुद्धिमानी कहा जा सकता है? आखिर क्या बात थी जो आपके पूर्वज इतना दुख पाकर भी इसी में प्रसन्न बने रहे? क्योंकि वे जानते थे कि जो कुछ वे देख रहे हैं, यह माया है। यह अंतिम सत्य नहीं है। अंतिम सत्य वह है जब मनुष्य रागद्वेष से परे होकर सांसारिक झंझटों को छोड़ देता है। उसी के लिये तैयार रहो, जब मनुष्य परमात्मा बन जाता है, लेकिन हम दूसरों से नहीं, अपने आपसे डरते हैं। हमें अपने आप पर अविश्वास है, क्यों कि हम अपने धर्म को भूल गये हैं। जैसे बड़े स्टेशन की ज़मीन पर बहुत सी पटरियाँ बिछी रहती हैं, और रेल का डिब्बा सिर्फ दो पटरियों पर चलता है उसी तरह हमारा समाज भी है। एक इंजन एक वक्त सब पटरियों पर नहीं घूम सकता। एक बैल की जोड़ी एक वक्त में एक तरफ से जुताई कर सकती है। उसे सीधा ही चलना पड़ता है। लेकिन अगर वह अपना काम छोड़ कर चहलकदमी की तरह इधर-उधर चले, दोनों बैल एक साथ न चलें तो काम कैसे चल सकता है?

आते हैं, जीवन में वह भी मौके आते हैं। तब बैलों को एक ही बार एक ही वक्त बार-बार घूमना पड़ता है, जब वह कोल्हू चलाते हैं। पर उसका भी एक नियम है। आज हमने अपने प्राचीन नियमों को भुला दिया है। ब्राह्मण में व्रत नहीं है, तप, और ब्रह्मचर्य्य नहीं है। क्षत्रिय में पौरुष नहीं है। नहीं है तभी शूद्र में सेवाभाव। पर क्या यह ठीक है?

रामनाथ ने गंभीर घोष किया: यह हिंदू धर्म पर कुठाराघात है। मैं आर्य्यसमाजी नहीं हूँ। मैं संत महात्मा नहीं हूँ पर ब्राह्मण हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri Sarayu Trust
मैं जानता हूँ मेरा धर्म क्या है। आप अपना धर्म यदि बदल कर दूसरे धर्म में जा सकते हैं तो आप में साहस नहीं है। आप में नैतिकता की कमी है। किसलिये आप फिर ब्राह्मण को बुरा कहते हैं। धर्म अपनी चीज़ है। कोई चाहने मात्र से हिन्दू नहीं हो सकता। यदि आप अपना धर्म पालते हैं तो उससे मुझे कुछ नहीं मिलता। यदि मैं अपना धर्म छोड़ता हूँ तो आपके नरक का रास्ता नहीं खोलता। अपना बन कर रहना, दूसरे को जीतना कठिन है। छोड़ कर चल देना बहुत सरल है। मेरे लड़के मुझे छोड़ कर चले गये—रामनाथ का सिर उठ गया, वक्ष तन गया, उस वृद्ध को इस चेष्टा में देखकर लोगों की आँखों में दया भरी सहानुभूति आ गई। लेकिन मुझे याद रहता है। भगवान कृष्ण ने कहा है : अपना बुरा धर्म छोड़ कर भी दूसरों के धर्म में मत जाओ—तभी आशा है—

स्वधर्मो निधनं श्रेयः

और उसी के साथ यह भी तो कहा है : सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणंव्रज। सब धर्मों को छोड़ कर एक मेरी शरण में आओ.....

रामनाथ के आदमियों ने पुकारा। 'राजा साहब की जय, और उपस्थित जाटव—समुदाय जोश में चिल्ला उठा : राजा साहब की जय।

उस जय-निनाद को महालक्ष्मी ने भी भीतर सुना। उसकी आँखें उधर ही उठ गईं। ज़नानो ड्योढ़ी के ऊपर चढ़ कर वह देखती रही। रघुवीर सतनामी ने उठ कर कहा : अँगरेज़ तब आये जब यहाँ के राजाओं ने यहाँ की प्रजा पर ध्यान देना छोड़ दिया, लेकिन आज हमारे राजासाहब ने जो कृपा की है, उसके लिए हम श्रीमान् को धन्यवाद देते हैं। हमारा कोई ऐसा द्वेष नहीं होना चाहिये जो आपस में ही नहीं सुलझ जाये। यह पुलिस दंगा होते वक्त कहाँ थी ? भाग्य ही था कि किसी की जान नहीं गई। वर्ना उसका जवाबदेह कौन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

था। हिंसा में तो दोनों ही पागल हो जाते हैं। और जिस सरकार को हम अन्यायी कहते हैं, उससे हम न्याय की आशा करें ? यह असंभव है। यह पुलिस ? यह रिश्वत खाती है। यह भला हमारा क्या भला करेगी। इसके न्याय पर विश्वास करके हम अँगरेज़ों के न्याय में विश्वास करते हैं और इस प्रकार उनकी सहायता करते हैं। क्या यह उचित है ?

जाटव भाई एक स्वर से कह उठे : नहीं, यह गलत है। उनके दिमाग़ में पारसाल भर पुलिस द्वारा किये गये अत्याचार अभी सजीव थे। और फिर जब रघुवीर सतनामी कह रहा है तब तो ठीक ही होगा। वह व्यक्ति जिसकी ज़मीन इसी रामनाथ ने हड़प ली, वेद-खल करा ली ? और रघुवीर सतनामी को अँग्रेज़ नाम से चिढ़ थी। कोई हो अँगरेज़ और उसकी सरकार न हो। वह निःस्वार्थी आदमी था। बीच में अपना फायदा देखना उसे अप्रिय था। भक्तों का सात्विक जीवन ही उसने अपना आदर्श बना रखा था। और तनिक रामनाथ को तो देखो। जब धर्म का मामला आया तो फ़ौरन वैरभाव छोड़ कर सबको घर ही बुलवा लिया और चित्तप्रसाद को तो कुर्सी पर ही बिठाया। यह तो आज तक नहीं हुआ।

जलसा खत्म हो गया। सब लोगों के चेहरों पर लौटते समय तसल्ली थी। पर जब दूसरे दिन बाकी गाँव वालों ने सुना तो सौ तरह की बातें कह डालीं। पंडित नीलकण्ठ अवस्थी को विश्वास नहीं हुआ। पर मुन्नू दुबे कहते फिर रहे थे : नया रंग देखा। ऐसा जाल फैलाया कि काँग्रेस वाले भी चक्कर खा गये। इस सबका एक परिणाम यह हुआ कि पादरी साहब गाँव से निराश होकर लौट गये। जन साधारण में रामनाथ तिवारी के प्रति एक श्रद्धा हुई। उन्हें उनकी बुद्धिमता के प्रति झुकना पड़ा। मुन्ने दुबे चुप हो गये। पर जो गिरफ्त में आने वाले थे वे फिर नीलकण्ठ के पास गये। नीलकण्ठ ने डरते-डरते कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'करते समय नहीं सोचा था कि फल क्या होगा ?'

एक व्यक्ति ने मसखरी की : 'पंडितजी'! उस वखत तो बस कर्म की लगन थी, फल की आशा नहीं थी।' यह व्यक्ति न तीन में था, न तेरह में। पंडितजी भुन गये। उनका उपदेश बुरे मौके के लिए याद कर लिया गया था।

'तो पंडितजी' ठाकुर भूदेवसिंह ने धमकी दी—'आप हमें मँझधार में छोड़ दें, पर याद रखना, यह आग अब दबने की नहीं है। चमारों का हौसला बढ़ गया है। कल आपके मुँह में गाय की हड्डी ठूँस देंगे।'

'चुप नीच', अवस्थी ने गरज कर कहा: 'ब्राह्मण का अपमान करता है ? चला जा। मेरी आँखों के सामने से दूर हो जा।'

भूदेवसिंह कुछ देर खड़ा रहा। फिर चला गया। वह जानता था पंडित पर कड़ी चोट हो गई है। अब यह अवश्य रामनाथ तिवारी के पास जायेगा। और सचमुच वह तब तक राह के बड़े पेड़ के पीछे छिपा बैठा रहा जब तक उसने नीलकण्ठ को उधर जाते हुए नहीं देख लिया। अवस्थी जी चलते तो आगे थे, पर मन पीछे ठेल रहा था, जैसे कर्त्तव्य-निष्ठ माँझी नाव को खेकर अपनी राह ले जाना चाहता हो, पर लहरों की चपेट सारा संतुलन नष्ट किये दे रही थी। तिवारी जी के स्वभाव से वे परिचित थे। उनका साहस अब धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। पर पाँव नहीं रुके। इत्तला सुनकर तिवारीजी ने उन्हें बुला लिया। वे तख्त पर लेटे थे। अवस्थी पैरों की ओर बैठ गये। तिवारीजी ने स्वयं कहा : चमारों का हुल्लड़ थम गया अवस्थी जी ?

'जी सरकार' अवस्थी कह उठे—'सो तो थम गया, पर जो है सो, दरोगा का नहीं थमा।'

'वह क्या चीज है ? एक बीस तीस रुपये पहुँचवा दीजिये ?'

'लेकिन क्या चमार फिर किसी को बदेंगे ?'

तिवारी जी ने कहा : लीजिए पढ़िये। आज ही आया है। अभी कुछ ही देर हुई। पढ़िये। 'साप्ताहिक आलाप' था। अवस्थीजी ने पढ़ा:

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ व्यक्तिगत झगड़ों के कारण बात बढ़ जाने से जाटव भाइयों में अन्य गाँव वालों से झगड़ा हुआ जो जाटव विवाह के समय फूट निकला। सरकार ने पादरी भेजकर अछूतों को हिन्दुओं से छीन लेना चाहा। पर गाँव के ब्राह्मण ताल्लुकेदार राजा रामनाथ तिवारी आनरेरी मैजिस्ट्रेट के समझाने बुझाने से जाटवों ने स्वधर्म के अहितों को विदेशी धर्म के हितों से अधिक समझा। महात्मा गांधी के उपदेशों का यह सफल प्रभाव हम प्रत्येक ग्राम में चाहते हैं। राजा साहब तथा अन्य ग्रामीण भाई हमारी बधाई के पात्र हैं।

पढ़ कर रख दिया। तिवारी जी ने कहा: और भी कुछ चाहते हैं?

अवस्थीजी क्षण भर सोचते रहे। फिर कहा: पर चमार उठते गए ही।

'उठ तो सारा हिन्तुस्तान गया अवस्थी जी। कहीं भी अमन दिखाई देता है?'

'नहीं। लगता है जैसे सबका दिमाग फिर गया है।'

'इस खराबी को निकालने के लिए सभी उपायों की आवश्यकता है'।

अवस्थी जी नहीं समझे। तिवारीजी कहने लगे: इस समय झगड़ा बढ़ाने का अर्थ था, गाँव में कुछ चमार ईसाई हो जाते। फिर सरकार उनकी रक्षा करती। फिर वही चमार जो कल तक चमार थे, ईसाई होकर गाँव के कूओं से पानी भरते, या फिर एक अलग कूआ बनवाते। गाँव में एक गिरजा भी बनता। और फिर ईसाई आ घुसते। गाँव में बगावत हो जाती। अवस्थीजी सुन सुन कर चौंक रहे थे। यह तो वे सोच ही नहीं सके। तिवारीजी कह रहे थे: चमार, चमार ही रहेगा। लेकिन उसको चमार ही रखने के लिए उस आग को बुझाना होगा जो समाज की व्यवस्था मिटा रही है, जला रही है। फूँक मारने से वह नहीं बुझ सकती, उस पर धूल डालना जरूरी था।

अवस्थीजी लौट आए। दरोगा को फीस मिल गई। किन्तु गाँव के भीतर उठी हलचल समाप्त हो गई। चमारों का क्रोध मिट गया। दूसरों को भी दंड नहीं मिला। चित्त प्रसाद और रघुबीर सतनामी भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसन्न थे, पर गोबरधन प्रसन्न नहीं था। उसका घाव अभी भरा नहीं था। जब चित्तप्रसाद की लड़की का ब्याह चमारों के ढंग से हुआ वह वहाँ नहीं गया। वह 'आलाप' पढ़ता था और मन ही मन उसे विक्षोभ हो रहा था; किन्तु लाचार था। रामनाथ तिवारी उन्नाव लौट गए थे।

दूसरा परिच्छेद

१

कानपुर के हिन्दू-मुस्लिम दंगों की बाढ़ थम चुकी थी। अब दूर से देखने पर लगता था कोई विशेष बात नहीं थी। व्यर्थ का झगड़ा था। कहीं कोई आदमी किसी से मूलगंज के चौराहे पर मिठाई के ऊपर लड़ गया। वहीं हिन्दू-मुस्लिम नाम पड़ा और फौज दो दिन चुप रही। खूब लूट होती रही। बाद में एक सेठ ने रातोंरात पुलिस और फौज से बढ़ावा दिए गए मुसलमानों को पिटवाने गाँव से आदमी बुलवाए। गदर के दिनों का पवित्र कानपुर इस प्रकार आपस की खून-खराबी से गन्दा हो गया। करांची कांग्रेस का अधिवेशन समाप्त हो गया था और वीर भगतसिंह को भी फाँसी लग चुकी थी। लोगों में एक अजीब प्रकार का विक्षोभ था। शहर के लोग यह समझने लगे थे कि हम हार गए हैं। गांधी-इर्विन समझौते के प्रति उनमें एक मूक विरोध की भावना थी। जब सारा समुद्र उमड़ने के लिए हिलने लगा था, गाँधी जी ने संग्राम रोक दिया था। इससे एक गतिरोध की भावना उमड़ आई थी। मोप्ला दंगों को अँगरेजों ने चतुराई से अपने विरोध से हिन्दुओं के विरोध में बदल दिया था और जब वह सम्वाद फैला तो आर्य्यसमाज उस पर हा हा कार करने लगा और शुद्धि आन्दोलन के परिणाम स्वरूप भीषण रक्त-पात हुआ। अँगरेजों ने दोनों को हवा दी, और इस प्रकार जो गोरी-फौजें सड़कों पर आते डरती थीं, जो सतारा और शोलापुर में थर्रा गई थी, जो बम्बई और मद्रास में सिवाय बन्दूक के कोई बात नहीं करती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थ, इस समय सब उसके आगमन को ही अच्छा समझने लगे। गणेश-शंकर विद्यार्थी ने दंगों में प्राण दे दिए। आग थम गई। लोगों ने शर्म से सिर झुकाए, पर छुट्टे-मुट्टे नेताओं को डोरी बाँधकर अँगरेजों ने फिर मंच पर खड़ा कर दिया। अब राजनीति फिर कुछ दिन के लिए बड़े लोगों की हो गई। समाज सुधार की इच्छा फिर बलवती हो उठी और कानपुर शहर में हलचल मच उठी। लोगों ने सुना कि एक थ्येटर कम्पनी आई हुई है। उन दिनों सिनेमा मूक थे। लोगों की पुरानी आदत छूटी नहीं थी। वे लोग जो थ्येटरों के शौकीन थे अब भी थ्येटरों को ही अच्छा समझते थे और पैसे वाले लोगों को तो और भी ज्यादा दिलचस्पी थी क्योंकि थ्येटर में जीती-जागती स्त्रियाँ काम करती थीं।

प्रारंभ में ही इस कम्पनी ने चारों ओर दबदबा फैला दिया। बेहतरीन सामाजिक नाटक था, लेकिन इतिहास, राजनीति, धर्म, सब पर प्रकाश पड़ता था। कहानी कुछ इस प्रकार थी कि उसमें सभी प्राचीन, और नवीन बातों का समावेश था। स्त्री का पतिव्रत, पुत्र का समाज सेवक और देश सेवक होना, उसके साथ ही पितृभक्त होना, और स्वामी सेवक के अच्छे संबंध। अछूतोद्धार, शुद्धि आंदोलन सब ही की झलक थी। ऐसा नाटक कि अलफ्रेड और पारसी थियेटर के पुराने आदर्शों को भी मात कर गया और लोगों को उससे प्रेरणा मिली। वह भक्ति, वह उद्बोधन, और गा गाकर जब स्त्री पुरुष का वार्तालाप होता, तब वाह वाही होती। और सबसे बड़े आकर्षण तो दो और थे। वह लंबी नुकीली टोपी वाला विदूषक जो झुक झुककर सलाम करता था, और फिर वे नर्तकियाँ जिनके नाच पर पैसों की बौछारें होतीं। इस थ्येटर के साथ एक ज्योतिषी जी भी थे जो त्रिकाल का लेखा-जोखा बताते थे। उनका कहना था कि उनके पास भृगुसंहिता थी। कानपुर के पंडित बद्रीनाथ शास्त्री स्वयं यह दावा करके प्रसिद्ध थे। परंतु नये पंडित का कथन था, असल उनके पास है, नकल औरों के पास है। बद्रीनाथ शास्त्री इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात से सख़्त ख़फ़ा थे। पर कानपुर हो या दिल्ली, 'घर का जोगी जोगड़ा और आन गाँव का सिद्ध' वाली कहावत सब पर हो लागू होती है। पंडित बद्रीनाथ शास्त्री चिल्लाते ही रह गये। ज्योतिषी जी का डेरा मामूली नहीं था। उनके डेरे में दो कमरे थे। पीछे वाले में मनुष्य के पास पुण्य के अनुसार नरक और स्वर्ग के चित्र दिखाये जाते थे। उसका बड़ा भारी प्रभाव था।

कानपुर की यह ख़बर उन्नाव भी पहुँची। अवधेश ने नौकरों से सुना और जाकर महालक्ष्मी से कहा : अम्मा! ठेटर देखेंगे।

महालक्ष्मी ने सुना तो हँसी। कहा : तू क्या समझेगा?

पर बालक ज़िद पकड़ गया। पंडित रामनाथ तिवारी ने सुना तो वे भी हँसे। कहा : जैसा इसका बाप हठीला था, वैसा ही निकला।

एक सरकारकार बैठा था। गाँव से कुछ कागज़ात लेकर आया था। बोल उठा : सरकार यह तो खून की बात है। बड़े आदमी की उम्र का क्या? जिस वक्त जो मुँह से निकल गया वह होकर रहना चाहिये। और जो नहीं हुआ तो बाकी औरों से फ़र्क़ ही क्या रहा?

रामनाथ के मन को संतोष हुआ। बहुत दिनों से जीवन में कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ था। उन्होंने सोचा इससे महालक्ष्मी का मन भी बहलेगा उसके जीवन की वेदना को वे जानते थे और आज कल उस पर बहुत स्नेह रखते थे। राजेश्वरी पति के साथ अहंकार करके चली गई। पर महालक्ष्मी ने पति से भी बढ़ कर पतिगृह को समझा। बुलवा कर कहा : तो अवधेश थ्येटर देखना चाहता है?

अवधेश आकर बाबा के पैरों में लिपट गया। वे उसे गोद में लेकर कुर्सी पर बैठ गये। महालक्ष्मी ने सुना तो मन ही मन घबराई। गहने तो सब उमानाथ को दे दिये। अभी तक तो जरूरत नहीं पड़ी। पर अब अगर नहीं पहनेंगे तो रामनाथ जी को मालूम हो जाएगा। बड़ी आफ़त आयेगी। जो पहन रखे हैं, बस वही शेष हैं। उसने दरवाज़े के पीछे से कहा : आप दिखा लाइए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरे तो क्या यह तुम्हारे बिना चला जायेगा ? तुम्हारा चलना भी तो ज़रुरी है ?

'मैं क्या करूँगी ?' उसने धीमे से कहा।

रामनाथ जैसे समझ गये। कहा : हाँ, हाँ वह तो ठीक है। तुम किसी चीज़ में भी दिलचस्पी नहीं लेती। जरा तुम्हारा भी मन बहल जायेगा और क्या ? त्योहार, खेल, कूद सब बच्चों को ही चीज़ें हैं।

वे प्रसन्न लगते थे। उमा चला गया। पति से अलग रहने वाली स्त्री में भोग-विलास की लालसा से यह दूरी उन्हें अत्यंत प्रिय थी। यह कुल की मर्य्यादा के अनुरूप था। एक संबंध था उसी के पीछे जीवन बिता दिया। वह भारतीय जीवन का प्राचीन आदर्श। महालक्ष्मी ऐसे रहती है जैसे बनाव सिंगार की अब कोई आवश्यकता ही नहीं। सादे कपड़े, सादा रहन-सहन। सारी कोठी और रियासत में इससे सब प्रभावित हैं। महालक्ष्मी से सब ही प्रसन्न रहते। ससुर के इस प्रकार के समझाने पर वह भी राजी हो गई। वह सादा ही जा सकेगी। जो पहने है वही काफ़ी है, क्योंकि स्वागत है। उसके लिये यह आवश्यक है। उसके अर्थ वैधव्य की यह वेदना सब ओर व्याप्त थी। घर में सब कुछ था, पुत्र था, पर जो देखता, वही कहता, बेचारी को क्या सुख मिला। पर महालक्ष्मी की संजीदगी ने उसे दुख की एक करुणा से ढँक दिया था। उसने स्वीकार कर लिया, पर पूछा : फिर चाचाजी के पास कौन रहेगा?

रामनाथ कुछ देर तक सोचते रहे। फिर कहा : कोई नहीं। वह भी हमारे ही साथ चलेगा। फिर सिर उठाकर कहा : तीसरे पहर चलेंगे और रात को ही लौट आयेंगे।

'रात तो बहुत बीत जायेगी। उस वक्त लौटना ठीक रहेगा ?'

'क्यों नहीं ?' फिर जैसे समझ गये। कहा : अच्छी बात है तो कुछ दिन रह लेंगे। दो तीन दिन। हाँ जरा जगह बदल जायेगी। बहुत दिन से कहीं आना-जाना भी नहीं हुआ। कानपुर की सनातन धर्म सभा मुझे बहुत रोज से बुला भी रही है। मैं वहाँ तैयारी करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ठहरियेगा कहाँ ?'

रामनाथ समझ गये। पूछती है दयानाथ से सम्बन्ध रखना है या नहीं ? दृढ़ स्वर में कहा : एक बँगला किराये पर ले लेंगे कोई। महीने भर का किराया पेशगी दिलवा कर आदमी सब तय कर रखने को भेज देता हूँ। उन्होंने अवधेश को गोदी से उतार दिया और उठ खड़े हुये और महालक्ष्मी ने देखा और वह चुपचाप भीतर चली गई।

९

थियेटर समाप्त हो चुका था। कानपुर के विशाल फूलबाग में थियेटर फैला हुआ था। अनेक खेमे तम्बू पड़े हुये थे। उन्हीं में से एक में सजावट अधिक थी। कालीन बिछा हुआ था। लैम्प की रोशनी में एक स्त्री और पुरुष अपने अपने पलंग पर पड़े हुए बातें करते जाते थे।

'काम तो जम गया।'

'जमेगा क्यों नहीं', स्त्री ने कहा।

'पर तुम्हें इतनी आशा थी ?'

'क्यों नहीं ? मैं जानती थी तुम बहुत चतुर आदमी हो। मैंने कई आदमियों को देखा था। अगर तुम्हें यही धुन नहीं होती तो हीरा होते।'

'कौन सी धुन ?'

'यही शराब की।'

पुरुष हँसा। उसने कहा : तुम जो पीती हो सो ?

'तुम्हारा मन रखने को। अगर तुम्हें इसमें सुख मिलता है तो मैं वही क्यों न करूँ ? लोग कहते हैं स्त्री का धर्म यह नहीं है। मैं न धर्म जानती हूँ न शास्त्र। तुम्हारी तरह पढ़ी-लिखी नहीं हूँ। पर एक बात है। तुम मुझे अपनी पत्नी नहीं मानते, पर मैं तुम्हें अपना पति ही मानती हूँ। विश्वास नहीं करोगे मैं इसको अपने मन में समझती हूँ।

'क्यों ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्योंकि तुम सदा ही मुझे एक ऐसी स्त्री समझते रहे हो जिस पर समाज में कोई विश्वास नहीं करता। करने से डरता है।'

'और मुझ जैसे पुरुष पर विश्वास किया जा सकता है?'

'क्यों नहीं? तुम पुरुष हो?'

'यही मैं भी कहता था। लेकिन तुम हमेशा इसे अस्वीकार करती रहीं। मेरा सिद्धान्त तो यह नहीं है। कुछ और ही है।'

'कहो न?'

'मैं स्त्री और पुरुष के सिद्धान्तों को फ्रायड के अनुसार मानता हूँ। लेकिन उसने कहा है कि हम समाज के बन्धनों के कारण बहुत सी बातों को डर के मारे भीतर ही दाब जाते हैं। पर मैं सोचता हूँ मैं अपनी भीतरी जिन्दगी में ऐसा क्यों करूँ? माना कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करती पर मैं कभी उसका भूखा नहीं हूँ। मेरा काम है समाज से ज्यादा से ज्यादा लेना। इसके लिये जो भी कुछ करना पड़े मैं उसके लिये तैयार हूँ। भाड़ में जाये देश, राष्ट्र, और आजादी, मजदूर और किसान, मुझे किसी से कोई मतलब नहीं। आदमी में सच्चा प्रेम नहीं होता। मेरे बाप ने मुझे अपनी इज्जत और जायदाद के पीछे निकाल दिया। क्या कहूँ इसे? और मेरी बीवी ने मुझे चलते वक्त गहने दिये। तुम क्या कहोगी? शायद लोग कहेंगे कि वह मुझे प्यार करती है। झूठ है। वह समाज की रूढ़ियों को प्यार करती है, उनसे डरती है। मुझसे तुम प्रेम करती हो। प्रेम क्या है? मनुष्य सबसे अधिक क्या चाहता है? सुख। वह सुख शारीरिक है। जो शारीरिक बन्धन बाँधता है और हवाई उड़ानें भरता है वह धोखेबाज है। तभी मैं कहता हूँ मार्क्स, लेनिन, गांधी, सब झूठे हैं। तुम मुझे सब कुछ अर्पित करती हो, मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ। यही प्रेम है। इसके बाद जो है वह छल है। अपने को बहलाये रखने की कोशिश है, मैं उस सब को झूठ समझता हूँ। रोटी से बड़ा सत्य स्त्री-पुरुष सम्बन्ध है। सारा संसार अपने को ढोंग में भुलाये रखना चाहता है। सच है दुनिया बदलेगी, पर तब तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं क्यों दुख भोगूँ। यदि मैं नेता होता तो नाम के लिये सब कुछ कर सकता था। पर नहीं हूँ। तुम्हारे साथ जीवन बिताने में मुझे जो सुख है वह मैं बयान नहीं कर सकता। जानती हो ?

'तुम यह सब सिर्फ कहते हो, विश्वास नहीं करते, यह मैं जानती हूँ।'

'क्यों नहीं करूँगा। जब दो दिल मिल जाते हैं, उसे ही मैं विवाह कहता हूँ। जिसमें सुख मिले वही करना चाहिये। बहुत से लोग थोथे और कोरे आदर्शवाद के पीछे अपने सुखों का बलिदान दिया करते हैं, मुझे वह सब बेवकूफी मालूम देती है। वे मानापमान का पचड़ा ले बैठते हैं। मैं तो एक बात समझता हूँ और काफी सोच समझकर इस नतीजे पर हूँ।'

'क्या ?'

'यही कि दुनिया के पचानवे फी सदी आदमी बेवकूफ हैं। जो गरीब हैं वे तो हैं ही। जो अमीर हैं वे और भी ज्यादा बेवकूफ हैं, क्योंकि उनको सिर्फ पैसा कमाना आता है। इस पैसा कमाने की भी दो तरकीब हैं। या तो हराम जोरी से बाप दादा की कमाई खाओ, या फिर कमीनेपन को व्यापार कह कर इस्तेमाल करो। इसके बीच में बहुत से लोग हैं जो झूँठ कह कर हो खाते पीते हैं जैसे सिनेमा, थ्येटर, अख-बार, पंडे, पुरोहित, महंत, बीमा कम्पनी, लाटरी और जाने क्या क्या है ? लेकिन औरतों के साथ यह नहीं है। जानती हो क्या है ?

'बताओ,' स्त्री ने पूछा।

स्त्री समाज की किसी भी परिस्थिति में पुरुष को शारीरिक सुख देने के लिये है। जानती हो दुनिया में तीन आदमियों ने हलचल मचा दी है। तीन नहीं चार। पहला डारविन था। उसने कहा कि दुनिया में आदमी पहले नहीं था। वैसे तो अब डिब्राईस वगहरा ने उसे बहुत आगे बढ़ा दिया है, उसका कहना असल में यह है कि बन्दर और आदमी के पूर्वज एक ही थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्री को जैसे यह झटके सा लगा। वह चौंक उठी। उसने कहा : और तुम उसे मानते हो?

'मेरे मानने न मानने से होता हो क्या है? जो सचाई है वह तो मानी ही जायेगी।' वह हँसा।

'अच्छा फिर?' स्त्री ने कौतूहल से पूछा।

'दूसरा' उस पुरुष ने कहा : मार्क्स। यह आदमी बहुत काबिल था। इसने बताया कि दुनिया में सारी गड़बड़ी इसलिये है कि कुछ ही लोग बाकी लोगों को दाब कर रखते हैं। पहले कुछ मालिक और बहुत गुलाम होते थे। फिर कुछ जागीरदार राजा हुये और उनके साथ बहुत से किसान हुए। अब दुनिया में मशीनें बन गई हैं। जो काम पहले कठिन थे वे अब आसान हो गये हैं। लेकिन मशीनों पर भी जमीनों की भाँति कुछ ही लोगों का कब्जा है। इसके नतीजे में हम समाज में मजदूरों की हालत देखते हैं। अब जैसा कि समाज का नियम है और जो होकर रहेगा जल्दी या देर करके मजदूर ही जीतेगा और समाज तब ठीक हो जायेगा।

'कौन, ये मजदूर राज करेंगे?' स्त्री ने अविश्वास से पूछा।

'रूस में कर ही रहे हैं। चीनमें भी लड़ रहे हैं। यही लोग कम्युनिस्ट कहलाते हैं। मैं भी पहले अपने को यही कहता था। पर वह रास्ता बहुत कठिन है। वहाँ स्त्रियों को वेश्या नहीं बनना पड़ता। वे आजाद होती हैं।'

स्त्री अविश्वास से हँसी। कहा: फिर तुमने मजाक करना शुरू किया?

'नहीं मैं तुमसे सच कहता हूँ। मैं कभी कभी सोचता हूँ मैं किधर खिंचा जा रहा हूँ। क्या मैं दुनिया में किसी का भला कर सका हूँ?'

'दुनिया में अपना भला सब चाहते हैं। फिर अगर तुम भी ऐसा ही करो तो इसमें क्या दोष। यह एक गंदा जाल है। इसमें से कोई भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं निकल सकता। जो इसकी कोशिश करता है, वह बेवकूफ है, या पागल है।

पुरुष कुछ देर चुप रहा। फिर उसने धीरे-धीरे कहा : पहले मैं यह सोचता था कि मैं कहीं शुरू नहीं हुआ। कहीं खत्म नहीं हो सकूँगा। वह मेरा मैं नहीं था, सारे मनुष्य समाज का मैं था। पर वह मेरे 'मैं' को सुखी नहीं कर सका तभी वह रास्ता मैंने छोड़ दिया, अब मैं अपने छोटे, घिरे, मैं की ओर लौट आया हूँ।

स्त्री नहीं समझी। उसने कहा : अभी तो दो और हैं न?

'हाँ, तीसरा आइन्स्टीन है। उसने बताया कि हमारी दुनिया बहुत छोटी है, उसके चारों ओर जो शून्य है वह भी सीमित है, और जैसे लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई से वस्तु के तीन प्रकार ज्ञात होते हैं, चौथा समय भी है.....

स्त्री ने ऊब कर कहा : और चौथा कौन था?

'चौथा' पुरुष ने तकिये के सहारे बैठकर कहा : फ्रायड था।

'उसने क्या कहा?'

'उसने बताया कि स्त्री और पुरुष में जो भेद है वे ही उसके सारे जीवन पर छाये हुये हैं। आदमी के दो दिमाग हैं। एक वह जो जागते वक्त काम करता है, दूसरा जो सोते में सुपने देखता है।

स्त्री ने उत्सुकता से पूछा : फिर?

'फिर?' पुरुष हँसा—'उसने कहा—कहाँ तक बताऊँ? कोई अंत नहीं है। पर मुझे मार्क्स नहीं, अब फ्रायड ही ठीक लगता है।

दोनों चुप हो गये। स्त्री कहने लगी : यह सच है। दुनियामें धोखा देना कोई बुरी बात नहीं है, और वह भी पैसेवालों को। यह बड़े कमीने होते हैं। इनके दिल नहीं होता।

'क्यों?'

'अब वह बम्बई में मिला था, बैरिस्टर...क्या नाम था उसका?'

'कौन वह हरचन्द मन्सुखानी?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हाँ, हाँ, वही। विलायत का लौटा हुआ था। अगर मैं उसे उल्लू न बनाती तो यह पन्द्रह हजार रुपया हाथ आता ?'

पुरुष हँसा। कहा : कभी नहीं।

'और उसे उल्लू बनाने में कोई हर्ज था ?'

'कतई नहीं। वह और पैसे कैसे इकट्ठे करता है ?'

'इसी तरह।'

दोनों हँसे

'बम्बई भी' स्त्री ने कहा, 'बड़ा अजीब शहर है ? कलकत्ता भी है है तो उससे बड़ा, पर बम्बई में कुछ और ही बात है ? है न ?'

'हाँ, वहाँ चमक ज्यादा है।'

"मैं अक्सर सोचती हूँ। एक तरफ यह ऐश, दूसरी तरफ यह गरीबी ! उफ ! लोग रात को सड़कों पर कैसे पड़े रहते थे। उन्हें भी कोई इन्सान कह सकता है ?'

'अभी तुमने गाँव नहीं देखे। जरा एक बार वहाँ भी जाती तो देखतीं हिन्दुस्तान असल में किस कदर गरीब और भूखा है।'

'तो चलो किसी गाँव में ले चलो न ?'

'फिर थ्येटर का क्या होगा ?'

'इसे भी ले चलो।'

'वहाँ चाय भी न मिलेगी खानम ? हाथों के तोते उड़ जायेंगे। यह शहर ही ठीक है।'

वह हँसा। इसी समय एक पगवाय सुनाई दी।

स्त्री ने धीमे से पूछा : कौन है ? कौन जा रहा है ?'

पुरुष हँस पड़ा। कहा : देखती नहीं ? उधर किसके तम्बू हैं, शहर के नौजवान और बूढ़े, धार्मिक सभी तरह के लोग इसी अंधेरे में छिप कर आते हैं। हमारी डान्सर्स रहती है न ? लोग उन्हें देखें और न आयें। मुँह से कहते रहेंगे—यह तवायफें समाज के लिये हानिकारक हैं, पर हर कोई धार्मिक ठेकेदार आता जरूर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी हँसी में एक तीखा व्यंग्य था। स्त्री कहने लगी : अभी तक तुम्हें किसी ने पहचाना तो नहीं ?

पहचानने को है ही कौन ? कानपुर में बड़े भैया हैं, वे इधर आते ही नहीं। कुछ थोड़े से लोग और हैं। पर वे समझते होंगे मैं विलायत में हूँ। कल सबसे चन्दा मांगने चलेंगे। देखें कौन कौन पहचानता है।

'तुम डरते तो नहीं ?'

'क्यों मैं क्यों डरने लगा।'

'अगर किसी ने पहचान भी लिया तो क्या कर लेगा ?'

'कुछ नहीं। मैं कह दूँगा मैं क्या जानू आप किस उमानाथ को पूछते हैं ? मैं तो शीलराज हूँ। समाज सुधारने निकला हूँ।'

'नाटक भी तुमने कमाल का लिखा है। जवान लोग तो खुश होते ही हैं, बूढ़े भी होते हैं।'

'जवान ऐंठते हैं कि इसमें सुधार है। बूढ़े कहते हैं कि इसमें व्यभिचार है, पर यह सब माया है। विदेश का असर है। हमें पुराने जमाने की तरफ लौटना है। एक पत्थर से दोनों चिड़ियाँ मर गईं। किस्सा असल में यह है कि ये बूढ़े अपनी पाप भरी दुनिया को इतना ज्यादा प्यार करते हैं कि उससे छूटना नहीं चाहते। उनकी राय में गरीबी नहीं रहनी चाहिये। पर गरीबी मिटाने का मतलब है अमीरी मिटाना। यह हो नहीं सकता क्योंकि पहले तो यह उनके लिये परमात्मा की बनाई तकदीर का खेल है, दूसरे अपना पैसा वे छोड़ नहीं सकते। मैं तो देखता हूँ, अब है ही कितनी, जो जैसी गुजर जाये, उसे गुजर जाने दो। जिन्हें बदला लेना होगा लेते रहेंगे। तब तक हम तो रहेंगे नहीं, हमारे बाद कुछ भी हुआ करे, अपनी बला से। मेरी तो एक राय है।'

'क्या ?'

'पैसा डट कर इकट्ठा कर लिया जाये।'

'फिर ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हम तुम फिर किसी पहाड़ पर कोठी खरीद कर बाकी जिन्दगी आराम से गुज़ार देंगे, ऐश से।'

स्त्री को बात अच्छी लगी। कहा : पैसा मिलना क्या आसान है?

'कोई मुश्किल नहीं। मेरी तरकीब पर चलना होगा।'

'क्या?'

'गीता के कुछ श्लोक रटने होंगे।'

'कौन मैं रटूँगी? मैं क्या पढ़ी लिखी हूँ?'

'बेवकूफ़ औरत? इतने गीता पर उपदेश देते हैं। इनमें से कोई कुछ जानता है?।

'नहीं जानते तो वैसेही?'

'बिलकुल वैसेही। काँग्रेस से हमदर्दी रखनी पड़ेगी।'

'क्यों? सरकार न पकड़ लेगी?'

'मजाल है। योग सीखना पड़ेगा।' वह ज़ोर से हँस उठा। स्त्री कुछ नहीं समझी। उसने कहा : क्या बक रहे हो?

'बक रहा हूँ, जानेमन, भक्ति और योग से अहिंसा का पाठ पढ़ाऊँगा। फिर देखना। पुजने लगूँगा। लोग कहेंगे, पहुँचा हुआ योगी है।'

'योगी? फिर शराब का क्या होगा? छोड़ दोगे?'

'अजी यह मज़ाक नहीं चलने का। शराब नहीं छूट सकती। हाँ एक बात और है। तुम्हारा नाम अच्छा रहेगा। नीरा नहीं जँचता। अब देखो राधा। वाह।'

दोनों हँसे। उस समय सब सो रहे थे। उमानाथ ने कहा : अब तो बहुत रात हो गई। सोना चाहिये।

तुम्हारी बात ख़त्म हो तब न?

दोनों चुप हो गये। रात गहरी हो चली। 'जागरण थियेटर कम्पनी' का पड़ाव अब सनसनाती हवा में ख़ामोश हो गया था। रात के तारे मचल रहे थे। कानपुर की दूर दूर तक फैली हुई बस्तियों पर ज़िंदगी की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुखी यातना काँप रही थी। इनमें वे थके हुए प्राणी सो रहे थे जिनकी चेतना को धीरे-धीरे सामाजिक विषमता खाये जा रही थी। उमानाथ ने सोचा : कहाँ था वह ? एक दिन इसी कानपुर में वह कम्युनिस्ट बन कर मज़दूर बस्तियों में ब्रह्मदत्त के साथ घूमा था। ब्रह्मदत्त ! ब्रह्मदत्त का नाम याद आते ही वह कांप उठा, जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी पर किसी ने बर्फ़ का टुकड़ा रख दिया। वह यह सब देखेगा तो क्या कहेगा ? उसने कहा था उमानाथ तुम राजनीति के योग्य नहीं हो। उस दिन उमानाथ क्रुद्ध हो उठा था। वह सच था, वह बिल्कुल सच था। उसमें बुरा मनाने की क्या बात थी ?

और फिर उमानाथ को एक एक कर घर वाली की याद आने लगी। जब वह सुबह सोकर उठा, तो उसका सिर भारी था। लेकिन नीरा में स्फूर्ति थी, सुबह की ताज़गी थी। उसने एक अंगड़ाई ली और उठ बैठी। उमानाथ ने कहा: सुबह का वक्त है। जरा मुझे अपना चेहरा देख लेने दो। कहीं किसी ज्यादा मनहूस का चेहरा देख लिया तो मुझे मालूम भी नहीं होगा कि किस सनीचर का दिया हुआ सुख है।

नीरा ने समझा और उत्तर दिया : आँख तभी खोलना, मैं अभी सामने शीशा लगाये देती हूँ।

३

'हर वस्तु स्वदेशी' आन्दोलन के परिणाम स्वरूप जो कम्पनी बनी दयानाथ उसके डायरेक्टरों में रखे गये। कम्पनी बहुत शीघ्र जम गई। शहर के मान्य लोग उसमें भाग ले रहे थे। शीलराज का निमंत्रण शहर के कलक्टर, और अफ़सरों के साथ सभी श्रेष्ठ जनों के पास जो घूमा तो दया को भी मिला। फूलबाग में पार्टी का प्रबंध किया गया था। यहाँ राधा स्वयं द्वार पर खड़ी होकर अतिथियों का स्वागत कर रही थी। इसके सिर के बाल प्राचीन काल की मुनि कन्याओं जैसे बँधे हुये थे। उसके सुवासित वस्त्रों के पहनने का ढंग भी पुराने युग का ही था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वयं शीलराज एक रेशमी चोगा, ऊपर से नीचे तक का, ओढ़े हुआ था उसको देख कर लगता था वह कोई अत्यन्त भव्य व्यक्ति है। आने वाले सज्जनों ने उसको देखा और लगा वे उसे देख चुके थे। उसके चार ओर नर्तकियाँ खड़ी थीं।

दयानाथ ने घुसते ही देखा तो जैसे उसके पाँव पकड़ गये। शीलराज उसको उस सकते की सी हालत में खड़ा देख कर उसके निकट आ गया। दयानाथ उसे घूर रहा था।

शीलराज ने मुस्करा कर कहा : कहिये। आपको क्या चिंता हुई। आसन ग्रहण करिये न।

दयानाथ की आँखों की पुतलियाँ कुछ चंचल हो गईं। वह जैसे समझ नहीं रहा था। उसने अटक कर कहा : क्षमा कीजिये, मैंने आपको कहीं देखा है!

'हो सकता है,' शीलराज ने कहा 'यही तो मैं भी कहता हूँ। संभव है इस जन्म में नहीं तो पूर्व जन्म में हम अवश्य मिले हों।'

दयानाथ को जैसे विश्वास नहीं हुआ। उसने फिर कहा : नहीं कहीं इसी दुनिया में···

जी हाँ आपने मुझे मदरास में अउयार में देखा होगा। मैं थियोसोफिकल सोसायटी में बहुत दिन रहा हूँ। बल्कि समझिये जन्म से ही पिता जी ने मुझे उधर ही रखना चाहा। लेकिन...लेकिन मुझे वहाँ दिव्य के दर्शन नहीं हुए···

'दिव्य के दर्शन?' दया ने विस्मय से पूछा।

'वह जहाँ प्रकाश चेतन हो जाता है। मिट जाता है समय का अज्ञान, सारे आत्मा के बन्धन टूट जाते हैं, जहाँ वह (Transendental stage) आजाती है, जहाँ.....

तभी राधा ने आवाज दी : शीलप्रभु!

'ओह, कौन?' शीलराज ने चौंककर पूछा। राधा समीप आगई।

'अरे आप तो विभोर होगये थे। मैं कहती हूँ कितनी बार उफ़!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कितनी बार !' फिर मुड़कर दयानाथ से कहा : आप शीलप्रभु की बात का बुरा न मानें। साधना करते रहने से इनका मन एकदम उसी ओर लग गया है। मैं तो नहीं समझती ये क्या हैं ? एक ओर देश की चिन्ता ने व्याकुल कर दिया है, दूसरी ओर वह कोई आकाश से बुलाता रहता है। क्या जाने ? आप समझे ?'

दयानाथ ने सिर हिलाया। समझा वह खाक नहीं। शीलराज आगे बढ़ गया था। दयानाथ ने कहा : क्षमा कीजिये। मैंने इन्हें कहीं देखा है।

'आपका शुभ नाम ?'

'दयानाथ।'

'बाबू दयानाथ !'

'जी मुझे दयानाथ ही कहते हैं। मैंने उनसे यही पूछा था।'

'उत्तर मिला ?'

'जी नहीं। वे तो कुछ अजीब बातें करने लगे।'

'आप उन्हें अजीब कहते हैं न ! शीलप्रभु को समझना क्या सरल है ? आप क्या करते हैं ?'

'मैं'

'जी हाँ।'

'बकील हूँ।'

'क्षमा कीजिये, आप शीलप्रभु को नहीं समझ सकते। और उस ने कहा : आप अभी तक नहीं बैठे ? बैठिये न !

'इनका नाम उमानाथ है ?' दयानाथ ने पूछा।

'उमानाथ !' राधा ने चौंक कर पूछा: किस जन्म में ?

दयानाथ चुप होगया। दिमाग में तरह तरह की बातें आने लगीं। वह जाकर बैठ गया। शायद ? शायद यह उससे मिलती-जुलती सूरत का कोई आदमी हो। ऐसा हो जाता है कि एक आदमी की दो शक्लों से समानता हो। यह कोई ऐसा आश्चर्य का विषय नहीं है। वह अभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोच ही रहा था कि एक साहब ने उसके सामने आकर कहा : कँवर साहब को आदाब बजा लाता हूँ। सरकार ने पहचाना !

दयानाथ अपनी ही चिन्ता में बैठा था। उसने चौंक कर देखा और कहा अक्खा ! तवक्कले साहब हैं ! तशरीफ रखिये। बैठिये न ?

हुक्म सर आँखों पर तवक्कले ने बैठते हुए कहा : सरकार को ताज्जुब हुआ होगा कि कृपानिधान यहाँ कैसे आगये ? क्यों ?

नहीं जरा भी नहीं।

तवक्कले कुछ हतप्रभ हुआ। दयानाथ कहता गया : ऐसा है कि जो जो आज़ाद तबियत के लोग हैं, वे क्या कभी बँधे रह सकते हैं ?

वाह ! वाह ! कृपानिधान ने आँखें नचा कर कहा : भई सूझ हो तो ऐसी। कैसी बलन्दी है। फिर रुख पलट कर कहा: भई यह थियेटर तो कुछ खास नहीं। पहले शायद आपको याद हो, हमारे जमाने में अलफ्रेड कम्पनी और पारसी थियेटर थे, तब नवाब परवेज राजा विश्वनाथ, बन्दा ताबेदार मैं, आते थे। आपको यकीन नहीं होगा दयानाथ साहब, तब जो रईसी के ठाठ थे वे अब कहाँ ? आप खुद कांग्रेस में चले गये। ठीक ही है जमाना बदलता है, उसके साथ बदल जाना जरूरी है। सरकार परदेसी है, उसे हटाना ही चाहिये। पर उन दिनों दुनिया बहुत खुशहाल थी, यही सन् २० से पहले की बात है। बुरा न मानना कुँवर तुम तो तब छोटे थे, अब मैं क्या कहूँ शर्म मालूम देती है।

क्या बात है, कहिये न ? दयानाथ ने उत्सुकता से पूछा।

'अब तो कहना ही पड़ेगा। भई वैसे मैं तुम्हारे वालिद साहब का दोस्त हूँ ; पर अब तुम भी बराबर के हुये, तुम से क्या तकल्लुफ। हमारा तो वह अमल है कि सोलह बरस का बेटा दोस्त हो जाता है। संस्करत में ऐसा अश्लोक भी है। हमने दयानाथ जी ! नंगी औरतों के नाच देखे। आप लोगों की किस्मत कहाँ ? आपने देखे हैं ?'

दयानाथ के मन में आया उस बूढ़े में एक कस कर चाँटा जड़े, पर महफिल बिगड़ जाने का डर था। वह चुप पड़ गया। कृपानिधान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तवक्कले समझ गये कि अब इस कांग्रेसी पर अपना रंग नहीं चढ़ेगा। वे कांग्रेसवालों को ढोंगी और नकली समझते थे। यह सब बगुला भगत हैं। या तो दो चार बिलकुल ऊपर के भले हैं, या फिर वे गरीब जो पेट की खातिर लड़ते हैं, पर यह तो बीच में आगये हैं सिर्फ नाम की खातिर। इनका तो यह रहता है कि किसी तरह प्रसिद्ध हो जायें और कुछ नहीं।

'नहीं देखे होंगे?' कृपानिधान ने सिर हिलाकर कहा : मगर तब जो नाटक होते थे, उनमें दो किस्में होती थीं। या तो वे धरम के बारे में होते थे, या फिर इश्क के। इश्क भी कैसा कि हकीकी। वह वह सतियाँ इस मुल्क से गुजर चुकी हैं दयानाथ जी, मुझे क़सम से यक़ीन नहीं होता। लेकिन साहब ख़ान्दानी औरतों की बात और ही होती है...

दयानाथ ऊब गया। खूसट इधर गया, उधर गया, घूम फिर कर औरतों के ज़िक्र पर आगया। जैसे इस विलासी और जर्जर व्यभिचारी के सामने और कोई विषय ही नहीं। दुनिया में इतनी बातें हैं, व्यापार, राजनीति, कुछ नहीं; मोटी औरत, दुबली औरत.....दयानाथ को घृणा हुई; यह जमींदारों पर पलने वाले टुकड़खोर, मुसाहिबी करते करते समझते हैं कि रईस अगर खुश होते हैं तो इसी विषय से। उसने बात बदलने को पूछा : आजकल आप करते क्या हैं?

यह कृपानिधान तवक्कले की नज़र में एक बदतमीज़ी का सवाल था, क्योंकि इसका वे कोई उत्तर सरलता से नहीं दे सकते थे। पर यह कभी नहीं हुआ कि उनका खर्चा रुका हो। लोगों ने कभी उन्हें उनके आदर्श कपड़ों से नीचे गिरते नहीं देखा था। वही ठाठ तब से अब तक बने हुये थे। तवक्कले कुछ परेशान से दिखे, तब ही उनकी मर्यादा की रक्षा होगई। नर्त्तकियाँ किलकारती हुई उधर से गुजरीं और वे भूल गये कि दयानाथ बैठा है। जब वे चली गईं मुड़े और दयानाथ से कहा : कुछ भी कहिये साहब। शीलराज हों या राधा। यह लोग देश वेश तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब बहाना है, पेट की खातिर यह ढोंग रचकर चले हैं। मुझे तो इनके चलन में कुछ....

'आप तो बस,' दयानाथ ने काटकर कहा : सब पर यही तोहमत लगाते हैं।

'तोहमत !' जैसे कृपानिधान चौंक उठे, गोया किसी ने उन्हें उल्लू का पट्ठा कह दिया हो। बोले—लाहौल बिलाकूवत ! दयानाथ साहेब ! यह आदत तो मुझमें कभी भी नहीं थी और जहाँ तक मुझे यकीन है, यह अभी तक नहीं है। आप इन्हें शरीफ समझते हैं ?

दयानाथ को उत्तर देने में कठिनता हुई। उसने कहा: मैं तो कुछ भी नहीं कहता। पर इधर डाक्टर हीरालाल और मुंशी इकबाल शंकर थियेटर देखने आये थे। बड़ी तारीफ करते थे। आज मुझे पार्टी का निमंत्रण मिला कि समाज सुधार के विषय में शीलराज कुछ नये विचार रखना चाहते हैं, तो मैंने सोचा चलो हो आऊँ। जिन लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों से मुझे कोई जानकारी नहीं है उन्हें मैं तोहमत कैसे लगा सकता हूँ।

'तोहमत !' कृपानिधान ने टोककर कहा। आप इतने बड़े कानूनदाँ होकर तोहमत लफ्ज बार-बार इस्तेमाल करते हैं। तोहमत वह है जो इरादतन, दूसरे की इज्जत हतक के लिये, दूसरों के बीच में कही जाये, या फिर.....

दयानाथ हँसा। उसने कहा : मेरा मतलब इसी से था।

'तो क्या' कृपानिधान ने फिर कहना शुरू किया.....

बात कट गई। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच राधा ने नगर के वयोवृद्ध रईस राजा इन्दरसिंह को माला पहनाई। वे ऊपर चढ़ कर पंडाल पर बैठे थे। एक जरा चबूतरा सा ऊँचा कर लिया गया था और लोगों ने देखा कि उनकी बगल में शीलराज खड़ा है। सब उसकी सौम्य भव्याकृति पर सात्विकता को देख रहे थे। वह पवित्र निष्कलंक लगता था। बाल वही साधारण थे। बस कपड़ों की धज थी। और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देख कर लगता था, जैसे वह किसी कल्पना लोक का भी निरंतर दर्शन करता है। दयानाथ अब कृपानिधान को भूल गया। उसकी आँखें उधर ही लग गईं। कृपानिधान ने इधर-उधर देखा, सब ध्यानस्थ थे। लाचार एक सिगरेट सुलगाकर वे भी उधर ही देखने लगे।

राधा राजा साहब को माला पहना कर शीलराज की ओर बढ़ी। एक सुंदर गजरा उसकी गर्दन में डाल दिया। ऐसा लगा जैसे किसी सायंकाल की लालिम प्रभा को फोड़ कर सुकोमल इन्द्रधनुष निकल आया हो। राधा ने झुककर अत्यंत भक्ति से प्रणाम किया और पीछे हट गई। सबने विस्मय से देखा शीलराज के दोनों हाथ उठ गये, जैसे उसने आकाश में किसी का आह्वान किया।

४

शीलराज के भाषण से सब प्रभावित हुए। उसने जब बोलना प्रारंभ किया तब सब लोग उसके अगाध ज्ञान भंडार से चकित रह गये। प्राचीन काल से अब तक का इतिहास ऐसे आगया जैसे कोई चलचित्र हो। और फिर जो विद्वानों के मतों का उद्घाटन किया तो लगा कि सब इसके हाथ पर आँवले की तरह रखा है। अमीरी, गरीबी, दासता, संघर्ष, भूख, समाज, संस्कृति, स्त्री पुरुष के अधिकार, मनुष्य और ईश्वर, विधवा की समस्या, अनाथ, अपाहिज, कोढ़ी, हिन्दू मुस्लिम समस्या, मतांतर खंडन-मंडन, वेश्या-चरित्र, सतीत्व, धर्म, कौन सा विषय था जिस पर उसने एक ही स्वर से, एक ही गांभीर्य्य से प्रकाश नहीं डाला? जब उसने समाज के दुखों पर बोलना प्रारंभ किया तब लगा यहाँ सब दुखी थे, सब हा हा कार कर रहे थे, उफ़! कितना दुख था, पर जब संस्कृति का विषय उठाया, तब अपनी प्राचीनता का गर्व हुआ, सब मिट गये, हम न मिटे, और फिर धर्म का विषय आया तब लगा हम धर्म के ही सहारे जी रहे हैं। संसार में सब से बड़ा सिद्धांत क्या है? अहिंसा! अहिंसा ही हमारी शक्ति है। मार्क्सवाद भी ठीक है। हमें यूरोप के सर्व श्रेष्ठ चिंतन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आवश्यकता हैं, लेकिन हमारी जीवन शक्ति सदा से भौतिक नहीं, आध्यात्मिक रही है। वह साधना जहाँ क्षण और युग मिल जाते हैं, जब अनाहत नाद सुनाई देता है, जहाँ मनुष्य का विद्रोह मन की सीमा में केन्द्रीभूत होता है। वह रोटी के लिये बाहर नहीं लड़ता। हमारे संस्कार, शिक्षा, नीति, नैतिकता सब कहाँ चक्कर लगा रहे हैं? वह भाग्य का जाल न कोई काट सका है, न काट सकेगा। लेकिन इसके लिये प्रेम की आवश्यकता है। प्रेम का आधार स्त्री है। वह अवस्था जहाँ वासना पर आत्मबल छाता है। जहाँ मनुष्य स्त्री से घृणा नहीं करता। उसके संग में ही पवित्रता का अनुभव करता है। कृष्ण ने और क्या किया? शराब जहाँ पानी हो जाती है। वह जो निरासक्त योग है, जहाँ आकाश का शून्य ही सब से ठोस वस्तु बन जाता है!

उस समय लगा कि शीलराज अब आकाश में उड़ जायेगा। भाषण समाप्त हुआ। तालियों की गड़गड़ाहट से सब जगह काँप उठी। सब को लगा वे एक अजीब संसार में आगये थे जहाँ मनुष्य को कोई आत्मिक चेतना पुकार रही थी।

परिणाम यह हुआ कि पार्टी जब समाप्त हुई तब वर्तमान आलाप और प्रताप के प्रतिनिधि—विशेष संवाददाता-शीलराज को खोजने लगे जो इस समय शायद चिंतन में लीन हो गया था। राधा उनके प्रश्नों का उत्तर दे रही थी।

प्रताप प्रतिनिधि : शीलप्रभु कहाँ जायेंगे?

राधा : कौन जाने? सारा देश है। जहाँ मनुष्य दुखी होगा वहीं ईश्वर उन्हें भेजेगा।

प्रतिनिधियों ने फ़ौरन लिख लिया।

आलाप प्रतिनिधि : शीलप्रभु का जन्मस्थान कहाँ है?

'मैं नहीं जानती।'

'आपने उन्हें कहाँ देखा?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जब स्कूल में पढ़ती थी तो आप माता जी के पास आते थे। माँ बूढ़ी हुईं। उन्होंने आपसे प्रभावित हो कर मुझे आप की सेवा में नियुक्त किया।'

वर्तमान प्रतिनिधि : शीलप्रभु विवाहित हैं ?

'नहीं।'

'नाटक कम्पनी उन्होंने क्यों खोली ?'

'अंधों की आँखें खोलने के लिये।'

प्रश्नोत्तर चलते रहे। अतिथि प्रायः लौट गये। दयानाथ ने राधा से आकर कहा : देवी ! मैं शीलप्रभु का दर्शन करना चाहता हूँ।

'वे तो अब ध्यान में लीन हो गये हैं। मुझे दुख है अब आप उनसे नहीं मिल सकेंगे।'

'तो फिर कब मुलाकात होगी ?'

'शायद कल।'

कृपानिधान तवक्कले ने दूर से आवाज़ दी : आइये दयानाथ जी। अब तो काफ़ी देर हो गई।

दयानाथ और राधा ने मुड़ कर देखा। दयानाथ कृपानिधान का व्यंग्य समझ गया। उसे मन ही मन विक्षोभ हुआ। उसने कहा: अच्छा आज्ञा हो।

राधा ने मुस्करा कर हाथ जोड़ दिये। दयानाथ कृपानिधानके पास आ गया।

कृपानिधान कहने लगे : मुझे तो यह लोग बड़े रँगे हुए आदमी लगते हैं।

इस औरत की आँखों में एक अजीब सी चमक है। ऐसी औरतें बड़ी ख़तरनाक होती हैं ....

आगे की बात को पहले ही से समझ कर दयानाथ चेत गया। उसने प्रतिवाद किया : यदि आप बुरा न मानें तो कुछ अर्ज़ कर सकता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कहिये ?'

'आपको औरतों के बारे में कुछ गलतफहमी है।'

'तो क्या आप इन लोगों को सच्चा समझते हैं ?'

'क्यों ? क्या हर्ज है ? यह लोग मामूली थ्येटर वाले नहीं हैं। इनके पीछे एक सिद्धांत है।'

कृपानिधान तवक्कले हँसे। कहा : अगर आप इतने ही नादान न होते तो क्यों पिता से लड़ते और खान्दानी जायदाद को छोड़ देते ? सिद्धांत ? किसमें नहीं है ? जो चोर जेब काटता है उसके पीछे क्या कोई सिद्धांत नहीं होता ?'

दयानाथ चौंका। उसे कृपानिधान से गंभीर बातचीत की कभी आशा नहीं थी। उसने कहा : वह आदमी का स्वार्थ है। यह देश के लिये त्याग है।'

'मैं कहूँगा तो आप नाराज़ हो जायेंगे।'

'नहीं कहिये।' दयानाथ ने जिद की।

'जो आदमी खुद अपने आपको धोखा देते रहते हैं, वे दूसरों के जाल में बहुत जल्दी फँस जाते हैं। जिस परिंदे को उड़ना ठीक से नहीं आता, पर वह उड़ने लगता , उसका जाल में फँस जाना कोई कठिन काम नहीं होता।'

दयानाथ को यह बात अच्छी नहीं लगी। इस कथन का अर्थ उसके ऊपर सीधा हमला था। उसने कहा : आप अपनी बात को साफ कर सकते हैं।

'एक दफे नहीं, सौ दफे। पर आप खफ़ा न हों तो कहूँ।'

'फर्माइये।'

'अच्छा बताइये आप कभी भूखे रहे हैं ?'

'नहीं।'

'पिता जी के यहाँ आपको क्या तकलीफ थी ?'

'कुछ नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'फिर आप कांग्रेस में क्यों आये ?'

'देश की खातिर।'

'देश क्या है ? आप जेल जाते हैं तो सब आराम आप को वहाँ भी मिलते हैं। जो दो एक पुलिस की लाठियाँ मिलती हैं, उससे आपका नाम होता है। आप जैसे सरकारी अफसर नहीं हुए, कांग्रेसी हो गये। फर्क क्या पड़ा ? देश को क्या मिला ?'

दयानाथ ने इस तर्क से कुछ पराभव का अनुभव किया। कृपानिधान रुके नहीं। कहते गये : पर यह बुरा नहीं है। वहाँ पिता का शासन था, यहाँ आप खुद मुख्तार हैं। यह अच्छा ही है। नाम कमाना कोई बुरा काम नहीं है। लोग तो नाम की खातिर सब कुछ करते हैं।

दयानाथ कड़ा पड़ा। उसने कहा : आपकी विचारधारा अभी बहुत उलझी हुई है। यह जो हजारों आदमी लड़ते हैं, सब नाम के लिये ?

'जी नहीं। वे लड़ते हैं अपने पेट और मजबूरियों के लिये। पर आपको ऐसी कोई दिक्कत नहीं। आप उनका साथ देकर अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हैं।'

'यही पिताजी भी कहते थे।' दयानाथ ने व्यंग्य के स्वर में कहा।

'ठीक कहते थे, उम्रदार आदमी हैं। समझते है। अभी तो आपके मगर पच्चीसी के दिन हैं। पर यह भी ठीक है।' कृपानिधान ने सिर हिलाया। दयानाथ कुढ़ गया। उसने आज तक पिता और कम्युनिस्ट दोनों को करें जवाब दिये थे। एक से कहा था आप में सामंतवादी पशु है, दूसरे से कहा था, तुम जलते हो, तुम्हारी हीनता ही तुम्हारा गला घोट रही है, पर यह व्यक्ति अजीब था। सबकी विवेचना करके उसे मूर्खता कहता था, साथ ही ढोंग भी कहता था, और फिर उस सबको आवश्यक भी कहता था। उसके लिये एक न्याय्य आधार ढूँढ़ता था। उसने तीव्र आघात करने की इच्छा से कहा : आप जिस समाज में पैदा हुए हैं उसमें सेवा का कोई मूल्य नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कृपानिधान हँसा। उसने कहा : मेरे भाई ! तुम्हारा बचपन अभी तक नहीं गया। मैं जिस जमाने में पैदा हुआ हूँ उसमें सबसे बड़ी झूठ सुनी गई है। मैं जिस समाज में हुआ हूँ वह झूठ और फरेब पर ही कायम है। मैं उस वक्त का हूँ जब लोग यह भरोसा करते थे कि मलका विक्टोरिया ने हिंदुस्तानियों के भले के लिये ही सारा बोझा उठा रखा है वर्ना अँगरेजों को जो हिंदुस्तान की सेवा करनी पड़ती है, उसका मूल्य उन्हें चुकाना संभव है.....कृपानिधान को हँसी गूँज उठी।

५

दयानाथ जब घर पहुँचा राजेश्वरी जैसे बहुत देर से प्रतीक्षा कर रही थी। दयानाथ को देखकर वह खिल उठी। कहा :बड़ी देर लगी। ऐसा क्या हुआ था ?

दयानाथ बैठ गया। उसने शीलराज और राधा की बहुत प्रशंसा की और फिर कहा : मुझे लगता है उमा ही शीलराज है।

उमा का नाम सुन कर जिज्ञासा की : 'आप कुछ बताते तो हैं नहीं। बस बीच-बीच में से कहते हैं।' दयानाथ ने पूरा किस्सा सुनाया। सुन कर राजेश्वरी को भी विस्मय हुआ।

इसी समय मार्कण्डेय ने प्रवेश किया। उसको देख कर राजेश्वरी ने माथा ढँक लिया। वह जल्दी में था। उसने कहा : तुरन्त जा रहा हूँ। एक बात कहने आया था, जिससे शायद तुम्हें दुख हो पर होना नहीं चाहिये क्योंकि तुम्हारी नैतिकता मैं औरों से ऊँची देखना चाहता हूँ।

"क्या हुआ ?' दयानाथ ने ऊब कर पूछा।

'ददुआ आये हैं कानपुर। उन्होंने एक घर ले लिया है। तीन चार दिन रहेंगे फिर चले जायेंगे। मुझे सत्यनारायण मिला था। उसने बताया है। चाचा जी नहीं आये हैं। उनकी तबियत ठीक नहीं थी।

दयानाथ का चेहरा निष्प्रभ हो गया। उसने कहा—'हूँ। और !'

मार्कण्डेय ने उसके चेहरे के बदलते भाव को पढ़ लिया। उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा: बस ? घिर गये ? तुम जानते हो मनुष्य में एक दूसरे को अपमानित करने की भावना है। नहीं, उनका अभिमान तभी तक अभिमान है, जब तक तुम उसका अनुभव करते हो।

दयानाथ ने चिढ़ कर कहा : तुम्हारा मतलब है वह अनुभूति ही मुझमें नहीं रहनी चाहिये जो सत् असत् का ज्ञान करवाती है।

'इसमें' मार्कण्डेय ने कहा--'सत् असत् की क्या बात है ? जब तुम उन्हें छोड़ आये हो तो फिर उनसे तुम कोई आशा क्यों करते हो ? तुम्हारे भीतर अब तक वह अहम् शेष है, जो तुम्हें पशुता से ऊपर नहीं उठने देता।'

दयानाथ जैसे प्रतिवाद करने पर तुला बैठा था। उसने कहा : तुम्हारा मतलब है हमारा सम्बन्ध उस जायदाद का ही सम्बन्ध है। रक्त का नहीं। यह मेरी पशुता है कि उनकी। भई, वहाँ न सही, यहाँ मेरे यहाँ आकर नहीं ठहर सकते थे ?

ब्रह्मदत्त ने मुस्करा कर कहा : और तुम वहाँ जाओगे तो उनके यहाँ ठहर जाओगे ?

'नहीं, मैं क्यों ठहरने लगा !'

'तो वे क्यों ठहरें ?'

'तो यह तो वही अहंकार हुआ। मैं नहीं जाता क्योंकि इसमें वे अपनी मर्यादा का खंडन समझते हैं और मैं क्या गया नहीं था ?'

मार्कण्डेय से कुछ भी छिपा हुआ नहीं था। उसने कहा : लेकिन उस समय तुम चुनाव हार गये थे, अहिंसा की शक्ति से तुम्हारा विश्वास उठ गया था। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि तुम ददुआ के पास अपनी शक्ति लेकर जाते तो उनका हृदय परिवर्त्तन हो जाता।

दयानाथ को यह बात एक पोली ढोली की आवाज़ की तरह सुनाई दी। उसने प्रत्युत्तर दिया : अगर ऐसा ही है तुमही क्यों नहीं उनके हृदय को बदल देते।

मार्कण्डेय सहसा इसका उत्तर नहीं दे सका। उसने अचकचा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा : तुम इस समय उत्तेजित हो रहे है। इसका अर्थ है तुम गांधीजी के सिद्धान्तों पर भी अविश्वास कर रहे हो। तुम कहोगे अँगरेज़ों से लड़ने के लिये अहिंसा एक व्यर्थ की चीज़ है !'

दयानाथ की इच्छा हुई कह दे—और क्या, पर साहस नहीं हुआ। फिर सोच कर कहा : यह क्या बात है। गांधीजी ने स्वयं अपने भाई को छोड़ दिया। तुम क्या उसे हिंसा कहोगे। हिंसा वह है जो मनुष्य को मुक्त होने के मार्ग से रोकती है।

मार्कण्डेय ने कहा : और वह नहीं है जो उसे बाधाओं के भयसे स्वयं बाधा खड़ी करने को प्रेरित करती है।

अभी तक राजेश्वरी चुपचाप सुन रही थी। अब आगे की बातें उसकी समझ में आना बंद होगईं। पति से कुछ कहना उसके लिये उस समय अनुचित होता। मार्कण्डेय उसे भाभी मानता था, लिहाज़ा उसी को देखकर बोली : सब कुछ ज्ञान आज ही बघारना है। मतलब की बात तो कहीं की छूट गई।

मार्कण्डेय हँस कर बोला : अच्छा, अच्छा, जो तुम कहोगी, वही ठीक होगा।

'तो वे लोग आ गये हैं ?' राजेश्वरी ने पूछा।

'आ तो गये।'

'तुम ददुआ से मिले ?'

'नहीं, मुझे तो उनके दर्शन नहीं हुए।'

'होते, तो तुम पूछ लेते,' दयानाथ ने फिर टोका।

'क्या ?' मार्कण्डेय ने आँखें फाड़ कर पूछा।

'कि वे अलग क्यों ठहरे हैं ?'

'देखो भौजी ...' मार्कण्डेय ने राजेश्वरी की ओर देखकर कहा : फिर छेड़ा इन्होंने···

राजेश्वरी हँसी। कहा : अब वे यहाँ नहीं ठहरते तो तुम इतने गुस्सा क्यों होते हो ? नहीं ठहरते। वे बड़े हैं। न सही। मैं तो जाऊँगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तुम कहाँ, जाओगी ?'

'महालक्ष्मी से मिलने। बच्चों को ले जाऊँगी। देखें ददुआ मेरा घर में जाना रोक दें।'

'तुम क्यों जाओगी ?' दयानाथ ने भौं उठा कर पूछा। वे तुम्हारा अपमान करेंगे।'

मार्कण्डेय कह उठा : यदि दुनिया में स्त्री होती ही नहीं तो सभी शायद यहाँ हिंसक होते।

'तुम भूलते हो।' दयानाथ ने काटकर कहा : गांधीजी जो अहिंसा के सबसे बड़े पथ-प्रदर्शक हैं, वे पुरुष ही हैं। तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मार्कण्डेय हतप्रभ होगया। उसे दयानाथ की आवाज में एक शुष्कता का आभास मिला। राजेश्वरी ने कहा : अपमान करेंगे ? क्या अपमान करेंगे ? घर से निकलवा देंगे ?

यह स्वयं दयानाथ भी आशा नहीं करता था। पिता में इस साधारण सौजन्य की उपस्थिति उसे अस्वीकृत कर देना नहीं आया। पर उसने कहा : बहू को ही क्यों नहीं बुला लेतीं ? तुम तो बड़ी हो ?

'ददुआ तो सबसे बड़े हैं ?' राजेश्वरी ने भी तर्क किया। दयानाथ निरुत्तर हो गया। राजेश्वरी ने अबकी बार मार्कण्डेय से कहा : कहते हैं कि थ्येटर के प्रबंधक और मालिक शीलराज स्वयं उमाबाबू हैं।

'उमाबाबू ?' मार्कण्डेय को जैसे सहसा विश्वास नहीं हुआ। उसने एक बार राजेश्वरी को देखा, फिर दयानाथ को, फिर राजेश्वरी, फिर दयानाथ को। दयानाथ और राजेश्वरी दोनों एक दूसरे को परेशान से देख रहे थे। मार्कण्डेय चुपचाप दोनों के मुखों पर भाव पढ़ने की चेष्टा कर रहा था, पर जैसे एक दुरूह उलझन थी, जिसमें उसके हाथ गाँठ नहीं लगती थी, खोलता भी तो वह आखिर किसे ?

फिर उसने धीरे से कहा : उमानाथ ? वह तो विलायत चले गये थे ? क्या नहीं गये ?।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर यह एक निरर्थक प्रश्न था जैसे बहुत से लोग अखबार में कोई चुनाव की सनसनीखेज खबर पढ़ कर साथ के पढ़ने वाले से पूछ बैठते हैं कि क्यों साहब, कौन जीतेगा ? जितना प्रश्नकर्त्ता जानता है, उतना ही वह, जिससे पूछा जाता है। मार्कण्डेय ने स्वयं कहा : मुझे विश्वास नहीं होता।

'कल मैं भी थियेटर चलूँगी। वहाँ अपनी आँखों से देखूँगी।'

'क्या देखोगी ?' दया ने पूछा।

'यही कि, वे उमाबाबू ही हैं या और कोई। दद्दुआ उन्हें देखेंगे तो ? और कहीं महालक्ष्मी भी गई तो ! ऐसे क्या उमाबाबू सबकी आँखों में फूल झोंक देंगे ?'

'तुम अभी उससे मिली नहीं।' दयानाथ ने कहा : मैं मिला था मगर··मुझे उसने पहचाना ही नहीं। कौन जाने कोई दूसरा ही आदमी हो।' तुम चलोगी मार्कण्डेय ?'

'मैं तो थ्येटर सिनेमा देखता नहीं।'

उसके उत्तर को सुन कर राजेश्वरी मुस्कराई। कहा : तुम जब तक घर में बहू नहीं लाओगे तब तक तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं होगा। वह हँसा। तीनों हँस पड़े।

रात को दयानाथ ने राजेश्वरी से कहा : उमा से ऐसी उम्मीद तो न थी। कहाँ कम्युनिस्ट बनता था, कहाँ अब एकदम योगी बन बैठा।

राजेश्वरी इन सबको नहीं समझी। उसने कहा : मुझे तो महालक्ष्मी पर दया आती है। बेचारी पर अच्छी मुसीबत पड़ी है।

'दद्दुआ की सख्ती का नतीजा है।'

'क्यों दद्दुआ ने तुम पर सख्ती नहीं की। पर तुमने क्या बाल बच्चों को छोड़ दिया ?'

बालबच्चों में ही राजेश्वरी ने अपने को गिन लिया। वर्ना वह अपना जिक्र और कैसे करती ?

'उसका रास्ता कठिन था।' दयानाथ ने सिर हिला कर कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कैसा रास्ता ?' राजेश्वरी चिढ़ गई। अच्छा हुआ प्रभा बाबू अकेले ही थे, वर्ना बिचारी बहू होती तो उमर भर रोती।' एक व्यर्थ की कल्पना थी। परिवार..निरंतर बढ़ते हुए परिवार...उलझन—परेशानी और पारस्परिक संबंधों की यातना सब स्त्री के लिये सुखकर हैं। वह कभी इस विषय से नहीं ऊबती। असीम सहनशीलता। पुरुष की भाँति अलग होने की अहम्मन्यता उसमें कभी नहीं होती। वह किसी से घृणा नहीं करती। सारा पुरुष समाज उसे लूटता है, पर वह सब पर अविश्वास करती हुई भी, जिन्हें अपने को अर्पित कर देती है, उन्हें कस कर पकड़े रहना चाहती है। जैसे कट्टमकट्टा का खेल बच्चे खेलते हैं, कि एक बिंदी फिर एक क्रॉस फिर एक बिंदी, खेल से कभी तबियत नहीं ऊबती...निरंतर...अथक.. चलने वाली एक परंपरा दीर्घ परंपरा। वह जिसमें अगाध ममता है, पर संकुचित है; स्नेह है, पर उलझन भी है; प्रेम है, पर ईर्ष्या भी है, सब कुछ वही है जो पुरुष में है, पर समाज में उसका स्थान कम होने के कारण वह सदैव दबे हुए विचार रखती है। दयानाथ उसके लिये पराक्रम का स्वरूप था। वह उसके लिये दुनिया का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति था, क्योंकि वह उसकी मूर्खताओं से भी समझौता करने के लिये बाध्य थी।

दयानाथ चिंता में डूब गया था। चाचा की तबियत खराब है। अब वे जर्जर हो गये हैं। कितने दिन चल सकेंगे ? स्वयं रामनाथ भी वृद्ध हैं। दयानाथ सोने चला गया। राजेश्वरी बच्चों को जगा कर दूध पिलाने का इन्तजाम करने लगी। उसने गिलास भरे। बच्चे किसी किसी दिन तो बहुत जल्दी सो जाते हैं।

दूसरे दिन जब राजेश ब्रजेश ने सुना कि थ्येटर जाने का विचार है, वे दोनों खुशी से चिल्ला उठे : हम भी चलेंगे, हम भी चलेंगे।

छोटा बाला तो अभी 'तलेंगे' तक ही पहुँचा था।

राजेश्वरी ने कहा: हाँ हाँ चलना। जरूर चलना।

दयानाथ ने छेड़ा : दोनों नहीं, एक चलेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पिता दी तौन ?' छोटे बाले ने पूछा।

'तू घर पर रहेगा। बड़ा जायेगा।

'देखो अम्मा.....' उसने फौरन आँखों में पानी भरे रुआसी शक्ल लेकर शिकायत की।

दयानाथ और राजेश्वरी खिलखिला कर हँस पड़े।

'कह तो दिया' राजेश्वरी ने कहाः दोनों चलोगे। रोता क्यों है?

उसका क्या बिगड़ा। अब उसी आँसू भरे चेहरे पर मुस्कान खेलने लगी। दयानाथ का मन अत्यन्त तृप्त था। राजेश्वरी ने कहाः आप सदा बच्चों को छेड़ते हैं।

'और नहीं किसे छेड़ूँ? दयानाथ ने आँखे उठा कर पूँछा।

राजेश्वरी ने मुँह टेढ़ा करके मुस्करा कर कहाः चलो रहने भी दो।

६

जब सब चलने को तैयार हुये और सत्यनारायण मोटर ले आया, रामनाथ तिवारी बैठे ही थे। वे आज कुछ उदास थे। महालक्ष्मी ने अवधेश से कहाः ददुआ तैयार नहीं हुये ?

अवधेश ददुआ के पास दौड़ गया। रामनाथ ने महालक्ष्मी को दरवाजे के पीछे जान कर कहाः बहू!

'जी'

'तुम चली जाओ। रामदीन और सत्यनारायण को लेती जाओ।'

'आप नही चलेंगे ?'

रामनाथ ने हँस कर कहा : अब मैं बूढ़ा हुआ। मुझे जाना क्या अच्छा लगेगा ? सत्यनारायण !'

सत्यनारायण 'हुजूर' कह कर घुस आया। रामनाथ ने कहाः देखो! बहू और अवधेश जाँयगे। मोटर में पर्दे बाँध लो। ले जाकर जनाने दर्जे में बिठा देना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महालक्ष्मी की इच्छा हुई कहे कि वह भी नहीं जायेगी। साहस नहीं हुआ। जाने किस कारण ददुआ ऐसा कहते हैं? संभव है पुराने दुखों की याद आ गई हो। रामनाथ को बहू को साथ ले जाने में संकोच था। उनका सारा खान्दान किधर गया। अब वे इस बुढ़ापे में थ्रेटर देख कर अपने गौरव को कम नहीं करना चाहते थे। महालक्ष्मी अवधेश को ले कर मोटर में जा बैठी।

अँधेरा गहरा हो गया था। जब वह जनाने दर्जे की ऊँची क्लास में बैठा तो अवधेश चिल्ला उठा: वह देखो, वह देखो।

बालक की पुकार से उसका ध्यान उधर हुआ। उसने देखा: राजेश्वरी बैठी थी। उठी और हाथ जोड़े। राजेश्वरी ने कहा: आओ! यहीं आ जाओ। अवधेश को लेकर वह वहीं निकट जा बैठी।

बहुत दिन बाद मुलाकात हुई थी। दोनों ही एक दूसरे के सामने कुछ संकोच कर रही थीं। महालक्ष्मी का संकोच अधिक था। वह अधिक उपेक्षणीय अवस्था में थी। इधर उधर की बातें शीघ्र समाप्त हो गईं। दोनों ने कहा कि वे एक दूसरे को भूली नहीं हैं। पर बात घूम फिर कर औरतों में दो ही तीन विषयों पर होती है। किसके, मूंडन, जन्म, विवाह, मृत्यु, कब हुए या फिर आज आप के यहाँ क्या बना? मूंग की मँगौड़ियों में क्या डाल देने से क्या हो जाता है, और पापड़ में जो बात है वह क्यों फूले में नहीं आती।

अवधेश राजेश्वरी की गोदी में चढ़ गया था। राजेश, ब्रजेश दयानाथ के साथ मर्दाने में बैठे थे।

राजेश्वरी ने पूछा: उमा बाबू की कोई खबर आई?

महालक्ष्मी ने मुँह फेर कर कहा: कोई नहीं।

उसकी परेशानी को राजेश्वरी समझ कर चुप हो रही। उसने इस विषय को आगे बढ़ाना ठीक नहीं समझा। पर दिल में एक धुकधुकी होने लगी। अगर उसके पति का अनुमान सत्य है तो महालक्ष्मी पर क्या बीतेगी?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ददुआ नहीं आये !' उसने टालने को पूछा।

'नहीं, घर ही रह गये।'

'अगर यहाँ न मिलतीं तो हमें मालूम भी न होता कि तुम कानपुर आई थीं।'

महालक्ष्मी चुप हो गईं। वह क्या उत्तर देती ! राजेश्वरी ने कहा : आज मैं अवधेश को तो लेजाऊँगी। तब तो तुम कल आ सकती हो।

महालक्ष्मी फिर भी कुछ नहीं बोली। वह अजीब परेशानी में पड़ गई थी। अवधेश अब ऊँघने लगा था। महालक्ष्मी ने उसे कुरेद कर कहा : देखोगे नहीं ? तुम तो सो चले।

पर अवधेश खाना खाकर ज़रा सो लेने का आदी था। हर बच्चा रात को अगर अमृत बँटे तब भी जगना नहीं चाहता। वह तो इधर आँख बंद की, उधर राजेश्वरी की गोद में सो गया।

कुछ देर बीतने पर नाटक प्रारंभ हुआ। राधा ने आकर मंगलाचरण पढ़ा। शीलराज ने आकर सबसे शांत रहने की प्रार्थना की। महालक्ष्मी और राजेश्वरी दोनों चौंक उठीं। कौन !! उमानाथ !! दोनों चुप रहीं। महालक्ष्मी को जैसे चक्कर आ रहा था। राजेश्वरी ने उसे चैतन्य करके कहा : क्यों क्या हुआ ?

'कुछ नहीं।' वह स्तब्ध थीं। क्या सोच रही थी। क्या हो गया ! क्या यह सच है ? एकाएक वह उठ खड़ी हुईं।

राजेश्वरी ने पूछा : क्या हुआ ?

'घर जाऊँगी।'

'क्यों !'

'जी घबरा रहा है।'

राजेश्वरी ने उसका हाथ पकड़ कर उसे बिठा कर कहा : उमाबाबू ही हैं !

'हाँ, वो ही हैं।'

'यहाँ !'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महालक्ष्मी कुछ नहीं कह सकी। उसका दम घुट रहा था। जैसे उसका भीषण अपमान किया गया था।

मुझसे राजेश के पिता ने कहा था, पर उमाबाबू ने उन्हें पहँचाना ही नहीं। हमने सोचा शायद कोई और हों। पर मैंने कहा: मैं देखूँगी जरूर। तभी आई हूँ।

'नहीं, वे ही हैं।' महालक्ष्मी का स्वर दृढ़ हो गया था। 'दुनिया में उन्हें सब भूल सकते हैं, पर मेरी आँखें उन्हें पहँचानने में कभी गलती नहीं कर सकतीं।'

दोनों कुछ देर चुप रहीं। फिर महालक्ष्मी ने हठात् कहा, 'यदि मैं उनसे जाकर मिलूँ तो!'

'और किसी ने देख लिया', राजेश्वरी ने पूछा।

'तो भी क्या? पर तुम किसी से कहोगी तो नहीं! यदि वे मुझे वापिस मिल गये....'वह अधिक नहीं कह सकी..उसकी आँखों में आँसू भर आये थे। राजेश्वरी की आँखें भी नम हो गईं। बेचारी ने क्या सुख पाया? उसने कहा: किनारे किनारे जाना। कुछ गड़बड़ तो नहीं करोगी।

'नहीं। कोई देख भी नहीं सकेगा।'

पति से मिलने जाने के लिए स्त्री क्या नहीं कर सकती? महालक्ष्मी धीरे से उठी और घेरे के सहारे-सहारे अंधेरे में चल कर बाहर हो गई। राजेश्वरी का दिल भीतर जोर-जोर से धड़क रहा था। उसे डर लग रहा था। अगर किसी ने उसे पकड़ लिया या छेड़ा तो? और यदि यह व्यक्ति उमानाथ नहीं हुआ तो? पर तीर हाथ से जा चुका था। उसकी इच्छा हुई अवधेश को जगा कर दयानाथ के पास भेज दे और उसे अलग बुला कर सब कह दे। पर वह सब विचार भी दूर हट गये। उसने कहा: ा सो देखा जायेगा। महालक्ष्मी जैसी पतिव्रता की भगवान रक्षा करेंगे, जैसे कृष्ण ने द्रौपदी की रक्षा की थी। उसने मन ही मन प्रार्थना की और नाटक देखने लगी। अंधकार में रंगमंच जगमगा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारों ओर अपरूप निस्तब्धता थी। केवल कभी-कभी बच्चों के रोने की हल्की आवाजें आती थीं। जिनके पीछे ही फुसफुसा कर चुप करने वाली औरतों की हल्की बोलियाँ सुनाई दे जाती थीं। नाटक में इस समय एक नृत्य हो रहा था।

राजेश्वरी जितना ही ध्यान एकाग्र करने की चेष्टा करती, उतना ही उसका हृदय भीतर ही भीतर काँप उठता। भविष्य की आशंका में वह इस समय टँगी बैठी थी। लेकिन यदि वह उमानाथ ही है तो महालक्ष्मी के साथ उसने कितना भारी अपकार किया है? बेचारी! जाने मँझले बाबू को क्या हो गया? क्या वे सचमुच साधू हो गये हैं? पर अगर साधू हैं तो इस सबकी क्या जरूरत? साधुओं ने यह देशसेवा का काम खूब उठाया है..राजेश्वरी ने देखा...अवधेश निश्चित सो रहा था।

७

जिस कमरे में सब अपने कपड़े बदल कर पार्ट करने जाते थे, उसके पीछे की तरफ एक छोटी सी पर्दे से ढँकी हुई जगह थी। महालक्ष्मी इधर उधर से छिपती उस स्थान पर पहुँच कर वहाँ से देखने लगी। उसने देखा शीलराज राधा से बातें कर रहा था। राधा ने कहा:

'क्या? आज का शो, सबसे अच्छा रहा।'

'मीरा देवी, मैं तुम्हें अभी जाने क्या-क्या दिखाऊँगा।'

'देखो तुम फिर नीरा कहते हो, मैं भी तुम्हारा असली नाम...'

'शऽऽऽ' शीलराज ने कहा। 'आयंदा यह गलती नहीं होगी।'

'अच्छा मैं बाहर जाती हूँ।'

'जाओ जरा मैं भी आराम करना चाहता हूँ। आध घण्टे बाद मुझे मेरे टेन्ट में से बुलवा लेना।'

'क्यों ऐसी हुड़क लग रही है?'

शीलराज हँसा। वह उसे मुस्कराकर देखती हुई चली गई। शील-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राज मुड़ा। वह अपने टेन्ट की ओर चलने लगा। हठात् अंधेरे में खड़ी हुई महालक्ष्मी को उसने देखा। शंका से पूछा : कौन है? कोई उत्तर नहीं। फिर कहा : कौन है? मैं कहता हूँ कौन है? उसमें कुछ तेज आवाज में कहा।

शऽऽऽ, महालक्ष्मी ने धीरे से कहा : धीमे बोलिये। कोई सुनेगा। शीलराज का हृदय भीतर ही भीतर काँप उठा। महालक्ष्मी को सामने देखकर जैसे उसका साहस डिगमिगा ही गया। परन्तु वह शीघ्र ही सँभल गया। उसने पूछा : आप कौन है? क्या चाहती है? महालक्ष्मी एकटक तृष्णा से उसे घूर रही थी। वह मन ही मन क्रुद्ध हुआ। छलिया। झूठा। और फिर मुझे ही आँख दिखा रही है? उसने कहा : यही है आपका विलायत? यही है आपका किसान मजदूरों की लड़ाई? उसके होठों पर कठिन व्यंग्य था। वह मुस्करा रही थी। शीलराज ने आँखें सिकोड़ कर कहा : आप शायद किसी गलतफहमी में हैं। आप.....

लेकिन महालक्ष्मी की आँखों में आँसू चमक रहा था। वह उसे अपलक निहार रही थी। हठात् उसने शीलराज के पैरों को पकड़ लिया और इस पर बैठ कर फूट-फूट कर रोने लगी। शीलराज ने कहा : हैं, यह आप क्या कर रही हैं?

किंतु उसके रोने में कोई कमी नहीं आई। जैसे आज युग-युग का बाँध टूट गया था। बार-बार सुबकते होठों में जाने कब का सूनापन, कब का दाह, कब का अतृप्त आज जोर-जोर पिघला जा रहा था मानो। छलिया! यही है तेरे जीवन की आसक्ति का रूप? यही है तेरे स्नेह और सत्य की आकार? तू कहाँ जा रहा है? क्यों तुझे मुझे जला-जला कर कुछ सुख मिल रहा है? हे तू जानता है मैं अबला हूँ, तेरे सिवाय मेरा कोई नहीं। फिर इतनी निर्दयता क्यों? लगता था जैसे उस रुदन का कहीं अंत नहीं है। उमानाथ का मन भीतर ही भीतर शंका से भर उठा। यह वह क्या देख रहा था! रामनाथ की कुल वधू आज थ्येटर के इस भाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में जहाँ उतरी-फुतरी नाचने वाली रहती हैं ! उसने उसका हाथ पकड़कर कहा : उठो महालक्ष्मी ! मुझे तुमसे डर कर तुम्हारा अपमान करने की आवश्यकता नहीं । उठो, मेरे साथ आओ । मैं ही तुम्हारा उमानाथ हूँ।

उसके हाथ के स्पर्श से जैसे महालक्ष्मी जाग उठी । वह खड़ी हो गई। उमानाथ उसके हाथ को पकड़े पर्दों की आड़ में उसे अपने टेन्ट की ओर खींच ले चला, एकांत में । जहाँ उसे कोई भय नहीं था । वहाँ पहुँच कर उसने उसे बिठा दिया और उद्भ्रांत स्वर में पूछा : महालक्ष्मी ! तुम यहाँ ! कैसे आईं, कौन, लाया तुम्हें ।

उसके स्वर में घबराहट थी । महालक्ष्मी इतने दिन बाद अपने पति का यह व्यवहार देख कर विक्षुब्ध हो गई । जब उमानाथ को सबने छोड़ दिया था, तब उसी ने उसे अपने सब गहने दे दिये थे। क्यों ? क्योंकि वह उसे अपना समझती थी, अपना सर्वस्व समझती थी और उसका बदला क्या मिला है उसे ? यह उपेक्षा ? उपेक्षा जिसे घृणा तक कहने में कोई हानि नहीं है । उसने कोई उत्तर नहीं दिया। रोते-रोते उसकी हिचकी बँध गई । उमानाथ सकते की सी हालत में खड़ा रहा । उसने उसके निकट बैठ कर कहा : महालक्ष्मी । धीरज धरो । रोओ नहीं ।

एकदम जैसे महालक्ष्मी भभक उठी : मुझे रोने का भी अधिकार नहीं है।

उसके आँसू भरे नयनों को देख कर उमानाथ का सारा ढोंग तरल होने लगा । किंतु उसने कहा : स्त्री की आँखों में आँसू देख कर मुझे सब से अधिक घृणा होती है, क्योंकि यह उसकी कमज़ोरी की निशानी है । अगर मुझे तुम रोकर जीतना चाहती हो, तो मैं यही समझूँगा कि राह पर किसी भिखारी ने मुझे अपने घाव दिखा कर मुझसे दो पैसे माँगे हैं।

महालक्ष्मी ने आँसू पोछ लिये । और कहा : आप मुझसे सब कुछ कह सकते हैं । आप मेरे देवता हैं । लेकिन सब कुछ होने पर भी मेरे भीतर भी मनुष्य का हृदय है ।

उसके इस प्रकार बातचीत करने पर उमानाथ सुस्थिर होकर मुस्क-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राया। उठा और उसने बोतल निकाली और गिलास में उँडेल कर कहा : मुझे तुम्हारा यह रूप शक्ति देता है। तुम अच्छी लगती हो। फिर कहा : पियोगी ?

महालक्ष्मी चकित सी देखती रही। उसने पूछा : शीलप्रभु की साधना की वास्तविकता यह है ?

उमानाथ हँसा। उसने कहा : सारी दुनिया मक्कारी पर चल रही है। पियोगी। डरो नहीं। ड्राई जिन है। इसमें एक सिफत है। मुँह से बदबू नहीं आती।

महालक्ष्मी आँखें फाड़े देखती रही। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उमानाथ ने पूरा पेग चढ़ाकर कहा : तुममें साहस नहीं है। तुम मुझसे सच्चा प्रेम नहीं करतीं। तुम अपने धर्म से ज्यादा प्रेम करती हो। एक नियम, एक रूढ़ि को ज्यादा चाहती हो। अर्थात् अगर मुझसे तुम्हारा ब्याह न होता तो तुम किसी भी पुरुष को इसी तरह अपना देवता बनाकर पूजा करतीं। फिर तुम्हें मेरी क्या जरूरत है ? तुम्हारे पास एक बालक है, संपत्ति है, गृहशालीनता है, तुम फिर मुझे क्यों चाहती हो ?

महालक्ष्मी सुन रही थी। उमानाथ कहता जा रहा था : तुम यह आईं कैसे ?

'ददुआ के साथ कानपुर आई थी। जनाने दर्जे में बैठी थी। भाभी वहीं थीं। उन्होंने कहा मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी चाहिये। क्या आप मेरे वही हैं या और कोई।'

'और अगर मैं वही न होता तो आज तुम पर पुरुष से सम्भाषण करने के अपराध में लिप्त हो जातीं।'

महालक्ष्मी का हृदय कसमसाने लगा। वह कह उठी : आज क मैंने आपसे कुछ नहीं कहा। पर आज कह कर ही रहूँगी। आप हर किसी के साथ रह सकते हैं ?

उमानाथ ने आँखें उठाईं। कहा : नीरा की बात कहती हो ? वह तुम्हारी तरह धर्म को प्यार नहीं करती। मुझसे करती है। यदि मैं कहूँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शराब की जगह मेरे साथ जहर पीले तो पी जायेगी। तुम उसके विषय में कुछ नहीं कह नहीं सकतीं।

'जहर !!' महालक्ष्मी ने फूत्कार किया : 'आप दोनों में इतना साहस नहीं है। यह सब विलास का आडम्बर है।'

'तुम कह सकती हो।'

महालक्ष्मी ने फिर कहा : यह आप किन मजदूरों की सेवा कर रहे हैं।

उमानाथ जैसे तैयार था। उसने कहा : वह दिन अभी बहुत दूर है। मुझे अपने विश्वासों से आस्था उठ गई। मैं मनुष्य से घृणा करता हूँ। मुझे उसके समाज और अस्तित्व से घृणा है। उस सबके बारे में अब मैं सोचना भी नहीं चाहता।

'मुझे आपसे यही आशा थी।'

उमानाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। महालक्ष्मी ने फिर कहा : तो फिर मुझे क्या आज्ञा है ?

'जो तुम चाहो।'

'इस ढोंग को छोड़ कर घर नहीं लौट सकते ?'

'बहुत आगे आ गया हूँ। अब इतना अंधेरा छा गया है कि जिसे तुम उजाला समझती हो, उससे मुझे डर लगने लगा है। मुझे अकेला छोड़ दो।'

'पर मैं क्या करूँगी ?'

'तुम्हें मेरी जरूरत किस लिये है !'

उस छोटे से प्रश्न को सुनकर महालक्ष्मी ने सिर झुका लिया। फिर धीमी आवाज में कहा : जिसे मैंने जीवन भर देवता समझा और जिसकी एकटक, एक मन से पूजा करती रही, वही मुझसे आज यह पूछेंगे यह मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। एक दिन आपने कहा था कि आपने किसी मेम से ब्याह कर लिया था, आप उससे प्रेम करने लगे थे। मैंने कुछ नहीं कहा था। मैं जानती हूँ अनेक विवाह करना पुरुष के लिये कोई नई बात नहीं है। स्त्री की सौत आटे की नमी बुरी लगती है, प्रेम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने कुछ नहीं कहा। लेकिन आज आँखों देख रही हूँ, मेरा स्वामी एक नाचनेवाली के साथ कुल की मर्य्यादा भूल कर, शराब पीकर थ्येटर में खेल रहा है, आप समझते हैं मेरा ज़िन्दा रहना अब संभव है?'

उमानाथ ने अविचलित स्वर से कहा: यही तुम्हारे साहस की अंतिम सीमा हो सकती है कि मैं सुनूँ कि तुमने आत्महत्या कर ली है।

आत्महत्या !! शब्द सहालकुमारी के कानों में वज्र-सदृश लगा। उसने सिर हिला कर कहा: वह कायर ही करते हैं। मैं संसार में अकेली नहीं हूँ। मेरे पास मेरा पुत्र है। अभी वह एक सहारा है। मैं आत्महत्या नहीं कर सकती। मैं इसमें तुम्हारे प्रति का प्रायश्चित नहीं समझती। मरने के बाद भी मुझे उसी लोक में जाना है तुम नहीं जाओगे। विवाह का बंधन खेल का बंधन नहीं है। स्त्री के लिये यह कहीं नहीं कहा गया कि पति के छोड़ देने पर वह आत्महत्या कर ले। जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगी। तुम्हारे अनहोने कामों का प्रायश्चित मैं इसी जीवन में घुल-घुल कर करूँगी। जब तक मेरे हाथ में चूड़ियाँ हैं, माथे में सिंदूर की रेखा है, सौभाग्य का टीका है, तब तक मैं तुम्हारे लिये हूँ। पर तुम मेरे लिये उसके बाद भी हो।

उमानाथ ने एक पैग और पिया। वह अपनी शक्ति को फिर से संचित करना चाहता था। पूछा: जिधर से आई हो उधर कोई तो नहीं था?

'कोई नहीं।'

'किसी ने देखा तो नहीं?'

'नहीं।'

'पर तुममें इतना साहस क्यों हुआ?'

'मैं नहीं जानती। पर जानती हूँ मैंने कोई पाप नहीं किया।'

'क्या तुम फिर जाओगी?'

'आप आज्ञा दें तो फिर कोई नहीं रोक सकेगा।'

'दादा भी नहीं?'

'नहीं।' फिर कुछ रुककर: 'आप ही दादा से कह दें।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'घर छोड़ दोगी ?'

'मेरा घर आप हैं ।'

'पहले क्यों न सोचा था ?'

'तब आप किसी बड़े काम के लिये जा रहे थे । मैंने सब कुछ सहना स्वीकार कर लिया था ।'

उमानाथ झिझका । कहा, 'अब क्या करोगी ?'

'आप बताइये ।'

'मैं नहीं जानता ।'

'तो मैं आपके साथ रह सकती हूँ ?'

'यहाँ ।' वह चौंका ।

'क्यों ?'

'नहीं यह स्थान तुम्हारे योग्य नहीं ।'

'आपके योग्य है । मेरे भी योग्य नहीं ?'

उमानाथ उत्तर नहीं दे सका । महालक्ष्मी ने अपनी विजय को समीप समझा । कहा, 'आप छोड़ दीजिये यह सब ।'

उमानाथ ने सिर हिलाया और वह हँसा, 'ममता ! स्नेह ! बंधन ! नहीं-नहीं महालक्ष्मी, मैं अब घेरे में बन्द नहीं रह सकता । मैं अबाध रहना चाहता हूँ ।'

और उस समय पुरुष की दुर्दमनीय अहंकार की भावना उसकी आँखों में भयावह होकर चमक उठी । महालक्ष्मी के नयनों की श्रद्धा से वह टकराई । और स्त्री के हृदय में प्रतिस्पर्धा की बिजली चमकी । वह नहीं छोड़ सकती, नहीं छोड़ सकती, और वह ऐसे हिल उठी, जैसे पत्थर के चारों ओर जलधारा फेनिल होकर बहती है, काटती है, पर युगों में भिगोती है, पर ऊपर ही ऊपर, और पत्थर कुछ नहीं समझ पाता ।

उमानाथ उठ कर खड़ा हो गया । उसने कहा : बहुत हुआ । अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे तुमसे कुछ भी नहीं कहना। अच्छा है अब तुम चली जाओ। कोई देख लेगा।

महालक्ष्मी उठ गई। और उसके पाँवों के पास बैठकर कहा : चले जाओ। बड़ी आस थी। यदि तुम इतने निष्ठुर और हृदयहीन हो तो मेरे सुहाग को कुचलकर चले जाओ।

उमानाथ का चरण उठा। एक पग, दो पग, तीसरा उठने ही वाला था। महालक्ष्मी ने फिर कहा : जानते हो तुम क्या कर रहे हो।

'क्या ?' उसने मुड़कर पूछा।

'तुम मेरे हृदय की सारी आशाओं को कुचल रहे हो।'

'मैंने कह दिया मुझे मेरे रास्ते पर छोड़ दो।'

महालक्ष्मी चुप।

'तुम मुझे नहीं रोक सकतीं।'

वह फिर न बोली।

'जिस राह पर मैं जा रहा हूँ उस पर चलने से मुझे धन, सम्मान, कुल की मर्य्यादा, कुटुम्ब का प्रेम कोई नहीं रोक सका।'

'तुम इतने निर्मम क्यों हो गये हो ? तुम सबसे इतना डरते क्यों हो ?'

'डरता नहीं हूँ। सब कुछ जैसे हृदय को खाये जा रहा है। मैं कहीं भी संतोष नहीं पाता। जिधर देखता हूँ मनुष्य दुखी है, यातना से ग्रसित है। मैंने जीवन में एक योग लिया था। आज मैं उस योग से भ्रष्ट हो गया हूँ। अब मुझे कोई नहीं रोक सकता। जिन कमजोरियों ने मुझे गिराया था, मैं उन्हीं को शक्ति समझने लगा हूँ। मैं जानता हूँ यह तुम नहीं समझ सकोगी।'

'वह ग़लत है। मनुष्य वही है जो गिर कर उठता है।'

'लेकिन फिसलकर गिरने वाला आदमी सदैव आगे गिरता है। तुम चाहती हो वह पीछे गिरे। यह असम्भव है। मैं जा रहा हूँ। मैं चाहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ तुम मुझे भुला दो। आज से मेरा याद भी भुला दो। तुम समझ लो तुम विधवा हो गई हो।'

महालक्ष्मी का मन टुक-टुक होने लगा।

'मेरा यह अधिकार भी छीन लेना चाहते हो निष्ठुर?'

उमानाथ उस स्वर को सुनकर अवाक् रह गया। उसमें एक अजीब शक्ति थी। और महालक्ष्मी उठी। उसने अपने जूड़े में से दो फूल निकाल कर उमानाथ के चरणों पर रख दिये और वहीं पर बैठ गई। उसने कहा : एक दिन तुमने आग के फेरे लेकर शपथ की थी कि तुम मुझे जीवन सागर से पार करोगे। उसी शपथ की पवित्रता में कभी नहीं भूल सकूँगी। तुमने कहा था कि जैसे बैलों की जोड़ी साथ-साथ जुआ उठाती है, तुम मेरे साथ-साथ जीवन का जुआ उठाओगे लेकिन तुमने मुझे छोड़ दिया। मुझसे मत कहो कि मैंने तुम पर कभी अहसान किया। आज ही आई हूँ; तुम्हारे पास कितना साहस करके, कि सुनूँगा तो नाराज़ होंगे। लोग मेरे चरित्र पर उँगली उठा सकते हैं, पर मैं उसे सह लूँगी। लेकिन तुम अगर डरते हो कि, मैं अपने पतिव्रत को दिखाने के लिये तुम्हारी असलियत खोल दूँगी तो तुम बेकार डरते हो। यह फूल मेरे सुहाग के चिन्ह हैं। इन्हें उन्हीं चरणों पर धरती हूँ जो एक दिन मेरे थे। आज वे मिट गये हैं। मुझे इसका दुख नहीं। मेरा मार्ग हाल खोटा हुआ। मुझे अविश्वास था, तुम मुझे मिलोगे, और यही विश्वास आज भी मेरे मन में समाया हुआ है। पर विलायत की हवा ने तुम्हारे दिमाग को बिगाड़ दिया है। मुझे इसका दुख है। मैं तुमसे भीख नहीं माँगती। यह मेरा अधिकार बोल रहा है।

उसका स्वर काँप उठा। उसने कहा : मैं कभी तुम्हारी याद को भुला नहीं सकूँगी, पर चाहती हूँ, एक दिन जो अन्याय तुम मेरे साथ कर रहे हो, भगवान् तुम्हें उसे समझने की सुबुद्धि दे। किसी भी अवस्था में, किसी भी हालत में, तुम मेरे पति हो। यदि तुम धर्म विरुद्ध हो, तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारी याद ही काफी है। मुझे कुछ नहीं चाहिये। मेरे हृदय में जो काँटा बहुत दिन से चुभ रहा था, आज उसकी नोक घिस गई है।

महालक्ष्मी ?' उमानाथ ने कहा, 'तुम पागल हो गई हो। चली जाओ। बहुत देर हो गई है।'

महालक्ष्मी हसी। कहा : क्यों ? पति के पास भी मेरे रहने में कोई बुराई है ?

'लेकिन अब मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ।'

'हाँ अब तुम योगी जी हो।' वह उन्मत्त सी हसी। 'अब तुम साधना में लग गये हो।'

'उठो !' उमा ने उसकी बाहों को पकड़ कर उठा लिया। वह चुप चेष्टाहीन थी। उमानाथ के शरीर को महालक्ष्मी ने कस लिया। उसकी आँखों में इस समय एक उन्मत्त चचलता थी। स्त्री का अतिम वार था। यदि यह भी खाली चला गया तो ! उमानाथ का हृदय इस ऊष्मा से झनझना उठा। वह मदिरा पी-पी कर उत्तेजना का दास हो चुका था। पर वह झुका नहीं। उसके भीतर एक डर समा गया। जिस आल्हाद से वह बाज़ारू स्त्रियों को आलिङ्गन में भर लेता था। उससे अपनी ही पत्नी को नहीं भर सका। महालक्ष्मी की देह मानो एक जलता हुआ अंगारा थी। उसने उसे हटा दिया। महालक्ष्मी जैसे जाग उठी। वह एकदम पाषाण की मूर्ति की तरह बैठ गई। शात, स्पंदनहीन, जैसे प्राण हीन पुतलियों पर जीवन अग्नि के समानान्तर तारिकाएँ हसने लगी थीं।

'महालक्ष्मी !' उमा ने धीरे से कहा।

बाहर से स्वर आया : शील प्रभु ! शील प्रभु !!

नौका की आवाज सुनकर उमानाथ काँप उठा। उसने उसे झकझोर कर कहा : महालक्ष्मी ! महालक्ष्मी !! जाओ !!

किन्तु वह नहीं हिली। आवाज फिर आई, शीलप्रभु ! शीलप्रभु !!

राधा ! आता हूँ।' कहता हुआ महालक्ष्मी को अकेला छोड़कर उमानाथ बाहर निकल गया। महालक्ष्मी जैसे चैतन्य हो गई। उसे भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिस्थिति का ज्ञान हुआ और डर लगा। बाहर दूर होती हुई एक हँसी की आवाज सुनाई दी। महालक्ष्मी ने देखा। उसके फूलों को उमानाथ ने कुचल दिया था। उसने वे दोनों फूल उठा कर कुर्ती में रख लिये। झुक कर उस स्थान पर माथा टिकाया। उस स्थान की धूल समेट कर कुछ माथे में लगाई, कुछ गले में और वह रो पड़ी।

इस समय नाटक में कोई बाँसुरी बजा रहा था। फिर अन्य वाद्य बजने लगे। महालक्ष्मी उठ खड़ी हुई।

जब वह छिपकर अपने स्थान पर पहुँची, राजेश्वरी ने पूछा, वही हैं न ?

महालक्ष्मी ने शून्य दृष्टि से देखा। वह समझ गई। आगे कुछ भी पूछने का साहस नहीं हुआ। उसे आश्चर्य्य हुआ।

पूछा : किसी ने तुम्हें आते जाते तो नहीं देखा ?

महालक्ष्मी जैसे जागी। कहा : शायद नहीं।

तीसरा परिच्छेद

'तुम्हें उसे पहले ही अपने साथ ले लेना चाहिये था। अरे सब खाते हैं; बाबू श्याम नारायण जी वह भी खा लेता' लाला रामकिशोर ने झुककर कहा : लेबर लीडर ? लेबर लीडर !! ऊहुँ ! महज़ अपनी लापरवाही रही। वर्ना वह क्या कर सकता था ?

'कौन ?' वासुदेव ने अपनी कुर्सी पर तन कर पूछा। उसके प्रश्न से दोनों ही चौंके। 'आप लोग' वासुदेव ने कहा : ज़रा धीरे-धीरे बातें कर रहे थे, मैं समझा कोई खास बात हो रही है, पर इधर जब आपने लेबर लीडर कहा तो मैं चौंक उठा।

लाला रामकिशोर के ड्राइंग रूम में देशी और विदेशी दोनों तरह का इंतज़ाम था। वे तख्त पर गावतकिया लगाये बैठे थे, श्यामनारायण सामने बैठा था। उसके घुटनों पर एक तकिया रखा था और कुहनियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को उन पर टेककर हथेलियों पर गाल रखे था; वासुदेव एक गद्देदार कुर्सी पर अभी तक फैला हुआ उस गुदगुदी कुर्सी का सुख ले रहा था।

'इसलिये तो', लाला रामकिशोर ने कहा : आपको तकलीफ़ दी गई है। वर्ना आप जैसे मनमौजियों से भी कभी कोई काम लिया गया था!

वासुदेव सिर्फ मुस्कराया। श्यामनारायण मूर्खता भरी दृष्टि से खीस निपोरे देख रहा था। रामकिशोर के चर्बीदार मुख पर एक चमक थी, जैसे उसने अंडी का तेल लगा लिया था।

नौकर ने आकर इत्तला दी कि कुछ लोग आये हैं।

'उन्हें भी तर ले आओ' लाला रामकिशोर ने उत्तर दिया। नौकर चला गया। आने वालों में दयानाथ, मार्कन्डेय, मुंशी इक्बालशंकर मौलाना हामिद अली और 'आलाप' संपादक श्रीरामकृष्ण थे। आज डाक्टर हीरा लाल नहीं आ सके। इनके बैठने पर, बाद सलाम दुआ के लाला रामकिशोर ने कहना शुरू किया : तो मैं आप को बता दूँ कि किस्सा असल में यों है कि ----

'जो कुछ फ़र्मायेंगे वह सब आप ही', मौलाना हामिद अली ने फब्ती कसी। लोग मुस्कराये। लाला रामकिशोर को बोलने में काफी दिक्कत होती थी। पीढ़ियों से उनके पुरखे हकलाने वाली जात में थे।

'कहने दीजिये मौल--', दयानाथ ने मुस्करा कर कहा।

लाला रामकिशोर इस बीच में चौकन्ने हो गये थे। टैक्स और सुपर टैक्स देकर सरकार को दाबते थे। पर सरकार दाब में आती न थी; इसलिये देशभक्त थे। बीमारी हमेशा लगी रहती थी। लोग उनसे अप्रसन्न थे। उनके बारे में सबकी राय थी कि दुरंगी चाल चलने वाले थे। उनका जेल न जाना और भी घातक सिद्ध हुआ था। उनके चेहरे पर एक अ[illegible]स्कृतिक छाया थी। रामकृष्ण जब कविता सुनते थे तो वे चुपचाप [illegible] रहते थे और कभी-कभी कवि सम्मेलनों में १०१) या १५१) के पुरस्कार घोषित कर देते थे जिन्हें, कविगण स्वीकार कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खेते थे। अपनी स्त्री से उनका संबंध बड़ा मौलिक था, क्योंकि उनकी पत्नी उनकी प्रेयसी कभी भी नहीं बन सकी।

लाला रामकिशोर ने 'खैर साहब' कह कर शुरू किया : कम्पनी चल रही है। डिवीडेन्ट बाँटे जा चुके हैं लेकिन अब एक परेशानी शुरू हो गई है।

सब चुप रहे। वे कहते रहे : अब मजदूरों को लोगों ने भड़काना शुरू कर दिया है। कहते हैं कि जिस कम्पनी में इतने मुनाफे होते हैं उसमें भी मजदूरों को इतनी कम तनख्वाह क्यों दी जाती है?

'उफ्व !' मौलाना हामिद अली ने कहा : उनकी उफ उर्दू की थी और उसके अन्त में 'वाव' लगा रहता था, तभी वे पूरा उच्चारण करते थे।

'तो गोया' मुंशी इकबाल शंकर ने कहा : अब वे स्वदेशी व्यौपार भी नहीं बढ़ने देंगे?

राम किशोर ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वे अपनी ही बात कहते रहे—वे लोग कहते हैं कि हम लोग बेईमान हैं। चूँकि हिन्दुस्तानी पूँजीवादी आगे नहीं बढ़ पाते, तभी वे पश्चिमी पूँजीवादियों से जलते हैं। अब आप ही इस बारे में राय दें। कल मैंने यहाँ के तीन लेबर लीडरों से बात चीत की। दो तो खाऊ थे। खा-पीकर तैयार हो गये कि सारा जोश मजदूरों में से बरगला कर निकाल देंगे। वे तो अपने को इन्डिपन्डेन्ट कहते हैं, पर एक आदमी नहीं मानता।

'कौन?' रामकृष्ण ने पूछा, 'वह कौन है?'

'वह हैं कम्युनिस्ट ब्रह्मदत्त, हरदत्त तगादगीर का बेटा। भूखा और बेईमान। आपकी कांग्रेस में भी डिक्टेटर था, और जेल भी गया था। और कहूँ? उसने चुनाव में दयानाथ जी को हरा दिया था, और अब कहीं से उसे मालूम पड़ गया है कि वे इसमें काम नहीं करते, केवल डाइरेक्टर हैं। तब ही से मेरा खयाल है, वह एकदम भड़क गया है, और कोई समझौता करना नहीं चाहता। ब्रह्मदत्त का कानपुर में काफी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असर है। और शहरों में तो ज्यादातर शहर से दूर मिल कारखाने होते हैं। कमबख्ती है कि कानपुर में यह आराम नहीं है। यहाँ तो चट मँगनी पट ब्याह की तरह खबर पहुँच जाती है। वे लोग अभी तो बातें कर रहे हैं। मजदूर उसके पीछे इकट्ठे हो रहे हैं। और सुना गया है कि वे मीटिंग भी करते हैं। हमें पुलिस की मदद मिलनी चाहिये। इसके लिये हमें कोई कोशिश नहीं करनी है क्योंकि कम्युनिस्टों से अँगरेज़ी हुकूमत सब से ज्यादा डरती है। तभी तो उन्हें गैर कानूनी करार देकर उन पर अभी मुकदमें भी चलाये गये थे। एक कम्युनिस्ट को पकड़ लो कमबख्त दूसरा पैदा हो जाता है।

'मुट्ठी भर तो आदमी हैं, कुल हिन्दुस्तान में।' रामकृष्ण ने काटा।

'हाँ। रूस में उनका राज है।' रामकिशोर ने उत्तर दिया।

'तो क्या हिन्दुस्तान में भी उन्हीं का राज है। अभी तो बहुत दिन लगेंगे।

जब उनका राज आयेगा तब की तब देखी जायेगी। अभी से क्या चिंता?' रामकृष्ण ने उत्तर का प्रत्युत्तर दिया।

'चिंता!' रामकिशोर ने कहा: वह तो कहता है कि अब किस बात का समझौता? उसने तो कहा है —बोनस दो, मज़दूरों की तनख़ा बढ़ाओ, उन्हें मुनाफ़े में से हिस्सा दो .....

मुंशी इकबाल शंकर ठठा कर हँसे। बोले: और उनकी पूजा करो।

वासुदेव अभी तक चुप था। उसने कहा: हम लोग तो अहिंसावादी हैं। मजदूरों की हड़ताल होगी। आप पुलिस से गोली चलवाएँगे यह तो विदेशी सरकार की सहायता लेना हुआ।'

उसके इस प्रश्न से सब चौंके और रामकृष्ण ने मार्कण्डेय की ओर देख कर कहा: यह तो ठीक है। स्वदेशी नाम रख कर हमें यही प्रयत्न करना चाहिये कि जहाँ तक हो हम विदेशियों को अपने साथ न लें।

मार्कण्डेय अब भी नहीं बोला। दयानाथ तो ऐसा बैठा था, जैसे वह उस मीटिंग में था ही नहीं। इसी समय नौकर ने भीतर प्रवेश किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और किसी के आने की सूचना दी। रामकिशोर ने पूछा, 'कौन है?'

'ब्रह्मदत्त जी आये हैं।' नौकर ने उत्तर दिया।

'ब्रह्मदत्त? और आपके यहाँ?' रामकृष्ण ने सबकी भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा।

'हाँ, हाँ, भाई,।' रामकिशोर ने कहा, 'वह अपने साथ ही तो कांग्रेस में है नहीं, बल्कि नेता हैं। और उसी की वजह से शिवराम जी भी आज नहीं आये हैं हालांकि वे कांग्रेस कमेटी के प्रधान हैं।'

'चंदे के पैसे खाकर, स्वयं पूंजीवादी बनने वाले आदमी आज कम्युनिस्ट के साथ हैं। ताज्जुब?' दयानाथ ने व्यंग्य से कहा।

'वह तो ठीक है,' लाला रामकिशोर ने मुस्करा कर कहा। और फिर नौकर से कहा: बुला लो।

नौकर चला गया। सब खामोश रहे जैसे वे किसी बड़े अप्रिय व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे। कमरे में ब्रह्मदत्त ने प्रवेश किया। वह एक कुर्ता, धोती और गांधी टोपी लगाये था। पाँव में चप्पल थी और उसके टखनों तक धूल छा रही थी। उसे देख कर यह नहीं लगता था कि वह कांग्रेस का कोई लीडर है। उसके चेहरे पर एक रूखापन था और एक सहज घृणा का भाव तीखा होकर झलक उठता था। उसको देख कर किसी ने भी उसका स्वागत मुस्कराहट से नहीं किया। उनकी यह भावना देख कर जैसे ब्रह्मदत्त में भी एक प्रतिस्पर्धा का भाव जागा। उसने किसी से नमस्ते नहीं किया।

लाला रामकिशोर ने कहा: आइये ब्रह्मदत्त जी। विराजिये।

ब्रह्मदत्त चुपचाप बैठ गया। कमरे में एक खिचाव सा था। वासुदेव की आँखों में रहस्य की भावना जाग उठी। उसने आन्दोलन के समय गाँव-गाँव घूम कर प्रचार किया था। स्वयं जेल गया था। रामकिशोर के अतिरिक्त प्रायः सब ही जेल गये थे और यशस्वी बन कर लौटे थे। ब्रह्मदत्त से वे अपने त्याग की अहम्मन्यता में जैसे किसी भी प्रकार दबने को तैयार न थे मार्कण्डेय अब तक देख रहा था। अब उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुस्करा कर कहा : अब तो आपके दर्शन भी दुर्लभ हो गये हैं ब्रह्मदत्त जी। ऐसा हमने क्या अपराध किया है?

ब्रह्मदत्त ने कहा : अपराधी तो मैं था, जिस पर पुलिस की निगाह थी कि मैं कम्युनिस्ट हूँ। हमारे साथी उमानाथ तो चले गये, वे ठहरे एक राजा के बेटे। ऐसे विलायत से साम्यवाद फैलाने वालों की दाल अब हम पर नहीं गलेगी।

मार्कण्डेय : क्यों क्या हुआ ?

ब्रह्मदत्त : हुआ क्या, वे विलायत नहीं गये।

मार्कण्डेय : क्यों ?

ब्रह्मदत्त : क्योंकि यह भी उनके लिये एक खेल ही था। ये लोग अपने वर्ग की ऐयाशियों में पले हैं उन्हें छोड़ नहीं पाते।

'और आप ?' वासुदेव ने व्यंग किया।

'हम ?' ब्रह्मदत्त ने उत्तर दिया : जीवन के कठिन संघर्षों में पले हैं। जानते हैं कि हमारा स्वार्थ ही सब कुछ नहीं है। जनसमाज का, मजदूर का कल्याण ही हमारा कल्याण है, क्योंकि वही मनुष्यता की विजय है।

वासुदेव मुस्कराया। उसने कहा : मनुष्यता की विजय का यह रास्ता कभी नहीं हो सकता ब्रह्मदत्त जी। उसके लिये आप महात्मा गांधी को छोड़ दें तो ठीक रहेगा। मार्क्स और लेनिन के पीछे चलने वाले तो भौतिकवादी कल्याण कर सकते हैं। उन्हें भारतीय संस्कृति की प्राचीन गरिमा का कुछ भी महत्त्व नहीं मालूम। जो वर्ग-भेद से हिंसा करते हैं, वर्ग भेद से मनुष्य की दयालुता पर विश्वास नहीं करते। अभाव ही का रोना जिनकी शक्ति है। आत्मा के बल को प्रकृति के विरुद्ध कहते हैं। अपनी पाशविकता को छोड़ने को उद्यत नहीं हैं। वे उसे भावना ही भावना कहते हैं। हमारी अहिंसा की इस अजीब लड़ाई को देख कर मखौल उड़ाते हैं। हत्या ही जिनकी शक्ति है। चरित्र के अभाव को वे कोई महत्व नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देते। अभाव क्यों है, क्योंकि मनुष्य में पाशविकता है, अन्यथा यह जनता भेड़ बकरियों की तरह क्यों चलती ? कल क्रान्तिकारी अपने मार्ग को सर्वश्रेष्ठ कहते थे। वे यह मानने को तैयार नहीं कि उनका रास्ता संयत आत्महत्या है, निराशा का मार्ग है, हत्या है। आप अहिंसा को व्यर्थ मानते हैं। आप ईसा और गांधी को उच्च वर्गों का समर्थक मानते हैं, उन्हें जो एक नये समाज को बनाना चाहते हैं। आप उस समाज को चाहते हैं जिसमें भय ही जीवन का आधार है। आप कुत्ते को रोटी डालकर उसकी भूख मिटाकर उसे गुलाम बना लेना चाहते हैं। आप हमारे त्याग को झूठ कहते हैं। अहिंसा में मिटाओ नहीं है, मिटो है। समर्थ कौन है ? शासक, नहीं, सत्य का बल समर्थ है। आप जिस राह पर चलते हैं उससे हृदय नहीं बदलते। कल यही शोषित शोषक बन जायेंगे। स्टालिन की तरह आप सब को कुचल सकते हैं। गांधी की तरह आप हृदय से बात नहीं कर सकते। आप गांधी को फरेबी कहते हैं। भगवान, धर्म, महन्त महात्मा सब झूठ हैं। आप के लिये। आप अपने को बदले बिना दुनिया को बदलना चाहते हैं। आप की अहम्मन्याता ही संघर्ष का मूल है। अहिंसा एक अर्ध विकास नहीं, असाधारण साधना है। अहम् ही हिंसा की जड़ है। वह अहम् आप रखकर उसका अभाव बताते हैं और अपने को समाजवादी कहते हैं। आपको अहम् और अहम्मन्यता में भेद नहीं लगता। साधना बहुत कठिन है। संस्कृति के ठेकेदार केवल धनी ही नहीं हैं। गांधी के पास क्या है ? आप मनुष्य की बराबरी चाहते हैं किस आधार पर ? आपके लिये रुपया ही सब कुछ है। अभाव की प्रतिक्रिया ही कम्युनिज्म है। मजदूर मृत है। वह कम्युनस्टि हो ही नहीं सकता। निम्न मध्य-वर्ग में ही कम्युनिस्ट नेतृत्व हैं। ईर्ष्या पर ही अपना मकान खड़ा करके आप त्याग से दूर हैं क्योंकि आप के पास त्याग की साधना के लिये कुछ नहीं। बुद्धिवाद ! कोरा बुद्धिवाद ! पूँजीवाद से भी भयानक ! विनाशात्मक प्रतिहिंसा। दया नहीं चाहते, सामर्थ्य का छल चाहते हैं। राष्ट्रीयता आप के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ढकोसला है। क्या रूस में सब सुखी हैं? आप रूस के गुलाम हैं। आप कहते हैं कि जब तक विश्वक्रांति न हो तब तक अँगरेज़ से न लड़ो। क्योंकि पूँजी का स्वार्थ है, मध्यवर्ग कांग्रेसी है। रूसी नीति ही हमारी नीति होनी चाहिये। आप रूस से पैसा पाकर उसका गुणगान करते हैं। सरकारी नौकर अँगरेजों के पिट्ठू हैं। आप रूस के पिट्ठू हैं। नैतिकता आपके लिये क्या है, विनय, इमानदारी, नेकी, शील, विदेशी बहिष्कार, संस्कृति, दया, त्याग, ममता, अहिंसा ये सब आप नहीं जानते। आप आदर की विजय नहीं चाहते।

वासुदेव हाँफ गया। पर ब्रह्मदत्त मुस्कराता रहा। उसके मौन से सब चिढ़े। रामकृष्ण ने कहा: आज आप अपनी किताब पढ़ कर नहीं आये?

२

इस समय तक ब्रह्मदत्त चुप बैठा था। अब वह उत्तेजित हो उठा। उसने कहा: 'तुम दयालु होनेका ढोंग करते हो? तुम्हारी व्यक्तिगत दानशीलता उनके प्रति है जो समाज के बोझ हैं। मजदूरों की मजदूरी नहीं बढ़ा सकते, हाँ उनसे तुम धर्मादा काट कर मंदिर बनवा सकते हो। अपाहिजों भिखारियों को खिला सकते हो, भीख दे सकते हो, वह हँसा और कहता रहा: मैं सोचता था वासुदेव जी ने यह सब एकदम मुझ पर उबल कर जो हिंसा दिखाई है मैं उसका जवाब दे सकता हूँ। यदि मार्कण्डेय जी कहते तो शायद इसे भी एक अहिंसक रूप में पेश करते। मैं नहीं समझता क्या हिंसा है क्या अहिंसा है? मैं एक सत्य कहता हूँ तो वह हिंसा है वे मुझे अनैतिक और मूर्ख तक कहते हैं, वह अहिंसा है। पर इस सबसे क्या? सवाल बहुत से पूछ डाले गये हैं। और मुझे उनके पीछे डर ही दिखाई देता है। क्योंकि बहुत बार मैं यह सब सुन चुका हूँ। इसलिये इसका आदी हो गया हूँ। मैं जानता हूँ आप सब मुझ से घृणा करते हैं। ठीक ही है। पर जिस ब्रिटिश साम्राज्य और पुलिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
से आप हिंसा बचाते हैं, वहाँ प्रयोग कम से कम व्यवहार में आपका मेरे साथ नहीं है। उनसे भी आप घृणा करते हैं, मुझसे भी। आपके लिये हम दोनों एक हैं क्योंकि हिंसक हैं। पर मैं यह अनुचित समझता हूँ। पुलिस किसी के निहित स्वार्थों की रक्षा करती है, मैं उनकी तरफ से बोलता हूँ जो शोषित हैं। रहा आपकी यह करुणा कि आप स्वयं अंगरेजों को भी दुखी समझते हैं। क्योंकि वे पाप करने को मजबूर हैं, उनके स्वार्थ ऐसे है कि उन्हें शोषण करना पड़ता है, हर व्यक्ति जो अँगरेज है वह बुरा नहीं है, तो मै भी यही मानता हूँ। आप जहाँ सिर्फ अंगरेज को देखते हैं, वहाँ मैं अंगरेजों के साथ ही साथ देशी पूँजीपति जमींदार आदि को भी देखता हूँ। यह भी व्यक्ति के रूप में अच्छे हों, पर वर्ग स्वार्थ में पाप में इन्हें लिप्त होने को विवश होना पड़ता है। तभी मैं वर्ग के अनुसार व्यक्ति को देखता हूँ। मुँह से राम राम करके बगल में छुरी खोदते रहने वाले के प्रति आप संदेह न करें, मुझे कोई सहानुभूति नहीं। मुझे भौतिकवादी कल्याण ही सबसे बड़ा दिखाई देता है। मजदूर तनखा बढ़वाना चाहते हैं। आप आगर अध्यात्मवादी हैं तो भजन करिये और उन्हें उनका दे दीजिये। पर यह आपको कभी मंजूर नहीं। यदि यह भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है तो मैं क्या करूँ? भूखे भजन न होय गुपाला, पुरानी कहावत है। मुझे उस दयालुता में श्रद्धा नहीं जिसकी सामर्थ्य शोषक पर टिकी है। आप कहते हैं मैं वर्ग भेद से हिंसा चाहता हूँ। यह गलत है। वर्ग भेद को कायम रखने की कोशिश ही हिंसा है, जो आदमी आदमी में फर्क डालती है। अभाव के लिये रोना नहीं, मांग करना हमारी शक्ति है, उसके लिये जागरूक रहना हमारी सामर्थ्य है। आत्मा का बल वह है जब मनुष्य मनुष्य को बराबर समझे। पाशविकता वह है कि जो किसी को मिलता है उसे न दिया जाय।

और बातों में टरकाने की चेष्टा की जाये। भावना का आधार व्यवहार है, अन्यथा मुझे उस पर विश्वास नहीं। हत्या साम्राज्य और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
पूँजीवाद की शक्ति है जनता की नहीं। मैं इस अहिंसा की लड़ाई पर हँसूँगा ही जो गरीब से कहती है कि तू चुप रह, कुछ न माँग, इससे पूँजीवालों के हृदय को दुख होता है। आप भी अँगरेजों से कुछ न माँगिये। अंगरेजों को कितना दुख होता है? उफ! और आपकी हर माँग अंगरेजों के सामने भौतिकवादी है, क्योंकि जहाँ तक आध्यात्मिक माँगें थीं वह तो मलका विक्टोरिया ने ही धार्मिक स्वतन्त्रता देकर प्रदान कर दी। उस आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का परिणाम हिन्दू-मुस्लिम दंगे हैं, जिनको आप जैसे भारतीय संस्कृति के पहरुये अभी तक रोक नहीं सके। चरित्र का अभाव किसमें है? उस अशिक्षित मजदूर में जो गरीब है, या उस सेठ में जो टैक्स को बचत करता है, मजदूर के पैसे धर्मादा में काटता है। चरित्र क्या है? अंगरेजों के आने के पहले भी आपकी भारतीय संस्कृति ने वेश्यावृत्ति को जीवित रख कर कितनी गरिमा दिखाई है? जनता भेड़-बकरियों की भाँति तब तक चलती है, जब तक वह अशिक्षित है। उसकी पाशविकता का मूल केन्द्र उसका अशिक्षा और भूख है। मनुष्य की पाशविकता का सर्वोत्तम रूप सत्ता और संपत्तिवालों के शोषण के साधन फौज, पुलिस और जेल हैं। बाकी की कोई पाशविकता नहीं जो समाज में अड़ंगा बना सकती है। घर तो माया है, संसार माया है, तो फिर यह संपत्ति वाले इस माया को छोड़ते क्यों नहीं? जिसे आप परमार्थ का सत्य कह कर सीने से चिपटाये हुये हैं, हम उसके असाम्य को मिटाना चाहते हैं। आप मनुष्य को मनुष्यत्व के अधिकार तक नहीं दे सकते, यह आपके समाज की सभ्यता है जहाँ कुछ लोग लाखों करोड़ों को अपनी दया पर आश्रित समझते हैं। जो जनता को अपने लाभ का साधन समझते हैं वे ही उसे भेड़, बकरी कहते हैं। और आतंकवादी, क्रान्तिकारियों के प्रति जो सम्मान-सूचक शब्द आपने अभी कहे हैं वे वीर भगतसिंह के योग्य ही हैं। निराशा का मार्ग है वह सच है, पर हत्या नहीं है। अपने सत्य का व्यक्तिगत रूप है। उसी का समाजीकरण राष्ट्र है—पूँजीवादी राष्ट्र। आज के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जीवन का आधार भय है—पुलिस है—फौज है। कल जब संपत्ति का समाजीकरण होगा तो मनुष्य लक्ष्मी पूजन न करके मनुष्य पूजन करेगा, हर मनुष्य एक दूसरे के मनुष्यत्व की पूजा करेगा। मैं अहिंसा को सर्व-श्रेष्ठ मानता हूँ। पर कब? ईसा और गांधी की बात आपने अभी-अभी कही थी। ईसा ने गरीबों से कहा : तुम दुखी हो, समान हो, वही गांधी ने कहा। पर उसका फल किसने उठाया? अमीरों और धनिकों ने। ईसा के बाद गुलामों का राज्य नहीं हुआ। शासक वृन्द जब अपनी पुरानी रूढ़ियों को कायम नहीं रख सका, तब उसने नये अच्छे शब्दों की खाल ओढ़ ली, जैसे आज भी बहुत से पूंजीपति, जमींदार कांग्रेस में जाते हैं, या फिर कम्युनिस्ट बनने का ढोंग करते हैं। गांधी क्या कहते हैं? आप क्या करते हैं? आप अहिंसा के प्रचारक हैं। आपने कितने अमीरों, जमींदारों और सेठों से जोर देकर कहा कि अपना हृदय बदल डालिए। तुरन्त ट्रस्टी बन जाइये। कोई नहीं फिर आधी अहिंसा बच रही। गरीब को ही उसके लिये क्यों चुनते हैं? क्योंकि ये एक वेश्या के समान हैं जिसका धन उसकी शक्ति है और गरीब मजदूर और किसान घर की बहू हैं, जिसे आप चाहे जिस प्रकार फुसला सकते हैं? यह गांधी के जीवन का विरोध है। क्यों नहीं वे इसे सुलझा देते? आप हवा में, बातों में एक नया समाज बनाना चाहते हैं?

'तब लोग अहिंसा पर क्यों चलते हैं?' मार्कण्डेय ने पूछा। 'क्यों अहिंसा से प्रभावित हैं?'

'चलते कितने हैं? पर प्रभावित हैं क्योंकि गांधी का सन्देश गाँव गाँव में घूमा है कि मनुष्य की आत्मा अपराजित है। शोषक के हथियारों से न डरो। यही मार्क्स ने कहा था, लेनिन ने कहा था, यदि हो सके तो वैसे ही, अन्यथा शस्त्रों से शोषक को हटा दो। आप कहते हैं शोषक तो वह है ही, अतः उसे हटाओ नहीं। हम उससे सहयोग नहीं देंगे। वह अपने आप मजबूर होगा। भागेगा। वह आपको मारता है, कायर है, उसके पास तर्क नहीं। पर आप क्रान्ति नहीं चाहते। आप मिटना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहते हैं, मिटाना नहीं चाहते। क्योंकि आप समाज के गुणात्मक परिवर्त्तन को नहीं मानते। हर नये निर्माण के लिये एक ध्वंस की आवश्यकता है, यह नहीं मानते। इस प्रकार आपके तर्क और व्यवहार में अंतर आ जाता है। चोर को चोरी करते देख कर आप उसे पकड़ना नहीं चाहते। आप तो उसकी राह में लेट जायेंगे और कहेंगे—'तू चला जा, मुझ पर से चला जा और वह चला जाता है।' ब्रह्मदत्त मुस्कराया। उसने कहा : और कुत्ता आप उसे कहते हैं जो गरीब अशिक्षित हैं। याद रखिये गांधी उसी के बल पर चलते हैं। पर रुपया वे अमीरों से लेते हैं। क्षमा कीजिये पत्नी के लिये वेश्या से रुपये लेकर गहने बनवाना बुद्धिमत्ता नहीं है। आप तो उस कुत्ते को रोटी भी नहीं डालना चाहते, हाँ चाहते हैं कि वह भूखा कुत्ता आपकी संपत्ति की रक्षा किया करे? अहिंसा का सिद्धान्त गरीब से कहता है मिटो, मिटाओ नहीं। परोक्षरूप क्या है? अमीरों के लिये है मिटाओ, मिटो नहीं। जिस समाज में अमीर गरीब नहीं होंगे, वहाँ अहिंसा ही चलेगी। संपत्ति ही मनुष्य के पशुत्व का जन्म है। यह इतिहास बताता है। मार्क्स ने यही कहा है। आपका त्याग आपकी अमीरी के अन्यायों से ऊब जाना है, जैसे अजीर्ण में खाना नहीं भाता।

आपके अखबार उन्हें नहीं सराहते जो गाँवों से जेल जाते हैं और मरते हैं, कटते हैं, जेल में पिटते हैं। आपके सामने पैसा ही सबसे बड़ी चीज़ है। यदि सत्य का बल ही समर्थ है तो सत्य शोषितों की ओर है। आप जैसे शोषित कल शोषक बनेंगे। यह मुझे विश्वास है, पर जिस समाज में मजदूर और किसान शोषक है, वह शोषण मनुष्य पर नहीं, प्रकृति पर विजय है, क्योंकि जब व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है तो शोषण नहीं है।' ब्रह्मदत्त ने झुककर कहा : 'व्यक्तिगत असंपत्ति का मतलब नंगा रहना नहीं है, न भूखा रहना। हर किसी को भोजन, नौकरी, शिक्षा की सुविधा हो; पर किसी का मिल, कारखाने, ज़मीन और खानों पर व्यक्तिगत अधिकार न हो। मुनाफे के लिये पैदावार न हो, जनता की जरूरत के लिये जनता की सरकार चीजें पैदा करे। कैसा भाईचारा!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कैसा उज्वल भविष्य है वह ? गांधी को जब जवाब देना पड़ता है तब वे ईश्वर से सलाह करते हैं, लेकिन स्टालिन अगर ईश्वर की ओर देखे तो रूस के जाग्रत मजदूर किसान उसे कल कान पकड़ कर निकाल सकते हैं। स्टालिन का व्यक्तित्व महान् है, श्रद्धा के बल पर नहीं, बुद्धि के बल पर; पर रूस की जनता के सामने देखा जाये तो वह कुछ नहीं। जनता महान् है। भगवान, धर्म, महन्त, महात्मा पर मैं कुछ नहीं कहूँगा। वे एक फटे कपड़े के समान हैं, जिसमें बार-बार संतों ने इतने पैवंद लगाये हैं, पर आदमी कभी उस कपड़े को ओढ़कर ठंड से नहीं बच सका है। मैं यदि योगी और महात्मा बन जाऊँ तो समाज नहीं बदलता। पर जब समाज का शासक बदलता है, तो व्यवस्था का परिवर्तन मनुष्य को बदल देता है। मैं बारह बरस तक जूते गाँठना अच्छा समझता हूँ; पानी पर चलने का अभ्यास नहीं करना चाहता। मेरी अहम्मन्यता है कि मैं मनुष्य हूँ। हर क्षण हर कोई संघर्ष कर रहा है। संघर्ष ही जीवन का चिन्ह है। जिस दिन आपका हाथ रोटी लेकर मुँह तक नहीं पहुँचता, हवा को नहीं हिलाता, तब तक आपकी चेतना ठीक नहीं रहती। अहम् हिंसा की जड़ है अवश्य। पर किसका अहम् ? मजदूर का कि वह मनुष्य है, या पूंजीपति का कि वह दाता है ? मैं दूसरे अहम् को नहीं चाहता, पहले का अभाव आज देख रहा हूँ। अहम् और अहम्मन्यता न कह कर आप यदि स्वाभिमान और जड़ता कहते तो ठीक रहता। साधना कठिन है और रहेगी। संस्कृति के ठेकेदार आज केवल धनी हैं क्योंकि धन ही धर्म की शक्ति है, जिनके पास धन नहीं है उन गरीबों में वह अंधविश्वास है। वह उनके आगे बढ़ने को रोकने वाली चीज है। गांधी के पास धनी है। जनता की सुख की इच्छा है। मैं मनुष्य की बराबरी, जाति, कुल, धर्म, धन, सब में चाहता हूँ। हमारे लिये रुपया नहीं मनुष्य है। हम तो आपसे कहते हैं कि पूँजी के दास मत बनिये। उफ। आप कितने लालची हैं। आप धन बटोर कर रखते हैं। गरीबों को नहीं देते। उन्हें नहीं देते जिन्हें जरूरत है। अभाव की प्रतिक्रिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का ज्ञान कम्युनिज्म की पहली मंजिल है। मज़दूर जीवित है। वह जाग रहा है। वही असल में कम्युनिस्ट होता है। हम जैसे निम्नमध्यवर्गीय समझौते कर सकते हैं, पर वह नहीं कर सकता, क्योंकि वह सब कुछ हारा हुआ है, सर्वहारा है। हाँ, हमारा कल्याण उसके साथ रहने में है, क्योंकि उसके बल पर दुनिया चलती है। मनुष्य के ज्ञान ने मशीन बनाई है। वह उसे चला कर उस ज्ञान को अमल में लाता है। ईर्ष्या उन्हें है जो कुछ और चाहते हैं। भूखा पेट भरना चाहे तो क्या वह भी ईर्ष्या है? उसके बच्चे पढ़ नहीं सकते यह ईर्ष्या है? उससे सब ऐ—त् कह कर उसका अपमान करते हैं, यह ईर्ष्या है? हम जालिम की दया नहीं चाहते, हम सामर्थ्य की वास्तविकता चाहते हैं। और आप रूस की कहते हैं? सुख क्या है? पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया, तीसरा सुख कहन में नारी, चौथा सुख पुत्र अधिकारी। यही आप कहते-सुनते रहे हैं। रूस में इसके अतिरिक्त सब सुख हैं। यह चार हर व्यक्ति में बदलते हैं। पर वह सुख वहाँ है जिसकी आप कल्पना करते हैं। पर आपके विचार पुराने हैं, अगतिशील हैं। आप स्वप्न देखते हैं और चोर को चोरी करने का वक्त देते जा रहे हैं। राष्ट्र का अर्थ मजदूर किसान है, गरीब है, तभी गांधी ने भी आंदोलन चलाया है। वे राजाओं के दुख से व्याकुल नहीं हुए हैं। विश्वक्रांति वाले ट्राटस्की के सिद्धांत कितने लचर हैं, यह मैं आपको बता दूँ। मैं अंग्रेज से लड़ूँगा। अगर आप लड़ेंगे तो आपके साथ साथ डटकर उससे लड़ूँगा पर, आपको शासक नहीं बनने दूँगा।

'तो फिर हम क्यों लड़ेंगे?' रामकिशोर ने चौंक कर पूछा।

ब्रह्मदत्त हँसा, 'क्यों राष्ट्र खत्म हो गया? और मजदूर से कहते हो कि तुम हमारे लिये लड़े जाओ? वह हँसता रहा। और बाकी जो आपने कहा उस सबका लाला रामकिशोर ने एक ही वाक्य में उत्तर दे दिया। अब मुझे कहने की कुछ जरूरत नहीं।'

रामकिशोर भभक उठे। बोले : हमने आपकी बातों को जान बूझ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर इतनी शांति से सुना है। हम समझे थे शायद आप मान जायें।

ब्रह्मदत्त ने उत्तर दिया : आप अहिंसा वादी हैं। ट्रस्ट कर दीजिये। अन्यथा मजदूरों पर विदेशी सरकार की गोली चलवाइये, क्योंकि संपत्ति के लिये बंदूक विदेशी नहीं है क्योंकि डरा धमका कर आप चाहते हैं कि हड़ताल नहीं हो।

३

'हड़ताल' शब्द चारों ओर गूंज उठा' लोग समझ रहे थे कि चुपचाप सुनने से ब्रह्मदत्त के अहम् की तुष्टि हो जायेगी। सौ-पचास रूपये दे देंगे। देश का राग गायेंगे, उसे रूसी एजेंट कहेंगे, दब जायेगा। पर वह जरा भी नहीं दबा। उसने उनके समस्त जाल को काट कर रख दिया। और मुड़ कर कहा : क्यों मार्कण्डेय जी? मजदूर की हड़ताल हिंसा है या अहिंसा। तुम्हारा असहयोग हिंसा है या अहिंसा। पुलिस का तुम पर अँग्रेजों के स्वार्थहित के लिये वार हिंसा है या अहिंसा। और पुलिस का मजदूरों पर तुम्हारे स्वार्थ हित के लिये वार हिंसा है या अहिंसा।

मार्कण्डेय चौंक उठा। दयानाथ की इच्छा हो रही थी उठ कर दो घूँसे मार कर ब्रह्मदत्त के दांत तोड़ दे। वासुदेव चेत गया था। रामकृष्ण ब्रह्मदत्त को जड़ समझ रहे थे। मौलाना और मुन्शी ऊब चले थे। रामकिशोर अब भी उससे बिगाड़ नहीं चाहते थे। मुन्शी जी कहना चाहते थे कि अबे कबाड़िये अभी पुलिस बुला कर हवाले कर दूँगा। उन्होंने मौलाना से झुककर कान में कहा : आदमी बड़ा बक्की है।

'झक्की भी है' मौलाना ने राय दी, जैसे मुन्शीजी ने कोई मिसरा तरह पेश किया था। दोनों मुस्कराये। उन्होंने जोर से कहा : तो भरम-दत्त साहेब!

'जी' मेरा नाम ब्रह्मदत्त है। यानी भगवान, जिसे अल्लाह कहते हैं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी तरफ से दिया हुआ। और आप मुझे भरमदत्त कहते हैं, जिसका मतलब है गलत फहमियों की तरफ से दिया हुआ।'

सभा में एक हल्कापन आ गया। सब हँस पड़े।

'मुआफ कीजियेगा', मौलाना ने कहा : 'मुझे संस्कृत का जरा भी इल्म नहीं है।

ब्रह्मदत्त ने ऐसे देखा जैसे माफ कर दिया। मौलाना कहने लगे : आपने तो एकदम रेलगाड़ी छोड़ दी, जैसे आप रुकेंगे ही नहीं। बारे स्टेशन तो आया। जरा चैन पड़ा। तो आपका यह सब कहने का मक़सद क्या था ?

रामकृष्ण मुस्कराये। वासुदेव फिर रहस्यमय लगने लगे। रामकिशोर स्तब्ध थे। हाँ, दयानाथ खौल रहा था, उसे यह असह्य था कि ब्रह्मदत्त, जिसे वह नीच कमीना समझता था, इतनी इज्जत से बैठा बड़ा अक्लमन्द बना बैठा रहे। उसके लिये चुप रहना कठिन हो गया। उसने कहा : आपने जो कुछ कहा वह सब हमने बहुत ध्यान से सुना। हम सब साम्यवाद चाहते हैं। पर उसे प्राप्त करने के तरीकों पर हमारा आपका मतभेद है। खैर वह हुआ करे। उससे क्या होता है ? वैसे हमारा आपका ध्येय तो एक ही है ?

ब्रह्मदत्त ने कहा : अगर आप मेरी बात से नाराज न हों तो मैं साफ़-साफ़ कह दूँ।

दयानाथ को ब्रह्मदत्त इतना कमजोर समझता है, यह दयानाथ को अच्छा नहीं लगा। मार्कण्डेय इसे समझ गया। उसने कहा : हम लोग अहिंसा के पथ पर चलने वाले हैं, आपको कभी इस बात को भूलना नहीं चाहिये।

ब्रह्मदत्त ने कहा : तो मेरा यही उत्तर है कि आपके और मेरे ध्येय की समानता है। और साथ में अंग्रेजों के ध्येय के भी समान होने के कारण मुझे उसमें विश्वास नहीं है। अंग्रेज भी हमें सभ्य बनाना चाहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं। पर वे हमें सुधार रहे हैं। आप भी जनता को रफ्ता-रफ्ता सुधारना चाहते हैं। आप बीच में अपने को रख लेते हैं।

'अच्छा' वासुदेव ने कहा, 'हमारा पहला शत्रु कौन है?'

'मेरे शत्रु अनेक हैं। पर मार्कण्डेय जी कहेंगे कि शत्रु ? हमारा शत्रु कोई नहीं। हम मित्रों की बुराइयाँ दूर करना चाहते हैं; पर इसमें वे अपने मित्रों की बहुत सी शोषक वृत्ति और निरंकुश शासन को छीन लेना चाहते हैं। ध्येय यही मेरा है, मैं भी यही चाहता हूँ।'

'आपकी कोई पार्टी है ? आप लोग कितने हैं।'

'हिन्दुस्तान में यह विचारधारा अभी बहुत कम है। बहुत कम लोग हैं; पर रूस और इधर चीन में इसी विचारधारा के लोग बहुत हैं।'

'तो यह रूसी विचारधारा है।' रामकृष्ण ने ताना मारा।

'विचार तो गरीब जनता का है। एक अक्लमन्द आदमी का है। और वह जर्मन था। रूस के लेनिन ने उसे अपनाया था अपने लिये, जनता के लिये, देश के लिये सब से ज्यादा फ़ायदेमन्द समझ कर। विदेशी यदि विचार भी बुरे हैं तो यह दोष गांधी पर भी है जिसको रस्किन, टॉल्सटाय और थोरो ने प्रभावित किया। वे चीनी भी बुरे थे, जो बुद्ध की विचारधारा से प्रभावित हुये। क्या किसी विदेशी ने सोचा है, इसीसे हमें उसकी बात नहीं सुननी चाहिये ?'

'आप रूस से रुपया पाते हैं ?' मौलाना ने पूछा।

'अब ये मनीआर्डर तो आपने ही छुड़ाये होंगे।' ब्रह्मदत्त ने कह-कहा लगाया। पर उसकी हँसी से किसी के चेहरे पर एक मुस्कराहट तक नहीं आई।

'तो आप हिंसा को इतना महत्व क्यों देते हैं ?' रामकृष्ण ने टोका।

ब्रह्मदत्त : अगर आपके घर में साँप निकले तो क्या कीजियेगा ?

रामकृष्ण : पकड़ कर बाहर छोड़ देंगे जंगल में।

ब्र० : यह हिंसा नहीं है ?

रा० : नहीं, उसका जहर बुरा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्र० : तब हमें आप अहिंसावादी कहा करिये। हम इससे ज्यादा कुछ नहीं करेंगे।

रा० : पर आप तो हथियारों का इस्तेमाल जायज बताते हैं?

ब्र० : आप सांप हाथ से पकड़ सकते हैं?

रा० : मैं तो नहीं हाँ कुछ लोग इस फन की उस्तादी हासिल कर लेते हैं।

मारकण्डेय ने कहा : वही तो गांधीजी हैं।

उसकी बात से सबकी बाँछें खिल गईं। पर ब्रह्मदत्त जोर से हँस पड़ा। उसने कहा : गांधीजी के पास स्वयं सांप बैठा है। वे एक सांप से दूसरे सांप को पकड़ना चाहते हैं।

रा० : तो क्या आप यहाँ के पूँजीवाद की जगह विदेशी पूँजीवाद को ज्यादा अच्छा समझते हैं?

ब्र० : मैं नागनाथ और सांपनाथ को एक सा समझता हूँ। पर अगर नागनाथ सांपनाथ से लड़े तो मैं नागनाथ का साथ दूँगा क्योंकि वह अंततोगत्वा इस सर्प वंश का नाश ही करने को लड़ाई है। गांधीजी यही करना चाहते हैं। पर मुझमें उनमें यही भेद है। वे महात्मा हैं इसी से समझते हैं कि नागनाथ सांपनाथ को हटा कर मनुष्य बन जायेगा। वे यह भूल जाते हैं कि सांपनाथ तब हटेगा जब नागनाथ उसे निगलने की शक्ति धारण कर लेगा। मैं एक मामूली आदमी हूँ। मैं ऐसा नहीं समझता। आप जनता को अभी धोखे में डालते हैं। सारा दोष अँग्रेजों पर थोप देते हैं पर आप ही के समझौते तो जनता को रोक देते हैं। आप बार-बार अंग्रेजों से कहते हैं, यह देखो। तुम हमें नहीं दोगे तो यहाँ के लोग यह कर देंगे। इस लिये हमसे समझौता करलो। पर मैं इसे नहीं मानता। जनता इसलिये कांग्रेस के साथ नहीं है। वह है अपनी रोटी के लिये। जब तक आप अँग्रेज से चमड़ी और रंग के फर्क के लिये लड़ते हैं तब तक मेरा काम आपकी मदद करना है। अगर समाजवादी अँग्रेजों से नहीं लड़ते तो वे जनता के नेतृत्व करने के योग्य नहीं हैं। यह बाहरी लुटेरे यहाँ नहीं रह सकते। पर इनके चले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाने का अर्थ यह नहीं कि हम घर के लुटेरे की पहचान नहीं रखें।

मौलाना : यह तो बिलकुल साफ नहीं हुआ। आप पहले अँगरेज़ों से लड़ना चाहते हैं कि अपने मुल्क के लोगों से।

ब्र० : अँगरेज़ों से।

रामकिशोर के होंठ कांप उठे। उन्हें आशा हुई। उन्होंने कहा : इसके लिये आवश्यक है कि हम सब एक हों।

ब्र० : यही तो मैं कहता हूँ कि आपस के झगड़े छोड़ कर हम सब एक हों। यह एक घर है

रामकिशोर : घर है। बिल्कुल ठीक। हम सब भाई-भाई हैं।

ब्र० : वाह लालाजी। क्या बात है। हम सब भाई-भाई हैं। एक घर है। है ?

रामकिशोर : गद्‌गद दिखाई दिये। बोले, 'पक्की बात है।'

ब्र०, 'तो घर में सबको मिलकर रहना चाहिये ?'

रामकिशोर : सौ बार, हज़ार बार।

ब्र० : आपस में मिल बाँट कर खाना चाहिये ?

रामकिशोर, 'बिल्कुल।'

ब्र० : तो अगर एक आदमी सबका खाना नीचे दाब कर कहे कि मैं खाऊँगा अकेला, तुम सब माँग कर फूट न डालो, और अंग्रेज से लड़ो तो ?'

रामकिशोर ऊपर से नीचे गिरे। बड़ा काइयाँ है। क्या कह रहा था। ब्रह्मदत्त ने कहा : क्यों लालजी ? मैंने कुछ गलत कहा ?'

आप तो फिर लौट फिर कर वहीं आ गये।' रामकिशोर ने खिसिया कर कहा।

'तो आप जो चाहते हैं वह कहें।' ब्रह्मदत्त ने कहा : मुझे लीपा-पोती अच्छी नहीं लगती। आप तो कहते हैं, तू भूखा लड़, मैं खापी कर लड़ूँ। तू अकड़, मैं तेरे पीछे हूँ। देश की माँग है, पीछे न हटियो जो तू हटा तो तुझमें देश प्रेम नहीं। भूखा है तो डरे मत। मैं तुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खाने को दूँगा। इसको भगा। इस अँग्रेज के पास माल है। पर मुझसे मत कह कि जो मेरे पास है उसमें तुझमें भागी बना लूँ, जो मिलेगा न अँग्रेज से, बस उसी में से तुझे हिस्सा दूँगा। क्यों यही है न?

लाला रामकिशोर ने तड़पकर कहा, 'आप अपने को बड़ा अक्लमंद समझते हैं? आपकी नजर में बाकी सब बेवकूफ हैं!'

ब्रह्मदत्त गंभीर हो गया। उसने कहा: यह तो मैंने नहीं कहा।

'तो फिर आप कहना क्या चाहते हैं?' वासुदेव ने कहा।

'मैंने इतनी देर तक क्या कहा?' ब्रह्मदत्त ने नम्रता से कहा। दयानाथ को लगा वह उठकर अब ब्रह्मदत्त को मार बैठेगा। उसने कहा: ब्रह्मदत्त! तुम तर्क करते हो तो बात का जवाब क्यों नहीं देते!

'आप स्वयं न्याय दें,' ब्रह्मदत्त ने मुस्कराकर कहा। 'मेरी बात का लाला रामकिशोर ने ठीक जवाब दिया था?'

'क्या नहीं कहा था,' लाला रामकिशोर ने कहा: आप की बात से जाहिर है कि आप अँगरेजों से डरते हैं। उनसे लड़ना नहीं चाहते। आप देश में ही फूट डालना चाहते हैं।'

ब्रह्मदत्त ने दोनों हाथ उठाकर कहा: मैं अँगरेजों से अंत तक लड़ूँगा। अँगरेज जाति से नहीं, अँगरेजी साम्राज्यवाद से। पर जनता के लिये, आप के लिये नहीं। जब जब देशी पूँजीवाद देश का नाम ले कर लोगों को भूखा मार कर कहेगा कि पूँजीवाद के लिये अँगरेज से लड़ो, तब तक मैं कहूँगा कि अँगरेज से लड़ो, देश के लिये लड़ो, पर पूँजीवाद के लिये नहीं, अपने लिये लड़ो। ऐसा न हो कि यह बीच के शोषक जो तुम्हारा शोषण किये जा रहे हैं, ताकत हथिया लें जैसा फ्रांस में हुआ था। ये पूँजीवादी तभी तक तुम्हारे साथ हैं जब तक अँगरेजी पूँजी इन्हें दबाती है। पूँजी पूँजी है। यह लोग तुम्हारी शक्ति से विदेशी पूँजीवाद को भगा कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। ऐसा न हो कि तुम सब इनके जाल को समझ नहीं पाओ क्योंकि इनके लिये देश भक्ति मुनाफा है। ये अपने मुनाफे तुमसे लेते हैं। देश की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुलामी भी इनके स्वार्थों को नहीं काट सकी। इधर तुम भूखे मरते हो उधर वे संपत्ति इकट्ठी करते हैं। तुम इनको अपना सर्वेसर्वा न समझो। इनकी वहीं मदद करो, जहाँ ये अँगरेजों से लड़ते हैं। ये अँगरेजों से अकेले नहीं लड़ सकते। तुम ही इनकी शक्ति हो। अपनी शक्ति को पहचानो। उठो। इन्हीं जमींदारों और राजाओं के बल पर यह विदेशी सरकार यहाँ खड़ी है। हमारी गुलामी सिर्फ चमड़े के रंग की नहीं है। वह भूख और गरीबी की है। पर भूख और गरीबी की लड़ाई बढ़ती है, अगर हम चमड़े के रंग की लड़ाई में लड़ते हैं, संघर्ष करते हैं।

ब्रह्मदत्त की बात सुन कर सब अवाक् रह गए। रामकिशोर चकित से देख रहे थे।

—४—

मार्कण्डेय ने कुर्सी पर जमते हुये कहा : तो क्या आप स्टालिन को गांधी से भी महान् मानते हैं?

इस प्रश्न पर ब्रह्मदत्त चौंक गया। अगर वह कहता है गांधी महान् नहीं है तो अभी वह रूस का एजेंट करार दिया जाता है और अगर वह कहता है वह महान् हैं तो सब उससे कहेंगे कि वह हिंसावादी है, उसे यह कहने का अधिकार ही नहीं है। उसको इस प्रकार सोचते हुये देख कर श्यामनारायण ने कहा : अब आप बगलें क्यों झाक रहे हैं? हम तो जानते हैं आप स्टालिन को महान् कहेंगे।

ब्रह्मदत्त पहले ही हमला हो जाने से सँभल गया। उसने कहा : मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि दोनों ही बड़े हैं। उनका अपना क्षेत्र है, अपने अलग अलग विश्वास हैं। गांधी स्टालिन की तुलना वैसे ही नहीं हो सकती जैसे चंद्रगुप्त मौर्य्य की तुलसीदास से कोई तुलना नहीं की जा सकती।

'क्या मतलब?' मार्कण्डेय ने पूछा।

'मतलब यह कि गांधी टाल्सटाय की भाँति हैं, आदर्शवादी हैं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्टालिन यथार्थवादी है। मैं स्टालिन को अपना जैसा आदमी समझता हूँ। गाँधी बनने के लिये कुछ अद्भुत होने की भी आवश्यकता है। फिर गांधी कल्पनालोक में भी रहते हैं। वे समझते हैं कि यहाँ के पूँजीवादी देशी होने के कारण भले हैं। ऐसा वे राजा महाराजाओं के बारे में क्यों नहीं सोचते? पर गांधी का नाम भारतीय इतिहास में अमर है। उसने आकर सबसे पहले, इतनी बड़ी अहिंसा का राग अलाप कर भी, भारत को लड़ना सिखाया, जनता पर विश्वास रखकर अपने साथ लिया। जनता के दुख दर्दों ने ही गांधी को विह्वल कर दिया। गांधी की महानता है कि वह मानवतावादी है। अछूत, स्त्री, पुरुष, किसान, बाबू, सबको उसने आजादी का संदेश दिया, इस सोते हुए देश को जगा दिया।

उसके शब्दों में केवल बुद्धि का प्रभाव था, उसमें कोई भावात्मक राग पक्ष नहीं था, इसलिये उसकी बात किसी को पसंद नहीं आई। मुंशी इकबाल नारायण ने कहा: जनाब, उस आदमी ने मादरेहिन्द का मुँह चमका दिया। उसने बताया कि देखो तुम लोग गुलाम हो। अपने पैरों पर खड़े हो। तुम गुलाम हो क्योंकि तुम अपने आपसी झगड़ों में लगे हुए हो। जब तक बाहरी दुश्मन घर में घुसा बैठा है तब तक आपसी भेद-भाव को छोड़ दो। उनसे फायदा वही उठा सकता है जो सिर्फ फूट के बल पर राज करता है।

ब्रह्मदत्त पर जैसे इस बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने कहा: तो मुझे कुछ पूछने की इजाज़त है?

लाला रामकिशोर ने समझौता करते हुए कहा: क्यों नहीं? क्यों नहीं?

ब्रह्मदत्त ने कहा: किसी भी फौज में बहुत से लड़ने वाले हुआ करते हैं। उनमें कुछ सेनापति होते हैं और बाकी सैनिक होते हैं। ठीक है?

सब ने मौन रह कर स्वीकार किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'फिर सब लोग लड़ते हैं। लेकिन क्यों? या तो सिपाही पैसे के लिये लड़ते हैं या फिर किसी आदर्श के लिये जान देते हैं? आप कौन सी लड़ाई लड़ रहे हैं?'

'हम?' रामकृष्ण ने बीच में ही कहा: आदर्श की लड़ाई लड़ रहे हैं।

मुंशी इकबाल शंकर ने कहा: उसके लिये जब ज़रूरत पड़ी थी तब हमने कुछ वालन्टियर पैसे देकर भी रख लिये थे।

ब्रह्मदत्त यह जानता था। उससे छिपाना व्यर्थ था। पर सबको लगा कि मुंशी जी कुछ कच्ची बात कह गये।

'ठीक है' ब्रह्मदत्त ने अपनी ही धुन में कहा: मेरे ख्याल से आप आदर्श की लड़ाई को ही अच्छा समझते हैं, क्योंकि जिस निःस्वार्थ सेवा की आप बार-बार बात कहते हैं, वह पैसे के लिये नहीं होती।'

'दुरुस्त है।' मौलाना ने माना।

'तब', ब्रह्मदत्त कहता रहा: आप मज़दूरों की जायज़ माँग को स्वीकार क्यों नहीं करते?

रामकृष्ण ने कहा: और वे ही क्यों पैसे के लिये जान देते हैं? ज्यादा पैसा मिलेगा, तो शराब पीकर सब फूँक देंगे। हम लोगों में तो पच्चीस क़ायदे, रीति-रिवाज़ हैं। साफ़ रहना, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, एक बोझ है?

'आप हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये लड़ते हैं?'

'जी हाँ।'

'तो हिन्दुस्तान आज़ाद क्यों नहीं होता?'

'सब नहीं लड़ते। गांधी जी ने तो कहा है कि अगर सब लोग अड़तालीस घंटे भी सरकार का साथ छोड़ दें तो अँगरेजों को हिन्दुस्तान से जाने के लिये मजबूर होना पड़ेगा।'

'ठीक है' ब्रह्मदत्त ने कहा: फिर आप उन लोगों के साथ क्या करते हैं?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'उन्हें जगाकर, उन्हें सिखाकर हम अपने साथ लेने का प्रयत्न करते हैं। हम उन्हें बताते हैं कि गुलामी कितनी बुरी चीज़ है।'

'वे खुद इसे नहीं समझते ?'

'समझेंगे कैसे ? वे इतने पढ़े-लिखे ही नहीं। किसान एक सेंढ के पीछे पड़ोसी का सर तोड़ देगा, पटवारी, अहलमद, वकील कचहरियों को भर पेट रिश्वत देकर घर की कुर्की करवा देगा, कर्ज़ों से लद-लदकर तबाह हो जायेगा, मगर पड़ोसी से दोस्ती नहीं करेगा। यह अशिक्षा नहीं तो क्या है ?'

'तो फिर इसका इलाज ?'

'इसका इलाज है शिक्षा-स्वतन्त्रता। हमारा देश, हमारा राज, हमें इसके लिये उन्हें तैयार करना होगा कि वे अँगरेजी सरकार से असहयोग करें। उसे मजबूर करें कि वह शासन न कर सके।'

'अँगरेजी सरकार इसे हिंसा कहेगी। न्याय और कानून को भंग करने की साज़िश कहेगी।'

'कहे, समर्थ अपने फ़ायदे के लिये कानून बनाते हैं। गुलामों को, भूखों को बग़ावत करने का जन्म-सिद्ध अधिकार है। वह जेल में डालेगी, गोली चलायेगी, चलाये।'

'और' ब्रह्मदत्त ने दृढ़ स्वर में कहा : उसका दमन-चक्र चलता रहेगा। आपकी फौज भूखी मरने लगेगी तब आप क्या करेंगे ?

'हम आपस में अपने स्वार्थों को छोड़ कर अपने भेद मिटायेंगे। भूखी फौज नहीं लड़ सकती। राजा के लिये फौजें लड़ती थीं, पहले ज़माने में। हम उससे घृणा करते हैं। हम मनुष्यों की जीवित इंसानों की फौज चाहते हैं, जो रुपये के लिये कुत्ता बन कर न लड़े, मगर उसके कुछ आदर्श होने चाहिये।'

'और अगर' ब्रह्मदत्त ने फिर पूछा : कुछ लोग बीच में ही फौज के सिपाहियों का राशन चुरा कर रख लें और लड़ाई में ऐसे रहें कि जो जीतने को हों उसी से मिल जायें तो उनका क्या हो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'उन्हें' रामकृष्ण ने कहा : तलवार के घाट उतार दिया जाय। वे देश के प्रति द्रोही हैं, ग़द्दार हैं, भारत के कलंक हैं।

ब्रह्मदत्त हँसा। उसने कहा: ठहरिये। आवेश में न आइये। आप हिंसावादी हुए जा रहे हैं। फिर उसने दोनों कंधों को पीछे तान कर कहा : अँ. रेज़ों से लड़ने के लिये हमें अशिक्षित को शिक्षित करना है। जो अँधेरे में हैं उन्हें उजाले में लाना है। कुसंस्कारों की विरासत पाने वालों को घृणा की दृष्टि से देखने की बजाय, उन्हे सुसंस्कृत करना है, उनके बच्चों को पढ़ाना है, उन्हें साफ रहना भी सिखाना है, मतलब यह कि पहले साधन इकट्ठे करने हैं, फिर उनका प्रयोग बताना है और इस ध्येय की पूर्णता प्राप्त करने के लिये स्वतंत्रता का युद्ध लड़ना है। हमारी फौज भूखी नहीं लड़ सकती। मिल बाँट कर खाना है। और हम राजा के राज के लिये नहीं लड़ते, आदर्श के लिये लड़ते हैं। जो बीच में फूट डालता है, वह ग़द्दार है।

और ब्रह्मदत्त का प्रचंड स्वर थर्रा उठा : आप ग़द्दार हैं...आप-मज़दूरों का, ग़रीबों का खाना छीन कर खा रहे हैं, आप उनकी अशिक्षा से लाभ उठाना चाहते हैं, आप अँगरेजों से नहीं लड़ना चाहते, आप अपने राज के लिये लड़ना चाहते हैं, आप चाहते हैं आप के बच्चे पढ़ें, साफ़-सुथरे रहें, जो यह आपकी आवश्यकताएँ हैं वह मज़दूर के लिये ऐयाशियाँ क़रार दी जाती हैं क्योंकि आप अपने स्वार्थ में अँधे हैं ...आप दग़ा दे रहे हैं...आप चाहते हैं मज़दूर भूखा ही लड़े और आपके मुनाफों पर कुछ भी खरोंच तक नहीं आये...और इस दग़ा को आप देश, संस्कृति जैसे बड़े-बड़े नामों की ओट में छिपाना चाहते हैं, उल्लू सीधा करना चाहते हैं बल्कि टट्टी की आड़ में शिकार खेलना चाहते हैं।

उसका हमला इतना अचानक हुआ कि कोई भी उसके लिये तैयार नहीं था। उसने फिर कहा : मैं इंसान की रोटी, उसके बच्चों के लिये पहली किताब, उसके तन पर सफेद कपड़े की बात करता हूँ, उसे इंसान बनाने की बात करता हूँ, तो आप मुझे भौतिकवादी कहते हैं, और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप उसे बेवकूफ़ बनाते हैं, तो आप अध्यात्मवादी हैं.....

उसकी हँसी से सब का हृदय विक्षुब्ध हो गया।

'तो यह आपका फैसला है।' रामकिशोर ने झुक कर कहा।

रामकृष्ण क्रोध के आधिक्य से चुप हो गया था। उसने कहा : जवाब दो।

ब्रह्मदत्त ने कहा : आप की आखिरी हो गई?

'हो गई' रामकृष्ण ने चिल्ला कर कहा।

ब्रह्मदत्त उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर एक दृढ़ता थी। उसकी आँखों में एक चमक थी, जिसमें विश्वास था। उसने कहा : तो मैं यही समझता हूँ कि आप देश के नाम पर मज़दूरों को फुसलाना चाहते हैं और उन्हें बेवकूफ बनाना चाहते हैं। लेकिन आप कांग्रेस वाले हैं। आप के पास भी कोई ताकत नहीं है। सरकार के आप भी दुश्मन हैं। इस तरह आप अँगरेजों से नहीं लड़ सकते। उन्हें हिंदुस्तान से लड़कर निकालने के लिये एका चाहिए; इस तरह आप एक तरफ जनता से इतने वादे करते हैं कि आप का राज होगा तो इतने फायदे होंगे, इतने नफे और लाभ होंगे। और दूसरी तरफ़ आपका असली रूप यह है! आप कहते हैं देश के लिये लड़ो। देश है क्या? यदि जनता के जीवन का सवाल नहीं है तो देश है क्या? आज आप के साथ निम्न-मध्यवर्ग हैं और थोड़े से किसान भी हैं, पर आप देश में तब तक शांति और स्वतंत्रता नहीं ला सकते जब तक मज़दूर.....

श्यामनारायण ने चमक कर कहा : आपके मजदूर उस कुत्ते से भी गये बीते हैं जो घर में चोर देख कर भी मालिक का साथ नहीं देता बल्कि मालिक को ही काटना चाहता है।

ब्रह्मदत्त के नथुने क्रोध से फूल गये। उसने कहा : वह रक्षा आप जैसे लोग ही करें जिनके गले में पट्टा डालकर जंज़ीर खोल दी गई है। मज़दूर कुत्ता नहीं होता, इंसान होता है.....

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके भारी शब्द श्यामनारायण के मुँह से टकरा गये, लगा जैसे श्यामनारायण के चेहरे पर स्याही फिर गई। उसने उठ कर मुट्ठी बाँध कर कहा : मज़दूर ही नहीं तुम भी कुत्ते हो.....

मार्कण्डेय ने पुकार कर कहा : श्यामनारायण जी ! आप अहिंसा-वादी हैं। आप चुप रहिए। ब्रह्मदत्त जो कुछ भी कह सकते हैं। वे मनुष्यत्व की विजय के इस साधन में विश्वास नहीं रखते.....

ब्रह्मदत्त हँसा। उसने कहा : अक्सर मैं पढ़ता हूँ कि अँगरेजों की पुलिस और फौजें तब ही गोली चलाती हैं जब जनता कानून तोड़ कर खूँरेज हमला करती है.....

किंतु वह हँसी व्यर्थ हो गई। किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया। श्यामनारायण ने कहा : तब आप यहाँ से चले जायें तो बड़ी कृपा हो। मजदूरों को देश के लिये त्याग मंजूर नहीं, तो हमें भी उन पर दया करना स्वीकार नहीं है।

ब्रह्मदत्त ने सुना और कमरे के बाहर हो गया।

—५—

ब्रह्मदत्त को बीस-पच्चीस मज़दूर घेर कर बैठे थे। उस धुँधली सी कोठरी में कोई सामान नहीं था। ज़मीन पर एक चटाई बिछी हुई थी और सब चुपचाप उसकी बात सुन रहे थे। ब्रह्मदत्त कह रहा था : वे लोग किसी तरह भी झुकने के लिए तैयार नहीं हैं।

आगे वाले मज़दूर ने कहा : बिल्कुल !

'हाँ बिल्कुल,' ब्रह्मदत्त ने उससे आँखें मिलाते हुए कहा। इस मज़दूर का नाम था शंकर। आँखें चमकदार थीं, बाल छोटे-छोटे थे, काला था, और एक कमीज और धोती पहने था। कमीज आधी बाँह की थी। सब मजदूरों की भाँति उसके कपड़ों पर भी मिट्टी का रंग था; पर वह दबंग सा लगता था। उन मज़बूत मजदूरों में था, जिसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाबू लोग गुण्डा कहते हैं। उसने कहा : लेकिन हम तो कांग्रेसी हैं। जेल भी गए हैं।

'तुम गये हो,' ब्रह्मदत्त ने कहा : इसलिये कि तुम उन दिनों यहाँ नहीं थे, गाँव में थे। वहाँ जेल से छूट कर पहुँचे, जमींदार ने सब छीन लिया था, तो पेट की खातिर मिल में आगये। पर उससे उन लोगों का कुछ नहीं बनता-बिगड़ता।

शंकर ने घुटने पर कुहनी टिकाई और गाल अपने हाथ पर रख लिया। वह कुछ सोचने लगा। बाकी मजदूर कुछ गमगीन थे। कुछ देर बिल्कुल सन्नाटा छागया। पहाड़ सी बाधा सामने आ गई थी। सब सोच रहे थे—अब ? अब क्या होगा ? कैसे लड़ें ? भूखे मरेंगे। बीबी-बच्चे, भूख से बिलबिलायेंगे...दूसरे मजदूर लगा लिये जायेंगे...और फ़िर पुलिस की लाठी...गोली...मौत...उफ़ भयानक...

इसी समय एक स्त्री ने प्रवेश किया। उसे द्वार पर देख कर शंकर ने कहा : आ गई हरदेई ? आ।

ब्रह्मदत्त ने चौंक कर कहा : कौन ? हरदेई बहिन ? स्त्री की मुखाकृति कठोर थी। पर जब वह मुस्कराती थी तब उसके मुख पर एक सुन्दर, स्नेह भरी छाया, दिखाई देती थी। इस समय वह मुस्कराई। ब्रह्मदत्त के निकट आकर बैठ गई। वह शंकर की बहन थी, विधवा। आंदोलन में वह भी जेल गई थी और एक दरोगा ने जब औरतों पर लाठी चार्ज कराया था, नौजवानों पर घोड़े दौड़ा दिये थे, तब पहले तो वह नेताओं के आगे आगे पिटती रही, पर जब दरोग़ा ने उसके पेट में लात मारी तब उसने लपक उसकी दाढ़ी पकड़ ली। दरोग़ा सिख था, एक नंबर का रिश्वती। दाढ़ी खींचते ही हाय हाय करने लगा। तब हरदेई ने उसे छोड़ा और गिरफ़्तार कर ली गई। उस दिन जीवन नाम का एक छापेखाने का मजदूर मारा गया। जेल से छूट कर इसने जो मकान लिया तो वहाँ जीवन की बहू जयदेई भी मिली। फिर दोनों ही मिल में काम करने लगीं। जयदेई की सास थी, हरदेई के भाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वदेशी मिल था। इसीसे इसको ही सबसे अच्छा समझा गया था। हाल के हाल काम मिल गया। गाँव से हरदेई शहर आई थी, स्त्री वालंटियर बन कर। उधर शंकर जेल गया। तो बहू और बच्चे भूखे मरने लगे। अब कहीं एक महीने पहले सब को लेकर शंकर कानपुर आ सका था। मगर इसी बीच में ब्रह्मदत्त ने मिल एरिया में जाकर मज़दूरों को जो बताया कि वे अपनी हालत सुधार सकते हैं तो उनकी आँखें खुलीं। गांधीजी ने देश की बात बताई थी, ब्रह्मदत्त ने रोटी की बताई और मज़दूरों ने इसे बहुत आसानी से समझा कि देश की बात रोटी की बात है, रोटी की बात देश की बात है। और जो बात रोटी की नहीं, वह देश की नहीं है, और जो देश की बात है उसके लिये ज़रूरी है कि वह रोटी की भी बात हो। पर ऐसे मज़दूर बहुत कम थे। उन दिनों मज़दूरवर्ग इतना चेतन नहीं हुआ था। उधर भारतीय पूँजीवाद भी अपने को पूरा स्वामी नहीं पाता था। आंदोलन में विदेशी माल खूब जलाया गया। विलायत की मिलें फेल होगईं, पर स्वदेशी माल खूब बिकने पर भी पैसा चंद ही जेबों में गया। गरीबों की हालत नहीं सुधरी। पर लोग स्वप्न देख रहे थे, आजादी का नाम सुनते ही उनके दिल के तार बजने लगते थे, मन झूम उठता था। अधिकांश मज़दूर गाँव से आते थे। कुछ दिन पैसा इकट्ठा करते और लौट जाते या फ़सल के वक्त चले जाते थे। ऐसे लोग अच्छे संगठन में बाधक थे। फिर उद्योग धंधे भी भारत में अधिक नहीं थे। अधिकांश जनता गाँवों पर मुनस्सिर थी।

हरदेई को देख कर जैसे ब्रह्मदत्त जाग उठा। उसने उसकी ओर आँखें गड़ा दीं, मानों उसकी शक्ति को माप कर रहा था। हरदेई निडर बैठी रही। उसने पूछा : क्यों ब्रह्मदत्तजी, क्या हुआ ? मालिकों ने क्या कहा ? क्या वे तैयार हो गये ?

'हो गये' कल्लू ने व्यंग्य से कहा।

'मैंने कहा था' हरदेई ने टोका : स्वदेशी मिल है। गांधी बाबा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के चेले हैं। उनके क्या दिल नहीं है? दया आ ही गई। मैंने कहा था? वह प्रसन्न सी दिखाई दी।

शंकर ने हँस कर कहा : औरत की जात! कितनी अकल? मैंने कहा था! जा ले आ, सब के लिये थैली बँट रही है। उसके स्वर की कड़ आहट से हरदेई चौंक गई। उसने कल्लू की ओर देख कर कहा : क्यों रे? तू तो कहता था, तैयार हो गये।

'मैं अब भी कहता हूँ, तैयार हो गये; पर झुकने को नहीं, झुकाने को तैयार हो गये।'

कोठरी में फिर आशंका काँपने लगी। सबके चेहरों पर एक भविष्य का अंधकार था, पर नयनों में वह चमक थी जो एक निश्चित विजय का प्रतीक होती है। ब्रह्मदत्त ने कहा : फिर?

'कोई चारा नहीं?' शंकर ने पूछा।

'हड़ताल!!' ब्रह्मदत्त का शब्द फैलकर बड़ा होगया। यह हड़ताल शब्द एक तूफ़ान की निशानी थी। इसका मतलब मुनाफ़ों में कमी नहीं थी। इसका मतलब सिर्फ़ मिल का फाटक बंद होना नहीं था, इसका मतलब आराम से पैर फैला कर सोना नहीं था। इसका मतलब औरतों की घुटन थी, बच्चों का रोटी के लिये रेंटें करके भूखा सो जाना था, मर्दों की सूनी आँखों में एक अँधेरे की तस्वीर थी, जिसका अंत खून से भरी हुई ज़मीन थी, और उन पर पुलिस और फौज के भारी बूटों का चलना था। वे सब स्तब्ध बैठे रहे। ब्रह्मदत्त कहता रहा : अँगरेजी सरकार भी पूरी तरह उनकी है जिनके पास पूँजी है, वह गरीबों की नहीं है। तुम्हें अपना संगठन स्वयं करना होगा, उस दिन के लिये जब तुम्हारे बच्चे पढ़े लिखे होंगे, तुम साफ कपड़े पहन सकोगे, जब दुनिया में तुम्हारी इज्जत होगी, लेकिन सबसे पहले तुम्हारा पेट भरा होगा। उस दिन पर अविश्वास मत करो। एक नहीं, दो नहीं, सैकड़ों को कुर्बानी देनी होगी। किसी भी वक्त यह जालिम तुम्हारे दोस्त नहीं हो सकते। यह बड़े-बड़े डाकू और चोर! क्या है इनका मुनाफ़ा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहाँ से आता है इनका मुनाफ़ा ? तुम मजदूरी करते हो। माल की कीमत होती है। वह कीमत यह मनचाहे दाम पर बेचते हैं। इधर तुम कटते हो, उधर गाहक लुटता है। और जब सामान बहुत बन जाता है तब यह लोग अपने दामों को गिराना नहीं चाहते। उस वक्त लाखों आदमियों को बेकार कर देते हैं। उन्हें कुत्तों की जिंदगी बसर करने को मजबूर कर देते हैं। ये कमीने, मनुष्य के दुश्मन हैं। तुम्हें जानना चाहिये कि अमरीका में लाखों मन चाय समन्दर में डाल दी गई ताकि कीमत घटने न पाये। माल बाजार में ज्यादा ही नहीं रहने देंगे। और जब जरूरत होगी तब वे माल बहुत सस्ता बेचेंगे ताकि दूसरे मुल्कों का व्यापार फेल हो जाये। यही जापान कर रहा है। अमरीका में वे गेहूँ को आग में लकड़ी की जगह जला देते हैं ताकि किसी और मुल्क में न भेजा जाये। क्यों ? क्योंकि अमरीका और हिंदुस्तान के मजदूर असंगठित हैं। लेकिन रूस में ऐसा नहीं होता। क्योंकि मजदूर वहाँ मिल का मालिक है, किसान वहाँ खेत का मालिक है, खुदाई करने वाला आदमी खदान का मालिक है। मेरे साथियो ! मैं तुम्हें यह सब बता रहा हूँ ताकि जब वे जालिम कहें कि लालच और जलन ने तुम्हें अँधा बना दिया है, तब तुम कह सको कि तुम कुत्ते नहीं हो, इंसान हो। तुम्हें इसी दुनिया पर सुख भोगने का अधिकार है। याद रखो हिंदुस्तान को आजाद कराने की जिम्मेदारी तुम पर है। हिंदुस्तान में पहली चीज है कि अँग्रेजों का राज न हो, दूसरी यह कि अँगरेजों के हाथ से निकल कर हुकूमत इन जानवरों के पास न चली जाये जो तुम्हारा खून चूस-चूस कर मोटे होते हैं। तुम्हारी इन छोटी-छोटी लड़ाइयाँ से ही एक दिन ऐसा तूफ़ान बन जायेगा जो दुनिया के इन हत्यारों को उखाड़ कर फेंक देगा। इस चीज से डरो नहीं, कि उनके पास फौज है, पुलिस है। यह पुलिस और फौज के लोग कौन हैं। यह भी गरीब ही हैं। पर वह जालिम तुम्हें तुम्हारे ही भाइयों से लड़वा कर दबाता है। और तुम्हारा पहला नारा है—रोटी। तुम्हारी रोटी का मतलब है अँगरेजी सल्तनत क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खात्मा, क्योंकि अँगरेजों को हिंदुस्तान में कायम रखने वाले यही जमींदार और पूँजीपति हैं। इसलिये तुम्हें हड़ताल करनी होगी।

हरदेई ने कहा : करेंगे।

कल्लू ने टोका : मगर मजदूरों की बहुत खराब हालत है। बेकारी फैली हुई है। वे नये मजदूर भर्ती करेंगे, तब झगड़ा होगा। उससे हड़ताल टूट जाने का खतरा है।

परामर्श होता रहा। अंत में निश्चय हुआ कि एक आम सभा करके पूछा जाये। मीटिंग बर्खास्त होगई। कल्लू, शंकर और हरदेई रह गये। हरदेई ने कहा : ब्रह्मदत्तजी! सचमुच रूस में मजदूरों का राज है?

ब्रह्मदत्त ने देखा किताब और व्यवहार में कितना अंतर है! स्त्री की आँखें फैल गई थीं। ब्रह्मदत्त ने कहा : उन्होंने वहाँ लड़ कर अपना राज कायम किया है। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन की यही सबसे बड़ी कमजोरी है कि यहाँ मजदूर आंदोलन मजबूत नहीं है और राष्ट्रके नेता वही हैं जो मजदूर को नौकर ही समझते हैं। बहिन हरदेई! तुम यह न समझना कि तुम लोग रोटी के लिए लड़कर कुछ बुरा बात कर रहे हो। ये लोग तुम्हारी रोटी छीन कर खा रहे हैं। तुम उनको मिटाकर इंसान को आज़ाद कर दोगे। मैं एक बाबू हूँ। पढ़ा-लिखा हूँ। नौकरी करके उनकी गुलामी में ज़िन्दा रह सकता था। मगर तुमको देख कर मैं उनसे नफ़रत करने लगा हूँ। अगर मुझमें कोई गलती हो तो, तुम मुझे माफ़ करते रहना, क्योंकि तुम मेरे नेता हो। तुम नई दुनिया बनाने वाले हो। तुम आज दर-दर की ठोकरें खा रहे हो। आज उन्होंने मुझे एक खरगोश बना दिया है। मेरे पीछे पुलिस के सी० आई० डी० लगे रहते हैं। क्यों? अंगरेज़ के तो कांग्रेसी भी दुश्मन हैं। उनके पीछे पुलिस क्यों नहीं? वे इतने बड़े दुश्मन नहीं, जितना मैं हूँ। हमारी दुनिया में कभी भी जुल्म से समझौता नहीं है। वह दुनिया जब मीलों तक फैले हुए, फैले हुए, खेत लहलहायेंगे, जब किसान के बच्चों की किलकारियों से आसमान से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकर खलिहान तक गूँज उठेंगे, जब तुम इस तरह इन कोठरियों में उ सड़ कर ज़िन्दगी नहीं बिताओगे...

ब्रह्मदत्त का गला रुँध गया। हरदेई ने उसके कन्धे को पकड़ कर कहा : सच ?

कितना आनन्द था उस कंठस्वर में, जैसे नारी की समस्त चेतना नये सत्य को देख कर खिल उठी थी।

'तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ?' शंकर ने बुदबुदाया।

'इन्सान की अक्ल ही सबसे बड़ी चीज़ है। वह उसीसे किताबें लिखता है। उन किताबों में मैंने पढ़ा है।'

'हमें ला दोगे ?' कल्लू ने पूछा। लेकिन फिर वह उदास हो गया और बोला : हम पढ़ेंगे कैसे ?

'मैं पढ़ाऊँगा', ब्रह्मदत्त ने कहा। उन्होंने तुम्हें गरीब बना कर इसीलिये पढ़ने भी नहीं दिया, क्योंकि पढ़ने से आदमी अपने हक़ों को समझ लेता है। तुम्हारी लड़ाई इतनी सी ही नहीं है। इसे मत भूलो कि अगर तुम नहीं जागोगे तो तुम्हारे बच्चे भी तुम्हारी ही तरह बेइज्जती और भूख सह-सह कर मर जायेंगे।

'सब किताबें अच्छी होती हैं ?' हरदेई ने पूछा।

'सब किताबें अच्छी नहीं होतीं', ब्रह्मदत्त ने झुककर कहा : पैसे-वालों के गुलाम जो रोटी-कपड़े पर ईमान बेच देते हैं, हमेशा वही लिखते हैं जिससे आदमी टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर भटकता रहे, उसे सीधा-सादा रास्ता दिखाई देना बन्द हो जाये.....ईमान बेचनेवाले, चेतना-हीन, कुत्ते.....गद्दार.....इन्सानियत के सबसे बड़े दुश्मन, उनकी कुरूप आत्मा कोढ़ की तरह गलने लगी है.....

—६—

सभा का एलान हो गया। मज़दूरों ने सुना और वे आपस में बातें करने लगे। उनमें एक प्रकार का भय था। किन्तु दूसरे दिन जब उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा कि पुलिस के चक्कर लगाने के बावजूद एक मंच खड़ा हो गया है तो उनमें धीरे-धीरे हिम्मत बढ़ने लगी। लाला रामकिशोर के गुर्गे कहते फिरते थे कि चारों तरफ से मशीनगनें चलेंगी। जो जायेगा वही भून दिया जायेगा। औरतों ने सुना तो घबराकर हरदेई के पास गईं। उसने सुना तो होंठ सिकुड़ गये और उसने कठोर स्वर से कहा : रोज़ भूखे मरते हैं तो एक दिन हम गोली से भी मर सकते हैं। तुममें से कोई डरती है ?

स्त्रियाँ चुप हो गईं। हरदेई का मन कुछ झुका। जब ब्रह्मदत्त ने सुना तो वह हसा। धीरे-धीरे सभा का समय होने लगा। पहले तो लगा कि कोई नहीं आयेगा, पर फिर एक-एक दो-दो करके लोग आने लगे, और घंटे भर में हो सारी जगह गन्दे कपड़े पहिनने वाले मज़दूरों से भर गई। एक एक करके वे लोग अपनी जगह बना-बनाकर ज़मीन पर बिछी दरी पर बैठने लगे। स्थान एक मर्मर से भर गया।

सभा प्रारम्भ हुई। ब्रह्मदत्त ने मदन को सभापति बनाने का प्रस्ताव किया। मंसूर ने अनुमोदन किया और मदन सभापति के आसन पर जा बैठा। चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। मदन एक बूढ़ा मज़दूर था जिसकी मज़दूरों से पूरी सहानुभूति थी। बहुत ही सीधा-सादा आदमी था जो कभी किसी से न मारपीट करता था, न कभी शराब पीता था। उसको देखकर मज़दूरों में एक भाईचारे की भावना फैल गई।

ब्रह्मदत्त भाषण देने लगा। उसने बताया कि मालिक झुकना नहीं चाहते। वे पुलिस और फौज का डर देते हैं। स्वदेशी हैं। मगर वे मुनाफों में कमी नहीं चाहते। अगर उनसे इस बारे में कहा जाता है तो वे देश का नाम लेते हैं। अब हड़ताल के सिवाय कोई चारा नहीं है। आप लोग अपनी राय दें।

सीधा सादा भाषण था। लोगों पर अच्छा असर पड़ा। प्रायः अपनी ओर के तर्क दुहराये गये। और उनमें काफ़ी व्यंग्य था। परिणाम-स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिकांश का मत था कि हड़ताल की जाये। कुछ तो करना ही पड़ेगा। आख़िर कब तक चुप रहा जा सकता है। सरकार जिसे चाहे उठा कर जेल में डाल देती है। कई मजदूर नेताओं को जेल में डाल दिया है। न कोई पूछने वाला है, न जवाब देने वाला।

इसी समय भीड़ में कुछ मार पीट सी होने लगी। लोगों ने देखा। कुछ मजदूर लड़ रहे थे। शंकर ने ब्रह्मदत्त से कहा: मालिकों ने अपने गुंडे भेजे हैं। सभा में गड़बड़ डालना चाहते हैं।

हरदेई कूद कर उधर बढ़ गई और उसने चिल्लाकर कहा : कौन है ? क्यों लड़ते हो ?

उसकी आवाज सुनकर वे लोग चिल्लाने लगे और बेसिर-पैर की बातें करने लगे। हठात् एक ने चिल्ला कर कहा, निकालो इन्हें। यह बदमाश मालिकों के भेजे हुए हैं।

सुनते ही अनेक मजदूरों के मुँह से एक हुँकार सी निकली। झगड़ा थम गया। सभा फिर होन लगी।

पर इसी समय सब चौंक उठे। उन्होंने देखा कि एक पुलिस इन्स-पेक्टर बढ़ा आ रहा था। उसके पीछे-पीछे दो सिपाही चल रहे थे। करीब पन्द्रह सिपाही मोटर के पास खड़े थे। उसको देखकर चारों ओर एक सन्नाटा छा गया। उसने आगे बढ़ कर कहा : मैं सरकार का हुक्म लाया हूँ। सभा अभी बखास्त कर दी जाये, क्योंकि अभी घन्टा भर पहले शहर में दफा १४४ लगा दी गई है। उसके बाद से यह सभा अब गैरकानूनी हो गई है।

ब्रह्मदत्त ने हँस कर कहा : कानून तो तुम्हारा है ही उसे अपने फायदे के लिये तुम चाहे जैसे तोड़-मरोड़ कर काम में ला सकते हो। कानून के बाद अब तुम इंसानियत की दुहाई भी जल्दी से देलो क्योंकि तुम्हारे काका अँगरेज यही करते हैं।

भूपसिंह घबराया। उसने कहा : और मैं आप को गिरफ्तार करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'यह नहीं हो सकता', चिल्लाते हुए कई मजदूरों ने ब्रह्मदत्त को घेर लिया। उस भीड़ में से ब्रह्मदत्त गायब हो गया। भीड़ जब छितरी तो दरोगा ने देखा ब्रह्मदत्त वहाँ नहीं था। उसे बड़ा विस्मय हुआ। क्या हुआ? आखिर क्या जमीन में घुस गया? अभी अभी तो दिखाई दे रहा था। अभी अभी एक दम ही कहाँ गायब हो गया?

उसने कहा : अच्छा मीटिंग ख़त्म कर दो।

हरदेई ने आगे बढ़कर कहा : सो तू सब का राजा है। बड़ा लाट साब बन के चला आया है, अंगरेजों का कुत्ता। अच्छा मीटिंग ख़त्म कर दो; हरदेई ने मुँह चिढ़ा कर कहा। सब ठठा कर हँसे। दरोगा चौकन्ना था। उसने देखा अब वे मज़दूर धीरे-धीरे खिसक रहे हैं और वे सब चारों ओर से उसे कसते जा रहे हैं, घेरा डालते जा रहे हैं। पीछे हटने में ही उसने कुशल समझी। भरभराता हुआ पीछे हट कर उसने चिल्ला कर कहा : मैं सभा को बर्ख़ास्त करने को पाँच मिनट का वक्त देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि पाँच मिनट में ही सब लोग चले जायेंगे।

दरोगा का इस प्रकार हट जाना बहुत बुरा हुआ क्योंकि उसके सिपाहियों की हिम्मत टूट गई। वे मन ही मन दरोगा को गालियाँ देने लगे। उनके सामने हजारों मजदूरों की भीड़ थी। जमादार ने बढ़ कर कहा : हुजूर।

दरोगा ने चिढ़ कर पूछा : क्या है?

'हुजूर, बलवा होने का खतरा है।'

'हूँ।'

'यह लोग बहुत से हैं।'

हमारे पास बहुत कम लोग हैं। वे इस भीड़ का मुकाबिला लाठियों से नहीं कर सकते। यह लोग चुपचाप पिटेंगे नहीं। अगर हम मारेंगे तो यह भी मारेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

दरोगा भूपसिंह मोटा आदमी था। पुराना रिश्वती था। रिश्वत पर पलपल कर उसकी हिम्मत का वही हाल था, जो पैसा लेकर वेश्या के सतीत्व का हो जाता है। उसने घबरा कर पूछा : तो तुम्हारी क्या सलाह है ?

'हुजूर लौट चला जाये।'

'हिश' भूपसिंह ने कहा : इससे तो इनके हौसले बढ़ जायेंगे।'

'अब हुजूर हौंसलों को देखियेगा या अपनी जान को देखियेगा ?

दरोगा को यह इतनी शीघ्रता से स्वीकृत न था। बाकायदा सभा हो रही थी। इस समय फिर ब्रह्मदत्त बोल रहा था। मजदूरों पर जैसे जादू हो रहा था। एकएक लफ्ज उनकी अक्ल में समा रहा था। यह है अत्याचार। इसका आधार है पुलिस और फौज.....यह है रोटी की लड़ाई .. जब मजदूर अपने लिये रोटी माँगता है तो मालिक देश का नाम लेकर टट्टी की आड़ खड़ी कर देते हैं। उस समय अपनी पूँजी की रक्षा के लिये वह विदेशी हुकूमत को कायम रखने वाले शिकारी कुत्ते—पुलिस और फौज की मदद लेते हैं .....

मजदूरों का जननिनाद बीचबीच में गूँज उठता था। दरोगा क्रोध से होंठ चबाने लगा। उसके सामने ब्रह्मदत्त बोल रहा था, और वह बिल्कुल निस्सहाय हो रहा था। उसने पुकारा : खुमान सिंह।

'हुजूर' सिपाही ने पाँव जोड़ कर सीधे खड़े होकर उत्तर दिया।

'कलक्टर साहब को टेलीफोन करो।'

सिपाही चला गया। कुछ देर बाद उसने आकर कहा : हुजूर कलक्टर साहब ने हुक्म दिया है कि जरूरत पड़ने पर छावनी की गोरा पलटन को बुला लिया जाये।

दरोगा की आँखें चमक उठीं। उसने कहा : दीवान जी ब्रह्मदत्त न निकल जाये।

दीवान जी ने कहा : ऐसा नहीं होगा हुजूर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दीवान जाकर पलटन को टेलीफोन कर आया। फिर उसने दीवान जी से कहा : सभा रोको।

एकदम पुलिस के सिपाही अपने हाथों में डंडे उठाये हुए टूटे और उन्होंने सीधे लाठी चार्ज करना शुरू कर दिया। यह हमला इतने अचानक हुआ कि सभा करने वाले गड़बड़ा गये। चारों ओर हल्ला होने लगा। मजदूरिनों के सिर फूट गये। बच्चे चिल्लाने लगे। और एक भगदड़ सी मच गई। सिपाही बड़े जोश से हमला कर रहे थे। इसी समय एक औरत ने बढ़कर एक सिपाही का मुँह नोंच लिया। वह सिपाही घिघिया उठा। इसके बाद मजदूरों ने सिपाहियों को मारना शुरू किया। उन्होंने उनके डंडे छीन लिये और उलटी धुनाई शुरू की। दरोगा दूर से देख रहा था।

पिछले मजदूर चिल्ला रहे थे : मारो, मारो....पर आगे बैठी भीड़ की अभी तक समझ में नहीं आया था। मंच पर से सब लोग कह रहे थे : भाइयो, घबराओ नहीं, बैठे रहो, बैठे रहो..घबराओ नहीं...

सिपाही जब पिटे तो पीछे हट कर दरोगा के पास इकट्ठे हो गये। दरोगा ने देखा भीड़ अब उधर ही बढ़ रही थी। ब्रह्मदत्त का भाषण रुक गया था। सब लोग मुड़ कर देख रहे थे। ब्रह्मदत्त के मुख पर एक निरासक्त दृढ़ता थी और बूढ़ा मदन इस समय तीक्ष्ण नेत्रों से घूर रहा था! शंकर मुड़ कर देख रहा था।

कल्लू दौड़ कर आया और उसने कहा : ब्रह्मदत्त जी, पुलिस ने लाठी चलाई है। मजदूरों ने उनके डंडे छीन लिये हैं और अब वह उन पर हमला करने वाले हैं। बहुत मुमकिन है सिपाही आज मार डाले जायें। उसके स्वर में भविष्य की भयद आशंका थी और सिपाही दूर खड़े घबराये से दिख रहे थे।

'यह तो ठीक नहीं होगा', ब्रह्मदत्त ने कहा : किंतु तभी हरदोई ने नीचे से कहा : मजदूरों को रोको, रोको..

लेकिन भीड़ की कोलाहल में उसका स्वर डूब गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उस समय सूर्य्य की डूबती किरनों ने उस स्थान पर अपनी आखिरी चमक फेंकी और लगा कि वह स्थान एकदम जाग उठा। लोगों के पाँवों से उठी धूल अब घनी हो गई थी।

सभापति बूंढ़ा मदन खड़ा होकर चिल्लाने लगा : भाइयो ! ठहरो। ठहरो।

भीड़ में वह स्वर फैला। एक ने दूसरे से कहा, दूसरे ने तीसरे से कहा, तीसरे ने चौथे से कहा। आगे से धीरे-धीरे वह स्वर पीछे तक पहुँचा। मदन ने पुकार कर कहा : ठहरो-ठहरो जल्दी बाजी अच्छी नहीं होती। इस तरह तुम अपनी सभा अपने आप तोड़ रहे हो, और दरोगा का काम सध रहा है.....

—७—

मज़दूरों पर आवेश छा रहा था। दरोगा भूपसिंह मन ही मन डर रहा था। शंकर उठ कर खड़ा हो गया और उसने हरदेई से कहा : हरदेई ! दरोगा सभा तोड़ना ही चाहता है।

हरदेई साँपिन की तरह सजग होकर फुङ्कार उठी। वह तुरन्त मंच पर चढ़ गई और उसने ब्रह्मदत्त से कहा : ठहरो जरा मैं एक बात कहूँगी।

ब्रह्मदत्त रुक गया। हरदेई ने चिल्लाकर कहा : भाइयो और बहिनो पुलिस आ गई है। यह लोग हमला कर रहे हैं। तैयार रहना।

सुनते ही हजारों मज़दूरों की भीड़ उठ कर खड़ी हो गई। और मजूरिनों के जलते हुए नेत्र देखकर दरोगा भूपसिंह भाग खड़ा हुआ। मज़दूरों ने हर्ष से नारा लगाया : रोटी के कुत्ते..मुर्दाबाद।

ब्रह्मदत्त ने पुकार कर कहा : हिन्दुस्तान...

हजारों गम्भीर कंठों ने उत्तर दिया : करेंगे आज़ाद।

कानपुर, ग़दर और अँगरेजी जुल्मों के समग्र का वह अबुझ अंगारा दहक उठा। उस समय उन भूखे और गरीब इंसानों की वज्र हुङ्कारों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कानपुर के अत्याचारी थर्रा उठे। हवा पर एक दहशत काँप उठी। हरदेई ने पुकार कर कहा : हम पर हमला किया जा रहा है कि हम रोटी माँग रहे हैं। भाइयो! भूखे मर रहे लोगों को इतना भी हक नहीं दिया जाता। क्या तुम लोग सिर झुका दोगे?

'नहीं', उस सजीव भीड़ ने गर्जन किया।

हरदेई ने पुकारा : कानपुर की जनता देखे, हमारे साथ कैसा अत्याचार किया जा रहा है...

शंकर कूद कर मंच पर चढ़ गया और उसने हाथ उठाकर कहा : परतिग्गा करो कि तुम कभी नहीं झुकोगे...

कभी नहीं झुकेंगे...हजारों कंठों का गम्भीर गर्जन फिर उठा...

ब्रह्मदत्त चाहता था कि इस समय मज़दूरों का जुलूस निकल जाये, तो छोटे-छोटे दूकानदार और गरीबों की छाती बढ़ेगी और गरीब निम्न मध्यवर्ग में जान पड़ेगी। परन्तु मज़दूर इस समय नारे लगा रहे थे। भूखे शेर को जैसे ठोकर मारकर जगा दिया गया था। अभी ब्रह्मदत्त सोच ही रहा था कि फौजी गाड़ियों ने मैदान को चारों तरफ़ से घेर लिया। मज़दूरों की भीड़ ने देखा कि चार टुकड़ियों में बन्दूक धारियों ने उन्हें तीन तरफ़ से घेर लिया। उस समय हरदेई ने चिल्लाकर कहा : सिपाहियों! तुम भी गरीब हो।

पर वह बात पूरी नहीं कर सकी...

एक टुकड़ी ने की धाँय...

हरदेई ने देखा कल्लू गिरा। मज़दूरों की आँखों में लहू उतर आया। निहत्थों पर बिना बात वार किया जा रहा था। आँखों के सामने बेकसूरों का क़त्ले आम हो रहा था। शंकर पुकार उठा : हत्यारो...

फिर धाँय, धाँय, धाँय का शब्द गूँज उठा...

तीनों टुकड़ियाँ चुप थीं, केवल एक गोला चला रही थी। कुछ मज़दूर गिर गये। उनके दारुण चीत्कार को सुन कर एक बार रेला पीछे हटा, पर फिर जैसे बिजली कौंध उठी, शंकर आगे टूटा उसके पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जुलूस तड़पा, जैसे पहाड़ सरक गया और उन्होंने भीषण गर्जन करते हुए सामने की टुकड़ी के हथियार छीन लिये, उस समय गगन भेदी नारों से आकाश फटने लगा और लगा वे अब जीत जायेंगे, तीनों टुकड़ियाँ घुटनों के बल बैठ गई थीं और फिर हुई धाँय...धाँय...

मज़दूर फिर कुछ घिरे हुए थे, गिर गये, फिर एक हूह छा गई, फिर शंकर ने पुकार कर कहा : एक न जाने पाये...

मगर अब वह उत्साह कम हो गया। ठंडा लोहा धाँय से छाती फाड़ कर दिल का लहू पीने लगता था। मज़दूर गिर रहे थे, और शीघ्र ही भाग मच गई। उस भीड़ को भागने में भी काफ़ी देर लगी और इस बीच में करीब पैंतालीस मज़दूर मज़दूरिन जान से मार दिये गये। उनकी लाशें वहीं पड़ी रहीं। अंतिम गोली आकर हरदेई की पसली में लगी। ब्रह्मदत्त ने उसे सँभाल लिया।

उस समय भीड़ भाग रही थी। चारों तरफ़ कोलाहल मच रहा था। हाहाकार से आकाश फट रहा था। धरती रक्त से भींग गई थी। स्वदेशी मिल आज मेहनत कशों के पवित्र रक्त से धुल कर साफ हो गई थी। अब सदा के लिये खादी की सफेद टोपी पर क्रान्ति का लाल फूल खिल आया था, जो बता रहा था कि इंसान का रंग लाल है, सफेद उसे रोकता है, लाल उसे आगे बढ़ाता है।

हरदेई की दो पसलियाँ टूट गई थी। ब्रह्मदत्त की आँखों में आँसू आ गये। इसी समय शंकर आया। वह भी घायल हो गया था। ब्रह्मदत्त ने कहा : शंकर! भाग जाओ।

हरदेई ने क्षीण स्वर में कहा : और तुम .....

'मेरी चिंता न करो ..... 'ब्रह्मदत्त ने कहा और बाँये हाथ से दौड़ते रेले में शंकर को भाग जाने का इशारा किया। शंकर का काफ़ी खून बह चुका था। वह उसी भीड़ में लय हो गया।

हरदेई ने कहा : भैया। तुम नहीं गये ?

'मेरी बहिन मर रही है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पर काम मुझसे ज्यादा जरुरी है।'

ब्रह्मदत्त चुप रहा।

हरदेई ने फिर कहा : मरने वाले गिर कर शहीद हुये, जो आधे जीते हैं, उनमें तुम्हें आग भरनी है.....

ब्रह्मदत्त की आँखों में आँसू आ गये।

'छि :', हरदेई ने कहा : रोते हो। मरद हो कर रोता है मेरा भइया 'छि :' वह कराह उठी। और कहा : मुझे लिटा दे ...

ब्रह्मदत्त ने उसे ज़मीन पर लिटा दिया और घुटने के बल बैठकर रोने लगा। न जाने वह इतना विचलित क्यों हो गया था। उसने कहा: बहन! एक दिन वह भी कभी आयेगा, जब यह अत्याचार बंद होंगे?

हरदेई ने मुस्करा कर अपने खून में हाथ बोरा और ब्रह्मदत्त के माथे पर लगा कर कहा : भैया, जा छिप जा। वे जानवर तुझे पकड़ लेंगे तो मार डालेंगे।

मगर ब्रह्मदत्त नहीं हटा। मैदान प्रायः साफ़ हो चुका था। इसी समय एक फौजी ने ब्रह्मदत्त के बाल पकड़ कर अपने बूट से उसकी पीठ में ज़ोर से ठोकर मारी। ब्रह्मदत्त क्रोध और वेदना से फूत्कार उठा। उसकी चढ़ी हुई भौं देख कर एक फौजी ने उसकी जाँघ में बंदूक का कुंदा घुमा कर मारा ... ब्रह्मदत्त लड़खड़ा कर बैठ गया। जिस फौजी ने उसके बाल पकड़ रखे थे, उसके हाथ में ब्रह्मदत्त के बाल टूट कर रह गये।

दरोगा भूपसिंह ने चिल्ला कर कहा : जाने न पाये। इनामी सिर है। सारे बलवे की जड़ यही है। उसकी बात सुनकर सिपाहियों ने ब्रह्मदत्त को घेर लिया और वे उसके हाथ पाँव पकड़ कर घसीटते हुए ले चले और उन्होंने उसे पुलिस की गाड़ी में डाल दिया। वह बेहोश होगया था। मैदान में अब सिर्फ लाशें पड़ी थीं। सिपाही फ़ौजी डर रहे थे। उन्हें खतरा था कि कहीं मज़दूर फिर लौट न आयें। कभी-कभी किसी-किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टोली का भर्राया नारा सुनाई दे जाता था, जिससे उनका दिल काँप उठता था।

हरदेई की वेदना बढ़ गई थी। जब उसके पास से फौजी गुज़रा उसने घृणा से थूक कर कहा : कुत्ते .....

अँगरेज़ ने सुना। जैसे उसके भीतर बाहर आग जल उठी। उसने ज़ोर से उसके पेट में ठोकर दी। हरदेई ने चिल्ला कर कहा : कमीने...

अँगरेज़ अपने कील दार भारी बूटों को पहन कर उसकी छाती पर खड़ा हो गया और उसने स्त्री के वक्ष को निर्दयता से कुचल दिया; उस भयानक यंत्रणा से हरदेई की साँस ऐसे निकली जैसे दमे के पुराने रोगी लिये खाँसते खाँसते साँस लेना असंभव हो जाने पर उसके मुँह से ऐसी आवाज़ निकलने लगती है जैसे कोई असह्य यातना से चिल्ला रहा हो ..... छाती की खाल कट गई। उसके मांस के लोथड़े निकल आये, जिन पर फौजी ने थूक दिया।

पास खड़े टामी ठठा कर हँसे। उनकी हँसी की आवाज सुन कर स्वयं भूपसिंह काँप उठा। उसने आँखें फेर लीं। वह अपना काम दिखाने के लिये गिरफ्तार मज़दूरों के अपना छोटा डंडा मारने लगा।

एक फौजी ने आकर पूछा : इन्सपेक्टर....

इन्सपेक्टर भूपसिंह ने झुक कर कहा : हुजूर ?

'सब ठीक होगया ?'

'जी हाँ हुजूर।' दरोगा ने नम्रता से कहा। हुजूर बड़े सरकश हो गये हैं। कांगरेस वाले तो पैसे वाले हैं, पर यह टुकड़ाखोर कुत्ते भी अब हुकूमत चाहते हैं सरकार....

फौजी हँसा। दरोगा ने फिर कहा : सरकार वह जो मोटर में है, ब्रह्मदत्त, कम्युनिस्ट है....वही इस बलवे की जड़ है.....

'उसको फाँसी चढ़ायेगा हम, फौजी ने कहा...और सामने खड़े मजदूर को क्रोध से जोर की ठोकर दी। मजदूर गिर गया। तब सिपाही ने दो डंडे मार कर कहा : सूअर के बच्चे ! सीधा खड़ा हो...कुत्ते..

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरामजादे...और फिर उसने पुलिस के पवित्र मंत्रों का उच्चारण किया, अर्थात् निहायत भद्दी गालियाँ दीं...और फिर वे हृदयहीन पुलिस वाले, परामर्श समाप्त करने लगे। गोरे फौजी गाते हुए अपनी गाड़ियों में जा बैठे और गाड़ियों के चले जाने पर केवल उनकी धूल रह गई।

पुलिस की गाड़ियाँ चलीं। हठात् ब्रह्मदत्त ने चौंक कर कहा : मेरी बहन..मेरी बहन.....

भूपसिंह ने निहायत अश्लील गाली देकर अपना डंडा उसके दाँतों से टकरा दिया। ब्रह्मदत्त वेदना से फिर बेहोश हो गया। गाड़ियाँ चली गईं।

जब नीरवता हो गई शंकर आकर हरदेई की लाश ढूँढ़ने लगा। पर लाशों को पुलिस वाले ले गये थे। वह उस स्थान पर बैठ कर फूट फूट कर रोने लगा जहां हरदेई की हत्या हुई थी। ब्रिटिश हुकूमत और पूँजीवाद ने आज एक खुशबूदार फूल को कुचल डाला था। उसको रोते हुए काफी देर हो गई। जयदेई ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा : कब तक रोते रहोगे ? चलो उठो।

शंकर उठा। जब वे घर आगये तब जयदेवी की सास ने कहा : क्यों रोता है बेटा। यही सरकार मेरे ज्वान बेटे जीवन को भी खा गई थी।

शंकर ने कहा : पर तब हम इनके साथ मिलकर उनसे लड़े थे।

बुढ़िया चुप रही। फिर कहा : पर बेटा ! बड़े तो बड़े ही होते हैं। जब तुम गोरों से लड़ते हो, तो बड़े लोग गोरों से मिल जाते हैं ! क्यों ?

शंकर ने कुछ नहीं कहा। उसका सिर झुक गया और जैसे किसी गंभीर चिंता में निमग्न हो गया था। तभी जयदेई ने चौंक कर कहा : यह बाँह में खून कैसा है ?

'गोली लगी होगी,' जैसे शंकर अब चैतन्य हुआ।

जयदेई ने देखा, मांस उस जगह लटक गया था। वह पट्टी बांधने लगी। बूढ़ी कह रही थी : पर जब बड़े लोग गोरों से लड़ाते हैं, तब तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम उनकी मदद करते हो, मेरा जीवन भी हरदेई की तरह ही मारा गया था .....

'नहीं', जयदेई ने कठोर स्वर में कहा : हरदेई की हत्या बहुत बुरी तरह की गई है ...

मानों उसके दुख ने उसका गला रूँध लिया और अब कुछ भी कह सकना उसके लिये कठिन हो गया था। वह जैसे अपने पति की हत्या भी भूल गई थी।

साँझ हो गई थी। आज सारी बस्ती में एक बीराना था, एक सुनसान सा छाया हुआ था, जैसे सब तरफ़ उजाड़ छा रहा था। चिमनियों से उठता काला धूँआ अब उतरते अँधेरे को और गहरा बनाता जा रहा था। हवा में एक घुटन थी और दहशत से जैसे हवा काँप रही थी, क्यों कि ज़ालिम ने अपनी लोहे की क़लम से इंसान का भेजा फाड़ कर उसमें से खून निकाल कर धरती पर लिखा था : जो रोटी माँगेगा, उसको हम क़त्ल कर देंगे ....

उस समय अनेक घरों से करुण क्रंदन और बच्चों के चीत्कार घुट घुट कर हवा में एक भय भर रहे थे लेकिन मज़दूरों ने लहू बहाकर बतला दिया था कि वे भी इंसान हैं.....

चौथा परिच्छेद

—१—

जो हो रामनाथ से यह बात छिपी नहीं रही कि उमानाथ ही नाटक का स्वामी शीलप्रभु है और महालक्ष्मी उससे एकांत में छिप कर मिली थी। यह संवाद उनके पास लाने वाला और कोई नहीं स्वयं सत्यनारायण ड्राइवर था जिसने यह ज़रा सी बात उन्हें डरते-डरते ठीक पैंतालीस मिनट में बताई थी। रामनाथ ने उससे धीमे, कड़े, उलझे, और विश्वस्त स्वर में घुमाफिरा कर सब तरह से पूछा और सत्यनारायण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने बड़े खान्दान की इज्जत का सवाल समझ कर मालिक के पास यह ख़बर लाना जरूरी समझा ।

रामनाथ ने सुना तो उन्हें एक बार चक्कर सा आया । ऐसी समस्या उनके सामने कभी न आई थी, न उन्होंने सुनी ही थी । सत्यनारायण चला गया पर वे बैठे ही रहे । दयानाथ मर्दाने में अपने बच्चों को लेकर बैठा था । राजेश्वरी ने महालक्ष्मी के सोते बच्चे को गोद में ले लिया था । पर सत्यनारायण को यह कैसे निश्चय हुआ कि वह शीलप्रभु उमानाथ ही हैं ? कहीं महालक्ष्मी गलती से किसी दूसरे पुरुष से तो जा कर नहीं मिली छि : छि : कितना विनौना विचार था । इस भाव के उगते ही उनकी हिम्मत और भी पस्त हो गई । उन्होंने सत्यनारायण को बुला कर इस विषय में पूछने का इरादा बदल दिया ।

लेकिन महालक्ष्मी को वे सती मानते थे । उसके चरित्र में वे संदेह नहीं कर सकते थे । स्वयं राजेश्वरी बड़ी बहू वहाँ थी । फिर कोई संदेह नहीं किया जा सकता । आखिर पत्नी ही पति को पहचान सकती है, तो क्या वे स्वयं पिता होकर नहीं पहचान सकते ?

उन्होंने निश्चय किया कि वे उसे जाकर देखेंगे अवश्य । वे उठे और चुपचाप बाहर निकल गये । राह में एक ताँगा लिया और उतर कर कार्ड भिजवाया । उस समय शीलप्रभु एकांत में थे और अपनी शिष्या राधा को संभवत : राधाकृष्ण की चीरहरण लीला समझा रहे थे । एक नयी गोपी जो पहले तवायफ़ थी और ज़हर का कांटा नाम से प्रसिद्ध थी राजासाहब का कार्ड लेकर भीतर घुसी । उमानाथ ने देखा तो घबरा गया । उसने कहा : राजा रामनाथ ?

राधा ने कहा : बुला लाओ ।

उमानाथ ने उठ कर राजा साहब का स्वागत किया । राधा बैठी रही ।

उमानाथ ने कहा : विराजिये ।

उसके इस रूप को देखकर राजा रामनाथ अत्यन्त चकित थे । वे यही निश्चित नहीं कर पाये थे कि वे विस्मित हैं, अथवा क्रुद्ध । वे एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिल्कुल नई दुनिया देख रहे हैं, या एक सब से जघन्य वातावरण में पहुँच गये हैं। तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए वे बैठ गये। उमानाथ ने बैठ कर कहा : आज्ञा ? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

राजासाहब चौंके। बोले : मैं तुमसे कुछ एकांत में कहना चाहता हूँ।

आप के स्थान पर तुम का प्रयोग सुन कर राधा ने कहा : यह नियम विरुद्ध है। हम सब अलग-अलग देह हैं। पर आत्मा सबमें एक ही है। यदि आप समझें कि आपकी बात कोई सुन नहीं रहा है तो यह आप का भ्रम है। आप भूमि के राजा हैं, किंतु स्वामी शीलप्रभु आत्मा के राजा हैं।

'चुप रहो।' रामनाथ ने चिल्ला कर कहा, 'मैं जानता हूँ कि यह मेरा एक नालायक बेटा है जिसने ख़ानदान के मुँह पर कालिख़ पोत दी है ..... और तुम एक रंडी हो ..... एक चटाख की ध्वनि हुई। राधा ने कस कर रामनाथ के मुँह पर तमाचा जड़ दिया था। रामनाथ इसकी कल्पना भी नहीं करते थे। वे चोट खाये हुए साँप की तरह उठ खड़े हुए। उनकी इच्छा हो रही थी कि उसका वह हाथ मूली की तरह तोड़ दें, उसका गला घोंट दें, या उसका कलेजा फाड़ कर लहू पीलें ..... राजा रामनाथ ... आनरेरी मैजिस्ट्रेट ... जिसकी इतनी शक्ति ... इतना अधिकार ...

शीलप्रभु ने अविचलित ढंग से कहा : राधा, अतिथि के पाँवों पर सिर रखो, ताकि वे उसमें ठोकर मार कर अपनी प्रतिहिंसा का पशुत्व मिटा सकें। तुमने अनुचित किया है। यदि वे तुमसे और मुझसे शिष्टता से व्यवहार नहीं कर सके तो तुमने अपनी मर्यादा का उल्लंघन क्यों किया ? मेरे उपदेश व्यर्थ चले गये ? और शीलप्रभु ने खड़े होकर कहा : बालिका अज्ञ है, उसे क्षमा करें ..

राजा रामनाथ का चेहरा अपमान से स्याह पड़ गया था। गुस्से के मारे उनके बोल नहीं निकल रहे थे। क्या करें ? क्या नहीं करें ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि इस घटना को लेकर तूल देते हैं तो एक बार को चाहे वह हतक इज्जत में जेल भिजवा दें ; पर यहाँ गवाह ? और इस गुप्त बात को वे बाहर जाकर कहेंगे किस मुँह से ? कल सारे शहर में अफ़वाह उड़ेगी कि बुड्ढे को क्या सूझा जो जाकर एक तवायफ को छेड़ा और उससे पिट गया। उनका गतिरोध इतना जबर्दस्त था कि उनकी आँखों के सामने अँधेरा सा छा गया। वे एकदम लड़खड़ा गये। शीलप्रभु ने उन्हें संभाल कर कुर्सी पर बिठा दिया और हवा करने लगा। कुछ देर बाद उन्होंने आँखें खोलकर कहा : तो क्या तुम उमानाथ नहीं हो ?

इस प्रश्न से उमानाथ थर्रा गया। उसका भीतरी भय भीतर ही भीतर चिल्लाने लगा। उसका सिर झुक गया और होठों से निकला : मैं नहीं जानता आप किसे पूछते हैं।

उन्होंने मुड़कर देखा राधा वहाँ नहीं थी। वे उठे और धीरे से सीधे खड़े हुये। इस समय देखकर लगता था वे आधे बेहोश हैं। उनके चेहरे पर एक अजीब पीलापन छा रहा था। आज उनका इतना भयानक अपमान हुआ था। चाँटा ! उनके मुँहपर चाँटा ! किसी के गर्व से चाँटा मारने पर दूसरा क्या सोचता होगा, यह बात उनके दिमाग में कभी भी नहीं आई थी। पर आज एक अदना औरत की यह मजाल कि वह राजा रामनाथ के चाँटा मार कर चली गई...और...और वे कुछ नहीं कर सके.. क्योंकि इसमें उन्हीं की बदनामी का खतरा था, औरत का क्या...थियेटर में नाचने वाली, क्या है उसकी इज्जत...कल सड़क पर भीख माँग सकती है...बवायफ...

और शीलप्रभु की बात ने तो जैसे उन्हें बिल्कुल ही झुका दिया। उन्होंने द्वार की ओर पग बढ़ाया। शीलप्रभु ने कुछ नहीं कहा। बगल तम्बू से अब गीता पढ़ने की आवाज आ रही थी जैसे कोई पढ़ते-पढ़ते विभोर हो उठा था। रामनाथ एक एक पग धरते चले जा रहे थे, और लगता था वे अब थक गये हैं, बहुत थक गये हैं...उनके लिये चलना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
असम्भव हो गया है...दुनिया घूम रही है...ठीक है पर कहाँ जा रही है...यह दुनिया क्या है...अब इसमें है ही क्या...

वे जाकर ताँगे में बैठ गये। ताँगा चलने लगा। उस समय उन्होंने राधा को देखा। वह हाथ में धूपदान लिये अत्यन्त भक्ति से भरी हुई एक खेमे से निकलकर दूसरे में जा रही थी। उनकी समझमें नहीं आया कि वे क्या देख रहे हैं...

आदमी, इमारत, पेड़, गाड़ी...सबको देख रहे हैं...फटीफटी आँखों में एक छाया सी आती है, फिर कुछ नहीं दीखता, दीखता है तो मन पर नहीं उतरता...अचेतन...बुद्धिहीन।

—२—

रामनाथ जब घर पहुँचे तब उन्हें देखकर सत्यनारायण घबरा गया। उसने उन्हें ताँगे से उतरते ही सहारा दिया। उसे उनको ताँगे में देख कर ही अचरज हुआ था और इस हालत में तो देख कर तो दिल में और भी धुकधुकी हुई। उसने कहा : सरकार तबियत तो ठीक है ?

रामनाथ ने निष्प्रभ हँसी हँसने की चेष्टा करते हुये कहा : ठीक है। एक संक्षिप्त नीरस उत्तर था। अपने कमरे में जाकर उन्होंने द्वार भीतर से बन्द कर लिया और सूटकेस खोलकर अपना पिस्तौल निकाला। वे चाहते थे जाकर उस स्त्री और शीलप्रभु दोनों को गोली मार दें, फिर एक विचार उठता था, खुद अपनी ही हत्या कर लें। लेकिन ठंडा लोहा बड़ी कातिल चीज होती है। उसके स्पर्श को झेल जाने के लिये एक बहुत बड़े आदर्श की जरूरत हुआ करती है। उन्हें याद आने लगा। यह गौरव, यह रियासत, उनका कुटुम्ब पालन की मर्यादा सब उन्हें पीछे खींचने लगे। रामनाथ का हाथ काँप गया, पिस्तौल उन्होंने चुपचाप भीतर धर दिया और द्वार की ओर ऐसे देखा जैसे चोर दूसरे के बक्स में हाथ डालते वक्त देखता है। और वह उठ खड़े हुए, किन्तु अशान्ति ने पीछा नहीं छोड़ा। मन भीतर ही भीतर फुंकार रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या था और जमाना क्या से क्या हो गया ? अगर वह कांग्रेस वालों का हल्ला न होता तो उस औरत के हाथ कटवा कर, नंगा करवा के मुँह काला करवा के, गधे पर चढ़ाकर, जूतों के हार डलवा कर वे उसे सड़कों पर निकलवा देते। यह उनका क्रोध ही था क्योंकि अँग्रेजी राज में वे ऐसा नहीं कर सकते थे। रामनाथ के पूर्वज ऐसा करते थे। और इसी कारण प्रजा में जातीयता और राष्ट्रीयता का भाव ही नहीं रहा था।

घूमते-घूमते वे थक गये। उन्हें लगा वे कहीं कुछ भूल गये हैं। बैठ गये, फिर चारपाई पर लेट गये। क्या वह सचमुच उमानाथ नहीं था ? तभी उन्होंने बाहर कुछ शोर सुना। दरवाजे के पास ही कोई बोलता हुआ जा रहा था : चाची जी हम आ गये।

बच्चों का स्वर रामनाथ पहचान गये। दयानाथ और राजेश्वरी नहीं आये। नौकरों के साथ अपने बच्चों को भेज दिया है।

नौकर का स्वर सुना : कह दिया है अँधेरा होने तक ले आना वर्ना उन्हें तकलीफ होगी।

महालक्ष्मी ने कहा : तकलीफ क्यों होगी ? कह देना उनके ही नहीं, बच्चे हमारे भी हैं। तुम जाओ। हम भिजवा देंगे।

शायद महालक्ष्मी बच्चों को लेकर भीतर चली गई। और नौकर चला गया रामनाथ का मन बच्चों से मिलने के लिये उमड़ आया। दया अपराधी है। उसकी स्त्री का भी अपराध है। लेकिन बच्चों ने क्या किया है ? वे तो अजातशत्रु हैं। दूध के धुले। पवित्र। लेकिन उन्हें 'दुनियादारी' यानी कमीनापन अर्थात् हमारी सभ्यता अभी मारमार कर नहीं सिखाई गई। रटा नहीं दी गई। फिर भी वे उठ नहीं सके।

शाम का अँधेरा छा गया। उन्होंने द्वार खोलकर बत्ती जलादी और एक आरामकुर्सी पर बैठ गये। बच्चे रोशनी देख कर इधर ही भाग आये और उनकी गोदी में 'ददुआ, ददुआ' कह कर चढ़ गए। महालक्ष्मी प्रसन्न सी देखती रही। कुछ देर तक कोलाहल मचता रहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरे दिन रामनाथ ने सत्यनारायण से कहा : सत्यनारायण !

'सरकार !'

'उन्नाव को खबर भेज दो। हम अभी नहीं लौटेंगे।'

'जो हुक्म सरकार।'

'मैनेजर से कहलवा दो कि हम पारसाल की गलती को इस साल पूरा करेंगे।'

वह समझा नहीं, पर रटी हुई बात कह गया : जी हाँ सरकार।

रामनाथ झुँझला उठे। बिना कुछ कहे भीतर चले आए। सत्यनारायण विस्मय से देखता रहा।

वह दिन भी बीत गया। दूसरे दिन सत्यनारायण ने आकर कहा : सरकार। जान जान बख्शी जाये तो मैं कुछ अर्ज करूँ।

रामनाथ ने अखबार पर से निगाह उठा कर कहा : क्या है ?

वे इस समय पढ़ने में लगे हुये थे। कानपुर के दंगे के परिणाम पर किसी का लेख था, और बहस हो रही थी कि गाँधी जी गोलमेज कांफ्रेंस में विलायत जायेंगे कि नहीं ? इस समय उन्हें इस प्रकार व्याघात पड़ना अच्छा नहीं मालूम दिया। पर जब वह आ ही गया था तो पूछने को विवश हो गए। सत्यनारायण ने कहा : सरकार ! वह थियेटर वाले दूसरे ही दिन कानपुर छोड़कर भाग गये।

रामनाथ को एक झटका लगा। बोल उठे : क्यों ?

'मालूम नहीं सरकार। उस दिन मैंने हुजूर को खबर दी थी उसी शाम को उनका आखिरी शो हुआ था। कहते हैं वे उसी दिन जाने वाले थे, मगर टिकिट बिक चुके थे, इसलिये उन्हें रुक जाना पड़ा।'

रामनाथ को अपने ऊपर गर्व हुआ। डर गए न ? रामनाथ ने सोचा चलो। अगर वह उमानाथ ही था तो उसने सोचा होगा कि उसी के भले के लिए मैंने उसे छोड़ दिया, वर्ना मजा चखा देता। वे मुस्कराए और फिर अखबार पढ़ने लगे। सत्यनारायण कुछ देर तक देखता रहा, फिर चला गया।

—४००—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महालक्ष्मी द्वार के पीछे से सुन रही थी। वह अचानक ही कुछ पूछने आई थी। उसके कान खड़े हो गए। तो क्या सत्यनारायण ने ददुआ से सब कुछ कह दिया? वह यह सोचते ही काँप उठी। उफ! अब क्या होगा। पर दबे पाँव लौट गई। उसकी इच्छा हुई कि राजेश्वरी के बच्चों को फिर बुलवा लिया जाए। कुछ वक्त बहल जायेगा। पर फिर रामनाथ के डर से चुप हो गई। अगर उन्हें थ्येटर के मुलाकात के बारे में मालूम हो गया है तो वे क्या सोचेंगे। वह चुप ही रह गई।

कानपुर का रहना एक आफत हो गया। उन्नाव में पच्चीस धन्धे थे अपना घर था। सुबह से शाम तक दिन निकल ही जाता था। यहाँ वह बँगला किराये पर ले लिया है, न इधर जान पहिचान है न उधर, ऐसे जैसे किसी बियाबान में किसी डाक बँगले में आकर टिक गए हों। अकेले। दिन, साँझ, रात, भोर सब भारी हो गए हैं, रास्ता बहुत लम्बा है, कोई काम करने को रहने को नहीं रहा। खाना खाते हैं तो इसलिए नहीं कि भूख लगती है, वरन् इसलिए कि आदत पड़ गई है, स्वाद की इच्छा होती है, वक्त बँध गया है।

—३—

वही स्त्री का सौभाग्य है जहाँ वह रूखा-सूखा खाकर भी रहे अपने पति के ही साथ। तभी स्त्रियाँ कहती हैं कि धन है, वैभव है पर महालक्ष्मी को सुख नहीं मिला है। किसकी सेवा करे वह? किससे अपने यौवन की एकान्त बातें करे। हर व्यक्ति के जीवन में प्रारम्भ में एक अल्हड़पन रहता है। यही यौवन की स्फूर्ति कहलाती है। इसका आधार शरीर की शक्ति होती है। कैसा भी ज्ञानवान हो वह वासना के दो एक विचार सोच ही लेता है। ज्ञान बढ़ने पर मनुष्य सदैव शर्बत नहीं चाहता तो पानी की तो प्यास लगती ही है। महालक्ष्मी इसी प्रकार अपने जीवन का शर्बत खो चुकी थी। अब वह काम धन्धों के पानी से अपनी प्यास बुझा लेती है, उस मिठास को भुला देने में ही उसने अपना श्रेय समझा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, उम्र वैसे भी बीतती है, यों भी बीत ही जाती है। जिसे कहते हैं कि आदमी को कुछ मिलना चाहिए, सो वह तो दोनों ही हालतों में नहीं मिलता। मन की बात है, उसे बहलाये रखने की सामर्थ्य होनी चाहिए। सो वह सामर्थ्य ईंट पर ईंट धर कर तो बनाई नहीं गई थी, घर बनाया था, पर वह मिट्टी का था। और मिट्टी का घर कोई दो मिनट में तो बनता नहीं। मिट्टी का एक लौंदा पहले जमा दिया, वह जरा कुछ सूख गया तो उस पर दूसरा धर दिया, इस प्रकार भीत बनती जाती है। महालक्ष्मी का वह घर अब मिट्टी का ढूह हो गया है। वह अब तक उपन्यास पढ़ती थी। अब उसकी उनकी ओर से रुचि हट गई है। ये उपन्यास प्रेम के बल पर जीवित रहते हैं। अंत में सब पात्र जाकर जीवन का तथ्य पाते हैं। पाठक फिर भी नहीं पाता। उन्हें पढ़ कर लाभ? और वे पात्र फिर इस दुनिया में तो होते भी नहीं।

वह विधवा नहीं है, उसका पति जीवित है, पर वह उसके लिये नहीं है। कैसी दारुण वेदना है। जब पैदा हुई थी तब उस समय क्या उसका कोई पति था? नहीं। जीवन की एक विशेष आयु पर विवाह हुआ। तब से अभीतक जिस आदर्श को पालती चली आई है, उसको इस प्रकार वह कैसे नष्ट-भ्रष्ट हो जाने दे? किंतु अब आशा एक उन्माद है। उमानाथ! जब वह अपने पति के विषय में सोचती तो अपने भाग्य को इधर-उधर की स्त्रियों से तुलना करती। उसकी नजर में उसकी नौकरानियाँ ही अच्छी थीं। धन वैभव का भेद तो कर्म के अनुसार भगवान देता है, पर यह पारिवारिक सुख तो उन्हें है। वे नौकरानियाँ हैं, पर उनके पति का घर उनका अपना है, जहाँ वे स्वामिनी हैं।

महालक्ष्मी ने अपनी इस व्यथा में किसी को भी साथी नहीं बनाया। वह अकेले ही रिसती। जिस दिन से वह उमानाथ से मिल कर आई थी, उसी दिन से उसकी नींद गायब हो गई थी। सारी रात बस करवटों में बदल जाती। उसे लगता कि वह वास्तव में जीवित नहीं है। वह एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भयानक स्वप्न देख रही है। उसका प्राप्य उसके सामने है, पर वह सिर्फ सोने की अशर्फियों की तरह है जिसकी एक साँपिन फन उठा कर रक्षा कर रही है। महालक्ष्मी चाहती है उस धन को अपना कहे; कह ले; पर दूर से। निकट वह साँपिन नहीं जाने देती, और वह धन स्वयं इतना हृदयहीन है कि उसमें चमक और खनखनाहट के अतिरिक्त कुछ नहीं।

महालक्ष्मी साँझ के उतरते अंधकार को देखती। फिर सोचती न जाने कितनी अभागिनें इसी तरह तड़प कर अपनी सूनी जिंदगी बिता रही होंगी। उमानाथ इतना बड़ा जाल फैला सकता है यह वह अब भी विश्वास नहीं कर पाती थी। पर जो आँखों से देख लिया था, उसे वह अब झूठ कैसे कह सकती थी? उसका मन करता वह ज़ोर से रो पड़े। देखे यह समाज देखे, संसार देखे, कि उसके साथ कितना भयानक अत्याचार हो रहा था। उसका पति एक सौत लाया। ठीक है। वह तो पुरुष का अधिकार है इस बात को वह बार बार सोचती क्योंकि जैसे पत्थर गिरने पर लहरियाँ फैलती हैं पर वहीं तक फैलती हैं जहाँ तक तलैया का पानी है। उसके बाद फिर भटंट बंजर है। तो जितनी महालक्ष्मी की सीमाएँ हैं वह हैं ही कितनी। बहुत सी स्त्रियाँ देश सेवा का व्रत लेकर एक दंभ पैदा कर लेती हैं, कुछ आजीवन भौं चढ़ाये समस्त पुरुष जाति से घृणा करती हैं। यदि उनके पास पुत्र होता है तो एक अपवाद होता है। महालक्ष्मी जिस कुल की मर्य्यादा रखने को बद्ध है, उसमें, उस लोहे के कटघरे में खड़ी हो कर, जब वह देखती है, तो सब सुखी मालूम देते। दुखी है तो बस एक मात्र वह ही।

फूल खिलते हैं, नयनों में खटकते हैं। चाँदनी जब पत्तों पर विभोर हो जाती है, और कानपुर के गंदे शहर की परछाइयों का जमघट इस सिविल लाइन्स में नहीं आ पाता, तब भी उसमें एक सुलगन है। वही मादक तृष्णा अंगों में करकती है कि मन उसे व्याकुलता से बुलाने लगता है; किसे बुलाता है वह? अपनी अतृप्त वासनाओं के हाहाकार को वह दुख कहता है क्योंकि उनसे छूट नहीं पाता। यही चाँदनी मन का सबसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बड़ा संतोष है, यदि इस समय दो नयनों में उसकी स्निग्धता उतर सके, फिर होठों के कोने खिल उठें और पलकों की बिछलन पर एक नशा सा अँगड़ाई लेने लगे। एक जादू सा जैसे मुलायम गुदगुदी मुट्ठी खोल दी, बंद कर दी, न कुछ था, न कुछ है, पर चारों ओर एक सुगंध फैल गई है। आँखें खोलने को भी इच्छा नहीं होती। बस कानों में एक मंदिर स्वर का संगीत गूँज रहा है, रागिनी जिसमें मातरी विलास प्रतिध्वनि हो कर फिर चाँदनी बन कर पत्ते-पत्ते पर थिरकता है, और वह अच्छा लगता है, जब हल्का प्रकाश जीवन की सुप्त वेदनाओं को जगा कर अंदर, अंदर के स्तरों को उघाड़ देता है और फिर लगता है जैसे भादों की घनी अँधियारी में जब बिजली कौंध कर छिप जाती है तब नदी की कल-कल धारा के फनोच्छ्वासों पर कोई कोयल 'कुहू' 'कुहू' करके पुकार उठती है ...

महालक्ष्मी शैया पर तड़फड़ाने लगती। जितना ही उमानाथ और उसकी वेश्या के विषय में सोचती, उस वेश्या की जगह अपरूप ढंग से अपने को रख कर सोचती, अब वह केवल स्त्री पुरुष हो जाते और वासना के फिरकते बुद् बुद् ...मंथर गति से नाचते.. फूट जाते ... आँख खुलने पर महालक्ष्मी अंधेरा को देखती और फिर वह एक ठंडी साँस लेकर सोने के लिये आँखें बंद कर लेती, वह आँखें जिनमें अनेक चित्र रहते, जैसे वह टूट जाते और आँखों में पीड़ा होती .....

तीन चार दिन में महालक्ष्मी की सूरत पर विषाद की छाया घिर आई।

४

रामनाथ अपनी चिंताओं से व्याकुल हो गये। इसका मतलब था कि वह उमानाथ ही था। वर्ना भागने की क्या आवश्यकता थी। हो सकता है इसलिये डर कर भाग गये होंगे कि राजा साहब अब कहीं गिरफ्तार न करवा दें। तो क्या उमानाथ के सामने उसके पिता को एक साधारण बाजारू औरत ने चाँटा मारा और वह चुपचाप खड़ा अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिता को ही दोषी कहता रहा ? रामनाथ को यह स्वीकृत नहीं था। नहीं वह कोई और ही था। और कोई क्या भाग नहीं सकता था ?

हठात् उन्होंने उठकर आवाज दी: सत्यनारायण !

सत्यनारायण ने प्रवेश किया।

रामनाथ ने कहा : पारसाल कुंभ हुआ था।

सत्यनारायण : जी सरकार।

'तो पारसाल जो चूक हुई उसे अबकी बार खोदेंगे। बहू से कहो इलाहाबाद की तैयारी कर ले। तीर्थस्नान करेंगे। इससे मन शुद्ध होगा।' और वे धीरे से बुड़बुड़ाये -- 'बूढ़ा हो गया हूँ, अब न जाने कब भगवान का बुलावा आ जाये।'

सत्यनारायण चला गया। महालक्ष्मी सुन कर आई और द्वार के पीछे खड़ी होकर बोली : कब चलेंगे।

'कल ही ठीक रहेगा', रामनाथ ने कहा।

महालक्ष्मी ने सिर झुका लिया रामनाथ कहते रहे : इधर देखता हूँ तुम्हारी तन्दुरुस्ती भी बहुत गिर गई है। कानपुर का पानी ही खराब है।

महालक्ष्मी का मन काँप उठा। ददुआ क्या कहना चाहते हैं ? राम नाथ की तीक्ष्ण आँखों ने बाहर देखते हुए जैसे अब आकाश के शून्य को पकड़ लिया था। महालक्ष्मी भीतर चली गई।

तैयारियाँ होने लगीं। घर में नौकरों का हल्ला होने लगा। परंतु रामनाथ अपने कमरे में चुप बैठे रहे। उनकी चिंता बढ़ गई थी। क्या वे सचमुच अपनी व्यथा को खो सकेंगे ? क्या वे अवधेश के बड़े होने तक जीवित रह सकेंगे ? यदि बीच में ही वे मर गये तो सब कुछ कौन सँभालेगा ! उन्होंने निश्चय किया कि प्रयाग से लौटते समय वे सब कुछ तय करके उन्नाव जाते ही अपनी वसीयत लिख देंगे।

भविष्य कितना अनिश्चित था। उन्होंने उठ कर खिड़की बंद कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दी। वे यह सोचना भी नहीं चाहते कि उनके कमरे के बाहर भी एक संसार है।

५

वे मोटर से गये।

वैसे कानपुर से इलाहाबाद सीधी लाइन पर पड़ता है। पुरबिया ढब के लोग देख कर ही लगता है कि वे अपने पुराने विश्वासों के प्रति बहुत अधिक मोह रखते हैं। अवध, भोजपुरी की शब्दावली वहाँ रेलों में सब ही लोग बोलने हैं। और उनमें जो एक अँगरेजों से लड़ने की पुरानी परंपरा है, उसके कारण वे कुछ उद्धत से दिखाई देते हैं। लेकिन जो दूकानदार और थुल-थुल व्यापारी, तंबाकू वाले पान बहुतायत से चबाते हैं और नीचे का होंठ निकाल कर बात करते हैं क्योंकि मुँह की पीक वे जल्दी नहीं थूकते, रेल में झगड़ने के शौकीन होते हैं। ये बनिये राजपूताने और मारवाड़ के बनियों की तरह दब्बू नहीं होते, पर ताल्लुकेदार और राजाओं की भीड़ को देख कर जलते हैं। आम जनता बहुत ज्यादा गरीब है और वह इतना भी समय नहीं पाती कि जरा आराम से साँस ले सके। इसका कारण है कि यद्यपि वे सहस्रों हैं—गरीब हैं—पर उन पर ताल्लुकेदारों जैसे विष्णु जो लेटे हैं तो फेन गिराते ही इन गरीबों का जीवन बीत जाता है। गंगा के तीर के वे लहलहाते सुन्दर मैदान, वे मनोहर दृश्य, मोहक वृक्ष, सब कुछ इतना घनी है कि उसमें मनुष्य की इतनी दुर्गत देख कर अत्यंत क्लेश होता है।

और कानपुर के अनंत पापों को लेकर जब गंगा बहती हुई इलाहाबाद पहुँचती है तब जमुना आकर उससे कान में कुछ कहती है और फिर संगम में जल समुद्र की भाँति फैल जाता है। यहीं एक दिन, दो दिन, महीनों, वर्षों.....अगणित व्यापार हुए हैं..जन्म, मृत्यु, ज्ञान, तप, योग, उपदेश, जुलूम, अत्याचार, हाहाकार, विजयिनी सेना, रक्त सने आयुधों का धोया जाना, नारी का मातृत्व, या फिर विलासिनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
का नग्न नृत्य, बालकों का निर्ममवध, फिर अँग्रेजों का बर्बर शासन ...फिर...सत्याग्रह....

महालक्ष्मी ने इलाहाबाद में गंगा स्नान किया। जब वह निकली तब गंगातीर पर उसे भूखों की भीड़ ने घेर लिया। उनको देख कर उसे अत्यंत करुणा हो आई। उस समय उसने सत्यनारायण से कहा: बेचारे!

सत्यनारायण ने सुना और मालकिन की करुणा को पहचाना।

दूसरे दिन से महालक्ष्मी अपने हाथ से दान करने लगी और रामनाथ चौंक उठे। उन्होंने देखा। समझे नहीं। महालक्ष्मी ने अपने सिर में सेंदुर रहने दिया, माथे पर बिंदी भी, हाथ में चूड़ी और पाँव में बिछिया भी, लेकिन सिर के काले बाल खोल दिये और सफेद साड़ी पहन ली और सब आभूषण उतार दिये। उस त्याग की भावना से जो उसके चेहरे पर चमक आ गई उससे उसका स्त्रीत्व का आकर्षण बढ़ गया, क्योंकि उसके जो गाल कुछ खिंचे हुए से थे अब उन पर घुँघराली जुल्फें आ गईं और वह दोष छिप गया। हाँ एकदम काले और घने बालों की पृष्ठभूमि रहने के कारण उसका मुँह अपने आप पहले से कुछ अधिक गोरा दिखाई देने लगा।

रामनाथ ने उससे पूछना चाहा, पर वे पूछ नहीं सके। वे स्वयं महालक्ष्मी के इस सुहाग भरे वैधव्य को समझते थे। कुछ भी कह सुन कर वे मर्यादा को गिराना नहीं चाहते थे। सत्यनारायण से उन्होंने पूछा: बहू का जी यहाँ तो लगता है!

'हाँ, मालिक!'

रामनाथ ने और कुछ पूछना चाहा, पर फिर मर्यादा के कारण चुप हो रहे। बात टाल कर कहा: बहू क्या यहाँ प्रसन्न है!

'हाँ सरकार।' सत्यनारायण ने कहा: दिन भर धरम के कामों में ही बीत जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'रामनाथ के मन को संतोष हुआ। पूछा : क्या क्या करती हैं ?'

'सरकार, नित्य तो दान करती हैं। हजारों भूखों का पेट पलता है। इतनी असीस देते हुए लौटते हैं कि यदि कोई सुन ले तो वहीं तर जाये। मालकिन ने इस छोटी उमर में जो कठिन जोग साध लिया है सारे शहर में इसकी चर्चा है। लोग कहते जाते हैं कि राजा रामनाथ के घर की बहू है, यही अगर धरम नहीं पालेगी तो फिर यहाँ धरम की रच्छा करेगा भी कौन ? रोज ही पंडे असीस देते हैं। उन्हें माल मिलता है। दान से भिखारी मालामाल हो रहे हैं। पंडों का तो कहना है कि उनका व्यापार ऐसा तो तब ही चलता है जब कोई बड़े-बड़े महाराजा या महारानियाँ आती हैं। सब जगह नाम फैल गया है। लोग कहते हैं कि मालकिन का सुभाव इतना अच्छा है कि एक बार को कुछ न भी दें तो भी लगता है कि जनम-जनम की साध पूरी हो गई। अन्नपूरना देवी के दरसन हो गये। सदा मुस्कराती रहती हैं। देख कर लगता है जाने कहाँ को सोच रही हैं, लौ लगी हुई है, सरकार, लगता है भगवान की छाया उन पर उतर आई है।'

रामनाथ सुनते रहे। उनके मन में आनन्द की लहर उठी। उनके वंश का नाम जब सब डुबा गये तब इस लड़की ने उज्ज्वल कर दिया। सत्यनारायण कहता जा रहा था : लोग देखते हैं। कहते हैं, क्यों नहीं ? राजा रामनाथ का तो सारा खानदान ही ऐसा है। एक-एक हैं। उनके भाई ने पुलिस की नौकरी छोड़ दी, गुलामी छोड़ दी, एक भी लड़का ऐसा नहीं जिसने देश के लिये सब कुछ न्यौछावर नहीं कर दिया। एक ने तो जान ही दे दी। और अब धर्म का डंका बज रहा है। मालकिन जब पहुँचती हैं, तब भूखे दूर ही से उनकी मोटर को देख कर जय जयकार करते हैं। लोग कहते हैं कि राजा हो तो ऐसे। प्रजा से लेकर प्रजा को लौटा दिया, गरीबों का पेट पालन किया। और मालकिन भी उन भिखारियों पर इतनी दया करती हैं कि उनकी आँखों में लोगों का दुख देख कर पानी भर-भर आता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्यनारायण का स्वर कुछ गद्‌गद हो गया था। रामनाथ का मन उछल रहा था। संसार क्या कह रहा है? जिस देशभक्ति का उन्होंने विरोध किया, वह भी आज उनकी प्रशंसा बन गई है। और महालक्ष्मी के इस आकस्मिक परिवर्त्तन को वे शीघ्र ही समझ नहीं पाये थे। सत्यनारायण कह रहा था: सरकार! कल तो कुछ अखबार वाले आये थे, पूछ रहे थे, कौन हैं? किस खानदान में हैं ...मैंने कहा आनरेरी मैजिस्ट्रेट राजा साहब रामनाथ जी का नाम किसने नहीं सुना...

रामनाथ को इस बात में कोई रुचि नहीं हुई। वे समझ गये कि यह हिस्सा खैरख्वाही दिखाने वाला है। उन्होंने काट कर कहा: तो अभी यहाँ कुछ दिन और रहा जायेगा? बहू से पूछना।

सत्यनारायण की बात कटी, वह कुछ हतप्रभ हुआ। उसने कहा: जो हुक्म सरकार।

'अवधेश घर पर रहता है?' रामनाथ ने पूछा।

'नहीं सरकार' सत्यनारायण ने फिर स्फूर्ति से उत्तर दिया: छोटे मालिक के हाथ से ही सब दान पुन्न कराया जाता है। मालकिन उन्हें सदा साथ रखती हैं।

रामनाथ सोचने लगे।

६

महालक्ष्मी ने जब से सिर के बाल खोल दिये तब से उसे लगा जैसे वह पहले से बहुत खुल गई। पहले लोगों को देख कर उसे मुँह छिपाना पड़ता था अब सब की दृष्टि उसकी ओर उठती थी और वह उन्हें एक विजयिनी की तरह देखती थी। देखने वाले देखते ही रह जाते थे। उसके विषय में अनेक प्रकार की धारणाएँ हो गईं। जो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे उनके दृष्टिकोण में बहुत कुछ होता था। परंतु महालक्ष्मी को जैसे दुनिया एक चलती फिरती छाया हो गई। कभी-कभी उसे पंडों की लोभ वृत्ति देख कर घृणा हो आती पर जब असंख्य भूखे उसका जय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जयकार करते तब उसे एक आनन्द होता, एक स्वामित्व की भावना जाग उठती। भंडारे करके उसके मन जो अहंकार होता, उसे लगता वह उसकी समस्त वेदनाओं को ढँकने की शक्ति रखता था। गरीबों को देख कर उसके मन में अत्यंत दुख होता और उसका अपना दुख बहुत छोटा मालूम देता। परन्तु कल तक जो बात थी वह अब नहीं रही थी। अब वह म्यान से निकली हुई तलवार के समान थी जो हवा में खून के लिये लपलपा रही थी। महालक्ष्मी जितना दान देती उतना ही उसे लगता उसका भी संसार में जीवन सार्थक है। जीवन की समस्त अतृप्त यौन वासनाएँ अब भगवान कृष्ण के पौरुष पर समर्पित हो गईं। सदियों से इसी प्रकार भारत में युवतियों को बहलाने का एकमात्र साधन अब सजग हो गया। यह राजसी ठाट से रहने वाला त्याग उस जलती हुई दीप शिखा के समान अंधकार में चमकने लगा, जिसके तल में ढेर-ढेर तेल था, तेल जिसे संस्कृत में स्नेह कहते हैं। यह नीरस वियोग नहीं था जो शरीर में भस्म रमा कर आकाश के शून्य को देख कर जीवन काट देता। इस विरह में अभी तक उस पुराने आलिंगन की गर्मी शरीर में बची रह गई थी, जिसके सहारे जीवन कटा जा रहा था जैसे इकतारा टूट जाने पर भी कानों में उसकी गूँज बची रह गई थी।

महालक्ष्मी सोचती। हरिद्वार, गंगोत्तरी, कैलाश, लक्ष्मण झूला, नाथ द्वारा, ब्रह्मावर्त्त बिठूर, अमरनाथ, पुरी, रामेश्वरम्, वृन्दावन और नैमिसारण्य आदि के माहात्म्य को सुनती और फिर उस आत्मा की कल्पना करती जो निरंतर घूमती हुई हर जगह जाती और फिर अनेक अनेक तीर्थस्नानों का विचार मूर्तिमन्त हो जाता। वहाँ कितना कलुष है, कितना व्यापार, झूठ, चोरी, व्यभिचार, आत्मसम्मान की हीनता है, इस पर उसका ध्यान नहीं जाता। उसके लिये अब जीवन जैसे एक सुपना था एक रोमान्स मात्र। कभी वह बर्फ की चोटियों पर खड़े हुए मौन नीरव यात्रियों को श्रद्धा से भगवान शिव के चरणों पर जाते हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी कल्पना में देखती, कभी गोस्वामियों की मंदिरों की कोमल घंटियों की झंकार सुनती; और फिर कभी प्रचंड शब्द करने वाले, दक्षिण के प्राचीन मंदिरों के गोपुरों की छाया में खड़ी दिगंत तक गूँजने वाले, घन्टों का गंभीर निनाद सुनती। जीवन ऐसा हो गया जैसे धूप निकलती है तो वह चटकदार नहीं; सुनहली होती है। और उस कष्टों से भरे मृत्युलोक में वह वियोगिन एक अगरु—धूम की लहर सी चलती, जैसे सघन नीली छाया से आस्नात धुँधियाले पहाड़ों की बर्फानी संकरी राह पर एक सुप्त वेदना छाई रहती और वह सवैय में पढ़ती, जिनमें राधा के उरोजों को देख कर नाइन मुस्कराती रहती, क्योंकि उन पर ईंगुर की सी ललाई थी और तब महालक्ष्मी संकोच नहीं करती क्योंकि वह सब धर्म था, उनमें स्त्री आत्मा थी, पुरुष एक था, वह परमात्मा था, उसमें अपने आपको लय कर देना चरमावस्था थी।

साँझ होने लगी। महालक्ष्मी तैयार हो गई। उसने सफेद साड़ी पहन ली। जब वह बाहर निकली वह अकेली थी। सत्यनारायण मोटर लिये तैयार था। महालक्ष्मी को देख कर वह उठ खड़ा हुआ।

महालक्ष्मी ने पूछा : ददुआ चले गये ?

'जी हाँ, उन्होंने मोटर वापिस भेजी है।'

'और अवधेश।'

'छोटे मालिक भी उन्हीं के साथ गये हैं।'

महालक्ष्मी मोटर में बैठ गई। सत्यनारायण गाड़ी चलाने लगा। महालक्ष्मी नया शहर छोड़ कर जब गंगा तीर पर पहुँची तब उन पुराने मकानों को देख कर अच्छा सा लगा। इन मकानों में वही हिन्दू भावना है, वह पुराना हिंदुस्तान जो बदलना नहीं चाहता। सिर पर बाल उगते हैं। आदमी जरा अधिक बढ़े कि आदतन बक-बक करने वाले नाई से उन्हें कटवा लेता है, पहले जैसे करवा लेता है। वह समझता है उसके बाल पहले जैसे ही हैं पर वह यह नहीं याद रखता कि सब बालों की जड़ पर नई पैदाइश है, वह नहीं है जो पहले थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह अपने भ्रम में मस्त रहता है, और धीरे-धीरे एक दिन सफेद बाल निकलने लगते हैं।

महालक्ष्मी जब लौटी तो मन उद्विग्न था। वह स्वामी श्री युगलानन्द जी महाराज के उपदेश सुनने आई थी। स्वामी जी सुगठित व्यक्ति थे और उनके बारे में कहा जाता था कि औरतें उनकी मालिश करके स्नान कराती थीं और कोई स्त्री यदि बच्चे की आस में उनके पास गई तो उनकी दी हुई पुड़िया का असर कभी नहीं चूका। समय आने पर उसको पुत्र की माता होने का सौभाग्य मिल कर रहा। वाणी में ऐसी मिठास थी कि कोई क्या कहे? पंडाल में स्त्री पुरुषों की खचाखच भीड़ रहती। आजकल रानी शशिप्रभा की अटूट सेवा के कारण वे प्रयाग में टिके हुए थे, वर्ना उनको क्या कमी? जिस रियासत में जाते वहीं राजा महाराजा दर्शने पूछते, वजीर और मंत्री मोटर लिये खड़े रहते, रानियाँ सुहाग की अमरता के लिये बालक माँगतीं और जमींदार मुकद्दमों की जय-पराजय पूछते। एक राजा को तो उन्होंने हीरे फूँक कर दिये थे। उस भस्म को बनाने में लगभग आठ लाख सत्तर हजार रुपये खर्च हुए थे। कहा जाता था अब उस राजा के पास असंख्य रानियाँ थीं और महालक्ष्मी ने स्त्रियों की बात-चीत में सुना था कि रानियाँ उसकी याद में मगन पड़ी रहती हैं। जब राजों के खान्दान की औरतें नौकरों को पालती हैं, राजा ही वहाँ सैंकड़ों दासियों को रखता था। स्वामी जी केस विचारधारा के आदमी थे यह कहना कठिन था। योग, तप, स्वाध्याय, ध्यान, मुद्रा, और अनेक मतों का उनमें सार इकट्ठा हो गया था। रानी शशिप्रभा तो उनके समीप ऐसी बैठी थी जैसे कोई दासी हो। महालक्ष्मी की आग धधक उठी। सिर गर्म हो रहा था। महालक्ष्मी ने कहा: ड्राइवर!

'हुजूर!'

'गंगातीर पर चलो।'

सत्यनारायण ने गाड़ी एकांत की ओर मोड़ दी। गाड़ी धीमे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चलने लगी। गाड़ी कुछ ही देर में नीरव स्थान पर पहुँच गई। ठंडी हवा चल रही थी। उससे उसका दिमाग कुछ हल्का हुआ। गंगा की प्रशस्त धारा पर डूबते सूरज की अंतिम पीली किरणें गिर रही थीं। अत्यंत सुहावना दृश्य था। दूर कहीं लगता था जल में सफ़ेद और नीला मिल गया है, और उस पर अब सोना बहा जा रहा है। आकाश और पृथ्वी में एक शीतलता थी। धीवरों के झुंड दूर पर बैठे थे। गंगा में नावें घूम रही थीं। और सब कुछ लगता था अब उड़ जायेगा, उड़ जायेगा। महालक्ष्मी मोटर में से बैठी बैठी देखती रही फिर उतर कर नीचे आगई और नदी तीर पर खड़ी हो गई।

एकाएक वह चौंक उठी। उसकी आँखों को विश्वास नहीं हुआ। एक नाव इधर ही आ रही थी। उसमें दो व्यक्ति थे। एक सुंदरी स्त्री और एक पुरुष। महालक्ष्मी को जैसे बिजली का तार छू गया। क्या यह सच है? स्वयं शीलप्रभु और उनकी राधा। यह प्रयाग में कैसे आये? और फिर वह सब कुछ भूल गई। उस समय उसकी आँखों में राधा गड़ गई और वह आवाक् सी एकटक उसे घूरती रही। शीलप्रभु अब खाँसने लगा। उस खाँसी में एक भयानकता थी, क्योंकि उसने उस व्यक्ति को शिथिल कर दिया। राधा ने उसे अपनी गोद में लिटा लिया और तीर की ओर स्वयं खेने लगी। नाव आकर तीर से टकराई। सत्यनारायण उस समय मोटर के पीछे छिप कर बीड़ी पी रहा था।

महालक्ष्मी ने देखा। क्षण भर वह खड़ी रही और फिर बढ़ कर कहा: नमस्ते।

राधा ने देखा। वह उसे नहीं पहचान सकी। किंतु तब तक उमानाथ चैतन्य हो गया था। उसने कहा: आप कौन हैं?

महालक्ष्मी तड़प उठी। उसने तीखे स्वर से कहा: रुक्मिणी।

उमानाथ सकपका रहा था। उसे डर था। कहीं महालक्ष्मी राधा के सामने और कुछ न कह दे। वह महालक्ष्मी के व्यंग को समझ गया था। रुक्मिणी कृष्ण की पत्नी थीं। राधा उनकी क्रीड़ा संगिनी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस उत्तर को सुनकर वह भीतर ही भीतर तिलमिला गया। किंतु करता भी क्या? राधा मुस्कराई। पर उसने भी कुछ नहीं कहा। वह समझ ही नहीं पाई थी कि यह औरत कौन है। पर उसने सोचा कि कोई भटकती स्त्री है, जो सब वैभव होते हुए भी दुखी है। उमानाथ ने कहा: खाँसी बहुत हो गई है।

राधा ने कहा: डाक्टर को क्यों नहीं दिखाते।

'दिखाऊँगा।'

'रोज कहती हूँ। रोज टाल देते हो। तुम्हारी वह आदत ही इसके लिये जिम्मेदार है।' महालक्ष्मी समझ गई कि राधा शराब के बारे में कह रही है। उमानाथ ने हँस कर कहा: बस तुम घूम फिर कर वहीं आ जाती हो।

'लेकिन मैं कहती हूँ कि यही बात है।'

'अच्छा अच्छा कल देखा जायेगा।' टालते हुए उमानाथ ने कहा: अब चलें। अब मैं ठीक हूँ।

'नाव मैं ही खेऊँगी।' राधा ने जिद की।

'नहीं, मैं खेऊँगा, उमानाथ ने कहा—जब तक हाथों में दम है तब तक मैं ही खेऊँगा, तुम गाओगी।'

'मैं नहीं गाऊँगी।'

'गाओगी, जरूर गाओगी। मैं धारा को काट सकता हूँ, पर मेरे सामने वही बैठेगा जो गाकर मुझे भुला सके।'

उस समय राधा के नेत्रों में विलास की भुजाएँ उठी और स्वर उसके मुँह से ऐसे निकला जैसे नृत्य करते समय मांसल अंगों की थिरकन पर नूपुर बजता है। नाव सरक चली, और उतरते अंधकार को झिल्ली को सीता हुआ वह स्वर गंगा की प्रशांत कलकल पर झूमता हुआ महालक्ष्मी के मन में उतर गया। नाव दूर चली गई और फिर उस सूनेपन में एक झिल्लीरव सा गूँज उठा। महालक्ष्मी सुनती रही, सुनती रही.....नाव खो गई और फिर वह गीत का स्वर भी खो गया, पर

CC-0. In Public Domain. Funding by JKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंधकार में हवा तेज हो गई, फिर एक दो तारे निकल आये, पर महालक्ष्मी खड़ी रही.....खड़ी रही।

जब सत्यनारायण ने चलने के लिये कहा तो महालक्ष्मी जैसे चौंक उठी। वह क्लिश्यमान सी सीट पर गिर गई।

७

उसे लगा वह बेहोश हो गई थी। सत्यनारायण गाड़ी बढ़ाये जा रहा था। महालक्ष्मी को आँखों के सामने सब कुछ घूम रहा था। उसने प्रयत्न करके अपनी आँखें खोलीं पर सब कुछ तैरता हुआ दिखाई दिया। आँखें मूँद लीं। दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। जान्सटन गूंज के उस छोटे से बँगले के सामने गाड़ी रुक गई, और सत्यनारायण ने उतर कर गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया, पर महालक्ष्मी नहीं उतरी।

सत्यनारायण ने कहा : मालकिन ! घर आ गया।

महालक्ष्मी 'अरे' कहती हुई चौंक पड़ी। उतर कर सीधी बिस्तर पर जाकर गिर गई। रात हो गई। रामनाथ और अवधेश लौट आये। खाने का भी प्रबन्ध नहीं हुआ था। रामनाथ अत्यन्त चिंतित हुए। उन्होंने जाकर देखा महालक्ष्मी शैय्या पर पड़ी छत को एक टक देख रही है। रामनाथ के कमरे में घुसने पर महालक्ष्मी उठी नहीं, उसी प्रकार पड़ी रही। रामनाथ उल्टे पाँव लौट आये। सत्यनारायण को भेजा गया। डाक्टर अवस्थी, मशहूर डाक्टर थे। इलाहाबाद में सिविल सर्जन थे। पंडित श्यामनाथ के मित्रों में से थे और उन्हीं के बँगले में आतंकवादी प्रभानाथ अपने फरार जीवन में आकर छिपा था। तब से परिवार की घनिष्ठता कुछ बढ़ ही गई थी। इस समय वे ही आये। रामनाथ के जी को ढाढस बँधा। उन्होंने डाक्टर के दोनों हाथ पकड़ कर कहा : आप ही बचा सकते हैं।

'मैं नहीं राजा साहब,' डाक्टर ने कहा —'बचाने वाला वह है,'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने उँगली से आकाश की ओर इशारा किया और फिर पूछा : क्य। हुआ ?

राजासाहब को कुछ भी मालूम होता तो बताते । इस समय वे डाक्टर को मरीज के ही पास ले गये। महालक्ष्मी इस समय शैय्या पर पड़ी हुई छाती के नीचे तकिया लगाये फूट फूट कर रो रही थी। इन लोगों को भीतर घुसते देख कर जैसे चैतन्य हो गई । उठी और आँसू पोछ लिये और भीतर चली गई ।

राजासाहब कुछ भी नहीं समझे। उन्होंने पुकारा : बहू !

महालक्ष्मी दरवाजे की आड़ में खड़ी हो गई। डाक्टर ने पूछा : क्यों अब तो तबियत ठीक हो गई ?

महालक्ष्मी ने सिर झुका लिया। उसे अब महसूस हुआ कि कुछ गड़बड़ जरूर हो गई है। शायद उससे कुछ गलती हो गई है, वर्ना यहाँ डाक्टर के आने का और तो कोई कारण नहीं हो सकता। पर अब वह क्या करती। चुप रही।

रामनाथ ने कहा : कहो बेटी ! क्या परेशानी है ? मैं अभी कमरे में तुम्हें बुलाने आया था, तब तुम चुपचाप बेहोश सी पड़ी थी। तुमको यह भी मालूम नहीं हो सका कि मैं कमरे में आया था। तुम उठ कर भी नहीं बैठी। मैंने समझा कि तुम्हें फिट आ गया है। तभी डाक्टर साहब को बुलवा लिया ।

डाक्टर परिस्थिति को नहीं समझे।

बात समाप्त हो गई। डाक्टर चले गये। सत्यनारायण को बुला कर रामनाथ ने पूछा : शाम को क्या हुआ था ?

पर सत्यनारायण नहीं बता सका। अदब के कारण जो वह उस समय छिप कर बीड़ी पी रहा था, उसे मालूम हो नहीं हो सका कि एक नाव आई थी। उसने कहा : सरकार, शाम को स्वामी जी का उपदेश सुना था।

'बस !' रामनाथ ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्यनारायण ने चौंक कर देखा। रामनाथ ने कहाः जाओ।

किंतु खाना खाने के बाद जब रामनाथ उठे, महालक्ष्मी पटे पर बैठी थी, एक दम गिर गई। उसकी मुट्ठियाँ भिंच गईं, हाथ पाँव अकड़ गये और दाँत भिंच गये। वह हाथ पाँव फेंकने लगी। उसके गले में एक गरगलाती आवाज रुँधने लगी। डाक्टर अवस्थी फिर बुलाये गये। उन्होंने सिर हिला कर कहाः कोई डर की बात नहीं है। हिन्दुस्तान की बहुत सी औरतों को हिस्टीरिया की बीमारी हो जाती हैं। उन्हें फिट आता है।

'तब?' रामनाथ ने पूछा।

'आप इनका ध्यान बँटाने की कोशिश करें, ऐसे किये पढ़ें लिखें, घूमें, खुश रहें। कोई तरद्दद और फिक्र न हो, क्योंकि यही चीजें फिट के लिये जिम्मेदार हैं।'

'यह क्यों होता है? रामनाथ ने कहा।

'कई वजह हो सकती हैं। लेकिन सबसे बड़ा कारण स्त्री को दांपत्य सुख न होना ही इसका मूल बताया जाता है। बच्चे की अकस्मात मृत्यु हो जाने से भी ऐसा हो सकता है।'

रामनाथ के सिर में जैसे कील ठोंक दी गई। वे चुप हो गये। डाक्टर चला गया था। काफ़ी देर बाद महालक्ष्मी होश में आई। पलंग पर उसने करवट ली। सारे शरीर में दर्द हो रहा था। रामनाथ उसके पलंग के पास एक आराम कुर्सी पर लेटे थे। महालक्ष्मी को आँखें खोलते हुये देखकर पूछा : क्यों बेटी। अब तो तबियत ठीक है?

'जी हाँ।' महालक्ष्मी ने माथा ढँकते हुए क्षीण स्वर में कहा।

'सर में दर्द है?'

'बहु थोड़ा।'

'बदन में तो दर्द नहीं?'

'है' महालक्ष्मी ने कराह कर कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कोई डर की बात नहीं है। डाक्टर साहब दवा दे गये हैं। ठीक हो जाओगी घबराओ मत।'

महालक्ष्मी चुप रही। रामनाथ ने फिर कहा : डाक्टर ने कहा है खूब पढ़ो, लिखो, घूमो। अब तुम ठीक हो जाओगी तो फिर चलेंगे। कहाँ चलें बताओ।

महालक्ष्मी ने कहा : घर।

'उन्नाव ?' रामनाथ ने पूछा।

'हाँ।'

'वहाँ तुम्हारा जी लग जायेगा ?'

'वहीं मुझे सबसे अच्छा लगता है।'

रामनाथ निरुत्तर हो गये। वे सोने चले गये। अवधेश महालक्ष्मी के पलंग पर ही सो गया।

दूसरे ही दिन वे मोटर में चल पड़े। उन्नाव पहुँच कर महालक्ष्मी को लगा वह जीवित थी। मरी नहीं थी, लेकिन उसे फिर आना बंद नहीं हुआ और रामनाथ के सामने यह एक नई समस्या आ गई। वे जितना ही इस पहेली को सुलझाना चाहते थे, उतनी ही यह कठिन होती जाती थी। तब भी उनके पास आधार था। महालक्ष्मी का दांपत्य जीवन कितना दुखी था, यह वे भी जानते ही थे। पर वे इसमें क्या कर सकते थे। उनकी लाचारी ने उन्हें चुप कर दिया। पर महालक्ष्मी के लिये दिन पिघले हुये और रात जमे हुये सीसे की तरह भारी हो गये। वह बार-बार उस सबको भूलना चाहती थी। आँखों में उस संध्या का चित्र घिरते ही उसे फिट आ जाता। बाद में वह भी घंटों एकांत में रोया करती। उसकी व्यथा बँटाने वाला कोई नहीं था। रामनाथ ने उसके लिये नई-नई कहानियों की किताबें मँगादी। उन दिनों के मशहूर पत्र पत्रिकाएँ भी घर आने लगे।

पर वेदना का फल चाकू के लोहे की तरह तेज होता गया जिस पर कितने ही प्यार से फिराये हुए हाथों की उंगलियाँ भी लहूलुहान होने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से नहीं बचीं। अवधेश माँ को रोते देखता तो स्वयं रो देता और तब महालक्ष्मी उसे छाती से चिपका कर गाने लगती। वह सो जाता, और महालक्ष्मी घंटों उसकी ओर बैठी-बैठी निहारा करती। वह पिता का प्रतिनिधि था। इस पर माता का पूर्ण अधिकार था।

घर में एक व्यथा भर गई। रामनाथ को जीवन पहले से भी उजाड़ मालूम देने लगा। उनकी अनेक बार इच्छा हुई कि महालक्ष्मी से थ्येटर के शोलराज के विषय में पूछें पर मर्य्यादा ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। महालक्ष्मी को भी संदेह बना ही रहा। पर कोई भी किसी से कुछ कह नहीं सका। इसी समय गाँव से एक नई खबर आगई।

—८—

प्रयाग के साहित्यिक क्षेत्र में सनसनी फैलते-फैलते बच गई। यहाँ हिंदी का एक गढ़ सा बन गया है। एक बड़े विश्वविद्यालय की उपस्थिति के कारण अनेक प्रोफैसर, और विद्यार्थी रहते हैं। इनके अतिरिक्त पुराने और नये खेवे के पत्रकार, जीवन से उबे हुए राजा रानियाँ तथा ताल्लुकेदार और फिर धार्मिक प्रभाव के अखाड़े, मंदिर, तथा तीर्थ को व्यापक अनुभूति के प्राणी, एक नहीं, अनेक रूप के लोग हैं। कोई संस्कृत का पुजारी है, कोई खड़ी बोली का, कोई ब्रज भाषाका, और साहित्य के इन प्रकारों पर दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी तथा प्रायः सभी विचारधाराओं का प्रभाव दिखाई देता है।

शीलराज के स्वागत में रानी शशिप्रभा ने एक पार्टी का आयोजन किया था। इस पार्टी में विश्वविद्यालय के लेक्चरार राजेन्द्रकुमार, नाटक लिखने का दावा करने वाले रामेश्वरप्रसाद, प्रोफैसर किशोर, काले भद्दे से बनिये कवि विलासी, नाटे दुबले कंकाल से परमसुख चौबे आचुके थे। जैसे-जैसे समय व्यतीत हुआ और लोग भी दो-दो तीन-तीन करके बैठ गये। ठाकुर मलकान सिंह के समीप ही ठाकुर दिग्विजय सिंह बैठे हुए गरगलाती हँसी हँस रहे थे। उस हँसी के पीछे उनकी अशिष्ट अक्ख-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
ड़ता स्पष्ट दिखाई दे रही थी। ऐसे लोग रेलों में सदैव मुकद्दमों और अफसरों की बात चीत करते दिखाई देते हैं, अपने को व्यवहार चतुर बताते हैं और काफी जोर इस बात पर देते हैं कि उनके बराबर क्या, उनकी चौथाई भी बुद्धि मैजिस्ट्रेट में नहीं होती। मैजिस्ट्रेट सरकार के गुलाम होते हैं, पर यह वकील यह कभी स्वीकार नहीं कर सकते कि व भी दलाल ही हैं। जातीयता का भी उन पर प्रभाव रहता है। रामेश्वर-प्रसाद उर्दू के सहारे खड़ी ठेल हैं, हिंदुस्तानी बनाते हैं बीच में अँग-रेजी घुसा कर और अपने टुटपूँजियापन को छिपाने राजेन्द्रकुमार की बाँह थामते हैं जिनका आधार जीवन इसी में बीत जाता है कि वे किसी प्रकार यह तय कर सकें कि वे कभी तो अच्छा लिखेंगे।

उनके पास ही आलोचक कृष्णचन्द्र, हाईकोर्ट वकील श्याम सलोने, रघुवंशलाल, लक्ष्मणनारायण, डाक्टर भास्कर, डाक्टर सिन्हा तथा यूरो-पीय शिक्षा प्राप्त कामेरड अहमद थे। इन लोगों को विशुद्ध हिंदी साहित्यिक नहीं कहा जा सकता, पर साहित्य में इनकी रुचि अवश्य है।

पीछे की ओर जीवन कृष्ण, उदयशंकर, नमाज़ अहमद, सादिक-अली आदि विद्यार्थी थे जो हिंदी उर्दू के पचड़े में पड़े रहने पर भी एक दूसरे को समझने के प्रयत्न में दत्तचित्त रहते थे।

इसी समय उस बड़े क रे में सौरभ का प्रवेश हुआ यह रानी शशिप्रभा का कुत्ता था। सौरभ के पीछे चुमकारते हुए रानी के कृपा-पात्र यमुनाशंकर थे जो जीवन के हर क्षेत्र में समान रूप से विद्यार्थी थे। इससे पहले कि यमुनाशंकर सौरभ को गोद में ले सकें पीछे से आवाज आई : सौरभ !

आगंतुकों ने देखा एक स्त्री पुकार रही थी। यमुनाशंकर ने कहा : आहाँ। श्यामादेवी ?

श्याम देवी रानी साहिबा की परिचारिका थी। वह कुत्ते को लेकर चली गई। उसके जाते ही पर्दा फिर हिला और रानी शशिप्रभा ने कुछ अतिथियों को भीतर साथ लेकर प्रवेश किया। यह थे प्रसिद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि विश्वंभर, दीवानाजी, कांग्रेस में भाग लेने वाले प्राणनाथ, कवियित्री करूणादेवी, तथा युवक कवि रमेन्द्र जो अधिकांश विश्वंभरजी के साथ ही दिखाई देते थे।

उपस्थित समुदाय का विश्लेषण सरलता से नहीं किया जा सकता। इतने विभिन्न प्रकार के और जीवन को इतने अलग-अलग तरीके से सोचने वाले यह लोग एक दूसरे से काफी दूर थे यद्यपि प्रायः साहित्य ही इन को एक जगह खड़ा करने वाला क्षेत्र था।

इन लोगों के आने पर पहले आये हुए अतिथियों ने उठ कर नमस्कार किया और उत्तर प्रत्युत्तर के उपरांत सब बैठ गये। छोटे-छोटे झुंड बना कर वे आपस में बातें करने लगे जिसका कुछ रूप इस प्रकार था—

१. राजेन्द्र कुमार, रामेश्वर प्रसाद, प्रोफैसर किशोर, विलासी तथा परमसुख

२. मृणालिनि, विश्वंभर, रमेन्द्र, करूणा देवी, प्राणनाथ, कृष्णचन्द्र

३. दीवानाजी, रानी शशिप्रभा, यमुनाशंकर बीच में

४. रघुवंशलाल, श्याम सलोने, लक्ष्मण नारायण

५. कामरेड अहमद, डाक्टर सिन्हा तथा डा० भास्कर

६. पीछे की ओर जीवन कृष्ण, उदयशंकर, नमाज़ अहमद तथा सादिकअली

इस परिस्थिति में कोनों पर बैठे लोग एक झुंड का दूसरे झुंड से संपर्क स्थापित करते करते थे। दीवानाजी की आकृति भव्य थी और इस समय वे चुप थे। अनेक साहित्यिकों में उनके विषय में अनेक प्रकार के विचार थे। उन्हें कुछ जटिल और क्लिष्ट कहते थे, परन्तु दीवानाजी अपने को छंद का निर्माता कहते हुए भी नहीं हिचकिचाते थे। वास्तविकता यह थी कि हिंदी के प्रकाशकों ने जम कर उन्हें लूटा था और उस अभिमानी व्यक्ति ने सिर झुकाने की अपेक्षा कुछ विक्षिप्त हो जाना स्वीकार कर लिया।। हिंदी के साहित्यिक का जीवन बहुत कठिनाइयों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बीतता है। कभी-कभी उसे उसके हृदय में एक हीनत्व की अनुभूति जाग्रत हो जाती है, और उसके आवेश में वह दूसरों पर अपने को थोपने का प्रयत्न करने लगता है। यह भी दीवानाजी का एक रूप था।

यमुना शंकर ने कुछ कहना प्रारंभ ही किया था कि श्यामादेवी ने आकर सूचना दी —शीलप्रभु आ गये हैं।

रानी शशिप्रभा उठ कर द्वार पर जा पहुँची और उस विद्वन्मंडली में शीलराज, राधा तथा देवी प्रसाद जी ने प्रवेश किया। देवी प्रसाद ने द्वार पर ही खड़े होकर कहा : मेरा सौभाग्य कहिये या दुर्भाग्य ! रानी साहिबा के सुन्दर वाक्य जो कार्य करते, आज उनका उत्तरदायित्व अकस्मात ही मुझ पर आ पड़ा है। सौभाग्य मेरा है, दुर्भाग्य आपका।

सबने उत्सुकता से देखा।

'जी हाँ,' नाटे, दुबले, पान की ललाई से रंगे होंठ तनिक खोले देवी प्रसाद जी ने मुस्करा कर फिर कहा : राह में भेंट हो गई और मैंने इसे अपनी प्रतिष्ठा समझा। परिचय रानी साहिबा करायें तो श्रेष्ठतम हो।

रानी शशिप्रभा ने मुस्करा का कहा : अभी तो आपने-अपने सौभाग्य के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कहा।

सब लोग हँस पड़े। देवी प्रसाद जी इस अच्छे व्यंग्य से कुछ झेंपे और हँस कर बोले : मैंने तो पहले ही इसे आप लोगों का दुर्भाग्य कहा था।

विश्वम्भर सबसे अधिक नम्र थे, सरल थे। उन्होंने उठ कर शीलराज और राधा को दीवानाजी से परिचित कराया और उनसे वहीं बैठने की प्रार्थना की। देवीप्रसाद ने चतुर आँखों से ढूँढा कि कहाँ बैठना ठीक रहे, ताकि महत्त्वपूर्ण स्थान भी रहे (खान-पान-बात तीनों के हिसाब से) और यह भी रहे कि स्थान का क्या चाहे जहाँ बैठ गये, और यह भी कि पास ही एक ऐसा व्यक्ति हो जिस पर अपने ऊपर फेंका तीर आकर अपने आप ऐसे गड़ जाये जैसे बिजली के कन्डक्टर पर बिजली स्वयं ही आ गिरती है। इस दृष्टि से श्यामसलोने आदर्श

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतीत हुए और देवीप्रसाद वहीं जम गये। वैसे देवीप्रसाद अपने सूट-बूट पहने व्यक्ति हैं, कभी-कभी अचकन-पजामा पहन लखनऊ की दाद देते हैं, और यह कोई नहीं कह सकता कि किस दिन यह चद्दर पहनने लगेंगे क्योंकि कल तक यह वेश्या, शराब आदि पर लिखते थे, इधर कुछ प्रेम की लंबी कविताएँ लिखने लगे हैं। अपने को बड़ा लेखक समझने में कुछ भूल करते हैं, वैसे अपनी सूरत किसे अच्छी नहीं लगती। अपने ठीक हैं।

खान-पान का भारीपन निस्संदेह साहित्यिकता को काफी हल्का करने वाला सिद्ध हो रहा था। रीतिकालीन परंपरा की आखिरी कड़ी निबाही जा रही थी। परमसुख चौबे ने जमके हाथ साफ किया और तभी शीलराज का परिचय देने रानी शशिप्रभा उठ खड़ी हुईं। उन्होंने कहाः आज मेरा अहोभाग्य है कि इतनी कृपा करके, साहित्य के महारथी, मेरी कुटिया में पधारे हैं। हमारा साहित्य वास्तव में केवल लिखा पढ़ी ही नहीं। उसका एक नैतिक आधार रहा है और वह है उसकी आध्यात्मिकता, भारत भूमि की आध्यात्मिकता.....

सब सुनने लगे। तभी सौरभ दौड़ता हुआ आया और परमसुख के हाथ में उठे हुए अंतिम रसगुल्ले को उसने मुँह लगा दिया। परमसुख को लगा वह कुत्ता उसी वक्त गोली मार देने योग्य था। देवीप्रसाद मुस्कुरा दिये।

—२—

शीलराज ने कहना प्रारंभ किया : बंधुगण! आज मुझे इस विद्वानों की मंडली में बैठने का जो आपने सुयोग दिया उसके लिये मैं आभारी हूँ।

दीवाना जी ने काट कर कहाः बैठने का ही नहीं, बोलने का भी। बड़ों के होंठ मुस्कुराये, मध्यमों के दाँत दिखे, निकृष्टों के हास्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ध्वनि सुनाई दी। शीलराज ने मुस्कुरा कर राधा की ओर देखा। राधा ने हँस कर स्वीकार किया और बात चल पड़ी :

भारतवर्ष में आज हम जिस मंजिल पर पहुँच गये हैं वह इतनी सीधी नहीं जितनी दिखाई देती है। कुछ लोग विदेशी शिक्षा दीक्षा से प्रभावित होकर चाहते हैं कि भारतीय साहित्य को भी विदेशी साहित्य की भाँति बना दिया जाये। विदेशी साहित्य की अच्छाइयाँ लेने में कोई हानि नहीं किंतु एक भय बना रहता है। हमारा देश धर्मप्राण है। जब मैं धर्म कहता हूँ तो उसका तात्पर्य्य किसी रूढ़ि से नहीं। विभिन्न विचार-धाराओं का समूह है हमारा धर्म, और उसके निकृष्ट और अत्यन्त उत्कृष्ट दोनों ही रूप हमारे सामने उपस्थित हैं। प्रश्न है कि हम इन दोनों में से किसे चुने। सदा की ही भाँति हमारे समाज के शिक्षित वर्ग ने उत्कृष्ट और अशिक्षित ने प्रायः निकृष्ट रूप की उपासना की है। अतः चुनाव का प्रश्न हमारे सामने अधिक महत्त्व नहीं रखता। तब धर्म एक आध्यात्मिकता है जो हमारे भीतर सदैव बनी रहती है। उसे हम इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकते, जितना समझा जाता है, या विश्वविद्यालयों में समझा जाता है। आप कह सकते हैं, और कार्लाइल की भाँति कह सकते हैं कि हमारे देश में 'नायकपूजा' रही है। इस नायकपूजा से अनेक लोग चिढ़ते हैं। यदि मिल्टन की 'एरियोपैजिटिका' के निम्नस्तर से उत्तर दिया जाये तब तो दूसरी बात है, पर मैं वह उचित नहीं समझता। आइये पहले इतिहासविधाता जैसे यम से हम नचिकेता बन कर प्रश्न करें।

कहीं निस्तार नहीं हुआ। हमारी दुरूहता कहीं कम नहीं हुई। धर्म हमारी आत्मा की वह खोज है जिसका हाथ पकड़ कर एक नहीं अनेक शताब्दियों से, युगों ने, जब से मनुष्य का इतिहास प्रारंभ हुआ है तब से हमने जीवन में संबल पाया है।

राजनैतिक और आर्थिक बंधन से भी बड़े हैं हमारे नैतिक बंधन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
और हमें उस शाश्वत को खोज करना आवश्यक है। मैं रहस्यवाद की स्वीकृति या अस्वीकृति से विवाद नहीं करूँगा.....

शीलराज का विवेचन लम्बा था, उस पर अनेक प्रकार के विचार उठे और लय हो गये, परन्तु शीलराज कहता गया.....

शब्द गूँज रहे थे—

संस्कृत संभ्यता.....

आत्मा की यातना.....

तय यह हुआ कि एक साहित्यिक पार्टी किसी गाँव में की जाये परन्तु यह विचार इसलिये डूब गया कि इस प्रस्ताव को रखने वाले रामेश्वर प्रसाद थे, जिनकी बात को तुरन्त ही कृष्णचन्द्र ने काट दिया : गाँव जाकर क्या कीजियेगा ? गाँव की संस्कृति पर क्या भारतीय साहित्य में कम लिखा गया है ? सच तो यों है कि हमारे साहित्य में शहरीपन इधर कुछ दिनों से ही भर गया है, वर्ना पहले का साहित्य दोनों जगह एक सा प्रभाव डालता था।

'यह तो आपने बात को बढ़ा चढ़ा कर कहा,' डा० अहमद कह उठे—'यों देखिये कि गाँव वाले 'कवि' लफ़्ज तक को नहीं जानते। मेरा मतलब है ज्यादातर लोग।'

'जी नहीं,' विलासी ने जिरह की—'वे कवित्त जानते हैं, तुलसी और सूर की कविताओं को याद रखते हैं। किसलिये ? आप यह कैसे कह सकते हैं कि उन पर काव्य का प्रभाव नहीं है।' कहते कहते आपका स्वर कुछ ऐसा हो गया जैसे वे क्षमा माँग रहे हों।

कृष्णचन्द्र ने डाक्टर अहमद को इस स्थान पर निर्बल पाकर कहा : क्या अँगरेजों के आने के पहले हिन्दुस्तान के शहर इतने ही बड़े बड़े थे ?

डाक्टर भास्कर ने कहा : इतने बड़े न थे तो क्या थे ही नहीं ?

'यह तो मैंने नहीं कहा,' कृष्णचन्द्र ने उत्तर दिया—'थे तो पर क्या उनका इतना ही महत्त्व था जितना अब ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवी प्रसाद ने चुटकी ली—डाक्टर साहब विलायत से पास करके आगये हैं, शायद उन्हें हिन्दुस्तान का अंदाज नहीं रहा।

पाँचवाँ परिच्छेद

—१—

ब्रह्मदत्त को होश आया तो महसूस किया कि उसके सिर और शरीर में भयानक पीड़ा हो रही थी। धीरे-धीरे उसे सब याद आ गया। उस समय वह कोतवाली में बंद था। दूसरे दिन मुकद्दमा हो गया। जब उससे कहा गया कि वह कुछ कहे उसने एक लम्बा भाषण शुरू किया लेकिन मैजिस्ट्रेट ने कुछ भी नहीं सुना। वह शांतिरक्षक पुलिस, वह न्याय का आडम्बर कचहरी, वह सरकारी टुकड़खोर गद्दार पिट्ठू अफसर सबने उसे घेर रखा था। ब्रह्मदत्त ने अंत में कहा : मुझे इस न्याय पर विश्वास नहीं। जहाँ अमन के नाम पर हिंसा, और न्याय के नाम पर घूसखोरी, चोरी और बदमाशी और अफसरी के नाम पर गुलामी चलती है। जहाँ तख़्ते लन्दन के लिये इन्सान कुत्ता बन कर भूँकता है।

मैजिस्ट्रेट ने कहा : तुमने अपना पेशा क्या लिखाया है जानते हो ?

'बगावत,' ब्रह्मदत्त ने कहा। 'ईमान के लिये बगावत।'

'इस जुर्म की सजा जानते हो ?'

ब्रह्मदत्त हँसा। वह कोर्ट में गाने लगा—

दुखियों की हड्डी चूस चूस
तुम आग लगाते हो घर में.....

इन्तहा होगई। उसे छ महीने की सजा सुना दी गई। पहली बार वह जेल गया था तब वह काँग्रेसी बन कर गया था। अब की बार वह कम्युनिस्ट बन कर गया था। पहली बार उसमें एक गर्व था, इस बार एक कटुता थी। पहली बार जेल जाने में नाम था; अब की बार काम का भी हर्ज था। लेकिन कोई चारा ही नहीं था। लाला किशोर ने एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुराई की। दरोगा भूपसिंह को कुछ रुपये दिये और एक दम पुलिस केस बनवा दिया। स्वयं आये ही नहीं। कहीं भी स्वदेशी मिल का नाम नहीं आया।

ब्रह्मदत्त अकेला आदमी था। पिता हरदत्त तगादगीर थे। उन्हें इससे कोई मतलब ही नहीं था कि वह जिन्दा रहता है या मरता है। उन्होंने तो यह समझ लिया था कि मेरे कोई लड़का था जरूर, मगर जब वह पढ़ लिख गया, तभी वह मर गया। कानपुर काँग्रेस में ब्रह्मदत्त का अच्छा नाम था। कुछ उसकी बुद्धि को केवल विनाशात्मक कहते थे। कुछ समझते थे कि वह चन्दे खा जाता था और शिवराम जी को जबसे उसने मदद करके नगर काँग्रेस का सभापति बनवाया तबसे लोग समझते थे कि वह उनके बल पर ही जीवित था। किन्तु उसकी आर्थिक अवस्था इतनी अधिक शोचनीय थी कि उसका किसी को भी अंदाज नहीं था। शराब सिगरेट से उसे परहेज नहीं था, यद्यपि वह इन्हें आवश्यक नहीं समझता था। शराब कभी साल में किसी ने पिलाई तो तकल्लुफ़ में एक पेग पीली। उसमें मज़ा नहीं लेना चाहिये। वर्ना वह खराब आदत है। इतनी कम तो दवा बनकर समा जाती है।

शराब विभिन्न देशों में लोग पीते हैं। हिन्दुस्तान में पहले लोग बहुत पीते थे। जब से बौद्ध प्रभाव हुआ तब से बन्द कर दी गई और फिर तो निम्न समझे जाने वालों और ठाकुरों में रह गई। ब्रह्मदत्त उसे धर्म से नहीं जोड़ता था। ईमानदारी ही उसका धर्म था। जीवन की कठोरताओं में पलने के कारण वह लीपापोती नहीं चाहता था और इसी से मध्यवर्ग में काफी अप्रिय था। वैसे उसकी लगन को सब लोग जानते थे और स्वीकार करते थे कि वह बहुत जुट कर काम करने वाला आदमी था।

—२—

जेल में पाँच आदमी एक ही साथ थे। ब्रह्मदत्त ने देखा एक था आशुतोष बन्धोपाध्याय। वह अपने को बनर्जी नहीं कहता था। भारतीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संस्कृति की पुरातनता की ओर ही उसका आग्रह था। वह एक गरीब परिवार में पैदा हुआ था। बचपन में ही वह कुछ ऐसे लोगों के साथ रहा जो काफी रहस्यमय थे। वे लोग सदैव भारत में गदर मचवाने की चिन्ता में लगे रहते थे। एक बहुत बूढ़ा आदमी था, शायद सत्तासी अट्ठासी वरस का। आशुतोष बन्दोपाध्याय ने बताया कि वह बूढ़ा गदर के समय जवान था। १८५७ के चित्रों को भूला नहीं था। वह बहादुरशाह, राजा राममोहन राय, झाँसी की रानी इत्यादि के नाम ही लिया करता था। उसकी सुनाई हुई कहानियाँ सुन सुन कर आशुतोष बहुत बचपन से ही अँगरेज जाति से घृणा करने लगा। बूढ़ा जब मर गया तो आशुतोष करीब दस बारह बरस का लकड़ा था। बाकी के लोग जवान थे। उन्होंने बूढ़े के मृतशरीर के निकट बैठ कर काली-स्तोत्र पढ़ा, फिर गीता पाठ किया और प्रतीज्ञा की कि वे आजन्म आमरण ब्रह्मचर्य्य से रहेंगे, निरासक्त जीवन व्यतीत करेंगे और अँग्रेज से लड़ते रहेंगे। उनका जीवन सचमुच बहुत ही कठिन था। जमीन पर सोते थे, रूखासूखा खाते थे, जंगलों में जाकर पिस्तौल तलवार आदि चलाने का अभ्यास करते थे और उनके जीवन पर एक कठोरता सी छाई रहती। वे कभी-कभी मुस्कराते और सदैव रहस्यमय से लगते। उनमें से एक युवक एक दिन गायब हो गया। आशुतोष की जिज्ञासा जाग उठी पर जब उसने पूछा तो उसे नियमों की याद दिलाई गई कि जो बताया जाये वही जानो उससे अधिक नहीं। बंगाल में क्रान्तिकारियों का जत्था अब तैयार हो रहा था। एक दफा उसे पता चला कि वह युवक जो गायब हो गया था पार्टी ने उसे गोली से मार दिया। वह किसी अफसर की लड़की के प्रेम में पड़ गया था और उससे गुप्त संवाद निकल जाने का खतरा था। वे इसे सुनकर सलाह करने लगे। सरदार ने फैसला सुना दिया। उन्हीं युवकों में एक मराठा युवक भी था। इन सबका जीवन आकाश में उड़ती हवा के समान बीत रहा था। किसी को भी नहीं दीखते थे। छिप कर रहते थे। बाद में एक को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फाँसी लगी। तीन अंडमन भेजे गये, चार को आजन्म कारावास मिला। जिनमें पन्द्रह साल की सजा आशुतोष को भी मिली क्योंकि वह सिर्फ सोलह साल का था।

आशुतोष कहता था कि उसके साथी जिस कट्टर लगन वाले थे वह अब दिखाई नहीं देता था। वे ऐसे वीर थे कि कठिन से कठिन काम भी करते हुए नहीं हिचकिचाते थे। जान देने में तो उनकी आकांक्षा खिल उठती थी। वे गदगद होकर माता के चरणों में लय हो जाने गाया करते थे। उन्हीं में एक ने संसार छोड़ कर योग साधना करना प्रारम्भ कर दिया और फ्रेंच इन्डिया में जा बसा। इस प्रकार जो एक समय बैंक, तारघर, डाकखाने आदि लुटने की योजना बनाते थे, अत्याचारी अफसरों को मिटा देते थे, विलायत जाकर वहाँ से क्रान्ति करने की योजना बनाते थे, और जर्मनी और रूस से हथियार मँगाने की सोचते थे, जनता से संपर्क न होने के कारण बिखर गये।

आशुतोष की कहानियों में बड़ी स्फूर्ति थी। नौजवानी की हलचल सुन कर शरीर में एक फुरफुरी सी आ जाती थी। वीरता की गाथा, देश प्रेम सुनकर सिर गर्व से उठ जाता था। यातना सहन करने की सीमा थी! हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ़ना आसान खेल नहीं था। वह लगन कि जब भूख हड़ताल कर दी तो निर्जल निरन्न पचास पचास दिन गुजार दिये। उस समय आतंकवादी भगतसिंह, यतीन्द्रनाथ दास की कहानियाँ सुनाया करते थे। यतीन्द्रनाथ ने जेल में तड़प-तड़प कर जान दे दी, भूखा रह कर जान दे दी, और ब्रिटिश शासन का कठोर दंड फिर भी नहीं झुका। उसके सामने इसका कोई मूल्य नहीं था कि सत्य और न्याय के लिए व्यक्ति दम तोड़ कर मर रहा था। वह दिन भी चले गये और अपनी कहानी सुना कर आशुतोष गंभीर हो जाता और कहने लगता भारतवर्ष में हमें फिर उन्हीं आश्रमों की स्थापना करनी होगी जहाँ ब्रह्मचर्य्य से ही युवक और युवतियाँ रहा करें। जब तक यह नहीं होगा तब तक अपनी चारित्रिक हीनता के कारण हम कभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी नहीं उठ सकेंगे। जनता में अंधविश्वास और अशिक्षा फैली हुई है। इसे कैसे दूर किया जा सकता है? मंदिर,मठ आदि हमारा कल्याण कर सकते हैं यदि हम श्रद्धाभाव से उनमें विश्वास करें, सच्चे हृदय से परमात्मा को मानें और अपनी कलुषित प्रवृत्तियों को छोड़ दें।

दूसरा व्यक्ति एक गाँव का मध्यवर्गीय किसान था, जिसको जमींदार कहना ही अधिक उपयुक्त हो सकता है। वह एक बड़े कुटुम्ब का प्राणी था। उसका एक बड़ा भाई शहर अर्थात् गाँव के निकट के कस्बे में वैद्यक की दूकान खोले बैठा था और दूसरा गाँव में ही स्कूल मास्टर था। उसका नाम था इन्द्रभान। वह बानापुर का रहने वाला था और सत्याग्रह में जेल आया था। ब्रह्मदत्त को उसकी बातों का वह हिस्सा अच्छा नहीं लगता था जब वह अपने राजा साहब की संतान का गुणगान करता था। जब तक क्रान्तिकारी आतंकवादी प्रभानाथ का विषय था ब्रह्मदत्त को कोई एतराज नहीं था। पर जब वह दयानाथ की प्रशंसा करता ब्रह्मदत्त उसे टोक देता और उससे उसकी बहस हो जाती।

तीसरा व्यक्ति श्रीनारायण शहर का बजाज था और दो विद्यार्थी थे। इन्होंने सन् बीस के आदोलनों की खबरें सुनी थीं कि उस समय सबने कालेज छोड़ दिये थे। तब तो इन्हें होश नहीं था, लिहाजा अब छोड़कर भाग लेने लगे। एक का नाम था राधारमन और दूसरे का अब्दुल मजीद। अब्दुल मजीद उन बहुत थोड़े मुसलमानों में था जिन्होंने कॉंग्रेस के आन्दोलन में भाग लिया था।

—३—

वे सब 'सी' क्लास में थे। कभी-कभी चर्चा चलती तो वे 'बी' और 'ए' क्लास के बंदियों की बातें करते कि बड़े-बड़े नेताओं से भी जेल में संयम छूट जाता है और वे साग सब्जी जैसी छोटी-छोटी चीज़ों के पीछे झगड़ने लगते हैं। उस घिरी हुई दुनिया में इन राजनैतिक बंदियों की कभी-कभी अराजनैतिक बंदियों से भी बातें होतीं। कुछ पेशेवर गुंडे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

र डाकू मुज़रिम थे, कुछ बेकसूर भी पुलिस की तानाशाही के कारण गिरफ्तार कर लिये गये थे। उनकी कहानियाँ वास्तव में बहुत करुण थीं। भूख, गरीबी और गुलामी ने उन्हें इस दर्जे पर पहुँचा दिया था। भारत की यह करुण दशा देख सुन कर वे लोग मुट्ठी भींच लेते और उन हजारों शहीदों की याद करते जिन्होंने देश के लिये तड़प-तड़प कर जान दे दी थी। राजनीति की कटुता उनके जीवन में एक गंभीरता छोड़ गई जिसको वे स्वयं नहीं समझ सके कि उनमें कुछ परिवर्तन हो गया है। परन्तु सृष्टि के आदि से अंत तक की कथा, पुराणों और धर्मों की गाथा, समाज, राजनीति, इतिहास, अँगरेजों के अत्याचार और अहंकार, देशी गद्दारों की कायरता, जेल में रहे पुराने राजबंदियों की वीरता, अमेरिका तथा अन्य देशों के स्वातंत्र्य संग्राम, १८५७ का गदर, महात्मा गांधी की अहिंसा, आदि, इतने विषयों पर वे बातें करते कि उनका कोई अंत नहीं था, और फिर भी यह कि मनही नहीं भरता था। अलग-अलग जगहों से आये हुये वे बंदी अपने-अपने जिलों की बातें बताते। साथ खाते, पीते, सोते, उठते, उनमें एक विशेष भाई चारा पैदा होगया।

सुबह उठ कर वे झंडाभिवादन करते। ब्रह्मदत्त इससे कभी नहीं हिचकिचाता था। वह इसे स्वतंत्रता का सम्मान समझता था पर कहता था कि हम जो कहते हैं, 'विश्वविजय करके दिखलायें', इसका अर्थ वही है जो आज अँगरेजों ने कर लिया। राधारमन औरों के मुकाबिले में अधिक पढ़ा हुआ था। वह कहता : 'नहीं, अँगरेजों ने धोखे और फरेब से दुनिया को जीता है, हम प्रेम से जीतना चाहते हैं।'

'यह केवल एक भावना है, और कुछ नहीं। अँगरेज़ भी तो हमें सभ्य बनाने का दावा करते हैं।' ब्रह्मदत्त प्रतिवाद करता।

पर वे इसे स्वीकार नहीं करते। पहले वह अधिकतर उनकी बातें सुनता। धीरे-धीरे वे भी उसकी बातें सुनने लगे। ब्रह्मदत्त उन्हें भारत का इतिहास और आर्थिक विकास तथा व्यवस्था समझाने लगा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर उसने उन्हें यूरोप के इतिहास की बात करते-करते मार्क्स के विषय में भी बताया। फिर धर्म के बारे में नया दृष्टिकोण रखा। उसकी बातों को सुन कर वे लोग चौंकते। वे बारबार अपनी भारतीयता की दुहाई देते और ब्रह्मदत्त फिर चुपचाप सुनता रहता। वह इस बात को जानता था कि भावना का उत्तर भावावेश नहीं है। या तो मौन है या फिर चाकू सा तेज़ तर्क है। और वह दोनों को ही काम में लाता हुआ, अत्यन्त धैर्य्य से उनको अपनी बात सुना रहा था।

—४—

ब्रह्मदत्त ने कहा : आदमी जब समाज में रहता है तब वह सामाजिक प्राणी है। जो भी उसकी दुनिया है, वह इसी समाज के कारण है। बचपन से जब वह बड़ा होता है और नई नई बातें सीखता है तो सबसे पहले वह भाषा सीखता है। भाषा क्या है? वह समाज की इकट्ठी ज्ञान-राशि है। इसे कोई अस्वीकर नहीं कर सकता। मनुष्य इस प्रकार जो भी सोचता है वह समाज की दी हुई भाषा के माध्यम से। अतः जो कहता है कि वह समाज से अलग है, वह असल में गलत कहता है। इस प्रकार की बातें उसे करते हुये एक धोखे की जरूरत होती है और वह इसके लिये एक दर्शन की सहायता लेता है। भारत के दर्शन शास्त्रों का अध्ययन उसे भारतीयता और संस्कृति तथा कला के नाम पर काफी मदद दे सकता है।

'क्या मतलब?' आशुतोष चौंका। वह भारतीय संस्कृति का प्रहरी और उसके सामने यह प्रहार। उसने कहा : तुम रूस की बातें कर रहे हो?

'अजी मैं हिंदुस्तान की बात कर रहा हूँ,।' ब्रह्मदत्त ने हँस कर कहा—'आप पर तो रूस का भूत सवार हो गया। याद है न? अँगरेजों ने उत्तरी भारत को रूस से बचाने के लिये ही हथिया लिया था? आप मेरा मतलब नहीं समझे। मिसाल के लिये वेदांत में डूब गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब जिस आदमी का यह कथन हो कि संसार माया है उसके लिये आप के पास क्या सजा है ? वह नितांत असामाजिक प्राणी है। आपका लड़का मर गया है और लाश पड़ी है। वह आकर कहता है कि यह तो माया है। मन ने कभी भी इसे असंतोष के अतिरिक्त किसी और भाव से नहीं देखा। यही जो लोग कहते हैं कि संसार में दो तरह के सत्य हैं, एक परमार्थ का दृष्टिकोण है, दूसरा लौकिक अर्थात् इसी दुनिया का है, सांसारिक है। परमार्थ में तो ब्रह्म सत्य है और कुछ है ही नहीं। अच्छा अब लौकिक को लीजिये। वह सब दुनियावी है। दुनिया में क्या है, कितना दुख द्वेष है, यह तो आप से छिपा नहीं है। आप इसे कर्मों का फल कहते हैं। पर एक बात है। लौकिक सुख तो है अमीरों का, और परमार्थिक सुख है उनका जो भूख और गरीबी में मरे जा रहे हैं।

'हो सकता है।' राधारमन ने कहा—पर तुम जिस सिद्धान्त की बात कहते हो, उसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं। कोई देश के नाम पर डिक्टेटर बनने की कोशिश कर रहा है, तो तुम भी सब कुछ हारे हुओं की डिक्टेटरशिप चाहते हो ?

डिक्टेटरशिप ! डिक्टेटरशिप दो तरह के होते हैं। एक व्यक्ति का स्वेच्छाचरण जो किसी शोषक वर्ग के स्वार्थ के लिये होता है, निरंकुश शासन। दूसरा समाज का पूर्ण अधिकारों से भरा वह शासन जो वर्गों को समाप्त करने में लगता है। तो मेरा मतलब दूसरे तरीके से है। यह दूसरा तरीका हो तो क्या हर्ज है ? मेहनतकरों का राज। अरे भाई आखिर उसका और क्या मतलब है ? अब इसका सामाजिक व्यवहार देखिये। यह तो है नहीं कि सब खेत और मिलों में काम करेंगे। अस्पताल, स्कूल, कालेज, सब कुछ होता है। बस यह है कि वर्गभेद को बढ़ाने वाली बातें मिट जायेंगीं। इसमें क्या हर्ज है बताइये। और भी। यह सब उस वर्गहीन समाज की रचना की मंजिल पर पहुँचाने वाला रास्ता है। क्या आज व्यक्ति को स्वतंत्रता है ? आप स्वतंत्र हैं ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राधारमन : तो क्या राज्य विरोधी तब सज़ा नहीं पायेंगे ?

ब्रह्मदत्त : क्यों नही पायेंगे। पर तब राज्य ब्रिटिश साम्राज्य न होकर मज़दूर किसानों का राज्य होगा।

आशुतोष : हिन्दुस्तान में ?

ब्रह्मदत्त : हाँ हाँ इसी हिन्दुस्तान में। इतना चौकने की ज़रूरत नहीं। कितनी जल्दी यह देश उठ जाता है ! इस देश पर मुझे बहुत बड़ा विश्वास है। विदेशी और साम्राज्यवादी दृष्टिकोण से देखता हूँ तो यहाँ अन्धविश्वास, छुआ-छूत, जातिभेद, और न जाने कितनी कुरीतियाँ हैं। अपने भारतीय साम्राज्यों को देखता हूँ तो उनको देखकर मुझे विदेशी साम्राज्यवाद की याद आ जाती है। वह सब मुझे गंदा लगता है। भारत असल में एक नई व्यवस्था के लिये तैयार हो रहा है।

ब्रह्मदत्त को जैसे शान्ति नहीं मिली। उसने फिर कहा : वह बदलना चाहता है। बदलने से डर क्यों ? तुम क्यों चाहते हो कि मूर्ख ब्राह्मण की भी पूजा की जाये ? क्यों न शूद्र को भी बराबर समझा जाये ? इस वर्ग-भेद को मिटाना होगा बदलना ही होगा। कब नहीं बदला। मैं कहता हूँ जनता के राज से सब चौकते हैं, पर यह तो बताओ कि वर्ग राज्य जब-जब बदले, तब क्या संस्कृति और कला में कोई फर्क नहीं पड़ा ? क्या तब परिवर्त्तन नहीं हुआ ?

'क्यों नहीं ?' आशुतोष ने हिचकिचाते हुए स्वीकार किया।

अब्दुल मजीद और इन्द्रभान अत्यंत गंभीरता से सुन रहे थे। अब्दुल मजीद स्वभावतः बोलने में कुछ संकोच करता था और इन्द्रभान को अधिक गति नहीं थी वह सुन सुन कर इकट्ठा कर रहा था। आशुतोष जम कर बैठा था अब कुछ फैल गया। श्री नारायण मुस्करा रहा था।

'तब ?' ब्रह्मदत्त ने कहा—'किसी वक्त, किसी पीढी की भी संस्कृति और कला बपौती नहीं है। पीपल की डर कर पूजा मत करो। इसके सौंदर्य्य को देख प्रशंसा करो और सोचो कि प्रकृति से प्रसन्न हो। पर अगर इसी पीपल की शाखा तुम्हारे घर की खिड़की में घुस आये तो उसे काट दो वर्ना वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संभव है तुम्हारे अस्तित्व को खतरे में डाल दे। और यह भी सोचो कि पीपल तुम्हारे किस काम में आ सकता है जो सबसे अच्छा उपयोग दे सके।

'एक बात है,' राधारमन ने कहा: बहस में तब तक मज़ा नहीं आता जब तक दोनों तरफ से पूँछ नहीं फटकारी जाये।

सब लोग जोर से हँस पड़े। ब्रह्मदत्त ने कहा: बहुत कर तो वही सुनता हूँ। इतना विरोध किया जाता है कि कभी कभी जब कम विरोध होता है तो लगता है कि कुछ कच्ची बात कह रहा हूँ। वह स्वयं हँसा और बोला—पर बाहर तो लोग छूटते ही कहते हैं तुम! रूस! रूस! क्या रूस, क्यों रूस? कुछ नहीं। वह फिर हँसा और बोला: इस अशिक्षित जनता की शक्ति को पहँचानो। कितनी अदम्य और कितनी प्राचीन है? यह कभी मरती नहीं। आज हिंदुस्तान सैकड़ों बरस से बदल-बदल कर इस रूप को प्राप्त कर सका है। राजवंश और अनेक उच्चवर्ग ऐसे उड़ गये हैं जैसे मुट्ठी खोल देने पर कपूर उड़ जाता है। परन्तु हिमालय से कन्या कुमारी और सिंध से बंगाल तक यह महान जनता, एक एक क्षण अत्याचार और शोषण से संघर्ष करती हुई अदम्य खड़ी है। विदेशी आक्रमणकारी आते थे; दमन और हत्या से आकाश गूँज उठता था राजवंश बदल कर मिट जाते थे, पर यह जनता अपनी शक्ति और साहस से सजीव बनी रहती थी।

'जब तुम्हारी बात इतनी ही सरल है और अच्छी है' आशुतोष ने कहा: तो तुम लोग बड़े-बड़े सेठों और राजाओं के पास जाकर समझाते क्यों नहीं? अशोक को समझाने पर वह तो बौद्ध हो गया था। अगर ठीक होगा तो वे सब समझ लेंगे। आखिर उनके विरोध का कारण? क्या वे हृदय नहीं रखते?

'कोई बता सकता है कि चाँदनी रात में कुत्ता घूरे पर से उठकर क्यों चांद की तरफ़ देखकर रोने लगता है?'

इस बात से कटुता पैदा हुई। ब्रह्मदत्त ने फिर कहा: बुरा मत मानना। अशोक ने साम्राज्य नहीं छोड़ा था और पैसे वालों की अहिंसा पशुओं पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिक होती है मनुष्य पर नहीं। वह अपनी बात कह कर चारों ओर देखने लगा अब वह उत्तर चाहता था। आशुतोष ने कहा: तो यह नेता निर्बल हैं ? मूर्ख हैं ?

नहीं इसका अर्थ यही है कि तुम बहुमतका मज़ाक नहीं उड़ा सकते। तुम्हें मानना पड़ेगा कि जनता की शक्ति ही समाज की शक्ति है। हम इसीलिये ब्रिटिश साम्राज्य को सशक्त समझते हैं कि हम ईमानदारी से बँटवारा नहीं करते और चोरों की तरह अँगरेज़ों से लड़ना चाहते हैं। क्या यह साफ नहीं दीखता कि ब्रिटिश शासन को यहाँ के सत्ताधारी ही कायम किये हुए हैं। यदि यह जनता अपना पथ पहँचान ले तो उसको कौन रोक सकता है ? क्या इन लोगों को उखाड़ देना कठिन है ?

'कठिन क्यों नहीं है ?' इन्द्र भान कह उठा। 'कितनी ताकत है उनके पास ? कितने लोग मर गये, कितने भूखे मर गये पर अँगरेज़ों का हमने क्या कर लिया। तभी तो हमने गांधी जी का पथ पकड़ा। इस राह पर चल कर हमें कुछ मिल सकता है। गांधी क्या कोई साधारण आदमी है। वह देश को आजाद कराके मानेगा।'

ब्रह्मदत्त मन ही मन अप्रतिभ हुआ। उसने कहा: यह तो एक पक्ष हुआ। और साथ ही साथ मैंने बहुत से लोगों को कहते सुना है कि हमारा देश अभी स्वतंत्र होने के लिये तैयार नहीं हैं।

वे कुत्ते हैं 'आशुतोष ने बैठते हुए कहा।' जिस देश में शहीद भी टोलियों में चलते हों। उसे कौन कहता है कि वह आज़ाद नहीं हो सकता। स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जो इसे नहीं मानता वह अन्धा है या पागल है.....

'या विदेशी शासन के भूत ने उसके हृदय का लहू पीकर उसकी लाश को छोड़ दिया है.....,' ब्रह्मदत्त कुछ उत्तेजित दिखाई दिया। उसके होंठ फड़क उठे और नथुने फूल गये। शीघ्र ही एक गंभीरता ने उसके चेहरे पर अपनी छाया डाल दी और वह एक नये आत्मविश्वास से कहने लगा। इस समय उसमें एक स्फूर्ति सी दिखाई दे रही थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने कहा : इसी संसार में मनुष्य को मनुष्य के साथ बराबरी से मिलना होगा। जो भी धर्म जाति, या वर्गों के बन्धन बनायेगा वह इतिहास की महागति में चकनाचूर होकर कुचला रह जायेगा। वह नहीं बच सकेगा।

इस बात से सब चौंक उठे। ब्रह्मदत्त कहता रहा : क्रान्ति ! उसे सुन कर सब चौंक उठते हैं। क्या है क्रान्ति ? क्रान्ति है नई दुनिया का पेड़ उगाने के लिये धरती को खोदना, गोड़ना।

'परन्तु क्रान्ति में जो पशुता जाग उठती है, वह केवल नाश करना जानती है। उसमें रचनात्मक शक्ति नहीं होती क्योंकि आधार द्वेष होता है।'

'नहीं आधार द्वेष नहीं होता, न्याय की माँग होती है, और वह संघर्ष उस न्याय को अमल में लाने के लिये एक तरीका होता है जो बीच के बन्धनों को मिटा देना चाहता है। और पशुता क्या है ? पशुता है मनुष्य की अपनी सड़ी-गली व्यवस्था में पैदा हुई मज़बूरियाँ। जब वह इस बात के लिये विवश है कि अपने आराम के लिये वह दूसरों का पेट काटे और मरते और दिन ब दिन तड़पते हुए देख कर भी उस पर ध्यान न दे। अगर भूखा आदमी पेट की खातिर कुछ माँगे तो उसको पशुता कहना सबसे बड़ी पशुता है।

'लेकिन तुम जिस जनता का पक्ष लेते हो कभी यह नहीं सोचते कि वह कितनी दकियानूस है। एक-एक मेंढ के पीछे सिर फट जाते हैं। मुकद्दमों में किसान, रिश्वत और वकीलों की फीस दे दे देकर तबाह हो जाते हैं, पर आपस में समझौता नहीं करते।'

'इसका कारण तो अशिक्षा है। पढ़े-लिखे घरों में भी लड़ाई होती है। इसका मूल कारण मनुष्य नहीं, मनुष्य की संपत्ति है। जिस अमीर के पास सौ रुपये आते हैं वह बीस फेंक कर दानी कहलाता है। और चार पैसे वाला वाला दो पैसे के लिये सिर तोड़ देने को तैयार हो जाता वह कमीना कहलाता है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'यही तब होगा जब जनता का राज होगा।'

'क्या दुनिया में शोषण सदैव बना रहेगा ? यह सवाल अक्सर उठाया जाता है। लेकिन एक बात सोचो। आज तक दुनिया में जो परिवर्त्तन हुए उसमें एक वर्ग सदैव शोषक बन कर रहा। तुम कहोगे कि जनता की शक्ति बढ़ने पर वर्त्तमान सामंत और पूँजीपतियों का शोषण होगा। लेकिन वे तब सामंत और पूँजीपति बनकर रहेंगे ही कहाँ ? वे भी अपने विशेष अधिकार छिनते ही जनता हो जायेंगे, जो क्रान्ति में मदद देगा अर्थात् संसार को सुखी बनाने में मदद देगा, वह उन्हीं में मिल जायेगा, जो रोकेगा, और अपने अत्याचारों को कायम रखने के लिये लड़ेगा वह इस दुनिया में नहीं रहेगा क्योंकि वह मनुष्यता का शत्रु होगा।'

ब्रह्मदत्त का विश्वास अब फन उठा कर बैठ गया और वह जागरूक था।

'स्वप्न की बातें लगती हैं।' राधारमन ने कहा।

ब्रह्मदत्त हँसा। कहा : यह सुपना सच हो चुका है और होता जा रहा है।

'हुआ होगा।'

'जीवन की करूपता मिटानी ही होगी।'

'मिट सकेगी ?'

'क्यों नहीं ?'

'यह हो सकता है कि कुछ हेर-फेर हो।'

'और क्या ?' आशुतोष ने कहा।

राधारमन ने कहा : समूल रूप से मनुष्य नहीं बदल सकता।

आशुतोष : मनुष्य का स्वभाव ऐसे ही नहीं बदल जाता। उसके लिये साधना का कठिन पथ अपनाना पड़ता है। कोई खेल नहीं है कि सब के सब ही संयम से रहने लगेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'लगता है तुम बहुत दूर की बात कर रहे हो।' राधारमन ने फिर कहा। 'मुझे लगता है कि तुम बहुत आगे की कह रहे हो।'

ब्रह्मदत्त सोच रहा था। उसने पूछा : तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?

'क्यों लगता है?' राधारमन ने कहा : 'मैं जिन्दगी को देखता हूँ तो ऐसा ही लगता है।'

'हमारा भारतवर्ष धर्मप्राण देश ।' आशुतोष ने जोर देकर कहा।

'एक रेल ने ब्राह्मणत्व की जड़ हिलादी। नल के पानी ने उसे ठोकर मारी। और अब ब्राह्मण का वही सम्मान है?'

'नहीं।' आशुतोष ने स्वीकार किया।

हजारों साल के इतिहास में दस बीस साल होते ही क्या हैं? पर क्या इसी से सत्य छोड़ देना चाहिये कि उसका फल मुझे नहीं मिलेगा। अभी तो हिन्दुस्तान से अँगरेज जायेगा इसी का कोई अंदाज नहीं। तुम जेल क्यों आये हो?

आशुतोष : भविष्य के लिये, वर्त्तमान के लिये।

ब्रह्मदत्त : अवधि निश्चित है?

आशुतोष : नहीं।

'फिर?'

किसी ने उत्तर नहीं दिया। एकाएक इन्द्रभान ने कहा : तुम नहीं जानते गाँव का किसान बड़ा स्वार्थी होता है।

'जानता हूँ। पर वह भूखा होता है।'

'फिर भी बौहरे को दुगने तिगुने, जन्म कैद के कर्ज चुकता है।

'उसके पास आज और कोई चारा हो नहीं।'

ब्रह्मदत्त चुप हो गया। सब लोग अब धीरे धीरे लेट गये थे। श्रीनारायण ने कहा : यार आज तो कोई किस्सा सुनाओ। यही ले बैठते हो रोज़ रोज। और यह ब्रह्मदत्त तो हम लोगों में ऐसा आ गया है जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कृष्ण के विरह को सताई गोपियों में वह उद्धव आ गया था। बस भसम लगाकर पड़े हो। आफत कर दी।

सब हँस दिये पर बात नहीं बदल सकी। आशुतोष ने कहा : तो क्या अब क्रान्ति का पथ तैयार नहीं हो रहा है।

'क्यों नहीं', ब्रह्मदत्त ने स्वीकार किया।

'तो फिर क्या गम है?' श्रीनारायण चिल्लाया।

'जो क्रान्ति के मार्ग से हट गया वह मर चुका है।'

'मर जाने दो, चुप रहो। कान पक गये हैं।'

पर आशुतोष नहीं माना। वह बोल उठा : क्रान्ति तो लोगों को खींच लाती है।'

'खींच लाने दो', श्रीनारायण ने उकता कर कहा।

इस समय उनमें एक थकान सी छा गई थी। जेल की बहस आख़िर बातें ही तो होती हैं। उनसे ऊब जाना भी एक स्वाभाविक सी बात है। परन्तु ब्रह्मदत्त ने बैठ कर, अपने घुटनों पर हाथ बाँधते हुए धीरे-धीरे गम्भीरता से कहा : 'जो खींच सकता है तो वह समाज बदलेगा क्योंकि अगर वह नहीं बदलेगा तो मर जायेगा। वह सदा ही बदलता रहेगा क्योंकि वह सदैव बदलता रहा है। हमारा धर्म, आचार व्यवहार सबमें नित्य परिवर्त्तन होता रहता है। जिसे हम समझते हैं कि वह सनातन है और सदा से होता चला आया है, वही सब रोज-रोज बदला करता है। कुछ लोगों को उस परिवर्त्तन से पैसे का नुकसान होता है, वे ही शाश्वत की दुहाई देकर, सनातन की हाय-हाय किया करते हैं।'

ब्रह्मदत्त के इस कथन पर आशुतोष कुछ तिनका। उसने कहा : क्या व्यक्ति और समाज में कुछ अंतर है?

'समाज और व्यक्ति के परिवर्त्तन में भेद है। एक आयु बढ़ने पर बढ़ता है, दूसरा घटता है। व्यक्ति की आयु बढ़ती जाती है, वह घटता जाता है। समाज बढ़ता है पर उसकी जवानी समाप्त नहीं होती क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
एक के बाद एक पीढ़ी आती चली जाती है। इस प्रकार मनुष्य अमरता का रूप धारण कर लेता है।'

'ठीक है। परन्तु यदि यह विकासानुसार हो तो क्या हर्ज है? धीरे-धीरे अपने आप ज्ञान बढ़ता जायेगा। समय की अवधि तुम भी निश्चित नहीं करते। फिर क्या हर्ज है? कितनी हत्या! रक्तपात होता है कि जमीन पर पाँव रखने को जगह नहीं मिलती।' श्रीनारायण का स्वर काँप उठा।

'मैं जानना चाहता हूँ, मरे हुये आदमी को मुहल्ले में क्यों नहीं पड़ा रहने देते वह आप गल जायेगा? उसे उठा कर क्यों जलाते हो? क्यों गाड़ते हो? क्यों उसका तुरन्त प्रबन्ध करते हो? जिसे तुम हत्या और जेल जाना कहते हो, जानते हो वह है क्या? वह मनुष्य की अन्याय से लड़ाई है। क्रान्ति यदि केवल हत्या है तो वह नामंजूर है। क्रान्ति मनुष्य के सूर्य्य का बादल फाड़ कर निकल आना है। इसका अर्थ है कि अब मनुष्य के लिये और अन्याय सहना नामुमकिन हो गया है।'

'दुनिया इतनी आसान नहीं ब्रह्मदत्त, जितना तुम किताबों में पढ़कर समझ चुके हो। ऐसा न जाने कितनी बार हुआ होगा।'

'जो कहता है अब दुनिया मर गई, असल में उसका मन मर गया है। संसार गतिशील है। जो गति को नहीं पहचानता उसको ही बाबा तुलसी ने 'सब ते भले वे मूढ़ जिन्हें न व्यापै जगत गति' कहा है।'

सब हँस पड़े। उस तिक्त वातावरण पर से मन का बोझा हट गया। मनुष्य के हास्य में कितना जीवन है यह साधारणतया ज्ञात नहीं होता। मुस्कराहट ही आदमी के मुँह को सुन्दर या कुरूप बनाती है। मुस्कान हीरा है जो जिन्दगी की खराद पर चढ़ कर संघर्षों की घन चोट खाकर, भी उज्ज्वल होती जाती है।

'मैं मृत्यु को देख कर डरना नहीं चाहता। वह तो आती ही है। पर मुझे जीवन चाहिये।' ब्रह्मदत्त ने कहा।

आशुतोष : मृत्यु का रहस्य तुम्हें आकर्षित नहीं करता?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'करता है। पर रोकता नहीं।'

'प्राचीन ऋषि उस पर विजय प्राप्त करता चाहते थे।'

'वह व्यक्तिवादी साधना थी।'

'क्या समाज पर उसने प्रभाव नहीं डाला?'

'समाज की उसने गति छीन ली।'

'वह कैसे?'

'कर्मफल का सृजन हुआ।'

एकाएक श्रीनारायण ने कहा : उफ!

अब्दुल मजीद ने चौंककर पूछा : 'क्या हुआ?'

'खटमल।'

'खटमल!' वह फिर जोर से चिल्लाया। और उछल पड़ा।

बहस बन्द हो गई। कहकहे लगने लगे। राधारमन ने एक जासूसी उपन्यास मँगा लिया था। वह पढ़ने लगा।

और साँझ की किरणें अब पेड़ की फुनगियों पर सरक गई थी। नीचे एक धुँधला का सा छाता चला जा रहा था। यदि हृदय भारी था तो उसके कारण थे। ब्रह्मदत्त को लग रहा था वह थक गया था। अब वह सिर के नीचे हाथ रखे लेट गया और उसने आँखें बन्द कर लीं।

बाहर शायद कोई गा रहा था। वह एक झिझकता गीत था। इसी प्रकार बीत रहे थे.....

दिन...

और रात.....

जवानी और जिन्दगी.....

ब्रह्मदत्त ने चौंक कर पूछा : मैं क्या कह रहा था।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं,' श्रीनारायण ने हँस कर कहा : अब क्या तुमने कहने में कुछ बाकी छोड़ा है?'

ब्रह्मदत्त फिर लेट गया। सब हँसने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शहीदों का काजल लगाकर साम्राज्यवादी वेश्या जैसे-जैसे सुन्दर बनना चाहती थी, वह अपना डायन स्वरूप प्रकट कर रही थी।

—५—

श्रीनारायण कुछ उदास रहने लगा था। पहले तो किसी को मालूम नहीं हुआ। पर धीरे-धीरे राधारमन ने यह बात ताड़ ली। श्री नारायण अब हिंदी की कविता के प्रति अधिक उन्मुख हो गये थे और छायावादी गीत गाया करते थे। उसकी आकृति अच्छी थी और उन सब में देखने में वह आकर्षक था। कविता करना नहीं जानता था, पर दूसरों की उसे बहुत सी कविताएँ याद थीं। कंठ अच्छा था, जिसके कारण आशुतोष के अतिरिक्त सब सुनते थे। आशुतोष में यही बात एक ऐसी थी जिससे सब उससे मन ही मन चिढ़ते थे। वह बंगाली था और उसमें प्रांतीयता बहुत अधिक थी। बंगाली अच्छा गाते हैं यह सर्वविदित है। पर कानों को जो अच्छा लगे वही अच्छा है। मदरासी को जो संगीत अच्छा लगता है, वह उत्तर भारतीय को नहीं लगता और जो अंगरेज को पसंद है, वह भारतीय को नहीं भाता। तुरंत एक दूसरे की आलोचना प्रारम्भ हो जाती है। जेल में यह छोटी-छोटी व्यक्तिगत, अच्छाई और बुराइयाँ बहुत मुखर हो जाती हैं। पर सभी बंदी थे। आशुतोष कहता था कि स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल ने नेतृत्व किया। राधारमन कहता था कि बंगाल ने सबसे पहले अंगरेजों का स्वागत किया था। तर्क इस प्रकार बढ़ते और जब कटुता बढ़ती तब बाकी लोग बीच में पड़ जाते और ब्रह्मदत्त कहता कि यह सांस्कृतिक अहंकार, केवल उच्चवर्गीय विद्वेष की भावना है। प्रत्येक प्रांत की जनता क्योंकि एक से शोषण के आधीन रही है, उसमें यह नहीं हो सकती। हमारा शत्रु हमारी इन्हीं निर्बलताओं से लाभ उठा लेता है। बात बदल जाती।

परंतु श्रीनारायण जो कभी कविताएँ गाता, कभी दर्शन की ओर उन्मुख होता, उसकी बातों में रस बढ़ता ही जाता। वह कहता : अच्छा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब कुछ माना। पर जीवन है ही क्या ? वेदांत को पढ़ो। सब माया है। दिखाई देता है, है कुछ नहीं।

ब्रह्मदत्त हँस कर कहता : है क्यों नहीं। सब मर जाते हैं। पर मरने के पहले सब जीवित रहते हैं। यदि जगत मिथ्या है, तो ब्रह्म ही के सत्य होने का क्या प्रमाण है ? वह है। है क्या ? नहीं ही क्यों नहीं कहते। जो है उसे तो तुम नहीं कहते हो, पर जिसका होना न होना निश्चित नहीं है, उसके बारे में पूर्ण विश्वास से कहते हो कि वह है। यह क्या तर्क है ? यह तो अंधविश्वास है।

जब बात बढ़ती तो श्रीनारायण का मन उचट जाता। अंत में उसकी राधारमन से अलग बातें हुआ करतीं। पता चला उसका गौना हाल में ही हुआ था और जेल में उसे बीवी की याद आया करती थी। मनुष्य भी बड़ा अजीब होता है। कल तक जिस स्त्री को नहीं जानता था, अब उससे इसे इतना प्रेम हो गया। और बचपन से जिन माँ बाप ने पाला, भाई बहिनों में खेला उनकी उसे इतनी याद नहीं आती। जिनका मानसिक विकास स्वस्थ नहीं होता वे न सामाजिक नियमों का संतुलन कर पाते हैं, और न अपनी मजबूरियों को ही जीत पाते हैं क्योंकि वही उनका जीवन बन जाती है और अपनी वासनाओं के दास बन कर वे उसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते।

राधारमन को इस विषय में दिलचस्पी हुई। स्वाभाविक ही था कि दो युवक जीवन में अपने यौवन की भी चर्चा कर लिया करें। और जब आकाश में तारे छिटक आते, हवा सनसनाने लगती, तब श्रीनारायण गाता और वे सुनते, इस प्रकार उदास और बंदी जीवन की घुटन, गीत की कड़ियों में गुँथ गुँथ कर लंबी होती गई, ज उनके स्मृतियों की कीलों से उलझ कर टँगी रही गई और वह कीलें फिर दारुण व्यथा देती हुई चुभने लगीं। यौवन के सुपने रंगीन होते हैं। उस आयु पर मनुष्य एक आवेश में फिसलता है जैसे सारी धरती उसके पाँवों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
नीचे चिकनी बन जानी चाहिये। जो उसके पाँवों में आकर अड़ेगा, उसे वह ठोकरों से चकनाचूर कर देगा।

'हमलोग इसी जेल में अपनी जवानी गुजार रहे हैं', राधारमन कहता। 'जब तक छूटेंगे तब तक कितनी उम्र गुजर जायेगी' उसके स्वर में एक भारीपन होता। एक वेदना होती। उन लोगों की आँखों की तस्वीर होती जो सिकचों में बंद इन बंदियों के छूटने की प्रतीक्षा कर रही होंगी।

.....

'न जाने', श्रीनारायण ने कहा—'कितने नौजवान इसी तरह तड़प तड़प कर जेलों में जान दे देते हैं। और उनके घर वाले इंतजार करते करते थक जाने पर भी सड़क देखना नहीं छोड़ते।'

जीवन के प्रति एक सकरुण ममता थी जो जागरूक हो उठी थी। उसकी इस बात ने सबको विचलित कर दिया। सब की आँखों में वह दिन घूम गये। जब वे आजाद थे। श्री नारायण उदास था। अब्दुल मजीद ने कहा : पारसाल मैं इन दिनों मदरास में था। वहाँ जब सूरज डूबता था और लहरें आकर किनारे से टकराती थीं, तब कितना अच्छा मालूम देता था, यह मैं अब नहीं बता सकता। हम कितने लोग हैं जो देश की ख़ातिर जेलों में पड़े रहते हैं। बाकी सब लोग भी क्यों नहीं आ जाते। उससे तो लड़ाई बहुत जल्दी ख़त्म हो सकती है।

ब्रह्मदत्त मुस्कराया। उसने कुछ नहीं कहा।

'एक दिन होगा', श्रीनारायण ने धीरे-धीरे कहा—'जब हम आजाद होंगे। उस दिन हमारा इंगलैंड से कोई सम्बन्ध नहीं होगा। उस दिन हम आजाद होंगे। उस दिन हमारे देश के कारीगरों के अंगूठे कोई नहीं काट सकेगा। हमारे व्यापार में कोई विदेशी हुकूमत नहीं कर सकेगा।'

राधारमन ने गद्‌गद् स्वर से कहा —'दुनिया के मुल्कों में हम सिर ऊँचा उठा कर चलेंगे। कोई हमें देखकर गुलाम नहीं कह सकेगा। घृणा नहीं कर सकेगा। जिधर से अपने देश में निकलेंगे उधर ही खुश-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
धोखा देती है तब अपने आपको धोखा देती है, यानी सामंत और पूँजीपति के हाथ में खेल जाती है। और जब वह इनके हाथ में नहीं खेलती तब भी वह दगा करती है।'

'वह कैसे ?' अब्दुल मजीद ने पूछा।

ब्रह्मदत्त हँसा। इससे उसके प्रति कुछ अधिक रहस्य की भावना जाग्रत हुई। सबकी आँखे उसकी ओर आकर्षित हुई। उसने कहा : तुम चाहते हो हिन्दुस्तानी फौज अँगरेजी शासन के विरुद्ध हो जाये ?

'हाँ।' राधारमन ने सिर हिलाया।

'इसके लिये चाहते हो कि उसके हुक्म मानना बंद करे। अँगरेजों को गिरफ़्तार करे और हिन्दुस्तान के लिये आजादी की लड़ाई करे।'

'बिल्कुल ठीक है।' श्रीनारायण ने कहा।

'तब,' ब्रह्मदत्त ने कहा—'यह काम अँगरेजों के खिलाफ़ दगा होगा या नहीं।'

'हाँ अँगरेजों को तो दगा ही होगा।' सबने स्वीकार किया।

'क्योंकि,' ब्रह्मदत्त ने कहा—'जायज हो या नाजायज अँगरेज ने उन्हें रोटी के लिये, उनकी अशिक्षा, और अज्ञान से लाभ उठा कर उन्हें अपना नौकर रखा है कि वे वफादार बन कर रहें। अब यह वफादारी चाहे देश को कितनी ही हानि पहुँचाये, पर अँगरेज इस वफादारी को ही सत्य, न्याय, कानून, धर्म, मर्यादा और मनुष्यता कहता है। क्यों ? ठीक है न ? तुम इसे पसन्द नहीं करते क्योंकि तुम जानते हो यह वर्ग स्वार्थ है।'

'बिल्कुल,' राधारमन ने कहा।

'ठीक यही,' ब्रह्मदत्त ने हाथ फैला कर कहा—'जनता सामंत और पूँजीपति से दगा करती है और आजाद हो जाती है।'

ब्रह्मदत्त की बात से सब ही चौंक उठे। राधारमन हँसा। उसके दाँत खुल गये। ब्रह्मदत्त थक कर लेट गया।

शाम को श्रीनारायण फिर कविताएँ गाने लगा। अब चूँकि सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
उसकी विरह व्यथा के कारण उसकी पत्नी में अधिक जिज्ञासा दिखाने लगे थे, वह बातों को छिपाने लगा था। अब देश के गीत भी गाने लगा था। उन दिनों –'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,' काफी प्रचलित था।

परन्तु जीवन चारों ओर से बन्द था। जैसे पंखों को समेट कर पंछी सीखचों के पीछे से आकाश के अनन्त विस्तार को आँखों से नापता है, मन से उड़ता है, उसी प्रकार बन्दी भी आज बँधे हुये मन से, सब कुछ नाप देना चाहते थे। और उनमें कुछ स्वानुभूति के सत्य उदय हो रहे थे।

मनुष्य की यातना दैहिक है मानसिक भी है। मनुष्य की देह का दुख सदा ही मानसिक सुख से नहीं मिटता, पर वह उसे शक्ति देता है। मनुष्य के भविष्य की कल्याण-कामना यदि एक विश्वास बन जाती है तब वह वर्त्तमान के संकुचित सुख छोड़ देता है, क्योंकि वर्त्तमान का वैषम्य उसे पागल बनाने लगता है। जिसके हृदय में मनुष्यता है वह कभी तब तक चैन से नहीं बैठ सकता, जब तक वह मनुष्य के कलुषों को दूर नहीं करे।

मनुष्य अपने समय के प्रवाह में बहता है। धारा में लाखों करोड़ों बहते हैं। कभी किसी युग में यह पहाड़ पर लुढ़कती तेज धारा की गति पकड़ लेता है, कभी मैदान पर धीरे-धीरे धारा बहती है। मनुष्य अपनी परिस्थितियों के साथ बदलता है; पर साथ ही साथ उन्हें बदलने की भी चेष्टा किया करता है।

व्यक्ति की अन्तर्मुखी वृत्तियों पर सोचने का अब अधिक अवसर मिलता। मनुष्य के राग-द्वेष आदि पर वे लोग काफी बातें करते। अहम्मन्यता, पुरुष-स्त्री प्रेम, न जाने कितने विषय थे।

और अब वे एक-एक कर उस जीवन से जैसे-जैसे समझौता करते जाते थे वैसे ही वैसे उससे ऊब भी चले थे। बैल जैसे-जैसे मञ्जिल के करीब पहुँचते जाते हैं उनकी चाल तेज होती जाती है, पर राही का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उतावलापन मन का एक बोझ बन जाता है। वही हाल इन बन्दियों का भी हो रहा था।

'जेल के बाहर के लोग घूम रहे होंगे' श्रीनारायण ने कहा।

'वे आजाद हैं' राधारमन बोला।

परन्तु आशुतोष ने काट कर कहा : यह सब भ्रम है। सारा भारत एक जेल के समान है। जहाँ बोलने की आजादी नहीं, कहने, छापने, भाषण देने तक की आजादी को वफादारी के नाम पर बड़े-बड़े आदर्शों का फरेब पैदा करके छीन लिया जाता है। वहाँ बाहर भी आजादी नहीं कही जा सकती। ठीक इसी वक्त क्या-क्या अनर्थ नहीं हो रहे होंगे। बम्बई, कलकत्ता, मदरास की विराट अट्टालिकाओं के नीचे भूखे फुटपाथों पर पड़े होंगे। औरतें सज-धज कर अपना शरीर बेच रही होंगी। दूर पहाड़ों में कुली सीलन में पिस्सू और खटमलों को अपना खून पिला रहे होंगे। गाँवों के नीरव दाह में किसान भूखा सो रहा होगा, औरतें सिसक रही होंगी। मजदूरों की गन्दी बस्तियों पर गरीबी का अँधियारा छाया होगा। कहाँ है सुख ? कहाँ है आजादी ?

'कहीं नहीं,' ब्रह्मदत्त ने कहा : सुख ? हमारी आँखें हमें धोखा न दे कि कहीं हम मोटरों में बन ठन कर चलने वालों को देख कर, उसे सुख कहने लगें। कहीं ऐसा न हो कि कान धन की खनक से भर जायें और हम दुखी मनुष्य का चीत्कार सुनना बन्द कर दें।

इसी समय किसी की जंजीर खनखना उठी।

'सुनो, सुनो,' ब्रह्मदत्त ने रुक कर कहा : वहाँ किसी की जंजीर खनखना रही है। जब मैं सुनता हूँ तो लगता है कि आजादी गुलामी के लोहे में से भी बोलती है। हम सभ्य बनते हैं ? हम बँधे रहने को सुख कहते हैं। इस वक्त शिमले में वायसराय ऐश की छान रहा होगा। विलायत में गोरे राजनीतिज्ञ चालें सोच रहे होंगे। यह ब्रिटिश साम्राज्य की छाया है। उसका वैभव है।

वह रुक गया। फिर उसने रुक कर कहा : सैकड़ों आदमी, अनेक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीढ़ियाँ। जनता को सदैव यातना। अतीत का भव्य-गौरव, केवल शोषकों का गौरव। मैं देख रहा हूँ। मैं इस विराट धारा का एक बुद्बुद् हूँ। पर मुझमें समस्त महासागर की सत्ता है, मैं अलग नहीं हूँ। मुझे संतोष है कि मैं औरों की भाँति नहीं कि जीवन का भार ढोता रहूँ। मैं नई दुनिया बनाने में लगा हूँ। मुझे इसका गर्व है। और ब्रह्मदत्त का स्वर फिर काँप उठा—'एक नई दुनिया...उसके लिए जीवन के कष्ट...इसलिये नहीं कि किसान मजदूर पर उनकी गरीबी देखकर मात्र एक भावनात्मक दया आ गई है वरन् इसलिये कि वह इतिहास की गति है, उसे कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि वही मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ और पवित्रतम का विकास है, वही इस सड़ाँध को मिटाने वाली पानी की तेज धारा है, वही सत्य है, शोषितों का अधिकार है.....

जीवन और जेल की मोटी-मोटी दीवारों का यह संघर्ष कभी-कभी उनके समवेत गीतों में डूब जाता, पर फिर हृदय में कसकता। ऐसे करकता जैसे तेज भागती रेल का छोटा कोयला आकर आँख में गिर जाता है और फिर कोई बुड्ढा कह उठता है—थोड़ा पीछे चल लो, आँख फाड़ कर, उँगलियों से पकड़ कर, कोयला निकल जायेगा...

और वे बन्दी पूछते कब तक पीछे चलना होगा.....

—६—

सुबह जब वार्डर की कठोर आवाज़ सुनाई दी, आशुतोष ने जोर से पुकारा: ऐ! वार्डर! इधर आओ! इधर।

वार्डर मन ही मन झल्लाया। यह वार्डर अभी बदली होकर आया था। पहले अराजनैतिक बन्दियों के भाग में काम करता था। इसकी तबियत में हुकूमत थी और कैदियों को यह आदमी ही नहीं समझता था। वह करीब आया। उसकी भौं तनी हुई थीं जिन्हें बिना देखे ही आशुतोष ने कहा: अपने मालिक से जाकर कहो कि हमारा तसला और कम्बल बदले। कम्बल फट गया है, तसला टूट गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वार्डर ने कहा आ जायेगा सब।

'कब आ जायेगा'।

'बाबूसाब। अब ये अकड़ नहीं चलेगी। समझे? होश में बातें करो। सरकारी जेल है। तुम्हारी सुसराल नहीं है।'

वार्डर की बात सुनकर आशुतोष को जैसे आग लग गई। उसने चिल्लाकर कहा: होश सँभाल कर बातें करो। गुलामी से तुम्हारी बुद्धि भी सड़ गई है।

अभी तक बाकी लोग अपने-अपने काम में लगे थे, पर इस चीख पुकार से उनका ध्यान केन्द्रित हो गया। ब्रह्मदत्त ने बढ़ कर पूछा: क्या हुआ? क्या बात है?

'तुम चुप रहो।' वार्डर ने गरज कर डाँटा—'जब हम यहाँ हैं तो तुम्हें बोलने का क्या अधिकार है?'

'सिड़ी हो गया है' कहता हुआ इन्द्रभान आगे बढ़ आया और उसके साथ ही अब्दुलमजीद और राधारमन भी बढ़े और सबकी देखा-देखी पीछे-पीछे श्रीनारायण भी आ गया। पर वार्डर जैसे इस सबसे विचलित नहीं हुआ। उसने आशुतोष की ओर ही देख कर कहा: होश सँभाले रहो। वर्ना डंडा बेड़ी डलवा दी जायेगी और ज्यादा बदमाशी की तो चक्की पिसवा दूँगा, रस्सी बँटवा दूँगा और फिर भी नहीं माना तो नंगा करके बर्फ पर बिठवा दूँगा और मार बेतों से चूतड़ों की खाल उड़ा दूँगा

वार्डर का कठोर मुँह उस समय विकराल हो उठा। उसको देखकर आशुतोष की आँखों में खून उतर आया। उसने उठते हुए कहा: अब के बोलेगा तो दाँत तोड़ दूँगा और हलक में हाथ डाल के ज़बान खेंच लूँगा.....

भाड़! एक आवाज हुई। वार्डर का हाथ आशुतोष के मुँह पर बजा। आशुतोष ने एक बार एक उछाल सी लगाई और लपक कर वार्डर को पीछे से पकड़ लिया और इतनी जोर से धक्का दिया कि वह सामने की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दीवार से टकराया और उसका सिर फट गया। खून निकलने लगा और वह सिर थाम के बैठ गया। आशुतोष क्रोध से पागल हो रहा था। उसका डंडा छीन कर अब वह उसे मारने लगा। वार्डर गिर गया। आशुतोष का हाथ उठ ही रहा था। ब्रह्मदत्त ने हाथ पकड़ कर कहा: अब क्या इसे मारते ही जाओगे? मर जायेगा।

'मर जाने दो,' आशुतोष ने फूत्कार किया—'यह क्या मुझे छोड़ देते हैं? कुत्ता! अगर यह कुत्ता मर ही जाये तो क्या नुकसान है! कमीने! इन्होंने मेरे सामने औरतों और बच्चों पर संगीनें चलाई हैं, घोड़ों को दौड़ा कर कुचला है, इनके अत्याचारों को मैं भूला नहीं हूँ।'

'ठहरो, ठहरो,' राधारमन ने आशुतोष का दूसरा हाथ पकड़ कर कहा: 'गजब मत करो।'

परन्तु आशुतोष नहीं माना। उसने छूट कर अपने तसले को धरती पर दे मारा और मार मार कर तोड़ दिया। इतने से ही उसका क्रोध शांत नहीं हुआ, वह एक-एक कर सबके तसले तोड़ने लगा। और फिर उसने सबके कंबल फाड़ डाले। सब चुपचाप देखते रहे। सब को इस प्रकार की दुर्घटना के कारण वार्डर पर अत्यंत क्रोध आ रहा था।

ब्रह्मदत्त ने आशुतोष का कंधा पकड़ कर कहा: अब बस करो, बहुत हो चुका।

आशुतोष ने आँखें मिलाईं। ब्रह्मदत्त ने देखा। उनमें पानी था। कितना क्रोध, कितना विक्षोभ, गतिरोध, विवशता, और मनुष्य का आत्मसम्मान उनमें पिघल उठा था और ऐसे जैसे बादल, बादल जिसमें बिजली ठट्ठा करती है, उन्माद और तड़प लेकर। वे आँसू नहीं थे, बंदी की अपराजित आत्मा का जीवित गौरव था, एक दुर्दम्य जीवन की मर्यादा थी जो कभी भी सदा के लिये झुकने को तैयार नहीं थी। ब्रह्मदत्त ने उसके कंधे को थपथपाया। और फिर उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा। सब के हृदय में शक्ति आई। भविष्य का अज्ञात भय अब कम होने लगा। एक ओर शासन, आसमुद्र फैला हुआ साम्राज्य का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
वैभव था, जिसके दंड के नीचे करोड़ों मनुष्य असंख्य जातियों का भूखा और नंगा समूह था, जिसके न्याय ने स्वार्थ रक्षा के लिये अनेक जंजाल बना कर सत्य और स्वतंत्रता को पाप कह दिया था, और जिसका जीवन दिन प्रतिदिन ढाये गये वह भीषण अत्याचार थे जो दीपक लेकर ढूँढने पर भी मुश्किल से मिलेंगे। और दूसरी ओर थे यह पाँच व्यक्ति—तरुण—जिनकी जवानी अरमानों की ज़िंदा दिली के कारण जब नहीं घुल सकी तब वह अत्याचारी उनके फौलादी दिलों को धीरे-धीरे रेतने लगा, ताकि वे घिस जायें, उनका निशान भी मिट जाये।

वार्डर अब होश में आ चुका था। उसको अब डर ने घेर लिया था। उसकी हिम्मत नहीं होती थी कि उठे और चला जाये। यह तो बड़े कातिल कैदी हैं। इनकी इतनी मजाल? आज तक जिसकी आँखें देख कर लोग डरते थे, अब आज उसकी यह हालत हुई है? क्या ठीक है वह उठे और फिर सब टूट पड़ें।

एक हल्की सी आवाज आई फिर जोर से सीटी बज उठी और इससे पहले कि कैदी सँभलें खतरे की घंटी बजने लगी और सारी जेल भारी बूट पहन कर दौड़ने की आवाज से गूँज उठी। एक मिनट ही बीता होगा कि इनकी कोठरी में पाँच वार्डर घुस आये और उनकी आहट पाकर जमीन पर पड़ा हुआ आदमी उठ खड़ा हुआ। उसके माथे पर खून लग रहा था।

एक मोटे से वार्डर ने चिल्ला कर कहा: क्या हुआ?

घायल ने कुछ नहीं किया। केवल आशुतोष की ओर उँगली उठाई, पर इस समय ब्रह्मदत्त सामने पड़ गया। मोटे आदमी ने उस पर हाथ उठाया। थोड़ी देर के लिये कोठरी में भयानक गुत्थम गुत्था हुई। काँग्रेस के युवक उस अनैतिकता से इतने क्रुद्ध हो गये थे कि वे हिंसा अहिंसा भूल गये और फिर डट कर मारपीट हुई। लड़ाई इधर लहू-लुहान हो गये, उनके पास छोटे डंडे थे, पर आशुतोष ने दो के सिर फाड़ दिये और सिपाहियों की वर्दी फाड़ दी। एक ने लात मारने को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भारी बूट उठाया तो आशुतोष के डंडे की चोट उसके घुटने पर तड़ाक से बैठी, वह चिल्ला कर बैठ गया।

और फिर सीटी बजी। लड़ाई थम गई। जेल सुपरिंटेण्डेण्ट का चेहरा दो बंदूकधारियों के पीछे दिखाई दे रहा था। छओं कैदी पीछे हट गये। सुपरिंटेण्डेण्ट ने आर्डर दिया: हाथ उठाओ। पीछे खिसककर छओं दीवार की ओर मुंह किये हाथ उठा कर खड़े हो गये। उनके हाथ की बंदूकों ने रंग दिखाया। सुपरिंटेण्डेण्ट आगे बढ़ा। उसने राधारमन की बगल में खड़े आशुतोष को देख कर पूछा : यही है ?

और वह गर्व से और आगे बढ़ा। बोला—यू डैम्न्ड स्वाइन..... (सूअर)

आशुतोष में जैसे बिजली भर गई। उसने धाड़ धाड़ धाड़ करके सुपरिंटेण्डेण्ट के मुँह पर चाँटे मार दिये, सुपरिंटेण्डेण्ट घबरा कर चिल्ला उठा : शूट ! शूट ! ! मर्डर (हत्या)

एक बार धाँय हुई। आशुतोष धड़ाम से गिरा। ब्रह्मदत्त उस पर चिल्लाता हुआ झुका। गोली आशुतोष के कंधे में लगी। वह बेहोश हो गया। ब्रह्मदत्त की आँखों में क्रोध से आँसू आ गये। उसने वह खून अपने हाथ से छुआ और फिर पागल की तरह सुपरिंटेण्डेण्ट पर टूटा। सिपाही डंडे चलाने लगे। उन्होंने बाकी चार को मार मार कर गिरा दिया। मोटा सुपरिंटेण्डेण्ट भी उठ कर कपड़े झाड़ कर हाँफता हुआ कहने लगा : उफ ! इतने बदमाश ! इतने सरकश ! मैं सरकार को लिखूँगा। इनको इस तरह नहीं छोड़ा जा सकता।

कैदियों के डंडा बेड़ी डाल दिये गये। आशुतोष को जेल अस्पताल पहुँचा दिया गया। खबर आई कि वह मरा नहीं। गोली निकाल दी गई है। परन्तु अब हर एक कैदी को अलग अलग कर दिया गया। उनके तो एक साथ रहने में खतरा था।

सुपरिंटेण्डेण्ट का क्रोध शीघ्र ही नहीं मिटा। उसने वार्डरों को बुला कर, सब की रिपोर्ट ली और सरकार को लिख दिया। इस बीच ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कैदियों ने भूख हड़ताल कर दी। इस खबरसे सुपरिंटेण्डेण्ट घबरा गया, परंतु सरकार ने उत्तर दिया, घबराओ नहीं। डर कर, या घबरा कर डिसिप्लिन बिगाड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है। पूरी तरह से न्याय किया जाये। हड़तालियों को खाना खिलाया जाये और साथ ही साथ उनके अपराधों के लिये उन्हें दंडित भी किया जाये।

भूख हड़ताल भयानक चीज़ थी। तीसरे दिन लगा आँखों के सामने अँधेरा छा गया है, और हिलने-डुलने की भी शक्ति नहीं है। अब सब घूम रहा है, पर पाँचवे दिन से भूख लगना कम हो गया, कमज़ोरी बढ़ चली। राधारमन को बर्फ पर भी नंगा बिठाया गया, परन्तु खाया किसी ने भी नहीं। उनके उस दृढ़ साहस को देख कर वे लोग मन ही मन डरने लगे। अत्याचारी सबसे बड़ा कायर होता है। घुल घुल कर, दम तोड़ने वाली उस पागल और दीवानी जवानी को देख कर वे मन ही मन काँप उठे। कितनी लगन, कितना जीवन, कितनी शक्ति कितना अदम्य विश्वास। जेल की भारी-भारी दीवालों का बोझ मन से उठ गया और लगा वे बन्दी शेरों की तरह पड़े थे। मौत उनकी तरफ बढ़ते हुए शर्मा रही थी।

और जब वे ऊब जाते तब क्षीण स्वर से कोई गाने लगता, वह गीत जो भगतसिंह ने गाया था, मौत के वीर सिपाही उस गाने को भूल नहीं सकते। बात बदल गई थी, शब्द बदल गये थे, पर वह भगतसिंह का गाना था, उस गाने को करोड़ों देशवासियों ने गाया था, हजारों जुलूस नदियों और मैदानों पर उमड़ पड़े थे, हजारों माँओं ने उस दिन अपनी आँखों से उमड़े हुए आँसू पोछ लिये थे। और फिर वह अमर गीत धीरे-धीरे जेल की भारी दीवारों में रुद्ध हो जाता, या जज़्ब हो जाता।

और जब जेल के अधिकारी जबर्दस्ती दूध पिलाने को नाक में नली डालते जब बंदी लड़ते। एक दिन इसी संघर्ष में श्री नारायण के गले की हवा की नली फट गई और दूध उसके फेफड़े में उतर गया। तीसरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन वह मर गया। इस प्रकार अट्ठारह दिन बीत गये और एक-एक दिन की भूख, ब्रिटिश साम्राज्य के लोहे पर डंके की तरह बजने लगी, जिसकी आवाज़ जेल की दीवारों के बाहर पहुँचने लगी।

—9—

ब्रह्मदत्त के प्रति किये गये ये अत्याचार जब कांग्रेस वालों में पहुँचे तब एक सनसनी सी छा गई। आलाप में संवाद छपा। शहर में लोग इस विषय पर बातें करने लगे। राजनैतिक बंदियों से जनता की सदैव ही सहानुभूति रहती थी। बल्कि औरों के लिये असह्य यंत्रणाओं को झेलने वाले युवकों के प्रति लोगों की भावना आदर भरी थी। आलाप के दफ्तर में उस दिन भीड़ लग गई। मुंशी इकबालशंकर और मौलाना हामिदअली आलाप नहीं पढ़ते थे, पर श्यामनारायण को चैन कहाँ था। जाकर सुन आये। लालारामकिशोर ने सुना तो एक ठंडी साँस ली और फिर डर कर देखा। कहीं सामने खड़े वासुदेव ने देख तो नहीं लिया। वासुदेव के चेहरे पर वही रहस्य भरी मुस्कराहट दिखाई दे रही थी, जिसे वे समझ नहीं पाये। उन्होंने कुछ हिचकते स्वर से कहा : भाई, यह तो बहुत बुरी बात है, सरकार बड़ा अत्याचार कर रही है।

उनकी बात समाप्त हो गई। उन्होंने देखा दयानाथ इस समय एक भयानक गंभीरता धारण किया था। उसकी ओर देखते हुए वे चुपचाप बैठ गये। मार्कण्डेय ने बात छेड़ी : आशुतोष आतंकवादी है। ब्रह्मदत्त तो खैर कम्युनिस्ट है ही, पर बाकी लोग तो काँग्रेसी थे? उन्हें समझाना चाहिये था। उन्होंने स्वयं हिंसा का पथ क्यों धारण कर लिया?

रामकृष्ण भावुक आदमी थे। इस समय अट्ठारह-उन्नीस दिन से भूख हड़ताल करने वालों पर खाना खा खाकर सिद्धांत लागू करना उन्हें अच्छा मालूम नहीं दिया जैसे यह एक अनीति थी, या फिर ठंडे दिल की वह बर्बरता थी, जो सिद्धांतवाद के पीछे जीवन का सब रस खो चुकी थी, जिसकी ममता नष्ट हो चुकी थी, अर्थात् रागद्वेष हीन होकर पत्थर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बन चुकी थी। उन्होंने कहा: एक मर चुका है। दूसरा गोली खाकर पड़ा है। बाकी घायल और भूखे हैं। इस समय हमें सिद्धांतों की दुहाई न देकर, यह सोचना चाहिये कि वे सब आज़ादी के लिये लड़ने वाले सिपाही हैं।

मार्कण्डेय ने सिर मोड़ा और देखकर कहा : तो क्या हमें अब भावावेश में पड़ जाना चाहिये, यह कहते हुए उसके होंठ टेढ़े हो गये दाँत निकल आये और गाल कुछ काँप उठे जैसे उसने दया की भीख माँगी थी कि मेरी बात सुन लो।

वासुदेव फिर मुस्कराया। दयानाथ की गंभीरता नहीं टूटी। मौलाना कुछ विचलित थे। रामकृष्ण ने फिर कहा : वह तो ठीक है, परन्तु क्या हमें यह याद नहीं रखना है कि इन जुल्मों के विरुद्ध जनता में एक विक्षोभ है, क्या हमें इसके विषय में चुप रहना ठीक है।

मार्कण्डेय ने कहा : मैंने यह तो नहीं कहा। देश के लिये लड़ने वाले लोगों के प्रति उपेक्षा दिखाने को तो मैंने नहीं कहा। पर मेरा मतलब था कि हम अब जनता को यह उपदेश नहीं देंगे कि वह जाकर भीड़ के रूप में जेल पर हमला करे, फाटक तोड़ दे.....

उसके चेहरे पर मुस्कराहट नहीं थी। एक हलचल थी, जिसे वह मुश्किल से भीतर ही भीतर दाब लेने की कोशिश कर रहा था।

रामकृष्ण व्याकुल सा कमरे में घूमने लगा। उसने कहा : मैं एक भयानक लेख लिखना चाहता हूँ। मैं हर आदमी को सुना देना चाहता हूँ कि इस सरकार का सारा ढाँचा अत्याचार की नींव पर खड़ा है। यह अपने स्वार्थों की रक्षा के लिये कितनी बर्बरता करती है और फिर नीचता की सीमा है कि यह उसका न्याय देते हुए नहीं अघाती। क्या हक था उसे कि हमारे भाइयों को इस तरह जेल में भूख हड़ताल करने को मजबूर करती। उसे गर्व है कि उसके हाथ में बन्दूक है।' उसका स्वर तीखा हो गया 'तो वह सुनले कि हिन्दुस्तान के नौजवानों की रगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
में लहू नहीं, आग बहती है, वह कभी जालिम के सामने सिर नहीं झुका सकते।

लाला रामकिशोर का मुंह इस बार छिपकली के मुँह की तरह खुल गया। उन्होंने आशंका से इधर-उधर देखा। रामकृष्ण मुट्ठी बाँधे घूम रहा था। उसके शब्द फूट रहे थे : ब्रह्मदत्त कम्युनिस्ट है। मैं जानता हूँ। पर वह देश का सच्चा सैनिक है। इससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। हमारा दुश्मन एक है। क्या हमें उसको इस तरह मर जाने देना चाहिये।

रामकृष्ण की आँखें घूमीं और मार्कण्डेय के चेहरे पर दृष्टि फिसली, पर दयानाथ की आँखों में अटक गई। मार्कण्डेय ने कहा : तुम कवि हो भाई रामकृष्ण। इस समय तुम उत्तेजित हो रहे हो।

'यदि मैं उत्तेजित हूँ तो भी लज्जित नहीं हूँ।' रामकृष्ण ने अपना सिर ऊँचा करके कहा।

दयानाथ ने मौन तोड़ा। उसने कहा : बंदियों को हमें पूर्ण सहयोग देना चाहिये। ब्रह्मदत्त से हमारा तब तक विरोध था जब तक वह स्वदेशी आंदोलन का विरोधी था, अब जब कि वह साम्राज्यवाद से लड़ रहा है, हमें उसका साथ देना चाहिए। इससे हमारा स्वातंत्र्य संग्राम आगे बढ़ता है।

उसकी बात सुन कर सब चौंक पड़े। और दयानाथ के मुखपर एक गर्व था। उसे इसका ज्ञान था कि जो बात उसने कह दी है, उसकी उससे आशा नहीं थी।

शहर में हलचल मच उठी। हड़तालियों का नाम अब बच्चे-बच्चे की जुबान पर था।

जगह-जगह पर्चे छाप कर बाँटे जा रहे थे। काँग्रेस कमेटी ने प्रस्ताव पास किया। अँगरेजी के अखबारों में खबरें छपीं। कुछ नगर के सम्मानित व्यक्ति जिलाधीश के पास भी गये। सरकार को मजबूर होकर उन्हें जेल में जाकर देखने की इजाजत देनी पड़ी। जो लोग देखने गये उनके पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
अखबारों के सबोंदाता लग गये। अखबार वालों को मौका मिल गया लेख छपे जिसमें 'अंगरेजी राज्य में जेल यातना', 'दमन और उसके शिकार', 'अब तक के भूख हड़तालों', 'दुनिया के साम्राज्य और भूख हड़तालें', 'आयरलैन्ड और इंगलैंड के संग्राम की कहानी', प्रमुख थे। इतना जबर्दस्त तूफान उठ खड़ा हुआ कि पुलिस को शहर में निगरानी बढ़ानी पड़ी और जिलाधीश ने दफा १४४ जारी कर दी कि पाँच से ज्यादा आदमी एक जगह इकट्ठे नहीं हो सकते। इस पर आलाप अखबार ने छापा कि सरकार हमेशा यही करती है। जलियाँवाले बाग के गोलीकाण्ड के बाद मार्शल्ला लागू किया गया था कि नजर पड़ते ही गोली मार दो। हिन्दुस्तानियों को मजबूर किया गया था कि वे रेंग कर जमीन पर चलें, जो उठता था उसे ठोकर मार गोरे फौजी गिरा देते थे और गोली से भून देते थे। नतीजा यह हुआ कि आलाप से दसहजार रुपये जमानत के माँगे गये और दफ्तर में बची प्रतियाँ जब्त कर ली गईं। दूसरे दिन कांग्रेस ने आलाप के लिए चन्दे की अपील निकाली। सत्रह हजार रुपया जनता ने खुले हाथों दिया। बड़े-बड़े सेठों ने भी गुप्तदान दिये। लाला शिवराम कांग्रेस के प्रधान थे। दो हजार उन्होंने भी दिये। उनका फोटो भी छप गया। दयानाथ ने सुना तो व्यंग से मुस्करा दिया। दस हजार जमा करा दिये गये और सात हजार पत्र की उन्नति के लिए गये। रामकृष्ण की देशभक्ति अब पहले से भी ज्यादा बढ़ गई।

परन्तु सरकार अब पैंतरा बदल रही थी। हड़तालियों के अपराधों को खोला जाने लगा और बताया गया कि उन्होंने हिंसा का पथ लिया था। सरकार कभी भी कानून पर आश्रित नियमों का उल्लङ्घन स्वीकार नहीं कर सकती। और फिर ब्रह्मदत्त को चार साल अब्दुलमजीद और राधारमन को दो दो साल की कड़ी कैद बढ़ा दी गई। इन्द्रभान् को तीन महीने बढ़ी। आशुतोष को अंडमन भेज दिया गया। अभी तक वह अराजनैतिक बंदी था, पर अब अगर वह अराजनैतिक बंदी बन कर ही अंडमन भेजा जाता तो उसे विशेष सहूलियतें दी जातीं। अतः सरकार ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे अब राजनैतिक बंदी बना दिया और उससे वे सुविधाएँ भी छीन लीं। इस प्रकार यह संवाद अब समाप्त हो गया। परन्तु मार्कण्डेय की अशांति बंद नहीं हुई। उसे हिंसा की गंध आ गई थी और वह उसे अपनी नाक से दूर कर देना चाहता था। जनमत से दब कर क्या हिंसा का पथ ले लेना ठीक है? उसने दयानाथ से कहा: अभी तक हम आत्मा का बल नहीं बढ़ा सके। तुमने देखा था, कि हम सब बह गये। गाँधी में एक गुण है, वह दूसरों के शोर मचा देने से दबता नहीं। अपनी पर अड़ा रहता है।

दयानाथ ने मुस्कराकर उत्तर दिया: तभी वह नेता भी है। वर्ना हम तुम भी उसी की भाँति होते।

उसकी सरलता ने मार्कण्डेय की बात की गम्भीरता समाप्त कर दी। दयानाथ ने कहा: फौज, पुलिस, डाक, तार, रेल, ये अफसरान, ये दफ्तर हवाई जहाज, समुद्री बेड़े, सब उसके पास हैं जो शासक है। कितने कम हैं यह शासक मुट्ठी भर। कैसे इन सबका हृदय बदला जा सकता है? और मनुष्य इनसे कब तक असहयोग करके जीवित रह सकता है। मार्कण्डेय! हमारी साधना सचमुच बड़ी कठिन है। क्या वाकई अहिंसा से यह सब बदला जा सकता है?

मार्कण्डेय ने कोई उत्तर नहीं दिया। दयानाथ ने फिर कहा: यह सच है कि अंगरेज का दिल नहीं बदल सकता। जिसकी शुरुआत फरेब से हुई, जो शासन धोखे, जालसाजी और मक्कारी पर बड़ा हुआ, फला-फूला, वह अब हृदय परिवर्त्तन कर लेगा, मुझे तो विश्वास नहीं होता। जब तक अंगरेज और हम, दोनों का एक ही बात में लाभ नहीं होगा तब तक हम क्यों बदलने लगे? आतंकवादियों से हम कहते हैं कि व्यक्ति को मत मारो, यह प्रणाली का दोष है। यदि व्यक्ति अहिंसा लेगा, तो क्या प्रणाली भी अहिंसा ले लेगी। कुछ गड़बड़ सा है। ददुआ कभी अहिंसक हो सकते हैं?

'तुम हो सकते हो।' मार्कण्डेय ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पूरी एक पीढ़ी का फर्क हो गया। ऐसे कब तक लड़ना होगा ?'

'तो क्या तुम अहिंसा से जीत सकते हो ?'

दयानाथ चौंका। बोला : अहिंसा सबल का शस्त्र है मार्कण्डेय ! वह हमने इसलिये नहीं अपनाया है कि हम और कुछ कर ही नहीं सकते। मैं गाँधी को ईमानदार आदमी समझता हूँ। वे इतनी बड़ी जालसाजी नहीं कर सकते। तुम उत्तेजित हो गये हो ?'

'नहीं मैं तुम्हारे विश्वास में श्रद्धा ढूँढ़ रहा था। वह है।'

'मैं उसी के सहारे काम करता हूँ। पर जब कभी तर्क करता हूँ तो मुझे सब कुछ उल्टा होता हुआ दीखता है।'

'इसका कारण है हमारी शिक्षा, जो भारतीयता से दूर ले जाती है। हममें वर्ग-द्वेष पैदा करती है। रोटी-रोटो चिल्लाती है, पर संस्कृति और शाश्वत सत्य नहीं देखती।

'ब्रह्मदत्त इसे फरेब कहता है।'

'तुम क्या कहते हो ?' मार्कण्डेय ने पूछा।

दयानाथ ने सिर झुका लिया।

छटा परिच्छेद

१

गाँव के लोगों में इन्द्रभान के आने पर एक नया जोश पैदा हुआ। गोवर्द्धन ने इन्द्रभान को गले लगाया और दोनों में घंटों बातें होतीं। वे कटाई, जुताई, लुनाई, नराव से लेकर जिला काँग्रेस कमेटी से होते हुए शहर, जिला, प्राँत, देश और विदेश सब पर ही बहस कर डालते। गाँव वालों पर इनका प्रभाव पड़ता। बैजनाथ बाजपेयी और अलगू दीक्षित बैठ कर उसके जेल के अनुभव सुनते। परन्तु इन्द्रभान के प्रति रघुवीर की कोई विशेष रुचि जाग्रत नहीं हुई। और धीरे-धीरे इन्द्रभान भी उसी पुरानी जिन्दगी में रम गया। वह एक बौहरे का बेटा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाप के मरने पर उसने सबके कर्ज माफ कर दिये थे और अब वह गाँव में इसी से एक प्रतिष्ठित आदमी मान लिया गया था। दुनिया में मन का त्याग कौन देखता है। जो है सो इसी रुपये की माया है। किसी के पास है तो छोड़ दिया और वह बड़ा साधु बन गया, जिसके पास नहीं है यदि उसने पेट भर लेने का भी प्रयत्न किया तो सब उसे भूखा कहने लगे।

इन्द्रभान ने सबसे पहले गोवर्द्धन से कहा : महात्मा जी शायद विलायत जायेंगे ही।

'क्यों ?' गोवर्धन ने पूछा—'यह तो रोज ही की बात हो गई।'

'जाएँगे तो,' अलगू दीक्षित ने कहा—कोई छिपा थोड़े ही रहेगा ?

उनकी इस बात से सब हँस दिये। चर्चा चल पड़ी। इन्द्रभान सुनाने लगा कि लगभग दस साल एक पासी ने एक आन्दोलन चलाया था कि गाँव के सब किसानों को अपना संगठन कर लेना चाहिये। इसमें कोई जात पाँत नहीं होनी चाहिये। यह किसान आंदोलन कुछ दिनों तक चला भी पर बाद में ऊँची जात के किसान और छोटे छोटे जमींदार बड़े बड़े जमींदारों के कहने में आ गये। उनसे कहा गया कि पासी और क्या करेगा ? वह असल में किसान आंदोलन का बहाना करके जातपाँत को तोड़ रहा है। उसकी चाल बड़ी गहरी है। किसान तो तुम जानो भोला होता ही है। भोला न कहकर स्वार्थी कहें तो ठीक होगा। वह समझता है कि वह अक्लमन्दी से अपना स्वार्थ बचा रहा है, पर असल में बनता है वह बेवकूफ ही। देखो रईस लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर बने कैसे सरकारी पिट्ठू बने बैठे हैं, वे गर्मियों में बिजली के पंखों में बैठते हैं तुम धूप में हल चलाते हो।

गोवर्धन के माथे में बल पड़ गये थे। अलगू महाराज बोले सोने क्या बात रही इन्दरभान। धरम की बात तो धरम की ही रहेगी। पासी ने अगर अपने को आज यों बराबर कहा, तो कल वैसे भी कहेगा। दर्जा ब दर्जा ही हक छिनते हैं। आज ब्राह्मन को वैसे ही पहले जैसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
कोई नहीं बदता और अगर अब हम और पासा एक हो गये तो बस काम हो गया।

अलगू दीक्षित की बात को सुनकर पं० बैजनाथ बाजपेयी ने सिर उठाया जैसे अब कहो।

सैकड़ों बार जातपाँत विरोधी खंडनमंडन किये जा चुके थे। उनका असर न पड़ता हो, यह बात नहीं, पर बहुत कम देर रह कर वह फिर लुप्त हो जाता था। स्वयं अलगू दीक्षित भी अपने को ऊँचा समझने की प्रवृत्ति को खोंखला समझते थे, पर क्या करते। सारा समाज ही ऐसा बना हुआ था। बड़े बड़े सुधारक भी जातपाँत तोड़क होकर भी बेटा बेटी के ब्याह के बखत धरमपंछी के लिये ही जाल बिछाते थे। सो वे बेचारे संस्कारों और आदतों से मजबूर थे। यह उन्हें अच्छा लगता था कि सब उन्हें पहले हाथ जोड़े, पालागन करें।

गोबर्धन चिंतित दिखाई दिया। थोड़ा पढ़ गया था इसलिये उनकी अशिक्षित बात सुनकर उसे झुंझलाहट हुई। पर इन्द्रभान ने समझ से काम लिया। कहा सो तो ठीक है, पर जातपाँत का बखेड़ा तय कैसे हो?

'जो जैसे रहता चला आया है,' अलगू दीक्षित ने अक्ल से काम लिया, सो वैसा ही रहता चले।

'कब तक?' उसका स्वर उठा।

अलगू तैयार थे। जोर से बोले : जब तक धरम है, तब तक।

'तो यह कब तक है?'

'सदा से है और रहेगा'।

'तो फिर दुनिया में कुछ बदलने को है, या सब यों ही रहेगा!' अलगू चकराये।

'जमींदार की धांधली गलती रहेगी। अँगरेजी राज रहेगा। देश गुलाम भी रहेगा, और तुम गरीब भी रहोगे। रहोगे?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलगू पराजित हुए। झुक कर कहा : जो भाग्य में होगा, सो तो हो के रहेगा।

'अगर भाग्य ही सब कुछ होता तो महात्मा गाँधी इतनी बड़ी लड़ाई क्यों छेड़ते ?'

'कुछ पुरुषारथ भी तो है ?' पं० बैजनाथ बाजपेयी ने सिर हिला कर कहा, 'पड़ोस के लोग लगान बन्दी करेंगे, तो हम बैठे नहीं रहेंगे।'

'हूँ।' गोवर्धन ने दृढ़ता से कहा : जमींदार अँगरेजों से मिलकर किसान को चूसते रहें सो अब नहीं होगा। लगान बन्द कर दो। सरकार क्या करेगी ? जब खंभा ही टूटेगा तो छत गिर कर ही रहेगी।

उतरती साँझ के अँधेरे पर वह स्वर कुछ कठोर हो गया और इंद्रभान ने उठते हुए कहा : राय ले लो। काँग्रेस के दफ्तर में इस पर लोगों को बुला कर पूछ लो।

अलगू दीक्षित ने उठते हुए कहा : क्या यह हो सकता है ? पार साल तो परमेसुर भूखा ही मर गया। राजा साहब के सामने एक भी नहीं चली।

इस बीच एक दुर्घटना हो गई। रघुबीर के खेत तो राजा रामनाथ ने बेदखल करा ही लिये थे। पर अहिंसा के नाते, देश-सेवा के त्याग के फल स्वरूप वे उसकी बात नहीं उठाते थे। और इधर चित्तप्रसाद से थोड़ी बहुत सहायता मिल पाती क्योंकि वे उसकी लड़की को हिंदी पढ़ा देते। चित्तप्रसाद ने अपनी लड़की की शादी करके विचार किया कि दूसरी को पढ़ा लिखा कर तैयार करेंगे। तो वह दस बारह बरस की बच्ची रघुबीर के पांडित्य के वश में आ गई। उससे जो रुपये मिलते उसी से दो की बजाय एक वक्त खाकर गुजर चला रहे थे। परंतु नीलकण्ठ अवस्थी से भला कब चुप रहा जाता। एक दिन बहस हो रही थी। नीलकण्ठ अवस्थी जब नहले पर दहला नहीं रख सके, झट से तुरप मार गये। बोले : तुम तो कहोगे ही ? महाभारत में भी लिखा है कि आदमी जैसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
अन्न खाता है, उसकी वैसी ही बुद्धि भी हो जाती है। नीच के संग से यही होता है।

बात रघुवीर के चुभ गई। और चुभ कर रह गई। घर की गरीबी और बच्चों की भूखी शक्लें देख-देख कर उन्हें अपने ऊपर क्रोध आने लगा। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने खेत लेकर रहेंगे क्योंकि उन खेतों को नीलकण्ठ अवस्थी ने पट्टे पर ले लिया था। रघुवीर बैठे-बैठे सोचते रहे। नीलकण्ठ को इतना अभिमान हो गया? और रघुवीर से उन्होंने यह साफ-साफ कह दिया!

दो दिन पढ़ाने नहीं गये तो चित्तप्रसाद तीसरे दिन स्वयं आया। पूछा: क्यों क्या हुआ; तबीयत तो ठीक है?

'ठीक है।' रघुवीर ने उपेक्षा से उत्तर दिया। वे उसके यहाँ जाना नहीं चाहते थे। पर यदि नहीं जायें तो पहले, खायें क्या? दूसरे इसका मतलब है कि वे स्वयं उसे अभी तक नीच समझते रहे हैं। क्या यह गांधी जी के उपदेशों के विरुद्ध नहीं है?

रघुवीर कुछ नहीं समझा। वह सहज छोड़ने वाला नहीं था। परन्तु वह भी कुछ नहीं कर सका। रघुवीर ने वह दिन, साँझ, रात, और ऐसे ही दूसरा दिन भी बैठे-बैठे सोचते हुये बिता दिया। उसके बाद वह उठे और उन्होंने जाकर नीलकण्ठ अवस्थी की चौपाल पर बैठते हुये कहा: अवस्थी जी!

नीलकंठ ने कहा: कहिये। क्या हुआ?

'हुआ यह कि हमारे हमें खेत मिल जाने चाहिये। आप भी बाल-बच्चे वाले हैं और हम भी। मामला आपस में निबट जाय तो अच्छा।'

नीलकण्ठ हँसे। कहा: किन की बात करते हो?

'बेदखल हुए खेतों की।'

'तो वे तो जो होना था सो हो गये। देश-सेवा से फुर्सत मिल गई; बस? चमार से पटी नहीं!'

'पंडित जी!' रघुवीर ने कड़क कर कहा: हम बहस नहीं चाहते।

'तो सुन।' अवस्थी जी ने कहा: तुम नहीं चाहते तो हम भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
चाहते। नहीं चाहत और तुमसे पहले नहीं चाहते। समझे ? मालिक ने पट्टा किया है। वे चाहे वापिस ले लें। चाहे तुम्हें दे दें, चाहे किसी पासी को दे दें।

सदैव पासी की हीनता के लिये हमदर्दी रखने वाले रघुवीर इस समय एक दम आपे से बाहर हो गये। गरज कर कहा : तो तुम सुन लो और तुम्हारे मालिक सुन लें। खेत रघुवीर के हैं। मालिक तुम्हारे को लगान चाहिये। मैं सालाना लगान देता रहा। उस वखत मैं जेल में था सो देरी हो गई। उन्हें कोई अख्तियार नहीं था कि बेदखली करा लेते।

'नहीं था' अवस्थी ने कहा : तो समर्थ के सामने बोलते क्यों डरते हो ? उनसे जाकर नहीं कह सकते जो यहाँ गरज रहे हो ?'

तर्क ठीक था। रघुवीर ने उसे आग्नेय नेत्रों से देखा और वह अपनी दुबेल काया को लेकर खड़ा हो गया। उसने कहा : तो मैं कहता हूँ अवस्थीजी ! मेरी भी प्रतिज्ञा सुन लो। बेदखली रद्द करनी होगी। जमींदार और उसके पिट्ठू मनमानी नहीं कर सकते। रघुवीर की बात का मोल समझ लेना, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।

'बिल्ली के भाग से छींका नहीं फूटता।' अवस्थी जी ने मूँछों को फड़काते हुए कहा। उनके नथुने फूल गये। यह उनके मुँह पर फटकार लग रही थी। आस-पास के लोग इकट्ठे हो गये थे। यद्यपि अधिकांश रघुवीर को मानते थे, पर कुछ भूदेव सिंह और जग्गी अहीर जैसे लोग थे जिनके बल पर नीलकण्ठ अवस्थी अपने को मर्द समझते थे। उनकी जग्गी इत्यादि से स्वयं कोई मित्रता नहीं थी, पर क्योंकि ये लोग रघुवीर से खार खाये बैठे थे, नीलकण्ठ को आशा थी कि लोग उसी की तरफ बोलेंगे जो रघुवीर के विरुद्ध होगा। सब चुपचाप देख रहे थे। तभी मन्नू दुबे ने आवाज दी : क्यों अवस्थी महाराज ! क्या झगड़ा हो गया ?

अवस्थी जी मन ही मन शंकित हुये। मन्नू दुबे का स्वभाव वे जानते थे। कहा : सून न पोनी कोलिया से लठा-लठी। कहते हैं, मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
इनके खेत दाब लिये हैं ... मालिक से कहें ... मैं न होता और किसी को मिलते.....

मन्नू दुबे ने पुराना बैर सांधा। कहा : ठीक ही तो है। करने वाले तो तिवारी जी हैं। अवस्थी जी का क्या ? तिवारी जी कहें बैठ जाओ तो बैठ जाएँ, खड़े हो जाओ तो खड़े रहें। तिवारी जी राजा हैं। उनके दस खुशामदी हैं। अवस्थी जी ! बेचारे इन्हें क्यों दोष देते हो रघुवीर ? बहती गंगा में कौन हाथ नहीं धोता ?

नीलकण्ठ अवस्थी जी का चेहरा स्याह पड़ गया। उन्हें लगा उनके मुँह पर तमाचा पड़ गया। और मन्नू दुबे ने कहा : क्यों अवस्थी महाराज, ठीक है न ? यही बात है न ?

सब लोग हँस पड़े। मन्नू दुबे ने फिर कहा : जाओ भइया, जाओ। उस द्वार भी हो आओ। कहीं ऐसा न हो कि वहाँ भी—आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास ... सब फिर हँस पड़े।

रघुवीर ने क्रोध से फूत्कार किया : तो मैं वहीं जाता हूँ।

मन्नू दुबे ने टोका : तिवारी जी तो शहर गये हैं।

'जाने दो। मनेजर तो है ?'

'पर वह क्या करेगा ?'

'क्योंकि राजा का नौकर ही राजा की गैरहाजिरी में राजा होता है।'

'और जो उसने नहीं माना ?'

'तो शिवजी का रास्ता रोक कर गणेश ने क्या पाया था जानते हो ?'

रघुवीर की इस चुनौती का प्रभाव पड़ा। गणेश जैसे पुत्र का भी शिव ने सिर काट दिया था। वे समझ नहीं सके। रघुवीर की अहिंसात्मकता प्रसिद्ध थी। इस समय क्रोध ने उसे पागल कर दिया था। रघुवीर आगे-आगे चला। पीछे पीछे मन्नू दुबे और परमानंद सुकुल चले जाते थे। कोठी पास आने पर रघुवीर अहाते के द्वार पर खड़ा होकर चिल्लाया : मैनेजर सा'ब ! मैनेजर सा'ब !

दोनों पीछे खड़े देख रहे थे। उसकी इस दबंग पुकार से उन्हें आश्चर्य हुआ। कुएँ पर पानी खींचती हुई कुछ औरतों ने विस्मय से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा। कुछ कानाफूँसी भी की। परंतु रघुबीर की आवाज से कुछ नौकर घबरा गये। सरवराकार जयनारायण ने आकर कहा : क्या बात है ?

रघुबीर ने आँखें उठा कर कहा : मैनेजर साहब से काम है।

'क्या काम है ?' छोटा अधिकारी बोला और बाबा तुलसीदास की क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई सा दिखाई दिया।

'काम है और दस बार है। तुम बीच में बोलने वाले कौन हो ? हम खुद मुख्तार से बात करना चाहते हैं। उनसे नहीं जो बात बोल कर पलट जायँ क्योंकि वे इसी लिये तनख्वाह पाते हैं।'

सरवराकार सकते में पड़ गया। यह क्या बक रहा है। उसने ऐसे देखा जैसे पागल तो नहीं हो गया ? होगा कांग्रेसी अपने घर का। घर में सुबह खाकर शाम का इंतज़ाम नहीं, यहाँ आकर लाट साहब का बच्चा बन रहा है। उसे हठात् अपनी मर्यादा का स्मरण हुआ। चेत कर बोला : ऐसे हर कोई ऐरा-गैरा मैनेजर साहब से नहीं मिल सकता। काम बताओ काम।

रघुबीर शायद बता देते। पर मन्नू दूबे ने दूर से हाँक लगाई : तुम्हें बता दें तो फिर तिवारीजी ने मनेजर साहब को रखा ही क्यों है ? अब रघुबीर दादा इतनी दूर से आये तो क्या उन्हें जाकर बता देने में ही तुम्हारी मेंहदी घिस जायेगी।

सरवराकार ने खूनी आँखों से मन्नू दुबे को देखा और पुराने बैर की ओर इशारा किया : वे तो तब आते हैं जब सरकश लोगों के हथकड़ी डालनी होती है।

मन्नू दूबे के आग लग गई। उन्हें उस दिन की याद आ गई जब वे गिरफ़्तार करके छोड़ दिये गये थे। ताना कसते हुए जवाब दिया : गिरफ़्तार तो सरकश लोग तब होते हैं जब मनीजर दुनिया नहीं रहते।

यह एक सत्य था। पहले मैनेजर की किसी ने हत्या कर दी थी और गाँव मे बड़ा बावेला मच उठा था। रघुबीर इस बहस से ऊब चुका था। हाथ उठा कर बोला : अगर वे ऐसे गोरे लाट बन गये हैं तो रघुबीर के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो मन आयेगा वह वहीं करेगा। समझ लेना। फिर मत कहना आकर बताया नहीं।

और रघुवीर लौट पड़ा। उसने मन्नू दुबे और परमानंद से कहा : चले आओ। यहाँ आदमी नहीं रहते। दोनों उसके पीछे चल पड़े। सरवाकार क्षण भर तो देखता रहा और उसने मुँह बिचकाया, पर हठात् उसे याद आया कि यह रघुवीर है। इसका क्या ? ऐसे आदमियों से तो भगवान डरते हैं।

वह तुरंत मैनेजर रामगोविंद के पास गया। और सारी घटना कह सुनाई। रामगोविंद ने चिंतित होकर कहा : मगर वह साला बड़ा अड़ियल है। जेल से तो डरता नहीं। और गाँव वाले तो हूँ सुनकर दबक जाते हैं, पर उसने सारे इलाके में बगावत फैला दी है। अब फसल का वक्त आ रहा है और इधर पट्टे बदले जायेंगे। वह कहीं गाँव में कुछ गड़बड़ न करे।

जयनारायण ने देखा और बात बदल कर कहा : आप तो बेकार डरते हैं। वह क्या ऐसा तीसमारखाँ हो गया कि राजासाहब से भी बढ़ गया। मैंने ही पूछा तो क्या उसकी तौहीनी हो गई। उसकी हैसियत ही क्या है ? क्या ऐसे हर कोई आप से मिल सकता है ?

रामगोविंद उसके दुवार से घायल हो गये। ज़रा से इशारे में उसने मैनेजर को कितना ऊँचा उठा दिया। उसने हुक्के की नली को मुँह से लगा कर कहा : नहीं ? तो क्या हो गया। अब की बार आये तो उसे बुला लेना। ये ओछे लोग, बस इसी के भूखे होते हैं कि औहदेदार लोग उनसे बात कर लिया करें।

रामगोविंद ने चोट करारी की। अपने को ऊँचा उठाया और सरवराकार को उसकी अपनी हैसियत की याद दिलाई। सरवराकार मन ही मन कुढ़ा, पर क्या करता। उसने कहा : और साथ में जो वे मन्नू दुबे और परमानंद सुकुल थे, मैं कहता हूँ, वे न होते तो इतनी नौबत ही न आती। पुराने दुश्मन हैं, पुराने दुश्मन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामगोविंद को पुरानी बातें मालूम न थीं। अब जयनारायण सुनाने लगा। उसे बस एक बात मालूम हुई थी। रामभरोसे नाई की बीवी से पहले मैनेजर का ताल्लुक था। रामगोविंद ने अपने पूर्ववर्ती के जूते में पाँव डाल कर अपने को उसी रास्ते पर चलने के योग्य बना लिया था।

और अंत में उसने कहा : आखिर साला करेगा भी क्या ? था तो आखिर हमारा ही आदमी ? और वह व्यंग्य से मुस्कराया।

परन्तु रुई ने आग पकड़ ली। सुबह का मनोहर समय था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। नीलकण्ठ अवस्थी बैठे भागवत पढ़ रहे थे। वे तन्मय हो रहे थे। रात से ही प्रसन्न थे। ऐसी शक्ल देखकर गाँव के कुछ दूरदर्शी लोग अंदाज़ लगाया करते थे कि कल सक्के की बीवी के दर्शन कर चुके हैं। इस समय उनके भव्य मस्तक पर चंदन सोने की तरह दीख रहा था। हठात् उनकी शांति भंग हो गई। बंसी उनका पुराना नौकर था। वह एकदम घबराया हुआ आया और उसने कहा : पंडितजी ! गज़ब हो गया।

'हो गया' पंडित ने चौंक कर पूछा।

कुछ गज़ब तो वह था यह तो वे शक्ल से पहँचान गये थे, पर शायद हुआ न हो यही एक जिज्ञासा थी, सो बंसी ने कहा हो गया पंडितजी। और अब कहीं मुँह दिखाने की जगह नहीं रही।

बंसी सदा का बक्की था सो अवस्थीजी ने आँखें भागवत पर फिर लगाते हुए कहा : अच्छा, अच्छा।

बंसी कुंठित हुआ कि अवस्थीजी उसे बिल्कुल 'भेड़िया आया, भेड़िया आया' की झूठी पुकार समझते हैं। उसने कहा : रघुवीर ने खेत पर कब्जा कर लिया।

भीतर से अवस्थिन थाली में पूजा का सामान ला रही थी। पति को एकदम हठात् घबरा कर उठते हुए देखा तो समझा शायद पट्टे के नीचे साँप हैं। उन्होंने वहीं से भाग जाने की चिंता की, झनझना कर थाली छूट पड़ी, पूजा की थाली गिरी। असगुन हो गया। पंडित दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
हाथों से सिर पकड़ कर बैठ गए। और धीरे से कहा : तो तुझे आखिर क्या मंजूर है ?

बंसी ने उत्तर नहीं दिया। वह समझ गया, पंडितजी ने उससे नहीं, यह बात भगवान से कही है। पर वह कहता गया : मुझसे कहा कि चला जा वर्ना अच्छा न होगा।

अवस्थिन अब स्वस्थ हो गईं। बोलीं :—किसने कहा ?

'सच कहता हूँ बहूजी, मुझसे कहा।' बंसी ने उत्तर दिया।

'मैं पूछती हूँ किसने कहा ?' पंडितानी ने फिर पूछा।

'रघुबीर ने, रघुबीर ने, रघुबीर ने !' बंसी ने जोर दे दे कर कहा जैसे सुन लो। उस शेर का नाम भी सुन लो।

'फिर तू ने क्या किया ?'

'मैं भाग आया।'

'वाह कलमुँहे। इसीलिए तू इतना इतराता था। मालिक के लिये यही करना था तुझे ?'

'तो क्या करता मैं ?'

'तेरी हिम्मत से ही मालिक की हिम्मत देखी जाती है।' पंडितानी ने कहा।

'अब वह वफ़ादार आदमी दुनियाँ में नहीं होते,' नीलकण्ठ अवस्थी ने कहा—'अब वह दिन रहे ही नहीं। अब तो नौकर सिर्फ खाने के लिये होते हैं।'

बंसी ने कहा : वे कई थे।

'कई थे ?' अवस्थिन ने कहा और पति से मुड़ कर कहा : तो फिर अब तुम क्यों बैठे हो, तुम्हीं क्यों नहीं जाते ?

अवस्थीजी चुप रहे। जैसे किसी गंभीर चिंतन में मग्न थे। अवस्थिन मन ही मन कुढ़ीं। बोलीं : रघुबीर क्या कोई हौवा है ? वह है कौन जो हमारे माल पर हाथ डाल देगा। साहब अफसरों से जाकर मिलो। यहाँ भागवत पढ़ने से क्या घर का खर्च चल जायेगा ? खेत ही को चले जाओ। कई हैं तो क्या ? तुमसे कोई क्या कह सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परंतु अवस्थीजी की वह उम्र निकल चुकी थी जब पुरुष स्त्री की बतकही में आ जाता है। वे बोले : अरी ! वह जमाना अब नहीं रहा। हाँ रे बंसी, तो उसने कहा क्या ?

बंसी को ढाँढस हुआ। बोला : कहा—अपने से चला जा नहीं तो हाँ। बस मैं चल दिया।

'बस मैं चल दिया।' अवस्थिन ने मुँह चिढ़ा कर कहा। 'इतनी सी बात और भाग आया। यह नहीं सवाल जवाब किया कि तू है कौन? नीम की छाल सा तो वह रघुवीर, और तू उससे डर गया।'

'तुम क्या जानो,' बंसी ने झुँझला कर कहा : सारे लोग तो उसकी तरफ़ हो गये।

'और तू जिन्हें कटाई को ले गया था ?'

'वे भी।'

'तो वह फ़सल पर भी कब्जा कर लेगा ? ऐसा वह नहीं नवाब हो गया।'

बंसी ने इसका उत्तर न देकर अवस्थीजी की ओर देखा जो उठ रहे थे। उन्होंने कहा : तो फिर चल।

'लट्ठ लेले,' पंडितानी ने कहा। 'बदमाशों की बात है।'

'नहीं रहने दे।' नीलकण्ठ ने कहा। 'वैसे ही आजा। एक बार बात तो करके देख लूँ, कहता क्या है ? फिर देखी जायेगी।' उन्होंने लट्ठ बाज़ी में फँसना ठीक नहीं समझा। इस काम के लिये उनके दिमाग में भूदेवसिंह और जग्गी अहीर थे। सोचा, मिलेंगे तो राह में संग ले लेंगे।

पंडितानी सशंक उन्हें जाते हुए देखती रहीं और उनके चले जाने पर उन्होंने पड़ोस की सक्किन को बुलाकर सब किस्सा कह सुनाया।

—२—

यह सच था कि रघुवीर ने कब्जा कर लिया था। जिन हलवाहों को नीलकंठ अवस्थी ने अपना समझ कर भेजा था वे उनके अपने नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
निकले। यह हलवाहे अत्यंत दरिद्र थे। उनके पास तन ढकने को भी कपड़े नहीं थे। इन्हें शिकमी काश्तकारी का कभी-कभी अधिकार दे दिया जाता था और उसके बदले उनके घर का एक न एक आदमी सदा ही बेगार में पकड़ लिया जाता था। बंसी भी ऐसे ही एक खान्दान का था। गाँव के खेतों पर ऐसे लाखों आदमी गुज़र करते थे जो आधे दास होते थे। वे ज़मीन देने वालों के गुलाम होते थे। यह नहीं कि अपनी इच्छा के वे स्वामी होते। किसान और काश्तकार के बीच की यह अवस्था वास्तव में उस समय बहुत खराब थी। जब चाहे इनसे ज़मीन छीन ली जाती थी। उनको विरोध करने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी। नीलकंठ की जगह रघुबीर आया। उसे वे लोग चाहते भी थे। कहा : हम तो सदा जबर के पीछे चलते हैं।

'हाँ, हाँ, सब ज़िम्मेदारी मुझ पर छोड़ दो,' रघुबीर ने कहा। 'कह देना मैंने दबा लिया।'

बस फिर क्या था। रघुबीर कटवाने लगे। स्वयं भी जुट गये। कभी वे लोग जमींदार के शासन और अत्याचार, पुलिस और कचहरियों की घूसखोरी, किसकी लुगाई का किससे नाजायज ताल्लुक है, कौन-कौन छिनाल हुई, एक नहीं, अनेक, ऐसे ही, त्यौहार, ब्याह, रिवाज और व्यवहार पर बात करते, कभी नई फ़सल के विषय में।

इसी समय नीलकंठ अवस्थी ने आकर पुकारा : रघुबीर! यह क्या कर रहे हो?

'मालिक सरकारी पिट्ठू हो गये। मैं जेल गया तो मेरी जमीन दाब कर तुम्हें दे दी। अब बालबच्चों को कहाँ कूएँ में फेंक दूँ?' रघुबीर ने सिर उठा कर कहा।

काम रुका नहीं। केवल रघुबीर सवाल जवाब करता रहा।

नीलकंठ ने कहा : जब जेल गये थे तब नहीं सोचा था कि बाल-बच्चों का क्या होगा?

'तब देश का काम था। महातमा ने हुकम दिया था।'

'तब देश से ही माँगो। महातमा क्यों नहीं दे देता?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ठीक से बोलो पंडित। इतनी बड़ी आतमा के लिये तुम्हारे छोटे मुँह इतना बड़ा बोल नहीं सुहाता। सारा जग उनके सीस नवाता है।'

नीलकंठ चित्त आये। कच्ची खा गये। गलती हो गई। सँभल कर कहा : उनको बुरा नहीं कहता, पर पाँव पसारने के पहले तुमने अपनी सौड़ नहीं देखी ?

'इतना नहीं समझते थे कि पड़ोसी ही हमारे घर में सेंध लगा देगा।'

पंडित चेते। कहा : बोलने को तो छटाँक भर की है, हिला देने में बहिन को भात नहीं देना पड़ जाता, ब्राह्मण का किसी ने आज तक न पचाया है, न पचा सकेगा। चमार की बात और है।

रघुबीर का घाव फिर हरा हो गया। उसने तीखे स्वर में कहा : तो ईमान से खाता उस ब्राह्मण से अच्छा है जो दूसरों की छीन कर मुटा जाता है।

पंडित विक्षुब्ध हुए। कहा : तो यह फ़सल भी तुम्हारी हो गई ?

'मैंने तो जमीन को देखा। फ़सल का आधा तुम्हारा। तुमने जुताई कराई, मैंने कहा जाओ पंडित का जी दुखेगा। कुछ तो उनको मिलना ही चाहिये। वैसे तो नहीं मिलना चाहिये।' रघुबीर ने हँस कर कहा : पर मैं तो आप ही तुम्हारा शिकमी हो गया।

नीलकंठ का क्रोध बढ़ता जा रहा था। पर वे पाँचों आदमी थे। चारों ओर देखा। कोई भी उनका सहायक दिखाई नहीं दिया। उन्होंने मन ही मन कहा, पानी गड्ढे में ही भरता है। कमीन तो कमीन की ही साखी देगा। उन्हें अब सहायकों की आवश्यकता पड़ी। जैसे-जैसे वे रघुबीर की स्वच्छंदता को देखते उनका क्रोध बढ़ता जाता। उन्होंने कहा : तो फिर क्या रही ?

'फैसला तो हो गया पंडित।'

'क्या हो गया ?' पंडित ने खिसिया कर पूछा।

रघुबीर ने कहा : गरीब ने लौट कर अपने माल को सँभाल लिया जिसे तुमने धरोहर समझ कर इतने दिन अपने पास रख लिया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'लेकिन अभी मालिक भी तो हैं। वह सुनेंगे तो क्या कहेंगे यह नहीं सोचा ?'

'इसकी जवाबदेही तुम करोगे, रघुवीर नहीं।'

'और जो तुम्हें करनी पड़ी तो ?'

'तो रघुवीर जेल भी जाना जानता है, जान भी देना जानता है, पर झुक कर चलना नहीं जानता। समझे ?'

नीलकण्ठ ने आश्चर्य्य से देखा। इच्छा हुई बंसी से कहें कि निकाल दे साले को मारकर। पर वे जानते थे रघुवीर को निकाल देना इतना सहज नहीं जितना दीखता है। हो सिर्फ हड्डी का ही, पर वह हड्डियाँ हैं जो टूटते में भी चरमरायेंगी नहीं, उल्टे कड़कड़ा कर टूटेंगी। और रघुवीर की बात बिलकुल साफ़ थी। पंडित नीलकण्ठ की समझ में नहीं आया कि आखिर करें तो क्या करें। एकाएक कहा : तो सोच लो रघुवीर ! आज का समय देता हूँ। अपना भला सोच लो। मैं तो तुमसे कोई दुश्मनी रखता नहीं। समझ लेना। मैं तो जाता हूँ।

पंडित ने अपनी कम से कम इस समय तो रख ली थी, परंतु रघुवीर को यह कब मान्य था। उसने पलट कर कहा : इसी में भला है पंडित ! गरीब की हाय बड़ी बुरी होती है।

नीलकण्ठ अवस्थी कुछ देर क्रुद्ध से खड़े रहे। परंतु फिर भी उन्होंने कोई चुनौती नहीं दी। वे लौट चले और बंसी ने मुड़ कर देखा और पंडित से कहा : वे तो हँस रहे हैं।

'हँसने दे' पंडित ने फुफकार कर कहा और पीछे नहीं देखा। इस समय उनका अपमान हुआ था। ये किसान ! यह नंगे, भूखे किसान ! जो खड़ी फ़सलों के बैहरे और महाजन से नहीं बचा पाते। तीन तीन पीढ़ी तक उसके कर्ज़ के नीचे बिलबिलाया करते हैं। अनथक बीमारियों की बाढ़ में बह जाते हैं, डूब जाते हैं और जब पानी उतर जाता है तब खेत के ढूँढ़ की तरह पड़े-पड़े गला करते हैं, जो इतने बेवकूफ़ हैं कि कोई भी दो चार बातें लगा कर इनके सिर फुड़वा सकता है, इनमें लाठी चलवा सकता है, जो दूर से सिपाही को देख कर थर-थर काँपते हैं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुकद्दमों में पिस जाते हैं, जाहिल, जो चुनावों में इतनी आसानी से बहक जाते हैं, आज इनकी इतनी मजाल कि सरकार के वफ़ादार नीलकण्ठ अवस्थी, एक मौआज्जिज आदमी को देखकर हँसते हैं। क्या हालत यहाँ तक बिगड़ चुकी है ? पंडित की समझ में नहीं आ रहा था कि वे करें तो आखिर में क्या करें ? अगर नहीं जाते तो कोई बात नहीं थी। पर अब तो बात फैल गई है। अगर वे चुप रह जाते हैं तो गाँवों वाले और सिर उठायेंगे इनका क्या है ? ये तो लफंगे हैं। इन्हें किसी के सम्मान से झुकने की जरूरत ? इन पर तो जब तक जूता नहीं पड़ेगा तब तक अकल थोड़े ही आयेगी ? तभी गोसाईं जी ने कहा है कि भय बिन प्रीति न होई देवा। पंडित नीलकण्ठ को फिर याद आया बाबा तुलसीदास लिख गये हैं कि ढोल गँवार सूद्र पशु नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी उन्होंने झुँझलाये स्वर से कहा : तो रुक-रुक कर क्यों चलता है ?

बंसी सकपका गया। उसने आश्चर्य से मालिक की ओर देखा। एक बार जब नीलकण्ठ अवस्थी पड़ोस की सिक्कन के घर में घुसे हुए थे तब कुछ बदमाशों को मालूम हो गया था। उन्होंने बाहर चुपचाप कुंडी चढ़ा दी थी। परंतु बंसी जानता था कि पंडित बिना तनिक भी घबराये पीछे की खपरैल पर चढ़ कर निकल गये थे और यह काम तब उनकी उम्र के लिए काफ़ी कठिन था। इतना धीरज रखने वाला आदमी भी इस समय इतना विचलित हो गया था यह देख कर बंसी चुप हो रहा और उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

नीलकण्ठ अवस्थी को रामनाथ की याद आ रही थी। इस समय उनके अतिरिक्त और कौन था ? उनकी मुसाहिबी की और गाँव पर टेढ़ी नज़र से मुस्कराते रहे, क्या इसी अन्त के लिये ? उनके पाँव कोठी की ओर उठने लगे। रामगोविन्द उस समय एक पेड़ के नीचे चारपाई डाल कर बैठा था। उसके सामने कुछ मूढ़े पड़े थे। पंडित को देख कर उठ खड़ा हुआ। सरबराकार जयनारायण आदि भी उठे। पंडित आशीर्वाद देकर बैठ गये।

धीरे-धीरे उन्होंने सारी कथा सुना दी। जयनारायण ने सुन कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
अपनी कठोर और अलंघ्य आँखों को मूँद कर कहा : हम तो पहले ही जानते थे।

और उसने ऐसी अकड़ से देखा जैसे उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं था। वह शक्ल से उन आदमियों में था जो करुणा नहीं, कठोरता के प्रतीक थे, और उनकी टेढ़ी गर्दन सदैव एक घृणा उपजाती रहती थी। ऐसे घमंड में रहता था जैसे उसके बड़े मठा दुधारे थे। और फिर वह हँसा। ऐसे हँसा जैसे पुराने कैदी को ठोकर मार कर खुर्राट जेलर हँसता है। उस पुराने कैदी को जो एक बार के किये अपराध को धोने के लिये बार-बार अपराध करता है।

ज़िलेदार बिन्देश्वरी सिंह ने चौंक कर देखा और वह समझा नहीं। वह हँसी क्या थी जैसे खल्लड़ में मिर्च कुट रही थी, जिसकी आवाज़ तो थी ही, साथ ही साथ एक धाँस भी उड़ रही थी।

मैनेजर रामगोविन्द खाट पर से खड़ा हो गया। वह दृढ़ था। उसने कहा : तो आप लौट क्यों आये ?

अवस्थीजी चकित थे। उन्होंने कहा : मैंने बताया न कि मौका ही ऐसा था।

रामगोविन्द ने मौके को भद्दी गाली दी और जिलेदार और सरबराकार से कहा : आप लोग पंडितजी के साथ जाइये और सब ठीक-ठीक कर दीजिये।

जयनारायण उठ खड़ा हुआ। पंडितजी को भी लाचार होकर उठना पड़ा। उन्होंने एक बार कातर दृष्टि से आकाश की ओर देखा और उनके पीछे-पीछे चल पड़े। उनके पास और कोई चारा ही नहीं था' बेचारे धीरे-धीरे चल रहे थे। जयनारायण ने फब्ती कसी : पंडितजी ! हारे हुये से मत चलो। जमीन और जन के लिए तो आदमी के पैरों में पंख लग जाते हैं।

पर पंडित को भान था कि जहाँ वे जा रहे हैं वहाँ सीधी उँगली से घी नहीं निकलेगा। बड़ी टेढ़ी खीर से पाला पड़ा है। सारे गाँव में लगानबन्दी का आन्दोलन जोर पकड़ गया है। अब वह धारा पंडित के ही विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं, सरकार तक से टकराने को तैयार हो गई है। कुछ भी हो। निश्चय यह किया गया है कि लगान मत दो। गांधी इर्विन समझौते से जो चलते-चलते उमड़ती धारा रुक गई थी, वह लोगों के हृदय को कचोट उठी थी। इस प्रकार शतशः खंडित हो कर वह निकली।

रास्ते में गाँव के लड़कों ने जो इन्हें जाते देखा तो दौड़ कर खबर दे दी। खेत पर बीसियों आदमी इकट्ठे हो गये। उनको इस प्रकार आते देख रघुवीर ने पूछा, 'क्यों ? क्या हुआ ?'

'फौज आ रही है,' मन्नू दुबे ने व्यंग्य किया। और सचमुच ही फौज दिखाई दी। परमानन्द सुकुल, इन्द्रभान, गोवर्धन, चित्तप्रसाद भी वहाँ मौजूद थे। सब के हृदय में एक शंका हो रही थी। वे जानते थे मामला थमने वाला नहीं है। परन्तु रघुवीर सतनामी स्वयं अकड़ू आदमी था, और फिर गांधी जी की जय बोलता था।

जिलेदार, सरवराकार और पंडित तथा बंसी करीब आ गये और इससे पहिले कि उनमें से कोई कुछ कहे रघुवीर ने कहा : तो पंडितजी ! ले ही आये ?

सरवराकार ने तीखा उत्तर दिया। 'तुम दूसरों के खेत के बीच अपनी मेंड़ बनाओ और उस पर काँटे बिछाओ तो लहर तो उसे गिरायेगी ही।'

'हूँ' बिन्देश्वरी ने कहा : लहर अभी छोटी आई है। बड़ी को मत बुलाओ, तुम्हारे भले की कहते हैं।

'हमें डरने की जरूरत नहीं' रघुवीर ने कहा, 'हम तो जान की बाजी लगाना जानते हैं।'

'मरते बहुत देखे पर जनाजा निकलते किसी का न देखा।' जिलेदार ने उत्तर दिया।

यह चोट जरा अच्छी बैठी। अब बात सीधी-सीधी होने लगी। पंडित नीलकण्ठ ने कहा : हमने तो पहले ही कहा था। यह काम ठीक नहीं है। तिवारी जी इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। हमें तो मालिक से भूमि मिली है। तुम नहीं मानते तो मालिक के लोगों को ला खड़ा किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रघुबीर : पर पंडित जी ईमान की बात है। बताओ। जमीन हमारी न थी ?'

नीलकण्ठ : पहले थी सही। अब तो मालिक ने हमें दे दी।

'पर पहले तो हमारी थी ?'

'तब भी मालिक की थी। उन्हें अख्तियार है। रखें चाहे निकालें।'

'तब हम क्या खायें ?'

'तुम जानो मालिक जानें।'

'और तुम बेदाग निकल गये ?'

'हमने किसी से न कहा, न सुना।'

'अहा हा कैसी बात कह रहे हैं।'

'सच ही तो कहा। तुम्हारा नाम तो नहीं लिखा। जब तक लगान देते रहे तब तक भूमि तुम्हारी रही। पर दाम ही न दोगे तो फिर क्यों रहेगी ?'

'लगान मैंने नहीं दिया क्योंकि जेल गया था।'

'अपनी मर्जी से गये थे।'

'देस के लिये गया था। तुम भी तो उसी देस के हो।'

'पर हमारा सिर हमारे काबू में है। हम जबर से लड़ कर जान देना नहीं चाहते।'

'विदेसी के पाँव चाटते रहना चाहते हो ?'

'तुम्हारी बला से।'

'तो पंडित तुम भी सुरग नहीं ले जाओगे यह धरती। आँख मिचे, सब छूट जायेगा।'

'अपने लिए नहीं कहते ? दूसरों को उपदेश देते नहीं थकाते ?'

'अब सारा गाँव उपदेश देगा। अब लगान ही नहीं दिया जायेगा।'

रघुवीर सतनामी की इस बात से रामनाथ के आदमी चौंके। सरवराकार ने कहा : गाँव उतना बड़ा नहीं, जितनी बड़ी सरकार है।

'सरकार उतनी बड़ी नहीं' रघुबीर ने उत्तर दिया, 'जितना बड़ा ईमान है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
'ईमान से गोली नहीं निकलती। वह तो बन्दूक से निकलती है।'

'तो डराने आये हो ?'

'हम तो समझाने आये हैं। समय रहते नहीं चेतोगे तो फिर और रास्ते काम में लाये जायेंगे। गाँव की शान्ति ऐसे तुम तोड़ दो तो हमारे हाथ लड्डुओं से नहीं घिरे हुए।'

'तो हम भी डरने वाले नहीं हैं।' रघुवीर ने चिल्ला कर कहा।

सरवराकार गरम हुआ। उसने तड़प कर कहाः बड़ी लंबी बात कह गये। पर शेर को मत भूलो। उसको भूलना ठीक नहीं है।

'जिनके बल पर वे शेर हैं, उन्हें हम पराया मानते हैं। वे देश के लुटेरे हैं। वे विदेशी के टुकड़े खाकर अपनों को छोड़ रहे हैं। धरती उनके संग भी नहीं जायेगी।'

अब बात बढ़ने लगी थी। सरवराकार ने देखा गाँव के लोगों की आँखों में घृणा का भाव था। इस समय उसने मारपीट नहीं करना ही ठीक समझा। कहाः तो तुम से कह चुके हम। फिर कुछ न कहना।

'हमने भी कह दिया सरवराकार साँव। अब हमें भी कुछ नहीं कहना। बन्दर घुड़की से डरने वाले नहीं हैं हम।'

'सँभलकर बात करो रघुवीर', जिलेदार ने डपट कर कहा : ठीक से बात करो। अभी हमने कुछ नहीं कहा।

'आगे कह लेना', रघुवीर ने उत्तर दिया।

नीलकण्ठ और सरवराकार आपस में कुछ सलाह कर चुके थे। अब सरवराकार ने कहाः सारे गाँव में बदअमनी फैला रहे हो। इसका नतीजा अच्छा नहीं है।

रघुवीर के कहने के पहले इन्द्रमान बोल उठाः जाइये, जाइये। जिसे आप अमन कहते हैं वह किसानों की भूख है, गरीबी है। आप ही सरकारी पिट्ठुओं के पाँव दाबिये। यहाँ कोई नहीं डरता।

'तुम चुप रहो जी।' जयनारायण ने कहाः इस मामले में बोलने वाले तुम कौन ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन्द्रभान ने उत्तर दिया : तो रघुवीर बसनामी और पंडित नीलकण्ठ के मामले में बोलने वाले आप कौन ?

सरवराकार ने क्रोध से इधर उधर देख कर कहा : पंडित हमारे आदमी हैं।

'तो रघुवीर हमारा आदमी है।' इन्द्रभान ने तन कर कहा : आप उनकी हिमायत लेंगे तो गाँव रघुवीर के बाल पर भी आँच नहीं आने देगा।

सरवराकार ने देखा और दब कर कहा : तो फिर हम नहीं जानते।

'हम तो जानते हैं।' रघुवीर ने सिर हिलाया।

जिलेदार, सरवराकार और पंडित तथा बंसी लौट चले। यह देख कर रघुवीर ने नारा लगाया—बोल महातमा गांधी की.....

और लोगों ने एक स्वर से चिल्ला कर कहा : जय.....

यह आवाज़ फैली, यह नारा गूँजा और जैसे वर्षा से फ़सल लहलहाती हुई उठ खड़ी होती है, गाँव-गाँव के लोग जागे और उन्होंने आकाश की ओर सिर उठा दिये। इस प्रकार का अर्थ धनपतियों से घिरा गांधी नहीं था, इसका अर्थ था वह नङ्गा प्राणी जो देखने में जर्जर लगता था, परन्तु जो संसार के लौह साम्राज्य से टक्कर लेने को खड़ा था। जहाँ उसके रक्त की बूँद गिरती थी वहाँ सैकड़ों बाग़ी पैदा हो रहे थे। इस नारे का अर्थ दासता नहीं थी, इसका अर्थ था आज़ादी की पुकार, मनुष्य की आत्मा की अपनी गरीबी, बीमारी और गुलामी से ऊब कर चिल्लाने की शक्ति। इस नारे का अर्थ था दुखों को हटा दो, उनको दूर करो जो विदेशी से अपने स्वार्थों के लिये गठबन्धन करके अपने भाइयों का खून चूस-चूस कर मुटा रहे हैं। इसका अर्थ था एक नये देवता की आत्मा की चेतना फूँक देना और वह देवता, पिसा हुआ लुटा हुआ मनुष्य था, जिसकी देह पर अत्याचारी अपने भारी बूट पहन कर चढ़ गया था।

और यह आवाज घरों, झोपड़ों, बाड़ियों और मढ़ैयों पर होती हुई खेतों पर गूँजने लगी। दल के दल किसानों के गगन-भेदी नारों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बानापुर की सरजमीन थर्रा उठी और लोगों ने आत्मविश्वास से लगान-बन्दी का कार्य्य प्रारम्भ कर दिया।

बहुत दिनों से छाई हुई सुस्ती जब टूटती है तब मनुष्य को सारी दुनिया में एक नई स्फूर्ति दिखाई देती है। और इसी से जब वह नारा गूँजा और फैला तब लोगों को लगा वह डर एक सुस्ती के समान था, जिसने बल रहते शरीर को जकड़ दिया था, जिसने हनुमान को यह भुला दिया था कि उसमें समुद्र लाँघ जाने की शक्ति है। और वह भाई चारे की पुकार दीपक बनकर जल उठी, और जैसे-जैसे वे पुकारें बढ़ती गईं, लगा कि वैसे-वैसे ही एक के बाद एक दीपक जल उठा, बराबर बराबर.....

मनमें उजाला छाने लगा। शक्ति बढ़ने लगी। वे एक दूसरे की दुश्मनी छोड़ कर कन्धे से कन्धा भिड़ाने लगे। उनमें उस धरती और धरती की बेटी—फसल ने एक नई ताक़त भर दी कि खबरदार! कोई लुटेरा नहीं छू जाये। अब बैलों की पीठ पर जब हाथ ने थपथपाया तब उसमें एक नया आल्हाद था और जमींदार, बौहरा, पुलिस, पटवारी, सब के सब सशंक हो गये। उन्हें लगा वे चटक जायेंगे। विदेशी ने उन्हें किसानों पर लोहे की जंजीरों की तरह बाँध दिया था और पुकार आभा होकर उठ रही थी, जैसे भगतसिंह फाँसी पर झूल कर भी मुस्करा रहा था।

बात तो हो गई पर सब जानते थे कि इसका नतीजा इतना आसान नहीं होगा। रामनाथ के बारे में तो निश्चित था कि वे क्या करेंगे। वह आदमी इज्जत के पीछे मरता है। उसकी इज्जत क्या है? संपत्ति का मालिक होना ही उसकी इज्जत है। इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

चित्त प्रसाद ने कहा : सो तो ठीक है परन्तु गाँव के लोग आखिर तक सहायता देंगे?

मन्नू दुबे, और परमानन्द सुकुल भी इस समय आगये थे। इस समय जातिभेद जाने कैसे दूर होगया था। खुबीर सतनामी की ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सारा गाँव था। कहीं नौटंकी हो रही है तो उसमें जमींदार और अन्यों के मज़ाक उड़ रहे हैं। गाँव वालों के वही खेल हैं। जब कोई घटना हो जाती है, तुरन्त वहीं होने लगते हैं। औरतें गीत गाने लगती हैं। सारा इलाका सरकश हो गया।

मन्नू दुबे ने कहा : तो वे ऐसे ही अत्याचार करते रहेंगे ? हम तो देशभक्त जमींदार चाहते हैं।

गोवर्धन चुप था। अब बोला : वह तो ठीक है। पर उस दिन चित्त प्रसाद की बेटी ने मुझे पानी पिला दिया था। जात ने मुझे छेक दिया। मैंने प्रायसचित्त नहीं किया। तिवारी जी के बेटे ने विलायत से लौट कर कब प्रायसचित्त किया था ? उनसे किसी ने कुछ नहीं कहा। पर वे बड़े आदमी ठहरे। मैंने कहा था कि नीलकण्ठ अवस्थी प्रायसचित्त करें तो भी मैं न करूँ, वे सक्किन के खायें पियें, मैंने अनजान पानी पिया तो क्या दोस। तो सोच लो समर्थ से पाला पड़ा है।

'हम भी असमर्थ नहीं हैं।' मन्नू दूबे ने लाठी पर हाथ धर के कहा।

'अब क्या होगी ?' परमानन्द ने पूछा।

मन्नू दुबे ने लाठी तोल कर कहा : इसके लिये भी तैयार, मुँह के लिये भी तैयार, और जेल, तो जेल के लिये भी तैयार।

'दो चीजें रह गईं।' इन्द्रभान ने कहा।

'क्या ?' रघुबीर सतनामी बोले।

'बन्दूक की गोली, पुलिस, फौज का आतंक एक।'

'और ?'

'समर्थ का कानून।'

'हम इस गोरी सरकार के कानून को नहीं मानते।' रघुबीर ने कहा।

'परमेसुर की याद है ?' इन्द्रभान ने कहा : वह भी लगान देने से इन्कार करने पर मारा गया था ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मारा गया था। पर तब झगड़ू मिसिर थे। उन्होंने सत्याग्रह रोक दिया। उनका बेटा मार्कण्डे तैयार था।'

'उससे क्या होजाता ? लोग कुरकी में नहीं खरीदते ?'

'खरीदते तो गाँव उनकी छूत से बचता। मुँह दिखाते शरम लगती।'

'कहने की बात है।'

'तो फिर क्या हो ?'

'गाँव का संगठन हो।'

'और ?'

'लाठी का जवाब लाठी से दिया जाय।'

रघुबीर चौंका। कहा : तुम तो उन्हें वार करने का मौका देते हो। गाँधी जी तो अहिंसा कहते हैं।

'तो अहिंसा से वार से बच जाओगे ?' इन्द्रभान ने काटा।

सब चिंता में पड़ गये। पर इस समय झुकना कोई नहीं चाहता था। इस बार इतना विक्षोभ था कि कोई न कोई राह निकालनी ही थी। एकाएक मन्नू दुबे उछल पड़े। सबने देखा। बोले : ये ठीक है।

'क्या ठीक है ?' गोवर्धन ने पूछा।

'कोई कानपुर जाये और मार्कण्डे को ले आये। वह पढ़ा लिखा मनई है। वकील है।'

इन्द्रभान ने पूछा : 'तो वकील क्या करेगा ?'

परन्तु मन्नू दुबे डटे रहे। पढ़ा लिखा आदमी है, वकील है, काँग्रेसी है। मार्कण्डेय में सब गुन हैं। फिर भड़कता भी नहीं और झगड़ू मिसिर का पुत्र है। राय मान ली गई। दो आदमी गाँव से भेज दिये गये। सबेरे तक मार्कण्डेय को ले आना था। जब सब चले गये तब रघुबीर से चित्त प्रसाद ने कहा : और तो सब है, पर एक बात का ध्यान रखना।

रघुबीर ने पूछा : क्या ?

'मारपीट मत करना।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अपनी जान तो हम रोकेंगे ही।'

'मामला बड़ा उलझ गया।'

'सरकार बीच में पड़ गई।'

परन्तु एकदम जैसे रघुवीर जाग उठा। उसने कहा : पर अच्छा ही है। एक न एक दिन ये होना ही था।

यह ठंडापन देख कर चित्त प्रसाद को विस्मय हुआ। यह कितना भयानक संतोष था। जैसे यह व्यक्ति अपनी मौत का रास्ता देख कर लौट आया है और अब इसे इस बात का डर ही नहीं रहा कि मौत का सामना करना पड़ेगा। चित्तप्रसाद रघुवीर की हालत जानता था। पूछा : अगर फौजदारी नहीं हुई और सीधे मुकद्दमा चला तो।

रघुवीर ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। यह एक असंभव सी बात थी। फ़ौजदारी आवश्यक थी। फिर भी कहा : तो चलेगा।

'रुपया कहाँ से लाओगे ?'

'रुपया !!' रघुवीर की अब समझ में आया। रुपया !!

'मेरे पास तो नहीं है'। उसने कहा।

'फ़िर ? कैसे होगी ?'

रघुवीर ने सूनी आँखों से आसमान की ओर देखा जैसे वहाँ रुपयों का पेड़ लग रहा था जिस पर नजर पड़ते ही रुपये टपकने लगेंगे। साँझ का धूँआ अब फैल गया था। सूखे छप्परों में से धुँआ निकल निकल कर छा रहा था। छोटे छोटे घरों पर अँधियारा जैसे काले धूंए के फंदे डाल कर झूल रहा था। और एक सरकार विरोधी गीत जो औरतों के कंठों से निकल निकल कर बालकों के कोलाहल में मिल जाता था ...

चित्तप्रसाद ने कहा : 'फिर मैं हूँ।'

रघुवीर ने आश्चर्य्य से देखा। फिर उसकी आँखों में कृतज्ञता छा गई। उसने कहा : नहीं चित्त प्रसाद। तुम्हारा नुकसान होगा।

'पर गाँव आजाद हो जायेगा।' व्यापारी की आत्मा ने छटपटा कर सामंती अत्याचारों के विरुद्ध आहुति दी। ठीक वक्त पर लोहे पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हथौड़ा बजा था। पर रघुवीर सतनामी नहीं समझा। शायद चित्त प्रसाद स्वयं नहीं समझता था। उसका हाथ पकड़ कर रघुवीर ने कहा : गाँव की आन रह जायेगी। मैं जानता हूँ। राजा रामनाथ तुमसे बहुत अमीर हैं पर अगर सारा गाँव मिलकर एक हो गया तो फिर वे क्या कर लेंगे ?

दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा।

रात बेचैनी से गुज़र रही थी और सन सनाती हवा पुकार रही थी, सनना सनना ...

—३—

जिस समय गाँव के लोग मार्कण्डेय के घर पहुँचे उस समय शाम हो चली थी और मार्कण्डेय कचहरी से आकर लेटा हुआ था। दयानाथ उसके समीप बैठा बातें कर रहा था। दयानाथ को जब उन लोगों ने पाया तो कुछ झिझके।

'क्या बात है ?' मार्कण्डेय ने पूछा—'कहो, कहो, डरने की कोई बात नहीं। ये तो मेरे भाई के बराबर हैं।'

पर कहना इनके पिता जी के बारे में है।

दयानाथ ने कहा : कहो कह डालो। मेरा उनसे कोई संबंध नहीं है यह तो तुम जानते ही हो। वे मुझसे स्वयं बहुत नाराज़ हैं।

उन लोगों को आश्वासन हुआ। एक जो अधेड़ था, निनुआ, उसने सब किस्सा कह सुनाया। मार्कण्डेय सुनता रहा, सुनता रहा। अंत में उसके मुख पर एक उलझन सी दिखाई दी और भौं सकुच गई। वह शायद इस सबके लिये तैयार नहीं था। उसने दया से कहा : तुमने सुना सब ?

'क्यों नहीं।'

'फिर अब क्या किया जाये ?'

'इस मामले में दोनों ही जोर आजमाने पर तुले हैं और ददुआ की हेकड़ी तो तुम जानते ही हो।'

'यही तो अजीब परेशानी है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानाथ उठ खड़ा हुआ। कहा : रात की बाड़ी से ही जाओगे ?

'और क्या करूँ ?'

दयानाथ चला गया। मार्कण्डेय सोचने लगा। यह गाँव वाले दूसरों के इशारे पर चलते हैं। इनमें इतना स्वाभिमान और मर्य्यादा कहाँ से आ गई ? कहाँ से आ गई इनमें यह चुनौती देने की शक्ति ? और तब मार्कण्डेय को याद आया। यह लोग ज़रा ज़रा सी बात पर सिर तोड़ देते हैं। इनमें शक्ति है। जीवन है, यह भी हम ही जैसे मनुष्य हैं, पर इनकी भाषा, विचार, भूषा और रहन-सहन ने हममें और इनमें एक भेद पैदा कर दिया है। पर अगर देखा जाये कि हम दोनों मनुष्य हैं तब बीच की खाई पट जाती है। गाँव वालों के मुकदमे आते रहने के कारण मार्कण्डेय उनको समझता रहता था। वे लालची हैं, जाहिल हैं, उनमें फूट है वे सुधारक के सामने चापलूसी और पीछे से उनकी निंदा करते हैं, छोटी छोटी बातों में उलझे होने के कारण उनका विकास नहीं हो पाता, गंदे रहते हैं पर वे मनुष्य होते हैं। क्यों हैं वे इतनी गरीब ? क्यों हैं वे इतने अशिक्षित ? किस पर है इसकी जिम्मेदारी ?

मार्कण्डेय जितना सोचता उतनी ही उसकी उलझन बढ़ती जाती। और फिर उसे लगा कि वह समस्त बरबाद हो जाने वाली शक्ति यदि शिक्षित हो, सुसंस्कृत हो तो कितना भारी और महान् परिवर्तन हो जाये ?

दूसरे दिन जब वह बानापुर पहुँचा, गाँव वालों ने उसे घेर लिया। मार्कण्डेय ने कहा : यह तो सब ठीक है मगर तुमने यह भी सोचा कि यह काम कानूनी है या नहीं ?

'कानून तो हम इस सरकार का मानते नहीं।' इन्द्रभान ने कहा-- 'गांधी जी स्वयं कहते हैं कि वे इन कानून को नहीं मानते। आजाद हिन्दुस्तान में सबसे पहले इस कानून को बदला जायेगा, क्योंकि यह कानून अँगरेजों और उनके पिट्ठुओं के फायदे का है। जो इससे असहयोग नहीं करता वह देश की स्वतन्त्रता नहीं चाहता। अगर यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कानून जैसा का तैसा हमारे काम में आ सके तो फिर अँगरेज़ों से लड़ने की हमें जरूरत ?

कानून की बुराई मार्कण्डेय स्वयं करता था। पर एक वकील होने के नाते जैसे इस विषय पर बोलने का अधिकार केवल उसी को था, वह इस बात से भी मन ही मन कुछ नाखुश हुआ कि एक गाँव वाला उसे उपदेश दे रहा था। पर वह संयम जानता था। उसने कहा : हिन्दुस्तान आज़ाद होगा तब कानून नहीं ही, हमें और भी कई बुराइयाँ तुरंत मिटानी होगीं। तब ज़मींदार किसान पर अत्याचार नहीं कर सकेंगे और किसान भी नंगा और भूखा नहीं रहेगा। अगर कांग्रेस जमींदार के विरोध में नहीं होती तो ज़मींदार कांग्रेस के अन्दर होता और किसान कांग्रेस के बाहर।

इस बात पर इन्द्रभान ने पैंग भरी। कहा : ठीक है मार्कण्डेय भइया ये तो तुमने ठीक कहा। तपोवन में शेर और बकरी एक ठौर आकर तब मिलते थे जब शेर मांस खाना छोड़ देता था।

'शेर एक दिन सचमुच मांस खाना छोड़ देगा।' मार्कण्डेय ने विश्वास से कहा।

'हो सकता है' गोवर्धन ने काटा—पर शेर की आदत यह नई डालने को ही न जाने कितनी बकरियों की कुर्बानी देनी पड़ेगी।

उस समय काफी लोग आकर इधर उधर जम गये थे और इन पढ़े लिखों की बातचीत सुन रहे थे। उन्हें काफ़ी कौतूहल था। गोवर्धन की बात से मार्कण्डेय चौंका। उसने उसकी बात को मन ही मन दो तीन बार दुहराया और फिर चौंक कर ही कहा : तो क्या तुम गांधी जी की इस बात में विश्वास नहीं करते कि मनुष्य का हृदय सत्य और अहिंसा से बदल जाता है ?

गोवर्धन गांधी जी के विरोध की बात कहने का साहस नहीं कर सका। उसने कहा : मैं पूरी तरह मानता हूँ, पर जब अपने गाँव के इन लोगों को देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। ऐसा लगता है यह लोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बड़े जिद्दी हैं और अपनी अकड़ को कभी नहीं छोड़ेंगे। इसीसे हमने पूरी तरह लगानबन्दी का इंतजाम करने का प्रयत्न किया है।

'लगानबंदी में हम तब तक पूरी तरह से सफल नहीं हो सकते जब तक हम पूर्ण रूप से अहिंसा को प्रयोग में लाने के लिये तैयार नहीं हों।'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यही कि गाँववाले कोई भी उपद्रव नहीं करें।'

'नहीं करेंगे। फिर काम कैसे होगा ? फसलें खड़ी हैं वे कटवा लेंगे !'

'कैसे कटवा लेंगे ?'

'इधर उधर से मजूर लाना क्या कठिन काम है ? किसी का घर, किसी के बैल बिकवा देंगे। तब क्या करेंगे ?'

'वे यह सब कर सकते हैं। पर हम इन चीजों से दबना नहीं जानते। अगर तुम मारपीट करोगे तो वे फौज बुलायेंगे। अगर सब गाँव मार पीट करेंगे तो कहीं फौज की कमी पड़े। पर वे दो चार जगह ही इतना भयानक दमन करेंगे कि बाकी जगहों पर लोग अपने आप दब जायेंगे। लेकिन अगर तुम अपनी परीक्षा में सफल उतरे और गाँव गाँव ने अहिंसात्मक असहयोग किया तो तुम जीत जाओगे।'

मार्कण्डेय की बात ने असर किया। उपस्थित लोग सोचने लगे। परन्तु इन्द्रभान ने काटा : और गाँव ने न किया तो यहां के लोग पिस जायेंगे क्योंकि सरकार को लगान से मतलब। जो लगान नहीं देता, वही बागी है। बागी चिल्ला कर बगावत करता है या मारपीट से करता है, सरकार इस पर अधिक ध्यान नहीं देती। वह तो दोनों को ही मारती है। दोनों की एक जेल है। जो टैक्स, लगान आदि नहीं देता, वह एक तरह का चोर है के कानून को तोड़ता है। फिर सरकार को हिंसा अहिंसा से मतलब नहीं।

मन्नू दुबे ने कहा : ठीक है मार्कण्डेय। तुम ठीक कहते हो। हमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह भी तो देखना है कि किस तरह हम दुश्मन के वार को बचा जायें। हिंसा करेंगे तो जुलम ज्यादा होगा।

मार्कण्डेय ने अस्वीकार किया: नहीं मन्नू काका। तुम तो अहिंसा को कमज़ोर की चालबाज़ी बना रहे हो। मेरा तात्पर्य यह नहीं है। हमारी अहिंसा तो हमारी ताकत की निशानी है कि जो अत्याचार करता है वही कमजोर है। उसी में पशुत्व नहीं पाशविकता है। पशुत्व नहीं कहना चाहिये। जानवर अपनी आदत के मुताबिक काम करता है। हम उसे बुरा नहीं कह सकते। पर आदमी होकर हमें अपनी प्रकृति की बुराइयों को दूर करना चाहिये। अगर पशुत्व को दूर करना है तो कोई पशु नहीं जिसकी अपनी एक आदत नहीं हो। सिंह, भेड़िया, सब फाड़ खाते हैं अतः इन्हें गोली मार दी जाती है। पर आदमी में सिंहापन और भेड़ियापन हो तो हमें उसे गोली मार देने का अधिकार नहीं है। हमें उसे उसके पापों से छुटकारा दिलाना चाहिये। आदमी यह सब क्यों करता है?

'क्यों करता है?' इन्द्रभान ने उत्तर दिया। 'मैं और तुम नहीं करते पर जमींदार के लोग करते हैं। पुलिस करती है, फौज करती है। क्या कारण है? क्योंकि यह उस तरीके से मजबूर हैं। यह एक मशीन के पुर्जे हैं। पेट के लिये करते हैं और उनके फायदे के लिये करते हैं जिनके पास संपत्ति है। चौरासी लाख योनियों में एक बार मानुसदेह मिलती है, ऐसा महात्माओं ने कहा है। फिर सबने इसी संपत्ति को दोष दिया है। ये लोग क्यों हमारी अहिंसा से आ मिलेंगे यह समझ में नहीं आता, हो सकता है इनका हृदय बदल जाये।'

'और वह तब होगा जब हम उन्हें अपनी कठिन साधना से बदल जाने के लिये मजबूर कर देंगे। जब वे जान लेंगे, कि संपत्ति से बड़ा मनुष्य है। लेकिन अगर हम उनसे छीनेंगे तो उनकी पाशविकता और अधिक ही बढ़ेगी।'

गोवर्धन नहीं समझा। उसने कहा: तो क्या यह लगानबंदी सिर्फ अँगरेजों के विरोध में है? क्या तिवारी जी भी इसे बरबाद नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाते ? इस तरह हम अपने ही एक भूले हुए भाई को विदेशी से ज्यादा मिल कर रहने पर मजबूर नहीं कर देते ?

'सो तो है', मन्नू दुवे ने कहा : और वे क्या करेंगे। तुम उनकी जड़ काटोगे तो वे उधर ही मिलेंगे। वे तो संपत्ति से जुड़े हैं। उससे अलग करके देखो तो वे भले हैं, उससे जोड़ कर देखो तो वे हमसे अलग हैं। अँगरेजी सरकार, तो दूर रही, पहले तो तिवारी जी लड़ेंगे। और वे न होते तो अँगरेज क्यों होता? लड़ाई तो साफ होनी चाहिये। वे तो इधर, या उधर, बीच के काम से आगे चल कर गड़बड़ होती है।'

'कानून कह गये, गोवर्धन ने कहा।' कानून तो उनका है जिनके पास धन है। न हम खाऊ वकीलों से बचेंगे, न पुलिस से।'

मार्कण्डेय को यह बात बुरी लगी। उसने कहा : यह ठीक है। सब कुछ खराब है। आजादी इस बुराई से निकलने का एक रास्ता है। सारा संसार जिस महात्मा की पूजा करता है, उसे तुम इन्कार करते हो ? तुम्हें उस पर विश्वास नहीं है जिसने सब कुछ तुम्हारे लिये छोड़ दिया है ? तुम देश के गौरव पर विश्वास नहीं करते। तुम अपने शत्रु से डरते हो जब कि तुम्हें उस पर क्रोध की नहीं, दया की आवश्यकता है। वह क्यों भटक रहा है ? क्या हम अपनी आत्मा की शक्ति से, अपने सत्य और न्याय से उसका हृदय नहीं बदल सकते ? हम अपने आपको तपा तपा कर अपनी चमक से उसकी आँखें चौंधिया देना चाहते हैं।

मार्कण्डेय के इन शब्दों का रहस्य गाँव के लोगों की समझ में तो नहीं आया पर उसकी धार्मिकता का उस समुदाय पर प्रभाव पड़ा।

मार्कण्डेय उठ खड़ा हुआ। उसने कहा : काम चलने दीजिये। वैसे मैं तिवारी जी से उन्नाव जाकर मिलता हूँ।

'क्या वे मानेंगे ?' गोवर्धन ने पूछा।

'क्यों नहीं ? क्या वे मनुष्य नही ?' मार्कण्डेय ने सरलता से पूछा।

'मन्नू दुवे ने कहा : 'क्यों मारकण्डे ? जब समझाये से आदमी मान जाये तो अँगरेज क्यों नहीं चला जाता ?'

'वह भी एक दिन चला जायेगा।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अभी क्यों नहीं चला जाता ?'

'अभी वह संपत्ति का मोह नहीं छोड़ पाता।'

'आगे चल कर संपत्ति का मोह छोड़ देगा ?'

मार्कण्डेय इसका उत्तर नहीं दे सका। पर सँभल कर उसने कहा : हाँ, हम इसी आशा पर लड़ते हैं। समुद्र में भी सोना होता है।

मन्नू दुबे चुप नहीं हुये। कहा : मैं कहता हूँ लोग समुन्दर से सोना क्यों नहीं निकालते ?

'मँहगा पड़ता है।'

मन्नू दुबे हँसे। कहा : जब हिन्दुस्तान का राज अँगरेजों को समुन्दर से सोना निकालने जैसा हो जायेगा तब भले ही उनका हृदय बदल जाये। कोई नहीं छोड़ता। फिर भी तुम कहते हो तो यही सही।

मार्कण्डेय चल पड़ा। गोवर्धन उसके साथ स्टेशन तक पहुँचाने आया। मार्कण्डेय के तर्क ने नहीं, श्रद्धा ने उन सबको पराजित कर दिया था। उन्होंने निश्चय किया कि वे अहिंसा से काम लेंगे। परन्तु इससे पहले कि वे कुछ कहते या करते सामने से दौड़ते हुए कुछ लड़के आये और उन्होंने जो खबर सुनाई तो चारों ओर एक सनसनी दौड़ गई। इन्द्रभान ने सुना तो लड़के स्टेशन को दौड़ाये। मार्कण्डेय को पहुँचा कर गोवर्धन रेल के चले जाने पर लौट रहा था।

लड़के ने कहा : गोवरधन भइया

क्या बात है ?

लड़का बहुत कुछ कहना चाहता था। एकदम रुक कर कहने के प्रयत्न में जैसे उसका स्वर रुँध गया।

गोवरधन ने घबड़ा कर कहा : कहता क्यों नहीं ?

लड़के के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

गोवरधन ने और पूछने में समय व्यर्थ गँवाना ठीक नहीं समझा। वह लड़के को घटनास्थल की ओर ले चलने को कह कर उसके साथ-साथ चल पड़ा। जब वे गाँव पहुँचे तो वहाँ एक नया ही रंग था। खूब भीड़ इकट्ठी हो गई थी और रामनाथ ? सरवराकार और जिलेदार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
उपस्थित थे। तथा रघुवीर की स्त्री धरती पर पड़ी पड़ी चिल्ला चिल्ला कर गालियाँ दे रही थी। उसके स्वर में एक भयानक आक्रोश था। गोवर्धन को विस्मय हुआ कि वह स्त्री तनिक भी भयभीत नहीं लगती थी, वरन् गला फाड़ फाड़ कर सात पुश्तों को गालियाँ दे रही थी। चारों तरफ़ सब क्रुद्ध से उन दोनों पर घूर रहे थे, लगता था जैसे फ़ौजदारी हो के रहेगी। ज़मीदार के आदमियों के साथ जो चार पाँच लठैत थे वे निस्तब्ध खड़े थे, कभी कभी दाँये-बाँये झाँक लेते थे, जैसे उनके भीतर कोई शंका थी अवश्य। और उस गंभीर खतरनाक सन्नाटे पर हृदय को हिला देने वाला रुदन लगता था जैसे अत्यन्त दारुण हो और उस रुदन के कारण वे ज़मीदार के आदमी स्पष्ट ही अत्याचारी से दिखाई देते थे।

गोवर्धन उस भीड़ को हाथों से हटाता आगे पहुँचा और उसने आँखों से सब को आँका। रघुवीर की स्त्री ने जब यह देखा कि एक और हिमायती आ गया है, उसकी हिम्मत और भी बढ़ गई और उसने एक बार फिर गालियों की बाढ़ लगा दी।

गोवर्धन ने जैनरायन से पूछा : क्यों सरकाकार साँब! यह गरीब औरत क्यों चिल्ला रही है?

जयनारायण इस प्रश्न से तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उसने आंखें तरेर कर, भौं उठा कर उपेक्षा से कहा : पूछ देखो। क्यों चिल्ला रही है? बात का जवाब सुन रहे हो? भले आदमियों से बात करने की ज़बान देखी?

गोवर्धन ने स्त्री से कहा : तो चुप भी होगी कि तू चिल्लाती ही रहेगी?

स्त्री इस बात का अर्थ कुछ उल्टा लगा बैठी। वह समझी गोवर्धन डर गया है सो चिल्लाने लगी—हाय इस गाँव में कोई भी ऐसा नहीं रहा जो गरीबों की तरफ़ बोलता। सब जबर की ओर बोलते हैं....

गोवर्धन विक्षुब्ध हुआ। उसने कहा : तो क्या बात है आख़िर। कुछ कहेगी या रोये जायेगी?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
'मैं क्या वैसे ही रोती हूँ.....

अभी वह पूरी बात कह भी नहीं पाई थी कि किसी ने भीड़ में से कहा : बेचारी को मारा है इन्होंने।

जयनारायण ने क्रोध से चिल्ला कर कहा : कौन कहता है कि इसे मैंने मारा है, सामने आकर बात करे। अगर इतना ही डर है तो घर जाकर अपनी लुगाई की धोती में छिप रहो।

जयनारायण का वह कठोर स्वर सुनकर सचमुच चारों तरफ़ फिर खामोशी छा गई जैसे सामने आना बड़ा कठिन काम था। सरवराकार ने समझा कि बाज़ी मार ली। वह मूँछों में मुस्कराया। पर स्त्री कब चुप रहने वाली थी। उसने छाती पीट कर जोर जोर रोते हुए कहा : आग लगे तेरे मुँह में कलमुँ हे, कढ़ीखाये। इस गाँव में किसी की इज्ज़त नहीं रही।

जयनारायण ने कहा : अब तुम जैसे ओछे लोग भी इज्जत की दुहाई देने लगे ?

गोवर्धन अब तक बीच बचाव की कोशिश में लगा था। उसे मार्कण्डेय के लौट आने तक मामला बिगड़ न जाये इसकी चिन्ता हो रही थी। पर अब वह क्या करता। यहाँ गाँव अगर इस समय झुक गया तो आगे का सारा कार्य्यक्रम नष्ट हो जायेगा। उसने कहा : सरवराकार साहब ! इज्जत तो जैसे बड़े की, वैसी ही छोटे की। आपको शायद वह नहीं मालूम ?

'मालूम है हुजूर', जैनारायण ने व्यंग्य से कहा : आप ठहरे पढ़े लिखे आदमी। हम ठहरे गँवार। आप आये हैं वकालत करने और हम आये हैं नौकरी बजाने। तो जो हमारे काम में अड़चन डालता है, उसकी इज्जत हम अपनी इज्जत से ज़्यादा नहीं समझते। सरकारी काम में जो रोड़ा अटकायेगा, उसे पहले से कहने पर भी अगर अकल नहीं आयेगी तो अपने रास्ते से हटा देंगे।,

गोवर्धन ने कहा : तो आखिर तुम्हारे पास कोई शिकायत थी।

कोई जवाब दे उससे पहले वह स्त्री फिर रो उठी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
'क्यों रोती है ?' किसी ने धीरे से कहा। 'ऐसे क्या फाँसी देंगे ये ?'

'अरी उनके दया नहीं है।' एक स्त्री ने बच्चे को गोदी में हिलाते हुए कहा : रो के तो तू उन्हीं की हिम्मत बढ़ा रही है।'

गोवर्धन ने कहा : चुप रह। हो गई। अब कोई बात पता चले तो न्याय हो। ऐसे कोई अंधेर थोड़े ही हो रहा है जो ये अपनी मनमानी कर लेंगे। चुप हो जा। बस। अब चुप हो जा।

गोवर्धन के कहने से रघुवीर की स्त्री ने चिल्लाना बंद कर दिया। वह कपड़े झाड़ कर खड़ी होगई। ऐसा लगता था जैसे वह अभी और गालियाँ सुनाना चाहती थी और मन की मन में ही रह जाये यह उसे पसंद नहीं था। पर सब का मौन देख कर अंत में उसने भी आग्नेय नेत्रों से घूर लेना ही स्वीकार कर लिया।

'हुआ थों कि', अब सुनाई जाने लगी।

'रघुवीर को ये लोग पकड़ने आये थे।

'हूँ', गोवर्धन ने कहा—'किस अपराध पर ?'

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

गोवर्धन ने फिर कहा : यह क्या धाँधली है ? किसने कहा था आपसे ? कोई बात भी थी ?

ज़िलेदार विन्देश्वरी सिंह चुप खड़ा था, अब बोला : बात क्यों नहीं थी ? मालिक का हुकम था।

'कौन से मालिक का ? तिवारी जी तो यहाँ हैं नहीं ?'

'वे नहीं तो क्या ? उनकी गैरहाजरी में जो मालिक हैं उनका ही हुकम चलता है।'

'कौन मनीजर साहब ?

विन्देश्वर ने अंहकार से सिर हिलाया।

'तो तुम रघुवीर को न पाकर, उसकी बहू को मारने की मजाल कर बैठे ?' गोवर्धन ने पूछा

गाँव वालों का गुस्सा बढ़ने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

जयनारायण ने क्रोध से कहा : तो तुम आये हो अब हिमायती बन कर ?

'हाँ, हम आये हैं' गोवर्धन ने कहा, 'मारो अब।'

'क्या कर लोगे तुम ?' विन्देश्वरी ने पूछा।

'मार के देखो।' गोवर्धन ने आवेश से उत्तर दिया।

जयनारायण क्रोध से चिल्ला उठा : होश में बात करो गोवरधन ! तुम शायद भूल रहे हो कि किसका सामना कर रहे हो ?

'गोवर्धन नहीं भूलता, सरवराकार साहब। अक्ल ठिकाने आ जायेगी। अब मत करना समझे, वर्ना.....

वर्ना..... (जयनारायण ने आँखें फाड़ कर पूछा।

'वर्ना हाथ ककड़ी की तरह काट कर फेंक दिया जायगा। समझे ?

जयनारायण हँसा। उस हँसी में एक उपहास की भावना थी जो बज उठी।

इस समय तक भीड़ काफी बढ़ गई थी। जयनारायण मन में डर रहा था। पर रौब जमाना जरूरी था। उसने कहा : अच्छी बात है। अगर हुजूर का यही हुक्म है तो हम भी अब से यही करेंगे।

'क्या मतलब ?'

'कि जो बीच में आयेगा उसे ककड़ी की तरह काट देंगे।'

'और तुम फिर इसी गाँव में रह लोगे ?'

और सचमुच एक हलचल न जाने भीड़ में से कहाँ शुरू हुई कि परिणाम स्वरूप किसी ने ज़िलेदार विन्देश्वरी सिंह के सिर पर जोर से जूता मारा। विन्देश्वरी सिंह ने ही रघुबीर की बहू को मारा था। रघुबीर का कहीं पता नहीं था। और फिर कुछ जोर से धक्के लगे। जिलेदार का मुँह जूता खाकर स्याह पड़ गया। वह खिसिया कर टूटा और सामने खड़े आदमी का मुँह नोंच लिया। मारा किसी ने, पिटा कोई। वह आदमी भला कब चुप रहने वाला था, उसने पलट कर जिलेदार के मुँह पर जोर का घूँसा जड़ दिया, जिसकी चोट से जिलेदार हकला गया और सरवराकार से टकरा गया।

—४६७—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
जयनारायण कुछ भी नहीं समझा। उसके मुँह से निकला—अरे..
किन्तु अरे मात्र उस कोलाहल में डूब गया।

और तेजी से उठा हुआ कोलाहल और भी तीव्र होकर अपने घोटाले में कुछ लाठियों की आवाज बन कर खट खट करता हुआ मिल गया।

दुर्घटना इतनी तेजी से हुई कि स्वयं गोवरधन को भी इसका अंदाज नहीं हुआ। वह कारण भी नहीं समझा, और अब लोग फिर से इधर-उधर भाग कर इकट्ठा हो रहे थे, जैसे कोई छोटी छोटी लड़ाई हो चुकी थी। वे सब उत्तेजित थे और आवेश में थे। गोवर्धन ने देखा रघुबीर की बहू की आँखें आनन्द से खुल गई हैं और उनके कोनों में पानी की एक बूँद चमक रही है, जैसे उसका बदला चुक गया है। अब कोई बात नहीं।

लठैत दो चार हाथ मार कर ही भाग गये थे। उनमें इतना साहस नहीं रहा था कि वे जम कर दो दो हाथ हो जाने देते। गोवर्धन ने कहा : यह क्या कर दिया तुम लोगों ने ?

किसी ने उत्तर नहीं दिया। जैसे वे निश्चिन्त थे, जो हुआ सो ठीक ही हुआ और वे अपने को इसका जिम्मेदार भी नहीं समझते थे।

घर घर इसी की चर्चा होने लगी। अब मालूम पड़ा है ससुरों को। रोज आकर अपनी मन चाही कर जाते थे, जैसे हमारे हाथ तो लड्डू ओं से घिरे थे। क्यों जी ? ठीक रहा ? इसमें क्या है भाई ? लाठी होनी चाहिये। गिरिधर कविराय कह गये हैं।

भला कोई बात थी।

औरत को अकेला देखकर समझे यों दबा लेंगे, यों पर आखिर गाँव में क्या कोई मरजाद नहीं रही ! अजी उसकी ऐसी तैसी।

सो तो है, पर अब क्या होगा ?

'होगा', एक बुढ़िया ने कहा—'उस राँड़ के पीछे सब की आफत आयेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु सबने फ़िर भी पराजय स्वीकार नहीं की।

४

कमरे के सन्नाटे को रामगोविन्द का भर्राया स्वर तोड़ रहा था। और चारों ओर शांति थी। जब वह चुप हो गया तब सब ने एक लम्बी साँस ली। मानो किसी तरह समाप्त तो हुआ।

रामनाथ ने घूरते हुये कहा : इसीलिए मुझे बुलाया गया, एक जरा सी बात के लिए ? इसके मतलब यह हुए कि अब छोटी छोटी बातों के लिए रामनाथ को बानापुर आना पड़ेगा। किसी ने किसी के खेत पर अख्तियार जमा लिया और राजा साहब वहाँ जिलेदार का काम करने पहुँचे। बहुत अच्छा रहा।

रामनाथ रुक कर कुछ सोचने लगे। फिर कह उठे : तुमने क्या किया ? खुद क्यों नहीं गये ? डर लगता था ? वह मालिक क्या जिसके नौकर काम न सँभाल सकें और वह नौकर क्या जो मालिक को जरा जरा सी बात के लिए ढूँढा करे ?

मैनेजर रामगोविन्द पशोपेश में पड़ गया। क्या कहे ? वह मन ही मन गाँव वालों से डरता भी था और शेर भी बनता था। अब बुरी नौबत आ गई। उसने अक्लमन्दी इसी में समझी कि बिना जवाब दिये सिर झुका दिया जाये, बला तो आई है, जैसे आई है वैसे ही ऊपर से निकल जायेगी।

नीलकण्ठ अवस्थी बैठे-बैठे कह उठे : तिवारी जी। यह तो खैर-ख्वाहों की सलाह से ही तय किया गया कि कुछ न किया जाये।

'क्यों ?' रामनाथ ने काटा।

'सरकार ! जमाना ठीक नहीं है।'

'फिर मैं क्या करूँ ?'

'हुजूर मालिक ठहरे। आपकी बात और है।'

इसी समय देखा कि कुछ गाँव वाले कोठी के सामने आ गये हैं। उनके चेहरों पर कुछ चिन्ता के चिन्ह हैं। रामगोविन्द उठ कर बाहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
चला गया। उसने बाहर कुछ बातचीत की। पुराने ढंग की सजावट के उस कमरे में फिर एक सन्नाटा छा गया। रामगोविन्द शीघ्र ही लौट आया और रामनाथ की ओर देखने लगा, जैसे वह कुछ कहना चाहता है।

रामनाथ ने प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

'सरकार से गाँव के कुछ लोग मिलना चाहते हैं।'

'वजह।'

'कल के दंगे की बुनियादी वजह बताने।'

रियाया आई है मगर बगावत की बू लेकर। रामनाथ के दिमाग में यह विचार आया और निकल गया। उन्होंने कहा : पेश करो।

रामगोविन्द के इशारे पर बिन्देश्वरी सिंह उन्हें भीतर ले आया जो पालागन करके खड़े हो गये। रामनाथ की तेज आँख ने उन सबको काट डालना चाहा।

विश्वम्भर डर रहा था।

रामनाथ ने पूछा : हाँ तो, फिर ?

प्रश्न बहुत जटिल था। विश्वम्भर ने कहा : मालिक ! कल गाँव में कुछ अनहोनी बात हो गई,

'जानता हूँ।' रामनाथ ने काट कर कहा : रघुवीर को कहाँ छिपा दिया है ? वह क्यों नहीं आता ?

जग्गी अहीर और ठाकुर भूदेवसिंह अभी बोले नहीं थे। जग्गी ने कहा : मालिक उसे खोजा है ? घर ही होगा।

'उसे पेश करो।' रामनाथ ने कठोर स्वर से कहा : मैं मुजरिम को चाहता हूँ। मुझे औरों से कोई मतलब नहीं। तुम लोग जा सकते हो। घंटे भर में उसे मेरे सामने हाजिर करो।'

जब विश्वम्भर चला गया उसके साथी भी उसके पीछे पीछे ही चले गये। लगा सारी समस्या बड़ी आसानी से सुलझ जायेगी। गाँव वाले जरूर डर गये हैं और अब जाकर तुरन्त उसे पकड़ लावेंगे। रघुबीर को तो जग्गी अहीर पहले से अपना दुश्मन मानता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब प्रतीक्षा करने लगे। नीलकण्ठ ने कहा : मालिक! हम इसलिये चुप रहे। हमारी सौ बात की जगह आपका एक इशारा काफ़ी है। अब हो गया न काम?

रामनाथ के मुँह पर अहंकार की कुटिलता कठोरता से होठों के कोनों पर मुड़ी और फिर सीधी हो गई। और फिर वह चेहरा जैसे पत्थर का हो गया।

किन्तु इसी प्रकार प्रतीक्षा करने वालों की उत्सुकता अब निराशा बन गई। डेढ़ घंटा बीत गया। कोई नहीं आया। न किसी ने आकर कोई समाचार ही दिया। घड़ी की ओर उठते नेत्र फिर शून्य में अटक जाते और रामनाथ के चेहरे की तरफ सब लोग आंशकित से देखकर सिर झुका लेते, उन्हें कोई राह नहीं दिखाई देती। और वे उस साहस पर आश्चर्य करते जो इतनी अवहेलना की अहम्मन्यता रखता है।

रामनाथ क्रोध से कमरे में टहलने लगे। उनकी भृकुटि ऊपर खिंच गई थीं और मुट्ठियाँ बँध गई थीं, यह इसका प्रतीक था कि क्रोध के साथ साथ ही उन्हें किसी प्रकार की चिन्ता ने घेर रखा है।

नीलकंठ के मन में आया प्रस्ताव करें कि किसी आदमी को फिर भेज दिया जाये जो जाकर तलाश तो करे कि क्या बात हुई। जग्गी अहीर और भूदेव सिंह तो अपने ही आदमी हैं, वे अवश्य बता देंगे। परन्तु रामनाथ पर इस सबका जैसे कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता था।

उन्होंने हठात् रुक कर कहा : रामगोविन्द!

'सरकार।'

'कितनी बन्दूकें हैं।'

'हजूर सात हैं।'

'तीन कोठो पर छोड़ दो।'

'जो हुक्म सरकार।' लेकिन.....

'बाकी चार से तैयार होने को कहो।'

'जो हुक्म हुजूर' मगर.....

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ठीक है। मैं चलूंगा।'

नीलकंठ काँप रहे थे। बोले : सरकार जायेंगे ?

'क्यों ? अवस्थी जी ! मैं नहीं जा सकता ?'

'जा क्यों नहीं सकते ? तिवारी जी कहाँ नहीं जा सकते ? पर राजा साहब आपको जाने की क्या जरूरत पड़ गई ?'

'इलाका सरकश हो गया है, तो देखें तो उसमें.....

नीलकण्ठ विस्मित थे। परन्तु तिवारी जी कहते चले जा रहे थे : भी आखिर हिम्मत कितनी है ? और उस हिम्मत का सोत कहाँ है ?

नीलकण्ठ बड़े चक्कर में पड़े। पूछा : सरकार ! मैं भी चलूँ ?

'अगर आपके पाँवों की मेंहदी न घिसे तो आप भी चलें ?'

रामनाथ ने हँस कर कहा।

उनके आदमियों ने शीघ्र ही सब प्रबन्ध किया। चारों बन्दूक वाले बाहर खड़े थे। रामगोविन्द; बिन्देश्वरी सिंह, नीलकण्ठ अवस्थी, रामनाथ और चारों सिपाही चल पड़े। आगे दो बन्दूकधारी सिपाही, फिर बिन्देश्वरीसिंह, फिर रामगोबिन्द, फिर रामनाथ, फिर अवस्थी जी और फिर दो सिपाही। आज रामनाथ मोटर का सहारा लेना नहीं चाहते। अब रिआया उनके हुक्म पर नहीं आती। तो आज वे उसे परख लेना चाहते हैं। लम्बा रास्ता था। सन्नाटा छाया रहा। जब दलबल के साथ रामनाथ गाँव में पहुँचे तो एक हलचल सी मच गई। गाँव के प्रमुख व्यक्ति एकत्र हो गए। गणपति अग्निहोत्री, अलगू दीक्षित, बैजनाथ बाजपेयी, गोवर्धन इत्यादि अनेक लोगों ने उन्हें पालागन किया।

राजा रामनाथ ने व्यंग्य से ब्रह्मणों की पालागन का पालागन से उत्तर दिया और बाकी लोगों को आशीर्वाद। गाँव वालों ने कुर्सी ला कर डाल दी।

'बैठें सरकार,' परमेश्वर ने कहा।

'बैठूँगा नहीं परमेश्वर। पूछने आया हूँ। क्या वजह थी कि तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बात कह आये। रामनाथ ने कहा : और फिर उसका जवाब देना भी जरूरी नहीं समझा ?

'सरकार ! रघुवीर मिले नहीं ।' परमेश्वर ने डरते हुए उत्तर दिया।

'पर मैं उसे ले जाने आया हूँ।'

'वह तो घर पर है नहीं।'

'गाँव में भी नहीं है ?'

इसका किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। तब रामनाथ ने मुस्करा कर कहा : क्यों अवस्थी जी। वह आदमी तो गाँव में ही नहीं है, फिर आप ने उस पर अपनी जमीन कैसे छोड़ दी ?

अवस्थी जी ने कहा :, 'मालिक वह आप के डर से कहीं छिप गया है।'

'छिप गया है, डर से, ?' रामनाथ हँसे।

रघुवीर की स्त्री इसी समय रोती हुई आई और चिल्लाने लगी। उसके रोने के साथ उसकी शिकायत थी कि गाँव वालों के सामने उसकी बेइज्जती की गई।

रामनाथ ने कहा : 'कौन है यह औरत ?'

'आसामी की बीवी है।' अवस्थी जी ने कहा।

'इससे कहो चुप हो जाये ।'

तीन चार आदमियों ने उसे डाँटा पर उसका रोना बन्द नहीं हुआ।

रामनाथ ने गरज कर कहा : जो बीत गया है उसे भूल जाओ। इसी में तुम्हारा कल्याण है। तुम लोगों ने मेरे आदमियों पर हाथ उठाने की जुर्रत की, पर मैंने कहा जाने दो।

धीरे धीरे भीड़ इकट्ठी होती जा रही थी। रामनाथ ने हठात् कहा : यह इतने लोग बेकार क्यों इकट्ठे होते जा रहे हैं ?

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
विन्देश्वरी सिंह ने चिल्ला कर कहा हट जाओ, हट जाओ, सरकार इस भीड़ से नाराज होते हैं।

परंतु भीड़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह जैसे बहुत से गंभीर चेहरों का एक जमघट था।

रामनाथ ने गंभीर स्वर से कहा : 'आप लोगों ने शायद कुछ नहीं सुना। मैं यह जानना चाहता हूँ कि इतनी भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई है।'

भीड़ फिर भी चुप रही।

'तुम नहीं समझते कि मेरा गुस्सा तुम्हें जला कर खाक कर देगा।' रामनाथ ने क्रुद्ध होकर कहा।

रामगोविन्द ने इशारा किया। सिपाही भीड़ और रामनाथ के बीच में आ गये। लगा जैसे कुछ खतरनाक वारदात होने वाली है, जिसका सूत्रपात हो गया है। रामनाथ का चेहरा और भी कठोर हो गया।

चारों बंदूक वाले बैठ गए, उन्होंने बंदूकें कंधे पर चढ़ा लीं।

'क्या चाहते हो ? रामनाथ ने फिर कहा :। मैं हुक्म देता हूँ कि गाँव का मुजरिम मेरे सामने पेश किया जाये, वरना अच्छा नहीं होगा। मैं गाँव की ईंट से ईंट बजा दूँगा।

बैजनाथ बाचपेयी ने उत्तर दिया: तिवारीजी अकेले रह लेंगे ?

रामनाथ के होंठ काँप उठे। उन्होंने धीरे स्वर से कहा : रामगोविन्द !

रामगोविन्द ने बढ़ कर कहा : सरकार !

और अचानक ही सबने देखा इन्द्रभान आगे था। वह भीड़ के आगे था। उसने दोनों हाथ फैला कर कहा : रोक दीजिये। आप बेकार क्रुद्ध हो गए हैं। किसके अपराध का बदला आप किससे लेना चाहते हैं। यह अन्याय नहीं है तो क्या है ? आप निहत्थों पर गोली चलवा कर अपना रुआब डालना चाहते हैं ?

रामनाथ क्षण भर सोचते रहे फिर उन्होंने आगे बढ़ कर कहा : लौट जाओ। अन्याय क्या है यह मैं जानता हूँ। तुम लोग निहत्थे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हो। अगर वे लोग मेरे साथ नहीं होते तो तुम कायरों की तरह मुझ पर पीछे से हमला करते। लौट जाओ। मैं तुम सबको माफ करता हूँ।

भीड़ अब सशंक थी। बंदूक की नली जब घूरती है तब जरा उससे आँखें मिलाते रहना जोखों का काम होता है। गोवरधन भी इन्द्रभान के पास आ गया।

दोनों ओर भीतर की पस्ती ने एक सुलह सी की। रामनाथ के इशारे पर दो बंदूकें झुक गईं। भीड़ तितर बितर हो चली। बाकी दो बंदूक धारी भी उठ खड़े हुए और फिर इन लोगों के अतिरिक्त पास में कोई भी नहीं रहा।

'लौट चलो' रामनाथ ने संक्षिप्त स्वर में कहा।

वे सब चल पड़े। पर हृदय भारी थे!

कोठी पर आकर रामनाथ चिंता में पड़ गये।

क्या यह सब सच था? और उनके दिमाग में सवाल चोट करने लगे···

रघुवीर नहीं मिलेगा·····

गाँव वाले किसी बात का जवाब नहीं देंगे···

यह इन्द्रभान उन्हें हिम्मत बढ़ाता रहेगा···

यह इन्द्रभान···यह इन्द्रभान·····।

—५—

पुलिस!

आखिर पुलिस आ गई। उसने इन्द्रभान की लाश की जाँच के लिये उसे उन्नाव भिजवा दिया। इन्द्रभान के घर वालों ने बहुत चीख पुकार की परन्तु कोई लाभ नहीं निकला। उनसे कह दिया गया कि लाश की चीरा फ़ाड़ी की जायेगी। इससे बड़ा हाहाकार मचा। पर कोई क्या करता। लाश पर साफ छुरों के निशान थे जैसे किसी ने गोद गोद कर हत्या की हो, पर पुलिस तो कानून के साथ चलती है। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri and Sarayu Trust

तलवार के घाव को बिना डाक्टर की रिपोर्ट के कैसे मान ले कि आदमी जहर खाकर नहीं मरा । खुद सरकार की कचहरियाँ पुलिस की ईमानदारी पर यकीन नहीं करतीं ।

दरोगा जी ने रामनाथ को सलाम करके कहा : हुजूर ! ये गाँव वाले बहुत सरकश होते हैं । अभी हाल का किस्सा है, चार-छः आदमी सफेद चादर से ढँक गाँव के बीच घुमाते हुए एक लाश ले आये । चादर पर खून के छींटे थे । मेरे सिपाही ने चादर हटा कर लाश को देखा तो लाश उठकर बैठ गई और जुहार करने लगी ।

रामनाथ ने मुड़ कर घूरा ।

'जी हाँ राजा साहब ! वह आदमी जिन्दा था, उसे ढँक कर उठा लाये थे ताकि मुकद्दमे में कहा सके कि फलानों से अदालत हुई तो एक आदमी मारा गया । सारा गाँव जानता है । दारोगा जी ने रिपोर्ट नहीं लिखी जरूर दूसरी पार्टी से रिश्वत खा गये होंगे ।'

रामनाथ मुस्कराये ।

'अजी न पूछिये हुजूर' दरोगा जी कहते रहे, 'गाँव के तो चौकीदार तक बड़े बदमाश होते हैं । अभी एक हफ्ते की बात है, साहब परेड देखने आये थे, तो एक चौकीदार काँख में एक मुर्गा दबाये खड़े थे । जब मुर्गा ने बाँग दी तो साहब ने पूछा । बोला : मुंशी जी ने मँगाया था । बेचारे मुंशी जी ने उससे अंडों का इंतजाम करने को कहा था । मैं हुजूर इन्हें खूब जानता हूँ ।

चालें होने लगीं ।

इद्रभान का खून किसने किया ? दरोगा जी ने सारे गाँव वालों को हर तरह के लालच दिये, डराया, धमकाया, पर जब गाँव वालों से पूछा जाता तो वे उल्टे बिगड़ जाते । कहते—जिसे हम इतना चाहते थे, अपना समझते थे, उसके लिये हम पर ही शुबहा किया जा रहा है । बड़ी ज़ोर की रही !!

परन्तु रामनाथ का सिर भारी था । वे समझ नहीं पा रहे थे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
दरोगा की चतुराई पर उन्हें विश्वास था। वह ज़रूर गाँव वालों को दबा लेगा। पुलिस के डंडे में ज़ोर होता है। यह दहकानी भला बिना जूते के सीधे हो सकते हैं! लेकिन इनमें इतनी हिम्मत आ कहाँ से गई;

क्या यह हर साल की परेशानी हो गई? क्या अब ज़रा ज़रा सी बात के लिये यही फौजदारियाँ दुहराई जायेंगी? रामनाथ सोचने लगे। यह गँवार लोग मुकद्दमों के इतने शौकीन क्यों होते हैं? लिया और कचहरी दौड़ गये। समर्थ से टकरा कर बरबाद क्यों होना चाहते हैं? क्या इस वैभव के लिये प्रति वर्ष एक हत्या की आवश्यकता है? पार-साल परमेश्वर ने निर्जल भूख हड़ताल की और मर गया। उसके बाद झगड़ू मिसिर का भी अंत हुआ। इस साल अभीतक इंद्रभान मर चुका है। और अब.....

हत्या.....

हत्या और वैभव.....

परन्तु विचार अधिक नहीं चला। संवाद आया कि कुरकी हुई और लोग खरीदने लगे। लगान बंदी को तोड़ने का और कोई उपाय नहीं। जिस बात का ख़तरा था कि लोग ख़रीदते हुए डरेंगे, वह ग़लत साबित हुआ।

इस पर गाँव वालों की अहिंसा ज्यादा नहीं चली। लोग क्रुद्ध होने लगे। उनके देखते ही देखते कुर्क अमीन बोली बोलने लगा और राम-नाथ के आदमियों की शह पाकर कुछ ठाकुर जो बौहरों के हाथ ज़मीन खो चुके थे इस समय आगे बढ़ आये। गाँव वाले इसे नहीं सह सके।

दरोगा इसी की ताक में था। वह सुना रहा था कि एक बार बादशाह ने परेशान होकर मुंशी जी से पूछा: क्या हुआ? लगान नहीं देते; मुंशी जी ने कहा—हाँ सरकार! 'तो फिर तुम्हें मालूम केसे हुआ; बादशाह ने पूछा। मुंशी जी ने कहा: सरकार। मुझसे तो साईस ने कहा था। फिर साईस बुलाया गया। मालूम हुआ लगाम नहीं देता...

और फिर एक अट्टहास पर गूँजा: पहिली बोली.....चुप से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
किये इशारे पर तुरंत सिपाहियों ने हट कर रास्ता साफ़ कर दिया। एक गाँव वाले ने आवाज़ लगाई : तोड़ी बच्चा...

समूह चिल्लाया : हाय हाय...

पुलिस चौकन्नी हुई।

खरीदारों में से दो बढ़े और चिल्ला कर बोले सँभाल कर बात करो वर्ना...

वर्ना क्या.....

गाँव वालों में लट्ठ बजने लगे। न रघुवीर था, न चित्तप्रसाद। हाँ गोवर्धन था, पर उसे कुछ लोगों ने पीछे रोक लिया था, पकड़ लिया था, क्योंकि वह बीच-बचाव करने बीच में कूद पड़ना चाहता था! एक बूढ़े ने समझाया : जब दो साँड़ लड़ते हों तो बीच में पड़ना अकलमंदी नहीं होती। और लाठी चलने की वह भयानक आवाज़ एक पुरजोश जुनून से भरी हुई थी। ज़मींदारी के आदमी अच्छे लठैत थे, पर अब वे भीड़ का मुकाबला नहीं कर सके। वे पीछे हट चले जैसे अब वे भाग जायेंगे।

उस समय दरोगा ने गोली चलवा दी। ठीक समय पर अमन के रखवाले ने काम किया। एक बार को जैसे कई शिकारी कुत्ते भयानक स्वर से चिल्ला उठे और उनका कर्कश स्वर हवा में गूँज उठा।

भीड़ भाग चली। कुड़की का काम भी अधूरा ही रह गया।

खरीदारों में से एक के पाँव में चोट आई और चलवाईयों में कई गिरे पर फिर भीड़ नहीं आई। उसका साहस टूट गया था। घायलों में से ज्यादातर ग़रीब तबके के किसान थे, जो केवल खेतिहर मजूर थे। उनकी सहानुभूति इस समय लुटने वाले किसानों के साथ थी। आखिर उनकी हालत में ऐसा फ़र्क़ ही कौन ज्यादा था।

दारोगा प्रसन्न था। उसने ठीक समय पर उचित चोट की थी। वह सीधा रामनाथ के पास पहुँचा।

इस संवाद को सुन कर लगा रामनाथ हर्ष से पागल हो उठेंगे। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस गंभीर परिस्थिति को समझने में उन्हें देर नहीं लगी। गाँव में अब दुश्मनी पैदा होगई है। स्वर्गीय पिता ने जिस ख़तरे को दूर कर दिया था आज वही फिर पैदा हो गया है। उन्होंने रामदीन को बुला कर पूछा : क्यों रामदीन ! कोई मरा तो नहीं न ?

'नहीं मालिक, सिर्फ घायल हुये हैं।'

'हूँ', रामनाथ ने भारी हृदय से कहा।

यह सब आराम देह नहीं था। यह सब ठीक नहीं हो रहा था। इसमें कहीं न कहीं कुछ ग़लत था, हृदय को संकित करने वाला था। उन्होंने रामदीन से कहा : जाओ।

रामदीन चला गया।

साँझ का धुँधलका बढ़ चला। कितना भारवाही कितना उदास। कितनी उलझन इसमें घुटी जा रही है, जैसे जैसे झोपड़ियों से निकला घुमड़ता धुँआ इसमें मिलता जा रहा है। और यह रूप आज से नहीं अनेक वर्षों से ऐसे ही चलता रहा है।

रात हो गई। सन्नाटा छा गया। आस्मान में तारे भी बहुत हल्के हल्के-से छिटके हुए थे। कोठी की बत्तियां बुझ चुकी थीं, केवल कभी कभी बाहर चौकीदार का भारी भर्राया स्वर—'जागते रहो'—गूँज उठता था और फिर पहरेदार सिपाही के भारी जूते की खट खट सुनाई देती थी।

एकाएक रामनाथ चौंक उठे। सिपाही ज़ोर ज़ोर से पुकार रहा था।

क्या हुआ ? रामनाथ पलँग पर उठ बैठे। रामदीन सोगया था। उनका हाथ सिरहाने तकिये के नीचे रखी पिस्तौल पर चला गया। जीवन का भय कितना मुखर था ! कितना शाश्वत !!

बाहर सिपाही ने गोली चला दी।

रामनाथ बाहर आगये। ज़ोर से पुकारा : कौन है ?

सिपाही आवेश में था। उसने कहा : हुजूर मेरी आवज़ पर भी नहीं बोले। लाचार गोली चला दी। भाग गये...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कोई मरा ?'

'नहीं, कोई नहीं मरा सरकार' सिपाही ने कहा। वे निकल गये। अँधेरे में कहीं आड़ में हो गये।'

'कौन थे ?'

'हुजूर चोर होंगे।'

'चोर !!' रामनाथ के मुँह से निकला।

रामनाथ की आँखों में एक भयानकता छा गई।

'आज तक कभी चोर आया है ?' उन्होंने कड़क कर पूछा।

इस समय रामदीन जाग कर आ गया था। रामनाथ ने फिर पूछा।

सिपाही ने उत्तर दिया : 'नहीं हुजूर।'

'फिर ?'

'शायद कोई दुश्मन होंगे।'

वे इसके बाद सो नहीं सके। वे आकर पलंग पर बैठ गये। रामदीन उनके पास आकर खड़ा हो गया। रामनाथ ने कहा :

'रामदीन !'

'मालिक !' रामदीन ने बत्ती जला कर कहा।

'लोग हमारी जान के प्यासे हो गये हैं।'

रामदीन थर्रा गया। अवाक् दृष्टि से उसने मालिक की ओर ऐसे देखा जैसे आपकी ? क्या यह भी दुनियाँ में हो सकता है। असंभव !!

रामनाथ ने कहा : देखो। दरवाजे बन्द हैं ?

'मालिक' मैंने अपने हाथ से बन्द किये हैं।'

'ठीक है।'

एक ही अक्लमंदी की कि वे अकेले ही आये। महालक्ष्मी कहती रही पर वे उसे नहीं लाये। इस बार उन्होंने इल्लत समझ कर टाल दिया था, पर यह तो अच्छा ही साबित हुआ। अगर कहीं वह होती तो इस समय डर गई होती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामनाथ का क्रोध उनमें विक्षोभ बन गया। गाँव वालों की इतनी मजाल !! यह कमीने !! मेरा खून !! एक एक की खाल खिंचवा दूँगा !! यही है इनकी अहिंसा !!!

सुबह रामनाथ ने दो बन्दूक वाले सिपाही साथ लिये और मोटर में बैठ कर सत्यनारायण को उन्नाव चलने की आज्ञा दी। मोटर धूल उड़ाती हुई चली गई।

अलगू दीक्षित ने सुना तो विश्वास नहीं हुआ। क्या रामनाथ ऐसा कर सकते हैं। वे तो बड़े पक्के आदमी समझे जाते हैं। इतनी जल्दी कैसे मोच खा गये ? जरूर कोई चाल होगी वर्ना वे सहज मानने वाले नहीं। गाँव वालों में जब यह संवाद पहुँचा उनकी हिम्मत बढ़ी। रामनाथ भाग गये ? अब दरोगा भी लौट ही जायेगा।

बैजनाथ बाजपेयी ने गर्व से कहा : सारे गाँव से टक्कर लेना क्या कोई खेल है ?

पर लोगों के भीतर ही भीतर एक शंका थी कि अब क्या होगा।

और गोवर्धन ने देखा सामने से मार्कण्डेय चला आ रहा है। उसने कहा : आगये ? उसके होठों पर एक तिक्त व्यंग था।

मार्कण्डेय समझा नहीं। उसने कहा : तिवारी जी तो उन्नाव में नहीं थे। आ गये हैं ?

'हाँ', गोबरधन ने कहा—'कुछ सुना है ?'

'नहीं तो।'

'इन्द्रभान की हत्या हो गई।'

'हत्या !' मार्कण्डेय घबरा कर बैठ गया। कुछ देर बाद उसने सिर उठा कर पूछा : लेकिन कुछ कहो भी क्या हुआ ?

'जो होना था हो चुका। और शायद अभी बहुत कुछ बच रहा है।

मार्कण्डेय ने सारा किस्सा सुना तो वह भौंचक रह गया। इतनी जल्दी, इतना सब कैसे हो गया ! तिवारी जी से वह मिलने उन्नाव गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
तो वे यहाँ आ गये और जब वह यहाँ आया तो वे फिर लौट गये, अब ? लेकिन वे गये कहाँ होंगे ? मार्कण्डेय को यह सोचते देर नहीं लगी कि वे किसी बड़े अफसर के पास गये होंगे ताकि अच्छी तरह दमन कर सकें।

और उसके कानों में इन्द्रभान के शब्द गूँजने लगे.....

कानून !

यह कानून गरीबों का खून चूसता है। आजाद हिन्दुस्तान में सब से पहले इस कानून को बदलना होगा जो न्याय के नाम पर इन्सानियत का गला घोंटता है। वह आदमी को जानवर बनने के लिये मजबूर करता है.....

यह वैभव।

मार्कण्डेय ने कहा : कुछ पता नहीं लगा कि हत्या किसने की ?

'नहीं', गोवर्धन ने सिर हिला कर उत्तर दिया।

और यह किसान ! फिर मार्कण्डेय ने पूछा, 'किसी पर तुम्हारा शक है !'

'हो तो क्या है।' गोवर्धन ने व्यंग्य से कहा।

'आखिर ?' मार्कण्डेय ने उत्सुकता से पूछा और फिर विचार आया.....

ये पिसे हुए लोग परन्तु गोवर्धन ने कहा : दुश्मन तो तिवारी जी के सिवाय और नहीं था।

'तो क्या तुम्हारा मतलब है तिवारी जी ने.....

गोवर्धन ने उत्तर नहीं दिया। उसकी आँखें चमकीं और उनमें फिर भाव आया जैसे—मुझे क्या मालूम.....

मार्कण्डेय को सोचते सोचते सांझ हो गई। जब वह रामनाथ की कोठी पर पहुँचा, मालूम हुआ वे अभी तक नहीं लौटे हैं। वह उद्विग्न हो उठा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ढेर सारी धूल का गुब्बार उड़ाती हुई मोटर कोठी के सामने के बाड़ा में आकर खड़ी हो गई। सत्यनारायण ने उतरकर फुर्तीसे दरवाजा खोल दिया।

रामनाथ लौट आये। जो कुछ वे चाहते थे उसे पूरा कर आने के कारण उनके चेहरे पर कठोरता बढ़ गई थी। उन्हें इज्जत मिली और डिप्टी कमिश्नर ने उनकी मर्जी के अनुसार पुलिस भेजने का वादा किया।

मार्कण्डेय उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'मैं तिवारी जी से जाकर मिलता हूँ।'

गोवर्धन ने अविश्वास से देखा। मार्कण्डेय मुस्कराया जैसे उसने कहा कि तुम अभी अविश्वास ही कर रहे हो और मैं जीत कर ही लौटूँगा।

गाँव की नाकाबंदी हो गई। चारों तरफ से गाँव घेर लिया गया। गाँव वालों में आतंक छा गया। मार्कण्डेय उस समय तिवारीजी के द्वार पर खड़ा था और रामदीन कह रहा था : इस वक्त सरकार नहीं मिल सकते बाबूजी। उन्होंने मना कर दिया है।

'तुम एक बार', मार्कण्डेय ने कहा : उनसे मेरा नाम तो कहो।

'कह दिया सरकार, दो बार कह दिया।'

मार्कण्डेय लौट आया।

सफलता से कुरकी होने लगी। अमीन घरों के सामान बाहर निकलवा कर बोली बोलता था और रामनाथ के आदमी गुट बनाकर सस्ते बोल बोलते थे। इस प्रकार यह कांड हो रहा था। बैल भी बिके, गायें, भैंसें भी हँकने लगीं। अपने घर की प्यारी चीजें बाहर ला ला कर रखी जा रही थीं। अमीन के होठ बार बार खुलते थे और बार बार बन्द होते थे।

नीलकण्ठ अवस्थी घर ही रहे। उनकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बाहर जाकर वे भी खरीद-फरोख्त करते। कभी कभी अफसोस होता था कि इतना सस्ता माल बिक रहा है। उन्हें लगा जैसे उन्हीं का नुकसान हो रहा था। बंसी बीच बीच में आकर खबरें दे जाता था। उससे और हूक उठती थी।

गाँव वाले देखते थे और दाँत पीसते थे कि उनके देखते ही देखते उनके घर लुट रहे थे। पर क्या कर सकते थे। अब क्या चारा था ? यदि वे इस समय हमला करें तो जिन्दगी का पूरा खतरा था। किसमें इतना साहस था कि बीच में आकर कुछ कहे। स्त्रियाँ भीत सी रो रही थीं। पुरुष चुप खड़े थे क्योंकि अनेक सिपाही बन्दूक भरे खड़े थे।

बन्दूक !

पहली बोली...एक, पहली बोली...एक...

दूसरी बोली...

तीसरी बोली...

ले जाओ...

और फिर कुछ फुसफुसाहट जैसे कुछ नहीं हुआ।

इसी प्रकार दिन ढल गया। भीड़ छँट गई। सब लोग छोटे छोटे झुण्ड बनाकर बातें करते रहे फिर अलग अलग हो गये और एक डरावनापन छा गया।

शाम को अचानक ही दरोगा जी ने गाँव पर हमला किया। कोई भी इस समय तैयार नहीं था। इस समय कुछ नौजवानों को गिरफ्तार कर लिया गया। वजह भी नहीं बताई गई। दरोगा जी कैदियों को लेकर थाने चले गये। दहशत बढ़ गई। घर चुप पड़े थे, सड़कों पर सिर्फ कुत्ते भूकते थे, कहीं आदमी दिखाई नहीं देता था।

प्यास से व्याकुल होकर एक चमारिन ताल से पानी भर लाने बाहर चली। जब वह बस्ती के बाहर की तरफ चलने लगी उसके पाँव डरे हुये पड़ते थे। उस औरत को एक सिपाही ने पकड़ लिया और उसे टँगड़ी मार कर नीचे गिरा लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इससे पहले कि वह चिल्ला सके उसने उसका मुँह बन्द कर लिया। गाँव के लोगों को पता नहीं चला। सिपाही उसे उठा ले गये।

कभी कभी अंधेरे में गोली चलने की आवाज आती थी। कुत्तों की भूँक का कर्कश स्वर चुनौती देता था अंधेरे में छटपटाता और फिर कभी कभी भारी बूटों की आवाज सुनाई देती। औरत अंधेरे ही भगा दी गई थी। सुबह लोगों ने देखा वह छोड़ दी गई थी। किन्तु वह बोलती नहीं थी। केवल रोती थी और इसका कारण समझ लेना कठिन नहीं था।

'क्या हुआ ?' गणपत अग्निहोत्री ने पूछा।

स्त्री ने उस समय उन्हें पाँवों को पकड़ कर उन पर सिर रख दिया और फूट फूट कर रोने लगी। अग्निहोत्री इस दुर्घटना के कारण भीतर ही भीतर काँप उठे।

परन्तु इससे उत्तेजना बढ़ गई थी। देखते देखते सिपाही एक स्त्री को उठा ले गये। सारे गाँव की नाक पर उन्होंने रात भर मूँग दला, इज्जत लूटी गई। औरतों ने अपने मर्दों की ओर सशंक नेत्रों से देखा, जैसे क्या यही, क्या यही...

दूसरे की औरत और घर की औरतों में बड़ा फर्क होता है। अपने घर में सभी सती का निवास मानते हैं।

गाँव वाले इकट्ठे होने लगे। इस समय ठाकुर भूदेव सिंह और जग्गी अहीर भी इसी भीड़ में इकट्ठे थे। उनके चेहरों पर भी जैसे किसी ने कालिख पोत दी थी। वह स्त्री हाल में ही विधवा हो गई थी। उसका कोई भी रक्षक नहीं था। तो क्या गाँव का साहस यही है ?

बैजनाथ वाजपेयी ने कहा : पंडितो ! क्या सारे गाँव को यही नतीजा देखना पड़ेगा ?

किसी ने उत्तर नहीं दिया। सब ने घुन्नाकर एक दूसरे की ओर देखा, जैसे वे सब कुछ सह सकते थे, पर यह नहीं। दूसरी ओर वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
लोग भी थे जो चमारिन के साथ हुए दुर्व्यवहार में कोई विशेष अपमान का कारण नहीं समझते थे क्योंकि चमारिन की क्या इज्जत !

गणपति अग्निहोत्री इसी विचार धारा के व्यक्ति थे परन्तु गाँव में हवा पल्टी हुई थी। इस समय कुछ भी कह कर अपने ऊपर जिम्मेदारी लेना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने पास खड़े अलगू दीक्षित से कहा : क्यों पंडित लोगो ! क्या राय हुई ? क्या गाँव में पहले भी ऐसा कभी हुआ ?' उसके स्वर में भर्राया हुआ अविश्वास था।

अलगू दीक्षित ने गम्भीरता से मूँछों पर हाथ फेरते हुए कहा : कभी पहले समर्थ से टक्कर नहीं ली थी। जो न हो थोड़ा हो। गोली खाया शेर क्या नहीं करता ? पूरे जोर से झपटता है।

बात कानों में घूमने लगी।

अन्त में निश्चय हुआ कि रामनाथ तिवारी से ही जाकर मिला जाये। उन्हें स्त्रियों की इज्जत से क्या बैर हो सकता है ? लगानबन्दी अलग चीज है। तभी तक लगान बन्द है जब तक विदेशी का राज है। जब विदेशी नहीं रहेगा तब यह झगड़े थोड़े ही रहेंगे।

राय पक्की रही।

गणपति अग्निहोत्री, अलगू दीक्षित, बैजनाथ बाजपेयी, रघुवीर, चित्तप्रसाद, गोवर्धन तथा परमेश्वर कोठी की ओर चल पड़े। उनके, मुखों पर गम्भीरता थी। कोठी के बाहर ही सिपाहियों ने रोक कर आने का कारण पूछा। इन्होंने उत्तर दिया—सरकार से अरज करने आये हैं। सिपाही ने राह दे दी।

तिवारी जी बरामदे में मिले। उन्होंने सबको सामने बैठने को तख्त की ओर इशारा किया, पर वे लोग खड़े रहे। तिवारी जी ने तनिक भी बुरा नहीं माना।

अलगू दीक्षित ने कहा : तिवारी जी मालिक हैं, तभी हमने आपका द्वार देखा।

तिवारी जी ने कहा : मालिक कौन है ? आपने गाँव में आग भड़का रखी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हमने नहीं सरकार, वह लोग और हैं। उन्हें हम नहीं जानते पर आज गाँव में बहू बेटियों की इज्जत लूटी जा रही है। इन सिपाहियों ने रात को एक औरत को बेइज्जत किया।

तिवारी जी ने भौं तरेर कर कहा : किसकी इज्जत बच रही है आज ? सारा गाँव ऊधम कर रहा है। कुछ बेवकूफों ने जाहिल देहातियों को बरगला दिया है और वे समझते हैं कि वे बगावत करके मेरी इज्जत को बरबाद कर सकते हैं ? तिवारी जी हँसे। उस हास्य में एक कर्कशता थी।

'तो सरकार आपकी यही मर्जी है ?' अलगू दीक्षित ने फिर कहा।

तिवारी जी ने इस बात का उत्तर नहीं दिया। पर मुख पर एक कठोरता ही दिखाई देती थी। अब प्रश्न करना व्यर्थ था। अब जीवन की निर्ममता का भयानक रूप सामने आ गया था।

आने वाले सिर झुका कर लौट चले पर चलते चलते अग्निहोत्री ने दबी जबान से कहा : तो तिवारी जी इन बहू बेटियों की इज्जत के बल पर आपकी इज्जत नहीं सोभा देगी। यह सौदा बहुत महँगा है। गाँव के लोग इसलिये नहीं आये थे कि वे अपना रोना रोयें, पर आपको गाँव का राजा समझा था। गाँव की बहू बेटियों को हमने आपकी भी बहू बेटी के समान समझा था, पर अब आपकी यही इच्छा है तो भगवान की भी यही होगी ?

तिवारी जी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

इसी समय संवाद आया कि मार्कण्डेय गिरफ्तार कर लिया गया। गाँव वाले चौंक उठे। यह तो अहिंसक था। तिवारी जी ने उससे भी भेंट नहीं की थी, यह लोग जान चुके थे। फिर !

तिवारी जी ने सुना तो रामदीन से कहा : झगड़ू मिसिर का बेटा है !

'जी हाँ मालिक !'

'गिरफ्तार हो गया !'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हाँ सरकार !

और फिर एक नया संवाद आया। पुलिस गाँव वालों से जुर्माना वसूल कर रही थी।

तिवारी जी ने कहा : रामदीन ! गाँव वाले रुपया दे रहे हैं ?

'सरकार वे कुरकी से घबरा गये हैं।'

'फिर क्यों इतनी अकड़ दिखा रहे थे ?'

'नादानी थी मालिक। गांधी महातमा का असर हो गया था।'

रामनाथ चुप हो गये। उनके भीतर एक अजीब सी हलचल मच रही थी। एकाएक पूछा : लोग हमें गाली देते हैं ?

रामदीन ने दबी आवाज से कहा : इतनी हिम्मत नहीं सरकार।

आज रघुबीर गिरफ़्तार कर लिया गया था। कल गोवर्धन पकड़ा गया था। गाँव का मनोबल टूट रहा था। पुलिस जबर्दस्ती रुपया लेती थी। मारती थी। एक का तो घुटना तोड़ दिया। दो को पेड़ से लटका कर मार मार कर अधमरा कर दिया। गाँव के इज्जतदार आदमियों को दरोगा ने खुले खजाने बुरी बुरी गालियाँ दीं। घरों में घुस घुस कर तलाशियाँ लीं और पर्दा बेपर्दा का भी सवाल नहीं रखा। घर की औरतों पर भी कहीं कहीं हाथ डाला गया। सारा गाँव त्राहि त्राहि कर रहा था। शहर कांग्रेस को खबर देने जो लोग भेजे गये थे, वे रास्ते में गिरफ़्तार कर लिये गये।

और नीलकंठ अवस्थी ने जब सुना कि लोग लगान देने को तैयार हैं तो तुरन्त रामनाथ के सामने जा पहुँचे। कहा : सरकार विजयी हुए हैं। सारा गाँव झुक गया है। किसी में हिम्मत नहीं कि सिर उठा सके। सब भीगी बिल्लियों की तरह काँप रहे थे।

उनके स्वर में आवेश था। ऐसे कह रहे थे जैसे अपने गुणगान कर रहे थे, जैसे जो कुछ हो रहा था, वह सब उन्हीं के कारण हो रहा था। राजा रामनाथ को झुँझलाहट हुई। अवस्थी जी कहे जा रहे थे : सरकार ! गाँव हिल गया है। वह वह मार लगी हैं कि बदमासों की सात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीढ़ियाँ काँप गई हैं। एक चमारिन के पीछे हाय हाय करते थे अब सारे गाँव की मेहरियों की इज्जत धूल में मिल गई...

अवस्थी जी के स्वर का आनन्द रामनाथ से छिपा नहीं रहा। उन्हें और भी क्रोध आया। वे अवस्थी की असलियत को देखकर अत्यन्त अप्रसन्न हुए थे। अवस्थी जी शायद अभी बहुत कुछ कहते पर एका-एक उन पर वज्रपात हो गया। रामनाथ ने आँखें उठाकर देखा, और एक दम उन्होंने कठोर स्वर से कहा : अवस्थीजी !

अवस्थीजी मशीन की तरह बन्द हो गये। समझे नहीं।

रामनाथ ने कहा : लगान दे दिया गया ?

'हाँ सरकार।'

'कोई गड़बड़ नहीं !' उन्होंने अविचलित स्वर से कहा।

'नहीं सरकार।'

'तो दरोगा जी से कहला दीजिये, गाँव की इज्जत हमारी इज्जत है।'

'ऐ सरकार !!' अवस्थी जी ने चौंककर पूछा।

'आपको कुछ एतराज़ है ? अगर हो तो हमारे सामने अर्ज किया जाये।'

अवस्थी भीतर ही भीतर थर्रा गये। बोले : सरकार ! मुझे ? मेरी क्या हैसियत कि .....

उनका गला रुँध गया। वे बोल नहीं सके। चुपचाप चले आये।

रामनाथ कमरे में टहलने लगे। क्यों न जाने इस विजय से प्रसन्न नहीं थे। रामदीन ने आकर सूचना दी कि दरोगा जी आये हैं।

'कहिये' रामनाथ ने कहा—'काम ठीक चल रहा है ?'

'सरकार लगान तो अदा कर दिया गया।'

'गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं ?'

'नहीं सरकार अब तो रुक गई हैं।'

दमन समाप्त हो चुका था। अब वास्तव में ज़रूरत भी नहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामनाथ ने फिर कहा, 'और जो गिरफ़्तार किये गये हैं उनका क्या कीजियेगा ?'

'उन पर मुकद्दमे चलेंगे।'

रामनाथ ने फिर कहा, 'जुर्माना वसूल हुआ ?'

'जी हाँ सरकार ! हुआ।'

रामनाथ आगे बढ़े ! दरोगा की पीठ ठोंक कर कहा : मैं आपके बारे में डिप्टी कमिश्नर से बात करूँगा।

'हुज़ूर की मेहरबानी है।' दरोगा ने झुककर कहा।

पुलिस लौट गई थी। अब वे लूट के भेड़िये चले गये थे। गाँव ने एक चैन की साँस ली जैसे सीने में ठुकती हुई कील आज निकल गई थी। औरतों के चेहरों पर एक दुख भरी छाया अंतिम बार डोल कर निकल गई। लेकिन अनेक घर तबाह हो चुके थे। माल बिक गया, बैल बिक गये थे, जिन औरतों पर पुलिस के हाथ पड़ गये थे, उन पर जैसे अपमान की छाप अभी तक बची रह गई थी। और घर-घर से ज़बर्दस्ती निकलवाया हुआ माल अभी तक कसक रहा था।

और गाँव फिर उसी तरह चल रहा था। फिर वही उदास हलचल अपनी कशमकश करने लगी थी। बहुत दिन बाद आज नीलकण्ठ अवस्थी प्रसन्न दीख रहे थे। चित्तप्रसाद फिर गाँव छोड़ कर चला गया था। अब गाँव में कोई नेता नहीं था। उन्हें लगा जैसे जो कुछ किया उसमें कहीं कुछ ग़लती ज़रूर रह गई थी। अवस्थीजी ने अलगू दीक्षित और बैजनाथ बाजपेयी को सुना सुना कर कहा : भाई राजद्रोह से कभी कोई बचा है ? कोई नहीं.....

आज न किसी में उनकी बात का उत्तर देने की ताब थी, न पूरी सुनने की।

मैदान साफ़ था, उन्होंने बहुत दिन बाद आज सुस्थिर होकर सकिन के घर की तरफ़ नज़र फेंकी और अपनी सुमिरनी फेरने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आस्मान में सूरज उतर चला ! कुछ देर उसने मोरछली के पेड़ के पैरों को पकड़ कर छाया को पकड़ लेना चाहा पर वह भी घूम कर लंबी हो गई, और फैलती चली गई, फैलती चली गई।

रामनाथ अपने बाग़ में खड़े सोच रहे थे। पौधों में माली पानी दे रहे थे। एकाएक उन्हें याद आया। उन्होंने आवाज़ दी रामदीन !

'सरकार !'

'रामगोविन्द को बुला।'

रामदीन चला गया। कुछ देर बाद रामगोविंद ने आकर सिर झुकाया। तिवारी जी ने पूछा : झगड़ू मिसिर का लड़का गिरफ़्तार करवाया था,

'जी हाँ सरकार।'

'क्यों ?'

'सरकार' उनकी गाँव वालों को शह थी।'

'हूँ।' रामनाथ ने कहा : अब तो गाँव वालों में सत्याग्रह का हौंसला नहीं रहा।

'सरकार' दो साल तक नहीं।'

'तो जाकर उसे छुड़वा दो।' और फिर धीरे से कहा : 'इसी के बाप ने हमारे लिए अपनी जान दे दी थी।

लौटते समय जिधर से वे निकले उधर ही से लोगों ने उन्हें सिर झुकाया। अदब से उनको पालागन की। रामनाथ को यह सब जाने क्यों एक बाहरी दिखावा सा लगा, जैसे यह सब झूठ था, इसमें कोई असलियत नहीं थी। परन्तु अपनी उत्तेजना पर मन ही मन लज्जित हुए। इसमें ठीक न होने वाली कौन सी बात है ? ग़लती किससे नहीं होती ग़लती की थी उसकी सज़ा पा गये और अब फिर अपने ठीक रास्ते पर आ गये।

घर पहुँच उन्होंने अपना गौरव अनुभव किया।

रात हो गई थी। अब रात का अंधेरा उन्हें एक स्वाभाविक बात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दिखाई दी। दिन के बाद साँझ, साँझ के बाद रात। और रात के बाद फिर भोर.....

एक परंपरा, एक सुखमय परंपरा.....

जो जैसा होता आया है वही होता जायेगा.....

नींद आ गई, अच्छी आई, क्योंकि हवा जँगलेदार खिड़की में से आ रही थी, और बड़ी सुखद थी। आज बहुत दिन बाद वे आराम से सो पाये हैं, वर्ना रोज़ लगता था जैसे सिर में पत्थर फँस गया है; वे विचार आँधी की तरह आकर वेग से टकराते थे, और रामनाथ भागे जा रहे थे, बेबस से, जैसे भागती रेल में चलते मुसाफ़िर की आँखों में कोयला गिर कर करक रहा हो।

और उपचेतन के स्तर अब मुखर हो गये।

उन्हें लगा इन्द्रभान पास खड़ा हँस रहा था।

कौन? इन्द्रभान !!

क्या कहता है?

रामनाथ डर गये हैं! यह तो मर गया था !!

'क्या मैं मर सकता हूँ?' इन्द्रभान का प्रश्न गूँज रहा है।

और फिर एक हास्य।

रामनाथ काँप रहे हैं। वे चिल्लाना चाहते हैं पर गला रुँध गया है, स्वर बाहर नहीं निकल पा रहे।

उन्होंने आँख खोलकर देखा। सुबह हो गई थी। वे पलंग पर उठ बैठे। एक एक कर रात की घटनाएँ याद आने लगीं। पलकों में एक भारीपन था। क्योंकि रात कुछ बेचैनी से कटी।

उठकर बाहर आये।

रामदीन ने कहा: सरकार से भगडू मिसिर के लड़के मिलने आये हैं।

'कौन मार्कंडेय?' रामनाथ ने कहा।

'हाँ सरकार।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार्कण्डेय को देख कर तिवारी जी ने कहा : क्यों मार्कण्डेय अच्छे तो हो ?

मार्कण्डेय ने देखा। यह परिवर्त्तन !! वह आश्चर्य्य से भौंचक सा देखता ही रह गया। वह जाने क्या क्या न कहना चाहता था, पर इस समय जैसे सब कुछ भूल गया।

सातवाँ परिच्छेद

—१—

खाँसते-खाँसते दम फूल गया। आँखें बाहर निकल पड़ीं। चेहरा लाल हो गया, परंतु खांसी नहीं रुकी। कुछ देर जब चैन आया, आँखें पोंछकर तकिये के सहारे बैठ कर आँखें बंद कर लीं और शांति ने फिर कमरे को घेर लिया। कुछ आवाज़ सुनाई दी। आँखों को कुछ खोलकर देखा। डाक्टर आया था। उसके साथ नीरा थी। उमानाथ ने देखा उसके चेहरे पर परेशानी थी। डाक्टर ने जाँच की। पीठ, सीना सब पर स्टेथेस्कोप लगा कर देखा। फिर उसने पूछा : कितने दिन से खाँसी है।

नीरा खड़ी थी। बोली : मेरे ख़याल से आज साल भर हो चला। दस ग्यारह महीने तो निश्चय ही। पहले कम खाँसते थे। पर इधर कुछ महीनों से हम लोग यात्रा में रहे हैं तब से बहुत बढ़ गई है। तन्दुरुस्ती उसी से गिर गई है।

डाक्टर सोच रहा था। बोला : मालूम देता है शराब बहुत पीते हैं ?

नीरा झिझकी। फिर कहा : मना करने से मानते नहीं। कहते हैं जो होगा देखा जायेगा। मैं इसे नहीं छोड़ सकता।

डाक्टर के माथे पर बल पड़ गये। नीरा ने पूछा : कोई ऐसी नज़रकीब हो कि छोड़ दें। पिये ही नहीं। अपने आप नफ़रत हो जाये ?

डाक्टर मुस्कराया। मोटा आदमी था ऐसा कि कमर की पेटी पेट के ऊपर बाँधता था, पतलून के लिये उसके पास कमर थी ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
देखने को खुरदुरी सी थी। (इस समय वह लगा जैसे कोई भौंट आकर मुस्करा रही हो। उमानाथ को देखकर) कहा : सुना आपने ? आपकी पत्नी क्या कहती हैं ? छोड़ दीजिये न।'

उमानाथ, 'बहुत कठिन काम है।'

नीरा : सब कोशिश कर चुकी हूँ। पहले बोतल छिपा देती थी। बहुत नाराज़ होते थे। मारपीट पर उतर आते थे। वह फिर मुस्कराई।

डाक्टर ने उमानाथ से कहा : आप क्या काम करते हैं।

उमानाथ : पहले एक थ्येटर चलाता था। जब शरीर ने काम नहीं दिया और आमदनी बंद हो गई, सब एक एक करके छोड़ गये। यहाँ तक कि एक जो विश्वासी नौकर था, वह भी अपनी बीवी के साथ चंपत हो गया। ग़नीमत था रुपया उसके हाथ नहीं पड़ा। उसी दिन सब सामान बेचा था। इनके पास रुपया था, बचा लिया इन्होंने।

'तो इनका तो अपना ही रुपया था' डाक्टर ने कहा : 'यही तो अब आपके पास रहेंगी। दुनिया में इसी वक्त के लिये शादी की जाती है। चलती फिरती औरतें और ऐसे ही आदमी सुख के साथी होते हैं, तकलीफ़ में साथ नहीं देते। ये बिचारी तो आपका हर मुसीबत में साथ देंगी।

नीरा ने संकोच से सिर ओढ़कर झुका लिया।

'अच्छी बात है' डाक्टर ने उठते हुए कहा : नौकर मेरे साथ भेज दीजिये मैं दवा भिजवा दूँगा।'

'मैं चलती हूँ' कह कर नीरा उठ खड़ी हुई।

उनके चले जाने पर उमानाथ देर तक शून्य दृष्टि से छत की ओर देखता रहा। वहाँ कोई चित्र नहीं बनता। जो देखना चाहता है, वही शून्य हो जाता है। सारी रेखाएँ मिट जाती हैं। उसके विश्वासी नवाब-राय और चन्दा दोनों भी उसे औरों की तरह छोड़ गये। ज्योतिषी जी सब कुछ जानने वाले थे, पर अंत में वे भी भाग गये। चली गईं वे नाचने वाली लड़कियाँ और वे मुँह रंग रंग कर बातें करने वाले। एक ने भी बिना तनख्वाह के रुकना व्यर्थ समझा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'ठीक ही तो है', उमानाथ ने धीरे से कहा।

गरीब तो थे ही। जो रुपया देकर इस तरह खरीदे जा सकते हैं वे क्या नहीं कर सकते। अब उमानाथ को उन लोगों का जीवन याद आने लगा। वे स्त्रियाँ तवायफें थीं। वे पुरुष भाँड़ थे। उनमें जीवन के प्रायः प्रत्येक पहलू में ही केवल चरित्रहीनता थी। क्या वे सब मनुष्य ही थे?

ध्यान टूट गया।

व्यभिचार! मात्र व्यभिचार! कुत्सित, जघन्य, घृणित।

और वह स्वयं? प्रयाग में वह एक बार महालक्ष्मी को मिला था..

राधा साथ थी...

बीमारी ...

कब तक...

और उमानाथ फिर खाँसने लगा। देर तक वह खाँसता रहा, थूकता रहा। उसके बाद वह धीरे से बैठ गया। उसने चोरों की तरह इधर उधर देखा, फिर बल लगाकर उठा और धीरे धीरे चल कर इधर उधर चीजों को उठा उठाकर देखने लगा। अलमारी खोली। उसमें हाथ डाल कर, झाँक कर सब कुछ देख डाला। फिर हटकर वह अपने पलंग, और नीरा के पलंग को देख गया। अब वह कुछ खीझने लगा।

उठकर सीधा खड़ा होकर, वह कुछ सोचने लगा। एकाएक उसके दिमाग़ में कुछ चमका। उसने नीरा का बक्स खोलना चाहा, पर उसमें ताला बंद था। लाचार आकर पलंग पर बैठ रहा। कुछ देर बाद उठ कर उसने फिर नीरा के कपड़ों को ढूँढना शुरू किया और अचानक ही उसके गले से एक खुशी की चीख निकली। उसने लपक कर उस चीज को बाहर निकाल लिया और पागल आँखों से उसे देखने लगा। शीघ्रता से गिलास मेज पर रख कर उसमें उड़ेलना शुरू किया। जब गिलास चौथाई भर गया, उसने झुककर पानी से एक प्याला भर कर उसमें डाल दिया। और फिर उसकी आँखों में एक चमक सी भर गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
शराब की ओर देखते रहने से उसका दिल धड़कने लगा। विचित्र आह्वान् था। मानो वह पानी जैसी चीज़ वास्तव में आग थी, जिसको देखकर उमानाथ खुश होना चाहता था। परन्तु धीरे धीरे उसका संयम नष्ट होने लगा। उसने अत्यन्त धीरता से गिलास उठाया और फिर उपेक्षा से द्वार की ओर दृष्टि उठाई कि अँह, वह परवाह नहीं करता, परन्तु उठी नज़र उठाकर अटकी रह गई और उसके मुँह से निकला : अरे...

नीरा द्वार पर शाँत खड़ी थी।

—२—

नीरा आकर कुर्सी पर बैठ गई और मेज पर उसने दवा की शीशियाँ रख दीं। उमानाथ अपराधी की भाँति बैठा हुआ था। कुछ देर दोनों चुप रहे। शराब गिलास में उबलना बन्द करके शाँत हो गई थी। उमानाथ में इस समय इतना साहस नहीं था कि गिलास उठाकर मुँह से लगा लेता। अंत में नीरा ने कहा : पीते क्यों नहीं ?

'तुम बुरा जो मानती हो।'

'तुम्हें इसका इतना ख़याल है ?'

उमानाथ का सिर झुक गया।

नीरा ने कहा : पी लो। मैं बहुत खुश होऊँगी।

उमानाथ ने उसकी ओर देखकर कहा : मैं जानता हूँ तुम्हें दुख होगा। जब सब चले गये हैं तुम भी जा सकती थीं। क्यों नहीं गईं ?

'तुमने मुझे भी उन्हीं में से एक समझा था ?'

'हम लोग अचानक ही मिले थे। अचानक ही बिछुड़ जायें तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। इस समय मैं रोगी हूँ और मेरा रोग भयानक है। फिर तुम मुझे छोड़ने में क्यों डरती हो ?'

'डाक्टर ने कहा था। क्या कहा था, याद है ?'

'उसने तुम्हें पत्नी कहा था। क्या वह तुम्हें बहुत अच्छा लगा ?'

'हाँ वह मेरी जिन्दगी का सुपना था ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'आज पूरा न हो तो हर्ज नहीं क्योंकि अब अगर यह सुहाग बन गया तो तुम्हारा वैधव्य दूर नहीं है।'

नीरा चिल्ला उठी : क्या कह रहे हो ?

'कुछ नहीं' उमानाथ ने गंभीरता से कहा।

दोनों फिर चुप हो रहे।

'लेट जाओ', नीरा ने उठ कर कहा। गिलास की शराब फेंक दी और बोतल उठा कर उसने मोरी में उँडेल दी। उमानाथ चुप बैठा रहा। खाली बोतल फेंक कर नीरा ने अधिकार भरे स्वर में कहा: उठो।

उमानाथ उठा। नीरा ने उसे पलंग पर लिटा दिया और दवा उठाने लगी।

'क्यों ? डाक्टर ने क्या कहा ?'

'कहा है बीमारी बहुत बढ़ गई है, पर इलाज होने से ठीक हो जाओगे।'

उमानाथ हँसा ! उसने कहा 'झूठ है। अब मैं ज्यादा नहीं चल सकता। क्या बीमारी बताई है ?'

कुछ फेफड़ों की खराबी है। गुर्दे में भी खराबी आ गई है।

'साफ साफ नहीं कहा कि मुझे तपेदिक हो गई है।'

नीरा का हाथ रुक गया। उसने मुड़ कर देखा और कहा : और तुम जानते थे ?

'कई दिन से जानता था।'

'फिर भी मुझसे नहीं कहा।'

'मैंने तभी से तुमको छूना बन्द कर दिया, न कभी तुम्हारे साथ खाया पिया। न तुम्हें अपने कमरे में सोने दिया।'

नीरा की आँखों में पानी भर आया। उसने मुँह फेर कर कहा : क्या तुम समझते हो कि मैंने अपने स्वास्थ्य को बचाने के लिए पूछा था ?

उमानाथ ने कहा : नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
शराब की ओर देखते रहने से उसका दिल धड़कने लगा। विचित्र आह्वान था। मानो वह पानी जैसी चीज़ वास्तव में आग थी, जिसको देखकर उमानाथ खुश होना चाहता था। परन्तु धीरे धीरे उसका संयम नष्ट होने लगा। उसने अत्यन्त धीरता से गिलास उठाया और फिर उपेक्षा से द्वार की ओर दृष्टि उठाई कि अँह, वह परवाह नहीं करता, परन्तु उठी नज़र उठाकर अटकी रह गई और उसके मुँह से निकला : अरे...

नीरा द्वार पर शाँत खड़ी थी।

—२—

नीरा आकर कुर्सी पर बैठ गई और मेज पर उसने दवा की शीशियाँ रख दीं। उमानाथ अपराधी की भाँति बैठा हुआ था। कुछ देर दोनों चुप रहे। शराब गिलास में उवलना बन्द करके शाँत हो गई थी। उमानाथ में इस समय इतना साहस नहीं था कि गिलास उठाकर मुँह से लगा लेता। अंत में नीरा ने कहा : पीते क्यों नहीं ?

'तुम बुरा जो मानती हो।'

'तुम्हें इसका इतना ख़याल है ?'

उमानाथ का सिर झुक गया।

नीरा ने कहा : पी लो। मैं बहुत खुश होऊँगी।

उमानाथ ने उसकी ओर देखकर कहा : मैं जानता हूँ तुम्हें दुख होगा। जब सब चले गये हैं तुम भी जा सकती थीं। क्यों नहीं गईं ?

'तुमने मुझे भी उन्हीं में से एक समझा था ?'

'हम लोग अचानक ही मिले थे। अचानक ही विछुड़ जायें तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। इस समय मैं रोगी हूँ और मेरा रोग भयानक है। फिर तुम मुझे छोड़ने में क्यों डरती हो ?'

'डाक्टर ने कहा था। क्या कहा था, याद है ?'

'उसने तुम्हें पत्नी कहा था। क्या वह तुम्हें बहुत अच्छा लगा ?'

'हाँ वह मेरी जिन्दगी का सुपना था ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'आज पूरा न हो तो हर्ज नहीं क्योंकि अब अगर यह सुहाग बन गया तो तुम्हारा वैधव्य दूर नहीं है।'

नीरा चिल्ला उठी : क्या कह रहे हो ?

'कुछ नहीं' उमानाथ ने गंभीरता से कहा।

दोनों फिर चुप हो रहे।

'लेट जाओ', नीरा ने उठ कर कहा। गिलास की शराब फेंक दी और बोतल उठा कर उसने मोरी में उँडेल दी। उमानाथ चुप बैठा रहा। खाली बोतल फेंक कर नीरा ने अधिकार भरे स्वर में कहा: उठो।

उमानाथ उठा। नीरा ने उसे पलंग पर लिटा दिया और दवा उठाने लगी।

'क्यों ? डाक्टर ने क्या कहा ?'

'कहा है बीमारी बहुत बढ़ गई है, पर इलाज होने से ठीक हो जाओगे।'

उमानाथ हँसा ! उसने कहा 'झूठ है। अब मैं ज्यादा नहीं चल सकता। क्या बीमारी बताई है ?'

कुछ फेफड़ों की खराबी है। गुर्दे में भी खराबी आ गई है।

'साफ साफ नहीं कहा कि मुझे तपेदिक हो गई है।'

नीरा का हाथ रुक गया। उसने मुड़ कर देखा और कहा : और तुम जानते थे ?

'कई दिन से जानता था।'

'फिर भी मुझसे नहीं कहा।'

'मैंने तभी से तुमको छूना बन्द कर दिया, न कभी तुम्हारे साथ खाया पिया। न तुम्हें अपने कमरे में सोने दिया।'

नीरा की आँखों में पानी भर आया। उसने मुँह फेर कर कहा : क्या तुम समझते हो कि मैंने अपने स्वास्थ्य को बचाने के लिए पूछा था ?

उमानाथ ने कहा : नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तब ?'

'तुम मेरा भला करने के लिए जानना चाहती थीं।'

नीरा ने आँसू पोंछ लिये। वह बैठ गई और उसने धीरे से पूछा : जानते थे फिर क्यों नहीं कहा ? क्या तुम मुझ पर अविश्वास करते थे ?

'नहीं। विश्वास करता था, तभी नहीं कहा। तुम इलाज करवाती और मुझे शराब छोड़नी पड़ती।' फिर उसने छत की ओर देखकर कहा : सचमुच मैं अब जी नहीं सकता, न जीना चाहता ही हूँ।

फिर उसने रुक कर कहा : एक बात कहूँ। बुरा तो नहीं मानोगी ?

'क्या ?'

'पहले वादा करो।'

'तुम पहले दवा पीलो।'

'नहीं पहले वादा करो, तभी पियूँगा।'

'अच्छा वादा करती हूँ।'

'कहो, जो कहोगे, वही मानूँगी, यह मेरी प्रतिज्ञा है।'

नीरा ने दुहराया। उमानाथ ने दवा पीली। कुछ देर वह चुप रहा और फिर धीरे धीरे कहने लगा : एक दिन जो स्वस्थ उमानाथ था, वह हड्डी का छाया मात्र रह गया है। बहुत दिन तक हम तुम साथ साथ रहे हैं।

नीरा चुप रही। उमानाथ कहता गया : अब मैं तुम्हें सुख नहीं दे सकता। बक्स में कितने रुपये हैं ?

नीरा ने कहा : बहुत हैं। तुम्हारे इलाज के लिए काफी हैं उसके बाद हम एक नई जिन्दगी शुरू करेंगे। कहीं दूर चल कर रहेंगे। हम तुम, पति पत्नी की तरह।

उमानाथ का विकृत हास्य गूँज उठा। नीरा के हृदय पर भय की छाया डोल गई। उमानाथ ने कहा : असम्भव ! यह असम्भव है। दस हजार रुपये हैं ?

'होंगे।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'उन्हें लेकर तुम चली जाओ और कहीं आश्रम में जिन्दगी गुजार दो। यदि कोई मिल जाये तो शादी कर लेना, अभी तुम्हारी बहुत उम्र है।

नीरा को लगा जैसे वह सुन नहीं रही थी। उसने कहा : किसलिए ?

'पगली। यह न समझना कि मैं तुम पर अहसान कर रहा हूँ। तुम्हारी सेवा का मूल्य नहीं चुकाता। यह मरते हुये दोस्त की आरजू है। जो कुछ मैंने किया है, उसकी सजा मुझे भोगने दो।'

नीरा रोने लगी। उसका हृदय घुमड़ रहा था। उसने कहा : आज जो इतने दिन में पाया, वह अधिकार भी मुझसे छीन लेना चाहते हो ? मैं नहीं जा सकती।

'तुमने वादा किया है।'

'मैं उसे तोड़ती हूँ।'

'तब तुम मेरे लाश पर थूक कर जाना चाहती हो ?'

नीरा ने सिर उठाया और कहा : तो क्या मुझे तुम अपनी नहीं समझते ?

'समझता हूँ, तभी अक्ल की बात कहता हूँ। आज तक जो मेरी आँखों पर पर्दा था वह अब फट गया है।'

'तो फिर तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ?,

'दुनिया में सैकड़ों आदमी मरते हैं, कौन पूछता है।'

'किसी को घर से बुलाओगे ?'

'कोई नहीं आयेगा।'

'तुम्हारी स्त्री आयेगी।'

'मुझे विश्वास नहीं है।'

'तुम स्त्री को नहीं जानते। वह जरूर आयेगी।'

उमानाथ हँसा। उसने फिर कहा : मैं नहीं जियूँगा। किसलिए जियूँ ? इस जीवन से मैं घृणा करता हूँ। और तुम्हें देख कर मुझे बार-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तब ?'

'तुम मेरा भला करने के लिए जानना चाहती थीं।'

नीरा ने आँसू पोंछ लिये। वह बैठ गई और उसने धीरे से पूछा : जानते थे फिर क्यों नहीं कहा ? क्या तुम मुझ पर अविश्वास करते थे ?

'नहीं। विश्वास करता था, तभी नहीं कहा। तुम इलाज करवाती और मुझे शराब छोड़नी पड़ती।' फिर उसने छत की ओर देखकर कहा : सचमुच मैं अब जी नहीं सकता, न जीना चाहता ही हूँ।

फिर उसने रुक कर कहा : एक बात कहूँ। बुरा तो नहीं मानोगी ?

'क्या ?'

'पहले वादा करो।'

'तुम पहले दवा पीलो।'

'नहीं पहले वादा करो, तभी पियूँगा।'

'अच्छा वादा करती हूँ।'

'कहो, जो कहोगे, वही मानूँगी, यह मेरी प्रतिज्ञा है।'

नीरा ने दुहराया। उमानाथ ने दवा पीली। कुछ देर वह चुप रहा और फिर धीरे धीरे कहने लगा : एक दिन जो स्वस्थ उमानाथ था, वह हड्डी का छाया मात्र रह गया है। बहुत दिन तक हम तुम साथ साथ रहे हैं।

नीरा चुप रही। उमानाथ कहता गया : अब मैं तुम्हें सुख नहीं दे सकता। बक्स में कितने रुपये हैं ?

नीरा ने कहा : बहुत हैं। तुम्हारे इलाज के लिए काफी हैं उसके बाद हम एक नई जिन्दगी शुरू करेंगे। कहीं दूर चल कर रहेंगे। हम तुम, पति पत्नी की तरह।

उमानाथ का विकृत हास्य गूँज उठा। नीरा के हृदय पर भय की छाया डोल गई। उमानाथ ने कहा : असम्भव ! यह असम्भव है। दस हजार रुपये हैं ?

'होंगे।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

'उन्हें लेकर तुम चली जाओ और कहीं आश्रम से जिन्दगी गुजार दो। यदि कोई मिल जाये तो शादी कर लेना, अभी तुम्हारी बहुत उम्र है।

नीरा को लगा जैसे वह सुन नहीं रही थी। उसने कहा : किसलिए ?

'पगली। यह न समझना कि मैं तुम पर अहसान कर रहा हूँ। तुम्हारी सेवा का मूल्य नहीं चुकाता। यह मरते हुये दोस्त की आरजू है। जो कुछ मैंने किया है, उसकी सजा मुझे भोगने दो।'

नीरा रोने लगी। उसका हृदय घुमड़ रहा था। उसने कहा : आज जो इतने दिन में पाया, वह अधिकार भी मुझसे छीन लेना चाहते हो ? मैं नहीं जा सकती।

'तुमने वादा किया है।'

'मैं उसे तोड़ती हूँ।'

'तब तुम मेरे लाश पर थूक कर जाना चाहती हो ?'

नीरा ने सिर उठाया और कहा : तो क्या मुझे तुम अपनी नहीं समझते ?

'समझता हूँ, तभी अक्ल की बात कहता हूँ। आज तक जो मेरी आँखों पर पर्दा था वह अब फट गया है।'

'तो फिर तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ?,

'दुनिया में सैकड़ों आदमी मरते हैं, कौन पूछता है।'

'किसी को घर से बुलाओगे ?'

'कोई नहीं आयेगा।'

'तुम्हारी स्त्री आयेगी।'

'मुझे विश्वास नहीं है।'

'तुम स्त्री को नहीं जानते। वह जरूर आयेगी।'

उमानाथ हँसा। उसने फिर कहा : मैं नहीं जियूँगा। किसलिए जियूँ ? इस जीवन से मैं घृणा करता हूँ। और तुम्हें देख कर मुझे बार-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बार उसी की याद आती है।

मैंने शराब नहीं पीने दी तो इतनी बात उठा रहे हो ? लो पीलो। अभी एक बोतल और है।

नहीं। तुम जाओ।

नीरा निरुत्तर हो गई। उमानाथ ने आँखें बन्द कर लीं। नीरा दूसरे कमरे में जाकर फूट फूट कर रोने लगी।

—३—

नीरा का हृदय पिघल उठा। किसलिये उसका अपमान किया जा रहा है ? उमानाथ उसे क्यों अपने से अलग समझता रहा है ? क्योंकि वह उसकी पत्नी नहीं है ? तो क्या उमानाथ ने सदैव उसे एक नीची नज़र से देखा परन्तु कहा नहीं। छिपाये रखा ? कितने दिन बाद जब वह समझने लगी थी कि अब उसको एक नई जिन्दगी मिल गई है। आज उससे वह अधिकार भी छीना जा रहा है। अचानक ही उसे जो यह व्यक्ति मिला, अपनी निर्बलताओं का दास था भले ही, उत्तेजक वासना के अन्वेषन में दौड़ लगा जाने की भी क्षमता थी, ऐसी कि जीवन और मृत्यु को ललकारता हुआ वह जूआ खेलता रहा, इसलिये कि मन का रिक्त किसी प्रकार भर जाये, पर जो नहीं मिला, नहीं मिला, परन्तु वह सदैव नीरा को अच्छा लगा है और धीरे धीरे कल्पना में समा गया।

एक एक कर नीरा को वे दृश्य आने लगे जिनमें उमानाथ था। वह स्मृति उसे अधिकाधिक दुख देने लगी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि इस परिस्थिति में वह करे भी तो क्या ? उमानाथ के बाद वह क्या करेगी ? अगर उसके घर के लोगों को बुला लिया जाये तो ? महालक्ष्मी आयेगी। क्यों ? क्योंकि वह उसका पति है, और फिर नीरा ? घृणित, कलुषित, उपेक्षित, अपमानित.....

नहीं वह उमानाथ को नहीं छोड़ेगी, किसी भी हालत में नहीं छोड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
नीरा उठी। उसने मुँह धोया और उमानाथ के पास जाकर खड़ी हो गई। वह आँख मूँदे लेटा था। नीरा एकटक उसे देखती रही। उमानाथ ने आँखें खोल दीं जैसे वह सोया नहीं था, केवल आँखों को बन्द किये, सुपने समेट रहा था, इस डर से कि कहीं वे बाहर न निकल जायें, और जब वह शून्य में मिल जायें तब वह उद्भ्रांत सा पुकारता हुआ भटकता रहे कि मेरे सुपने मुझे वापिस दे दो, जिसको सुनकर यह दुनिया ठहाका मार कर हँसा करे।

'नीरा !!' उमानाथ का काँपता हुआ स्वर निकला, जिसको सुनकर नीरा का हृदय भीतर ही भीतर झनझनाहट से भर उठा। कितना ममत्व और कितनी उपेक्षा, कितना अलगाव था उस स्वर में। नीरा उसके पास बैठ गई। उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसे सहलाने लगी। उमानाथ घूर रहा था ! नीरा ने सिर झुकाकर कहा : क्या सचमुच तुम्हें मुझसे इतनी नफ़रत हो गई है।

'किसने कहा ?'

'मन कहता है।'

'वह घबरा गया है।'

'तो तुम मुझसे नफ़रत नहीं करते !'

'बिल्कुल नहीं।'

'फिर मुझसे चले जाने को क्यों कहते हो ?'

'उसमें तुम्हारा भला है।'

'मुझे ऐसा भला नहीं चाहिये।'

'तुम भावावेश में हो नीरा।'

'तुम शराब के पीछे मुझसे गुस्सा हो गये हो। बताओ, तुम पियोगे तो तुम्हें नुकसान नहीं करेगी ?'

'करेगी।'

'फिर क्यों पीना चाहते हो ?'

'पीना नहीं चाहता।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बार उसी की याद आती है।

मैंने शराब नहीं पीने दी तो इतनी बात उठा रहे हो ? लो पीलो। अभी एक बोतल और है।

नहीं। तुम जाओ।

नीरा निरुत्तर हो गई। उमानाथ ने आँखें बन्द कर लीं। नीरा दूसरे कमरे में जाकर फूट फूट कर रोने लगी।

—३—

नीरा का हृदय पिघल उठा। किसलिये उसका अपमान किया जा रहा है ? उमानाथ उसे क्यों अपने से अलग समझता रहा है ? क्योंकि वह उसकी पत्नी नहीं है ? तो क्या उमानाथ ने सदैव उसे एक नीची नज़र से देखा परन्तु कहा नहीं। छिपाये रखा ? कितने दिन बाद जब वह समझने लगी थी कि अब उसको एक नई जिन्दगी मिल गई है। आज उससे वह अधिकार भी छीना जा रहा है। अचानक ही उसे जो यह व्यक्ति मिला, अपनी निर्बलताओं का दास था भले ही, उत्तेजक वासना के अन्धेपन में दौड़ लगा जाने की भी क्षमता थी, ऐसी कि जीवन और मृत्यु को ललकारता हुआ वह जूआ खेलता रहा, इसलिये कि मन का रिक्त किसी प्रकार भर जाये, पर जो नहीं मिला, नहीं मिला, परन्तु वह सदैव नीरा को अच्छा लगा है और धीरे धीरे कल्पना में समा गया।

एक एक कर नीरा को वे दृश्य आने लगे जिनमें उमानाथ था। वह स्मृति उसे अधिकाधिक दुख देने लगी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि इस परिस्थिति में वह करे भी तो क्या ? उमानाथ के बाद वह क्या करेगी ? अगर उसके घर के लोगों को बुला लिया जाये तो ? महालक्ष्मी आयेगी। क्यों ? क्योंकि वह उसका पति है, और फिर नीरा ? घृणित, कलुषित, उपेक्षित, अपमानित.....

नहीं वह उमानाथ को नहीं छोड़ेगी, किसी भी हालत में नहीं छोड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

नीरा उठी पुनः मुँह धोया और उमानाथ के पास जाकर खड़ी हो गई। वह आँख मूँदे लेटा था। नीरा एकटक उसे देखती रही। उमानाथ ने आँखें खोल दीं जैसे वह सोया नहीं था, केवल आँखों को बन्द किये, सुपने समेट रहा था, इस डर से कि कहीं वे बाहर न निकल जायें, और जब वह शून्य में मिल जायें तब वह उद्भ्रांत सा पुकारता हुआ भटकता रहे कि मेरे सुपने मुझे वापिस दे दो, जिसको सुनकर यह दुनिया ठहाका मार कर हँसा करे।

'नीरा !!' उमानाथ का काँपता हुआ स्वर निकला, जिसको सुनकर नीरा का हृदय भीतर ही भीतर झनझनाहट से भर उठा। कितना ममत्व और कितनी उपेक्षा, कितना अलगाव था उस स्वर में। नीरा उसके पास बैठ गई। उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसे सहलाने लगी। उमानाथ घूर रहा था ! नीरा ने सिर झुकाकर कहा : क्या सचमुच तुम्हें मुझसे इतनी नफ़रत हो गई है।

'किसने कहा ?'

'मन कहता है।'

'वह घबरा गया है।'

'तो तुम मुझसे नफ़रत नहीं करते !'

'बिल्कुल नहीं।'

'फिर मुझसे चले जाने को क्यों कहते हो ?'

'उसमें तुम्हारा भला है।'

'मुझे ऐसा भला नहीं चाहिये।'

'तुम भावावेश में हो नीरा।'

'तुम शराब के पीछे मुझसे गुस्सा हो गये हो। बताओ, तुम पियोगे तो तुम्हें नुकसान नहीं करेगी ?'

'करेगी।'

'फिर क्यों पीना चाहते हो ?'

'पीना नहीं चाहता।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बार उसी की याद आती है।

मैंने शराब नहीं पीने दी तो इतनी बात उठा रहे हो ? लो पीलो। अभी एक बोतल और है।

नहीं। तुम जाओ।

नीरा निरुत्तर हो गई। उमानाथ ने आँखें बन्द कर लीं। नीरा दूसरे कमरे में जाकर फूट फूट कर रोने लगी।

—३—

नीरा का हृदय पिघल उठा। किसलिये उसका अपमान किया जा रहा है ? उमानाथ उसे क्यों अपने से अलग समझता रहा है ? क्योंकि वह उसकी पत्नी नहीं है ? तो क्या उमानाथ ने सदैव उसे एक नीची नज़र से देखा परन्तु कहा नहीं। छिपाये रखा ? कितने दिन बाद जब वह समझने लगी थी कि अब उसको एक नई जिन्दगी मिल गई है। आज उससे वह अधिकार भी छीना जा रहा है। अचानक ही उसे जो यह व्यक्ति मिला, अपनी निर्बलताओं का दास था भले ही, उत्तेजक वासना के अन्धेपन में दौड़ लगा जाने की भी क्षमता थी, ऐसी कि जीवन और मृत्यु को ललकारता हुआ वह जूआ खेलता रहा, इसलिये कि मन का रिक्त किसी प्रकार भर जाये, पर जो नहीं मिला, नहीं मिला, परन्तु वह सदैव नीरा को अच्छा लगा है और धीरे धीरे कल्पना में समा गया।

एक एक कर नीरा को वे दृश्य आने लगे जिनमें उमानाथ था। वह स्मृति उसे अधिकाधिक दुख देने लगी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि इस परिस्थिति में वह करे भी तो क्या ? उमानाथ के बाद वह क्या करेगी ? अगर उसके घर के लोगों को बुला लिया जाये तो ? महालक्ष्मी आयेगी। क्यों ? क्योंकि वह उसका पति है, और फिर नीरा ? घृणित, कलुषित, उपेक्षित, अपमानित.....

नहीं वह उमानाथ को नहीं छोड़ेगी, किसी भी हालत में नहीं छोड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

नीरा उठी। उसने मुँह धोया और उमानाथ के पास जाकर खड़ी हो गई। वह आँख मूँदे लेटा था। नीरा एकटक उसे देखती रही। उमानाथ ने आँखें खोल दीं जैसे वह सोया नहीं था, केवल आँखों को बन्द किये, सुपने समेट रहा था, इस डर से कि कहीं वे बाहर न निकल जायें, और जब वह शून्य में मिल जायें तब वह उद्भ्रांत सा पुकारता हुआ भटकता रहे कि मेरे सुपने मुझे वापिस दे दो, जिसको सुनकर यह दुनिया ठहाका मार कर हँसा करे।

'नीरा !!' उमानाथ का काँपता हुआ स्वर निकला, जिसको सुनकर नीरा का हृदय भीतर ही भीतर झनझनाहट से भर उठा। कितना ममत्व और कितनी उपेक्षा, कितना अलगाव था उस स्वर में। नीरा उसके पास बैठ गई। उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसे सहलाने लगी। उमानाथ घूर रहा था ! नीरा ने सिर झुकाकर कहा : क्या सचमुच तुम्हें मुझसे इतनी नफ़रत हो गई है।

'किसने कहा ?'

'मन कहता है।'

'वह घबरा गया है।'

'तो तुम मुझसे नफ़रत नहीं करते !'

'बिल्कुल नहीं।'

'फिर मुझसे चले जाने को क्यों कहते हो ?'

'उसमें तुम्हारा भला है।'

'मुझे ऐसा भला नहीं चाहिये।'

'तुम भावावेश में हो नीरा।'

'तुम शराब के पीछे मुझसे गुस्सा हो गये हो। बताओ, तुम पियोगे तो तुम्हें नुकसान नहीं करेगी ?'

'करेगी।'

'फिर क्यों पीना चाहते हो ?'

'पीना नहीं चाहता।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बार उसी की याद आती है।

मैंने शराब नहीं पीने दी तो इतनी बात उठा रहे हो ? लो पीलो। अभी एक बोतल और है।

नहीं। तुम जाओ।

नीरा निरुत्तर हो गई। उमानाथ ने आँखें बन्द कर लीं। नीरा दूसरे कमरे में जाकर फूट फूट कर रोने लगी।

—३—

नीरा का हृदय पिघल उठा। किसलिये उसका अपमान किया जा रहा है ? उमानाथ उसे क्यों अपने से अलग समझता रहा है ? क्योंकि वह उसकी पत्नी नहीं है ? तो क्या उमानाथ ने सदैव उसे एक नीची नज़र से देखा परन्तु कहा नहीं। छिपाये रखा ? कितने दिन बाद जब वह समझने लगी थी कि अब उसको एक नई जिन्दगी मिल गई है। आज उससे वह अधिकार भी छीना जा रहा है। अचानक ही उसे जो यह व्यक्ति मिला, अपनी निर्बलताओं का दास था भले ही, उत्तेजक वासना के अन्धेपन में दौड़ लगा जाने की भी क्षमता थी, ऐसी कि जीवन और मृत्यु को ललकारता हुआ वह जूआ खेलता रहा, इसलिये कि मन का रिक्त किसी प्रकार भर जाये, पर जो नहीं मिला, नहीं मिला, परन्तु वह सदैव नीरा को अच्छा लगा है और धीरे धीरे कल्पना में समा गया।

एक एक कर नीरा को वे दृश्य आने लगे जिनमें उमानाथ था। वह स्मृति उसे अधिकाधिक दुख देने लगी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि इस परिस्थिति में वह करे भी तो क्या ? उमानाथ के बाद वह क्या करेगी ? अगर उसके घर के लोगों को बुला लिया जाये तो ? महालक्ष्मी आयेगी। क्यों ? क्योंकि वह उसका पति है, और फिर नीरा ? घृणित, कलुषित, उपेक्षित, अपमानित.....

नहीं वह उमानाथ को नहीं छोड़ेगी, किसी भी हालत में नहीं छोड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

नीरा उठी। उसने मुँह धोया और उमानाथ के पास जाकर खड़ी हो गई। वह आँख मूँदे लेटा था। नीरा एकटक उसे देखती रही। उमानाथ ने आँखें खोल दीं जैसे वह सोया नहीं था, केवल आँखों को बन्द किये, सुपने समेट रहा था, इस डर से कि कहीं वे बाहर न निकल जायें, और जब वह शून्य में मिल जायें तब वह उद्भ्रांत सा पुकारता हुआ भटकता रहे कि मेरे सुपने मुझे वापिस दे दो, जिसको सुनकर यह दुनिया ठहाका मार कर हँसा करे।

'नीरा !!' उमानाथ का काँपता हुआ स्वर निकला, जिसको सुनकर नीरा का हृदय भीतर ही भीतर झनझनाहट से भर उठा। कितना ममत्व और कितनी उपेक्षा, कितना अलगाव था उस स्वर में। नीरा उसके पास बैठ गई। उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसे सहलाने लगी। उमानाथ घूर रहा था! नीरा ने सिर झुकाकर कहा : क्या सचमुच तुम्हें मुझसे इतनी नफ़रत हो गई है।

'किसने कहा ?'

'मन कहता है।'

'वह घबरा गया है।'

'तो तुम मुझसे नफ़रत नहीं करते !'

'बिल्कुल नहीं।'

'फिर मुझसे चले जाने को क्यों कहते हो ?'

'उसमें तुम्हारा भला है।'

'मुझे ऐसा भला नहीं चाहिये।'

'तुम भावावेश में हो नीरा।'

'तुम शराब के पीछे मुझसे गुस्सा हो गये हो। बताओ, तुम पियोगे तो तुम्हें नुकसान नहीं करेगी ?'

'करेगी।'

'फिर क्यों पीना चाहते हो ?'

'पीना नहीं चाहता।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'झूठ।'

'कसम खा सकता हूँ। मुझे उससे नफ़रत हो गई है।'

और नीरा ने देखा उमानाथ की आँखों में कुछ नमी आ गई। नीरा काँप उठी। वह यह जानती थी कि शराबी को जब शराब से नफ़रत हो जाती है, तब वह संकट का समय है अर्थात् शराबी मौत से दूर नहीं है। वह कुछ देर देखती रही फिर ज़ोर से रो पड़ी और चिल्लाने लगी : नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता। तुम्हें पीनी ही पड़ेगी। अपने लिये नहीं तो मेरे लिये पियो।

वह रोने की आवाज़ उमानाथ को व्याकुल करने लगी। उसने कहा : रोओ नहीं नीरा। तुम रोती हो, उफ़ भयानक! मुझे लगता है मैं मर गया हूँ और तुम लाश पर रो रही हो।

नीरा एकदम चुप हो गई। उसने आँसू पोछ लिये फिर धीरे से कहा : तुम जो चाहते हो, मैं अब वही करूँगी। मुझे आज्ञा दो।

उमानाथ ने कहा : बक्स के रुपये लेकर चली जाओ।

'और तुम्हें बीमार छोड़ जाऊँ।'

'हाँ।'

'अच्छी बात है यही होगा। अब कहो और क्या चाहते हो?'

'कोई अच्छी सी कहानी सुना दो। मुझे सब कुछ बहुत डरावना सा दिखाई देता है।'

'मैं कैसे लगती हूँ?'

'भयानक।'

'और इस कमरे की और चीज़ें?'

'सब खौफ़नाक।'

नीरा का हृदय थर्रा उठा।

'कुछ खाओगे?'

'कुछ नहीं।'

नीरा उठ खड़ी हुई। जाकर दूसरे कमरे में बैठी बैठी सोचती रही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी प्रकार उसे बहुत देर बीत गई। कुछ सोच कर वह उठ खड़ी हुई और एक पत्र लिखने लगी। लिखकर उसे घर के बाहर बम्बे में जाकर डाल आई। इस समय वह अत्यंत दृढ़ दिखाई दे रही थी। उसने आकर देखा—उमानाथ सो रहा था। खड़ी-खड़ी उसे देखती रही। इस प्रकार काफ़ी समय गुज़र गया। बहुत देर बाद उसे ध्यान आया और वह वहीं बैठ गयी।

सोचने लगी। अब क्या होगा? उमानाथ को वह कितना अधिक प्यार करने लगी थी, यह उसे अब महसूस हुआ। पर अब इसका क्या मूल्य है? जब तक वह ठीक था, तब तक वह अकेला काफी था। समाज, संसार, सब को कभी भी कोई चिंता नहीं हुई, पर अब जब वह ही... तब...

नीरा इस कल्पना पर सिहर उठी।

दिन और रात मिले। धुंधलका छा गया। उमानाथ ने आँख खोल कर कहा: फिर अंधेरा? वही अंधेरा···उफ···

'क्या हुआ?' नीरा ने पूछा।

'अंधेरा···नीरा···अंधेरा?' उमानाथ ने धीरे धीरे कहा: अंधेरा छा गया है···अब सुबह होने वाली है या रात?

'अब तो रात होगी।' नीरा ने सहम कर कहा।

'ठीक है, रात ही होगी' यही मैं भी सोचता था। उस भोर तक मैं नहीं रह सकूँगा।

'क्या कहते हो?' नीरा ने घबरा कर पूछा।

'ठीक कहता हूँ नीरा। मैंने एक सुपना देखा था। भयानक था वह। एक ओर सोने के महल बने हैं। वहाँ एक अधनंगी सुंदर स्त्री, सोने के ढेर पर बैठी शराब पिला रही है। दूसरी ओर दूर एक सुंदर भोर है जहाँ बच्चे मुस्का रहे हैं, फूलों पर ओस काँप रही है। मैंने देखा। उस सोने के महल से आवाज आने लगी उमानाथ, यहाँ आओ। इस सोने के महल के वासी, घर आ जाओ। और महल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'झूठ।'

'कसम खा सकता हूँ। मुझे उससे नफ़रत हो गई है।'

और नीरा ने देखा उमानाथ की आँखों में कुछ नमी आ गई। नीरा काँप उठी। वह यह जानती थी कि शराबी को जब शराब से नफ़रत हो जाती है, तब वह संकट का समय है अर्थात् शराबी मौत से दूर नहीं है। वह कुछ देर देखती रही फिर ज़ोर से रो पड़ी और चिल्लाने लगी : नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता। तुम्हें पीनी ही पड़ेगी। अपने लिये नहीं तो मेरे लिये पियो।

वह रोने की आवाज़ उमानाथ को व्याकुल करने लगी। उसने कहा : रोओ नहीं नीरा। तुम रोती हो, उफ़ भयानक! मुझे लगता है मैं मर गया हूँ और तुम लाश पर रो रही हो।

नीरा एकदम चुप हो गई। उसने आँसू पोछ लिये फिर धीरे से कहा : तुम जो चाहते हो, मैं अब वही करूँगी। मुझे आज्ञा दो।

उमानाथ ने कहा : वक्स के रुपये लेकर चली जाओ।

'और तुम्हें बीमार छोड़ जाऊँ।'

'हाँ।'

'अच्छी बात है यही होगा। अब कहो और क्या चाहते हो?'

'कोई अच्छी सी कहानी सुना दो। मुझे सब कुछ बहुत डरावना सा दिखाई देता है।'

'मैं कैसे लगती हूँ?'

'भयानक।'

'और इस कमरे की और चीज़ें?'

'सब खौफ़नाक।'

नीरा का हृदय थर्रा उठा।

'कुछ खाओगे?'

'कुछ नहीं।'

नीरा उठ खड़ी हुई। जाकर दूसरे कमरे में बैठी बैठी सोचती रही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी प्रकार उसे बहुत देर बीत गई। कुछ सोच कर वह उठ खड़ी हुई और एक पत्र लिखने लगी। लिखकर उसे घर के बाहर बम्बे में जाकर डाल आई। इस समय वह अत्यंत दृढ़ दिखाई दे रही थी। उसने आकर देखा—उमानाथ सो रहा था। खड़ी-खड़ी उसे देखती रही। इस प्रकार काफ़ी समय गुज़र गया। बहुत देर बाद उसे ध्यान आया और वह वहीं बैठ गयी।

सोचने लगी। अब क्या होगा? उमानाथ को वह कितना अधिक प्यार करने लगी थी, यह उसे अब महसूस हुआ। पर अब इसका क्या मूल्य है? जब तक वह ठीक था, तब तक वह अकेला काफी था। समाज, संसार, सब को कभी भी कोई चिंता नहीं हुई, पर अब जब वह ही... तब...

नीरा इस कल्पना पर सिहर उठी।

दिन और रात मिले। धुंधलका छा गया। उमानाथ ने आँख खोल कर कहा: फिर अंधेरा? वही अंधेरा... उफ...

'क्या हुआ?' नीरा ने पूछा।

'अंधेरा...नीरा...अंधेरा?' उमानाथ ने धीरे धीरे कहा: अंधेरा छा गया है...अब सुबह होने वाली है या रात?

'अब तो रात होगी।' नीरा ने सहम कर कहा।

'ठीक है, रात ही होगी' यही मैं भी सोचता था। उस भोर तक मैं नहीं रह सकूँगा।

'क्या कहते हो?' नीरा ने घबरा कर पूछा।

'ठीक कहता हूँ नीरा। मैंने एक सुपना देखा था। भयानक था वह। एक ओर सोने के महल बने हैं। वहाँ एक अधनंगी सुंदर स्त्री, सोने के ढेर पर बैठी शराब पिला रही है। दूसरी ओर दूर एक सुंदर मोर है जहाँ बच्चे मुस्का रहे हैं, फूलों पर ओस काँप रही है। मैंने देखा। उस सोने के महल से आवाज आने लगी उमानाथ, यहाँ आओ। इस सोने के महल के वासी, घर आ जाओ। और महल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छाया में दो राक्षस जिन्दे आदमियों को लोहे के बडे बड़े चिमटों से पकड़ कर भून रहे थे और उनकी चीख पुकार से आसमान फट रहा था। मै डर गया क्योंकि राक्षसों की फौज ने सारी दुनियाँ को घेर लिया मैं डर कर उस अधनंगी औरत की गोद में छिप गया। वह मुझे शराब पिलाने लगी। मैं भूल चला। नीचे जलते हुये आदमियों की देह रुई की तरह जलने लगी। क्योंकि कमरे में लपटें आने लगीं। मैंने देखा ···मैं काँपने लगा। नीचे से आवाजें आने लगीं। उमानाथ! तू उस मोर की खोज में चला था। यहाँ कहाँ आ गया। जिस घर को छोड़ कर गया था। दूसरे द्वार से उसी के दूसरे कमरे में आकर भ्रम में पड़ गया। चल उठ। उधर जा। देख ताजे फूल हवा में सिर हिला रहे हैं। नीरा! मैं उठा। पर मेरे पाँव गल गये। मैंने देखा मेरे बदन में लकवा मार गया और हाथों में कोढ़ फैल गई···

नीरा चीख उठी···उमानाथ को गश आ गया था। नीरा ने उसके माथे पर पानी डाला। उमनाथ धीरे धीरे होश में आया।

उसने कहा : नीरा! कम्युनिस्टों को हिन्दुस्तान में खुले रह कर काम करना चाहिये।

नीरा चुप रही।

'एक बार नींद क्यों नहीं आ जाती। तुम बैठी हो?'

'हाँ'

'जाओ चली जाओ। मैं छिप कर रहना पसंद नहीं करता।'

नीरा उठी और उस रात में कमरे के बाहर निकल गई।

—४—

महालक्ष्मी ने पत्र खोला और पढ़ने लगी :

प्रिय बहिन,

वैसे तो मुझे अपने को बहिन कहने का अधिकार नहीं दोगी इतने दिन तक मैं तुम्हारे पति के पास रही हूँ और उन्हें अपना पति मानने लगी हूँ इसलिये इतना अधिकार दिखाये बिना मैं नहीं रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
सकी; चाहे तुम इसे स्वीकार करो या अस्वीकार। तुम्हें याद होगा तुम्हारे पति को खाँसी आती थी। उस दिन तुम मोटर से उतर कर खड़ी थी और हम दोनों नाव में थे। मैं देखते ही भाँप गई थी कि तुम उनकी पत्नी हो। पर उस समय मैं तुम्हारे अधिकार तुम्हें लौटा नहीं सकी थी। आज जब लौटाने की इच्छा नहीं करती तब भी मुझे विवश होना पड़ा है क्योंकि वे बहुत ज्यादा बीमार हैं। क्षय की दूसरी स्टेज है। इस समय डाक्टर परेशान हैं। उनके पास दस हजार रुपये के लगभग हैं। मुझ से कहते हैं कि लेकर भाग जाऊँ। पर तुम सुन कर क्या कहोगी यह मैं जानती हूँ। तुम कहोगी, रुपये रखकर इस स्त्री को जूते मार कर निकाल दो। समाज ने जो अधिकार मुझे नहीं दिये, वह अचानक ही मुझे मिल गये थे, परन्तु भगवान को यह मंजूर नहीं हुआ। मैं नहीं जानती मुसीबत में भगवान क्यों याद आते हैं। जिंदगी भर मैंने झूठ और फरेब का जाल रचा है। लेकिन मैंने तुम्हारे पति का छीना नहीं। जिन्दगी में उन्हें तुम जो नहीं दे सकी, वह मैं उन्हें देने की लगन में बनी रही।

मैं एक एक्ट्रेस हूँ जिसने वेश्या की भाँति जीवन प्रारंभ किया परन्तु इस अभागे आदमी ने मुझे यह बता दिया कि मेरी जिन्दगी कुत्ते की जिन्दगी है। कितना छली है कि वह बता कर भी कभी इसने मुझसे यह नहीं कहा कि चलो इसे छोड़ दें, कोई नई जिन्दगी बितायें लोग मुझे असमर्थ नहीं कहते। मैं जानती हूँ, मेरी सामर्थ्य मुझे अपनी स्त्रीत्व की मर्यादा और लाज बेच कर मिली है। मैंने वह नंगापन धारण करके बाजार में प्रवेश किया है कि अब शरीफ कहलाने वाले मुझे देख कर डरते हैं, उनमें मेरी ओर आँख उठा कर देखने का साहस नहीं रहा है। पर यह सब व्यर्थ की बातें हैं।

उनकी तीमारदारी कर रही हूँ। वे कुछ नहीं कहते। बस मुझसे भाग जाने को कहा करते हैं। पर मैं कैसे भाग जाऊँ। लाचार होकर तुम्हारी शरण आती हूँ। यदि तुम आ सको तो मैं चली जाऊँगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छाया में दो राक्षस जिन्दे आदमियों को लोहे के बडे बड़े चिमटों से पकड़ कर भून रहे थे और उनकी चीख पुकार से आसमान फट रहा था। मै डर गया क्योंकि राक्षसों की फौज ने सारी दुनियाँ को घेर लिया मैं डर कर उस अधनंगी औरत की गोद में छिप गया। वह मुझे शराब पिलाने लगी। मैं भूल चला। नीचे जलते हुये आदमियों की देह रुई की तरह जलने लगी। क्योंकि कमरे में लपटें आने लगीं। मैंने देखा ···मैं काँपने लगा। नीचे से आवाजें आने लगीं। उमानाथ! तू उस मोर की खोज में चला था। यहाँ कहाँ आ गया। जिस घर को छोड़ कर गया था। दूसरे द्वार से उसी के दूसरे कमरे में आकर भ्रम में पड़ गया। चल उठ। उधर जा। देख ताजे फूल हवा में सिर हिला रहे हैं। नीरा! मैं उठा। पर मेरे पाँव गल गये। मैंने देखा मेरे बदन में लकवा मार गया और हाथों में कोढ़ फैल गई···

नीरा चीख उठी···उमानाथ को गश आ गया था। नीरा ने उसके माथे पर पानी डाला। उमनाथ धीरे धीरे होश में आया।

उसने कहा : नीरा! कम्युनिस्टों को हिन्दुस्तान में खुले रह कर काम करना चाहिये।

नीरा चुप रही।

'एक बार नींद क्यों नहीं आ जाती। तुम बैठी हो?'

'हाँ'

'जाओ चली जाओ। मैं छिप कर रहना पसंद नहीं करता।'

नीरा उठी और उस रात में कमरे के बाहर निकल गई।

—४—

महालक्ष्मी ने पत्र खोला और पढ़ने लगी :

प्रिय बहिन,

वैसे तो मुझे अपने को बहिन कहने का अधिकार नहीं दोगी इतने दिन तक मैं तुम्हारे पति के पास रही हूँ और उन्हें अपना पति मानने लगी हूँ इसलिये इतना अधिकार दिखाये बिना मैं नहीं रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
सकी; चाहे तुम इसे स्वीकार करो या अस्वीकार। तुम्हें याद होगा तुम्हारे पति को खाँसी आती थी। उस दिन तुम मोटर से उतर कर खड़ी थी और हम दोनों नाव में थे। मैं देखते ही भाँप गई थी कि तुम उनकी पत्नी हो। पर उस समय मैं तुम्हारे अधिकार तुम्हें लौटा नहीं सकी थी। आज जब लौटाने की इच्छा नहीं करती तब भी मुझे विवश होना पड़ा है क्योंकि वे बहुत ज्यादा बीमार हैं। क्षय की दूसरी स्टेज है। इस समय डाक्टर परेशान हैं। उनके पास दस हजार रुपये के लगभग हैं। मुझ से कहते हैं कि लेकर भाग जाऊँ। पर तुम सुन कर क्या कहोगी यह मैं जानती हूँ। तुम कहोगी, रुपये रखकर इस स्त्री को जूते मार कर निकाल दो। समाज ने जो अधिकार मुझे नहीं दिये, वह अचानक ही मुझे मिल गये थे, परन्तु भगवान को यह मंजूर नहीं हुआ। मैं नहीं जानती मुसीबत में भगवान क्यों याद आते हैं। जिंदगी भर मैंने झूठ और फरेब का जाल रचा है। लेकिन मैंने तुम्हारे पति का छीना नहीं। जिन्दगी में उन्हें तुम जो नहीं दे सकी, वह मैं उन्हें देने की लगन में बनी रही।

मैं एक एक्ट्रेस हूँ जिसने वेश्या की भाँति जीवन प्रारंभ किया परन्तु इस अभागे आदमी ने मुझे यह बता दिया कि मेरी जिन्दगी कुत्ते की जिन्दगी है। कितना छली है कि वह बता कर भी कभी इसने मुझसे यह नहीं कहा कि चलो इसे छोड़ दें, कोई नई जिन्दगी बितायें लोग मुझे असमर्थ नहीं कहते। मैं जानती हूँ, मेरी सामर्थ्य मुझे अपनी स्त्रीत्व की मर्यादा और लाज बेच कर मिली है। मैंने वह नंगापन धारण करके बाजार में प्रवेश किया है कि अब शरीफ कहलाने वाले मुझे देख कर डरते हैं, उनमें मेरी ओर आँख उठा कर देखने का साहस नहीं रहा है। पर यह सब व्यर्थ की बातें हैं।

उनकी तीमारदारी कर रही हूँ। वे कुछ नहीं कहते। बस मुझसे भाग जाने को कहा करते हैं। पर मैं कैसे भाग जाऊँ। लाचार होकर तुम्हारी शरण आती हूँ। यदि तुम आ सको तो मैं चली जाऊँगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बक्स में रुपये रक्खे हैं। उन्हें आकर सँभाल लेना। मैं उन्हें नहीं ले जाऊँगी।

ठहरी रहती, पर उनके पिता से डरती हूँ। वे मुझे देखेंगे तो न जाने क्या सजा देंगे। तुम्हारे पति भी उन्हीं के कारण डरते हैं। जल्दी करना। वक्त जरूरत से ज्यादा गुजर चुका है। पत्र पाते ही चल पड़ना।

अभागिन—

'नीरा'

महालक्ष्मी सिर पकड़ कर बैठ गई। उसे लगा जैसे सारी दुनिया घूम रही है और वह एक आँधी में फुकारती नदी में डूब रही है। अनेक प्रकार के विचारों ने उसके दिमाग को कुंद कर दिया। मानों नई नई भावनाएँ आतीं और चली जातीं जिनका उसे ध्यान ही न होता।

बाहर रामनाथ श्यामनाथ से बातें कर रहे थे। महालक्ष्मी ने अवधेश के हाथ में पत्र देकर कहा : जा, ददुआ को दे आ।

अवधेश ने पूछा : किसका है ?

'किसी का हो,' महालक्ष्मी ने कहा : तुझे क्या है ? दे आ जा ?

अवधेश डाँट खा कर जरा दुरुस्त हो गए और उन्होंने ले जाकर पत्र ददुआ को देकर कहा : ये चिट्ठी आई है।

रामनाथ मुस्कराये। पत्र पढ़ने लगे। जैसे जैसे पढ़ते थे उनके चेहरे का रंग बदलता जाता था। अन्त में उन्होंने पत्र श्यामनाथ पर फेंक दिया और दोनों हाथों से चेहरा ढाँप कर बैठ गए। श्यामनाथ ने इस घबराहट को देखा और पत्र पढ़ा। फिर हँसे। बोले : तो क्या हुआ। टी० बी० है। पहाड़ ले जाना पड़ेगा।

रामनाथ ने आँखों पर से हाथ हटाया और आश्चर्य से श्याम नाथ की ओर देखा। पूछा : क्या कह रहे हो ?

श्यामनाथ ने कहा : दूसरी स्टेज होती तो खतरनाक है, पर पहाड़ ले जाये बिना, काम नहीं चल सकता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'श्यामू,' रामनाथ ने चिल्ला कर कहा : तुम बिल्कुल पागल हो।

श्यामनाथ अब चौंके। बोले : क्या बात है ? लड़का मर रहा है तो क्या उसे मर जाने दिया जाये।'

'जो उसने किया है उसे भुगतने दो।' रामनाथ ने अकड़ कर कहा

श्यामनाथ ने कहा : जो यह भुगत रहा है और भुगतेगा, वही क्या आपको दुख नहीं देता ? आप उसके पिता हैं।

'जिस दिन उसने कुल की नाक कटा दी उस दिन उससे मेरा सम्बन्ध टूट गया।' परंतु इस समय उनका स्वर काँप उठा।

'तो क्या अब कोई रिश्ता ही नहीं रहा ?'

'तुम तो सब जानते हो श्यामू।'

महालक्ष्मी द्वार के पीछे से सब सुन रही थी। उसने सुनाई देने योग्य स्वर से कहा : यह आपका आखिरी फैसला है ?

रामनाथ को लगा जैसे वे कुछ गलत सुन गये थे। उन्होंने कहा यह किसने पूछा ? क्या पूछा ?

श्यामनाथ ने कहा : बहू है।

रामनाथ ने दर्प से कहा : पूछो क्या कहती है ?

श्यामनाथ ने कहा : कहो बेटी। क्या पूछती हो ?

महालक्ष्मी का दृढ़ स्वर सुनाई दिया : ददुआ से उनके बेटे की बहू पूछती है कि जब उनका बेटा और बहू का पति मौत के बिस्तर पर पड़ा हुआ हो, और एक बाजारू औरत धन और मान का त्याग करके उसकी दम तोड़ती जिन्दगी को थामे हुए उसके घर वालों को पुकार रही हो, उस समय अगर बाप का दिल पत्थर का हो जाये, तो बहू को अपने पति की सेवा करने के लिये जाने का अधिकार है या नहीं ? अपने सुहाग को बचने की आखिरी कोशिश करने का हक है या नहीं ?

रामनाथ को लगा जैसे वह सुन नहीं रहे हैं। इन्हें इतना अधिक आश्चर्य हुआ कि वे समझे शायद आज आस्मान बोल रहा है, या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बक्स में रुपये रक्खे हैं। उन्हें आकर सँभाल लेना। मैं उन्हें नहीं ले जाऊँगी।

ठहरी रहती, पर उनके पिता से डरती हूँ। वे मुझे देखेंगे तो न जाने क्या सजा देंगे। तुम्हारे पति भी उन्हीं के कारण डरते हैं। जल्दी करना। वक्त जरूरत से ज्यादा गुजर चुका है। पत्र पाते ही चल पड़ना।

अभागिन—

'नीरा'

महालक्ष्मी सिर पकड़ कर बैठ गई। उसे लगा जैसे सारी दुनिया घूम रही है और वह एक आँधी में फुकारती नदी में डूब रही है। अनेक प्रकार के विचारों ने उसके दिमाग को कुंद कर दिया। मानों नई नई भावनाएँ आतीं और चली जातीं जिनका उसे ध्यान ही न होता।

बाहर रामनाथ श्यामनाथ से बातें कर रहे थे। महालक्ष्मी ने अवधेश के हाथ में पत्र देकर कहा : जा, ददुआ को दे आ।

अवधेश ने पूछा : किसका है ?

'किसी का हो,' महालक्ष्मी ने कहा : तुझे क्या है ? दे आ जा ?

अवधेश डाँट खा कर जरा दुरुस्त हो गए और उन्होंने ले जाकर पत्र ददुआ को देकर कहा : ये चिट्ठी आई है।

रामनाथ मुस्कराये। पत्र पढ़ने लगे। जैसे जैसे पढ़ते थे उनके चेहरे का रंग बदलता जाता था। अन्त में उन्होंने पत्र श्यामनाथ पर फेंक दिया और दोनों हाथों से चेहरा ढाँप कर बैठ गए। श्यामनाथ ने इस घबराहट को देखा और पत्र पढ़ा। फिर हँसे। बोले : तो क्या हुआ। टी० बी० है। पहाड़ ले जाना पड़ेगा।

रामनाथ ने आँखों पर से हाथ हटाया और आश्चर्य से श्याम नाथ की ओर देखा। पूछा : क्या कह रहे हो ?

श्यामनाथ ने कहा : दूसरी स्टेज होती तो खतरनाक है, पर पहाड़ ले जाये बिना, काम नहीं चल सकता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'श्यामू,' रामनाथ ने चिल्ला कर कहा : तुम बिल्कुल पागल हो।

श्यामनाथ अब चौंके। बोले : क्या बात है ? लड़का मर रहा है तो क्या उसे मर जाने दिया जाये।'

'जो उसने किया है उसे भुगतने दो।' रामनाथ ने अकड़ कर कहा

श्यामनाथ ने कहा : जो यह भुगत रहा है और भुगतेगा, वही क्या आपको दुख नहीं देता ? आप उसके पिता हैं।

'जिस दिन उसने कुल की नाक कटा दी उस दिन उससे मेरा सम्बन्ध टूट गया।' परंतु इस समय उनका स्वर काँप उठा।

'तो क्या अब कोई रिश्ता ही नहीं रहा ?'

'तुम तो सब जानते हो श्यामू।'

महालक्ष्मी द्वार के पीछे से सब सुन रही थी। उसने सुनाई देने योग्य स्वर से कहा : यह आपका आखिरी फैसला है ?

रामनाथ को लगा जैसे वे कुछ गलत सुन गये थे। उन्होंने कहा यह किसने पूछा ? क्या पूछा ?

श्यामनाथ ने कहा : बहू है।

रामनाथ ने दर्प से कहा : पूछो क्या कहती है ?

श्यामनाथ ने कहा : कहो बेटी। क्या पूछती हो ?

महालक्ष्मी का दृढ़ स्वर सुनाई दिया : ददुआ से उनके बेटे की बहू पूछती है कि जब उनका बेटा और बहू का पति मौत के बिस्तर पर पड़ा हुआ हो, और एक बाजारू औरत धन और मान का त्याग करके उसकी दम तोड़ती जिन्दगी को थामे हुए उसके घर वालों को पुकार रही हो, उस समय अगर बाप का दिल पत्थर का हो जाये, तो बहू को अपने पति की सेवा करने के लिये जाने का अधिकार है या नहीं ? अपने सुहाग को बचने की आखिरी कोशिश करने का हक है या नहीं ?

रामनाथ को लगा जैसे वह सुन नहीं रहे हैं। इन्हें इतना अधिक आश्चर्य हुआ कि वे समझे शायद आज आस्मान बोल रहा है, या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
धरती चिल्ला रही है। उनकी बहू। यह सवाल ? कौन ? महालक्ष्मी पूछ रही है ? असंभव !! यह क्या सच है ? नहीं, नहीं यह उनका भ्रम है जो वे यह सब सोच रहे हूँ।

महालक्ष्मी ने फिर पूछा : मैं जवाब चाहती हूँ।

रामनाथ क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने उत्तर दिया। रामनाथ से कोई भी जवाब चाह कर आज तक नहीं पास का। लेकिन तुम मगर इतने घमंड पर मर्यादा छोड़ रही हो तो सुनो। आज तुम्हारी सास होती तो वह तुम से बात करती, पर उनके न होने से मुझे कहना पड़ता है क्योंकि आखिर तुम बच्ची हो, नादान हो, बेवकूफ हो। पूछो हुक्म दो। मैं जवाब दूँगा। मैं ही इस घर का मालिक था, अब मैं ही नौकर हो गया हूँ।

श्यामनाथ ने कहा : भइया, जरा सी बात है...

'तुम चुप रहो,' रामनाथ ने डाँटा : तुमने इन सब को सिर चढ़ा लिया है। दया, दया की बहू, उमा, प्रभा सब इसी बेवकूफी में दुख झेल रहे हैं। अब यह लड़की भी उसी तरफ़ कदम बढ़ा रही है। अन्धे हैं यह लोग। दिखाई नहीं देता ? चुनाव हारा तो दया लौट कर आया। मैंने उसे निकाल दिया। यही उमा कम्युनिस्ट बनता था। अब यह भी कम्युनिस्टी है ? अरे कह दिया, सौ दफे समझा दिया। भगवान ने जो सामर्थ्य दी है उसे बर्त्तो। खाने को दिया है खाओ। तुम उसकी रक्षा करो जो मिला है। जिनके पास नहीं है वे हा-हा हू-हू करें तो ठीक हैं। पर तुम क्यों उन लुच्चों के साथ मिलते हो ? क्या है ? बस नाम हो जायेगा। आदतें पड़ी हैं ऐश की, और चलते हैं नेता बनने ! दो दिन चाय न मिली, वहीं रोने लगे।' फिर मुड़ कर कहा : क्या पूछती हो ?

महालक्ष्मी झिझकी। साहस करके कहा : मैं जा सकती हूँ ?

'जाना चाहती हो ? रामनाथ ने कठोर स्वर से कहा।

महालक्ष्मी ने अविचलित स्वर में कहा : हाँ।

रामनाथ को दूसरा झटका लगा। उन्होंने आँखें उठाकर आकाश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
की ओर देखा और कहा : तो क्या अब तुम भी उन्हीं में मिल जाना चाहती हो ?

'किन में ?'

'जिन्होंने अपनी बेवकूफियों से खानदान को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।'

'मैं नहीं जानती । पर इतना जानती हूँ कि इस घर से मेरा संबन्ध तभी हुआ था जब उनसे विवाह हुआ था ।'

'सो तो मै भी जानता हूँ । वर्ना मैं तुम्हें यहाँ घुसने भी न देता ।'

'यह मैं भी जानती हूँ । तभी उनकी आज तक पूजा करती रही हूँ । अब यदि इस समय मैं नहीं जाऊँगी तो और कौन जायेगा ?'

'तुम जब पैदा भी नहीं हुई थी, तब हम उसे गोदी में खिलाया करते थे । अगर वह नालायक न होता, तो क्यों उससे इतनी घृणा हो जाती !

'आपको घृणा हो, मुझे न कभी थी, न है और न होगी ।

'इसका मतलब क्या है ?'

'मैं जाऊँगी ।' महालक्ष्मी ने दृढ़ता से कहा । अगर कोई मेरे साथ नहीं चलेगा तो मैं अकेली जाऊँगी । अगर कोई मुझे यहाँ नहीं लौटने देगा तो मुझे इसकी भी परवाह नहीं ।'

'शाबाश !' रामनाथ ने क्रोध से कहा : 'यही सुनना बाकी था । लेकिन जो तीन बेटों को ठोकर मार चुका है, उसके सामने पहाड़ बाकी नहीं रहे, टीले रह गए हैं जिन्हें कुचल देना बहुत आसान है ।'

'टीलों को कुचलने वाले पाँव मैदान में अपने आप गड्ढे बना सकते हैं, जिनमें से निकलना भी कठिन हो जायगा ।'

'लड़की' रामनाथ ने चिल्ला कर कहा : बहस करती है ? तुझे शर्म नहीं आती । चली जा । अगर जाना चाहती है तो अकेली निकल जा । अवधेश तुझको नहीं मिलेगा ।

'अवधेश मेरा है । उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता । लेकिन मैं उसे नहीं ले जाऊँगी ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
धरती चिल्ला रही है। उनकी बहू। यह सवाल ? कौन ? महालक्ष्मी पूछ रही है ? असंभव !! यह क्या सच है ? नहीं, नहीं यह उनका भ्रम है जो वे यह सब सोच रहे हूँ।

महालक्ष्मी ने फिर पूछा : मैं जवाब चाहती हूँ।

रामनाथ क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने उत्तर दिया। रामनाथ से कोई भी जवाब चाह कर आज तक नहीं पास का। लेकिन तुम मगर इतने घमंड पर मर्यादा छोड़ रही हो तो सुनो। आज तुम्हारी सास होती तो वह तुम से बात करती, पर उनके न होने से मुझे कहना पड़ता है क्योंकि आखिर तुम बच्ची हो, नादान हो, बेवकूफ हो। पूछो हुक्म दो। मैं जवाब दूँगा। मैं ही इस घर का मालिक था, अब मैं ही नौकर हो गया हूँ।

श्यामनाथ ने कहा : भइया, जरा सी बात है...

'तुम चुप रहो,' रामनाथ ने डाँटा : तुमने इन सब को सिर चढ़ा लिया है। दया, दया की बहू, उमा, प्रभा सब इसी बेवकूफी में दुख झेल रहे हैं। अब यह लड़की भी उसी तरफ़ कदम बढ़ा रही है। अन्धे हैं यह लोग। दिखाई नहीं देता ? चुनाव हारा तो दया लौट कर आया। मैंने उसे निकाल दिया। यही उमा कम्युनिस्ट बनता था। अब यह भी कम्युनिस्टी है ? अरे कह दिया, सौ दफे समझा दिया। भगवान ने जो सामर्थ्य दी है उसे बर्त्तो। खाने को दिया है खाओ। तुम उसकी रक्षा करो जो मिला है। जिनके पास नहीं है वे हा-हा हू-हू करें तो ठीक हैं। पर तुम क्यों उन लुच्चों के साथ मिलते हो ? क्या है ? बस नाम हो जायेगा। आदतें पड़ी हैं ऐश की, और चलते हैं नेता बनने ! दो दिन चाय न मिली, वहीं रोने लगे।' फिर मुड़ कर कहा : क्या पूछती हो ?

महालक्ष्मी झिझकी। साहस करके कहा : मैं जा सकती हूँ ?

'जाना चाहती हो ? रामनाथ ने कठोर स्वर से कहा।

महालक्ष्मी ने अविचलित स्वर में कहा : हाँ।

रामनाथ को दूसरा झटका लगा। उन्होंने आँखें उठाकर आकाश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
की ओर देखा और कहा : तो क्या अब तुम भी उन्हीं में मिल जाना चाहती हो ?

'किन में ?'

'जिन्होंने अपनी बेवकूफियों से खानदान को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।'

'मैं नहीं जानती । पर इतना जानती हूँ कि इस घर से मेरा संबन्ध तभी हुआ था जब उनसे विवाह हुआ था ।'

'सो तो मै भी जानता हूँ । वर्ना मैं तुम्हें यहाँ घुसने भी न देता ।'

'यह मैं भी जानती हूँ । तभी उनकी आज तक पूजा करती रही हूँ । अब यदि इस समय मैं नहीं जाऊँगी तो और कौन जायेगा ?'

'तुम जब पैदा भी नहीं हुई थी, तब हम उसे गोदी में खिलाया करते थे । अगर वह नालायक न होता, तो क्यों उससे इतनी घृणा हो जाती !

'आपको घृणा हो, मुझे न कभी थी, न है और न होगी ।

'इसका मतलब क्या है ?'

'मैं जाऊँगी ।' महालक्ष्मी ने दृढ़ता से कहा । अगर कोई मेरे साथ नहीं चलेगा तो मैं अकेली जाऊँगी । अगर कोई मुझे यहाँ नहीं लौटने देगा तो मुझे इसकी भी परवाह नहीं ।'

'शाबाश !' रामनाथ ने क्रोध से कहा : 'यही सुनना बाकी था । लेकिन जो तीन बेटों को ठोकर मार चुका है, उसके सामने पहाड़ बाकी नहीं रहे, टीले रह गए हैं जिन्हें कुचल देना बहुत आसान है ।'

'टीलों को कुचलने वाले पाँव मैदान में अपने आप गड्ढे बना सकते हैं, जिनमें से निकलना भी कठिन हो जायगा ।'

'लड़की' रामनाथ ने चिल्ला कर कहा : बहस करती है ? तुझे शर्म नहीं आती । चली जा । अगर जाना चाहती है तो अकेली निकल जा । अवधेश तुझको नहीं मिलेगा ।

'अवधेश मेरा है । उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता । लेकिन मैं उसे नहीं ले जाऊँगी ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो फिर लौट कर मत आना।' रामनाथ ने कुर्सी पर लेट कर कहा।

श्यामनाथ अब तक चुप थे। अब बोले : चलो बेटी। तैयार हो जाओ।

रामनाथ ने आँखें फाड़ कर कहा : तुम क्या कह गये ?

'मैंने कहा, तैयार हो जाओ। भैया गुस्से में हैं। कुछ देर में ठीक हो जायेंगे। मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। कानपुर से दया को भी ले लेंगे'

रामनाथ ने चिल्ला कर कहा—श्यामू ? तुम भी···

परन्तु श्यामनाथ ने ध्यान नहीं दिया। वे कहते रहे : आज तक राजा रामनाथ का हुक्म चला है। लेकिन आज मेरा हुक्म चलेगा।

कहते हुए श्यामनाथ उठ खड़े हुए, रामनाथ ने देखा और आश्चर्य से उनका मुँह खुल गया। वे कुछ भी नहीं कह सके।

उनके देखते ही देखते महालक्ष्मी बाहर आई। उसने उन्हें प्रणाम किया और आशीर्वाद की प्रतीक्षा किये बिना ही वह श्यामनाथ के पीछे पीछे उतर गई। रामनाथ ने देखा, वे आराम से उनकी ही मोटर में बैठ कर चले गये।

रामनाथ ने देखा और देखते ही रह गये। मोटर के पीछे उड़ती हुई धूल ने उन्हें बता दिया कि अब वे अकेले रह गए हैं। उन्हें विश्वास नहीं हुआ। उठ कर देखा। मोटर अब दूर चली गई है, दिखाई ही नहीं देती। फिर·····रामनाथ हताश से आकर कुर्सी पर गिर गये। यह जो कुछ हो गया है, क्या सच है···या फिर कोई भयानक स्वप्न मात्र है··

—५—

नीरा के चले जाने के बाद उमानाथ रात को बड़बड़ाने लगा आज वह अकेला रह गया था। वह विलायत की रातें नहीं रहीं जब अर्धनंगी औरतों के नृत्य होते थे, या फिर क्यूबा और वैटिकैन की गप्पें होती थीं। जब प्राचीन सैक्सनी और हैनोवर की वीर गाथाओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से लेकर विशप उस्फिलास की चाँदी की इंजील के बारे में कथाएं सुनाई जाती थीं। कोई कौन्टिनेंट और कोई अमेरिका की बातें करते, या फिर तिपाइयों पर प्रेतात्मा बुलाने का प्रयत्न किया जाता। और उन्हीं में से जर्मनी के संगठन, रूस की क्रान्ति, पैरिस कम्यून और अमेरिका के हब्शी दमन की बातें निकल पड़तीं और उमानाथ को लगता जैसे भारत, चीन, तिब्बत, तुर्की, अरब, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका और भी न जाने कितने द्वीप, कितने जीवन भागे जा रहे हैं। लेकिन सारी दुनिया अगर बनी है तो वह उमानाथ के लिये। जिस दिन वह स्वप्न टूट गया, उमानाथ पतन के रास्ते पर बह चला।

सुबह हो गई। अब शराब नहीं भाती। अब जीवन के वे संघर्ष और कोलाहल भरे दिन इस वेला निर्जीव से शरीर में निहित हो गये हैं और मूर्छित पड़े हैं। कितने भरे-पूरे घर का वह प्राणी इस विदेश में अकेला तड़प तड़प कर घुल रहा है। यहाँ सैकड़ों लोग हैं, पर कोई किसी के लिये व्यर्थ ही अपना समय नष्ट क्यों करे?

आधी रात की गाड़ी से ही श्यामनाथ, महालक्ष्मी और दयानाथ चल पड़े। रात की रेल यात्रा एक ऊँघी हुई दुनिया का बहाव होता है जो अटक अटक कर बढ़ता है और उस समय ऊँघे हुये यात्री दुःस्वप्न में चिल्ला उठते हैं। गर्मी के कारण लोगों की तबियत स्टेशनों पर घबरा जाती है। छोटा सफर था। आवेश में ऐसे बीत गया कि पता ही नहीं चला। वे लोग उतर पड़े।

महालक्ष्मी की ओर देख कर दयानाथ ने पूछा: अरे पते का कागज:··

महालक्ष्मी ने कहा—मुझे याद है।

रात बीत चली थी। हवा के स्वच्छ झोंके आ रहे थे। सुबह के वक्त एक तरावट थी। ताँगा चल पड़ा। राह में वे लोग बोले नहीं सब का मन भारी था। कुछ लोग चलने लगे थे। धीरे-धीरे जागती हुई दुनिया का हलचल और कोलाहल करते हुए बाहर निकलना एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो फिर लौट कर मत आना।' रामनाथ ने कुर्सी पर लेट कर कहा।

श्यामनाथ अब तक चुप थे। अब बोले : चलो बेटी। तैयार हो जाओ।

रामनाथ ने आँखें फाड़ कर कहा : तुम क्या कह गये ?

'मैंने कहा, तैयार हो जाओ। भैया गुस्से में हैं। कुछ देर में ठीक हो जायेंगे। मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। कानपुर से दया को भी ले लेंगे'

रामनाथ ने चिल्ला कर कहा—श्यामू ? तुम भी···

परन्तु श्यामनाथ ने ध्यान नहीं दिया। वे कहते रहे : आज तक राजा रामनाथ का हुक्म चला है। लेकिन आज मेरा हुक्म चलेगा।

कहते हुए श्यामनाथ उठ खड़े हुए, रामनाथ ने देखा और आश्चर्य से उनका मुँह खुल गया। वे कुछ भी नहीं कह सके।

उनके देखते ही देखते महालक्ष्मी बाहर आई। उसने उन्हें प्रणाम किया और आशीर्वाद की प्रतीक्षा किये बिना ही वह श्यामनाथ के पीछे पीछे उतर गई। रामनाथ ने देखा, वे आराम से उनकी ही मोटर में बैठ कर चले गये।

रामनाथ ने देखा और देखते ही रह गये। मोटर के पीछे उड़ती हुई धूल ने उन्हें बता दिया कि अब वे अकेले रह गए हैं। उन्हें विश्वास नहीं हुआ। उठ कर देखा। मोटर अब दूर चली गई है, दिखाई ही नहीं देती। फिर·····रामनाथ हताश से आकर कुर्सी पर गिर गये। यह जो कुछ हो गया है, क्या सच है···या फिर कोई भयानक स्वप्न मात्र है··

—५—

नीरा के चले जाने के बाद उमानाथ रात को बड़बड़ाने लगा आज वह अकेला रह गया था। वह विलायत की रातें नहीं रहीं जब अर्धनंगी औरतों के नृत्य होते थे, या फिर क्यूबा और वैटिकैन की गप्पें होती थीं। जब प्राचीन सैक्सनी और हैनोवर की वीर गाथाओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से लेकर बिशप उल्फिलास की चाँदी की इंजील के बारे में कथाएं सुनाई जाती थीं। कोई कौन्टिनेंट और कोई अमेरिका की बातें करते, या फिर तिपाइयों पर प्रेतात्मा बुलाने का प्रयत्न किया जाता। और उन्हीं में से जर्मनी के संगठन, रूस की क्रान्ति, पैरिस कम्यून और अमेरिका के हब्शी दमन की बातें निकल पड़तीं और उमानाथ को लगता जैसे भारत, चीन, तिब्बत, तुर्की, अरब, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका और भी न जाने कितने द्वीप, कितने जीवन भागे जा रहे हैं। लेकिन सारी दुनिया अगर बनी है तो वह उमानाथ के लिये। जिस दिन वह स्वप्न टूट गया, उमानाथ पतन के रास्ते पर बह चला।

सुबह हो गई। अब शराब नहीं भाती। अब जीवन के वे संघर्ष और कोलाहल भरे दिन इस बेला निर्जीव से शरीर में निहित हो गये हैं और मूर्छित पड़े हैं। कितने भरे-पूरे घर का वह प्राणी इस विदेश में अकेला तड़प तड़प कर घुल रहा है। यहाँ सैकड़ों लोग हैं, पर कोई किसी के लिये व्यर्थ ही अपना समय नष्ट क्यों करे?

आधी रात की गाड़ी से ही श्यामनाथ, महालक्ष्मी और दयानाथ चल पड़े। रात की रेल यात्रा एक ऊँघी हुई दुनिया का बहाव होता है जो अटक अटक कर बढ़ता है और उस समय ऊँघे हुये यात्री दुःस्वप्न में चिल्ला उठते हैं। गर्मी के कारण लोगों की तबियत स्टेशनों पर घबरा जाती है। छोटा सफर था। आवेश में ऐसे बीत गया कि पता ही नहीं चला। वे लोग उतर पड़े।

महालक्ष्मी की ओर देख कर दयानाथ ने पूछा: अरे पते का कागज:··

महालक्ष्मी ने कहा—मुझे याद है।

रात बीत चली थी। हवा के स्वच्छ झोंके आ रहे थे। सुबह के वक्त एक तरावट थी। ताँगा चल पड़ा। राह में वे लोग बोले नहीं सब का मन भारी था। कुछ लोग चलने लगे थे। धीरे-धीरे जागती हुई दुनिया का हलचल और कोलाहल करते हुए बाहर निकलना एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
देखने योग बात होती है। परन्तु उनमें से किसी का भी उधर ध्यान नहीं था।

दयानाथ ने ताँगे वाले से कहा : वह मोड़ है न उधर···

'जानता हूँ बाबू जी, जानता हूँ।' ताँगे वाले ने चाबुक फटकार कर कहा।

द्वार पर जब महालक्ष्मी, दयानाथ और चाचा श्यामनाथ आये तब उन्हें विस्मय हुआ। द्वार खुला हुआ था। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा। भीतर घुसते ही उन्हें वहाँ का सन्नाटा देखकर भय हुआ। क्या इस घर में कोई नहीं ? कोई बोलता क्यों नहीं ?

दयानाथ आगे बढ़ा। बरामदा पार करके जब उसने कमरे में देखा तो उसकी आँखें ठहर गईं। उमानाथ बिस्तर पर बेहोश सा पड़ा था। महालक्ष्मी और श्यामनाथ धीरे से आगे बढ़ आये। उन्होंने भी देखा। उन्हें लगा शायद वह.....

महालक्ष्मी ने मुँह फेर लिया। दयानाथ कमरे में घुसा। ग़ौर से देखा। साँस चल रही थी। उसके मुँह से एक खुशी की आवाज़ निकली। यह देख कर दोनों भी कमरे में घुस गये।

अभी भी आशा थी। श्यामनाथ ने कहा : शायद बेहोश हो गया है ?

'हाँ' दयानाथ ने उत्तर दिया। फ़िर सोचकर कहा : तुम लोग चुप चाप रहो। मैं डाक्टर अवस्थी को लाता हूँ।

'तुम यहीं रहो' चाचा ने कहा—'वे मेरे दोस्त हैं। मैं ही जाता हूँ।'

दया रुक गया। इस समय वह बहस करना नहीं चाहता था। वह घूम घूम कर सब चीजें देखने लगा। चाचा चले गये। महालक्ष्मी चटाई पर उमा के पास बैठ गई। दया धीरे-धीरे भीतर के कमरे में चला गया था। महालक्ष्मी ने उमा के मुँह पर हाथ फेरा और फिर उसके हाथ को अपने हाथों में लेकर कहा : मैं आ गई हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
स्वर धीमा था, पर आत्मविश्वास भरा था।

उमानाथ निष्पंद पड़ा था।

महालक्ष्मी ने फिर कहा : मैं सचमुच आ गई हूँ। मुझे किसी भी प्रकार का विरोध नहीं, कोई शिकायत नहीं, केवल तुम्हारी नीरा के बुलाने पर आई हूँ। तुम्हें कोई नाराज़ी तो नहीं ?

उमानाथ ने फिर भी नहीं सुना। महालक्ष्मी समझे थी कि डर के मारे, संकोच और लाज के कारण उमानाथ अभिनय कर रहा है। सबके चले जाने पर वह तुरन्त उसे होश में ले आयेगी। पर यह भी एक दूराशा मात्र साबित हुई। सारा जीवन ऐसी ही कल्पनाओं में बीत चला।

वह सचमुच बेहोश था।

दया बगल के कमरे में हर चीज़ उलट-पुलट कर देख रहा था। बक्स में उसे शराब की एक भरी बोतल दिखाई दी, जिसे उसने वहीं छिपा दिया।

घर में घूम दया ने लौट कर पूछा : कुछ होश आया ?

महालक्ष्मी ने कहा : नहीं।

'बिल्कुल नहीं ?'

'नहीं।'

दया चुप होकर उमानाथ को देखने लगा। उसकी आँखों के नीचे गड्ढे पड़ गये थे। नीरा की साड़ी पास ही पड़ी थी। पास में ही कुछ शीशियाँ भी छोटी मेज़ पर रखी थी। इसका मतलब था दवा तो आई थी। शायद कुछ पिलाई भी गई थी। किसने पिलाई होगी ? नीरा ने ही। और किसने ? दया ने देखा महालक्ष्मी निस्संकोच उमानाथ को घूर रही थी। वह उस दृष्टि की तन्मयता को अधिक देखने की सामर्थ्य नहीं रखता था।

'तब तो यह विलायत नहीं गया था।' दया ने कहा।

'नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
देखने योग बात होती है। परन्तु उनमें से किसी का भी उधर ध्यान नहीं था।

दयानाथ ने ताँगे वाले से कहा : वह मोड़ है न उधर···

'जानता हूँ बाबू जी, जानता हूँ।' ताँगे वाले ने चाबुक फटकार कर कहा।

द्वार पर जब महालक्ष्मी, दयानाथ और चाचा श्यामनाथ आये तब उन्हें विस्मय हुआ। द्वार खुला हुआ था। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा। भीतर घुसते ही उन्हें वहाँ का सन्नाटा देखकर भय हुआ। क्या इस घर में कोई नहीं ? कोई बोलता क्यों नहीं ?

दयानाथ आगे बढ़ा। बरामदा पार करके जब उसने कमरे में देखा तो उसकी आँखें ठहर गईं। उमानाथ बिस्तर पर बेहोश सा पड़ा था। महालक्ष्मी और श्यामनाथ धीरे से आगे बढ़ आये। उन्होंने भी देखा। उन्हें लगा शायद वह.....

महालक्ष्मी ने मुँह फेर लिया। दयानाथ कमरे में घुसा। ग़ौर से देखा। साँस चल रही थी। उसके मुँह से एक खुशी की आवाज़ निकली। यह देख कर दोनों भी कमरे में घुस गये।

अभी भी आशा थी। श्यामनाथ ने कहा : शायद बेहोश हो गया है ?

'हाँ' दयानाथ ने उत्तर दिया। फ़िर सोचकर कहा : तुम लोग चुप चाप रहो। मैं डाक्टर अवस्थी को लाता हूँ।

'तुम यहीं रहो' चाचा ने कहा—'वे मेरे दोस्त हैं। मैं ही जाता हूँ।'

दया रुक गया। इस समय वह बहस करना नहीं चाहता था। वह घूम घूम कर सब चीजें देखने लगा। चाचा चले गये। महालक्ष्मी चटाई पर उमा के पास बैठ गई। दया धीरे-धीरे भीतर के कमरे में चला गया था। महालक्ष्मी ने उमा के मुँह पर हाथ फेरा और फिर उसके हाथ को अपने हाथों में लेकर कहा : मैं आ गई हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
स्वर धीमा था, पर आत्मविश्वास भरा था।

उमानाथ निष्पंद पड़ा था।

महालक्ष्मी ने फिर कहा : मैं सचमुच आ गई हूँ। मुझे किसी भी प्रकार का विरोध नहीं, कोई शिकायत नहीं, केवल तुम्हारी नीरा के बुलाने पर आई हूँ। तुम्हें कोई नाराज़ी तो नहीं ?

उमानाथ ने फिर भी नहीं सुना। महालक्ष्मी समझे थी कि डर के मारे, संकोच और लाज के कारण उमानाथ अभिनय कर रहा है। सबके चले जाने पर वह तुरन्त उसे होश में ले आयेगी। पर यह भी एक दूराशा मात्र साबित हुई। सारा जीवन ऐसी ही कल्पनाओं में बीत चला।

वह सचमुच बेहोश था।

दया बगल के कमरे में हर चीज़ उलट-पुलट कर देख रहा था। बक्स में उसे शराब की एक भरी बोतल दिखाई दी, जिसे उसने वहीं छिपा दिया।

घर में घूम दया ने लौट कर पूछा : कुछ होश आया ?

महालक्ष्मी ने कहा : नहीं।

'बिल्कुल नहीं ?'

'नहीं।'

दया चुप होकर उमानाथ को देखने लगा। उसकी आँखों के नीचे गड्ढे पड़ गये थे। नीरा की साड़ी पास ही पड़ी थी। पास में ही कुछ शीशियाँ भी छोटी मेज़ पर रखी थी। इसका मतलब था दवा तो आई थी। शायद कुछ पिलाई भी गई थी। किसने पिलाई होगी ? नीरा ने ही। और किसने ? दया ने देखा महालक्ष्मी निस्संकोच उमानाथ को घूर रही थी। वह उस दृष्टि की तन्मयता को अधिक देखने की सामर्थ्य नहीं रखता था।

'तब तो यह विलायत नहीं गया था।' दया ने कहा।

'नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तुम्हें क्या मालूम था ?'

'जी हाँ।'

'पर तुमने किसी से कहा नहीं।'

'कहने से लाभ क्या था ?'

'हो सकता था इसे बीच में ही रोका जाता।'

महालक्ष्मी को यह बात कुछ चुभी। तो क्या अब भी उसी का दोष समझा जायेगा ?

चाचा का स्वर सुनाई दिया। उन्होंने कहा : दया ! डाक्टर साहब आ गये।

डाक्टर अवस्थी से दया का परिचय था। इस समय उनके साथ उनका ऐसिस्टेंट डाक्टर शुक्ला भी था।

'ज़रा सारी बात बताने में देर हो गई,' चाचा जी ने कहा और डाक्टर से मुड़ कर कहा : आइये।

डाक्टरों ने उमानाथ की जाँच शुरू की।

'टी० बी० है' डाक्टर अवस्थी ने देखते ही कहा।

'डाक्टर साहब,' दया ने कहा : ये तो बोलते ही नहीं। ऐसी क्या बेहोशी है ?

डाक्टर कुछ देर चुप रहा। फिर उसने कहा : इन्हें कोमा हो गया है।

'कोमा !!' दयानाथ ने डरते हुए स्वर से कहा।

महालक्ष्मी कोमा का शब्दार्थ नहीं समझी, पर परिस्थिति और दया के स्वर की भय विह्वलता से उत्पन्न आशंका उस तक पहुँच गई। उसने अर्थ लगाया कि कोई बहुत भयानक रोग हो गया है।

डाक्टर उमानाथ के बारे में सब सुन चुके थे। बोले : शराब बहुत पीता था ? ऐ ? कौन कह सकता है कि यह भी आप ही के खान्दान में हुआ था ?

महालक्ष्मी को बुरा लगा ज़रूर, पर वह चाचा जी के मित्र डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

से क्या कहती ? और डाक्टर ने क्या कुछ गलत कहा ? इतनी बड़ी मिसाल सामने है फिर उसे क्या छिपाया जा सकता है ?

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने धीरे से कहा : यह क्या होता है ?

डाक्टर अवस्थी ने कहा : कोमा ? इसे, नहीं तन्द्रा तो कहना ठीक नहीं होगा, पर हाँ एक तरह की बेहोशी आने लगती है, जिसमें आदमी को बहुत कम होश रहता है।

'बहुत खतरनाक होती है ?' महालक्ष्मी ने फिर साहस किया।

डाक्टर शुक्ला कह उठे : बस यह समझिये कि.....

दयानाथ समझ गया कि अब यह नया डाक्टर कुछ ऊटपटाँग बक जायेगा। उसने काट कर कहा : बहुत तो क्या, पर होती ज़रूर है, इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता है। पर अब तो डाक्टर साहब आ ही गये हैं !

और उसने डाक्टर अवस्थी की ओर देखा। वे कहने लगे : घबराओ नहीं बेटी। कोशिश करता हूँ। अभी तो हम हैं ही। तुम इतनी चिंता मत करो।

महालक्ष्मी कैसे कहे कि उसको चैन नहीं मिलता। पर अब वह क्या कहती ?

दवा देकर डाक्टर चला गया। इसी प्रकार वह रात, दूसरी सुबह, और साँझ बीत चली। अब धुँधलका आकाश में छितरने लगा।

डाक्टर अवस्थी की कोशिशें बेकार होने लगीं। बड़ा अजीब केस था। केवल उनके पास अश्वासन रह गये थे। पर उनका भी कब तक असर होता, परिवार के लोग तो यह जानना चाहते थे कि अब उमानाथ को होश आ सकता है या नहीं ?

दया ने पूछा : तो क्या यह बेहोशी दूर नहीं होगी ?

डाक्टर अवस्थी ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल अपने ऐसिसटेंट की ओर जिसने झुक कर कहा : केस बहुत देर में हाथ आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तुम्हें क्या मालूम था ?'

'जी हाँ।'

'पर तुमने किसी से कहा नहीं।'

'कहने से लाभ क्या था ?'

'हो सकता था इसे बीच में ही रोका जाता।'

महालक्ष्मी को यह बात कुछ चुभी। तो क्या अब भी उसी का दोष समझा जायेगा ?

चाचा का स्वर सुनाई दिया। उन्होंने कहा : दया ! डाक्टर साहब आ गये।

डाक्टर अवस्थी से दया का परिचय था। इस समय उनके साथ उनका ऐसिस्टेंट डाक्टर शुक्ला भी था।

'ज़रा सारी बात बताने में देर हो गई,' चाचा जी ने कहा और डाक्टर से मुड़ कर कहा : आइये।

डाक्टरों ने उमानाथ की जाँच शुरू की।

'टी० बी० है' डाक्टर अवस्थी ने देखते ही कहा।

'डाक्टर साहब,' दया ने कहा : ये तो बोलते ही नहीं। ऐसी क्या बेहोशी है ?

डाक्टर कुछ देर चुप रहा। फिर उसने कहा : इन्हें कोमा हो गया है।

'कोमा !!' दयानाथ ने डरते हुए स्वर से कहा।

महालक्ष्मी कोमा का शब्दार्थ नहीं समझी, पर परिस्थिति और दया के स्वर की भय विह्वलता से उत्पन्न आशंका उस तक पहुँच गई। उसने अर्थ लगाया कि कोई बहुत भयानक रोग हो गया है।

डाक्टर उमानाथ के बारे में सब सुन चुके थे। बोले : शराब बहुत पीता था ? ऐ ? कौन कह सकता है कि यह भी आप ही के खान्दान में हुआ था ?

महालक्ष्मी को बुरा लगा ज़रूर, पर वह चाचा जी के मित्र डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
से क्या कहती ? और डाक्टर ने क्या कुछ गलत कहा ? इतनी बड़ी मिसाल सामने है फिर उसे क्या छिपाया जा सकता है ?

उसने धीरे से कहा : यह क्या होता है ?

डाक्टर अवस्थी ने कहा : कोमा ? इसे, नहीं तन्द्रा तो कहना ठीक नहीं होगा, पर हाँ एक तरह की बेहोशी आने लगती है, जिसमें आदमी को बहुत कम होश रहता है।

'बहुत खतरनाक होती है ?' महालक्ष्मी ने फिर साहस किया।

डाक्टर शुक्ला कह उठे : बस यह समझिये कि.....

दयानाथ समझ गया कि अब यह नया डाक्टर कुछ ऊटपटाँग बक जायेगा। उसने काट कर कहा : बहुत तो क्या, पर होती ज़रूर है, इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता है। पर अब तो डाक्टर साहब आ ही गये हैं !

और उसने डाक्टर अवस्थी की ओर देखा। वे कहने लगे : घबराओ नहीं बेटी। कोशिश करता हूँ। अभी तो हम हैं ही। तुम इतनी चिंता मत करो।

महालक्ष्मी कैसे कहे कि उसको चैन नहीं मिलता। पर अब वह क्या कहती ?

दवा देकर डाक्टर चला गया। इसी प्रकार वह रात, दूसरी सुबह, और साँझ बीत चली। अब धुँधलका आकाश में छितरने लगा।

डाक्टर अवस्थी की कोशिशें बेकार होने लगीं। बड़ा अजीब केस था। केवल उनके पास अश्वासन रह गये थे। पर उनका भी कब तक असर होता, परिवार के लोग तो यह जानना चाहते थे कि अब उमानाथ को होश आ सकता है या नहीं ?

दया ने पूछा : तो क्या यह बेहोशी दूर नहीं होगी ?

डाक्टर अवस्थी ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल अपने ऐसिसटेंट की ओर जिसने झुक कर कहा : केस बहुत देर में हाथ आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्यामनाथ ने अवस्थी के दोनों हाथ पकड़ कर कहा : डाक्टर साहब यह मेरा दूसरा बेटा है। क्या यह भी...क्या यह भी...

'ऐसा न कहिये' डाक्टर ने कहा—बुरी बातों को सोच में भी न लाइये।

'ठीक हो जायगा न ? चाचा ने पूछा।

डाक्टर अवस्थी ने धीमे से कहा : परमात्मा चाहेगा तो सब ठीक होगा श्यामनाथ जी।

—६—

चाचा ने सिर झुका लिया। परमात्मा ! ! !

महालक्ष्मी के आने के बाद रामनाथ को लगा जैसे अब दुनिया नष्ट हो जाने के पहले दो चार झोंके खा रही है। आज तक जो नहीं हुआ, वह भी आज हो गया। अब वे क्या करें ? और श्यामनाथ ने तनिक भी चिंता नहीं की, उल्टे महालक्ष्मी को ही बढ़ावा दिया। रामनाथ ने क्रोध से ओठ चबाये और मन ही मन कहा : चले गये तो देखूँ अब वें लौटते कैसे हैं ?

फिर विचार आया —अब वे अगर न लौटें तो ?

अपने परिवार के सदस्यों का हठ वे जानते थे। दबते रहे दबते रहे, पर जब उठे तो ऐसे उठे कि फिर कभी दबे ही नहीं। घोर विक्षोभ के इस आतुर क्षण में अवधेश ने आकर पूछा : दद्दुआ !

'क्या है ? रामनाथ ने रूखे स्वर से पूछा।

बालक सहम गया।

'क्या है बेटा।' रामनाथ को एकाएक ध्यान आया।

'माँ कहाँ गई ?'

'चली गई।'

'कहाँ गई ?'

'मालूम नहीं।'

'माँ बुला दो।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैं कहाँ से बुला दूँ।'

बालक रोने लगा।

और फिर रामनाथ की पुचकार, गोद में लेना, डाँटना, बुड़कना, सैर, मिठाई, खिलौने, चंदा मामा, रामदीन के समस्त प्रयत्न कुछ भी कारगर नहीं हुए। बालक को चैन नहीं था। उसने न खाया, न पिया। पिट कर भी नहीं माना।

रामनाथ कहते : खा ले बेटा।

बालक अड़ कर कहता : नहीं।

'खा ले बड़ा राजा बेटा है।'

बालक का एक ही उत्तर था : नहीं।

इस छोटे से जीवन की यह 'नहीं' बहुत बड़ी साबित हुई। सत्यनारायण सुबह मोटर ले आया। और प्रायः यह दिन भी बीत चला। परन्तु बालक सिर्फ पानी पीता। और कुछ भी नहीं खाता। रात को वह जब सोया तो कई बार चौंक चौंक कर उठा। रामनाथ ने उसे अपने पास सुला लिया। आज उन्हें मालूम दिया कि बच्चा पालना कितना कठिन है। जब तक बच्चा खिलौना है तभी तक वह अच्छा लगता है। जब वह बच्चा बन जाता है, तब उसको सँभालना टेढ़ी खीर है। बे वजह रात को उठ बैठे और हथेलियों की उल्टी तरफ से आँखें मीड़ कर रोने लगे। ज़रा थपथपा दिया, फिर सो गये।

उस अथक रें रें को सुन कर रामनाथ का हृदय अब छटपटाने लगा। इसका मतलब ? सब कुछ हो गया। अब इस पर कोई चाल ही नहीं चलती ? ऐसे क्या यह जिन्दा रह सकेगा।

यह विचार बहुत भयानक साबित हुआ। अवधेश उनका आखिरी सहारा था। यदि यह भी नहीं रहा तो !!

जायदाद, खानदान, मर्यादा, परंपरा, एक एक करके सब उनकी आँखों के सामने से गुजर गया। उनकी कड़ी डाँट से सहमा हुआ बालक अब रूठ कर धरती पर बैठ कर रो रहा था। रामनाथ घबरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
श्यामनाथ ने अवस्थी के दोनों हाथ पकड़ कर कहा : डाक्टर साहब यह मेरा दूसरा बेटा है। क्या यह भी...क्या यह भी...

'ऐसा न कहिये' डाक्टर ने कहा—बुरी बातों को सोच में भी न लाइये।

'ठीक हो जायगा न ? चाचा ने पूछा।

डाक्टर अवस्थी ने धीमे से कहा : परमात्मा चाहेगा तो सब ठीक होगा श्यामनाथ जी।

—६—

चाचा ने सिर झुका लिया। परमात्मा ! ! !

महालक्ष्मी के आने के बाद रामनाथ को लगा जैसे अब दुनिया नष्ट हो जाने के पहले दो चार झोंके खा रही है। आज तक जो नहीं हुआ, वह भी आज हो गया। अब वे क्या करें ? और श्यामनाथ ने तनिक भी चिंता नहीं की, उल्टे महालक्ष्मी को ही बढ़ावा दिया। रामनाथ ने क्रोध से ओठ चबाये और मन ही मन कहा : चले गये तो देखूँ अब वें लौटते कैसे हैं ?

फिर विचार आया —अब वे अगर न लौटें तो ?

अपने परिवार के सदस्यों का हठ वे जानते थे। दबते रहे दबते रहे, पर जब उठे तो ऐसे उठे कि फिर कभी दबे ही नहीं। घोर विक्षोभ के इस आतुर क्षण में अवधेश ने आकर पूछा : दद्दुआ !

'क्या है ? रामनाथ ने रूखे स्वर से पूछा।

बालक सहम गया।

'क्या है बेटा।' रामनाथ को एकाएक ध्यान आया।

'माँ कहाँ गई ?'

'चली गई।'

'कहाँ गई ?'

'मालूम नहीं।'

'माँ बुला दो।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैं कहाँ से बुला लूँ।'

बालक रोने लगा।

और फिर रामनाथ की पुचकार, गोद में लेना, डाँटना, घुड़कना, सैर, मिठाई, खिलौने, चंदा मामा, रामदीन के समस्त प्रयत्न कुछ भी कारगर नहीं हुए। बालक को चैन नहीं था। उसने न खाया, न पिया। पिट कर भी नहीं माना।

रामनाथ कहते : खा ले बेटा।

बालक अड़ कर कहता : नहीं।

'खा ले बड़ा राजा बेटा है।'

बालक का एक ही उत्तर था : नहीं।

इस छोटे से जीवन की यह 'नहीं' बहुत बड़ी साबित हुई। सत्यनारायण सुबह मोटर ले आया। और प्रायः यह दिन भी बीत चला। परन्तु बालक सिर्फ पानी पीता। और कुछ भी नहीं खाता। रात को वह जब सोया तो कई बार चौंक चौंक कर उठा। रामनाथ ने उसे अपने पास सुला लिया। आज उन्हें मालूम दिया कि बच्चा पालना कितना कठिन है। जब तक बच्चा खिलौना है तभी तक वह अच्छा लगता है। जब वह बच्चा बन जाता है, तब उसको सँभालना टेढ़ी खीर है। वे वजह रात को उठ बैठे और हथेलियों की उल्टी तरफ से आँखें मीड़ कर रोने लगे। ज़रा थपथपा दिया, फिर सो गये।

उस अथक रें रें को सुन कर रामनाथ का हृदय अब छटपटाने लगा। इसका मतलब ? सब कुछ हो गया। अब इस पर कोई चाल ही नहीं चलती ? ऐसे क्या यह जिन्दा रह सकेगा।

यह विचार बहुत भयानक साबित हुआ। अवधेश उनका आखिरी सहारा था। यदि यह भी नहीं रहा तो !!

जायदाद, खानदान, मर्यादा, परंपरा, एक एक करके सब उनकी आँखों के सामने से गुजर गया। उनकी कड़ी डाँट से सहमा हुआ बालक अब रूठ कर धरती पर बैठ कर रो रहा था। रामनाथ घबरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उठे। वे विक्षुब्ध से टहलने लगे। तब उनकी शक्ति सब जगह चल कर यहाँ चूर चूर हो गई !!

कैसी परवशता है !!

बदला भी लें तो किससे ? वह तो बालक है। समझाये उसे जिसमें बुद्धि हो। उसमें तो लेशमात्र भी नहीं। वह दुधमुँहा क्या जाने कि परंपरा और मर्यादा क्या है ? रामनाथ सोचने लगे।

तो क्या उन्होंने गलती की है ? क्या महालक्ष्मी अब सचमुच नहीं लौटेगी ? क्यों लौटेगी ? अब जब पति मिल गया तो वह क्यों लौटने लगी ? उसके लिये और क्या है ? यह बालक उसके लिये रो रहा है जो उसे एकदम छोड़ कर चली गई ? उसे नहीं सताया ममता ने ? वह अपने पति के लिये पागल हो उठी थी। क्योंकि वह उसके जीवन-मरण की कठिन घड़ी थी।

अवधेश उठकर उनके पैरों से चिपट गया और कहने लगा—ददुआ तलो तलो ददुआ.....

उस आर्द्र याचना, उस अबोध पुकार को सुनकर वे काँप गये। उन्होंने नितांत करुणा से उसे देखा। बालक का पाश छूट गया।

'अच्छा, ठहर जा, रामनाथ ने विवश होकर कहा : चलते हैं। बोल कहाँ चलेगा ?

'माँ के पाछ' अवधेश ने आँखें मिला कर कहा। उस छोटी सी कमजोर देह में क्या था ! पर उन आँसू भरी मासूम आँखों में एक बहुत बड़ी शक्ति थी। उसे देख कर रामनाथ को लगा जैसे वे एक अत्याचारी थे, वे अमानुषिक थे। उस पर वे अपना शासन नहीं चला सकते।

रामनाथ को लगा वे पत्थर हो गये थे।

'माँ के पाछ।' शब्द कानों में गूँज उठे ! क्या है 'माँ के पाछ'। वहाँ इसे क्या मिल जायेगा ? माँ के पाछ।

'अच्छा,' एकाएक उन्होंने कहा : 'चलो।'

बालक प्रसन्न हो उठा। परन्तु अभी उसकी आँखों में संदेह था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'फिर तो नहीं रोयेगा ?' रामनाथ ने पूछा।

बालक ने निःसंकोच सिर हिलाया। उस अबोध सरलता को देख कर वे विवश से मुस्करा दिये। क्या तबियत है भला। जरा भी नहीं झेंपते कि वे वजह रो रहे हैं। उन्हें मालूम दिया वे एक बहुत बड़े बादशाह के सामने खड़े थे, जिस पर उनका जोर नहीं चल सकता था। वे ममता से पराजित हो गये थे।

राजा रामनाथ उठ खड़े हुए। उन्होंने आवाज दी—रामदीन।

रामदीन उपस्थित हुआ। उन्होंने कहा : सत्यनारायण को बुला।

सत्यनारायण आ गया। उन्होंने कहा : मोटर लेकर कहाँ गये थे ?

'सरकार सीधे कानपुर गया था।'

'फिर'

'कुँवर साँब के घर वे उतर गये और उसी रात रेल से चले गये।'

'कहाँ ?'

'इलाहाबाद।'

'ठीक, जाओ।'

रामनाथ सत्यनारायण के जाने पर बैठ गये। उन्होंने दराज में से नीरा का पत्र निकाल कर पता डायरी में दर्ज कर लिया। फिर सत्यनारायण को बुलवाया। उससे कहा : मोटर तैयार करो। हम इलाहाबाद चलेंगे।

'सरकार मोटर में ही चलेंगे ?'

'हाँ'

सत्यनारायण चकित था।

उन्होंने कहा : अरे मोटर में जल्दी पहुँच जायेंगे। रेल में देर हो जायेगी। यह तो मानता ही नहीं। जब से बहू गई है तब से जो रोना शुरु किया है अभी तक चुप ही नहीं हुआ। रो रो कर आस्मान सिर पर उठा लिया है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'सरकार, कुँवर साँव सारी रात सोये भी नहीं।'

'तुम्हें कैसे मालूम।'

'सरकार मैं सुन रहा था। इसका रोना सुन कर मुझे भी रात भर नींद नहीं आई।'

रामनाथ ने कृतज्ञता से सत्यनारायण की ओर देखा जो अत्यन्त नम्र बना सामने खड़ा था। 'जाओ रामदीन को भेज दो,' उन्होंने कहा और बैठ गये।

रामदीन आया। उसे देख कर रामनाथ ने विवश स्वर में कहा : सब इन्तजाम कर दे। क्या क्या जरूरत होती है? तुझे मालूम है?

'मालूम है सरकार।'

'देख, कुछ रास्ते में खाने को भी रख दीजो।'

'हाँ सरकार।'

'हाँ सरकार।' रामना थधीरे से फुसफुसा उठे। फिर अवधेश से कहा : अब तो ठीक है? गधा.....

बालक पानी भरी आँखों से देखता हुआ संकोच से टेढ़ी गर्दन करके मुस्कराने लगा। रामनाथ को उस पर क्रोध नहीं आया। अच्छा लगा। जैसे पत्थर फोड़ कर सोता निकला और पहाड़ पुलक उठा।

—७—

डाक्टर अवस्थी के चले जाने पर डा० शुक्ला ने कुछ इंजेक्शन दिये। उमानाथ के हाथ में जब सूई घुसी तब वह तनिक मुँह टेढ़ा करके कराहा पर जैसे इससे अधिक कुछ नहीं। कुछ देर बाद डा० शुक्ला भी चले गये। महालक्ष्मी उमानाथ के पलंग के पास बैठी थी। ज़मीन पर ही चटाई बिछी थी। दया और श्यामनाथ कुर्सियों पर बैठे थे, बातें करते जाते थे और बीच बीच में उमानाथ की ओर देखते जाते थे।

दयानाथ कहा : आपने देखा? बक्स में सचमुच रूपया रखा है। श्यामनाथ ने सिर हिलाया।

'वह कोई मामूली औरत तो नहीं थी।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'क्यों ?' चाचा ने पूछा।

'अरे दस हज़ार रूपया ! एक बाज़ारू औरत। साथ में एक बेहोश रोगी। और यही नहीं कि चलते वक्त उसके रूपये छोड़, गई वरन् उसके घरवालों को भी बुला गई।'

चाचा श्यामनाथ ने कहा : दुनिया में अभी इंसानियत बाकी है। जिस दिन वह कहीं भी नहीं मिलेगी, उसी दिन हम एक दूसरे का गला घोंट कर हत्या करने लगेंगे।

'न जाने कहाँ गई बेचारी।' दयानाथ ने करूणा भरे स्वर से कहा।

चाचा को इतनी हमदर्दी पसंद नहीं आई। यह ज़रा ख़तरे की बात थी। कहा : जहाँ उसकी तक़दीर ले गई।

'उमानाथ से उसे सच्चा प्रेम था।'

'था तो, उसकी ब्याहता तो नहीं थी। दुनिया तो उसे स्वीकार नहीं करती।'

महालक्ष्मी सुन रही थी। यद्यपि नीरा की सद्भावना से वह स्वयं भी प्रभावित हुई थी, पर औरों के मुँह से उसकी प्रशंसा सुनकर उसे लगा जैसे उसकी हीनता का वर्णन हो रहा है। दयानाथ निश्चिंत थे। इस बात पर उनका ध्यान ही नहीं था। कहा : हमारा जीवन इतने अप्राकृतिक रूप से बँधा है, कि अक्सर तबियत मेल नहीं खाती।

श्यामनाथ ने व्यवहार की बात को। 'अक्सर दुनिया के पचानवे फ़ी सदी स्त्री पुरुष प्रेम नहीं करते। जिसे तुम प्रेम कहते हो, वह सिनेमा, थ्येटर वाले ही करते हैं। दुनिया में तो आश्रय की ज़रूरत पड़ती है। संग रहने का ही नाम प्रेम है। कानून से संग रहना विवाह है, इसी से समाज उसे स्वीकार कर लेता है। ज़्यादातर स्वस्थ लोग वक्त पर खाना पसंद करते हैं। दुनिया में कुछ ऐसे भी होते हैं जो घर का खाना छोड़ कर बाज़ार की चाट खाया करते हैं। उन्हें एक न एक दिन हैजे का शिकार होना ही पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानाथ को चाचा की व्यवहार बुद्धि पर आश्चर्य हुआ। यह इतना सब समझते हैं ?

ज़्यादातर नई पीढ़ी के आदमी यही समझते हैं कि उनके पहले की पीढ़ी उनसे कम समझदार हैं। दुनिया में अगर अक्लमंदी शुरू हुई है तो इस नई पीढी ही से।

दोनों अपनी बातों में लगे हुए थे। इधर किसी का भी ध्यान नहीं गया कि अब तक महालक्ष्मी उमानाथ को आँखें फाड़े देख रही थी जैसे उसे सदा के लिये अपनी तारा में अंकित कर लेना चाहती थी, सदा के लिये अपने दिल में नक्श कर लेना चाहती थी। और देखते ही देखते वह लुढ़क गई। उसके गिरने की आवाज़ से दयानाथ चौंक उठा। उसने कहा : चाचा जी।

चाचा श्यामनाथ घबरा गये। बोले : क्या हुआ ?

'यह देखिये इसे क्या हुआ ?'

चाचाजी निकट आये। महालक्ष्मी पड़ी थी। उसके हाथ पाँव ऐंठ रहे थे, और मुँह टेढ़ा हो गया था। श्यामनाथ ने देखकर कहा : कुछ नहीं ! उसे पड़ा रहने दो। घंटे भर में ठीक हो जायेगी।

दयानाथ समझा नहीं। पूछा : यह क्या बीमारी है ?

चाचा मुस्कराये। कहा : इसे फ़िट आते हैं।

'कब से ?'

'अब तो कई दिन हो गये। भैया कहते थे इलाहाबाद से शुरू हुए।'

'इलाहाबाद कब गये थे ?'

'लंबा क़िस्सा है।'

दयानाथ को कुछ मालूम न था। वह बहुत कुछ जानना चाहता था, पर श्यामनाथ इस समय बताने की रूझान में न थे। आख़िर वे क्या क्या सुनाते। दयानाथ ने पूछा : यह क्यों होता है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'डाक्टर कहते हैं कि जीवन में जब अतृप्ति होती है तब ऐसा होता है विशेष कर स्त्री को जब दांपत्य सुख नहीं मिलता।'

'फिर ?'

'फिर वह आदत हो जाती है। कमज़ोर तबियत के लोगों को जब कोई सदमा लगता है तब वे बिखर जाते हैं। और जिन्हें तरकीब आ-जाती है 'उन्हें फ़िट आ जाता है ?' श्यामनाथ हँस दिये।

चाचा कह रहे हैं ! दयानाथ को बात में मज़ा आया।

'एक तरह से ये लोग सुखी हैं।' श्यामनाथ ने कहा।

'क्यों ?'

'जब सदमा लगा, लेट गये। इन लोगों की बुद्धि इतनी कुंठित हो जाती है कि ज़रा सा धक्का लगा, बस विचार दिमाग़ में ऐसे गिर कर झनझनाते हुए टूट फूट होने लगते हैं जैसे चीनी बर्त्तनों की दूकान में बैल घुस जाने से गड़बड़ी मचने लगती है।'

दयानाथ सुनता रहा। चाचा कहते गये—और जो इतना भी सोच नहीं पाते वे सुखी हैं। उनका बोझ कुछ देर में अपने आप हल्का हो जाता है। ठीक ऐसे समझो जैसे आपरेशन के पहले रोगी को डाक्टर क्लोरो फ़ारम देता है। जिसकी बेहोशी में रोगी को फिर ध्यान नहीं रहता कि क्या हो रहा है। सचमुच वे सुखी हैं जो अपनी अक़्ल को इतना कमज़ोर बना चुके हैं कि दुख को सहने की ताक़त पैदा करने की ज़रूरत ही नहीं।

दयानाथ ने कहा: लेकिन चाचाजी ! इन्हें तो चेतन मनुष्य कहना चाहिये। हम लोगों पर दुख असर भी नहीं करते, तब यह वेदनाओं के प्रति इतने जागरूक होते हैं कि उसको सह नहीं पाते। हमारी खाल असल में मोटी हो गई है।

'अरे तो बेटा, छुई मुई होने से तो काम नहीं चलता।'

'यह व्यवहार की बात है। हमारे यहाँ मनुष्य को अछूत बनाना एक रोज़मर्रा की बात हो गई है। यहाँ तक कि अछूत यदि मनुष्यत्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
के अधिकार माँगता है, तो वह माँग हमें अमानुषिक मालूम देती है। पर जिस देश में सब मनुष्यों में परस्पर ऐक्य है, वहाँ का आदमी यहाँ आ जाये तो उसका तो दम घुटने लगे। वह तो यही समझेगा कि वह मनुष्यों के बीच में रहता ही नहीं।'

चाचा निरुत्तर हुए। पर बात बदल कर कहा : ऐसे लोगों में अहम् बढ़ जाता है, चिड़चिड़े हो जाते हैं, खुशामदपसंद होते हैं।

'तो उसे क्षमा कर देना चाहिये। वह उनकी अचतुर सामाजिकता है, जिसमें वे समझते हैं कि समाज को उल्लू बना रहे हैं। वे नहीं समझते कि लोग उन पर दया करते हैं, उन्हें अपाहिज समझ कर उन्हें स्नेह देते हैं। आख़िर तो वे विकृत मनुष्य कहला सकते हैं।

चाचा को संतोष हो गया। फिर उन्होंने महालक्ष्मी की ओर देख कर कहा: 'अब और तो यहाँ कोई है नहीं। आपद्धर्म है। फिर तुम ही इसका काम करो। एक काम करो, तौलिया ले लो और मुँह पर पानी के छींटे दो। होश में आ जायगी।

'सच ?' दया ने पूछा ! वह अधेड़ हो चला था, पर स्त्रियों के रोगों से बिलकुल अनभिज्ञ था क्योंकि उसकी स्त्री राजेश्वरी एक हँसमुख और सरल स्वभाव की स्वस्थ स्त्री थी। उसे ज़्यादा से ज़्यादा मलेरिया हुआ, या फिर मौसम बदलने पर कभी कभाद जुकाम हो गया। इससे आगे कुछ नहीं। चाचा ने जो कहा था उसने वही किया। महालक्ष्मी की दाँती खुली। पानी लगते ही वह चौंकी, फिर करवट बदल ली। दयानाथ ने फिर पानी के छींटे दिये। एकदम कुलबुलाई जैसे कोई मुर्दा जानवर चौंक उठा हो। तीसरे छींटे पर उसने आँखें खोल दीं। क्षण भर बाद उसे ध्यान आया कि जेठ जी पानी के छींटे दे रहे हैं। संकोच करती हुई, कपड़े सँभालती उठ बैठी और दया के हाथ से तौलिया लेकर मुँह पोंछ लिया।

'अब तो तबियत ठीक है बेटी ?' श्यामनाथ ने पूछा।

'सिर में थोड़ा भारीपन है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जाओ सो रहो कुछ देर। हम यहीं हैं।'

महालक्ष्मी बगल के कमरे में चली गई।

कुछ देर कमरे में सन्नाटा छाया रहा। फिर उमानाथ की ओर देख कर दयानाथ ने कहा : चाचाजी! क्या था? क्या हो गया?

'अपना अपना भाग्य है।'

'यह जीवन के एक कठिन संघर्ष पथ पर चला था।'

'बड़े बड़े योगी तपभ्रष्ट हो जाते थे। स्त्री का जादू क्या मामूली होता है। तभी तो बड़ों ने ब्याह के इतने गीत गाये हैं।

'पर इसका तो ब्याह भी हो चुका था। और इतनी सुशील लड़की मिली थी।'

'ठीक है. पर जिस छत की मुँडेर जितनी नीची होती है, उतना ही उस पर से गिरने का ख़तरा होता है। चूने की जाली देखने के लिये होती है, उस पर विश्वास करके झुका नहीं जा सकता।

दयानाथ ने सोचा चाचा जी ने ठीक ही कहा। स्त्री को इतना दासत्व मिला है। वह क्या उसके बदले में एक भी पुरुष को अपनी वासना की शक्ति से नहीं दाब सकती। अपनी हीनता में भी हर एक को अपने ज़्यादा से ज़्यादा अधिकारों को इस्तेमाल करना चाहिये।

'जीवन भर बेचारी ने दुख ही भोगा।' दयानाथ ने फिर कहा।

चाचा श्यामनाथ ने कुछ नहीं कहा।

'इससे कुछ कहियेगा तो नहीं,' दया ने उमा की ओर दिखाकर कहा।

श्यामनाथ ने अस्वीकार करते हुए सिर हिला कर कहा : क्यों मैं क्या पागल हूँ? यह वक्त कुछ कहने सुनने का है?

दयानाथ ने कनखियों से देखा। चाचा शांत थे। अचानक ही उसे याद हो आया कि चाचा में कुछ पागलपन है! उसे उससे भय हुआ। विचार आया, राजेश्वरी को ले आते तो अच्छा रहता, पर फिर बच्चों की देखभाल कौन करता? उन्हें कौन वक्त पर खाना खिलाता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचार बदला, ददुआ क्या सोचते होंगे ? सचमुच चाचा ने कमाल कर दिया। सामने से चले आये।

पिता के स्वभाव को भली भाँति जानने के कारण वह उनके औद्धत्य से परिचित था; सब तरह का विद्रोह करके भी मन ही मन दबता था। इस समय उसे प्रसन्नता हुई और उसने मन ही मन कहा : कैसे अजीब आदमी हैं। बेटा बीमार है और इस समय भी अपनी मर्यादा लिये बैठे हैं। ले जायेंगे इस सबको ? अंत तो आख़िर सब यहीं छूट जायेगा !

उसके लिये इतनी हृदयहीनता.....

क्या उनके हृदय है.....

और फिर प्रश्न उठा : क्या वे मनुष्य हैं, या नितांत पशु.....

दयानाथ सिहर उठा।

कमरे का सन्नाटा अचानक टूट गया। उमानाथ ने कहा--कौन ?

महालक्ष्मी चटाई पर बैठी थी। उसने कहा : क्या है ? मैं हूँ ? महालक्ष्मी।

'ओह।' उमानाथ ने धीरे से कहा।

'क्या हुआ ?' महालक्ष्मी ने ज़ोर से पूछा—'दर्द होता है ?'

उसका स्वर सुनकर दयानाथ और श्यामनाथ भी उसी कमरे में आ गये। उमानाथ ने कहा : कुछ नहीं। अब दर्द नहीं होता।

'अब तो पहले से तबियत कुछ अच्छी मालूम देती है' दयानाथ ने कहा। सचमुच उमानाथ अब पहले से स्वस्थ प्रतीत होता था। उसके चेहरे और आँखों में एक चमक आ गई थी। उसने कहा : कौन ? भइया ? अरे चाचाजी...

उसने उठने का प्रयत्न किया किंतु दयानाथ ने कहा—लेटे रहो, लेटे रहो...

'उठने की ज़रूरत नहीं बेटा' श्यामनाथ ने जल्दी से कहा।

महालक्ष्मी ने उसे फिर लिटा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमानाथ ने धीरे से कहा : आप लोग मुझसे नाराज़ हैं ?

'नहीं बेटा' श्यामनाथ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा : नाराज़ परायों पर हुआ जाता है। अपनों पर नहीं।

उमानाथ ने पूछा : ददुआ आये हैं ?

'नहीं' दयानाथ ने कहा

'उनकी तबियत ठीक नहीं थी।' महालक्ष्मी ने बात बनाई।

'झूठ,' उमानाथ ने कहा—'ज़िंदगी भर तुम इस तरह दूसरों को दोषों से बचाने के लिये अपने आपको धोखा देती रही हो। इस चीज़ ने ही दूसरों को तुमसे नाजायज़ फ़ायदे उठाने की अक़्ल दी। जब मैं ने हिल्डा के ब्याह की बात बताई थी तभी अगर तुम रोक देतीं तो कितना अच्छा रहता।

दया और श्यामनाथ ने महालक्ष्मी की ओर आश्चर्य से देखा। उन्हें एक नया भेद मालूम दिया। यह क्या कह रहा है ? क्या इसका एक ब्याह और हो चुका है। और दयानाथ ने देखा महालक्ष्मी प्रशांत बैठी थी। उसका सिर झुक गया था। दयानाथ की अब समझ में आने लगा। तब तो यही शीलराज था। इसीने इतना बड़ा जाल रचा था। परंतु उसने कहा : बोलो नहीं उमा ! तबियत ठीक हो जाने पर सब लोगों से बातें ही करते रहना।

उमानाथ मुस्कराया। उसने कहा: अब मैं ठीक नहीं हो सकूँगा बड़के भैया। अब मैं ठीक नहीं हो सकूँगा।

और पानी की एक रेख उसकी आँख की नोंक से कनपटी पर बह कर तकिये पर गिर गई। कितना मोह था। जीवन के लिये मनुष्य में कितनी तृष्णा होती है। सब कुछ हो जाने पर भी जैसे सब कुछ उसे बहुत सुन्दर लगता है और वह उस सबको सदा के लिये देखता रहना चाहता है।

आकर्षण की उस विह्वलता को देख कर दयानाथ का मन घुमड़ने लगा। उसने मुख फेर कर आँखें पोंछ लीं परंतु महालक्ष्मी रोने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
उसने कहा: ऐसा न कहो, मुझे डर लगता है, पर तुम्हारा दिल नहीं समझता...

दया ने डाँटा : रोती क्यों हो ? वेकार। अशुभ नहीं दुहराना चाहिये।

महालक्ष्मी कुछ देर सुवक कर चुप हो गई। उसने कहा: तुम लोगों के पत्थर का दिल होता है।

इस दिल और दिमाग़ की लड़ाई सृष्टि में बहुत पुरानी है। गौतम बुद्ध दिमाग़ पर ज़ोर देते रहे और यशोधरा अपने दिल को लिये किसी भी तरह झुकने को तैयार नहीं थी। महालक्ष्मी की बात का किसी ने उत्तर नहीं दिया।

उमानाथ का चेहरा देख दयानाथ चौंक उठा। क्षय का रोगी अत्यंत सुंदर दिखाई देता है। उसके चेहरे पर एक आभा सी दिख रही थी। महालक्ष्मी ने देखा। उमानाथ की आँखें झपकने लगीं। वह धीरे धीरे अस्फुट शब्द कहने लगा—कौन ? कौन है.....ददुआ... क्षमा.....मैं दोषी हूँ...पापी...क्या करूँ...नीरा...चली गई ?... कितना दुख हुआ तुझे मुझे छोड़ने में...कितनी वेदना...और फिर अंधेरा...अंधेरा...भयानक विकराल अंधेरा...मनुष्य उस नई भोर में जागेगा.....वह प्रभात...नया प्रकाश...धवल...नीहारस्नात उज्वल यह गुलामी, यह ग़रीवी दूर होगी...इस ऐंश को क्षय हो गई है... हूँ हूँ हूँ...अब यह पापी नहीं बच सकता...

सब सुन रहे थे। उमानाथ कहता जा रहा था। महालक्ष्मी रो रही थी। दया व्याकुल हो उठा। उसने नीचे का होंठ काठ लिया जैसे वह भीतर की घुमड़ को रोकने की चेष्टा कर रहा था।

इंगलैंड—आह वह सर्द रातें...कितनी शान, कितनी ऐयाशी... जर्मनी.....विश्व यात्रा के वे स्वप्न...नीरा...मैं पापी हूँ..महालक्ष्मी मुझे माफ़ करो...मैं पापी हूँ.....

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

महालक्ष्मी ने कहा : कौन कहता है तुम हो। मैं तो नहीं कहती। हृदय हल्का कर लो। एक बार मेरी बात तो सुन लो...

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परंतु उमानाथ कहता रहा : मज़दूर...किसान.....राज.. ... एक खेल बन गया...नीरा...मैं अपने ऐश नहीं छोड़ सकता... बेगम.....बेगम...हत्या...खून...

उमानाथ चिल्लाया : खून.....खून.....

दया ने ज़ोर से कहा : उमानाथ ! होश में आओ उमानाथ।

उसकी बात का कोई असर नहीं हुआ। उमानाथ कह रहा था... मैंने दग़ा की...देश की स्वतंत्रता से ग़द्दारी की...ग़रीबों को धोखा दिया...क्या...अपने लिये...

वह फिर चिल्लाया...अपने लिये...अपने लिये—

'पानी पीलो।' दया ने मुँह से गिलास लगा कर कहा।

पानी वह नहीं पी सका। जो गले में गया वह खरखराने लगा और उसके मुँह से ऐसी आवाज़ निकली जैसे घायल जानवर आर्त्त स्वर से चिल्ला उठता है। दयानाथ ने पानी का गिलास महालक्ष्मी को लौटा दिया।

चाचा श्यामनाथ ने उदास दृष्टि से देखकर कहा—लगता है सन्निपात हो गया है !

सन्निपात ! कितना भयानक था वह शब्द जो कानों पर बजा और भीतर उतर कर हड्डी तक कँपा गया।

'डाक्टर को लाऊँ ?' दया ने कहा।

'ले आओ,' महालक्ष्मी ने आशा भरी दृष्टि से कहा।

दयानाथ तुरंत चला गया। क़रीब बीस मिनट बाद जब डाक्टर शुक्ला आया उस समय उमानाथ का बहकना बंद हो चुका था। वह बेचैन था। डाक्टर देखने लगा। उसने एक दवा दी और असर देखा। कुछ देर बाद दूसरी दी और उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर घोर निराशा थी। उसने कहा : घबराइये नहीं...

पर स्वर स्वयं डूब गया, जैसे वह कह नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दयानाथ ने पूछा, कोई आराम है ?

'बहुत कम।'

कम पर ध्यान न देकर दया ने बहुत को ही ग्राह्य समझा क्योंकि उसी में उसका संतोष था।

'ज़्यादा ख़तरा है ?' उसने पूछा।

'आज की रात निकल जाये तो फिर कुछ नहीं।' डाक्टर ने कहा—मुझे इजाज़त है ? ज़रूरत पड़े तो जब चाहे बुला लीजियेगा।'

फ़ीस देकर दया उसे द्वार तक पहुँचाने आया। फिर पूछाः डाक्टर, ठीक बताइये। ठीक हो जायेंगे ?

डाक्टर ने कोई उत्तर नहीं दिया केवल उदास आँखों से देखा और बाहर निकल गया। दया थोड़ी देर तक देखता रहा फिर उसी कमरे में लौट आया। उसका हृदय भारी था। महालक्ष्मी ने उसे सशंक नेत्रों से देखा पर इतनी गहरी उदासी देखकर वह डर गई।

चाचा श्यामनाथ ने डाक्टर की दी हुई बाक़ी दवा भी दे दी, परंतु फ़ायदा नज़र नहीं आया।

'भूल भुलैया...उमानाथ बुड़ बुड़ाया' रास्ता...सीधा सादा छोड़ कर...मैं टेढ़े मेड़े पर भटकता रहा...मैं पापी हूँ...मैं पापी हूँ.....

और वह ज़ोर से चिल्लाया। उसके बाद जो कुछ उसने कहा वह स्पष्ट नहीं था। गले में कफ़ अटक रहा था। उसके पाँव पर हाथ रखते ही महालक्ष्मी चौंक उठी। वे ठंडे हो रहे थे।

'गंगाजल लाओ,' श्यामनाथ ने कहा।

घर में नहीं था। दयानाथ तेज़ी से गया और पड़ोसी से माँगा। उसने बिना आनाकानी किये तुरंत दे दिया। लाकर गले में डाला, पर इतने पापी जिस गंगा में नहा चुके थे, उसमें अब शक्ति नहीं रही थी।

उमानाथ हाथ पाँव फेंक रहा था। उसके चेहरे पर भय की छाया बढ़ती जा रही थी जिसने उसे विकराल बना दिया। उसके चेहरे को देख कर लगता था कि इस मनुष्य ने सारा जीवन पाप समझ कर बिताया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
है। यह अपनी कमज़ोरियों का गुलाम बन कर जिया। महालक्ष्मी स्तब्ध बैठ गई जैसे अब वह कुछ नहीं कर सकती। उसकी आँखें सूख गईं। आज वह पत्नी बन कर पति के पास बैठने का स्वतंत्र अधिकार पा सकी है, पर कितनी देर हो गई है। और उमानाथ चिल्ला उठता था। मृत्यु की यह यातना असह्य थी। उसकी इस हालत को देख सकना भी एक कठिन काम था। दयानाथ चुपचाप खड़ा देख रहा था। उसके चेहरे पर घोर निराशा थी। चाचा श्यामनाथ विस्फारित नेत्रों से जैसे कुछ ढूँढ रहे थे। पर उन्हें वहाँ कुछ मिल नहीं रहा था। उस करुण दृश्य में एक हृदय को रुला देने की शक्ति थी।

सब देख रहे हैं। पर कोई क्या करे? अब क्या किसी का बस चलता है? यदि चल सकता तो आज भी कुछ उठा नहीं रखते। सब कुछ हो गया। सड़क पर पड़े बच्चे को बचाने के लिये तब नज़र पड़ी जब मोटर का पहिया उसे नीचे गिरा चुका था। कैसा भी ब्रेक होता, पर अब गाड़ी का ऊपर से फिर जाना रोक देना असंभव था। इस समय दयानाथ की इच्छा हो रही है कुछ ऐसा हो जाये कि यह बन्द हो जाये। हे भगवान! इसे रोक दो।

पर भगवान ने आज तक कभी रोका है, न उसे दिलचस्पी ही है। और उमानाथ के मुंह से निकली हुई वे डरावनी आवाजें उनके कानों में गूँजने लगीं। दयानाथ कमरे के बाहर चला गया। उसके लिये यह सब अब देख सकना असंभव था। उससे बचने की और कोई भी तरकीब नज़र नहीं आती थी। बग़ल के कमरे में जाकर वह कुर्सी पर थका हुआ सा बैठ गया।

एकाएक उसने सुना। चाचा जी ने जोर से पुकारा: उमा! बेटा! उमानाथ!

कोई उत्तर नहीं। दयानाथ कमरे में तेजी से घुस आया। उमानाथ शांत पड़ा था। कोई नहीं कह सकता था कि अभी यह प्राणी मृत्यु से लड़ रहा था। कैसा पड़ा है, काठ सा। उफ! अब·····

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाचा फिर पुकार उठे : उमानाथ, उमानाथ

उनका स्वर रुँध गया और दयानाथ चिल्लाया : उमा ! उमा !

कोई उत्तर नहीं।

और तब पागल की तरह महालक्ष्मी बुक्का फाड़ कर रोती हुई उमानाथ के शव पर गिर पड़ी। उसका वह रोना कमरे को रुलाने लगा। उसका हाहाकार पुरुषों के कठोर हृदयों को झकझोर उठा और उन्होंने मुँह फेर कर अपने आँसू पोछ लिये।

श्यामनाथ खिड़की के बाहर देखने लगे। दयानाथ जमीन पर लाश को उतारने के लिए ढँकने लगा। उसने धीरे से कहा : चाचाजी।

'क्या है ?' श्यामनाथ ने पूछा।

'उतार लीजिए।'

'हाँ बेटा। अब क्या धरा है।'

दोनों ने बड़ी सावधानी से लाश उतारी और ढँक दिया। महालक्ष्मी ने गर्दन तक खोल दी और फिर कुछ देर तक एकटक देखती रही। उस समय कमरे में एक विभत्स सन्नाटा छा गया। एकदम सन्नाटा। यहाँ तक कि घड़ी की टिकटिक, टिकटिक सुनाई देने लगी।

चाचा श्यामनाथ आकर बैठ गये। और उन्होंने कहा : तो तुम भी चले ही गये ? माने नहीं। और उन्होंने अत्यन्त दयनीय स्वर में दयानाथ से कहा : कोई नहीं मानता। यही तो बच्चों में दोष हो गया है।

दयानाथ ने सिर झुका लिया। खिड़की पर अँधेरा झुक गया था। चाचाजी ने उमानाथ का मुख छुआ। आँखों की विस्फारित पलकें बन्द कर दीं। दयानाथ ने उमा के अकड़े हुये पैर जल्दी से सीधे कर दिये, और अंगूठों में एक तागा बाँध दिया, और फिर वह सिर पकड़ कर बैठ गया। शराबी के पाँव टेढ़े से थे। सुबह तक उनके अकड़ जाने का भय था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई नहीं बोला। कहानी ख़त्म हो गई थी। अब किसी को न शिकायत है, न जिज्ञासा। जो कुछ होना था वह हो चुका है। और महालक्ष्मी कभी कभी 'हाय' कह देती है, फिर कमरे में वही सन्नाटा छा जाता है।

दयानाथ ने उठकर बत्ती जला दी। कमरे में बिजली का उजाला भर गया, जिसमें सफेद कपड़े से ढँकी वह उमानाथ की लाश साफ़ साफ़ दिखाई देने लगी।

इसी समय स्वर सुनाई दिया : मैं आ गया हूँ बहू। इस बूढ़े के पास यह बालक माँ के बिना नहीं रह सका। मैं क्या करता ? आज तक सब को डाँटता रहा, सब पर मेरा शासन चलता रहा, परन्तु यह नादान मेरे अधिकारों को नहीं समझ सका। यहाँ आ जाओ। मेरे साथ चलो। देखो यह बालक तुम्हें बुलाने आ रहा है। खान्दान की इज़्ज़त तुम से ममता की भीख माँगने आ रही है। इसे ठुकरा न देना। यह ज़िद न करना कि मैं भीतर आऊँ।

और कमरे में छोटे छोटे पैरों पर चलते हुए अवधेश ने प्रवेश किया, जिसको देखकर महालक्ष्मी चिल्ला उठी : आ गया बेटा। आजा। देख तेरे पिता यही हैं। तू मुझसे पूछता था न कि तेरे पिता कहाँ हैं, ले यही हैं अ., आकर पाँव छू ले।

अवधेश माँ के पास आकर खड़ा हो गया और उसे रोते देखकर स्वयं भी 'माँ, माँ,' कर के रोने लगा।

श्यामनाथ मुस्करा दिये। उन्होंने द्वार पर खड़े होकर कहा : आ गये भैया ? बहुत अच्छा किया। जरा देर पहले आते तो तुम्हें स्वयं यहीं आना पड़ता, पर अब नहीं आना पड़ेगा। अब तो यह स्वयं तुम्हारे पास आयेगा, पर याद रखना आयेगा इज्ज़त से ही। वह अब जमीन पर नहीं, कंधों पर आयेगा·····

श्यामनाथ की वह थर्राती आवाज़ अभी थमी भी नहीं थी कि महालक्ष्मी की 'हाय' गूँज उठी। आज सब लुट गया। उजड़ा हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
सुहाग पड़ा है। अब महालक्ष्मी का पूरा अधिकार प्राप्त हो गया। इस समय उसे कैसा संकोच ? किसकी शक्ति है जो उसे रोक ले।

रामनाथ ने सुना तो काँप गये। उनकी समझ में नहीं आया। वे एकदम बढ़ आये और कमरे में घुसते ही उनके पाँव ठिठक गये। श्यामनाथ हँस पड़े। उन्होंने कहा : अरे इतना भी धीरज नहीं रहा भैया ? जब इतने दिन से पहाड़ बने बैठे थे तो और थोड़ी देर रुक जाते। मैं गंगा में फेकने के पहले इसके फूल लाकर चरणों में छुआ देता आप उसे आशीर्वाद की जगह गाली दे लेते, पर आपने तो कुल की मर्यादा नष्ट कर दी। क्या हर्ज था। वह तो आप आ जाता। बेचारा ! इतना हठ करके हारने वाला था कि आप स्वयं हार गये।

रामनाथ भौंचक से झुके हुए खड़े थे। यह क्या सच है ? क्या उनके सामने उनके दूसरे बेटे की लाश पड़ी है ? क्या वह सचमुच मर चुका है ! क्या यह सब लोग एक मुर्दे को घेरे बैठे हैं ? और महालक्ष्मी दारुण क्रन्दन कर रही है ? क्या हुआ ? इसका संकोच और इसकी वह लज्जा कहाँ गई ? अरे अब क्या है ? बेचारी जीवन भर विधवा बन कर रही। पर आज तक एक आस थी, अब वह भी नहीं रही। आज वह सचमुच विधवा हो गई। आज से माँग में सिंदूर भरने का, चूड़ी पहनने का भी अधिकार उससे छिन गया है। हाय, वह विधवा हो गई है। उसका पति मर गया है।

शाँत निस्वन पड़ा है उमानाथ। बिल्कुल नहीं हिलता डुलता, चेहरे पर कितना भय, कितनी अतृप्ति। जिसको देखकर रोना सा आता है। अभी रामनाथ जिंदा हैं, और वे देख रहे हैं। इनका दूसरा बेटा मर गया है।

रामनाथ ने मेज का सहारा लिया और कमरे में वह भयानक रुदन का शब्द दिल को दहला रहा है, थर्रा रहा है। क्या महालक्ष्मी को कहीं शाँति है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्यामनाथ फिर बोल उठा : मर गया है बेचारा। महालक्ष्मी ! यही समझकर रो रही है। दयानाथ खड़ा देख रहा है। सोच रहा है, यह मेरा भाई है। यह मेरा छोटा भाई है। इसे मैंने एक दिन प्यार किया था। पर वह कब तक काम देता ? कोई किसी को रोक सका है। प्रभा को किसने रोक लिया था ? वह जब गया था तो तुमने उसे देखा नहीं। चेहरा नीला पड़ गया था। वह ज़हर खाकर मरा था और ज़हर खाकर ही दूसरा भी चल बसा है। जानते हो न ? शराब और क्या है ? पर मर गया तो मर जाने दो। जिनके लिये वह आज मरा है, वे भले ही रो लें। बानापुर के राजा रामनाथ के लिये तो वह कभी का मर चुका था। भइया यह किसे घूर घूर कर देख रहे हो। तुम जाओ, तुम्हें कहीं लाश में से बदबू तो नहीं आती।

रामनाथ ने सुना और शून्य दृष्टि से देखा। उनके चेहरे पर घबराहट थी। श्यामनाथ ठठा कर हँसे। उनके उस भयानक हास्य को सुनकर दयानाथ का हृदय डर गया। इस हँसी में वेदना का तूफ़ान था, कितना विषाद; गंभीर समुद्र जैसे गरजता है, हाहाकार करता है और लहरों को देखकर लगता है केवल खेल रहा है, लहरों से खेल रहा है·····

परन्तु उन्होंने कुछ नहीं कहा। श्यामनाथ ने फिर कहा : उमानाथ ! तुम पूछते थे ददुआ नाराज़ हैं ? वे नहीं आये। अब आ गये हैं। तुम सदा के हठीले हो। एक तो ख़ुद नहीं गये, और जब वे स्वयं आये हैं तब तुम उठ कर उनका स्वागत भी नहीं करते ? डरते क्यों हो।

और मुड़कर रामनाथ से कहा : कुछ कहना चाह रहा है, मुझे लगता है इसके होठ फड़कने वाले हैं। जल्दी न हो तो कुछ देर ठहर ही जाओ न ? अभी से जाकर भी क्या करोगे। सच, मरा नहीं है, सो रहा है·····

'श्यामू ! रामनाथ ने चिल्ला कर कहा : तुम पागल हो गये हो जानते हो तुम क्या कह रहे हो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
'क्या कह रहा हूँ, श्यामनाथ ने सरलता से कहा: मैं सच कहता हूँ, वह मरा नहीं है···आपको देखकर आँखें मींच ली है···

रामनाथ का चेहरा यह सुनकर स्याह पड़ गया, क्योंकि तभी अवधेश ने भी कहा : ददुआ, माँ क्यों लोती हैं ? क्या बात है, क्या हो गया ? मरना क्या होता है ?

इस प्रश्न से कमरा हिल उठा क्योंकि महालक्ष्मी का आर्तनाद लाश पर बजने लगा।

कमरे की दहशत बढ़ गई। महालक्ष्मी पति की लाश पर फूट फूट कर रोने लगी।

रामनाथ ऐसे देखते रहे जैसे जो वह देख रहे हैं वह सब एक दुःस्वप्न है। तब श्यामनाथ ने कहा : डरो नहीं भैया। अब वह कुछ नहीं कर सकता। आगे बढ़ो। देखो न ? उसका चेहरा तो देख लो एक बार। इसे तुमने गोदी में खिलाया था। तुम्हारा जवान बेटा घुल घुल कर मर गया है। याद हैं न ? इसकी देह को देखकर सोने का सा भ्रम होता था। पर अब वह चिकनी खाल सिकुड़ गई है। अब वह डरावना मालूम देता है। अब वह कुछ नहीं कर सकता। कोई पकड़ थोड़े ही लेगा ?

उनके विकृत हास्य को सुन कर रामनाथ के शरीर के रोंगटे तक खड़े हो गये। श्यामनाथ बिल्कुल पागल हो गये हैं। पर क्या यह सब सच है ? क्या उनका बेटा मर गया है ? उमानाथ मर गया है ? वह प्यारा बेटा अब नहीं रहा, जिसे इतने लाड़ प्यार से पाला था, जिसको दुलार कर छाती ठंडी होती थी...

सचमुच वही तो मर गया है..

रामनाथ को लगा जैसे उनकी स्मृतियाँ घनी हो गईं। समस्त ममता अब ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी : रामनाथ तेरा बेटा मर गया है...देख तेरे बेटे की बहू विधवा हो गई है. . .रामनाथ, तेरा बेटा चल बसा है. . .

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
अरे बूढ़े तेरे पापों का फल है कि तू खड़ा है, तू प्रेत सा खड़ा है और तेरा जवान बेटा अब मिट्टी हो गया है...

तभी श्यामनाथ ने फिर कहा : वह तो अब किसी का नहीं, निठुर सबसे ममता तोड़ गया। कैसा बीच मँझधार में छोड़ गया है। डूबती यादगारें जिसे इस समंदर से पार होने के लिये लकड़ी का तख्ता समझ कर पकड़ रही हैं, वह तो एक टूटा हुआ कच्चा घड़ा है। पर देख लो भइया, कल यह चेहरा जल जायेगा। कल मेरा बेटा चिता पर धू धू कर जल उठेगा।

लगा जैसे छाती फट जायेगी।

रामनाथ धीरे से बढ़े।

दयानाथ चौंका। उसने कहा : क्या है? कहाँ जा रहे हैं? यहाँ नहीं, यहाँ नहीं।

रामनाथ समझे नहीं। उन्होंने फिर क़दम उठाया। परंतु अब दायानाथ चिल्ला उठा : ख़बरदार! आगे न बढ़िये। अब वह किसी भी मान और गौरव को ठुकरा चुका है...

लगता था दयानाथ पागल हो गया था। आज उसकी प्रतिहिंसा विक्षुब्ध होकर गरज उठी थी। वह किसी भी प्रकार का अंकुश सहने के लिये तैयार नहीं था। उसकी आवाज़ में एक विचित्र तीखापन था जिसको सुनकर श्यामनाथ की मुस्कराहट भी आश्चर्य में परिणित हो गई।

रामनाथ का उठा हुआ क़दम रुक गया। उन्होंने आश्चर्य से देखा और उनकी मुद्रा में प्रगाढ़ विस्मय दिखाई दिया। किन्तु दयानाथ कठोर दीखता था। उसने फिर कहा ठहर जाइये। वहीं ठहर जाइये। आप इधर क्यों आ रहे हैं?

रामनाथ ने रुँधे कंठ से कहा : दया···

वे आगे नहीं कह सके। परन्तु दया ने अविचलित होकर कहा : मेरा भाई मर गया है। महालक्ष्मी का पति मर गया है। अवधेश का बाप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

मर गया है। मर गया है बाबा रामनाथ जी का नवासा, पर आपका क्या है जो आ रहे हैं ?

महालक्ष्मी ने रोते हुए कहा : क्यों रोकते हैं? ऐसे पत्थर हो गये हैं··

दयानाथ ने फिर दृढ़ स्वर से कहा : जिनको अपने कुल का अभिमान हो। उनकी यहाँ जरूरत नहीं। उमा का यह अंत किसके कारण हुआ ? आज इस वक्त याद आया है कि बेटा मर रहा है ? मर गया है तब दुनिया में यह दिखाने के लिये आये हैं कि कुछ भी हो, मेरा ही बेटा था ? मिट्टी को भी चैन से नहीं रहने देना चाहते। जो मर गया है, उसके एक बेटा है, वह दाग़ दे लेगा। मैं उसके हाथ से दाग लेकर श्राद्ध करूँगा। मेरे भइया की आत्मा कभी अतृप्त होकर हाहाकार नहीं करेगी···

वह रो दिया। झुके, वृद्ध, रामनाथ ने सुना और जैसे उसके पाँव टूट गये, शरीर की शक्ति क्षीण हो गई, चक्कर सा आ गया और वहीं गिर पड़े। परन्तु तब भी वे उमानाथ के शरीर को नहीं छू पाये।

अवधेश पूछ रहा था : माँ। पिताजी बोलते क्यों नहीं ? छो लये हैं, क्यों लोती हो, छब लोते हैं·····क्यों लोते हैं···

किन्तु उसकी बात का किसी ने भी उत्तर नहीं दिया।

रात का अँधेरा अच्छी तरह घिर गया था। लाश को लेकर पूरी रात इन्तजार करना था। श्यामनाथ के चेहरे पर मुस्कराहट थी दयानाथ की कठोरता मिट गई थी···

और महालक्ष्मी का टूटता हुआ दिल बीच बीच में कमरे में भयानकता पैदा करता हुआ गूँज उठता था···

परन्तु उमानाथ सो रहा था···शांत··नीरव ····

उसके दाँत कुछ खुल गये थे·····

जैसे वह कुछ कहना चाहता था, अपने भीतर का सारा रहस्य, सारी जलन, आज खोल देना चाहता था पर अधूरी बात लेकर चला गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

था, वह निर्मम बिना कहे ही चला गया था और अभी तक महालक्ष्मी रो रही थी। एकाएक उसे फिट आ गया।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

The end.

उपसंहार

दुपहर ढल चुकी है। रामनाथ अकेले बैठे हैं। उनके पास इस समय कोई नहीं। प्रकृति में एक सूनापन है। लगता है ऊमस छा रही है। इस घुटन का परिणाम होगा, भीषण जल-वर्षा। वे चुपचाप सो रहे थे···

आज उनके समीप कोई नहीं है। एक बहुत बड़ी इमारत थी, दूर से देखने को उसके वैभव से डर लगता था, पर उसकी काया में इतने अधिक अत्याचार थे, इतना अधिक अंधकार था···हवा के नये झोकों ने उस इमारत को गिराना शुरू कर दिया। पहले ऊपर से चूना झड़ा, तब उसे किसी ने गंभीरता से नहीं लिया····अब इस इमारत का उजाड़ ही मन को डराने लगा है··

रामनाथ···वृद्ध···अपाहिज-सा···दयनीय···आज वह अपनी ही स्वार्थ सीमाओं में संसार में घृणित समझा जाने वाला···जैसे गाँव वाले पुराने पेड़ को देखकर कहते हैं इसमें भूत है···इसमें भूत है···

रामनाथ उठ खड़े हुए। उन्होंने एक बार बाहर की ओर देखा और फिर भीतर के कमरे में जाकर बैठ गये। कलुआ आकर पंखा खींचने लगा उन्होंने सोचा : विद्रोह थम गया···यदि वे उमा को विलायत नहीं भेजते···यदि उन्होंने लड़कों को अँगरेज़ी नहीं पढ़ाई होती···यदि उनके संसार में कुछ भी नहीं बदलता···क्या रह गया है घर में·····

पगचाप सुन कर उन्होंने सिर उठाया। देखा। सामने श्यामनाथ खड़े थे···पागल···बिल्कुल ही भूले हुए···रामनाथ उन्हें देखकर सिहर उठे। किस पर चलायें यह शासन? गाँव वाले लाठी बन्दूक देखकर दबते हैं, पर वे कब तक इसी तरह दबा करेंगे? मनुष्य वह दबता है जिसकी आत्मा दबी रहती है और वह आत्मा खुल गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उसने बार-बार सिर उठाने सीख लिया है। पहले भी वह अत्याचार की सीमा होने पर अपने ऊपर की सत्ता को उखाड़ फेकती थी···पर वही लोग बार-बार लौट आते थे···

अब वह सब नहीं चाहती। वह नई दुनिया चाहती है जहाँ यह नहीं कि खेत की नालियों से कोई न कोई पानी चुराता रहे, रास्ता लम्बा है, बहुत कठिन है, इस क़दर बाधाएँ हैं···

और रामनाथ को उमानाथ के शब्द याद आने लगे : रास्ता लम्बा है बहुत कठिन है, बीच में पत्थर हैं। पर उन्हें छोड़कर बगल से नहीं जा सकते, उन्हें कुचलना होगा···उन्हें धूल में मिला देना होगा···

रामनाथ काँप उठे। और इस घर के गौरव के यह अन्तिम प्रतीक ..जैसे अन्तिम साँस लेते हुए··· कोई क्षीण रोगी···

देखा। श्यामनाथ शून्य की ओर आँखें लगाये देख रहे हैं और उसी सूनेपन पर एक विषाद की छाया गहरी हो उठी है।

रामनाथ की इच्छा हुई कुछ कहें। पूछा—श्यामू! सोये थे?'

श्यामनाथ मुस्कराये। बोल उठे—क्या मैं जाग रहा हूँ? मैं... मैं पुलिस सुपरिंटेन्डेंट हूँ...मैं सबको...गिरफ्तार कर सकता हूँ...

रामनाथ का हृदय हाहाकार कर उठा। यह उनके गौरव की अंतिम पराजय थी। वे उठे.....उन्होंने श्यामनाथ से कुछ नहीं कहा। भीतरी बड़े कमरे में जाकर खड़े हो गये। देखा अभी तक उसी शान से पूर्वजों के चित्र टँगे थे। यह हैं अमरनाथ...इन्होंने ली थीं वे वफ़ादारी की सनदें...और आज़ इन्हें मुल्क कुत्ता और ग़द्दार कहता है.....

तभी रामनाथ की दृष्टि फिर कर चाचा चन्द्रनाथ के चित्रों की ओर गई, कितना रुआब, हृदय के तार तार झनझना उठे। उन्होंने कहा : सब झूठ है···यही रहेगा···जो है वही बना रहेगा···

पर मन को स्वयं विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने सुना अवधेश बगल के कमरे में पूछ रहा था। क्या पूछ रहा है, उन्होंने ग़ौर से सुना। पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
सुन नहीं सके। वे लौटकर फिर श्यामनाथ के पास आ गये। कहा : श्यामू !

'भैया ?' श्यामनाथ ने गंभीरता से कहा।

'तुम्हें नींद नहीं आई ?'

'मुझे···मुझे डरावने सुपने दिखाई देते हैं···भूत पिशाच··· राक्षस··। और एकाएक श्यामनाथ विकराल नेत्रों को फाड़ कर ठठा कर हँस उठे। रामनाथ का हृदय थर्रा उठा।

उन्होंने आज्ञा के स्वर में कहा : जाओ। सो जाओ··

'भइया···' श्यामनाथ ने काट कर कुछ कहना चाहा किन्तु रामनाथ ने कड़े स्वर में डाँट कर कहा : चलो। चलो जाओ।

श्यामनाथ अचानक ही हँस दिये। आज उनकी आज्ञा को सिर झुका कर मानने वाला, जो बुद्धि से कुछ भी काम नहीं लेता था, लकीर का फक़ीर था। अपने ही गलतियों के कारण पागल हो गया था··· इसका दिमाग़ ख़राब हो गया था ···झक्की हो गया था···

वे श्यामनाथ को घूरते रहे। घूरते रहे। फिर सोचने लगे। फिर.. फिर....दिमाग में कुछ नहीं....

एकाएक देखा—श्यामनाथ द्वारा की ओर बढ़े।

रामनाथ ने उन्हें टोका और कहा : कहाँ जा रहे हो श्याम ?

'क्या मैं कहीं जा रहा हूँ ?'

'नहीं, तुम रास्ता भूल कर जा रहे हो। कमरा भीतर है···

'पर मैं उस नींद से डरता हूँ। उसमें मुझे भयावने सुपने दिखाई देते हैं·····

'तो क्या तुम सो भी नहीं सकते ?' रामनाथ ने उदासी से पूछा।

मुझे डर लगता है···' श्यामनाथ ने बड़े भाई को पकड़ लिया।

'नहीं श्यामू, कुछ नहीं हुआ ? तुम्हें किसका डर है, जाओ सो रहो···उस स्नेह के स्वर से श्यामनाथ भीतर लौट गये।

रामनाथ खड़े रहे···उनकी आँखें खिड़की के बाहर दूर झाँक रही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
थीं····कलुआ ऊँघ रहा था, जब आँख खुलती थी दो एक हाथ पंखे के चले कि फिर नींद आ गई,····पर रामनाथ का आज उधर ध्यान नहीं था····

वे सोच रहे थे·····क्या····कहाँ····कुछ नहीं····

वह सिर झुक गया था····

रामनाथ हताश से आकर लेट गये। पंखाकुली फिर चैतन्य होकर उठ बैठा और सतर्क होकर हाथ चलाने लगा। फिर वही देखा··· घड़ी में अभी तीन बजे थे ···

रामदीन ने प्रवेश किया और एक लिफ़ाफ़ा पेश किया। रामनाथ ने लिफ़ाफ़ा खोलकर पढ़ा। डिप्टी कमिश्नर डाबसन ने बधाई का पत्र भेजा था कि उसने उनके नाम की गवर्नर के यहाँ 'सर' की पदवी के लिये सिफारिश की थी। उम्मीद थी कि जरूर मिल जायेगी क्योंकि सरकार उनकी सेवाओं से बहुत खुश थी··

रामनाथ पत्र लिये देखते रहे···

शाम अभी दूर है··पर बहुत दूर नहीं ··

अब दिन और तारीख याद नहीं, पर उन्हें याद रखने की आवश्यकता थी, क्योंकि पतन का प्रत्येक क्षण, इतिहास में, उठते हुओं के संगठन और शक्ति का परिचायक है··

क्योंकि देश और काल के बिना कुछ भी··सीधा··सादा··· रास्ता··· नहीं है···

The end

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

H83 R175

891.44 C43R 14745

12.1.09 5054
15.1.2010 5035
9726 29.1.69
10559 26.1.70
10599 2-6-71

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

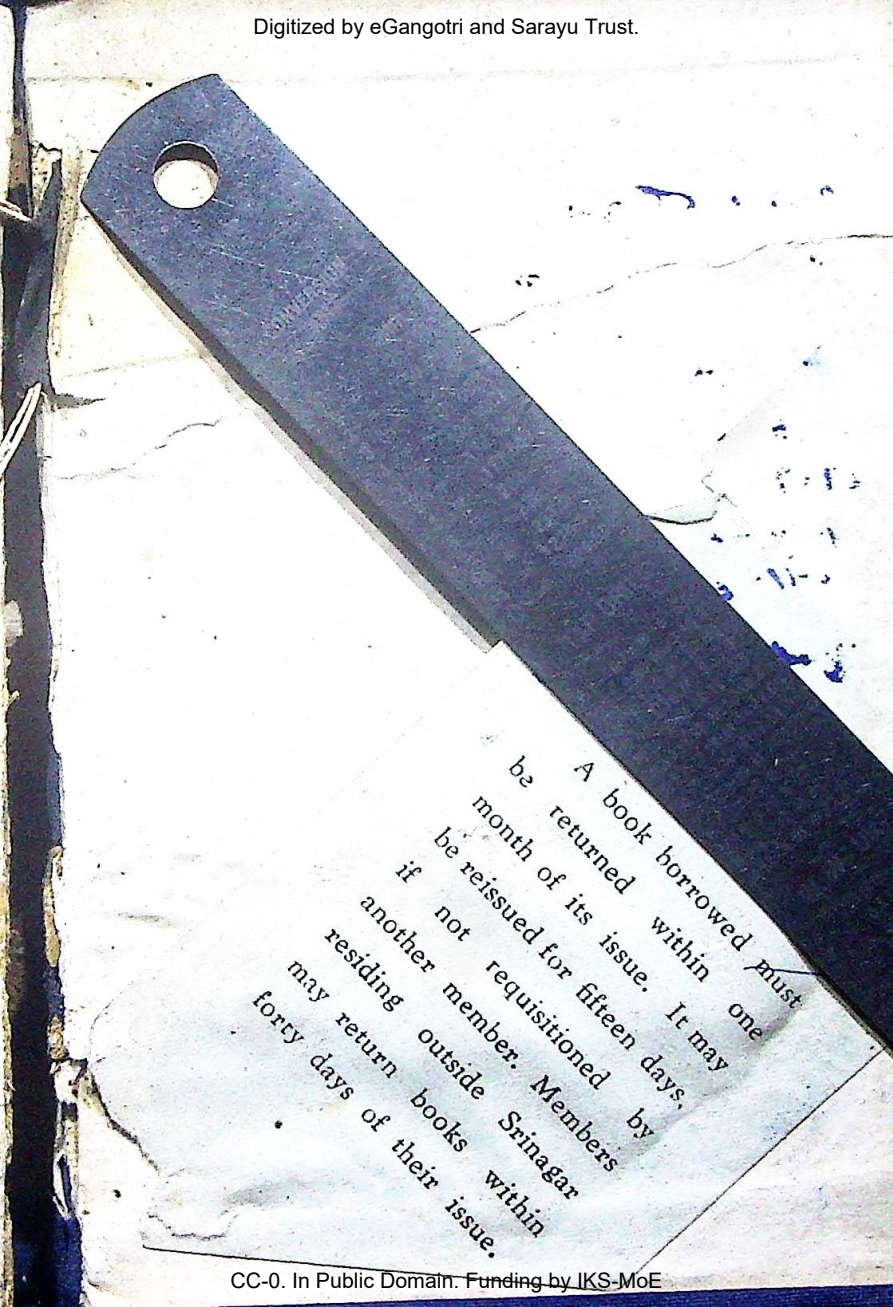

A book borrowed must be returned within one month of its issue. It may be reissued for fifteen days, if not requisitioned by another member. Members residing outside Srinagar may return books within forty days of their issue.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust